पूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी:—

परम पूज्य गुरुदेव का गुरुपूर्णिमा प्रवचन

पूज्य गुरुदेव की लेखनी के साथ—साथ अमृतवाणी का लाभ भी सबको मिले, इसी उद्देश्य से जुलाई माह के इस अंक में गुरुपूर्णिमा पर्व की वेला में उनके द्वारा शांतिकुंज हरिद्वार में २० जुलाई १९७८ को दिया गया एक विशिष्ट प्रवचन यहाँ परिजनों के लिए प्रस्तुत है । जुलाई ९१ अंक से आरंभ हुआ यह क्रम आगे भी चलता रहेगा ।

प्रस्तुत उद्‌बोधन आज की दृष्टि से इतना ही सामयिक है जितना कि उस समय था । परमसत्ता से प्रार्थना है कि हमारी श्रद्धा व समर्पण का परिमाण नित्य—सतत् बढ़ता रहे ।

गायत्री मंत्र हमारे साथ—साथ बोलिए—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो एवं सज्जनो ,

इस संसार में कुल मिलाकर तीन शक्तियाँ हैं, तीन सिद्धियाँ हैं । इन्हीं पर हमारा सारा जीवन व्यापार चल रहा है । लाभ सुख जो भी हम प्राप्त करते हैं इन्हीं तीन शक्तियों के आधार पर हमें मिलते हैं । पहली शक्ति है श्रम की शक्ति, शरीर के भीतर की शक्ति भगवान की दी हुई । इससे हमें धन व यश मिलता है । जमीन पहले भी थी, अभी भी है । यह मनुष्य का श्रम है । जब वह लगा तो वह सोना धातुएँ अनाज उगलने लगी । जितना भी सफलताओं का इतिहास है, वह आदमी के श्रम की उपलब्धियों का इतिहास है । यही सांसारिक उन्नति का इतिहास है ।

जमीन कभी ब्रह्माजी ने बनायी होगी तो ऐसी ही बनायी होगी जैसा कि चन्द्रमा है । यहाँ गड्ढा—वहाँ खड्डा -- सब ओर यही । श्रम ने धरती को समतल बना दिया । नदियाँ चारों ओर उत्पात मचा देती थीं । जलप्लावन से प्रलय सी आ जाती थी । रास्ते बन्द हो जाते थे । व्याह शादियाँ भी बन्द हो जाती थीं, उन चार महीनों में जिन्हें चातुर्मास कहा जाता है सुना होगा आपने नाम । आदमी जहाँ थे, वहीं कैद हो जाते थे । यह आदमी का श्रम है आदमी की मशक्कत है कि आदमी ने पुल बनाए, नाव बनायी, बाँध बनाए । अब वह बंधन नहीं रहा । सारी मानव जाति श्रम पर टिकी है आदमी का श्रम, जिसकी हम अवज्ञा करते हैं । दौलत हमेशा आदमी के पसीने से निकली है । आपको सम्पदा के लिए कहीं गिड़गिड़ाने नाक रगड़ने की जरूरत नहीं है । एक ही देवता है—श्रम का देवता । वही देवता आपको दौलत दिला सकता है । उसी की आपको आराधना—उपासना करना चाहिए ।

माना कि आपके बाप ने कमाकर रख दिया है, पर बिना श्रम के उसकी रखवाली नहीं हो सकती । श्रम कमाता भी है, दौलत की रखवाली भी करता है । हम श्रम का महत्व समझ सकें उसे नियोजित कर सकें तो हम निहाल हो सकते हैं । मात्र सम्पत्तिवान—समृद्ध ही नहीं हम अन्यान्य दौलत के भी अधिकारी हो सकते हैं । सेहत मजबूती श्रम से ही आती है । शिक्षा, कला—कौशल, शालीनता, लोक व्यवहार में पारंगतता श्रम से ही प्राप्त होती है । बेईमानी से चालाकी से आदमी दौलत की छीन झपट मात्र कर सकता है, पर उसे कमा नहीं सकता । आप यदि फसल बोना चाह रहे हैं तो बीज बोइए । यदि चालाकी करें, बीज खा

भावना दिशा देती है और श्रद्धा से प्रकाश मिलता है । केवल तर्क का आश्रय लेने वाला तो झाड़—झंखाड़ों में भटकता है ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

न से तो कुछ नहीं होने वाला । हर आदमी को ईमानदारी से श्रम किये जाने की मशक्कत की कीमत समझाइए । सम्पदा अभीष्ट हो, विनिमय करना चाहते हों तो कहिए श्रमरूपी पूँजी अपने पास रखें । उसका सही नियोजन करिए । यह है दौलत नंबर एक ।

दो नंबर की दौलत है हमारी ज्ञान की, विचार करने की शक्ति । हमें जो भी प्रसन्नता मिलती है इसी ज्ञान की शक्ति से मिलती है , खुशी दिमागी बैलेन्स से प्राप्त होती है । यह बाहर से नहीं आती, भीतर से प्राप्त होती है । जब हमारा मस्तिष्क संतुलित होता है तो हर परिस्थिति में हमें चारों ओर प्रसन्नता ही प्रसन्नता दिखाई देती है । घने बादल दिखाई देते हैं तो एक सोच सकता है कि कैसे काले मेघ आ रहे हैं अब बरसेंगे । दूसरा सोचने वाला कह सकता है कि कितनी सुन्दर मेघमालाएँ चली आ रही हैं । यह है प्रकृति का सौन्दर्य ।

हम गंगोत्री जा रहे थे । चारों ओर सुनसान डरावना जंगल था । जरासी पत्तों की सरसराहट हो तो लगे कि साँप है । हवा चले, वृक्षों के बीच सीटी सी बजे तो लगे कि भूत है । अच्छे खासे मजबूत आदमी के नीरव एकाकी वियाबान में होश उड़ जायें । पर हमने उस सुनसान में भी प्रसन्नता का स्रोत ढूँढ़ लिया । "सुनसान के सहचर " हमारी लिखी किताब आपने पढ़ी हो तो आपको पता चलेगा कि हर लमहे को जिया जा सकता है प्रकृति के साथ एकात्मता रखी जा सकती है । अब हम बार-बार याद करते हैं उस स्थान की जहाँ हमारे गुरु ने हमें पहले बुलाया था । अब तो हम कहीं जा भी नहीं पाते पर प्रकृति के सान्निध्य में अवश्य रहते हैं । हमारे कमरे में आप चले जाइए । आपको सारी नेचर की , प्रकृति के भिन्न भिन्न रूपों की तस्वीरें वहाँ लगी मिलेंगी । बादलों में, झील में, वृक्षों के झुरमुटों, में झरनों में से खुशी छलकती दिखाई देती है । वहाँ कोई देवी-देवता नहीं है, मात्र प्रकृति के भिन्न भिन्न रूपों की तस्वीरें हैं । हमें उन्हीं को देखकर अंदर से बेइन्तिहा खुशी मिलती है ।

जीवन का आनन्द सदैव भीतर से आता है । यदि हमारे सोचने का तरीका सही हो तो बाहर जो भी क्रियाकलाप चल रहे हों उन सभी में हमको खुशी ही खुशी बिखरी दिखाई पड़ेगी । बच्चों को देखकर, धर्मपत्नी को देखकर अंदर से आनन्द आता है । सड़क पर चल रहे क्रियाकलापों को देखकर आप आनन्द लेना सीख लें यदि आपको [illegible] मिल जाए । स्वर्ग आप चाहते हैं तो स्वर्ग [illegible] ने की जरूरत नहीं है , मैं आपको दिला सकता हूँ । स्वर्ग दृष्टिकोण में निहित है । इन आँखों से देखा जाता है। देखने को "दर्शन" कहते हैं । दर्शन अर्थात् दृष्टि । दर्शन अर्थात् फिलॉसफी । जब हम किसी बात की गहराई में प्रवेश करते हैं बारीकी मालूम करने का प्रयास करते हैं तब इसे दृष्टि कहते हैं । यही दर्शन है । किसी बात को गहराई से समझने का माद्दा आ गया अर्थात् दर्शन वाली दृष्टि विकसित हो गयी । आपने किताब देखी, पढ़ी पर उस में क्या देखा ? उसका दर्शन आपको समझ में आया या नहीं सही अर्थों में तभी आपने दृष्टि डाली, यह माना जाएगा ।

दृष्टिकोण विकसित होते ही ऐसा आनन्द ऐसी मस्ती आती है कि देखते ही बनता है । दाराशिकोह मस्ती में डूबते चले गए । जेबुन्निसा ने पूछा "अब्बाजान !

> ***तृष्णा का कोई अन्त नहीं । आकाश की तरह उसके पेट में बहुत कुछ भरा होने पर भी खाली ही रहता है ।***

आपको क्या हुआ है आज । आप तो पहले कभी शराब नहीं पीते थे । फिर यह मस्ती कैसी ? "बोले" बेटी ! आज मैं हिन्दुओं के उपनिषद् पढ़कर आया हूँ । जमीन पर पैर नहीं पड़ रहे हैं । जीवन का असली आनन्द उनमें भरा पड़ा है । बस यह मस्ती उसीकी है ।"

यह है असली आनन्द । मस्ती, खुशी, स्वर्ग हमारे भीतर से आते हैं । स्वर्ग सोचने का एक तरीका है । किताब में क्या है ? वह तो काला अक्षर भर है । हर चीज की गहराई में प्रवेश करने पर जो आनंद-खुशी मिलती है, वह सोचने के तरीके पर निर्भर है । इसी तरह बंधन्मुक्ति भी हमारे चिन्तन में निहित है । हमें हमारे चिन्तन ने बाँध कर रखा है । हम भगवान के बेटे हैं । हमारे संस्कार हमें कैसे बाँध सकते हैं । सारा शिकंजा चिन्तन का है । इससे मुक्ति मिलते ही सही अर्थों में आदमी बंधन्मुकत हो जाता है । हमारी नाभि में खुशी रूपी कस्तूरी छिपी पड़ी है । ढूँढ़ते हम चारों ओर हैं । हर दिशा से वह आती लगती है पर होती अन्दर है ।

यदि आपको सुख-शांति मुसकराहट चाहिए तो दृष्टिकोण बदलिए । खुशी सब ओर बाँट दीजिए । माँ

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

को दीजिए–पत्नी को दीजिए मित्रों को दीजिए । राजा कर्ण प्रतिदिन सवामन सोना दान करता था । आपकी परिस्थितियाँ नहीं हैं देने की किन्तु आप सोने से भी कीमती आदमी की खुशी बाँट सकते हैं । आप जानते नहीं हैं, आज आदमी खुशी के लिए तरस रहा है । जिन्दगी की लाश इतनी भारी हो गयी है कि वजन ढोते–ढोते आदमी की कमर टूट गयी है । वह खुशी ढूँढ़ने के लिए सिनेमा, क्लब, रेस्टॉरेण्ट, कैबरे डांस सब जगह जाता है पर वह कहीं मिलती नहीं । खुशी दृष्टिकोण है, जिसे मैं ज्ञान की सम्पदा कहता हूँ । जीवन की समस्याओं को समझकर अन्यान्य लोगों से जो डीलिंग की जाती है वह ज्ञान की देन है । वही व्यक्ति ज्ञानवान होता है जिसे खुशी तलाशना व बाँटना आता है । ज्ञान पढ़ने लिखने को नहीं कहते । वह तो कौशल है । ज्ञान अर्थात् नजरिया, दृष्टिकोण, व्यावहारिक बुद्धि ।

मैंने आपको दो शक्तियों के बारे में बताया । पहली श्रम की शक्ति जो आपको दौलत, कीर्ति, यश देती है । दूसरी विचारणा की शक्ति जो आपको प्रसन्नता व सही दृष्टिकोण देती है । तीसरी शक्ति रूहानी है । वह है आदमी का व्यक्तित्व । व्यक्ति का वजन । कुछ आदमी रुई के होते हैं व कुछ भारी । जिनकी हैसियत वजनदार व्यक्तित्व की होती है, वे जमाने को हिलाकर रख देते हैं । कीमत इनकी करोड़ों की होती है । वजनदार आदमी यदि हिन्दुस्तान की तवारीख से काट दें तो इसका गर्क हो जाय । जिसके लिए हम फूले फिरते हैं, वह वजनदार आदमियों का इतिहास है । वजनदारों में बुद्ध को शामिल कीजिए । वे पढ़े लिखे थे कि नहीं किन्तु वजनदार थे । हजारों सम्राटों ने, दौलतमन्दों ने थैलियाँ खाली कर दीं । बुद्ध ने जो माँगा वह उनने दिया । हरिश्चन्द्र, सप्तर्षि, व्यास, दधीचि, शंकराचार्य, गाँधी, विवेकानन्द के नाम हमारी कौम के वजनदारों में शामिल कीजिए । इन्हीं पर हिन्दुस्तान की हिस्ट्री टिकी हुई है । यदि इन्हें खरीदा जा सका होता तो बेशुमार पैसा मिला होता ।

आदमी की कीमत है उसका व्यक्तित्व । ऐसे व्यक्ति दुनिया की फिजां को बदलते हैं, देवताओं को अनुदान बरसाने के लिए मजबूर करते हैं । पेड़ अपनी आकर्षण शक्ति से बादलों को खींचते व बरसने के लिए मजबूर करते हैं । वजनदार आदमी अपने व्यक्तित्व की मैग्नेट की शक्ति से देव शक्तियों को खींचते हैं । यदि आप भी दैवी अनुदान चाहते हों तो आपको व्यक्तित्व को वजनदार बनाना होगा । दैवी शक्तियाँ सारे ब्रह्माण्ड में छिपी पड़ी हैं । सिद्धियाँ जो आदमी को देवता महामानव ऋषि बनाती हैं, सब यहीं हमारे आसपास हैं । कभी इस धरती पर तैंतीस कोटि देवता बसते थे । सभी व्यक्तित्ववान थे । व्यक्तित्व एक बेशकीमती दौलत है, यह तथ्य आप समझिए । व्यक्तित्व सम्मान दिलाता है, सहयोग प्राप्त कराता है । गाँधी को मिला क्योंकि उनके पास वजनदार व्यक्तित्व था ।

व्यक्तित्व श्रद्धा से बनता है। श्रद्धा अर्थात् सिद्धान्तों व आदर्शों के प्रति अटूट व अगाध विश्वास । आदमी आदर्शों के तई मजबूत हो जाता है तो व्यक्तित्व ऐसा वजनदार बन जाता है कि देवता तक नियंत्रण में आ जाते हैं । विवेकानन्द ने रामकृष्ण परमहंस की शक्ति पाई क्योंकि स्वयं को वजनदार वे बना सके । भिखारी को दस पैसे मिलते हैं । कीमत चुकाने वाले को वजनदार व्यक्तित्व वाले को सिद्ध पुरुष का आशीर्वाद मिलता है ।

> ***दुनिया क्या कहेगी । इस प्रश्न को ध्यान में रखने का नाम कौशल है । भगवान क्या कहेंगे ? इस प्रश्न को आगे रखकर चलने का नाम कर्तव्य है ।***

यदि आप किसी आशीर्वाद की कामना से, देवी देवता की सिद्धि की कामना से यहाँ आए हैं तो मैं आप से कहता हूँ कि आप अपने व्यक्तित्व को विकसित कीजिए ताकि आप निहाल हो सकें । दैवी कृपा मात्र इसी आधार पर मिल सकती है और इस के लिए माध्यम है श्रद्धा । श्रद्धा मिट्टी से गुरु बना देती है । पत्थर से देवता बना देती है । एकलव्य के द्रोणाचार्य मिट्टी की मूर्ति के रूप में उसे तीरंदाजी सिखाते थे । रामकृष्ण की काली भक्त के हाथों भोजन करती थी । उसी काली के समक्ष जाते ही विवेकानन्द नौकरी–पैसा भूलकर शक्ति–भक्ति माँगने लगे थे । आप चाहें मूर्ति किसी से भी खरीद लें । मूर्ति बनाने वाला खुद अभी तक गरीब है । पर मूर्ति में प्राण श्रद्धा से आते हैं । हम देवता का अपमान नहीं कर रहे । हमने खुद पाँच गायत्री माताओं की मूर्ति स्थापित की हैं, पर पत्थर में से हमने भगवान पैदा किया है श्रद्धा से। मीरा का गिरधर गोपाल चमत्कारी

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

था । विषधर सर्पो की माला, जहर का प्याला उसी ने पीलिया व भक्त को बचा लिया । मूर्ति में चमत्कार आदमी की श्रद्धा से आता है । श्रद्धा ही आदमी के अंदर से भगवान पैदा करती है ।

श्रद्धा का आरोपण करने के लिए ही यह गुरुपूर्णिमा का त्यौहार है । श्रद्धा से हमारे व्यक्तित्व का सही मायने में उदय होता है । मैं अंध श्रद्धा की बात नहीं करता । उसने तो देश को नष्ट कर दिया । श्रद्धा अर्थात् आदर्शों के प्रतिनिष्ठा । जितने भी ऋषि संत हुए हैं उनमें श्रेष्ठता के प्रति अटूट निष्ठा देखी जा सकती है । जो कुछ भी आप हमारे अंदर देखते हैं, वह श्रद्धा का ही चमत्कार है । आज से ५५ वर्ष पूर्व हमारे गुरु की सत्ता हमारे पूजाकक्ष में आयी । हमने सिर झुकाया व कहा कि आप हुक्म दीजिए , हम पालन करेंगे । अनुशासन व श्रद्धा–गुरुपूर्णिमा इन दोनों का त्यौहार है । अनुशासन–आदर्शों के प्रति । यह कहना कि जो आप कहेंगे वही करेंगे । श्रद्धा अर्थात् प्रत्यक्ष नुकसान दीखते हुए भी आस्था, विश्वास, आदर्शों को खोना । श्रद्धा से ही सिद्धि आती है । हमें अपने आप पर घमण्ड नहीं है पर विनम्रतापूर्वक कहते हैं कि यह देवशक्तियों के प्रति हमारी गहन श्रद्धा का ही चमत्कार है जिसके बलबूते हमने किसी को खाली हाथ नहीं जाने दिया । गायत्री माता श्रद्धा में से निकलीं । श्रद्धा में मुसीबतें झेलनी पड़ती हैं व सिद्धान्तों का संरक्षण करना पड़ता है । हमारे गुरु ने कहा–संयम करो, कई दिक्कते आएँगी पर उनका सामना करो । हमने चौबीस वर्ष तक तप कया । जायके को मारा । हम जौकी रोटी खाते । हमारी माँ बड़ी दुखी होती । हमारी तपस्या की अवधि में उनने भी हमारी वजह से कभी मिठाई का टुकड़ा तक न चखा । हमारे गायत्री मंत्र में चमत्कार इसी तप से आया ।

आप चाहते हैं कि आपको कुछ मिले । तो वजन उठाइए । हम आपको मुफ्त देना नहीं चाहते । क्योंकि इससे आपका अहित होगा । वह हम चाहते नहीं । आप हमारा कहना मानें तो हम देने को तैयार हैं । गुरु–शिष्य की परीक्षा एक ही कि अनुशासन मानते हैं हम आपके शिष्य ऐसा कहें व मानें । समर्थ ने अपने शिष्य की परीक्षा ली थी व सिंहनी का दूध लाने को कहा था अपनी आँख को तकलीफ का बहाना करके सिंहनी कहाँ थी । वह तो हिप्नोटिज्म से एक सिंहनी खड़ी कर दी थी । शिवाजी का संकल्प था दृढ़ वे ले आए सिंहनी का दूध व अक्षय तलवार का उपहार गुरु से पा सके । राजा दिलीप की गायों को जब माया के सिंह ने पकड़ लिया तो उनने स्वयं को सौंप दिया । इस स्तर का समर्पण हो तो ही गुरु की शक्ति–दैवी अनुदान मिलते हैं । यह आस्थाओं का इम्तिहान है जो हर गुरु ने अपने शिष्य का लिया है ।

श्रद्धा अर्थात् सिद्धान्तों का भावनाओं का आरोपण । कहा गया है "भावे न विद्यतो देव तस्मात् भावो हि कारणम्" भावना का आरोपण करते ही भगवान प्रकट हो जाते हैं । भगवान अर्थात् सिद्धि । हर आशीर्वाद सिद्धि का आधार, फीस एक ही है–श्रद्धा । उसे विकसित करने के लिए अभ्यास हेतु गुरुपूर्णिमा पर्व । गुरुत्व के प्रति श्रद्धा का अभ्यास आज के दिन किया जाता है । गुरु अन्तरात्मा की उस आवाज का नाम है जो भगवान की गवर्नर है हमारी सत्ता उसी को समर्पित है । वही हमारी सद्गुरु है । गुरु को ब्रह्मा कहा गया है अर्थात् हमारी सुपर कांशसनेस हमारा अतिमानस । अच्छा काम करते ही यह हमें शाबाशी देता है । गलत काम करते ही धिक्कारता है । गुरु ही ब्रह्मा है, विष्णु है, महेश है । गुरु अर्थात् भगवान का प्रतिनिधि । गुरु को जाग्रत–जीवन्त करने के लिए एक खिलौना बनाकर श्रद्धा का आरोपण हम जिस पर भी करते हैं, वही गुरु बन जाता है । इसमें दोनों बातें हैं । मानवी कमजोरियाँ भी हो सकती हैं । उनको न देखकर हम अच्छाइयों के प्रति श्रद्धा विकसित करें । आप हमें मानते हैं तो हमारा चित्र देखते ही श्रेष्ठतम पर विश्वास करने का अभ्यास करें । यह एक व्यायाम है, रिहर्सल है । इसी के आधार पर हम अपने अंदर का सुपरचेतन जगाते हैं । प्रतीक की आवश्यकता इसी कारण पड़ती है ।

> ***सोने की चार तरह परीक्षा की जाती है । काटकर, तपाकर घिसकर और पीटकर । आदमी की भी चार तरह परीक्षा होती है त्याग, शील, गुण, और कर्म से ।***

हमारी अटूट श्रद्धा की प्रतिक्रिया लौट कर हमारे पास ही आ जाती है । एक शिष्य गुरु के चरणों की धोवन को श्रद्धापूर्वक दुखी–कष्ट पीड़ितों को देता था । सब ठीक हो जाते थे । पर जब गुरु ने उसी धोवन का चमत्कार जान कर अपने पैरों को जल से

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

धोकर वह जल औरों को दिया । तो कुछ भी न हुआ दोनों जल एक ही हैं । पर एक में श्रद्धा का चमत्कार है । उसी कारण वह अमृत बन गया । जब कि दूसरा मात्र धोवन का जल रह गया है । श्रद्धा आध्यात्मिक जीवन का प्राण है, रीढ़ है । देवपूजन आपको सफलता की कामना से करना हो तो श्रद्धा विकसित करके कीजिए । साधनाएँ मात्र क्रिया हैं यदि उनमें श्रद्धा का समन्वय नहीं है । आदमी की जो भी कुछ आध्यात्मिक उपलब्धियाँ हैं, वे श्रद्धा पर टिकी हैं । आपकी अपने प्रति यदि श्रेष्ठ मान्यता है, आपकी श्रद्धा वैसी है तो असल में वही हैं आप । यदि इससे उलटा है तो वैसे ही बन जाएँगे आप । गुरुपूर्णिमा श्रद्धा के विकास का त्यौहार है । हमारे गुरु ने अनुशासन की कसौटी पर कसकर हमें परखा है तब दिया है । हमारे जीवन की हर उपलब्धि उसी अनुशासन की देन है । वेदों के अनुवाद से लेकर ब्रह्मवर्चस् के निर्माण तथा चार हजार शक्ति पीठों को खड़ा करने का काम एक ही बलबूते हुआ—गुरु ने कहा कर । हमने कहा,'करिष्ये वचनं तव'। गुरु श्रीकृष्ण के द्वारा गीता सुनाये जाने पर शिष्य अर्जुन ने यही कहा कि सारी गीता सुन ली । अब जो आप कहेंगे, वही करूँगा ।

आज गुरुपूर्णिमा का त्यौहार है । हम आपको बता रहे हैं कि भगवान का नया अवतार होने जा रहा है । आज की परिस्थितियों के अनुरूप यह अवतार है । जब—जब दुष्टता बढ़ती है तब—तब देश काल की परिस्थितियों के अनुरूप भगवान अवतार के रूप में जन्म लेते हैं । आज आस्थाओं में, जन—जन के मन—मन में असुर घुस गया है । इसे विचारों की विकृति कह सकते हैं । एक किश्त आज के अवतार की आज से २५०० वर्ष पूर्व बुद्ध के रूप में विचारशीलता के रूप में आयी थी । वही प्रज्ञा की, विवेक की, विचारों की अब पुनः आयी है । वह है गायत्री मंत्र ऋतम्भरा प्रज्ञा के रूप में । यह अवतार जो आ रहा है विचारों के संशोधन रूप में दिमागों में ही नहीं, आस्थाओं में भी हलचलें पैदा करेगा । विचार क्रान्ति के रूप में जो आ रही है वह युगशक्ति गायत्री है । यह तूफान आँधी के रूप में आ रहा है । यह गायत्री हिदुस्तान मात्र की नहीं सारे विश्व की है । नये विश्व की माइक्रोफिल्म इसमें छिपी पड़ी है । गायत्री मंत्र विश्व मंत्र है । व्यक्ति का अंतस व बाहरंग बदलने वाले बीज इस मंत्र के अंदर छिपे पड़े हैं । यदि आपको यह बात समझ में आ गयी तो आप हमारे साथ नवयुग का स्वागत करने में जुट जाएँगे । हम अपने लिए एक ही नाम बताते हैं—मुर्गा । मुर्गा वह जो प्रभात के आगमन का उद्घोष करता है । गायत्री ने हमें फिर मुर्गा बना दिया है । आइये जोर से उद्घोष करें कि नव प्रभात आ रहा है नया युग आ रहा है युगशक्ति का अवतरण हो रहा है । कुकुड़ूकूँ ...। यह तो मुर्गा करता है । हम नये युग की अगवानी करें ।

हम गायत्री की फिलासफी व युग के देवता विज्ञान की बात आपको बताते आए हैं । यह ब्रह्म विद्या घर—घर पहुँचे, इसमें आप सबका सहयोग चाहते हैं । जैसे सेतुबंध के लिए, गोवर्धन के लिए, अवतारों को सहयोग मिला हम भी चाहते हैं कि आप भी इस प्रवाह में सम्मिलित हो जायँ । आपको भी बाद में

> ***फूल को किसी भी नाम से पुकारने पर उसकी सुगन्ध में अन्तर नहीं पड़ता । भगवान को किसी भी नाम से पुकारो इसमें फर्क क्या पड़ता है ?***

लगेगा कि हम भी समय पर जुड़ गए होते तो अच्छा रहता । युगशक्ति का उदय एवं अवतरण हो रहा है । आप इस अवतरण में एक हाथ भर लगा दें । आपकी भी गणना युगान्तरकारी पुरुषों में होने लगेगी । आप समय दीजिए , पैसा दीजिए । यह सोचकर नहीं कि हमारा काम रुकेगा । आप अपनी श्रद्धा को परिपक्व करने के लिए जो भी कर सकें वह करिए । हमें देने से हमें गुरुदीक्षा से मतलब है घर घर जन—जन तक गायत्री का सद्ज्ञान पहुँचाने का काम करना । दवा तो हमारे पास है आस्थाओं में छाई विषाक्तता की । आप मात्र सुई बन जाइए । आज की गुरुपूर्णिमा के दिन सम्पूर्ण समर्पण की युग देवता के काम के लिए खपने की मैं आपसे अपेक्षा रखता हूँ । आशा है आप मेरी इच्छा पूरी करेंगे ।

अंत में यह कामना करते हैं कि जिस श्रद्धा ने हमारा कल्याण किया वह आपका भी कल्याण करे ताकि आप महान बनने के अधिकारी हो सकें । आप सबका कल्याण हो सब स्वस्थ हों सब का समर्पण भाव बढ़ता रहे 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः सर्वे भद्राणि पश्यन्तु माकश्चिद् दुख माप्नुयात् ।'

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः । ✷

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परम पूज्य गुरुदेव की—:

श्रावणीपर्व की विशेष कार्यकर्ता गोष्ठी

इस माह "पूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी" प्रसंग के अन्तर्गत उनके द्वारा आज से तीन वर्ष पूर्व शांतिकुंज में कार्यकर्ताओं के बीच विशेष गोष्ठी की चर्चा की जा रही है। वे सभी प्रसंग जो इस चर्चा में आए हैं, आज भी उतने ही सामयिक हैं, जितने उस समय थे। सभी परिजनों से उस अवसर विशेष की भागीदारी करने के उद्देश्य से इस माह इस विशिष्ट गोष्ठी का वर्णन प्रस्तुत है।

हमारे तुम सब के बीच आने का एक ही उद्देश्य है कि हम समाज को सही व्यक्ति देकर जायँ। व्यक्ति होते तो यह सारा समाज नया हो जाता। सारे समाज का कायाकल्प हो जाता। पचास आदमी गाँधी के, बुद्ध के साथ थे। वे युग परिवर्तन कर सके क्योंकि उनके पास काम के इन्सान थे। विवेकानन्द के साथ निवेदिता थीं और कुछ काम के व्यक्ति थे। आज जहाँ देखो, वहीं जानवर नजर आते हैं। यदि काम के इंसान होते तो जमीन पलट दी गयी होती। तुम सब यहाँ आए हो तो काम के आदमी बन जाओ। हमने जीवन भर व्यक्ति के मर्म को छुआ है व अपना ब्राह्मण स्वरूप खोलकर रख दिया। नतीजा यह कि हमारे साथ अनगिनत आदमी जुड़े। तुम यदि सही अर्थों में जुड़े हो तो अपना भीतर वाला हिस्सा भी लोकसेवी का बनालो व समाज के लिए कुछ कर डालने का संकल्प ले डालो।

यहाँ शांतिकुंज में न्यूनतम पाँच सौ सशक्त कार्यकर्ताओं की सही मायने में आदमियों की जरूरत है। आदमियों के लिए जमीन प्यासी है व आकाश प्यासा है। यदि पूर्ति हो जाय, तो सारा सपना हमारा पूरा हो जाय। हमने ठहरने-खाने पीने की सारी व्यवस्था कर दी है। यहाँ आने वाला हर व्यक्ति अध्यात्म के, समाज सेवा के रंग में रंगकर जाय, यही हमारा उद्देश्य है। यह काम अकेले सम्भव नहीं है। तुम्हारा सहयोग इसके लिए हमें चाहिए। इसके लिए हमें तुम से कुछ भी नहीं व्यक्तित्व की साधना व तुम्हारा निष्काम समर्पण चाहिए।

गाँधी जी ने अपने साथ में रहने वाले सभी व्यक्तियों का व्यक्तित्व बना दिया था। वे, जो पूरी तरह जुड़े धन्य हो गये। श्रेय सौभाग्य के अधिकारी बने। तुम भी सही अर्थों में जुड़ जाओ तो तुम सबका व्यक्तित्व बने, सभी सँवर जाएँ। आज से ६२ वर्ष पूर्व हमने वसंत पर्व पर अपने भगवान से दीक्षा ली थी। यह कहा था कि अब "मैं— समाप्त होता हूँ व "आप" जीवित होते हैं। आपकी इच्छा मुख्य मेरी इच्छा गौण। समर्पण किया था हमने। अनगिनत उसकी उपलब्धियाँ हैं! हमारा व्यक्तित्व हमारी मार्गदर्शक सत्ता ने शानदार बना दिया। तुम सबका भी ऐसा ही बन जाए यदि तुम मन व आत्मा से समर्पण कर दो। यह हम कह इसलिए रहे हैं कि कहीं भावावेश में घर छोड़कर आए हो व मनमें तुम्हारे दुःख क्लेश बना रहे, इसके स्थान पर एक ही बार में सारी स्थिति स्पष्ट हो जाए। कहीं के तो बन सको तुम!

हमने जो समर्पण किया, बदले में हमारी मार्गदर्शक सत्ता ने हमें स्वयं को सौंप दिया। हमारे अंदर प्रभावोत्पादकता भरदी। वाणी में, लेखनी में, व्यक्तित्व में, दैनन्दिन आचरण में। यही तुम्हारे अंदर भी आ जाएगी। भगवान के हम कोई संबंधी थोड़े ही हैं, जो उनने हमारे साथ कोई विशेष पक्षपात किया हो। तब तुम्हें भी क्यों नहीं वही सब मिल सकता है जो हमें मिला। बस कसौटी एक ही "अहं" को गलाना-विसर्जन, समर्पण जब तक अहंकार जिन्दा है, आदमी दो कौड़ी का है। जिस दिन यह मिट जाएगा आदमी बेशकीमती हो जाएगा। 'अहं' ही है, जिसके कारण न सिद्धांत, न सेवा, न आदर्श आ पाते हैं। व्यक्ति लोकसेवा के क्षेत्र में प्रवेश करके भी उच्छृंखल स्तर का अनगढ़ बना रहता है। तुम्हें ईसा मसीह की बात सुनाता हूँ। उनके शिष्यों ने उनसे

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

कहा कि हम भी आपके समान महान बड़ा बनना चाहते हैं । हम क्या करें ? तो उनने एक ही जवाब दिया । बच्चो, जीवन भर मैं तिनका बना , विनम्र बना, गला तथा इसीलिए इतने बड़े वृक्ष के रूप में विकसित हो सका । अपनी इच्छा समाप्त कर दी तो सही अर्थों में बड़े बन गए । पहले तुम सब भी तिनके के समान छोटे बनो । तुम वैसा बन गए तो पेड़ भी बन सकोगे, इसमें कोई सन्देह नहीं है । वास्तव में सेण्टपाल भी इसी प्रकार सच्चे ईसाई थे व ईसा के बाद विकसित हुए । उनकी पीढ़ी के दूसरे महापुरुष वे विनम्रता–सेवाभावना निरहंकारिता के कारण ही बने ।

व्यक्ति को पहचानने की एक ही कसौटी है कि उसकी वाणी घटिया है या बढ़िया । व्याख्यान कला अलग है । मंच पर तो सभी शानदार मालूम पड़ते हैं । प्रत्यक्ष संपर्क में आते ही व्यक्ति नंगा हो जाता है । जो प्राण वाणी में है वही परस्पर चर्चा–व्यवहार में परिलक्षित होता है । वाणी ही व्यक्ति का स्तर बताती है । व्यक्तित्व को बनाने के लिए वाणी की विनम्रता जरूरी है । प्याज खाने वाले के मुँह से, शराब पीने वाले के मुँह से जिस प्रकार गंध आती है, पायरिया वाले मसूड़े के मुँह से जो बदबू आती है– वाणी की कठोरता ठीक इसी प्रकार मुँह से निकलती है । अशिष्टता छिप नहीं सकती । यह वाणी से पता चल ही जाती है । अनगढ़ता मिटाओ, दूसरों का सम्मान करना सीखो । तुम्हें प्रशंसा करना आता ही नहीं मात्र निन्दा करना आता है । व्यक्ति के अच्छे गुण देखो, उनका सम्मान करना सीखो । तुरंत तुम्हें परिणाम मिलना चालू हो जाएँगे । वाणी की विनम्रता का अर्थ चाटुकारिता नहीं है । फिर समझो इस बात को । कतई मतलब नहीं है चापलूसी का वाणी की मिठास से । दोनों नितान्त भिन्न चीजें हैं । दूसरों की अच्छाइयों की तारीफ करना, मीठी वाणी बोलना एक ऐसा सद्गुण है जो व्यक्ति को चुम्बक की तरह खींचता व अपना बनाता है । दूसरे सभी तुम्हारे अपने बन जाएँगे, यदि तुम यह गुण अपने अंदर पैदा कर लो । इसके लि[illegible] अहंकार को गलाओ । अपनी इच्छा, महत्त्वाकांक्षा, कामना, स्वाभिमान को गलाने का नाम समर्पण है, जिसे तुमसे करने को मैंने कहा है व इसकी अनन्त फलश्रुतियाँ सुनाई हैं । अपनी इमेज विनम्र से विनम्र बनाओ मैनेजर की, इन्चार्ज की, बॉस की नहीं बल्कि स्वयं सेवक की । जो स्वयं सेवक जितना बड़ा है, वह उतना ही विनम्र है, उतना ही महान बनने के बीजांकुर उसमें हैं । तुम सबमें वे मौजूद हैं । अहं की टकराहट बंद होते ही वे विकसित होना आरंभ हो जाएँगे । तुमने हम से दीक्षा तो ली है, पर यह अपने अंदर टटोलो कि तुमने समर्पण किया कि नहीं । यही पर्यवेक्षण इस श्रावणीपर्व पर अपने अंतरंग का करो ।

हमारी एक ही महत्वाकांक्षा है कि हम सहस्रभुजा वाले सहस्रशीर्षा पुरुषः बनना चाहते हैं । तुम सब हमारी भुजा बन जाओ, हमारे अंग बन जाओ यह हमारे मनकी बात है । गुरु–शिष्य एक दूसरे से अपने मनकी बात कहकर हलके हो जाते हैं । हमने अपने मनकी बात तुमसे कह दी । अब तुम पर निर्भर है कि तुम कितना हमारे बनते हो । पति–पत्नी की तरह गुरु व शिष्य की आत्मा में भी परस्पर व्याह होता है, दोनों एक दूसरे से घुलमिल कर एक हो जाते हैं । समर्पण का अर्थ है दो का अस्तित्व मिट कर एक हो जाना । तुम भी अपना अस्तित्व मिटाकर हमारे साथ मिला दो व अपनी क्षुद्र महत्वाकांक्षाओं को हमारी अनंत आध्यात्मिक महत्वाकांक्षाओं में विलीन कर दो । जिसका अहं जिन्दा है, वह वेश्या है । जिसका अहं मिट गया वह पतिव्रता है । देखना है कि हमारी भुजा, आँख, मस्तिष्क बनने के लिए तुम कितना अपने अहं को गला पाते हो । इसके लिए निरहंकारी बनो । स्वाभिमानी तो

सेठ जमनालाल बजाज वर्धा के प्रख्यात उद्योगपति थे । कारोबार की देखभाल करते हुए भी वे गाँधी जी के पाँचवे पुत्र थे और उनके निर्देशों पर अपनी गतिविधियाँ विनिर्मित करते रहे । उन्होंने गाँधीवादी प्रवृत्तियों को आगे बढ़ाने के लिए साधन जुटाने में प्राणपण से प्रयत्न किया । स्वतंत्रता आन्दोलन के लिए वे सम्पन्न लोगों से लाखों की राशि एकत्रित करने में सफल होते रहे । गाँधी जी मजाक में उन्हें कामधेनु कहते थे ।

श्री बजाज ने जो कमाया उसे मुक्त हस्त से सार्वजनिक प्रवृत्तियों को सींचने में खर्च किया ।

सम्पन्नता और सादगी का समन्वय देखते ही बनता था । जेल में उन्हें उच्च श्रेणी दी गई तो भी उनने अस्वीकार करके साधारण सत्याग्रहियों की तीसरी श्रेणी में ही स्थानान्तरण करा लिया ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

होना चाहिए पर निरहंकारी बनकर। निरहंकारी का प्रथम चिन्ह है वाणी की मिठास।

वाणी व्यक्तित्व का प्रमुख हथियार है। सामने वाले पर वार करना हो तो तलवार नहीं, कलाई नहीं, हिम्मत की पूछ होती है। हिम्मत न हो तो हाथ में तलवार हो भी तो बेकार है। यदि वाणी सही है तो तुम्हारा व्यक्तित्व जीवन्त हो जाएगा बोलने लगेगा व सामने वाले को अपना बनालेगा। अपनी विनम्रता दूसरों का सम्मान व बोलने में मिठास यही व्यक्तित्व के प्रमुख हथियार हैं। इनका सही उपयोग करोगे तो व्यक्तित्व वजनदार बनेगा।

तुम्हीं को कुम्हार व तुम्हीं को चाक बनना है। हमने तो अनगढ़ सोना-चाँदी ढेरों लाकर रख दिया है, तुम्हीं को साँचा बनाकर सही सिक्के ढालना है। साँचा सही होगा तो सिक्के भी ठीक आकार के बनेंगे। आज दुनिया में पार्टियाँ तो बहुत हैं पर किसी के पास कार्यकर्ता नहीं हैं। 'लेबर' सबके पास है पर समर्पित कार्यकर्ता जो साँचा बनता है व कई को बना देता है अपने जैसा, कहीं भी नहीं है। हमारी यह दिल्ली ख्वाहिश है कि हम अपने पीछे कार्यकर्ता छोड़ कर जाएँ। इन सभी को सही अर्थों में 'डाई' एक साँचा बनना पड़ेगा तथा वही सबसे मुश्किल काम है। रॉमेटेरियल तो ढेरों कहीं भी मिल सकता है पर "डाई" कहीं-कहीं मिल पाती है। श्रेष्ठ कार्यकर्ता श्रेष्टतम "डाई" बनता है। तुम सबसे अपेक्षा कि अपने गुरु की तरह एक श्रेष्ठ साँचा बनोगे।

तुमसे दो और अपेक्षा। एक श्रम का सम्मान। यह भौतिक जगत का देवता है। मोती हीरे श्रम से ही निकलते हैं। दूसरी अपेक्षा यह कि सेवाबुद्धि के विकास के लिए सहकारिता का अभ्यास। संगठन शक्ति सहकारिता से ही पहले भी बढ़ी है, आगे भी इसी से बढ़ेगी।

हमारे राष्ट्र का दुर्भाग्य यह कि श्रम की महत्ता हमने समझी नहीं। श्रमका माद्दा इस सब में असीम है। हमने कभी उसका मूल्यांकन किया ही नहीं। हमारा जीवन निरन्तर श्रम का ही परिणाम है। बीस-बीस घण्टे तन्मयतापूर्वक श्रम हमने किया है। तुम भी कभी श्रमकी उपेक्षा मत करना। मालिक बारह घण्टे काम करता है, नौकर आठ घण्टे तथा चोर चार घण्टे काम करता है। तुम सब अपने आप से पूछो कि हम तीनों में से क्या हैं। जीभ चलाने के साथ कठोर परिश्रम करो, अपनी योग्यताएँ बढ़ाओ व निरन्तर प्रगति पथ पर बढ़ते जाओ।

दूसरी बात सहकारिता की। इसी को पुण्य परमार्थ, सेवा उदारता कहते हैं। अपना मन सभी से मिलाओ। मिलजुल कर रहना, अपना सुख बाँटना, दुःख बँटाना सीखो। यही सही अर्थों में ब्राह्मणत्व की साधना है। साधु तुम अभी बने नहीं हो। मन से ब्राह्मणत्व की साधना करोगे तो पहले ब्राह्मण बनो। साधु अपने आप बन जाओगे। पीले कपड़े पहनते हो कि नहीं, पर मन को पीला कर लो। सेवाबुद्धि का, दूसरों के प्रति पीड़ा का, भावसंवेदना का विकास करना ही साधुता को जगाना है। आज इस वर्ष श्रावणी पर्व पर तुमसे कुछ अपेक्षाएँ हैं। आशा है तुम इन्हें अक्षय पूरा करोगे व हेमाद्रि संकल्प के साथ ही गुरु जी की मुख आँख व पैर बन जाने का संकल्प लोगे। यही आत्मा की हमारी वाणी है जो तुम से कुछ कराना चाहती है, इतिहास में तुम्हें अमर देखना चाहती है। देखना है कितना तुम हमारी बात को जीवन में उतार पाते हो।

हमारी बात समाप्त। ✱

पत्नी और बच्चों को अनाथ छोड़कर ही एक व्यक्ति घर से भाग निकला आत्म कल्याण के लिए। किसी संत के पास जाकर वह भगवत्प्राप्ति का उपाय पूछने लगा। उस व्यक्ति ने अपने त्याग की कहानी सुनाते हुये यों कहा-

मेरी पत्नी उस समय सो रही थी, एकाएक बच्चा चीखा तो मुझे लगा अब पत्नी जाग पड़ेगी और मेरा घर से निकलना कठिन हो जायेगा पर पत्नी ने बच्चे को छाती से लगाया बच्चा चुप हो गया। मैं चुपचाप निकल आया। महात्मन्! अब संसार की मोह माया में फँसना नहीं चाहता।

साधु बोले-मूर्ख दो भगवान तो तेरे घर में ही बैठे हैं, जिन्हें तू छोड़ आया। जा! जब तक तू उनकी सेवा नहीं करेगा, तब तक तेरा उद्धार नहीं। त्याग कर्तव्यों का नहीं अंतःकरण के विकारों का किया जाता है।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परम पूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी—साधना से सिद्धि

इस अंक में ''अमृतवाणी'' स्तम्भ के अन्तर्गत परमपूज्य गुरुदेव द्वारा सूक्ष्मीकरण साधना के दौरान २१ अप्रेल १९८४ को ''साधना से सिद्धि'' विषय पर परिजनों के लिए दिया गया टेप संदेश प्रस्तुत है। उद्बोधन की बावजूद दिए जाने का पूरा प्रयास किया गया है।

भाइयो ,

आप में से सैकड़ों व्यक्ति शिकायत करते पाए गए हैं कि हमें अपनी साधना से सिद्धि नहीं मिली। हमने इतना जप किया, इतना पूजा पाठ किया, इतना भजन किया लेकिन हमको तो कोई चमत्कार दिखाई नहीं पड़ा। मेरे ख्याल से अधिकांश आदमी आप में ऐसे हैं जो ऐसी शिकायत करते पाए जाते हैं। तो क्या पूजा पाठ का, मंत्र जप का विधान गलत है, क्या यह ऋषियों की धोखेबाजी है, ऐसा ही एक बौद्धिक मायाजाल है ? न, ऐसी बात नहीं। अगर आपने ऐसा विचार किया है, व आप निराश हो गए हैं कि पूजा पाठ—साधना से कोई लाभ नहीं होता तो आप मन से अपने इन विचारों को निकाल दीजिए। मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि ''साधना से सिद्धि—' अवश्य मिलती है।

आपके सामने मैं एक ऐसा गवाह पेश करना चाहता हूँ, जिससे आप चाहें तो जिरह भी कर सकते हैं व इम्तहान लेना चाहें तो वह भी ले सकते हैं। कौन है वह गवाह ? वह मैं स्वयं हूँ। आप मुझे किसी भी प्रयागशाला में, किसी भी अदालत में खड़ा कर दीजिए व देखिए कि इस आदमी ने साधना की है व इसे सिद्धियाँ मिली हैं कि नहीं ? आप जिरह कीजिए व प्रमाण मिलने पर ही इसे सच मानिए।

वास्तव में साधना से सिद्धि का जुड़ा हुआ संबंध है। ऐसा जैसे कि बोने व काटने के बीच होता है। बोयेंगे तो आप काटेंगे भी। इसी तरह आप साधना करेंगे तो सिद्धियाँ भी आपको मिलेंगी। हमने साधना सही ढंग से की है व आपने गलत ढंग से की है। इसीलिए आप शिकायत करते पाए जाते हैं। गलत यह कि मात्र बीज बोना ही काफी नहीं, उसमें खाद—पानी देना भी उतना ही जरूरी है। खाद आप देंगे नहीं पानी आप लगाएँगे नहीं तो आपकी उम्मीद लगाना कि फसल पैदा होगी, पेड़ में फल लगेंगे गलत है। साधना का बीज बोया हमनें पर खाद पानी भी साथ लगाया। इसीलिए फला। कैसे लगाया जाता है खाद—पानी। चलिए मैं आपको दो घटनाएँ अपने जीवन की सुना देता हूँ। सारी तो बहुत अधिक हैं, मुश्किल पड़ेगी। पर दो घटनाएँ सुना देता हूँ।

एक यह कि हमारे पिताजी दस वर्ष की उम्र में हमें महामना मालवीय जी के पास हिंदू विश्वविद्यालय में ले गए थे व हमारा दीक्षा संस्कार कराया था ; मालवीयजी ने हमें गायत्री मंत्र दिया था, एक जनेऊ पहनाया था व एक खास बात हमारे कान में कही थी, जो अभी तक याद है। वह यह कि ''गायत्री ही कामधेनु है। कामधेनु होते हुए भी मात्र ब्राह्मण की कामधेनु है। कामधेनु स्वर्गलोक की एक गाय है जिसका दूध पीकर देवता अजर—अमर हो जाते हैं। गायत्री मंत्र सबके लिए नहीं, मात्र ब्राह्मण के लिए कामधेनु है। इसके लिए ब्राह्मण बनना चाहिए। ब्राह्मण उसे कहते हैं जो औसत नागरिक के हिसाब से गुजारा कर ले व बचे समय को समाज के लिए लगा दे। ज्ञान और विचार में लान रहे। स्वार्थ को परमार्थ में बदल दे।'' मैंने यह बात अच्छी तरह समझ ली। पिताजी व मालवीय जी से पूछकर समाधान कर लिया व बात पत्थर की लकीर की तरह मन में बैठ गयी है।

मैं गायत्री मंत्र का जप करने लगा। जप के साथ यह ध्यान मन में बना रहा कि मुझे ब्राह्मण बनना है। बराबर यही ख्याल रहा। इसका फल क्या हुआ ? पाँच साल के भीतर ब्राह्मणत्व इतना विकसित हुआ कि एक और गुरु मेरे घर आए पंद्रह साल की आयु में। यह मेरे जीवन की दूसरी घटना। गुरु

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

स्वयं घर आए । हम नहीं गए उनकी तलाश में । गुरु तलाश करते हुए स्वयं आते हैं । उनकी तलाश करना बेकार है क्योंकि पात्रता जब तक विकसित नहीं होती तब तक कोई गुरु नहीं आता । कच्चे फल होते हैं तो खाने के लिए कोई चिड़िया नहीं आती किन्तु फल के पकने की सुगंध आते ही जाने कहाँ कहाँ से चिड़िया आ जाती हैं व फल खाने लगती हैं । ऐसा ही हुआ । मैंने ब्राह्मणत्व का जीवन जिया । बदले में सूक्ष्म शरीर से मेरे गुरु मेरे पास आए व हमसे कहा कि गायत्री का जो बाकी हिस्सा रह गया है, वह हम तुम्हें सिखाएँगे । उनने कहा कि गायत्री मंत्र तो यही है पर इसके साथ एक और सिद्धान्त है बोया और काटा । क्या मतलब है ? जो कुछ भी तुम्हारे पास है, उसे भगवान के खेत में बीज की तरह बोना शुरू करो और तुम्हारे पास सौगुना ज्यादा होता चला जाएगा । मक्का, बाजरा खेत में बोते हैं तो एक दाने के बदले सौ दाने पैदा हो जाते हैं । तू बोना और काटना शुरू कर । मैंने कहा कहाँ ? तो उनने कहा—भगवान के खेत में । मैंने पूछा भगवान का खेत कहाँ है तो उनने कहा—सारा समाज भगवान का ही विराट रूप है । किसी ने भी आज तक भगवान को आँख से नहीं देखा है क्योंकि वह निराकार है, व्यापक है । कैसे उसे देख सकेंगे । आग को तो देख सकते हैं पर गर्मी को कैसे देखेंगे ? हवा को कैसे देखेंगे ? भगवान को देखा नहीं जा सकता, अनुभव किया जा सकता है बस ! तू भगवान के खेत में बोना शुरू कर । तेरे पास सम्पत्ति है उसे देख ! तुझे चमत्कार मिलता है कि नहीं । हमने कहा—हमारे पास तो कुछ भी नहीं है । यह हम कुरता—धोती पहने बैठे हैं बस । उनने कहा—तीन चीजें तो तू भगवान के यहाँ से लेकर आया है । एक तूने अपने पुरुषार्थ से कमाई है । चाहे इस जन्म में कमाई हो । चाहे पिछले जन्मों की कमाई हो । चार चीजें तेरे पास हैं—यह शरीर व उसके साथ जुड़ी तीन चीजें समय, श्रम व बुद्धि । चौथी तेरी सम्पत्ति । इन सबको भगवान के लिए लगा । तू लगाएगा तो देखेगा कि यह सौगुना ज्यादा होकर आ रहा है ।

सूक्ष्म शरीरधारी उन गुरु का भी मैंने कहना मानना शुरू कर दिया । मैंने मालवीय जी के कहे अनुसार अपने जीवन को ब्राह्मण जैसा बनाने की कोशिश की । ब्राह्मण माने संयमी । संयमी माने वह जिसने अपनी इन्द्रियों पर, धन, समय व विचारों पर नियंत्रण कर लिया हो । सारी शक्तियाँ एकाग्र हो गयीं । जैसे आप फैली बारूद को जलाते हैं तो भक्क से जल जाती है एवं इक्ट्ठी की बारूद को गोली के रूप में चलाते हैं तो कमाल दिखाती है । एकाग्रता इसी का नाम है । इस तरह हमने अपने आपको एकाग्र कर लिया, अपने आप पर संयम कर लिया । ध्यान की एकाग्रता में क्या रखा है ? आप चाहे घण्टों बैठें । ध्यान की नहीं, समग्र जीवन की एकाग्रता । हमने अपने आपको ब्राह्मण बनाने की कोशिश की दस साल से पंद्रह साल की उम्र तक । पाँच वर्ष तक पूरा यत्न रहा कि ब्राह्मण का चिंतन, व्यवहार जैसा होना चाहिए, वैसा हो । हम ब्राह्मण बन गए । क्यों ? आप नहीं थे क्या ? कौम से तो हम ब्राह्मण थे, एक सनाढ्य ब्राह्मण के घर जन्म हुआ है हमारा, पर कोई भी आदमी जन्म से ब्राह्मण नहीं होता, कर्म से होता है । हमने कर्म से अपने आप को ब्राह्मण बनाया । जब हमारी उम्र काफी हो गयी तो हमारे पास हिंदुस्तान के बड़े पहुँचे हुए ऊँचे आदमी आए । उनने यह सुना था कि इस आदमी की जबान से जो कुछ निकल जाता है, वह सौ फीसदी सच हो जाता है । कैसे हो जाता है ? श्रृंगी ऋषि का नाम आपने सुना होगा । उनने एक शाप दिया तो राजा परीक्षित मिट्टी में मिल गया व वरदान दिया तो राजा दशरथ जिसे बच्चे नहीं होते थे, एक साथ चार बच्चे हुए उनको यह ब्राह्मण की जिव्हा है । हर आदमी नहीं होता ब्राह्मण । ब्राह्मण कौम से नहीं, कर्म से । उनने पूछा—कि यह सिद्धियाँ आपको कैसे मिलीं, हमें भी सिखा दीजिए । हमने उनसे कहा कि जितनी भी सिद्धियाँ हमने पाई हैं, यह हमारे ब्राह्मण बनने की सिद्धियाँ हैं । ब्राह्मणत्व का ही चमत्कार देखा है अब तक लोगों ने । साधना व तप को तो तिजोरी में बन्द करके रखा है । उसको हम सारे संसार के एक बड़े काम में खर्च करेंगे । यह जो कह देते हैं तो उससे किसी का भला हो जाता है—यह मात्र ब्राह्मण की विशेषता है ।

किन्तु जब हमने पहली किताब छापी व उसका नाम रखा "गायत्री ब्राह्मण की कामधेनु है" तो लोग शिकायत करने लगे कि पुराणखण्डी पण्डित भी यही कहते हैं कि गायत्री मात्र ब्राह्मणों को जपनी चाहिए और कौमों को नहीं तो हमने कहा सब पागल हैं ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

क्या विषय चल रहा है व कहीं से कहीं ले जाते हैं । वंश जन्म से नहीं, कर्म से चलता है । महात्मा गाँधी बनिया नहीं, ब्राह्मण थे । हमने अपने को कर्म से ब्राह्मण बनाया । जब लोगों की शिकायतें किताब के संबंध में आईं तो मैंने कहा अरे ! यह तो लोगों ने गलत मतलब निकाल लिया । मैं क्या कहना चाहता था ये क्या समझे । मैं कर्म से ब्राह्मण कह रहा था, इनने जन्म से मतलब निकाल लिया । दुबारा किताब छपी तो मैंने ब्राह्मण शब्द निकालकर लिखा "गायत्री ही कामधेनु है ।" बस ! इतना ही नाम किन्तु अभी भी मेरा विश्वास है कि गायत्री मात्र ब्राह्मण की कामधेनु है और किसी की है क्या ? चोर की है ? नहीं । ठग की, उठाईगीरे व जालसाज की भी नहीं । साधना करने से पहले ब्राह्मण बनना पड़ता है । कपड़े को रँगने से पहले धोना पड़ता है । मैले कपड़े पर कभी रंग नहीं चढ़ता । अपने आपको शुद्ध व पवित्र बनाने के लिए, जीवन का शोधन करने के लिए सेवा करनी पड़ती है । परोपकार और पुण्य इन दोनों के बिना जीवन शोधन संभव नहीं है । सेवा किए बिना कोई साधना सफल नहीं हो सकती ।

ब्राह्मण–साधु पहले सारा जीवन सेवा करते थे । आज तो साधु का नाम भी नहीं दिखाई पड़ता । आज तो यह बाबाजी दिखाई देते हैं, जो भीख माँगते हैं व माला घुमाते हैं कि किसी तरह ऋद्धि मिल जाए, सिद्धि मिल जाए, बैकुण्ठ मिल जाए । इसी जंजाल में रहते हैं । हमने अपना जीवन पुराने ऋषियों के जीवन के आधार पर सेवा में लगाया । पूजा जो भी करनी हो रात्रि में सोने से पहले व दिन में सूरज उगने से पहले कर ली । सूर्य निकलने से अस्त होने तक हम समाज सेवा में लगे रहते हैं । यही हमारा भजन है, यही हमारी पूजा है ।

हमने चारों सम्पत्तियों को गुरु के कहे अनुसार समाज के खेत में बोया । समय को हमने समाज में लगा दिया । श्रम भी हमारा इसी निमित्त लगा । हमारे पसीने की एक बूँद भी व्यापार–पैसा कमाने में खर्च नहीं हुई । हमारी बुद्धि ने कभी भी जालसाजी नहीं की, न चोरी की । मात्र यही सोचती रही कि लोक कल्याण कैसे हो सकता है ? समाज में सत्प्रवृत्ति कैसे बढ़ाई जाय इसी में बुद्धि लगी । इन तीनों चीजों को बोने से आपको क्या मिला ? समय का हमने ठीक उपयोग किया तो उसे हमने पाँच गुना बढ़ा लिया । अभी तक की हमारी जिन्दगी का लेखा जोखा लें तो देखें कितना बड़ा संगठन हमने अकेले खड़ा कर दिया । चौबीस लाख के चौबीस पुरश्चरण संपन्न किए । शरीर के वजन से भी ज्यादा साहित्य लिखकर रख दिया । पाँच आदमी निरन्तर आठ घण्टे रोज लगें तो जितना काम हो उतना हमने रोजाना किया । हमारा समय पाँच सौगुना होकर हमारे पास चला आया । थोड़ी सी जिन्दगी में जो कमाल करके दिखा दिया वह दो सौ वर्षों में भी नहीं हो सकता ।

श्रम हमने किया जनता को सुखी बनाने के लिए । हमारे घर से खाली हाथ कोई नहीं गया । हर आदमी का यह कहना है कि जो भी इनके घर आया, प्यासा, भूखा वापस नहीं गया । बिना दवादारू के नहीं गया । क्योंकि हम सेवा करते हैं । सेवा अर्थात् प्यार । प्यार माने सेवा । हमने दूसरों के लिए जीवन भर श्रम किया है, प्यार दिया है–जीवन भर प्यार बाँटा है व बदले में समेटा है । हमारी जिन्दगी प्यार में लबालब व सराबोर है । ये लाखों आदमी जो हमारे इशारे पर चलते हैं, हमारे व्याख्यानों का फल नहीं है, यह हमारे जीवन के उस हिस्से का परिणाम है जिसके द्वारा हमने लोगों को प्यार किया व दिया है । बदले में पाया है, यह सही है ।

बुद्धि हमारी इतनी बड़ी कि हम लाखों आदमियों की टेढ़ी बुद्धि को उलटकर सीधा कर देते हैं । हमने न एम. ए. किया न कोई डिग्री ली । पर हम प्लानिंग

एक सन्त बड़े संयमी थे । बहुत आचार विचार से रहते । फिर भी वे रोगी बने रहते । चिकित्सा से भी कुछ लाभ न हुआ ।

एक दिन वे किसी तत्वज्ञानी के पास इसका कारण पूछने गये । उनने लम्बी पूछ ताछ की और वस्तु स्थिति को समझा ।

तत्वज्ञानी ने अपना निष्कर्ष बताया कि शरीर से तो आपकी संयम साधना ठीक चल रही है । पर मन में वासनाएँ तृष्णाएँ सदा उमड़ती घुमड़ती रहती हैं मात्र लोक लाज से ही उन्हें आप कार्यान्वित नहीं कर पाते । मनकी यह घुटन ही आपको असमंजस में डाले रहती है और बीमार करती है ।

उनका निर्णय था कि यदि संयमी होने का प्रदर्शन करना है तो मन को भी सही करें और भीतर बाहर से एक से रहें । अन्यथा गृहस्थ रहकर साधारण जीवन बिताना ही ठीक है । भीतर बाहर से एकसी स्थिति में रहना ही श्रेयस्कर है ।

संयमी ने वही किया और वे निरोग हो गये ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

करते हैं । सारे समाज का, सारे विश्व के कायाकल्प का प्लानिंग । जो कोई भी कमीशन नहीं कर सकता । साहित्य जो हमने लिखा है व वेद–पुराण आदि का भाष्य किया है, इससे अंदाज मत लगाइए कि हम कितने बुद्धिमान हैं । यह देखिए कि हमारी बुद्धि कितनी बड़ी–बड़ी सार्थक योजनाएँ बनाती है । किस दिशा में चलती है । सारे युग का नवनिर्माण कैसे हो, यह हमारी बुद्धि ने सोचा है व करेगी ।

चौथी सम्पत्ति–हमारा धन । धन कहाँ है आपके पास ? धन हमने तो कमाया नहीं पर हमारे पूर्व जन्म का कमाया हुआ था जो हमारे पिताजी छोड़ कर मरे थे । २००० बीघा जमीन हमारे पास थी । इसे जब हम समाज सेवा में पदार्पण करने लगे तो बच्चों से पूछा कि पुश्तैनी जायदाद होने के नाते क़ानूनी हक तो तुम्हारा भी है । लेकिन हमारी इच्छा है कि इस हक को तुम छोड़ दो क्योंकि यह कानून चोरों ने बनाया व चोरों के लिए बनाया है । नैतिकता का कानून भिन्न है । इस जायदाद को समाज को दे देना चाहिए । बताओ, क्या राय है तुम्हारी । दोनों बच्चों ने कहा–पिताजी ! आपने हमें पढ़ा दिया है, हमें लायक बना दिया है । अब हमें एक पैसा भी नहीं चाहिए । हमने सारी जमीन दान कर दी । पत्नी के पास जो जेवर थे वे भी बिक गए । किश्तों में हम देते चले गए व किश्तें लगती चली गयीं । पहली उस स्कूल में लगी जो हमारे गाँव में बना व अब एक इण्टर कॉलेज बन गया है । फिर अगली हमने गायत्री तपोभूमि में लगा दी । इस में औरों का भी पैसा लगा है पर पहली किश्त हमारी है । आपने शांतिकुंज देखा है, ब्रह्मवर्चस् देखा है, चौबीस सौ शक्ति पीठें देखी हैं । करोड़ों रुपये की बिल्डिंगें हैं यह । इनसे आपको अंदाज लगेगा कि कितना धन हमने भगवान के खेत में बोया व कितना गुना यह हो गया । सहस्रकुण्डी यज्ञ जो हमने मथुरा में किया से लेकर यहाँ के रोजाना खर्च का आप हिसाब लगाएँ तो पता चलेगा कि लाखों रुपये रोज का खर्च है । न जाने कहाँ से आता है यह । हमने प्रतिज्ञा की हुई है कि हम मनुष्य के आगे हाथ नहीं फैलाएँगे । लेकिन भगवान हमें सब देता चला गया । हमने न कभी ईमान गँवाया न भगवान को । इसका परिणाम यह कि जितना हमने बोया, उससे कहीं अधिक काटा है । साधना की सिद्धि जितनी मिलनी चाहिए थी , हमें मिलती चली गयी । अभी और आपका बचा हुआ समय है, उसके बारे में बताइए ? जब तक हमारा शरीर है, तब तक व्यक्ति के ही नहीं समाज के निमित्त हमारा रोम–रोम लगेगा, यह हमारा संकल्प है ।

साधना से सिद्धि का सिद्धान्त उपासना, साधना, आराधना इन तीन सूत्रों पर चला है । ये तीनों क्या हैं ? ये हैं जमीन , खाद और पानी । भगवान के चरणों में हमने अपने आपको समर्पित किया है व भगवान जितने शक्तिशाली हैं, उतने ही हम हो गए । ईंधन को आग में डाल देते हैं, वह भी उतना ही गरम और आग जैसा हो जाता है । हम भी वैसे ही हो गए हैं । यह उपासना है । साधना हमने जीवन भर की है । साधना अर्थात् माला जपना नहीं, साधक का जीवन जीना । हमने अपनी इन्द्रियों को साधा है । मनको , बुद्धि को संयत किया है, ठीक तरह से रखा है । यह साधना है । तीसरी आराधना वह, जिसके लिए हमने आपको अभी कहा । यह है समाज के लिए, देश के लिए , संस्कृति के लिए, भगवान के लिए जीवन जीना । भगवान का विराट रूप यही है । जन मानस को ऊँचा उठाने के लिए लगे रहने को आराधना कहते हैं । हमने जीवन भर आराधना साधना व उपासना की है तथा उसका परिणाम हमारे सामने है । यही आप अपने जीवन में देखना चाहें तो आप भी प्रयोग कर सकते हैं । फिर आप हमें बताइए कि आपकी साधना सिद्धि की दिशा में फली कि नहीं । हमारी बात समाप्त । ॐ शांतिः । ✱

महाभारत चल रहा था । कौरव पाण्डवों के बीच भयंकर युद्ध चल रहा था । कर्ण और अर्जुन के बीच भयंकर बाण वर्षा चल रही थी ।

अवसर पाकर एक भयंकर सर्प कर्ण के तूणीर में घुस गया । कर्ण ने बाण निकाला तो स्पर्श कुछ अनोखा लगा । उसने सर्प को देखा और आश्चर्य से पूछा तुम यहाँ किस प्रकार आगये ।

सर्प ने कहा अर्जुन ने एक बार खाण्डव वन में आग लगा दी थी । उसमें मेरी माता जल गई । तभी से मेरे मन में प्रतिशोध जल रहा है और इस ताक में था कि कोई अवसर मिले और मैं अर्जुन के प्राण हरण करूँ । आप मुझे तीर के स्थान पर चला दें । मैं जाते ही अर्जुन को डस लूँगा । आपका शत्रु मर जायगा और मेरा प्रतिशोध शान्त हो जायगा ।

कर्ण ने कहा अनैतिक उपाय से सफलता पाने का मेरा तनिक भी विचार नहीं है । सर्प देव आप वापस लौट जावें ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परम पूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

संजीवनी विद्या क्यों व किस के लिए ?

"अमृतवाणी" स्तम्भ में प्रस्तुत है, परमपूज्य गुरुदेव द्वारा २२ अप्रेल १९८४ को संजीवनी विद्या—जीवन जीने की कला के शिक्षण की महत्ता व अनिवार्यता पर परिजनों के लिए दिया गया संदेश व प्रशिक्षण हेतु शांतिकुंज आने का आमंत्रण ।

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ बोलिए। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

मित्रो । जानवर की एक विशेषता यह होती है कि उसे अपने पेट की हमेशा फिक्र बनी रहती है । जब वह जवान होता है तो उसे सन्तान पैदा करने का ख्याल आता है । दो के अलावा वह और कोई काम कर नहीं पाता और इन्सान ? इन्सान देखने में तो वह जानवरों जैसा ही मालूम होता है किन्तु उसमें भावनाएँ पाई जाती हैं वनमानुष , बंदर, लँगूर शायद आपने देखे हों , इनसे मिलता जुलता है आदमी का देह । लेकिन उसकी विशेषता खास तौर से ये है कि उसमें भावनाएँ होती हैं कहीं अकाल पड़ता है तो आदमी अपने अनाज के कोठों को खाली कर देता है । कहता है हम अकेले जीकर के क्या करेंगे । बाकी लोग भी खायें तो क्या हर्ज है ? यदि किसी के छप्पर में, मुहल्ले में आग लगे तो वह सबसे पहले दौड़ता है आग बुझाने के लिए । यह क्या है ? यह है आदमी की भावनाएँ । दूसरों की सेवा के लिए दौड़ पड़ना, यह इंसानियत की एक ही परीक्षा है । अगर यह परीक्षा में फेल हो जाय तो जानना चाहिए कि शकल इन्सान जैसी भले हो, पर है वो वास्तव में जानवर ! जानवर !!

इस समय जिसमें आप हमारी बात सुन रहे हैं, ऐसा समय है जिसको सामान्य नहीं कह सकते । इसे असामान्य ही कहा जाएगा । वैसे आपका सूरज सबेरे निकलता है, शाम को अस्त हो जाता है । कूएँ से पानी निकालते हैं चक्की से आटा पीसते हैं, चौके से खाना खा लेते हैं । समय मामूली सा मालूम पड़ता है , लेकिन हम और आप विचारपूर्वक अगर इसका अन्दाज लगाना चाहें तो मालूम पड़ेगा कि यह बहुत भयंकर समय है । इस भयंकर समय में तूफान भले ही न आते हों आपके ऊपर । घनघोर बारिश भले ही न होती हो, लेकिन संसार की निगाह से और जरा लम्बी दृष्टि फेंककर देखेंगे तो आपको मालूम पड़ेगा कि यह बहुत ही असाधारण समय है । इस समय में हवा में जहर ही जहर घुला हुआ है । जो साँस आप लेते हैं उससे आपके भीतर जहर चला जा रहा है और आपकी जिन्दगी को रोज कम कर रहा है ।

इस भयंकर समय में प्रत्येक आदमी के ऊपर मुसीबत छाई हुई है । थोड़े आदमियों के ऊपर नहीं बहुत आदमियों के ऊपर, सारे संसार के ऊपर । पानी गंदा हुआ जा रहा है । विकिरण बढ़ता जा रहा है । इससे बच्चे अपाहिज लंगड़े-लूले पैदा हो रहे हैं । जन संख्या की दृष्टि से आदमी किस कदर बढ़ता हुआ चला जा रहा है और खाने के लिए सामान कम पड़ता चला जा रहा है । आपने देखा, सुना ? आपकी इतनी उमर हो गयी ? जिस भाव से आपको आज गेहूँ मिलता है , चावल घी मिलता है, क्या आपने इससे पहले कभी सुना था—नहीं । कभी नहीं सुना था । यह महँगाई बढ़ रही है । अभी और बढ़ेगी । मुझे घटने की कोई सूरत नजर नहीं आती , वस्तुतः यह मुसीबत का समय है और आदमी पर मुसीबतें बढ़ती ही चली जा रही हैं, और बढ़ेंगी अभी ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

यह ऐसा समय है जिसमें किसी को किसी पर विश्वास नहीं रह गया है । आतंक और आशंकाओं से वातावरण चारों ओर घिरा हुआ है सड़क पर जब आप निकलते हैं तो मालूम नहीं कि आपके साथ पड़ोस में चलने वाला व्यक्ति आपको चाकू भोंककर कब आपकी सम्पत्ति छीन लेगा इसका क्या विश्वास है । इंसान का चाल–चलन, इंसान का विचार इतना गंदा घटिया हो गया है कि यह स्थिति अगर बनी रही तो कोई किसी पर विश्वास नहीं करेगा , न भाई–भाई पर विश्वास करेगा, न स्त्री पुरुष पर विश्वास करेगी न पुरुष स्त्री पर विश्वास करेगा । ऐसा गंदा–ऐसा वाहियात समय है यह । यह समय इसलिए भी घटिया और बाड़ियात है कि नेचर हमसे आप सबसे नाराज हो गयी है । प्रकृति हम सबसे नाराज हो गयी है । जब उसकी मौज आती है तो अंधाधुन्ध बरसा देती है और जब मूड आता है तो सूखा नजर आता है । कहीं मौसम का ठिकाना नहीं कि मौसम पर पानी बरसेगा कि नहीं ठण्ड के समय ठण्ड ही पड़ेगी कि गर्मी पड़ेगी । कोई नहीं कह सकता । भूकम्प कब आजाएँ कोई नहीं कह सकता , ज्वालामुखी कब फट जाएँ कोई नहीं कह सकता । बाढ़ कब आजाए कोई ठिकाना नहीं । नेचर हम सबसे बिल्कुल नाराज हो गयी है, इसलिए उसने काम करना बन्द कर दिया है । यह ऐसा भयंकर समय है ।

ऐसे भयंकर समय में क्या आपके ऊपर कोई जिम्मेदारी नहीं है ? क्या आपके कोई कर्तव्य नहीं हैं ? क्या आपके अंदर भावनाएँ नहीं हैं ? क्या आपका हृदय पत्थर और लोहे का हो गया है ? नहीं मेरा ख्याल है कि सब आदमियों का ऐसा नहीं हुआ होगा । ज्यादातर लोगों का तो ऐसा ही हुआ है कि वे घटते–घटते जानवर के तरीके से बनते चले जा रहे हैं । जवान आदमी जब ज्यादा बुड्ढा हो जाता है तो कमर झुकने लगती है, आँखे नीची हो जाती हैं, लाठी टेक टेक कर चलता है , इन्सान की जवानी चली जाती है तो वह बौना हो जाता है, घटिया हो जाता है, कमर झुक जाती है , उसका आसमान की ओर देखने का न मन होता है, न उसकी बनावट ही ऐसी रह जाती है कि वह ऊपर देखे । अधिकांश आदमी आज ऐसे हो गए हैं ।

ऊपर की ओर सिर उठाकर देखेंगे, हमें आपसे यह उम्मीद है । यह उम्मीद है कि ऐसे भयंकर समय में अपना सारा वक्त केवल पेट पालने के लिए और संतान पैदा करने के लिए जाया नहीं करेंगे । अगर आप चाहें तो ढेरों समय बचा सकते हैं , बीस घण्टे में अपना अपने शरीर व कुटुम्ब का आराम से आप गुजारा कर सकते हैं, । आठ घण्टा काम करने के लिए सात घण्टा विश्राम के लिए और पाँच घण्टा घरेलू काम के लिए । फिर भी चार घण्टा आप समाज के लिए आयी हुई परिस्थितियों का मुकाबला करने के लिए, समय को ऊँचा उठाने के लिए, इंसान का भाग्य और भविष्य शानदार बनाने के लिए आप लगा सकते हैं । करना ही पड़ेगा यह आपको । इसमें तो नुकसान पड़ेगा ? नहीं, मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि नुकसान नहीं पड़ेगा । जिनने भी अपने समय को लोक सेवा में लगाया है, वे चाहे गाँधी रहे हों या नेहरू, बिनोवा रहे हों या दिवेकानन्द किसी भी तरह वे नुकसान में नहीं रहे हैं । वे ऊँचा उठे हैं, आगे बढ़े हैं और उनने हजारों आदमियों को ऊँचा उठाया व आगे बढ़ाया है । स्वयं भी नफे में रहे हैं । वे नुकसान में रहे ? क्या नुकसान में रहे आप बताइए ? किसी एक का नाम तो बताइए ।

गाँधी जी ने वकालत की होती तो वकालत में कितना कमा लेते ? लेकिन जब उनने अपना समय सेवा में लगा दिया तो आप बताइए, क्या कमी रह गयी उनके पास । उनने इस्तेमाल नहीं किया, यह उनकी इच्छा पर है । ब्राह्मण अपने लिए कभी इस्तेमाल नहीं करते । गाँधी ब्राह्मण थे, बड़े शानदार आदमी थे और शानदार सिर्फ इसलिए कि उनने अपने समय को पेट और सन्तान –जानवर के तरीके से नहीं, बल्कि इन्सान के तरीके से खर्च किया ।

यह समय ठीक ऐसा ही है । इस विषम समय में मेरी आप लोगों से प्रत्येक से यही प्रार्थना है कि आप अपने समय का थोड़ा अंश निकालें । हमने कितनी बार कहा व छापा है कि आप समयदान कीजिए । चंद्रमा पर ग्रहण जब पड़ता है तब कितने ही लोग आते हैं व पुकार लगाते हैं कि चन्द्रमा पर ग्रहण पड़ा है, पुण्य कमाना हो तो दान करो । इस खराब समय में हमारी भी एक ही पुकार एक ही रट है–महाकाल की भी एक ही पुकार है । आप समय दीजिए ,समय खर्च कीजिए । किस काम के लिए ? आप इस काम के लिए समय लगाइए जिससे आप लोगों के दिमागों और विचारों को ठीक कर सकें । इन्सान के अन्दर क्या

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

है ? वस्तुतः न हाड़ है, न माँस है न मिट्टी न पाखाना , जो भी कुछ काम की चीज है, वह है विचार ।

विचारों से ही अब्राहम लिंकन जैसे, जार्ज वाशिंगटन जैसे, गारफील्ड जैसे छोटे–छोटे इंसान कितने महान बन जाते हैं । विचार अगर मनुष्य के पास हों तो, आज अगर विचारशीलता और दूरदर्शी विवेकशीलता लोगों के अन्दर आ गयी होती तो दुनिया खुशहाल होती । इन्सान इन्सान न रहकर देवता हो गया होता और जमीन का वातावरण स्वर्ग जैसा होता । पर विचारशीलता है कहाँ ? समझदारी है कहाँ ? अगर समझदारी बढ़ेगी तो आदमी के अन्दर ईमानदारी बढ़ेगी, ईमानदारी बढ़ेगी तो आदमी में जिम्मेदारी आएगी और जिम्मेदारी आएगी तो बहादुरी आएगी , चारों चीजें एक साथ जुड़ी हुई हैं । समझदारी इसका मूल है । हमको लोगों की समझदारी बढ़ाने के लिए जी–जान से कोशिश करना चाहिए । प्राचीन काल के ब्राह्मण और संत यही काम करते थे , वे अपना गुजारा कम से कम में करते थे व जीवन का उद्देश्य यही रहता था कि लोगों की समझदारी बढ़ायें । आप लोगों से भी मेरी यही प्रार्थना है कि लोगों की समझदारी बढ़ाने के लिए अपने समय का जितना अंश आप लगा सकते हों, लगाएँ , दिमाग में से आप यह ख्याल निकाल पायें तो बड़ा अच्छा हो कि बहुत सा पैसा इकट्ठा होना चाहिए । पैसा रहेगा नहीं, मैं एक बात आपको बताए देता हूँ अगले दिनों समाज की ऐसी व्यवस्था बनने वाली है जिससे कि धन व्यक्तिगत नहीं रह जाएगा । सच्चा अध्यात्मवाद आपको मालदार नहीं बनने देगा । चौबीसों घण्टे आपका दिमाग व शक्तियाँ मालदार बनने की ख्वाहिश में लगते हैं तो आप गलती पर हैं , आप ठीक कीजिए अपने आपको ।

अपना गुजारा सामान्य मनुष्य जिस तरीके से करते हैं, आप भी उसी तरीके से गुजारा करना सीखिए । फिर आप देखेंगे कि आपके पास समय श्रम, बुद्धि, क्षमताएँ कितनी ही चीजें बच जाती हैं जो समाज के काम में लगाई जा सकती हैं । जरूरी नहीं कि आप अपना मकान छोड़कर बाहर चले जायें । आप अपने घर रह कर भी बहुत से काम कर सकते हैं, जिससे आपका क्षेत्र, आपका गाँव, आपके समीपवर्ती वातावरण में जाने कैसी हवा पैदा हो सकती है । कमाल हो सकता है । तो इसके लिए क्या करना पड़ेगा ? इसके लिए मेरे ख्याल से आपको एक ट्रेनिंग लेनी चाहिए , छोटी से छोटी चीजों के लिए ट्रेनिंग की जरूरत पड़ती है । लुहार, संगीतज्ञ, रेल गाड़ी चलाने वाले, मोटर चलाने वाले, अध्यापक , चिकित्सक सभी को ट्रेनिंग लेनी पड़ती है ।

ट्रेनिंग बड़ी आवश्यक है । विश्वामित्र राम व लक्ष्मण को उनके पिता से माँगकर ले गए थे और उनको ट्रेनिंग दी थी । काहेकी ट्रेनिंग दी थी । बड़ी महत्वपूर्ण ट्रेनिंग थी । उनने शिवजी का इतना भारी धनुष कैसे तोड़ा जाय ? लंका में जो राक्षस रहते हैं, उनको किस तरीके से समाप्त किया जाय ? रामराज्य की स्थापना कैसे की जाय ? ये सारी बातें विश्वामित्र के आश्रम में जाकर सीखी थीं । ऐसी ही एक ट्रेनिंग की व्यवस्था हमने शान्तिकुंज में की है । ताकि आप समाज में छाई असुरता से लड़ सकें । शान्तिकुंज को पहले से भी हमारा तीस गुना करने का मन था किन्तु अब बहुत दिनों से नालन्दा और तक्षशिला विश्वविद्यालय यही हमारे दिमाग में घूमते रहते हैं । हमें यही सपना आता रहता है कि नालन्दा, जिसमें हजारों धर्म प्रचारक तैयार किए गए थे एवं तक्षशिला जिसमें हजारों संस्कृति प्रचारक तैयार किए गए थे , यहाँ पर बने । धर्म का नाम तो मैं अब नहीं लूँगा । यह नाम बहुत बदनाम हो गया है । मैं समाज सेवा की बात आपसे कहूँगा । यह कहूँगा कि आपकी महानता की वृद्धि के लिए सेवा बेहद आवश्यक है और जब तक आप समाज की सेवा नहीं करेंगे, तब तक आप उन्नतिशील नहीं बनेंगे । आपकी आत्मा में सन्तोष और शान्ति का निवास नहीं होगा ।

आत्मसन्तोष के अलावा समाज का सहयोग व भगवान का अनुग्रह कैसे मिल सकता है, शानदार जिन्दगी कैसी जीनी चाहिए ? इसके लिए हमारे यहाँ ट्रेनिंग चलती है । ट्रेनिंग तो पहले भी चलती थी । नौ दिन की, पाँच दिन, व एक माह की, पर अब हमने सारे के सारे शांतिकुंज को विश्व विद्यालय के रूप में परिणत कर दिया है । कानूनन तो यह विश्वविद्यालय नहीं है क्योंकि विश्वविद्यालय के लिए जो खानापूर्ति की जाती है, वह बहुत बड़ी है । लेकिन पुराने समय में नालन्दा में कोई खाना पूरी नहीं हुई थी और न तक्षशिला में कोई खाना पूरी हुई थी ये गवर्नमेण्ट से कोई संबंधित नहीं हुए थे । हमारा यह विश्वविद्यालय इसी प्रकार का है ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी !

प्रस्तुत अंक में ब्रह्मवर्चस् शोध सत्रों के अवसर पर परमपूज्य गुरुदेव द्वारा २३ नवम्बर १९७९ को दिया गया उद्‌बोधन यथासंभव अविकल रूप में दिया जा रहा है । इस उद्‌बोधन में पूज्यवर ने मनीषा का आव्हान करते हुए उनसे युगानुकूल दायित्व निर्वाह हेतु उसे झकझोरा है । यह निमंत्रण आज तो और भी प्रासंगिक हैं, जब हम विश्वमानवता की कराहें सुन रहे हैं पर कान बन्द किए बैठे हैं । विशेष रूप से बुद्धिजीवियों के प्रति, जो उनकी जिम्मेदारियाँ हैं, उनका मर्मस्पर्शी चित्रण इस में है । प्रस्तुत है अमृतवाणी ।

गायत्री मंत्र हमारे साथ – साथ बोलिए

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ।

देवियो, भाइयो । मनुष्य को भगवान के अनुदान अन्यान्य प्राणियों से भिन्न मिले हैं । सामान्य प्राणी दो काम कर पाते हैं । एक तो अपना पेट भर पाते हैं, दूसरा सन्तान पैदा कर पाते हैं । दो के अलावा और कोई पुरुषार्थ अन्य प्राणियों के जिम्मे नहीं है । किन्तु दूसरी ओर । दूसरी ओर मनुष्य के जिम्मे कैसे–कैसे शानदार अनुदान मिले हैं । अन्य प्राणी तो एक छोटी सी कल्पना रखते हैं जो ख्वाब के रूप में दिमाग में केवल एक सीमा तक ही काम आती है जो शरीर की जरूरतों को पूरा करती है । उससे आगे उन्हें कोई चिन्ता नहीं होती । चिन्तन की परिधि इन प्राणियों में उतनी ही है जिससे कि शरीर की जरूरतें पूरा कर सकें । चारा इकट्‌ठा कर सकें, घास खा सकें, दौड़ सकें , बच्चे पैदा कर सकें । बस इससे ज्यादा चेतना नहीं है ।

आदमी को अन्य प्राणियों की तुलना में क्या–क्या मिला ? शरीर ऐसा शानदार मिला कि कलाकार ने अपनी सारी की सारी कला एक ही केन्द्र पर खत्म कर दी, ऐसा मालूम पड़ता है । हाथ हमारा इतना शानदार है कि मालूम पड़ता है कि प्रकृति ने इसे बड़ा सोच समझकर मन लगाकर बनाया है । इतनी जगह से मुड़ने वाला, इतनी जगह से घूमने वाला इतने तरह के काम करने वाला हाथ किसी अन्य प्राणी के हिस्से में नहीं आया । दिमाग के बारे में हम क्या कहें । आँखों के लिए क्या कहें ? हर इन्द्रिय के लिए क्या कहें ? अनोखा प्राणी है मनुष्य । भगवान ने इस हाड़–मांस के जखीरे में एक ऐसी चेतना भर दी है जो अनोखी मालूम पड़ती है ? बड़े सौभाग्यशाली हैं हम व आप जो ऐसा शरीर धारण करने में समर्थ हो सके , सौभाग्यशाली सिद्ध हो सके । भगवान का अनुग्रह हम सब पर कि हम मनुष्य शरीर प्राप्त कर सके ।

अगली वाली बात–और थोड़ी सुरक्षित रखी है, जिसे पात्रता के अनुरूप भगवान दिया करते हैं । सब प्राणियों को नहीं, किसी–किसी को देते हैं, जिसे सुपात्र पाते हैं । पात्रता आपकी बढ़ेगी तो भगवान की चार नियामतें , चार विभूतियाँ आपको मिलती चली जाएँगी । एक विभूति का नाम है ऋत । ऋत क्या है ? ऋत उसे कहते हैं जिसमें कई कीमती चीजें जुड़ी हुई हैं साजो सुरक्षा–शालीनता-अंतःप्रेरणा । ऋत जिस किसी के हिस्से में आता है, वह अपना कल्याण करता है और अपना कल्याण करके वह सीमित नहीं रह जाता , समाज का उत्तरदायित्व सँभालता है, सारी मनुष्य जाति का मार्गदर्शन करता है और इस पृथ्वी पर खुशहाली लाता है , ऋत उस वर्ग के हिस्से में आता है, जिसको हम सभी ब्राह्मण कहते हैं । ऋत उसे कहते हैं, जिसमें आदमी का चिन्तन और जीवन देवोपम बन जाता है । वह अपने लिए कर्तव्यों का निर्धारण करता है । क्या निर्धारण करता है ? "वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः "। हम पुरोहित अर्थात् हम ब्राह्मण हम संत हम ऋषि यह उत्तरदायित्व ग्रहण करते हैं और यह घोषणा करते हैं कि "वयं " अर्थात् हम सब, "राष्ट्रे " सारे राष्ट्र को नागरिकों को विश्व मानवता को "जागृयाम" जीवन्त और जाग्रत रखे रहेंगे , जीवन्त और जाग्रत रखने की जिम्मेदारी केवल एक ही वर्ग के लोगों की है, जिनका नाम है ब्राह्मण । देवता और ब्राह्मण एक ही बात है । देवता आसमान में रहते हैं । देवता वे भी हैं , जिनके दिमाग आसमान में हैं । बाकी लोगों के दिमाग जमीन पर गड्‌ढे में–खड्‌डे–खंदक में रहते हैं । ब्राह्मण का दिमाग आसमान में रहता है । वह ऊँचा सोचता व ऊँचा ही चिन्तन करता है ऊँचा ही उसका लक्ष्य होता है । ऊँची ही उनकी विचारणा होती है । वैसे ही देव होते हैं । देव ऋत को पा करके–भगवान का अनुग्रह पाकर

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

के अपना कल्याण करते हैं और समाज का हित भी साधते हैं ।

"ऋतं च सत्यं च विद्धा तपसो ह्यिजायता " ऋत से सत्य की सत्य से तप की उत्पत्ति होती है और तप से गर्मी की उत्पत्ति होती है, जिससे दिन और रात पैदा होते हैं, जिससे संसार की व्यवस्था पैदा होती है । यह भगवान का अनुग्रह आप में से किन–किन के हिस्से में आया पता नहीं । पर यह जिस किसी के भी हिस्से में आया होगा, उसे ही बुद्धिजीवी कहेंगे । जो भी सुशिक्षित है–बुद्धिजीवी है , उनको अगर भगवान का प्यार मिल जाता है तो पहले मिलता है ऋत । ऋत से वे पहले अपना उद्धार करते हैं और फिर सारे विश्व का उद्धार करते हैं ।

दूसरा वाला अनुदान दूसरी श्रेणी के लोगों को मिलता है । उसका नाम है शौर्य और साहस । तीसरा अनुदान है साधन और चौथे का नाम है श्रम । वर्णाश्रम व्यवस्था के हिसाब से यही चार प्रकार के वर्गीकरण हैं । भगवान के अनुदान एक के बाद एक मिलते हैं । जिनके हिस्से में पराक्रम है शौर्य है, साहस है हिम्मत है, वे दुनिया में अपने तरीके से काम करते हैं । कोलम्बस के तरीके से, नेपोलियन के तरीके से, सिकन्दर के तरीके से भौतिक दुनिया में बहुत काम कर जाते हैं और आध्यात्मिक जगत में फरहाद से लेकर मीरा तक व विवेकानन्द से लेकर दयानन्द तक जाने क्या से क्या कर डालते हैं । ये गजब कर देने वाले प्राणी साहसी कहलाते हैं । साहसी को क्षत्रिय कहते हैं । तीसरे वर्ग के पास संपदाएँ रहती हैं और चौथा वर्ग है श्रमिक जो अपने पसीने से अपनी मेहनत–मशक्कत से दुनिया को खुशहाल बना देते हैं ।

आदिकाल में दुनिया कैसी रही होगी ? आरंभ में शायद वह ऊबड़खाबड़ रही होगी, जैसी कि चन्द्रमा की खबर लेकर वैज्ञानिक आए हैं । एक इंसान ही रहा होगा , जिसने अपनी मशक्कत से अपनी मेहनत से इस जमीन को समतल किया होगा । इसी तरह से जानवरों को जो उच्छृंखलों के तरीके से, अस्त–व्यस्तों के तरीकों से हानि पहुँचाते हैं–प्यार से सहकारिता से डरा धमका करके मनुष्य का सहयोगी बनाया होगा । उसकी मशक्कत ने ही दुनिया में तरह–तरह की नई चीजें लाकर खड़ी कर दीं । इमारतें बनाने से लेकर घर, कपड़ा बनाने से लेकर अन्न उपजाने तक यह आदमी का श्रम है । श्रम का अनुदान मिलने से आदमी निहाल हो गया ।

ताकत दूसरे प्राणियों में भी है, पर वे श्रम नहीं कर सकते । नियोजित श्रम उनके पास नहीं है । हाथी के पास घोड़े के पास ताकत है पर वह उस ताकत का उपयोग नहीं कर पाता । पर इन्सान अपनी ताकत का जानकार है, उसका उपयोग कर सकता है और यह भगवान का अनुदान है और इसी से वह साधन पाता है

आदमी की बुद्धि का श्रेष्ठतम भाग है ऋत । यह ऋत यदि आदमी को मिल जाय तो बुद्धि सार्थक हो जाती है, । विद्या सार्थक हो जाती है । प्रज्ञा सार्थक हो जाती है और मनुष्य की जिन्दगी सार्थक हो जाती है । जिनमें से कुछ को भगवान ने शिक्षा दी है, वे आप मेरे समक्ष बैठे हैं । अब कमी एक ही रह जाती है कि इस सीप में कहीं से स्वाति की बूँदे टपक जायँ , जिनके पास दिमाग है शिक्षा है उनके अन्दर श्रद्धा की–स्वाति की बूँदे गिर जायँ तो आप ऋषि हो सकते हैं, महामानव हो सकते हैं । यह अक्ल का दुर्भाग्य है कि वह पेट भरने के काम आज आती है । उससे भी अधिक दुर्भाग्य आदमी का यह कि यह अक्ल जाल बुनने के काम आती है, वाक्पटुता के काम आती है व दूसरों को धोखा देने का कुचक्र रचने के काम आती है । अक्ल से जो हम कमाते हैं तो क्या बतायें आपको कि हम उसे कहाँ खर्च करते हैं ? अक्ल की कीमत बाजार में ज्यादा मिलनी चाहिए । मिलती भी है । लेकिन उस मिलने के बाद हम करते क्या हैं ? न जाने कहाँ उसे खर्च कर देते हैं । ऐसे में ईश्वरचन्द्र विद्यासागर हमारे सामने आकर खड़े हो जाते हैं और बताते हैं कि अक्ल की कमाई कहाँ खर्च होनी चाहिए ।

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर को उन दिनों जो वेतन मिलता था, उनने कहा उसमें से हमें औसत नागरिक के गुजारे की हैसियत से पचास रुपये से अधिक नहीं चाहिए । उनने अपने खानदान वालों को बुलाया और यह कहा कि हिंदुस्तान में जिस मुल्क में हम पैदा हुए हैं उस स्तर के मुताबिक हमें अपने पर व कुटुम्ब पर इससे अधिक खर्च नहीं करना चाहिए बाकी जो वेतन बचेगा उसे हम अन्य कामों में खर्च करेंगे जैसा कि भावनाशीलों–विचारशीलों को करना चाहिए । आपकी अक्ल भी उसी तरह खर्च होनी चाहिए जिस तरह से ईश्वरचन्द्र विद्यासागर की हुई । उनके दिल में दर्द था । उनके भीतर था ऋत । ऋत उसे कहते हैं जिसमें शिक्षा की सार्थकता छिपी होती है । आप कौन हैं । आप वकील हैं तो अच्छा , करते क्या हैं ? सबेरे से शाम तक झूठ बोलते हैं व बुलवाते हैं । फरेब

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

करते हैं और करवाते हैं । इसी अक्ल से पेट भरते हैं । ऐसे पेट के ऊपर लानत है । ऐसे पेट को फट जाना चाहिए । जो पेट आदमी की अक्ल की कमाई से देश के लिए, धर्म के लिए, इंसानियत के लिए , भगवान के लिए गुनाह करता हो ऐसे पेट को आग लग जानी चाहिए ।

मित्रो ! यह ब्राह्मण के लिए लानत की बात है, शरम की बात है । भगवान के दिये अनुदानों का सबको इस्तेमाल करना चाहिए । दूसरे लोग यदि अपनी अक्ल का इस्तेमाल न कर सकें तो कम से कम ब्राह्मण को तो करना ही चाहिए । दिमाग अगर खराब हो जाएगा, अक्ल अगर खराब हो जाएगी तो शरीर का क्या होगा ? जिस समाज में , जिस देश में, जिस युग में, दिमाग ब्राह्मण अस्तव्यस्त हो जाता है, तब उस देश की मुसीबत आती है । दूसरे लोग जब गड़बड़ा जाते हैं तो डाकू या उठाईगीरे बन जाते हैं और क्या करेंगे ? गुण्डे की सामर्थ्य बस सामान उठाने, मारपीट करने, हत्या करने तक की है किन्तु जब ब्राह्मण बागी हो जाता है तो वह ब्रह्मराक्षस बन जाता है । अतः ब्रह्मराक्षस होने की लानत अपने सिर पर ओढ़ने से हमें इंकार करना आना चाहिए और समय रहते चेत जाना चाहिए ।

युग की पुकार है कि ब्राह्मण जगे । आप कौन हैं ? हम तो कायस्थ हैं । भई यहाँ वंश परम्परा का जिक्र नहीं हो रहा , विचार परम्परा की दृष्टि से आप जहाँ बुद्धिजीवी हैं, वहाँ आप एक ऐसी परम्परा के अनुयायी भी हैं जो आदमी को उसके कर्तव्यों–उत्तरदायित्वों की जानकारी कराती है । यदि ऐसा न होता तो आप हम से क्यों जुड़ते । मैं सोचता हूँ कि आप के भीतर कहीं न कहीं ऋत है । ऋत जो भगवान का सबसे बड़ा अनुदान है । हमारे व आपके लिए एक बहुत बड़ा काम करने को पड़ा है । काम यह है कि जो कुछ भी विचार का क्षेत्र हमारे सामने फैला पड़ा है, इसके भीतर से इसके अध्यात्म को हम निचोड़ें । हमको साइंस की साइंस ढूँढ़नी है । वह मूल ढूँढ़ना है जिन सिद्धान्तों को लेकर के आदमी ने साइंस बनाने व बढ़ाने के लिए कदम बढ़ाया । यह दोनों काम किए बिना इतने बड़े बुद्धि के जंजाल को काट सकना हमारे लिए संभव न हो सकेगा । बुद्धि का जंजाल–बुद्धि का भ्रम इतना बढ़ गया है कि क्या कहूँ मैं आप से । बुद्धि के ऊपर से पड़े आवरण इतने ज्यादा कँटीले इतने ज्यादा गहरे, इतने ज्यादा विषैले हैं कि इनकी काट छाँट करने के लिए हमको बड़े ऑपरेशन की जरूरत पड़ेगी । कैंसर का ऑपरेशन करने के लिए मामूली चाकू काम नहीं आते । अंदर लेसर किरणों से लेकर रेडियो आयसोटोप तक का इस्तेमल करना पड़ता है और फूँक–फूँक कर कदम रखना होता है । फिलॉसफी की फिलॉसफी, नीतिशास्त्र का नीतिशास्त्र, मनोविज्ञान का विज्ञान हम गढ़ना चाहते हैं, पर यह कठिन काम है । ऑपरेशन जितना कठिन ।

अगला हमारा काम है धर्मों का धर्म ढूँढ़ना । वह जो चार सौ करोड़ मनुष्यों में से अधिकांश के सिर पर हावी है । मैं सोचता हूँ कि तीन सौ करोड़ के ऊपर धर्म है । सौ करोड़ मनुष्य ऐसे हो सकते हैं जो धर्म की लापरवाही करते हैं और बाद में परवाह नहीं करते । जो धर्म से नाखुशी जाहिर करते हैं उनको मैं मानता हूँ कि उन्हें धर्म की अहमियत समझ में आ गयी है । वे धर्म को समझते हैं । धर्म हेतु–विश्व धर्म की व्याख्या हेतु हमें आस्तिकता का–ईमान का प्रतिपादन करना होगा– धार्मिकता का–धर्मनिष्ठा –कर्तव्य परायणता का प्रतिपादन करना होगा । इसके लिए बुद्धिवाद का सहारा लेना होगा । तर्क और दलीलों को हम रोक नहीं सकते । बुद्धिवाद को हम सीमित नहीं कर सकते । आदमी के भीतर से जब तर्क का माद्दा उत्पन्न होता है तो अंकुश लगाना कठिन हो जाता है ।

तर्क–दलील आज के जमाने की सबसे अच्छी व सबसे वाहियात चीज है । अच्छी क्यों ? क्योंकि उसमें सत्य को ढूँढ़ निकालने की सामर्थ्य है –संभावना है । वाहियात क्यों ? क्योंकि दलील के पीछे अगर अंकुश न हो, नियंत्रण न हो तो यह सब कुछ कर सकती है । दलील आप किसी भी पक्ष में दे सकते हैं । संस्कृत की एक पुस्तक है जो एम. ए. में पढ़ाई जाती है ''न्यायकुसुमांजलि''। उसमें यह बताया गया है कि दलील कैसे दी जाती है, बहस कैसे की जाती है ! बहस में यह भी किया जा सकता है और यह भी । उनने दो टॉपिक लिए हैं एक ईश्वर है दूसरा ईश्वर नहीं है । दोनों पक्षों में जोरदार बहस होती है । अंत में दलील देने के बाद यह लिखा है कि हमने तो बहस करने का तरीका सिखाया है । आप यह विचार मत करना कि पुस्तक का लेखक नास्तिक है या आस्तिक ।

दलील कुछ भी दी जा सकती है ।उलटी भी हो सकती है, सीधी भी हो सकती है निकम्मी से निकम्मी, बेहूदी से बेहूदी, पाजी से पाजी बातों के पक्ष में दलील पेश की जा सकती है । दलील ने ही स्वच्छन्द यौनाचार का पक्ष लिया है । दलील इतनी स्वेच्छाचारी

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

है कि वह कभी फ्रायड का समर्थन करती है तो कभी अस्तित्ववाद के लिए कामूँका और नीत्से के तरीके से नास्तिकवाद का । यह अक्ल, यह दलील निरंकुश होने पर न जाने क्या कर सकती है । मित्रो हमें यदि चारसौ करोड़ व्यक्तियों का भाग्य बनाना है , नयायुग गढ़ना है तो हमें दलील की माँ को पकड़ना होगा । अकेले दलील से काम नहीं चलेगा । चोर की मौसी को गिरफ्तार करना होगा । अक्ल का दिमाग का बहुरूपिया न जाने कैसे–कैसे वेश बदल कर हमें परेशान कर रहा है । हमें इस बहुरूपिये की जन्मदात्री को पकड़ना होगा । तभी यह ठीक हो सकती है ।

शोध प्रसंग में दो बातों के बारे में हमें गंभीर होना पड़ेगा । आये दिन हमें जहाँ कहीं दो बोर्ड दिखाई देते हैं । एक बोर्ड है "योगा " एवं दूसरा है–"शोध–रिसर्च " । "योगा" सबसे बेहूदा मखौल है अध्यात्म का । गली -गली में योगा के नाम पर आश्रम खुले हुए हैं । इनसे पूछो कि योग का क्या मतलब है तो दाँत निकाल देंगे । क्या योग मात्र सर्वांगासन होता है, डीप ब्रिदिंग होता है, हाथ पैर चला लेना होता है, मेडीटेशन होता है ? बंदूक चलाने वाले मेस्मेरिज्म करने वाले चिड़िया मारने वालों में सबमें मेडीटेशन होता है, यदि मेडीटेशन अक्ल इकट्ठी करने का नाम है । खबरदार ! योगा अलग है और मेडीटेशन अलग है । योगा–योगा जहाँ देखो मखौल के लिए इन्हें और चीज नहीं मिली जो योग को बना दिया । दूसरे हर किसी को रिसर्च करते देख सकते हैं शोध करते देख सकते हैं आप । गली–गली में रिसर्च करने वाले–शोध संस्थान गली–गली में । शोध से कम में कोई बात ही नहीं करना चाहता । भाई साहब हमारे दिमाग में बड़ी चीजें हैं । हम शोध का मजाक नहीं बनाना चाहते । बड़ी चीज के लिए बड़ा सामान इकट्ठा करने की कोशिश कर रहे हैं ।

फिलहाल आपको एक छोटा सा काम सुपुर्द करते हैं । इन्टेलिजेंशिया जिस काम के लिए अभी बदनाम हैं, आप उस बदनामी को मिटायें । हर व्यक्ति जो इंटेलिजेंशिया से जुड़ा है, कहता है हम तो व्यस्त हैं । कुल दो घण्टे स्कूल या कॉलेज में पढ़ा कर आते हैं व कहते हैं कि हम बिजी हैं ? गप्पें हाँकते रहते हैं व कहते हैं कि हम व्यस्त हैं । यह झूठी बहानेबाजी की बातें हैं ।

आप यह देखें कि ऋत के धारणकर्ता होने के नाते प्रज्ञा के विस्तार की आप पर जो जिम्मेदारी है, उसको निभाकर ही आप समाज के आप पर चढ़े ऋण को उतार सकते हैं । भगवान का–विश्वमानव का आप पर ऋण है । इसके लिए पहली बात समय से चलती है । समय के साथ काम में तन्मय होने की कला । व्यस्तता इसे कहते हैं कि आदमी इस कदर लक्ष्य में तन्मय हो जाता है कि उसे समय का कोई ख्याल नहीं रहता । आप युग अनुसंधान, मानव धर्म की खोज, विज्ञान, अध्यात्म की शोध के विषय में गंभीर हैं तो आप बात वहाँ से शुरू कीजिए जहाँ से आपको टाइम देना पड़ेगा । यदि दे सकें तो समुद्र मंथन कीजिए । कभी देवता व असुरों ने मंथन किया था । देवता कौन ? विचारणा, श्रद्धा, सद्भावना आदर्श तथा दैत्य कौन ? दैत्य कहते हैं "जाइण्ट " को, शक्तियों को, पुरुषार्थ को, वैभव को, पदार्थ विज्ञान की शक्ति को । दोनों ने परस्पर लड़ाई झगड़ा करने की अपेक्षा समुद्र को मथना आरंभ किया । भगवान मदद के लिए आ गए व कच्छपावतार के रूप में मंदराचल के नीचे उनने स्वयं को लगा दिया । मथने के लिए शेषनाग आगए व फिर विष निकला जिसे नीलकण्ठ–प्रलयंकर महादेव ने धारण किया । तत्पश्चात् चौदह रत्न निकलते चले गए जिसमें लक्ष्मी व अमृत भी थे । जो काम हम और आप करने चले हैं, उसकी उपमा समुद्र मंथन से दें तो कोई गजब की बात नहीं है ।

समुद्र बहुत विशाल है । हमारा विचार परिकर बहुत विस्तृत है समुद्र के तरीके से । यदि हम इसमें गोते लगा सके तो बहुमूल्य मणि माणिक्य इसमें से निकल सकेंगे । आप अपनी बुद्धि का सही उपयोग करके, समय देकर अपने सही अर्थों में बुद्धिजीवी होने का प्रमाण दीजिए । आप पर सारे समाज का, युग का एक ऋण चढ़ा है, महती दायित्व है । उसे निभाइए । बताइए विज्ञान का विज्ञान व अध्यात्म का अध्यात्म । तभी तो दोनों मिल सकेंगे । अगली पीढ़ी का महामानव बनाने के लिए इससे कम स्तर के पुरुषार्थ से काम नहीं चलने वाला । हम बड़ा काम ही सोचते हैं, व करते हैं । क्या करना है हमें ? हमें सूरज को, चन्द्रमा को धरती पर लाना है, जिससे इन्सान निहाल हो जाय । आपने वैभव–विलास की जेल में बहुत जीवन बिता लिया । आप समय दीजिए व अपनी अक्लमन्दी का सही प्रमाण देकर युगशोध में खपिए, अपने को पूरी तरह लगा दीजिए । ज्ञान की जो धारा है उसे अपने साथ लेजाइए व पूरे समाज में प्रवाहित कीजिए बस अब यही करना है आप सब को ।

मेरी बात समाप्त । ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।✱

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.



परमपूज्य गुरुदेव की — अमृतवाणी

इस अंक में प्रस्तुत है परमपूज्य गुरुदेव का १२ फरवरी १९७८ को शांतिकुंज में वसंतपर्व पर दिया गया ऐतिहासिक उद्‌बोधन । अभूतपूर्व व ऐतिहासिक इस संदर्भ में कि यह मात्र शब्दों का उच्चारण व संबोधन नहीं था, एक प्रकार की सामूहिक शक्तिपात प्रक्रिया थी । शांतिकुंज हरिद्वार तथा ब्रह्मवर्चस् में सक्रिय अधिकांश कार्यकर्ता इस उद्‌बोधन को सुनने के बाद ही पूर्ण समयदानी कार्यकर्ता बने थे । ऐसी शाश्वत तपःपूत ऋषि चेतना आपके अंदर भी वासंती उल्लास लाए, उसी भाव के साथ प्रस्तुत है- अमृतवाणी ।

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ बोलिए ।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ।

मित्रो । वसंत पंचमी उमंगों का दिन है, प्रेरणा का दिन है, प्रकाश का दिन है । वसंत के दिनों में उमंग आती है, उछाल आता है । समर्थ गुरु रामदास के जीवन में इन्हीं दिनों एक उछाल आया-क्या हम अपनी जिंदगी का बेहतरीन इस्तेमाल नहीं कर सकते ? क्या हमारी जिन्दगी अच्छी तरह से खर्च नहीं हो सकती ? एक तरफ उनके विवाह की तैयारियाँ चल रहीं थीं । समर्थ गुरु रामदास को शकल दिखाई पड़ी औरत-औरत के बच्चे, बच्चों के बच्चे , शादियाँ, व्याह आदि की बड़ी लम्बी श्रृंखला दिखाई पड़ी । दूसरी तरफ आत्मा ने संकेत दिया, परमात्मा ने संकेत दिया और कहा-अगर आपको जिन्दगी इतने कम कीमत की नहीं जान पड़ती है, अगर आपको महँगी मालूम पड़ती है मूल्यवान मालूम पड़ती है तो आइये दूसरा वाला रास्ता आपके लिए खुला पड़ा है । महानता का रास्ता खुला हुआ पड़ा है । समर्थ गुरु ने विचार किया । उछाल आया, उमंग आई और ऐसी उमंग आई कि रोकने वालों से रुकी नहीं । वह उछलते ही चले गये । मुकुट को फेंका अलग और कंगन को तोड़ा अलग । ये गया , वो गया लड़का भाग गया । दूल्हा कौन हो गया ? समर्थ गुरु रामदास हो गया । कौन ? मामूली सा आदमी छोटा-सा लड़का छलांग मारता चला गया और समर्थ गुरु रामदास होता चला गया ।

यहाँ मैं उमंग की बात कह रहा था । उमंग जब भीतर से आती है तो रुकती नहीं है । उमंग आती है वसंत के दिनों । इन्हीं दिनों का किस्सा है बुद्ध भगवान का । उनका भी ऐसा ही किस्सा हुआ था । एक तरफ औरत सो रही थी और एक तरफ बच्चा सो रहा था । सारे संसार में फैले हुए हा-हाकार ने पुकारा और कहा कि आप समझदार आदमी हैं । आप विचारशील आदमी हैं और आप जबरदस्त आदमी हैं । क्या आप दो लोगों के लिए जियेंगे ? औरत और बच्चे के लिए जिएँगे ? यह काम तो कोई भी कर सकता है । बुद्ध भगवान के भीतर किसी ने पुकारा और वे छलाँग मारते हुए-उछलते हुए कहीं के मारे कहीं चले गये । बुद्ध भगवान हो गये ।

शंकराचार्य की उमंग भी इन्हीं दिनों की है । शंकराचार्य की मम्मी कहती थी कि मेरा बेटा बड़ा होगा, पढ़ लिखकर गजटेड आफीसर बनेगा । बेटे की बहू आयेगी, गोद में बच्चा खिलाऊँगी । मम्मी बार-बार यही कहती कि मेरा कहना नहीं मानेगा तो नरक में जायगा । शंकर कहता-अच्छा मम्मी कहना नहीं मानूँगा तो नरक जाऊँगा । हमको जाना है तो अवश्य जायेंगे महानरक में अच्छे काम के लिए । मेरे संकल्प में रुकावट लगाती हो तो आत्मा और परमात्मा का कहना न मानकर तुम कहाँ जाओगी ? विचार करता रहा, कौन ? शंकराचार्य ।

शंकराचार्य ने फैसला कर लिया कि मम्मी का कहना नहीं मानना है । एक दिन वह पानी में घुस गया और चिल्लाने लगा मम्मी क्या करूँ , अब मेरे मरने का समय आ गया । मुझे शंकर भगवान दिखाई पड़ते हैं और कहते हैं कि अगर इस बच्चे को मेरे सुपुर्द कर दोगी तो हम मगर से इसे बचा सकते हैं । मम्मी चिल्लाई-अच्छा बेटे जिंदा तो रहेगा, मुझे मंजूर है और मैंने तुझे भगवान को दे दिया । बस शंकराचार्य ने उछाल मारी और किनारे आ गये । वे बोले देखो मगर ने छोड़ दिया , अब मैं शंकर भगवान का हूँ ।

बहुत सी श्रृंखला मैंने देखी हैं उसी श्रृंखला में एक और कड़ी शामिल हो जाती है वसंत पंचमी की । यही दिन थे, पचपन वर्ष पहले एक आया ? कौन आया ? मेरा सौभाग्य आया ? वसंत पंचमी के दिन हर एक का सौभाग्य आता है, एक उमंग आती है, तरंग आती है । मेरे ऊपर भी एक तरंग आयी सौभाग्य के दिन मेरे गुरु के रूप में मास्टर के रूप में । मेरा गुरु प्रकाश के रूप में आया । जब कोई महापुरुष आता है तो कुछ लेकर के आता

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

है । कोई महाशक्ति आती है तो कुछ लेकर के आती है, बिना लिए नहीं आती । मेरा भी गुरु , मेरा भी बॉस , मेरा भी मास्टर और मेरा भी सौभाग्य इसी वसंत पंचमी के दिन आया था जिसमें कि हम और आप मिल रहे हैं । मैं चाहता हूँ कि जो सौभाग्य की धारा और लहर मेरे पास आयी थी, काश ! आपके पास भी आ जाती तो आप धन्य हो जाते ।

जब आती है हूक, जब आती है उमंग तो फिर क्या हो जाता है ? रोकना मुश्किल हो जाता है और जो आग उठती है, ऐसी तेजी से उठती है कि इंतजार नहीं करना पड़ता । जब वक्त आता है तो आँधी–तूफान के तरीके से आता है । मेरी जिंदगी में भी आँधी तूफान के तरीके से वक्त आया । मेरे गुरु आये और आकर के उनने आत्मसाक्षात्कार कराया, पूर्वजन्मों का हाल दिखाया और जाते वक्त कहा कि हम दो चीजें देकर जाते हैं । दोनों चीजें जिनको हम शक्तिपात और कुंडलिनी जागरण कहते हैं, दोनों की दोनों सैकिण्डों में पूरी हो गयीं और मैं कुछ से कुछ हो गया मेरी आँखों में कुछ और चीज दिखाई पड़ने लगी । नशा पीकर आदमी को कुछ का कुछ दिखाई पड़ता है । ऐसे ही मुझे दुनिया किसी और तरीके से दिखायी पड़ने लगी ।

शक्तिपात कैसे कर दिया ? शक्तिपात क्या होता है ? शक्तिपात को मामूली समझते हैं कि गुरु की आँखों में से शरीर में से बिजली का करेन्ट आता है और चेले में बिजली छू जाती है और चेला काँप जाता है । वस्तुतः यह कोई शक्तिपात नहीं है और शारीरिक शक्तिपात से कोई बनता भी नहीं । शक्तिपात कहते हैं चेतना का शक्तिपात, चेतना में शक्ति उत्पन्न करने वाला । चेतना की शक्ति भावनाओं के रूप में संवेदनाओं के रूप में दिखायी पड़ती है, शरीर में झटके नहीं मारती । इसका सम्बन्ध चेतना से है–हिम्मत से है । चेतना की उस शक्ति का ही नाम हिम्मत है जो सिद्धान्तों को, आदर्शों को पकड़ने के लिए जीवन में काम आती है । इसके लिए ऐसी ताकत चाहिए जैसी कि मछली में होती है । मछली पानी की धारा को चीरती हुई–लहरों को फाड़ती हुई उलटी दिशा में छलछलाती हुई बढ़ती जाती है । यही चेतना की शक्ति है, यही ताकत है । आदर्शों को जीवन में उतारने में इतनी कमजोरियाँ आड़े आती हैं जिन्हें गिनाया नहीं जा सकता । लोभ की कमजोरी, मोह की कमजोरी, वातावरण की कमजोरी, पड़ोसी की कमजोरी, मित्रों की कमजोरी–इतनी लाखों कमजोरियाँ व्यक्ति के ऊपर छायी रहती हैं । इन सारी की सारी कमजोरियों को मछली के तरीके से चीरता हुआ जो आदमी आगे बढ़ सकता है, उसे मैं अध्यात्म की दृष्टि से शक्तिवान कह सकता हूँ । मेरे गुरु ने मुझे इसी तरीके से शक्तिवान बनाया । बीस वर्ष की उम्र में तमाम प्रतिबंधों के बावजूद मैं घर से निकल गया और काँग्रेस में भर्ती हो गया । थोड़े दिनों तक उसी का काम करता रहा फिर जेल चला गया । इसे कहते हैं हिम्मत और जुर्रत, जो सिद्धान्तों के लिए , आदर्शों के लिए आदमी के अन्दर एक जुनून पैदा करती है–सामर्थ्य पैदा करती है कि हम आदर्शवादी होकर जियेंगे । इसी का नाम शक्तिपात है ।

शक्तिपात कैसे होता है, इसका एक उदाहरण मीरा का है । वह घर में बैठी रोती रहती थी । घर वाले कहा करते थे कि तुम्हें हमारे खानदान की बात माननी पड़ेगी और तुम घर से बाहर नहीं जा सकतीं । मीरा ने गोस्वामी तुलसी दास को एक चिट्ठी लिखी कि इन परिस्थितियों में हम क्या कर सकते हैं ? गोस्वामी जी ने कहा–परिस्थितियाँ तो ऐसी ही रहती हैं । दुनिया में परिस्थितियाँ किसी की नहीं बदलतीं आदमी की मनःस्थिति बदल जाती है तो परस्थितियाँ बदल जाती हैं । आप अपनी मनःस्थिति बदल दें तो परिस्थिति बदल जायेंगी । चिट्ठी तो क्या उनने एक कविता लिखी मीरा को–

'जाके प्रिय न राम वैदेही ।

तजिय ताहि कोटि बैरी सम यद्यपि परम सनेही ।" यह कविता नहीं शक्तिपात था । शक्तिपात के सिद्धान्तों को पक्का करने के लिए यह मुझे बहुत पसंद आती है और जब तब मेरा मन होता है, उसे याद करता रहता हूँ और हिम्मत से ताकत से भर जाता हूँ । मुझ में असीम शक्ति भरी हुई है । सिद्धान्तों को पालने के लिए हमने सामने वाले विरोधियों शंकराचार्यों, महामण्डलेश्वरों और अपने नजदीक वाले मित्रों–सभी का मुकाबला किया है । सोने की जंजीरों से टक्कर मारी है । जीवन पर्यन्त अपने लिए, आपके लिए, समाज के लिए, सारे विश्व के लिए, महिलाओं के अधिकारों के लिए मैं अकेला ही टक्कर मारता चला गया । अनीति से संघर्ष करने के लिए युग निर्माण का विचारक्रांति का सूत्रपात किया । इस मामले में हम राजपूत हैं । हमारे भीतर परशुराम की तरीके से रोम–रोम में शौर्य और साहस भर दिया गया है । हम महामानव हैं । कौन–कौन हैं ? बता नहीं सकते हम कौन हैं ? ये सारी की सारी चीजें वहाँ से हुईं जो मुझे गुरु ने शक्तिपात के रूप में दी–हिम्मत के रूप में दी ।

कुण्डलिनी क्या होती है ? कुण्डलिनी हम करुणा को कहते हैं–विवेकशीलता को कहते हैं । करुणा उसे कहते हैं जिसमें दूसरों के दुख–दर्द को देखकर के आदमी रो पड़ता है । विवेक यह कहता है कि फैसला करने के लिए हमको ऊँचे आदमी होना चाहिए । कैसा विवेकशील होना चाहिए जैसे कि जापान का गाँधी कागावा हुआ । उसने अपना सम्पूर्ण जीवन बीमार लोगों, पिछड़े लोगों, दरिद्रों और कोढ़ियों की सेवा में लगा दिया । चौबीसों घंटे उन्हीं लोगों के बीच वह काम में रहता । कौन कराता था उससे यह सब ? करुणा कराती थी । इसी को हम कुण्डलिनी कहते हैं जो आदमी के भीतर हलचल पैदा कर देती है–रोमांच पैदा कर देती है –एक दर्द पैदा कर देती है । भगवान जब किसी इंसान के भीतर आता है तो एक दर्द के रूप में आता है, करुणा के रूप मे आता है । भगवान मिट्टी का बना हुआ जड़ नहीं है –वह चेतन है और चेतना का कोई रूप नहीं हो सकता , कोई शकल नहीं हो सकती । ब्रह्मचेतन है और चेतन केवल संवेदना हो सकती है और संवेदना कैसी

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

हो सकती है ? विवेकशीलता के रूप में और करुणा के रूप में आदर्श हमारे पास हों और वास्तविक हों तो उनके अन्दर एक ऐसा मैग्नेट है जो इन्सान की सहानुभूति, जनता का समर्थन और भगवान की सहायता तीनों चीजें खींच कर लाता हुआ चला जाता है । कागाबा के साथ यही हुआ । जब उसने दुखियारों की सेवा करनी शुरू कर दी तो उसको यह तीनों चीजें मिलती चली गयीं । आदमी के भीतर जब करुणा जाग्रत होती है तो वह संत बन जाता है, ऋषि बन जाता है । हिन्दुस्तान के ऋषियों का इतिहास ठीक ऐसा ही रहा है ।

जिस किसी का कुण्डलिनी जागरण जब होता है तो ऋद्धियाँ आती हैं सिद्धियाँ आती हैं, चमत्कार आते हैं । उससे वह अपना भला करता है और दूसरों का भला करता है । मेरा गुरु आया मेरी कुण्डलिनी जाग्रत करता चला गया । हम जो भी प्राप्त करते हैं अपनी करुणा को पूरा करने के लिए–विवेकशीलता को पूरा करने के लिए खर्च कर देते हैं और उसके बदले मिलता है असीम संतोष, शांति और प्रसन्नता । दुखी और पीड़ित आदमी जब यहाँ आँखों में आँसू भरकर आते हैं तो सांसारिक दृष्टि से उनकी सहायता कर देने पर मुझे बड़ी प्रसन्नता होती है । शारीरिक से लेकर मानसिक बीमारों तक दुखियारों एवं मानसिक दृष्टि से कमजोरों से लेकर गिरे हुए आदमी तक जो पहले कैसा घिनौना जीवन जीते थे, उनके जीवन में जो हेर फेर हुए हैं, उनको देख कर बेहद खुशी होती है जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता । यह कुण्डलिनी का चमत्कार है।

आज के दिन मेरे मन में एक ही विचार आता है कि यहाँ जो भी लोग आते हैं उनको मेरे कीमती सौभाग्य का एक हिस्सा मिल जाता तो उनका नाम, यश अजर–अमर हो जाता । इतिहास के पन्नों पर उनका नाम रहता । अभी आपको जैसा घिनौना, मुसीबतों से भरा–समस्याओं से भरा–जीवन जीना पड़ता है –तब जीना न पड़े । आप अपनी समस्याओं का समाधान करने के साथ–साथ हजारों की समस्याओं का समाधान करने में समर्थ बनें । फिर आपको न कहना पड़े कि गुरु जी हमारी मुसीबत दूर कर दीजिए । फिर क्या करना पड़े ? गुरुजी को ही आपके पास आना पड़े और कहना पड़े कि हमारी मुसीबत दूर कर सकते हो तो कर दीजिए । विवेकानन्द के पास रामकृष्ण परमहंस जाते थे और कहते थे कि हमारी मुसीबत दूर कर दीजिए और हमारे पास भी हमारा गुरु आया था यह कहने कि हमारी मुसीबत दूर कर दीजिये । उनने कहा–हम चाहते हैं कि दुनिया का रूप बदल जाय , नक्शा बदल जाय, दुनिया का कायाकल्प हो जाय । तो आप खुद नहीं कर सकते ? नहीं खुद नहीं कर सकते । हम जिस काम को कर रहे हैं, उस काम में हम जनता के सम्पर्क में नहीं जा सकते । जीभ माइक का काम नहीं कर सकती और माइक जीभ का काम नहीं कर सकता । जीभ और माइक दोनों के सम्पर्क से कितनी दूर तक आवाज फैलती है । हमारा गुरु जीभ है और हम माइक हैं, उनके विचारों को फैलाते हैं । हम चाहते हैं कि आप भी 'लायक ' हो जाइये । अगर आपके भीतर 'लायकी ' पैदा हो जाय तो मजा आ जाय । तब दोनों चीजें शक्तिपात और कुण्डलिनी जो भगवान के दोनों हाथों मे रखी हुई हैं, आपको मिल जायँगी । शर्त केवल एक ही है कि अपने आपको 'लायक' बनालें पात्र बना लें । यदि लायक नहीं बने तो मुश्किल पड़ जायगी । कुण्डलनी जागरण के लिए पात्रता और श्रद्धा का होना पहली शर्त है ।

आज का दिन ऊँचे उद्देश्यों से भरा पड़ा है । हमारे जीवन का इतिहास पढ़ते हुए चले जाइये, हरकदम वसंत पंचमी के दिन ही उठे हैं । हर वसंत पंचमी पर हमारे भीतर एक हूक उठती है, एक उमंग उठती है । उस उमंग ने कुछ ऐसा काम नहीं कराया जिससे हमारा व्यक्तिगत फायदा होता हो । समाज के लिए, लोकमंगल के लिए, धर्म और संस्कृति के लिए, सेवा के लिए ही हमने प्रत्येक वसंत पंचमी पर कदम उठाये हैं । आज फिर इसी पर्व पर तीन कदम–उठाते हैं । पहला कदम–सारे विश्व में आस्तिकता का वातावरण बनाने का है । आस्तिकता के वातावरण का अर्थ है–नैतिकता, धार्मिकता, कर्तव्यपरायणता के वातावरण का विस्तार । ईश्वर की मान्यता के साथ बहुत सारी समस्यायें जुड़ी हुई हैं । ईश्वर एक अंकुश है । उस अंकुश को हम स्वीकार करें, कर्मफल के सिद्धान्त को स्वीकार करें और अनुभव करें कि एक ऐसी सत्ता दुनिया में काम कर रही है जो सुपीरियर है अच्छी है–नेक है–पवित्र है । उसी का अंकुश है और उसी के साथ चलने में भलाई है । यह आस्तिकता का सिद्धान्त है । इसी को अग्रगामी बनाने के लिए हमने गायत्री माता के मन्दिर बनाये हैं । गायत्री माता का अर्थ है विवेकशीलता, करुणा, पवित्रता, श्रद्धा । इन्हीं सब चीजों का विस्तार करने के लिए आप से भी कहा गया है कि आप अपने घरों में, पड़ोस के घरों में गायत्री माता का एक चित्र अवश्य रखें । घर–परिवार में आस्तिकता का वातावरण बनायें ।

यज्ञ और गायत्री की परम्परा को हम जिन्दा रखना चाहते हैं । इसके विस्तार के लिए चल पुस्तकालय चलाने से लेकर धकेल गाड़ी–ज्ञानरथ चलाने के लिए दो घंटे का समय प्रत्येक परिजन को निकालना चाहिए । यही दो घंटे भगवान का भजन है । भगवान के भजन का अर्थ है–भगवान की विचारणा को व्यापक रूप में फैलाना । हमने यही सीखा है और चाहते हैं कि आप का भी कुछ समय गायत्री माता की पूजा में लगे । जैसे हमारे गुरुजी ने हम से समय माँगा था और हमें निहाल किया था, वही बात आज आपसे भी कही जा रही है कि अपने समय का कुछ अंश आप हमें भी दीजिए आस्तिकता को फैलाने के लिए । पाने के लिए कुछ न कुछ तो देना ही पड़ता है । पाने की उम्मीद करते हैं तो त्याग करना भी सीखना होगा ।

आज के दिन–हमने आपसे ब्रह्मवर्चस् का उद्घाटन कराया था । ब्रह्मवर्चस् एक सिद्धान्त है कि मनुष्य के भीतर अनन्त शक्तियों का जखीरा सोया हुआ है जिसे जगाना है । जगाने के लिए तप

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

करना पड़ता है । तप करके हम अपने भीतर सोये हुए स्रोतों को जगा सकते है, उभार सकते हैं । तप करने का सिद्धान्त यह है जिससे खाने–पीने से लेकर ब्रह्मचर्य के नियम पालने तक के बहिरंग तप आते हैं और भीतर वाले तप में हम अपनी अन्तरात्मा और चेतना को तपा डालते हैं । तप करने से शक्तियाँ आती हैं, मनुष्य में देवत्व का उदय होता है । मनुष्य में देवत्व का उदय करने के लिए सामान्य जीवन में आस्तिकता अपनानी और बहिरंग जीवन में तपश्चर्या करनी पड़ती है । आस्तिकता का अर्थ नेक जीवन और तपश्चर्या का अर्थ लोकहित के लिए–सिद्धान्तों के लिए मुसीबतें सहने से है । तप करने की शिक्षा ब्रह्मवर्चस् द्वारा सिखाते हैं । यह एक प्रतीक है–सिम्बल है एक स्थान है । मनुष्य के भीतर देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग का अवतरण यही हमारे दो सपने हैं । हमारी कुण्डलिनी और शक्तिपात इन्हीं दो प्रयोजनों में काम आती हैं, तीसरे किसी प्रयोजन में नहीं । तप परायण और लोकोपयोगी जीवन–यही मनुष्य में देवत्व का उदय है ।

धरती पर स्वर्ग के वातावरण का क्या मतलब है ? अच्छे वातावरण को स्वर्ग कहते हैं । स्वर्ग बैकुण्ठ में ही नहीं होता, वरन् जमीन पर भी हो सकता है । जहाँ अच्छे आदमी, शरीफ आदमी, अच्छी नीयत के आदमी ठीक परम्परा को अपनाकर भले आदमियों के तरीके से रहते हैं वहीं स्वर्ग पैदा हो जाता है । सन्त इमर्सन कहते थे 'मुझे कहीं भी भेज दो हम उसको स्वर्ग बनाकर रख देंगे ।' हम चाहते थे कि धरती पर स्वर्ग बनाने के लिए कोई एक ऐसा मोहल्ला बना दें–एक ऐसा ग्राम बसा दें , जिसमें त्याग करने वाले सेवा करने वाले लोग आयें और वहाँ पर सिद्धान्तों के आधार पर जियें । हलकी–फुलकी, हँसती–हँसाती शांति की जिंदगी जियें–मोहब्बत की जिंदगी जियें और यह दिखा सकें कि लोकोपयोगी जिन्दगी भी जियी जा सकती है क्या ? धरती पर इसका एक नमूना बनाने के लिए हमने गायत्री नगर बसाया है और आपको दावत देते हैं कि यदि आप अपने बच्चे को संस्कारवान नहीं बना सकते तो उसको हमारे सुपुर्द कर दीजिये आप कौन हैं ? हम बाल्मीक ऋषि हैं और बाल्मीक ऋषि के तरीके से आपके बच्चों को लव–कुश बना सकते हैं । आपकी औरत को तपस्विनी सीता बना सकते हैं । दोनों संस्थाओं की वसंत पंचमी के दिन इसीलिए स्थापना की गई है । आस्तिकता के लिए ज्ञान यज्ञ के लिए–विचारक्रांति के लिए यह एक नमूना है ।

तपश्चर्या के सिद्धान्तों को प्राणवान बनाने के लिए ज्ञान–विज्ञान के लिए , ब्रह्मवर्चस् और आस्तिकता को जीवित करने के लिए–धरती पर स्वर्ग पैदा करने के लिए हिलमिल कर रहने और त्याग, बलिदान, सेवा की जिन्दगी जीने के लिए गायत्री नगर बसाया गया है । लोग यहाँ हमारा प्यार पाने के लिए, संस्कार पाने के लिए, आदर्श पाने के लिए , प्रेरणा पाने के लिए , प्रकाश पाने के लिए आते हैं । नैमिषारण्य क्षेत्र में शौनक और सूत का संवाद होता था । सारे ब्राह्मण बैठते थे , ज्ञानध्यान की बातें करते थे और लोकोपयोगी जीवन जीते थे । मेरा भी मन था कि एकदानैमिषारण्ये की तरीके से स्नेहवश लोग यहाँ आयें और हिलमिल कर काम करें, प्यार की बातें करें, समाज सेवा की बातें करें , दूसरों को उठाने की बातें करें । हम एक ऐसी दुनिया बसाना चाहते हैं, ऐसा नगर बसाना चाहते हैं जिससे दुनिया को दिखा सकें कि भावी जीवन–भावी संसार अगर होगा तो स्वर्ग जैसा कैसे बनाया जा सकेगा ? स्वर्ग में शान्ति का–परमार्थ का जीवन जीने के लिए क्या–क्या तकलीफें आ सकती हैं ? ऐसा हम गायत्री नगर का उद्घाटन करते हैं । चूँकि–हमारे गुरु ने यही दिया और उसके लिये वायदा किया कि तेरा ऊँचा उद्देश्य है तो तेरे लिए कमी नहीं पड़ेगी । मैं भी आपको विश्वास दिलाता हूँ कि अगर आपके जीवन में उद्देश्य ऊँचे हों तो आपको कमी नहीं रहेगी, कोई अभाव नहीं रहेगा ।

एक दार्शनिक बगीचे में सो गये । सोते समय चारों ओर फूलों पर तितलियाँ उड़ती नजर आरही थीं । सपने में भी पूरे समय वे यह अनुभव करते रहे कि स्वयं ही तितली हो गये है और फूलों पर बैठने का रस ले रहे थे । वे बड़े प्रसन्न थे ।

देर तक सोने के बाद जब वे उठे तो भौंचक्के थे । साथी दार्शनिक से इस प्रकार हैरान होने का कारण पूछा तो उनने कहा कि समझ में नहीं आता कि मैं आदमी था और तितली का स्वप्न देख रहा था अब भी मैं तितली हूँ आदमी बनजाने का सपना देख रहा हूँ ।

दूसरे दार्शनिक ने समाधान किया कि दोनों ही परिस्थितियों में अपने–अपने ढंग में दोनों ही बातें सही मानी जा सकती है ।

मेरी एक ही इच्छा और एक ही कामना रही है कि वसंत पर्व के दिन आपको बुलाऊँ और अपने भीतर जो पक्ष है, उस पिटारी को खोलकर दिखाऊँ कि मेरे अन्दर कितना दर्द है , कितनी करुणा है, जीवन को पवित्र बनाने की कितनी संवेदना है, कितना देवत्व है । यही खोलकर आपको दिखाना चाहता था । अगर आपको ये चीजें पसंद हों तो मैं चाहता हूँ कि आप इन चीजों को देखें, इनको परखें , छुएँ और अगर हिम्मत हो तो इनको खरीद ही ले जायँ । अपने गुरु का अनुग्रह मैंने खरीद कर लिया है और चाहता हूँ कि आप भी अपने गुरु का अनुग्रह खरीद कर ले जायँ, शांति खरीद कर ले जायँ , महानता खरीद कर ले जायँ , और जो कुछ भी दुनिया में श्रेष्ठ है , वह सब खरीद कर ले जायँ तो आप धन्य हो जायँ । खरीदने के लिए कहाँ जायँ ? हम देंगे आप को , जैसे हमारे गुरु ने दिया शक्तिपात के रूप में और कुण्डलिनी के रूप में यही है हमारी आकांक्षा और अभिलाषा ।

ॐ शान्तिः ✱

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.



परमपूज्य गुरुदेव की - अमृतवाणी

प्रस्तुत अंक में पाठकों के सम्मुख हम दे रहे हैं शांतिकुंज के गायत्री विद्यापीठ गुरुकुल के शुभारंभ के अवसर पर एक जून १९८० को परमपूज्य गुरुदेव द्वारा दिये गए उद्घाटन–उद्बोधन के महत्वपूर्ण अंश । विद्या व शिक्षा का स्पष्ट अंतर व सार्थक स्वरूप समझाने वाला यह सारगर्भित विवेचन आज देवसंस्कृति की ओर दिशा हेतु मुँह उठाकर ताक रही मानवजाति के लिए अत्यन्त प्रेरणादायी व सामयिक है । प्रस्तुत है पूज्यवर की अमृतवाणी ।

गायत्री मंत्र हमारे साथ–साथ बोलिए–

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य–
धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ।

देवियो एवं भाईयो ! आज हम एक बहुत छोटी सी शुरूआत कर रहे हैं, जो बाहर से देखने में कोई खास, महत्व की नहीं मालूम होती । सरकारी स्कूल खुलते हैं बहुत से कॉलेज खुलते रहते हैं और शिक्षा के लिए जगह–जगह सरकारी-गैरसरकारी प्रयत्न चलते रहते हैं । ऐसी दशा में हम जिस कार्य का उद्घाटन कर रहे हैं, उसका यों प्रत्यक्ष कोई महत्व मालूम नहीं पड़ता । लगभग ३५ से ४० बच्चों तथा २०से ३० लड़कियों–महिलाओं की शिक्षा से हम यह एक छोटी सी शुरूआत कर रहे हैं । नन्हा सा आरंभ है लेकिन आप सब जरा बारीकी से देखें तो यह मालूम पड़ेगा कि यह कोई बड़ा काम किया जा रहा है ।

बीज बोते समय आपने देखा होगा कि नन्हा सा बीज खेत में डाल देते हैं, जरासी पौध लगा देते हैं तो प्रारंभ लगता तो छोटा सा ही है किन्तु जब हरी भरी फसल खड़ी होती है तो ढेरों अनाज पैदा होता दिखाई देता है । आपने मक्के का, धानका, गन्नेका पौधा लगते देखा है । काम जरासा होता है किन्तु परिणति बड़ी । बगीचा लगाते समय गुल्लियाँ बोई जाती हैं लेकिन जब हराभरा बगीचा उगकर सामने आता है तो छोटा सा काम जो किसी दिन प्रारंभ किया गया था, बड़ा परिणाम लेकर आता दिखाई देता है । हमने अपनी जिन्दगी में हमेशा ऐसे ही काम किए हैं । ऊँचे लक्ष्यों के लिए , ऊँचे उद्देश्यों के लिए, छोटी शुरूआत की है व परिणाम विराट परिमाण में सामने आया है । यहाँ जो शुभारंभ कर रहे हैं, वह बाहर के स्कूलों की तुलना में कोई खास महत्व का नहीं लगता किन्तु वास्तव में महत्व रखता है, यह मैं आपको स्मरण दिलाना चाहता हूँ ।

स्वामी श्रद्धानन्द के मनमें एक बात आयी कि छोटी उमर के बच्चे ही वह आधार हैं, जिनपर संस्कारों का आरोपण किया जा सकता है , कच्ची लकड़ी को मोड़ा जा सकता है । पक्की लकड़ी को मोड़ना मुश्किल है, तोड़ना आसान है । छोटी उमर में यदि ध्यान दिया जाय तो बच्चों को महापुरुष बनाया जा सकता है । रामचंद्रजी और लक्ष्मण जी को विश्वामित्र जी छोटी उमर में ले गए थे और उनको बला–अतिबला विद्या सिखाकर महामानव बना दिया था । ऋषि संदीपनी के आश्रम में भी श्रीकृष्ण छोटी उमर में गए थे व महामानव बनकर आए थे । लव एवं कुश का शिक्षण बाल्मीकि के आश्रम में तब हुआ था जब वे बालक थे । छोटी उमर का बड़ा महत्व है । बड़ी उम्र होने पर आते तो शायद इतना बड़ा परिणाम न निकलता जितना ज्याद ऊँचे स्तर का शिक्षण छोटी उम्र में सिखाया जा सकता है, बड़े होने पर उतना संभव नहीं है । स्वामी श्रदानन्द ने यही प्रयास किया । एक छोटा सा स्वयं का मकान था, उसे बेच दिया । मकान की कीमत मिली–हजार पाँच हजार रुपया । आज से लगभग अस्सी वर्ष पुरानी बात मैं कह रहा हूँ । घर बेचने के बाद हरिद्वार में गंगा के पार कांगड़ी गाँव में गुरुकुल के नाम पर छोटे–छोटे झोंपड़े बनाए और दस विद्यार्थियों से अपनी संस्था की शुरूआत की । जिनने भी देखा, सबने मखौल उड़ाया । दस बच्चों का भी कोई स्कूल होता है । स्कूलों की तो बड़ी शानदार इमारतें होती हैं । देहरादून, मंसूरी में पब्लिक स्कूलों का ठाटबाट तो देखिए । उसके मुकाबले फूस की झोंपड़ियों का भला क्या मूल्य ? किन्तु सिद्धान्तों के

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

प्रति अडिग श्रद्धानन्द ऊँचे लक्ष्य को लेकर काम करते गए । गंगा में आई बाढ़ भी उनके उद्देश्य को डिगा नहीं सकी । एक शानदार संस्था के रूप में गुरुकुल कांगड़ी उभर कर आई । उसमें से बड़े शानदार आदमी निकले । इन्द्रसेन विद्यावाचस्पति, सत्यदेव विद्यालंकार रामगोपाल विद्यार्थी ऐसे कुछ गिनेचुने किन्तु तपे हुए आदमी जो उन दिनों इस गुरुकुल ने निकाले, किसी दूसरे स्कूल से नहीं निकले ।

हमारे प्रत्येक काम को आप देखें तो आपको लगेगा कि वह प्रारंभ में भले ही छोटा हो किन्तु ऊँचे उद्देश्यों को लेकर आरंभ हुआ वह बड़े परिणाम तक पहुँचा । एक छोटा सा छापाखाना खोला था हमने आज से चालीस बयालीस साल पहले । जिसने देखा, हँसते हँसते लोटपोट हो गया । साढ़े तीन सौ रुपये की हाथ से चलने वाली मशीन से कोई जमाने को बदलने वाली पत्रिका भी छप सकती है क्या ? सबने कहा क्यों पैसा नष्ट करते हो ? कुल एक हजार का छापाखाना काम करने वाले तीन आदमी । हाथ से बना कागज । दीखने में छोटासा छापाखाना पर हमारा मकसद बड़ा था, उद्देश्य बड़ा था तो परिणाम जो निकलकर सामने आए वे कैसे शानदार थे । छोटी मशीन में दुनिया को हिला देने वाला, ऊँचे मकसद व उद्देश्यों वाला साहित्य छपता था जबकि बड़ी–बड़ी मशीनों में आपको क्या–क्या बताएँ, ऐसे गंदे उपन्यास व गंदी किताबें छपती हैं । किन्तु हमारे छोटे से प्रेस ने दुनिया को झकझोर दिया । जिसके पीछे मकसद काम करते हैं, उद्देश्य काम करते हैं तो क्रियाकलाप छोटे हों या बड़े फलते व फूलते हैं ।

एक और उदाहरण आपको दूँ । राजस्थान की वनस्थली नामकी एक जगह पर एक अध्यापक ने छोटा सा बालिका विद्यालय खोला । हीरालाल शास्त्री नाम के गाँव के उस छोटे से अध्यापक ने अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया तो वहाँ अब क्या है ? करोड़ों रुपये की इमारत बनी है । लड़कियाँ हवाई जहाज चलाना सीखती हैं, सही अर्थों में आत्मनिर्भर बन नारी को जगाने की विधा में निष्णात् होती हैं, न जाने क्या क्या वहाँ पढ़ती हैं । यह सब इसलिए हुआ कि इस सबके पीछे ऊँचा उद्देश्य था । हमारा भी आज गुरुकुल आरंभ करने के पीछे ऐसा ही उद्देश्य है । जब यह साथ होता है तो जनता , इंसान व भगवान सब सहायता करने आ जाते हैं और उदाहरण सुनेंगे आप ?

इटावा जिले का एक अँग्रेज इंस्पेक्टर । नाम था ह्यूम । उसने गाँव–गाँव जाकर आदमी एकत्र किए । हिंदुस्तान में युवाओं की, जनता की, एक समिति होनी चाहिए । उद्देश्य था पीछे तो पचास साठ आदमी इकट्ठे हुए और काँग्रेस का जन्म हो गया । तिलक, नेहरू, शास्त्री, सुभाषचंद्र बोस सब उसी की देन हैं । छोटे संगठन के पीछे ऊँचे उद्देश्य हों, ऊँचा मकसद हो तो वे दुनिया में सफल होते हैं । जिनके मकसद घटिया होते हैं तो वे बड़े काम करने वाले भी निंदा के पात्र बनते हैं व उन पर लानत बरसती है ।

हम एक छोटी सी पाठशाला शुरू करके एक शानदार शुरूआत करते हैं आज कि हम शिक्षा के साथ–साथ संस्कृति-विद्या भी पढ़ाना चाहते हैं । आज शिक्षा तो सब जगह है, संस्कृति नहीं है । हजारों रुपये एक बच्चे के ऊपर प्रतिदिन खर्च हों, ऐसे विद्यालय आज भी देहरादून, मंसूरी में हैं । आप जाइए देख आइए पर यह भी देखिए कि वहाँ संस्कृति है क्या ? संस्कृति किसे कहते हैं ? संस्कृति वह जिसे ग्रहण करने के बाद आदमी इन्सान बन जाता है । इंसान के बाद महामानव फिर भगवान बन जाता है । किन्तु आज की शिक्षा, वह तो संस्कृतिविहीन है । आज के अनपढ़ आदमी की तुलना में पढ़े लिखे को देखकर मुझे डर लगता है । एक बिना पढ़े लिखे से निश्चिन्तता रहती है कि इसमें बदमाशी या चालाकी नहीं हो सकती । होगी तो एक सीमा के अन्दर ही । अंदर भलमनसाहत है अभी । यदि इसे थोड़ा पढ़ा लिखा कर जीवन जीना सिखा दिया जाय तो आदमी बन सकता है । किन्तु पढ़ा–लिखा ? वह तो दिमाग की खिड़की बंद किए बैठा है, हददर्जे का बदमाश है व अहंकारी है । संस्कृति यही करती है कि आदमी को सही ढंग से आदमी बनकर जीना सिखाती है । कौन सिखाए संस्कृति को ? सरकार कर सकती है ? नहीं, सरकार का संस्कृति से, विद्या से, कोई ताल्लुक नहीं । सरकार का सभ्यता से, एटीकेट से, लिबास–पोशाक से तो ताल्लुक हो सकता है पर संस्कृति से नहीं । संस्कृति का मंत्रालय या विद्यालय, विश्वविद्यालय सरकार के पास हो सकता है पर उसमें संस्कृति व विद्या नाम की कोई चीजें नहीं हैं, मात्र नाम ही नाम है ।

संस्कृति का शिक्षा में समावेश हर कोई नहीं कर सकता । केवल ऋषि ही कर सकते हैं । प्राचीन काल में शिक्षा के क्षेत्र में हर कोई हाथ नहीं डालता था । आप मकान बनाइए, उद्योग खड़ा कीजिए खेती

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

बाड़ी कीजिए, राज कीजिए पर एक काम मत करिए । वह है शिक्षा से ज़ुड़ी संस्कृति का शिक्षण जिसे मिला जुलाकर "विद्या" कहते हैं । हर कोई विद्या नहीं दे सकता । आज तो हर कोई विद्यालय खोले बैठा है, उसका मालिक बना हुआ है पर प्राचीनकाल में यह कार्य विशुद्धतः ऋषियों के जिम्मे था व वे इसे बखूबी निभाते थे । संस्कृति तो वही सिखा पायगा, जिसके पास हो संस्कृति । मास्टरों के पास कहाँ है संस्कृति ? मास्टरों व मजूरों में आज कोई अंतर है ? मास्टर कहते हैं गुरू को और गुरू वे होते हैं जो शिष्य को अनगढ़ता के अँधेरे से निकालकर सुगढ़ता का प्रकाश भरा रास्ता दिखाते हैं । मात्र जानकारी नहीं देते । वे आत्मीयता का पोषण देते हैं, संवेदना देते हैं । इसी को संस्कृति या विद्या कहते हैं ।

हम प्रायमरी स्कूल में पढ़े थे गाँव के । उस जमाने में, आज से साठ साल पहले दो रुपये की छात्रवृत्ति हर प्रतिभावान बच्चे को मिलती थी । हमारे गाँव आँवलखेड़ा के स्कूल के एक तिहाई विद्यार्थी सारे आगरा जिले के वजीफे हड़प ले जाते थे । किस कारण ? क्योंकि वहाँ गुरूजी थे, मास्टर साहब नहीं । हमारे गुरूजी ने स्कूल को गुरुकुल बना दिया था । बच्चे स्कूल में ही सोते थे । सबेरे उठाकर वे माँ की तरह कुल्ला कराते, नहलाते व फिर पढ़ाते । नींद आती तो धमकाते नहीं थे । कहते अच्छा सोजा, पर जल्दी उठ जाना , देर तक मत सोना । न केवल हम बल्कि जितने विद्यार्थी उस स्कूल में उस जमाने में पढ़े तीन साल तक बराबर सारे जिले की छात्रवृत्तियाँ लेकर आए । हर वर्ष बीस–तीस बच्चे छात्रवृत्ति लेकर आते रहे क्योंकि वह नौकरी के लिए नहीं, संस्कृति के लिए शिक्षण देते थे । हर माँ –बाप को प्रसन्नता थी कि मास्टर साहब के पास बच्चा जितना ज्यादा रह जाएगा, उतना ही अच्छा है । सबेरे जल्दी उठेगा, नहाएगा, साफ रहेगा, आदमी बनेगा । पढ़ा लिखा बने चाहे नहीं, पर विनम्र बनेगा ।

ऐसी गुरुकुल पद्धति मित्रो । समाप्त हो गयी । हमें अब क्वालिटी के सहयोगी मिले हैं तो हम इसे आरंभ करते हैं । सारे गायत्री परिवार के चौबीस लाख परिवारों के बच्चों को पढ़ाने की हैसियत तो हमारी नहीं है पर हम एक "मॉडल" खड़ा करना चाहते हैं कि बच्चों का शिक्षण कैसा होना चाहिए ? राम और लक्ष्मण को विश्वामित्र माँगकर लाए थे । हम भी गायत्री परिवार के विशाल परिकर के सदस्यों से उनके बच्चों को माँगेंगे कि हम इन्हें नवयुग के लिए तैयार करना चाहते हैं । आप हमें दीजिए । हम दो सौ बच्चों को अगले वर्ष से किण्डरगार्टन से लेकर दसवीं तक की शिक्षा देने का कार्य करेंगे पर इसकी विशेषता इसका सरकारी पाठ्यक्रम नहीं वरन् वह होगी जो प्राचीनकाल के गुरुकुलों में थी संस्कृति, शिष्टाचार जीवन जीने की कला, आत्मावलम्बन, स्वावलम्बन । यह एक बीजारोपण मात्र है, पर इसकी परिणति आप आने वाले बीस तीस वर्षों में देखेंगे , जब यह विश्वविद्यालय का रूप ले लेगा ।

हम यहाँ चौबीस घंटे का शिक्षण देंगे । जिसमें खेलना–कूदना भी शामिल है, व्यायाम करना भी , हँसी मजाक भी तथा सोना भी । अपने पैरों पर खड़े होना भी तथा भयमुक्त होकर जीना भी और क्या करेंगे आप इस विद्यालय में ? हम यहाँ परिवार निर्माण की शिक्षा आरंभ करने वाले हैं ताकि कुटुम्ब व्यवस्था ठीक हो सके । व्यक्ति को अच्छा बनाने के लिए कुटुम्ब को अच्छा बनाना होगा । आज के परिवार यह काम नहीं कर सकते । वे रात को खाना खाते हैं, रेडियो सुनते हैं, टीवी देखते हैं व सो जाते हैं । सुबह तब उठते हैं, जब बच्चे स्कूल चले जाते हैं । परिवारों को बनाने के लिए हमें नारियों का शिक्षण करना होगा । वे ही बच्चों में संस्कारों का आरोपण कर पाएँगी । नारियों के शिक्षण के बिना गुरुकुल में बच्चों का शिक्षण अधूरा है । मात्र बच्चों का गुरुकुल एक भवन तक सीमित नहीं, यह समग्र परिवार शिक्षण का आरण्यक गायत्री तीर्थ के रूप में हमने इसीलिए बनाया है ।

आज नारी जाति की व उनके कारण परिवारों की जो दुर्गति है, उसे देखकर हमें दुख होता है । बच्चियाँ पढ़ती हैं , बी. ए. करती हैं , एम. ए. करती हैं । यह पढ़ाई किस काम आती है । नौकरियाँ कहाँ रखी हैं ? सबसे बड़ी बात है कुटुंब की संस्था का संचालन । कुटुम्ब एक समाज है, राज्य है, एक दुनिया है, जिसमें से महापुरुष निकाले जा सकते हैं । व्यक्ति को क्या से क्या बनाया जा सकता है । शादी और परिवार का कोई ताल्लुक नहीं है । पेट से बच्चा पैदा होता है, वही परिवार कहलाता है , यह सही नहीं है । शादी करने से ही परिवार बनता है , यह जरूरी नहीं है । परिवार है सहयोग सहकार का नाम । हिलमिल कर रहने की भावना का नाम गायत्री परिवार है, युग निर्माण परिवार है । परिवार की भावना यदि बन सके

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

तो समाज बन सकता है । समाज की ढलाई का कारखाना है परिवार । इसमें ढलता है सुसंस्कारी व्यक्ति जो उसकी इकाई है । सुख और शांति की दृष्टि से परिवार की महत्ता है, जिसके संचालन के लिए महिलाओं की जरूरत है । महिलाओं का, नारी जाति का शिक्षण आवश्यक है । परिवार निर्माण के लिए ऐसा कहीं कोई स्कूल नहीं है । वह हमने यहाँ गुरुकुल के रूप में बनाया है ।

बच्चों की समस्याएँ समझकर उनका समाधान करने, उन्हें ही नहीं परिवार के हर सदस्य को ढाल देने की कला भगवान ने जितनी नारी को दी है, उतनी और किसी को नहीं । पुरुषों के हाथों धमकाने की कला दी है व नारी को जो कला दी है, उसे मोहब्बत कहते हैं, संवेदना कहते हैं, करुणा कहते हैं । मर्दों के पास ताकत तो है, समर्थता तो है पर मोहब्बत नहीं है । उन्हें बनाने बढ़ाने के लिए-ढालने के लिए नारी को ही आगे बढ़ाना होगा । हम आप से कार्यकर्त्ताओं की बेटियों, धर्मपत्नियों से देवकन्याओं से जो यहाँ माताजी की गोदी में रहकर पलीं उन सबसे इस स्कूल की परिवार निर्माण की प्रयोगशाला की शुरूआत करते हैं । गायत्री परिवार के लोगों से कहते हैं कि अपनी पत्नियाँ हमें सौंपिए । हम उन्हें संस्कारवान बनाएँगे । संस्कार किसी के पास नहीं हैं । सास के पास हैं ? सास तो उससे भी ज्यादा फूहड़ है । अपनी बेटी बहू को कहाँ से देगी वह संस्कार । इसीलिए समय की आवश्यकता को देखते हुए हम संस्कारों के शिक्षण के लिए एक गुरुकुल आरंभ करते हैं विद्या, संस्कृति व ज्ञान द्वारा नयी पीढ़ी को बनाने के लिए ।

हमारी तो इच्छा थी कि स्कूली पाठ्यक्रम भी इस शिक्षा से निकाल देते पर क्या करें ? मजबूरी है । बच्चे, उनके अभिभावक कहेंगे कि हमें नौकरी के लायक भी नहीं बनने दिया । हम तो उन्हें जीवन जीने की कला, बड़ा आदमी-महामानव बनने की विधा, सिखाना चाहते हैं पर समय को देखते हुए विद्यालयीन सरकारी पाठ्यक्रम भी साथ जोड़ दिया है । मेट्रीक तक तो सरकारी शिक्षण पद्धति से पढ़ायेंगे पर साथ में जीवन की दिशा का निर्धारण करना, अपना भविष्य स्वयं कैसे बनाया जाय, इस विधा का शिक्षण करेंगे । संस्कारवान बनाएँगे । सामान्य जानकारी मिले-वहाँ तक तो हम बर्दाश्त करते हैं पर कालेजों की पढ़ाई का जब प्रश्न आएगा तब हम अपना बनाएँगे । भारतीय संस्कृति का शिक्षण करने वाला एक विश्वविद्यालय स्तर का तंत्र हम खड़ा करेंगे । कब करेंगे ? आप देखिएगा । हम हों न हों पर बीज बो रहे हैं । हमारे उत्तराधिकारी आने वाले दस-पंद्रह वर्षों में यह समग्र तंत्र तैयार कर देंगे । आपको इस संबंध में आशावादी होना चाहिए ।

आज हमें आई. ए. एस. की नहीं समाज को सुधारने वाले लोकसेवियों की जरूरत है । समाज को शानदार मनुष्यों की जरूरत है । स्वस्थ चिंतन करने वाले युवारक्त की जरूरत है । इसीलिए स्कूलों की, कॉलेजों की शिक्षण पद्धति में व्यापक क्रान्ति पैदा करने के लिए यहीं से वातावरण बनाते हैं । ये बच्चे नहीं हैं । इनमें महामानवों के बीज हैं । न जाने इनमें से कौन गाँधी है, नेहरू है, सुभाष बोस है, खुदीराम है । प्रत्येक के अंदर की मौलिक क्षमता को निखारने का प्रयास हम करेंगे । चार घण्टों की सरकारी पढ़ाई व बीस घण्टों की हमारी संस्कारों वाली पढ़ाई ।

उज्ज्वल भविष्य के लिए जरूरी है संस्कारवान बच्चे और सुसंस्कारी संवेदनशील-स्वावलम्बी शिक्षित नारी शक्ति । इन्हीं दो को बढ़ायेंगे हम । इस दिशा में हमारे कदम छोटे भले ही हों लेकिन परिणाम शानदार होंगे । आप देखना अगले दिनों सारी शक्तिपीठों में यही शिक्षण वृहत्रूप में चलने लगेगा व देखते-देखते विद्या विस्तार की क्रान्ति होती चली जाएगी । अब अंत में एक अनुरोध उनसे जो इस काम के लिए समय देंगे । उन बुड्ढों को जिनने घर वालों की नाक में दमकर रखा है, रिटायर हो चुके हैं, ढेर सारा समय है पर समाज के नाम पर समय माँगते हैं तो ठेंगा दिखाते हैं, हम यहाँ बुलाते हैं ताकि उनका लोक-परलोक दोनों सुधार सकें । उन्हें हमें पहले पढ़ाना पड़ेगा ताकि वे शिक्षक बन सकें । वानप्रस्थ स्तर के रिटायर्ड सेवाभावी व्यक्ति चाहिए हमें । यदि ऐसे व्यक्ति युवा वर्ग में से मिल सकें तो फिर बात ही क्या है ।घर में एक ही कमाने वाला है , उसे अभी हम नहीं बुलाते पर यह जरूर कहते हैं कि साल में वह एक बार नौ दिन का अनुष्ठान यहाँ आकर करे । अपने घर की महिलाओं व बच्चों का शिक्षण यहाँ देव परिवार में आकर करवाएँ । यह गुरुकुल एक समग्र, सर्वांगपूर्ण प्रयोगशाला है जिसमें हम नररत्नों को ढालेंगे , जिनसे व्यक्ति, परिवार व समाज बनेगा । हमें मौका दीजिए ताकि हम नया समाज बना सकें , नया जमाना ला सकें । इन बच्चों व महिलाओं का अब विद्यारंभ संस्कार होगा । हम अपनी बात समाप्त करते हैं । ॐ शांति : । ✷

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.



परम पूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

नवरात्रि साधना का तत्वदर्शन

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी प्रसंग के अन्तर्गत इस अंक में चैत्र नवरात्रि की पूर्व वेला में प्रस्तुत है ११ अप्रेल १९८१ को शांतिकुंज हरिद्वार में आयोजित नवरात्रि सत्र में उनका समापन व्याख्यान । स्वयं को प्रसुप्ति से जाग्रति में लाने व विगत का पुनरावलोकन कर आत्मिक प्रगति का उपक्रम बिठाने के लिए यह सारगर्भित व्याख्यान नयी दिशाएँ देता है व ऋषि संस्कृति के महत्वपूर्ण पड़ाव इस पर्व से नयी प्रेणाएँ हृदयंगम कराता है । तो पढ़ें इस अंक में, परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी चैत्र नवरात्रि के परिपेक्ष में ।

गायत्री मंत्र हमारे साथ–साथ बोलिए–

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

मित्रो ! नवरात्रि अब समाप्त होने जा रही है । आइए जरा विचार करें, इन दिनों हमने क्या किया व किस लिए किया ? इन दो प्रश्नों के उत्तर ठीक तरह से सोच लेंगे तो यह संभावना भी साकार होती चली जाएगी कि इससे हमें क्या मिलना चाहिए व क्या फायदा होना चाहिए ? आपकी सारी गतिविधियों पर हमने दृष्टि डाली व उसमें से यह निष्कर्ष निकालते हैं कि आपको अपने स्वाभाविक ढर्रे में हेरफेर करना पड़ा है । स्वाभाविक ढर्रा यह था कि आप बहुत देर तक सोए रहते थे । दिन में जब नींद आ गयी सो गए , रात्रि देर तक जगते रहे । अब ? अब हमने आपको दबोच दिया है कि सबेरे साढ़े तीन बजे उठना चाहिए । उठना ही पड़ेगा । नहाने का मन नहीं है । नहाना ही पड़ेगा । ये क्या किया ? यह हमने आपको दबोच दिया व पुराने ढर्रे में आमूलचूल हेरफेर कर दिया है ।

आप क्या खाते थे–हमें क्या मालूम ? आप नीबू का अचार भी खाते थे, पापड़ भी खाते थे, चटनी भी खाते थे, जाने क्या–क्या खाते थे । हमने आपको दबोच दिया कहा–यह नहीं चल सकता । यह खाना पड़ेगा व अपने पर अंकुश लगाना पड़ेगा । टाइम का आपका कोई ठिकाना नहीं था । जब चाहा तब बैठ गए । मन आया तो पूजाकर ली नहीं आया तो नहीं ही करी । अब आपको व्रत व संकल्प के बंधनों में बाँधकर हमने दबोच दिया कि सत्ताईस माला तो नियमित रूप से करनी ही होंगी । ढाई घण्टे तो बैठना ही पड़ेगा । संकल्प लेने के बाद उसे पूरा नहीं करेंगे तो गायत्री माता नाराज होंगी, आपको पाप लगेगा, आप नरक में जायेंगे, अनुष्ठान खण्डित हो जाएगा , यह डर दिखाकर आपको दबोच दिया गया । पूर्व की गतिविधियों में हेरफेर करके आपको इस बात के लिए मजबूर जब किया गया कि जो आदतें अपने स्वभाव में नहीं है, उनका पालन भी करना आना चाहिए ।

क्या नौ दिन मात्र काफी नहीं हैं ? नहीं –नौ दिन काफी नहीं हैं । यह अभ्यास है सारे जीवन को कैसा जिया जाना चाहिए , उसका । आप इस शिविर में आकर और कुछ सीख पाए कि नहीं पर एक बात अवश्य नोट करके जाना । क्या ? वह है अध्यात्म की परिभाषा–अध्यात्म अर्थात् "साईंस ऑफ सोल"। अपने आपको सुधारने की विधा, अपने आपको सँभालने की विधा, अपने आपको समुन्नत करने की विधा । आपने तो यह समझा है कि अध्यात्म अर्थात् देवता को जाल में फँसाने की विधा, देवता की जेब काटने की विधा । आपने यही समझ रखा है न । मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि आप जो सोचते हैं बिलकुल गलत है । जब तक बेवकूफी से भरी बेकार बातें आप अपने दिमाग में जड़ जमाए बैठे रहेंगे, तब तक आप भटकते ही रहेंगे, झख ही झख मारते रहेंगे । खाली हाथ मारे–मारे फिरेंगे । आप देवता को समझते क्या हैं ? देवता को कबूतर समझ रखा है जो दाना फैला दिया और

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

चुपके–चुपके कबूतर आने लगे । बहेलिया रास्ते में छिपकर बैठ गया, झटका दिया और कबूतर रूपी देवता फँस गया । दाना फेंककर, चाँवल फेंककर, नैवेद्य फेंककर, धूपबत्ती फेंककर बहेलिए के तरीके से फँसाना चाहते हैं, उसका कचूमर निकालना चाहते हैं ? इसी का नाम भजन है ? तपश्चर्या , साधना क्या इसी को कहते हैं ? योगाभ्यास सिद्धान्त यही है ? मैं आपसे ही पूछता हूँ , जरा बताइए तो सही ।

आप देवियों को क्या समझते हैं ? हम तो मछली समझते हैं । आटे की गोली बनाकर फेंकी व बगुले की तरह झट उसे निगल लिया । धन्य हैं आप । आपके बराबर दयालु कोई नहीं हो सकता । मछली को पकड़ा तो कहा कि बहनजी आइए जरा । आपको सिंहासन पर बैठाएँगे आपकी आरती उतारेंगे और आपका जुलूस निकालेंगे । ऐसी ऐसी बातें करते हैं और जीवन भर इसी प्रवंचना में उलझे रहते हैं । देवियाँ कौन हैं ? मछलियाँ । देवता कौन है ? कबूतर । आप कौन हैं ? बहेलिया । यही धन्धा है । चुप । बहेलिए का मछली मार का धन्धा करता है कहता है हम भजन करते हैं, हम देवी के भक्त हैं । हम आस्तिक हैं । चुप, खबरदार । कभी मत कहना ऐसी बात । इसी को भजन कहते हैं तो हम यह कहेंगे कि यह भजन नहीं हो सकता आप ध्यान रखिएगा । आप अपने ख्यालातों को सही कीजिए अपने विचारों को सही कीजिए , अपने सोचने के तरीके को बदलिए यह हम आपको कहते हैं ।

मित्रो ! मैं आप से कह रहा था कि आप एक सिद्धान्त यहाँ से नोट करके ले जाना कि अध्यात्म का अर्थ होता है–अपने आपको सही करना–साइंस ऑफ सोल । यह आत्मा को चेताने का विज्ञान है । चमत्कारों, मैजिक व सिद्धियों का विज्ञान नहीं है । सीधा सादा सा अर्थ है–अपने आपे को कैसे सही रखा जाय, यह प्रशिक्षण देने की विधा । जब आप अपने आपको सही कर लेते हैं तो यकीन रखिए कि आपकी सभी समस्याओं का हल स्वतः हो जाता है । फिर एक भी समस्या ऐसी नहीं है जो ठीक न हो सके । आपकी सेहत खराब रहती है न । चलिए अध्यात्म का मर्म समझिए व देखिए आप स्वस्थ होते हैं कि नहीं । बीमारियों से हमने एक बार पूछा–क्यों बहनजी । आप मारी–मारी फिरती हैं, चाहे जिस पर हमला कर देती हैं, चाहे जिसको बीमार कर देती हैं । ये क्या बात है ? बीमारियों ने कहा –जो हमें बुलाता है, हम उसके पास जाते हैं । मनुष्य अपने असंयम द्वारा हमें हमेशा आवाज देता रहता है, बुलाता रहता है तो हम उसी के साथ बनी रहती हैं । आपने देखा, सुना ? बीमारी कभी कबूतर के पास नहीं जाती, बन्दर के पास नहीं जाती सिर्फ आपके पास आती है । क्यों ? क्योंकि आप बुलाते हैं । आप दैवी प्रकोपों को बुलाएँगे तो वे आएँगे व आप सौभाग्यों को बुलाएँगे तो वे आएँगे । आप कहेंगे नहीं, हम बीमारियों को नहीं बुलाते–दैवी प्रकोपों–दुर्योगों को नहीं बुलाते तो ऐसा ही होगा । पर काम तो वही करते हैं जिससे बीमारी को आना चाहिए व आप के पास सतत् बैठे रहना चाहिए । आप अपनी जीभ पर लगाम लगाइए इन्द्रियों पर नियंत्रण कीजिए, टाइम टेबल को ठीक कीजिए , तब देखिए कि क्या होता है, आपको कौन बीमार करता है ?

गाँधी जी तीस साल की उम्र के थे । आँतें सूख गयी थीं । रोज एनीमा से दस्त कराते थे । उनने लिखा है कि जब वे दक्षिणी अफ्रीका में थे तो सोचते थे कि यही कोई पाँच बरस और जियेंगे । एनीमा सेट कोई उठा ले गया व जंगल में फँस गए तो बेमौत मारे जाएँगे । जिंदगी का अब कोई ठिकाना नहीं है । लेकिन ऐसा नहीं हुआ । गाँधी जी ने अपने आपको ठीक कर लिया, सुधार लिया अपना आहार ठीक कर लिया तो आँतें भी उसी क्रम से ठीक होती चली गयीं । ८० वर्ष की उम्र में वे मरे, मरने से पहले वे कहते थे अभी हम १२० साल तक जियेंगे । मेरा ख्याल है कि वे जरूर जिए होते यदि गोली का शिकार नहीं होते । जब गाँधीजी की आँतें उन्हें क्षमा कर सकती हैं शरीर उन पर दया कर सकता है तो आपके साथ यह क्यों नहीं हो सकता ? शर्त एक ही है कि आप अपनी जीभ को छुट्टल सांड़ की तरीके से न छोड़कर उस पर काबू करना सीखें । जीभ ऐसी, जिसने आपकी सेहत को खालिया , आपके खून को खालिया, माँस को खालिया । कौन जिम्मेदार हैं–जीवाणु वातावरण । नहीं आप स्वयं व आपकी यह जीभ । यदि आप इसे काबू में कर सकें तो मैं बीमारियों की ओर से मुख्तार नामा लिखने को तैयार हूँ कि आपको कभी बीमारी नहीं होने वाली ।

ऐसे कई नमूने मेरे सामने हैं, जिसमें लोगों ने नेचर के कायदों का पालन कर के अपनी बीमारी को दूर भागा दिया । चंदगीराम भरी जवानी में तपेदिक के मरीज हो गए थे । कटोरा भर खून रोज कफ के साथ निकलता था । हर डाक्टर ने कह दिया था कि उसके बचने की कोई उम्मीद नहीं है । एक सज्जन आए व बोले आप अगर मौत को पसंद करते हों तो उस राह चलिए व यदि जिन्दगी पसंद हो तो मेरे बताए मार्ग पर चलिए । जिन्दगी का रास्ता क्या अपने ऊपर संयम जीभ पर संयम । आहार का संयम–विहार का संयम । शरीर से श्रम कीजिए व वर्जिश कीजिए । प्राणों का सागर चारों तरफ भरा पड़ा है, खींचिए, सादा भोजन कीजिए व सीमा

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

में करिए। फिर देखिए , क्या होता है ? देखते-देखते टीबी का रोगी वह व्यक्ति पहलवान चन्दगीराम बन गया ।

आप में से हर व्यक्ति पहलवान बन सकता है, अपनी कमजोरियाँ ठीक कर सकता है, अपनी सेहत ठीक कर सकता है, अपनी परिस्थितियाँ अपने अनुकूल बना सकता है, तनावभरी इस दुनिया में भी प्रसन्नतापूर्वक रह सकता है । पर क्या करें मित्रो ? आप दूसरों को-उसकी कमियों को तो खूब देखते हैं पर अपनी कमियों गलतियों असंयमों को कम देखते हैं । अपने आप पर नियंत्रण बिठाने का आपका कोई मन नहीं है । इसीलिए मैं आपको कभी अध्यात्मवादी नहीं कह सकता । मात्र दीन-दुर्बल आदतों का गुलाम भर कह सकता हूँ ।

मित्रो ! मैं आपको इस नवरात्रि अनुष्ठान के बारे में बताते हुए मूलभूत सिद्धान्तों की समीक्षा कर रहा था । यहाँ, हमने आपको दबोचा है, क्यों ? क्योंकि आप अपने सोचने के तरीके से लेकर रहन-सहन, आहार-विहार के तरीकों को जब तक इस गलत प्रकार से अख्तियार किये रहेंगे, सुधार और हेर फेर नहीं करेंगे तब तक आपकी एक भी समस्या हल नहीं होने वाली । नहीं गुरुजी ! आप तो वरदान-आशीर्वाद देते हैं । सिद्ध पुरुष हैं । हाँ । हम वरदान भी देते हैं व आशीर्वाद भी । लोगों को चमत्कार भी दिखा देते हैं, यह बात भी सही है । पर हम देते उन्हीं को हैं जो अपनी सहायता स्वयं करते हैं, पहले अपने आपको ठीक करने के लिए एक दम आगे बढ़ाते हैं । चमत्कार तो सिरदर्द के लिए एस्पीरिन की दवा की तरह है । आप ठीक हो जाते हैं ? नहीं, आप तब तक ठीक नहीं हो सकते, जब तक पेट ठीक नहीं करेंगे । टाइमली रिलीफ हम देते हैं पर ताकत तो ठीक होने की अंदर से उभारनी पड़ेगी । खून हम बाहर का आपको इसलिए लगाते हैं ताकि आपका अपना सिस्टम काम करना आरंभ कर दे । वरदान-चमत्कार किसी को परावलम्बी बनाने के लिए नहीं, उसे सहारा देने के लिए ताकि वह अपने पैरों पर खड़ा हो सके ।

नवरात्रि अनुष्ठान में यही अध्यात्म के मूलभूत सिद्धान्त मैंने आपको समझाने का प्रयास किया कि आप अपने पैरों पर खड़ा होना सीखिए । अपने चिन्तन और व्यवहार को सही ढंग से रखना सीखिए । आपकी अब तक की जिन्दगी वहमों में बीत गयी । अब उनसे मुक्ति पाना सीखिए । अपने आपको दबोचना सीखिए यह नवरात्रि अनुष्ठान का तपश्चर्या वाला हिस्सा है, जिससे हमने आपको अपने आप पर नियंत्रण करना सिखाया । यह बताया कि कम खाने से शरीर का कोई नुकसान नहीं बल्कि लाभ ही होता है । इसलिए आपको आदतें बदलकर उपवास करना सिखाया , अस्वादव्रत समझाया । आध्यात्मिक प्रगति के रास्ते का यह पहला कदम है ।

आहार संयम के बाद हमने आपको कहा था कि आपको विचारों पर संयम रखना आना चाहिए । आपको ब्रह्मचर्य से रहना चाहिए । गायत्री माता का फोटो आपने रखा था अपने सामने व उसी की आरती रोज करते रहे । क्यों ? कभी सोचा आपने ! मूर्ति क्यों रखी है, सोचा आपने ? बताइए इस चित्र व मूर्त्ति को देखकर कि इसकी उम्र कितनी होना चाहिए ? आपने देखा कि वह बीस साल की जवान युवती जैसी है । अस्सी साल की बुढ़िया तो नहीं है ? नहीं गुरुजी , वह तो उठती उम्र की जवान षोडषी दीखती हैं । आपका ख्याल ठीक है । यह हमने जानबूझ कर बनायी है । गायत्री माता की असली उम्र तो न जाने कितनी है ? जब हम अपने गुरुजी की उम्र सात सौ साल बताते हैं तो सोच सकते हैं कि गायत्री माता की उम्र क्या व कितनी होगी । उस उम्र की आप कल्पना भी नहीं कर सकते । सृष्टि जितनी पुरानी है , उससे भी कहीं अधिक आयु की यह गायत्री माता है । फिर ९६ साल की यह सुन्दर नयननक्षों वाली युवती क्यों बनायी ! अरे ! हमने आपको विचार करना सिखाया कि युवा नारी के बारे में आपको पवित्र दृष्टि रखते हुए यौन शुचिता का अभ्यास करना चाहिए । आप बेहूदे हैं । नारी को बाहर के तरीके से देखते हैं । नारी में आपको माता, बहन, बेटी नहीं दिखाई पड़ती । आपको तो सब वेश्या ही वेश्या दिखाई पड़ती हैं । हम आपकी दृष्टि बदलना चाहते हैं । कामुकता प्रधान चिंतन से आपको निकालकर एक नई दृष्टि देना चाहते हैं । यही मानसिक ब्रह्मचर्य है । आपको इसका, मर्यादा का पालन करना चाहिए , यह हमने आपको सिखाया ।

आप कहेंगे गुरुजी हम तो ब्रह्मचारी हैं । एक बार जेल चले गए थे, मारपीट हो गयी थी तो हम ढाई वर्ष पत्नी से दूर जेल में रहे । हाँ साहब आप तो पक्के ब्रह्मचारी हो गए । अखण्ड ब्रह्मचर्य से भारी तेजस्वी आँखों में आशीर्वाद-वरदान की क्षमता आप में आ गई । पागल हैं ना आप । ढेरों आदमी बीमार होते हैं, नपुंसक हो जाते हैं, सब ब्रह्मचारी होते हैं । काहे का ब्रह्मचारी । मित्रो ! ब्रह्मचर्य चिन्तन की शैली है । आपके विचारों का प्रतीक है, जो आपके जीवन में एक अंग बन गए हैं । जो संस्कार आपके जन्म-जन्मान्तरों से चले आ रहे हैं, उनका एक रूप आपकी कुदृष्टि व विचारों की झलकी के रूप में देखने को मिलता है । किसी जमाने में आप ८४ लाख योनियों में एक कुत्ते भी थे क्या ? हाँ गुरुजी जरूर रहे होंगे । बढ़ते-बढ़ते तभी तो अब आदमी बने हैं । जब कुत्ते रहे होंगे तब आपके सामने माँ-बहन का कोई रिश्ता

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

था ? नहीं साहब हमारी माँ एक बार हमारे सामने आ गई । कुआर का महना था । माँ और औरत में हम फर्क नहीं कर सके व उससे हमने बच्चा पैदा कर दिया । उस योनि में हमें न बेटी का ख्याल था, न बहिन का , न माँ का । बिरादरी तो बिरादरी है । उसमें भला क्या फर्क करना । आप अभी करते हैं क्योंकि आप आदमी हैं । समाज की मर्यादाओं का एक नकाब आपके ऊपर पड़ा हुआ है । यदि यह नकाब ऊपर उठा दिया जाय, आपको नंगा करके देखा जाय तो वस्तुतः आप अभी भी उस बिरादरी में है, जिसका मैं जिक्र कर रहा था । बार बार नाम लूँगा तो आपको बुरा लगेगा । लेकन हैं कि नहीं, छाती पर हाथ रख कर देखिए ।

मित्रो ! हम ये कह रहे थे कि आप गलत सोचने का तरीका अपना बदल लें । रहन सहन के तरीके बदल लें । जो साधन सामग्री आप के पास हैं, रुपया पैसा चाँदी जमीन है, अक्ल है, इनका सदुपयोग करना आप सीख लें । आपके कमाने का क्या तरीका है ? मुझे नहीं मालूम । पर आप एक बात का जवाब दीजिए कि आप इन्हें खर्च कैसे करते हैं ? किस आदमी ने कैसे कमाया यह हिसाब मैं नहीं करता । मैं तो अध्यात्म की दृष्टि से विचार करता हूँ कि किस आदमी ने कैसे खर्च किया ? जो कमाया वह खर्च कहाँ हुआ ? मुझे खर्च का ब्यौरा दीजिए । बस ! अगर आप खर्च अपव्यय में करते हैं गलत कामों में करते हैं, फिजूल खर्ची करते हैं तो मैं आध्यात्मिक दृष्टि से आपको बेईमान कहूँगा । आप कहेंगे , यह हमारी कमाई है । हाँ आपकी ही कमाई है, पर आप खर्च कहाँ करते हैं यह बताइए आपका धन, आपकी अकल , आपके साधन, श्रम किन कामों में खर्च होते हैं, इनका ब्यौरा लाइए , उसकी फाइल पेश कीजिए हमारे सामने । आपने बेटे को खैरात में बाँट दिया ऐय्याशी में उड़ा दिया , जेवर बनवाने में खर्च कर दिया तो हम आपको अध्यात्मवादी कैसे कहें ? खर्च के बारे में भगवान का बड़ा सख्त नियंत्रण है ।

आदमी को हम अध्यात्म का अंकुश लगाते हुए ईश्वरचंद्र विद्यासागर जैसा जीवन जीने को कहते हैं । आपको ५०० रुपये तनख्वाह मिलती होगी, मिले । लेकिन आप उसे औसत नागरिक के नाते खर्च कीजिए । विद्यासागर की तरह ५० रुपयों में अपनी गृहस्थी का गुजारा करें व ४५० रुपयों में अन्यों के लिए समाज के लिए दुखी–अभावग्रस्तों के लिए सुरक्षित करिए । उनके साढ़े चार सौ रुपयों से हजारों विद्यार्थी निहाल हो गए । जो फीस नहीं दे सकते थे, जो कापी नहीं खरीद सकते थे, जिनके पास मिट्टी का तेल नहीं था उनके लिए सारी व्यवस्था विद्यासागर ने अपने यहाँ कर रखी थी । इसे क्या कहते हैं–यह अध्यात्म है । अध्यात्मवादी आप कब होंगे, मैं यह नहीं जानता किन्तु जिस दिन अध्यात्मवादी बनने का सिलसिला शुरू हो जाएगा, तब फिर मैं आपको भगवान की शपथ देकर अपने अनुभव की साक्षी देकर विश्वास दिलाऊँगा कि अध्यात्म के बराबर नगद फल देने वाली चमत्कारी विद्या कोई नहीं हो सकती । लाटरी लगाने जेब काटने से भी ज्यादा फायदे मंद दूरदर्शिता भरा रास्ता है अध्यात्म का । यह आप समझ गए तो आपका मानसिक कायाकल्प आध्यात्मिक भावकल्प हो जाएगा व नवरात्रि साधना सफल मानी जाएगी ।

इस बीच हमने आप से नित्य अग्निहोत्र करने को कहा जप का एक अंश अग्निहोत्र कीजिए । आप अग्निहोत्र को एक कर्मकाण्ड माने बैठे हैं । अग्निहोत्र यज्ञ विज्ञान का नाम है । यह एक परम्परा ही नहीं, इसका साइंटिफिक बेस भी है । यज्ञ कहते हैं कुर्बानी को, सेवा को । भूदानयज्ञ, नेत्रदानयज्ञ , सफाईयज्ञ, ज्ञानयज्ञ हजारों तरह के यज्ञ हैं । इन सबका एक ही अर्थ होता है लोक हितार्थाय आहुति देना । यज्ञ कीजिए पूर्णाहुति दीजिए , पर जनकल्याण का ध्यान रखिए । संस्कृति की रक्षा के लिए, देश और मानवी आदर्शों को जीवन्त रखने के लिए अपने पसीने की आहुति दीजिए अपनी ज्ञान की आहुति दीजिए , उस चीज की भी आहुति दीजिए जिसे आपने दाबकर रखा है अपने बेटे के लिए । मित्रो अगर आप ऐय्याशी–फिजूलखर्ची विलासिता की कुर्बानी देने की हिम्मत दिखा सकें तो यज्ञ सफल है । तब आप असली अध्यात्मवादी होंगे । जिस दिन आप ऐसे बन जाएँगे, तब आप देखेंगे असली चमत्कार । उस दिन आप देखेंगे असली भगवान । तब आपको सुदामा के तरीके से आप के चरणों को धोता हुआ , शबरी के तरीके से आपके दरवाजे पर झूठे बेर खाता हुआ और राजा बलि के तरीके से आपके दरवाजे पर साढ़े तीन गज जमीन माँगता हुआ, गोपियों के दरवाजे पर छाछ माँगता हुआ आपको भगवान दिखाई पड़ेगा ।

आइए! भगवान ने आपको बुलाया है ।जेब खाली कीजिए । बीज के तरीके से गलिए और दरख्त की तरह फलिए मैंनें यही जीवनभर सीखा व आपको भी सिखाना चाहता हूँ । आपको यदि यह समझ में आ गया तो मैं पूरे मन से आशीर्वाद देता हूँ कि जो भी नवरात्रि अनुष्ठान के, गायत्री साधना के चमत्कार आपने सुने हैं वह आपके जीवन में फलित हो जाएँ । आप जिस मकसद से आए थे, वह पूरा हो व आप जब भी अनुष्ठान करें समूचा लाभ उठा सकें इसलिए आपको कुछ बाते मैंने बताई । भगवान को आपको यह समझ में आए व आप लाभान्वित हों । हमारी बात समाप्त । ॐ शांतिः शांतिः शांतिः । ✱

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.



परम पूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

इस अंक में प्रस्तुत है परम पूज्य गुरुदेव द्वारा शांतिकुंज परिसर में २६ फरवरी १९७६ को दिया गया एक ऐतिहासिक उद्‌बोधन । प्रस्तुत उद्‌बोधन में साधना स्वर्ण जयन्ती वर्ष के प्ररिप्रेक्ष्य में युगशक्ति गायत्री के अवतरण की उज्ज्वल भविष्य की संभावनाओं की एवं मानव मात्र के कल्याण हेतु गायत्री के तत्वदर्शन की महत्ता का प्रतिपादन है । भारतीय संस्कृति का आधार स्तम्भ है—गायत्री । आज हम ज्यों ज्यों बीसवीं सदी के अंतिम दशक में कदम दर कदम आगे बढ़ रहे हैं, यह समग्र तत्वदर्शन उतना ही सामयिक और युगानुकूल होता चला जा रहा है , प्रस्तुत है—परम पूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी ।

देवियो एवं भाइयो ! ये जमीन जिस दिन भगवान ने बनायी उसी दिन प्राणियों को भी बनाया उसी दिन सूरज को भी बनाया । मुद्दतें हो गयीं किसी का किसी से कोई खास संबंध नहीं हो सका । जब मनुष्य की बुद्धि का विकास हुआ तो उसने सूरज की धूप को, रोशनी को, अपने कब्जे में करने की कोशिश की । सबसे पहले मिली उसे आग । जिस दिन उसे अग्नि प्राप्त हो गयी, मनुष्य और जानवर के बीच फरक पड़ना शुरू हो गया । आग ने मनुष्य का कायाकल्प कर दिया । आदमी की भौतिक जिन्दगी में प्रगति की एक क्रान्ति खड़ी हो गयी । मुद्दतें बीत गयीं । मुद्दतों बाद एक और आग मनुष्य के हाथ लगी जिसका नाम है विद्युत—बिजली । आज से पाँच सौ—चार सौ साल पहले बिजली आदमी के हाथ में आयी व इसने आदमी की दुनिया ही बदल दी । पाँच सौ साल पहले के आदमी की और आज के आदमी की तुलना आप नहीं कर सकते । आज बिजली के कारण इतनी सुविधाएँ हैं । तब की कल्पना कीजिए जब आदमी आज से पाँच सौ साल पहले बिना बिजली के अँधेरे में बिना यंत्रों के काम करता होगा । टार्च की रोशनी से लेकर अनेक कामों तक व टेलीफोन से लेकर कितने ही कामों तक बड़ी—बड़ी फैक्ट्रियाँ चलाने तक आदमी के काम बिजली ही आयी व इसने मानव जीवन में एक क्रान्ति ला दी ।

ताप की एक तीसरी और शक्ति मनुष्य के हाथ में आयी । तीसरे ताप का नाम क्या है , "एटम" । "एटम" की, अणु की शक्ति आदमी के हाथ न आयी होती तो अब तक इतनी लड़ाइयाँ लड़ी गयी होतीं कि दुनिया से तीन चौथाई आदमी खत्म हो गए होते । फर्स्ट वर्ल्ड वार हुआ, सेकिण्ड वर्ल्ड वार हुआ लेकिन उसके बाद माहौल में गरमी इतनी अधिक बढ़ी—चढ़ी थी स्वार्थ इतने बढ़े हुए थे कि अगर ये एटामिक हथियार हाथ में न आए होते तो आज तक न जाने कितनी लड़ाइयाँ हो चुकी होतीं और हर जगह न जाने क्या—क्या मुसीबतें आ गयी होतीं । ताप ने, 'एटम' की शक्ति ने रोक दिया मनुष्य को कि लड़ना मत । जो कोई भी लड़ेगा—मारा जाएगा । छोटे मोटे हमले आप लोग कर सकते हैं पर बड़ा युद्ध तो हमला करने वाले को भी तहस नहस कर देगा । बड़ी तादाद में आपने कदम बढ़ाए तो यह एटॉमिक एनर्जी आपको खत्म करके रख देगी ।

ताप की इन तीन शक्तियों ने मनुष्य के हाथों में साधन दिए , उसकी भौतिक उन्नति कर उसे न जाने कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया लेकिन एक शक्ति ऐसी है ताप की जो पहले से मौजूद थी व जिसने आदमी का कायाकल्प किया है । वह है ज्ञान की शक्ति । एक ज्ञान वह है जो शिक्षा के रूप में, उसकी भौतिक शक्ति के रूप में, हमारे समक्ष है । जिससे हम डाक्टर बन जाते हैं, मास्टर, वकील बन जाते हैं , शिल्पी बन जाते हैं , कलाकार बन जाते हैं । हथियार, पैसे की तरह यह भी भौतिक शक्ति है । आदमी की खुशहाली के काम आती है लेकिन यह वह नहीं है जिससे आदमी—आदमी बनता है जीवन को ऊँचा उठाना सीखता है । वह शक्ति जो आदमी को खुशी देती है शांति देती है, उसके जीवन में संवेदना का रस पैदा करती है, मानव—मानव के मध्य सहयोग की भाषा सिखाती है, परस्पर स्नेह और दुलार पैदा करती है , सहकारिता की आधार शक्ति है वह विद्या है । यह थी तो पहले से लेकिन आदमी के हाथ में जब से आयी, आदमी न जाने क्या से क्या होता चला गया । जानवर से आगे बढ़कर सही अर्थों में मानव बन गया । यह ज्ञान की शक्ति, विद्या की शक्ति का, अवतरण कब धरती पर हुआ ? यह हम देखते हैं तो पाते हैं कि सृष्टि के

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

प्रारंभ में आकाशवाणी हुई थी व ब्रह्माजी को यह कहा गया था कि आपको तप से ज्ञान प्राप्त करना चाहिए । तब उनके हाथ गायत्री मंत्र आया । ब्रह्माजी ने गायत्री मंत्र के चार चरणों को चार व्याख्यानों में विभाजित कर उसको प्रतिपादित करना आरंभ कर दिया । इन चार व्याख्यानों का नाम पड़ गया चार वेद । कबकी बात है यह ? यह बड़ी पुरानी बात है । वेदों की उस सभ्यता व संस्कृति का आगमन क्या हुआ, आदमी–आदमी नहीं रह गया, देवता बन गया । इस देश में रहने वाले सभी जीवधारी जिनका नर तन था , तेंतीस कोटि देवताओं में गिने जाने लगे ।

आदमी नहीं । आदमी तो मामूली होते हैं , पेट भरते हैं और जिन्दा रहते हैं किसी तरह लेकिन देवता वे होते हैं जो खुश रहते हैं और खुश रखा करते हैं । खीज उनके पास कभी आ नहीं सकती क्योंकि शैतान उनके पास नहीं आता । हैरानी, बीमारी, खीज, चिन्ता, दुख , क्लेश ये सब पाप की–शैतान की देन हैं । जब आदमी देवता बन गया तो ये सब संताप चले गए । देवता दिव्य होता है, खूब सुरत होता है, जवान होता है , हर आदमी की जरूरतें पूरी करता है । देवता बड़ा जबर्दस्त होता है और हर भारतीय नागरिक किसी जमाने में देवता था । कब से था ? जब से वह ताप हाथ में आया, जिसे मैं ज्ञान का ताप कहता हूँ , विद्या का ताप कहता हूँ और दूसरे शब्दों में गायत्री का ताप कहता हूँ । इसके आते ही आदमी देवता बन गया, निहाल हो गया । उस समय धन दौलत तो कम थी पर प्रसन्नता–संतोष ज्यादा था और वही सबसे बड़ी सम्पत्ति है । तब अपेक्षाकृत गरीबी थी लेकिन गरीब होते हुए भी मनुष्य कितना सुखी, कितना मोहब्बत–दुलार सहयोग–खुशी से भरा था मैं आपको क्या बताऊँ मित्रो ! सौ वर्ष तक जिन्दा रहते थे लोग क्योंकि मजेदार जिन्दगी थी । आज हमारी आत्मा इनकार करती है, कहती है हम जिन्दा नहीं रहना चाहते । आत्मा जब कभी नाखुश होती है तो शरीर कहता है कि ठीक है आप जाइए जैसी आपकी मरजी हो । आत्मा चली जाती है, जल्दी मर जाती है, शरीर किसी तरह जिन्दा रहता है । आत्मा विहीन जिन्दगी–यह बड़ी घिनौनी जिन्दगी है जो जी रहा है आज का आदमी । इसमें भीतर सब कुछ जलता रहता है–रोम रोम, नस–नस अंतःकरण जलते रहते हैं । कोई भी ठण्डी चीज इस आग को मिटा नहीं सकती । मित्रो ! पुराने जमाने की मैं याद करता हूँ तो यह बात सही मालूम पड़ती है "स्वर्गादपि गरीयसी" स्वर्ग से श्रेष्ठ यह भूमि किसी जमाने में रही होगी, मैं यह विश्वास करता हूँ । न बस थी न टेलिफोन थे किन्तु फिर भी स्वर्गादपि गरीयसी थी । स्वर्ग किसे कहते हैं जहाँ आदमी रहते हैं और आदमी–आदमी के बीच वे रिश्ते होते हैं जिन्हें देखकर आदमी की हिम्मत बँध जाती है धीरज बँध जाता है । मेहमान को "अतिथि देवोभव" कहकर घर में सम्मान से बिठाया जाता था । आज तो यदि अतिथि आ जाय तो आप सावधान रहना । उसे ठहरने मत देना । सारी आफत मचा देगा वह । होशियार रहना उससे कहना "भाई साहब ! आप होटल में ठहरिए "। अतिथि आपके घर ठहरने लगा तो आपकी बहिन बेटियों का कोई ठिकाना नहीं । मित्रो ! आज जीवन नरक बन गया है क्योंकि सामान बहुत है, पैसा बहुत पर उसका उपयोग करने की अकल देने वाली विद्या कहीं नहीं । वह विद्या, वह ज्ञान जिससे खुशहाली आती थी । जिसे संक्षेप में गायत्री मंत्र कहते हैं ।

ब्रह्माजी का दिया हुआ यह हथियार गायत्री मंत्र जिस दिन से मनुष्य जाति को मिला, उसी समय से उसे ज्ञान, चैन, संतोष नैतिकता, प्रेम, सहयोग मिलने का सिलसिला चालू हो गया । यह इनसान की जिन्दगी में सौभाग्य का दिन था । उसी ने आपको–हमको सबको एक धागे से जोड़ रखा है । हम सबको एक धागे में पिरो दिया । ब्रह्माजी ने वेदों के ज्ञान के रूप में ऋषियों को यह विभूति दी और वही गायत्री अब युगशक्ति बनने जा रही है । इसी गायत्री का एक छोटा वाला रूप है "प्रतीक पूजा" । क्या होती है प्रतीक पूजा ? बेटा । प्रतीक उसे कहते हैं जिसमे किसी चीज का छोटा सा रूप सामने रख देते हैं, यह प्रतीक कहलाता है । प्रतीक नमूने को कहते हैं । जैसे आप हमारा फोटो ले जायँ । फोटो को आप माला चढ़ा दें । क्या है यह ? यह प्रतीक पूजन है । वस्तुतः कागज में कुछ भी नहीं है । कागज के पीछे जो व्यक्ति है, उसमें आपकी गहन श्रद्धा है–गहरी जान पहचान है । उसके प्रति आप अपनी मोहब्बत को, श्रद्धा को कायम रखने के लिए प्रतीक पूजन करते हैं । गायत्री की प्रतीक पूजा वह है जो हमने आपको आज से तीस साल पहले सिखायी थी । हमने यह बताया था आपको कि कैसे पंचपात्र हाथ में लेकर आचमन करना चाहिए चोटी गाँठ लगाना चाहिए । चौकी पर एक तस्वीर रखकर धूप, दीप, रोली, अक्षत चढ़ाना चाहिए । माला जपनी चाहिए । यह क्या था यह प्रतीक था । यह आपने क्यों कराया प्रतीक इसलिये कराया कि आपको उसकी बारीकियाँ, गहराईयाँ समझने का मौका मिले । हमें जानकारी बनी रहे कि गायत्री मंत्र क्या है कितना महान है ? घड़ी हमें अपने

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

कर्तव्यों का भान कराने के लिए घण्टे बजाती है इसी तरह हम आप से कहते थे कि रोजाना पूजन करना चाहिए आपकी भौतिक व आध्यात्मिक प्रगति इस पर टिकी हुई है इसीलिए हमने आपसे नियमित गायत्री करने को कहा । किन्तु यदि आपने गायत्री मंत्र की क्षमताएँ व उसके भीतर छिपे रहस्य नहीं जाने तो क्या कहेंगे-मैं उसे नित्यकर्म कहूँगा । नित्यकर्म उन बहुत कामों को कहते हैं जो रोज करना जरूरी है । यदि आप रोज नहाएँ तो क्या बाल बच्चे हो जाएँगे, रुपया मिल जाएगा । नहीं बेटे । हम वायदा नहीं कर सकते । आपकी मर्जी है आप रोज नहाएँ चाहे न नहाएँ । नहीं नहाएँगे तो बीमार पड़ेंगे । पर नहाने से कोई पुण्य मिलेगा , यह भी जरूरी नहीं है । इसे नित्य कर्म कहते हैं । रोज मन पर छाने वाली धूल को गन्दगी को साफ करने के लिए गायत्री मंत्र के उस स्वरूप की जरूरत है, जिसे हम प्रतीक पूजा कहते हैं । वो काफी है और उसका महत्व वहीं तक है ।

अगला वाला महत्व फिर शुरू होता है । उसी की आज सबसे बड़ी जरूरत है । ऐसा साहस देने वाला है यह गायत्री का अगला वाला स्वरूप , जो आदमी को व्यक्तित्ववान बनाता है महापुरुष बनाता है, ज्ञानवान बनाता है, तपस्वी बनता है । गायत्री मंत्र जिसे हम याद करते हैं बार-बार कहते हैं हमें बताता है कि गयः का त्राण करने वाली गायत्री । गय कहते हैं प्राणों को । इसका एक ही मतलब है जब कभी गायत्री मनुष्य के जीवन में प्रवेश करती है, उसके अंदर प्राण भर देती है जीवट भर देती है । जीवट वह जो अंदर से कुछ कर गुजरने की उमंग पैदा करती है । गायत्री व्यक्तिगत जीवन को समुन्नत बनाती है खुशहाल बनाती है, समृद्ध बनाती है, दीर्घजीवी तथा मजबूत बनाती है । ऐसी गायत्री सिखाती है कि दौलतमन्द तो बनो पर अंदर की हिम्मत भी इकट्ठी करो तभी दौलत का सही उपयोग कर सकोगे । पैसा कभी भी ताकत नहीं बन सकता । ताकत कौन सी ? वह जो आदमी का व्यक्तित्व है, उसके भीतर का दृष्टिकोण है वह ताकत । आज जो आदमी कमजोर होता चला जा रहा है ज्ञान के हिसाब से, समृद्धि के हिसाब से, व्यक्तित्व के हिसाब से, तो एक ही चीज की जरूरत थी वह थी हमारे भीतर की प्राण शक्ति की । प्राणों का विस्तार करने के लिए अंदर की ताकत बढ़ाने के लिए हम गायत्री का विस्तार करते हैं, आप से गायत्री का जप करने को कहते हैं ।

गायत्री एक साइंस है । एटम की साइंस से भी बड़ी ताकत है । ऐसी शक्ति है जो सारी मनुष्य जाति ही नहीं, प्राणी मात्र ही नहीं, सारे ब्रह्माण्ड से संबंध रखती है । ऐसी ताकत है जो आदमी के भीतर उमंगों के रूप में, आदर्शों के रूप में, श्रेष्ठताओं के रूप में आती है व जीवन का कायाकल्प करती चली जाती है । इसी गायत्री के अवतार की बात हम आप से कह रहे थे । कह रहे थे , युगशक्ति का अवतार होने जा रहा है । कैसे होगा ? यह होगा छोटे-छोटे मनुष्यों की चेतना के विकास के रूप में । चेतना का विकास अगले दिनों होकर रहेगा । मनुष्य जाति के भाग्य का फैसला होकर रहेगा । इंसान के अंदर का फिर देवता पैदा होगा, भगवान पैदा होगा । मानव में देवत्व आएगा और धरती पर स्वर्ग आएगा । हर व्यक्ति अपने सामाजिक जीवन में हिस्सा बँटाएगा ।

इनसान अपने आप तक सीमित नहीं रह सकता अब । इंसान सामाजिक प्राणी है इसलिए उसे समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए । पीड़ा और पतन में दो कसौटियाँ भगवान ने दी हैं इंसान की परख करने के लिए । व्यवहार की पीड़ा और बौद्धिक पतन मनुष्य का कम करने में हम क्या मदद कर सकते हैं ? यह भगवान हमसे पूछता है । आप कर सकते हैं तो आप अच्छे इंसान हैं और खरे सोने के समान हैं । यही खुशहाली लाने वाला मानव मात्र को एक बनाने वाला तीसरा वाला चरण है जिसके ऊपर नवयुग की आधार शिला रखी जाने वाली है ।

मित्रो । इस समय मनुष्य जाति के भाग्य का उदय होने वाला है । इंसान फिर सिर उठाकर चलेगा । इंसान का गर्दन झुकाकर चलना मुझे नापसन्द है । आदमी की कमर झुकी हो तो कोई बात नहीं किन्तु सिर झुका हुआ नहीं रहना चाहिए । आग की लौ की तरह से, अग्नि देव की लपटों के तरीके से, आदमी को सिर उठाकर ऊँचा करके चलना चाहिए । यही गायत्री मंत्र का चमत्कार होगा-युग शक्ति का चमत्कार होगा कि कमजोर से आदमी में इतनी हिम्मत, इतनी ताकत आ जाएगी कि वह सिर उठाकर चलना सीखलेगा । युगशक्ति का अवतार अर्थात् एक ऐसी जीवट का पैदा होना जिसमें सिद्धान्तों को और आदर्शों के परिपालन की बहादुरी आदमी में पैदा हो सके । दूसरा चमत्कार होने जा रहा है धरती पर स्वर्ग के अवतरण का । धरती स्वर्ग बनने जारही है । जिसमें आदमी-आदमी से प्यार करना सीखेगा । प्यार के साथ सहयोग भी करेगा । सहयोग और प्यार जब साथ-साथ रहें तो मैं समझता हूँ कि धरती पर स्वर्ग आ गया खुशहाली आ गयी । गरीबी रहेगी तो रहे, कोई हर्ज की बात नहीं है किन्तु कृपणता नहीं रहना चाहिए । संतों में से हर एक के पास गरीबी थी, पर

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

वे कृपण नहीं थे । गरीबी से आदमी दुखी नहीं होता । दुखी कृपणता से होता है ।कृपण कौन ? तंग दिल, प्यार–मोहब्बत न बाँटकर संकीर्णता फैलाने वाला दरिद्र व्यक्ति जो बाहर से न सही , चिंतन की दृष्टि से दरिद्र है ।

आप प्यार बाँटेंगे तो बदले में प्यार मिलेगा । आप बच्चों को प्यार नहीं दे सके इसीलिए आप बच्चों के प्यार से महरूम हैं , आपने बाप को प्यार दिया नहीं इसलिए आप उनके आशीर्वाद से महरूम रह गए । आपने समाज के कर्तव्यों का पालन किया नहीं इसलिए आपकी समाज ने उपेक्षा की, कोई सहायता नहीं की । प्यार से ही सहयोग मिलता है, सम्मान मिलता है । ऐसी धरती की कल्पना, मित्रो! मैं करता हूँ जिसमें सब एक दूसरे के साथ प्यार व सहकार करेंगे । कब ? जब जन–जन तक गायत्री का संदेश पहुँचेगा तब ! लेकिन गायत्री एकाकी नहीं है । गायत्री ज्ञान पक्ष है और यज्ञ उसका कर्म पक्ष है । ज्ञान एकाकी नहीं हो सकता । एकाकी ज्ञान में कोई दम नहीं है । एकाकी ज्ञान पण्डितों के पास होता है फिलासफरों के पास होता है । ज्ञान और कर्म का समन्वय होना चाहिए । गायत्री और यज्ञ का समन्वय होना चाहिए । इसीलिए आपके समक्ष इस साधना स्वर्ण जयन्ती वर्ष में हमने एक कार्यक्रम सुपुर्द किया है कि इस तत्वज्ञान को घर घर पहुँचाने का जिम्मा उठाइए । हम आपको बदले में इनाम देंगे । दौड़ लगा के दिखाइये, इनाम पाइए । नहीं साहब, वैसे ही दे दीजिए । नहीं मित्रो ! भगवान इस युग में जितनी भी देवात्माएँ हैं, उन्हें कुछ उपहार देना चाहता हैं । इतिहास की भूमिका में आपके लिए यह एक सुनहरा मौका है । इसके बाद युगों–युगों तक ऐसा मौका नहीं आने वाला । गाँधी फिल्म आयी थी । उसमें नमक सत्याग्रह वालों को जाते हुए हम देखते रहे । यह महादेव भाई जा रहे हैं, यह प्यारे लाल जा रहे हैं, यह हरिभाऊ उपाध्याय जा रहे हैं । हम नाबालिग थे अतः नहीं जा पाए । हम पछताते रह गए । आए हुए समय को चूकने वाला पछताता ही रहता है । अब आप जेल जाएँगे तो स्वतंत्रता सेनानी की न पेंशन मिलेगी न मिनिस्टर का पद । वो जो समय आया था न वह चूक गए । अब कुछ नहीं हो सकता ।

मैंने आपको इस समय इसीलिए बुलाया कि यह चूकने का समय नहीं है । खाने–कमाने के लिए पूरी जिन्दगी आपकी है । सारी जिन्दगी थी व जो आपकी बची हुई है वह भी उसी में लगने वाली है । गायत्री माता की कृपा आपके भीतर नहीं होने वाली और कभी । यह एक महत्वपूर्ण समय है–युगपरिवर्तन का समय है । इसमें आपका सहयोग बन सके तो उन कार्यों को करिए जो भगवान ने हमारे गुरुदेव के सुपुर्द किए और हमारे गुरुदेव ने हमें सुपुर्द किए । हम आपके सुपुर्द करना चाहते हैं ताकि सारे संसार में गायत्री मंत्र का विस्तार हो । यह मात्र हिन्दुओं तक सीमित न रहे । यह ब्राह्मणों का मंत्र मात्र बनकर न रह जाए बल्कि विश्व मानव का मंत्र बने । कभी यह गायत्री वेदमाता थी । कब थी जब वह ज्ञान के रूप में आग के रूप में ताप के रूप में अवतरित हुई थी । अब क्या हो गयीं ? अब यह नाम बदल गया । अब वह देवमाता हो गयीं–देवत्व जिनके रोम रोम में उतर जाए उनकी माता और अब बनने जा रही हैं विश्वमाता । विश्वमाता से क्या मतलब है ? विश्वमाता से मतलब है सारा विश्व एक नये आधार पर बनने जा रहा है । एक नयी संस्कृति आ रही है । एक नया सार्वभौम धर्म आ रहा है । सारी दुनियाँ इस एक ही केन्द्र के ऊपर इकट्ठी होने जा रही है, बँधने जा रही है । एक आचार संहिता में मातृभाव में बँधने जा रहे इस विश्व के निर्माण में आपकी भागीदारी हो, इसके लिए आपको मैं इस महापुरश्चरण में, धर्मानुष्ठान में भागीदारी करने के लिए आमंत्रित करता हूँ ।

आवश्यक–सूचना

शपथ समारोह में आने वाले परिजन आने से पूर्व जून की अखण्ड–ज्योति प्राप्त करने की व्यवस्था बनाकर आयें । जिन दिनों शपथ समारोह चल रहा होगा । लगभग उन्हीं दिनों जून की अखण्ड–ज्योति पहुँचेगी । डाकघर से मिलकर इस सम्बन्ध में आवश्यक कार्यवाही कर लेनी चाहिए ।

मैंने उज्ज्वल भविष्य के सपने देखे हैं और सबको दिखाए हैं । मैं उन लोगों में से नहीं हूँ जो सतत् डराते रहते हैं । सूरज की तबाही दुनियाँ की तबाही । नहीं मित्रो ! भगवान की तबाही कभी नहीं आएगी, खुशहाली की तबाही कभी नहीं आएगी । आएगा तो अब उज्ज्वल भविष्य धरती पर स्वर्ग व आधार बनेगा मानव में देवत्व । कैसे? गायत्री के तत्वज्ञान से, भारतीय संस्कृति के अनुगमन से आप समय रहते उससे जुड़ सकें , औरों को जोड सकें, इससे बड़ी समझदारी और क्या हो सकती है ?

मेरी बात समाप्त । ॐ शांतिः शांतिः शांतिः । ✶

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.



परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

तीन भाह के अंतराल के बाद , जिस अवधि में देव–संस्कृति संबंधी विशिष्ट सामग्री प्रस्तुत की गयी , अमृतवाणी प्रसंग पुनः आरंभ किया जा रहा है । प्रस्तुत अंक में ३१ जनवरी १९७९ को शान्तिकुंज परिसर में दिया गया प्रवचन अविकल उसी रूप में दिया जा रहा है ।

गायत्री मंत्र हमारे साथ–साथ बोलिए–

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो और भाइयो ! देवताओं के अनुग्रह की बात आप सबने सुनी होगी । देवता नाम ही इसलिए रखा गया है कि वे दिया करते हैं । प्राप्त करने की इच्छा से कितने ही लोग उनकी पूजा किया करते हैं, उपासना करते हैं, भजन करते हैं कि देवता हमको कुछ देकर जायेंगे । क्या यह बात सही है या गलत है, आइये इस पर विचार करें ।

देवता देते तो हैं, इसमें कोई शक नहीं है । अगर वे देते न होते तो उनका नाम देवता न रखा गया होता । देवता का अर्थ ही होता है–देने वाला । देने वाले से अगर–माँगने वाला कुछ माँगता है तो कोई वेजा की बात नहीं है । पर विचार करना पड़ेगा कि आखिर देवता देते क्या चीज हैं ? देवता वही चीज देते हैं जो उनके पास है । जिसके पास जो चीज होगी, वही तो दे पायेगा । देवता के पास सिर्फ एक चीज है और उसका नाम है–देवत्व । देवत्व कहते हैं–गुण , कर्म और स्वभाव–तीनों की अच्छाई को– श्रेष्ठता को । इतना देने के बाद में देवता निश्चिन्त हो जाते हैं, निवृत्त हो जाते हैं और कहते हैं कि जो हम आपको दे सकते थे हमने वह दे दिया । अब आपका काम है कि जो चीज हमने दी है उसको जहाँ भी आप मुनासिब समझें , वहाँ इस्तेमाल करें उसी किस्म की सफलता पायें ।

दुनिया में सफलता एक चीज के बदले में मिलती है और वह है–आदमी का उत्कृष्ट व्यक्तित्व । इससे कम में कोई चीज नहीं मिल सकती । अगर कहीं से किसी ने घटिया व्यक्तित्व की कीमत पर किसी तरीके से अपने सिक्के को भुनाये बिना अपनी योग्यता का सबूत दिये बिना , परिश्रम के बिना गुणों के अभाव में कोई चीज प्राप्त कर ली है तो वह उसके पास ठहरेगी नहीं । शरीर में हजम करने की ताकत न हो तो जो खुराक आपने खाई है वह आपको हैरान करेगी, परेशान करेगी । इसी तरह सम्पत्तियों को– सुविधाओं को हजम करने के लिए गुणों का माद्दा नहीं होगा तो वे आपको तंग करेंगी परेशान करेंगी । अगर गुण नहीं है तो जैसे–जैसे दौलत बढ़ती जायेगी वैसे–वैसे आपके अन्दर दोष, दुर्गुण , बढ़ते जायेंगे, व्यसन बढ़ते जायेंगे । अहंकार बढ़ता जायेगा और आपकी जिन्दगी को तबाह कर देगा ।

देवता क्या देते हैं ? देवता हजम करने की ताकत देते हैं जो दुनियावी दौलत या जिन चीजों को आप माँगते हैं जो आपको खुशी का वायस मालूम पड़ती हैं । उन सारी चीजों को हजम करने के लिए विशेषता होनी चाहिए । इसी का नाम है –देवत्व । देवत्व अगर प्राप्त हो जाता है तो फिर आप दुनिया की हर चीज से–थोड़ी से थोड़ी चीजों से लेकर फायदा उठा सकते हैं । अगर वे न भी हों तो भी काम चल सकता है । ज्यादा चीजें हो जायँ तो भी अच्छा है, यदि न हों जायँ तो भी कोई हर्ज नहीं है । लेकिन अगर आप इस बात के लिए उतावले हैं कि जैसे भी हम पिछड़े हैं वैसे ही बने रहें , तो फिर कुछ कहना संभव नहीं है । मनुष्य के शरीर में ताकत होनी चाहिए , अकल होनी चाहिए पर उस पर समझदारी का नियंत्रण भी होना चाहिए । समझदारी का नियंत्रण न होने से वह आग में घी डालने, –ईंधन डालने के तरीके से वह सिर्फ दुनिया में मुसीबतें ही पैदा करेगी । देवता किसी को दौलत देने की गलती नहीं कर सकते । अगर देते हैं तो इसका मतलब है कि तबाही कर रहे हैं । इनसान को अगर भगवान कुछ देते हैं विशेषतायें देते हैं , नयी उमंगें देते हैं । इनसानियत उस चीज का नाम है जिसमें आदमी का चिन्तन, दृष्टिकोण, महत्वाकांक्षाएँ और गतिविधियाँ ऊँचे स्तर की हो जाती हैं । इनसानियत एक बड़ी चीज है ।

मनोकामनायें पूरी करना खराब बात नहीं है, पर शर्त एक ही है कि यह किस काम के लिए किस चीज के लिए माँगी गयी है ?

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अगर सांसारिकता के लिए माँगी गयी हैं तो उससे पहले यह जानना जरूरी है कि उस दौलत को हजम कैसे कर सकते हैं । उसे खर्च कैसे कर सकते हैं ? मनुष्य भूल कर सकता है, पर देवता भूल नहीं कर सकते । देवता आपको चीजें नहीं दे सकते जैसा कि मेरा अपना ख्याल है । देवताओं के सम्पर्क में आने वाले को भौतिक वस्तुएँ नहीं मिली । क्या मिला है ? आदमी को गुण मिले हैं । देवत्व मिला है । सद्गुणों के आधार पर आदमी को विकास करने का मौका मिला है । गुणों के विकसित होने के पश्चात् उन्होंने वह काम किये हैं जिन्हें सामान्य मनुष्य सामान्य बुद्धि से काम करते हुए भी उन्नति के ऊँचे शिखर पर जा पहुँच सकता है । चाहे वह सांसारिक हो अथवा आध्यात्मिक । संसार और अध्यात्म में कोई फरक नहीं पड़ता । गुणों के इस्तेमाल करने का तरीका भर है । गुण अपने आप में शक्ति के पुंज हैं , कर्म अपने आप में शक्ति के पुंज हैं और स्वभाव अपने आप में शक्ति के पुंज हैं इन्हें कहाँ इस्तेमाल करना चाहते हैं यह आपकी इच्छा की बात है ।

सफलता साहसिकता के आधार पर मिलती है । यह एक आध्यात्मिक गुण है । इसी आधार पर योगी को भी सफलता मिलती है, तांत्रिक को भी और महापुरुष को भी । हर एक को इसी साहसिकता के आधार पर सफलता मिलती है, वह डाकू ही क्यों न हो , आप योगी हैं तो अपनी हिम्मत के सहारे फायदा उठायेंगे , नेता हैं, महापुरुष हैं तो भी इसी आधार पर सफलता पायेंगे । यह एक दैवी गुण है । इसे आप अपनी इच्छा के अनुसार इस्तैमाल कर सकते हैं, यह आप पर निर्भर है । इनसान के भीतर जो विशेषता है वह गुणों की विशेषता है । देवता अगर किसी आदमी को देंगे तो गुणों की विशेषता देंगे–गुणों की सम्पदा देंगे । गायत्री माता , जिनकी आप उपासना करते हैं, अनुष्ठान करते हैं, अगर कभी कुछ देंगी तो गुणों की विशेषता देंगी । गुणों से क्या हो जायेगा ? गुणों से ही तो होता है सब कुछ । भौतिक अथवा आध्यात्मिक जहाँ कहीं भी आदमी को उन्नति मिली है, केवल गुणों के आधार पर मिली है । श्रेष्ठ गुण न हों तो न भौतिक उन्नति मिलने वाली है, न आध्यात्मिक उन्नति मिलने वाली है ।

आदमी जितना समझदार है । नासमझ उससे भी ज्यादा है । यह भ्रान्ति न जाने क्यों आध्यात्मिक क्षेत्र में घुस पड़ी हैं कि देवता मनोकामना पूरी करते हैं, पैसा देते हैं , दौलत देते हैं, बेटा देते हैं, नौकरी, देते हैं । इस एक भ्रान्ति ने इतना ज्यादा व्यापक नुकसान पहुँचाया है कि आध्यात्मिकता का जितना बड़ा लाभ, जितना बड़ा उपयोग था, संभावनायें थीं, उससे जो सुख होना संभव था, उस सारी की सारी संभावना को इसने तबाह कर दिया । देवता आदमी को एक ही चीज देंगे और उनने एक ही चीज हर एक को दी है, प्राचीन–काल के इतिहास में और भविष्य में भी । देवता अगर जिन्दा रहेंगे , भक्ति अगर जिन्दा रहेगी, उपासना–क्रम यदि जिन्दा रहेगा तो एक ही चीज मिलेगी और वह है–देवत्व के गुण । देवत्व के गुण अगर आ जायँ तब आप जितनी सफलतायें चाहते हैं, उससे हजारों–लाखों गुनी सफलतायें आपके पास आ जायेंगी ।

आप क्या चाहते हैं ? आपको देवत्व के स्थान पर तीन–चार सौ रुपये की नौकरी दिलवादें कोई देवता, संत या आशीर्वाद या कोई मंत्र तो वह ना चीज हो सकती है । लेकिन अगर देवता देवत्व प्रदान करते हैं, तो वह नौकरी आपके लिए इतनी कीमत की करवा देंगे कि आप निहाल हो जायेंगे । विवेकानन्द, रामकृष्ण परमहंस के पास नौकरी माँगने गये थे, पर मिला क्या–देवत्व, भक्ति, शक्ति और शान्ति । यह क्या चीज थे–गुण । मनुष्य के ऊपर कभी संत कृपा करते हैं । संतों ने कभी किसी को दिया है तो उनने एक ही चीज दी है–अंतरंग में उमंग, एक ऐसी उचंग जो आदमी को घसीट कर सिद्धान्तों की ओर ले जाती है । जब आदमी के ऊपर सिद्धान्तों का नशा छाता है, तब उसका मैग्नेट, उसका आकर्षण , उसकी वाणी , उसकी प्रामाणिकता इस कदर सही हो जाती है कि हर आदमी खिंचता हुआ चला आता है और हर कोई सहयोग करता है । विवेकानन्द को सम्मान और सहयोग दोनों मिला । यह किसने दी थी–काली ने । काली अगर किसी को कुछ देगी तो यही चीज देगी । अगर दुनिया में दुबारा कोई रामकृष्ण जिन्दा होंगे या पैदा होंगे, तो इसी प्रकार का आशीर्वाद देंगे जिससे आदमी के व्यक्तित्व विकसित होते चले जायँ । व्यक्तित्व अगर विकसित होगा तो जिसको आप चाहते हैं वह सहयोग बरसेगा । सहयोग माँगा नहीं जाता–बरसता है । आदमी फेंकता जाता है और सहयोग बरसता जाता है । देवत्व जब आता है तब सहयोग बरसता है । बाबा साहब आमटे का उदाहरण आपके सामने है जिन्होंने कुष्ठ रोगियों के लिए , अपंगों के लिए अपना सर्वस्व लगा दिया । यह क्या है ? सिद्धान्त है, आदर्श है, और वरदान है इससे कम में न किसी को वरदान मिला है और न इससे ज्यादा में किसी को मिलेगा । भीख माँगने से न किसी को मिली है और न भविष्य में किसी को मिलेगी ।

देवता एक काम करते रहते हैं । क्या करते हैं ? फूल बरसाते हैं । रामायण में कोई पचास जगह किस्से आते हैं जब देवताओं ने फूल बरसाया । फूल क्या बरसाते हैं–सहयोग बरसाते हैं , फूल किसे कहते हैं ? सहयोग को कहते हैं । कौन बरसता है ? देवत्व जो इस दुनिया में अभी जिन्दा है । देवत्व ही इस दुनिया में जिन्दा था और जिन्दा ही रहने वाला है । देवत्व मरेगा नहीं । यदि हैवान या

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

शैतान नहीं मर सका तो भगवान क्यों मरेगा ? इनसान क्यों मरेगा ? इनसान–इनसान को देखकर आकर्षित होता है और भगवान–भगवान को देखकर । देवता–देवता को देखकर आकर्षित होता है और श्रेष्ठता को देखकर सहयोग आकर्षित होता है । पहले भी यही होता रहा था , अभी भी होता है और आगे भी होता रहेगा ।

यहाँ मैं देवता की प्रशंसा कर रहा हूँ । देवता कैसे होते हैं ? देवता ऐसे होते हैं जो आदमी के ईमान में घुसे रहते हैं और उसके भीतर से एक ऐसी हूक , एक ऐसी उमंग और एक ऐसी तड़पन पैदा करते हैं जो सारे के सारे जाल–जंजालों को मकड़ी के जाले की तरीके से तोड़ती हुई सिद्धान्तों की ओर–आदर्शों की ओर बढ़ने के लिए आदमी को मजबूर कर देती हैं । इसे कहते हैं देवता का वरदान । इससे कम में देवता का वरदान नहीं हो सकता । आदमी के भीतर जब गुणों की , कर्मों की, स्वभाव की विशेषतायें पैदा हो जाती हैं तो विश्वास रखिये तब उसकी उन्नति के दरवाजे खुल जाते हैं । गुणों के हिसाब से दुनिया के इतिहास में जितने भी आदमी आज तक विकसित हुए हैं, किसी भी क्षेत्र में सफल हुए हैं, और जिनके सम्मान हुए हैं, वे प्रत्येक व्यक्ति गुणों के आधार पर बढ़े हैं । देवता का वरदान गुण और चिन्तन की उत्कृष्टता है । संसार के महापुरुषों में से हर एक सफल व्यक्ति का इतिहास यही रहा है । सभी छोटे–छोटे खानदानों में पैदा हुए थे । छोटे–छोटे घरों में–परिस्थितियों में पैदा हुए थे , लेकिन उन्नति के ऊँचे से ऊँचे शिखर पर ऊँचे से ऊँचे स्थान पर जरूर पहुँचते चले गये । कौन जा पहुँचे ? लालबहादुर शास्त्री को ले लीजिये जिनके ऊपर देवता का अनुग्रह था । देवता के अनुग्रह की परख क्या है कि वे अनुग्रह करते हैं या नहीं ? एक ही अनुग्रह की पहचान है–जिम्मेदारी और समझदारी का होना, भक्त और भगवान के बीच में यही सिलसिला चला है और देवता तथा उसके उपासकों के बीच भी यही सिलसिला चला है । इनसान के यहाँ और भगवान के यहाँ एक ही तरीका है

पूजा क्यों करते हैं ? पूजा का मतलब एक ही है और वह है–इनसानी गुणों का विकास, इनसानी कर्म का विकास, इनसानी स्वभाव का विकास । आपने जो समझ रखा है कि पूजा के आधार पर यह मिलेगा–वह मिलेगा, यह सारी गलतफहमी इसीलिए हुई है । पूजा के आधार पर वस्तुतः दयानतदारी मिलती है, सराफत मिलती है, ईमानदारी मिलती है । आदमी को ऊँचा दृष्टिकोण मिलता है । अगर आपने गलत पूजा की होगी तब आप भटक रहे होंगे । पूजा आपको इस एक ही तरीके से करनी चाहिए कि जो पूजा के लाभ आज तक इतिहास में मनुष्यों को मिले हैं, हमको भी मिलने चाहिए । हमारे गुणों का विकास, कर्म का विकास , चरित्र का विकास और भावनाओं का विकास होना चाहिए । देवत्व इसी का नाम है । देवत्व अगर आपके पास आयेगा तो आपके पास सफलतायें आयेंगी । हिन्दुस्तान के इतिहास पर दृष्टि डालिये, उसके पन्ने पर जो बेहतरीन आदमी दिखायी पड़ते हैं वे अपनी योग्यता के आधार पर नहीं अपनी विशेषता के आधार पर महान बने हैं । महामना मालवीय जी का उदाहरण सुना है आपने–कैसे शानदार व्यक्ति थे वे । उन पर देवताओं का अनुग्रह बरसा था और छोटे से आदमी से वे महान हो गये ।

मित्रो ! भगवान जब प्रसन्न होते हैं तो वह चीज नहीं देते जो आप माँगते हैं । फिर क्या चीज देते हैं ? वह चीज देते हैं जिससे आदमी अपने बलबूते पर खड़ा हो जाता है और चारों ओर से उनको सफलतायें मिलती हुई चली जाती हैं । सारे के सारे महापुरुषों को आप देखते चले जाइये, कोई भी अदमी दुनिया के परदे पर आज तक ऐसा नहीं हुआ है जिसको दैवी सहयोग न मिला हो । जिसको जनता का सहयोग न मिला हो, जिसको भगवान का सहयोग न मिला हो । ऐसे एक भी आदमी का नाम आप बतलाइये जिसके अन्दर से विशेषताएँ पैदा न हुई हों जिनसे आप दूर रहना चाहते हैं । जिनसे आप बचना चाहते हैं । जिनके प्रति आपका कोई लगाव नहीं है । वे चीजें जिनको हम आदर्शवाद कहते हैं–सिद्धान्तवाद कहते हैं, दुनिया के हिस्से का हर आदमी जिसको श्रेय भी मिला हो, धन भी मिला हो । जहाँ आदमी को श्रेय मिलेगा वहीं उसे वैभव भी मिले बिना रहेगा नहीं । संत गरीब नहीं होते । वे उदार होते हैं और जो पाते हैं खाते नहीं दूसरों को खिला देते हैं । देवत्व इसी को कहते हैं ।

आदमी के भीतर का माद्दा जब विकसित होता है तो बाहरी दौलत उसके नजदीक बढ़ती चली जाती है । उदाहरण क्या बताऊँ–प्रत्येक महापुरुष का यही उदाहरण है । प्रत्येक ईश्वर भक्त का–प्रत्येक सिद्धान्तवादी का यही उदाहरण है । उन्हीं को मैं देव भक्त कहता हूँ । देवोपासक उन्हीं को मैं कहता हूँ । उन्हीं की देवभक्ति को मैं सार्थक मानता हूँ जो अपने गुणों के आकर्षण के आधार पर देवता को अपने आकर्षण में खींच सकने में समर्थ हुए । आपकी भाषा में कहूँ तो देवता जब प्रसन्न होते हैं तो आदमी को देवत्व के गुण देते हैं । देवत्व के कर्म देते हैं, देवत्व का चिन्तन देते हैं और देवत्व का स्वभाव देते हैं । यह मेरा आपकी भाषा में कहा है । हमारी परिभाषा इससे अलग है । मैं यह कह सकता हूँ कि आदमी अपने देवत्व के गुणों के आधार पर देवता को मजबूर करता है । देवता पर दबाव डालता है, उसे विवश करता है और यह कहता है कि आपको हमारी सहायता करनी चाहिए और सहायता करनी पड़ेगी । भक्त इतना मजबूत होता है कि

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

भगवान के ऊपर दबाव डालता है और कहता है कि हमारा ड्यू है । आप हमारी सहायता क्यों नहीं करते ? वह भगवान से लड़ने को अमादा हो जाता है कि आपको हमारी सहायता करनी चाहिए ।

कामना करने वाले कभी भक्त नहीं हो सकते भक्त शब्द के साथ में भगवान की इच्छायें पूरी करने की बात जुड़ी रहती है । कामना पूर्ति आपकी नहीं भगवान की । भक्त की रक्षा करने का भगवान व्रत लिए हैं–'योग क्षेमं वहाम्यहम् ।' यह सही है भगवान ने योग क्षेम को पूरा करने का व्रत लिया हुआ है, पर हविस पूरी करने का जिम्मा नहीं लिया , आपका योग और क्षेम अर्थात् आपकी शारीरिक आवश्यकताएँ और मानसिक आवश्यकतायें पूरी करना उनकी जिम्मेदारी है । आपकी बौद्धिक–मानसिक आवश्यकतायें पूरी करना भगवान की जिम्मेदारी है, पर आपकी हविस पूरी नहीं हो सकती । हविसों के लिए , तृष्णाओं के लिए भागिये मत । यह भगवान की शान में , भक्त की शान में, भजन की शान में गुस्ताखी है–सबकी शान में गुस्ताखी है । भक्त और भगवान का सिलसिला इसी तरह से चलता रहा है और इसी तरीके से चलता रहेगा । भक्त माँगते नहीं दिया करते हैं । भगवान कोई इनसान नहीं हैं, उसे तो हमने बना लिया है । भगवान वास्तव में सिद्धान्तों का नाम है , आदर्शों का नाम है, श्रेष्ठताओं के समुच्चय का नाम है । सिद्धान्तों के प्रति–आदर्शों के प्रति आदमी के जो त्याग और बलिदान हैं, वस्तुतः यही भगवान की भक्ति है । देवत्व इसी का नाम है ।

प्रामाणिकता आदमी की इतनी बड़ी दौलत है कि जनता का उस पर सहयोग बरसता है, स्नेह बरसता है, समर्थन बरसता है । जहाँ स्नेह समर्थन और सहयोग बरसता है, वहाँ आदमी के पास किसी चीज की कमी नहीं रह सकती । बुद्ध की प्रामाणिकता के लिए, सद्भावना के लिए, उदारता के लिए लोगों ने उनके ऊपर पैसा बखेर दिये । गाँधी जी की प्रामाणिकता और सद्भावना , श्रेष्ठ कामों के लिए उनकी लगन, उदारता लोकहित के तईं थी व्यक्तिगत जीवन में श्रेष्ठता और प्रामाणिकता को लेकर चलने के बाद में वे भक्तों की श्रेणी में सम्मिलित होते चले गये । सारे समाज ने उनको सहयोग दिया, दान दिया और उनकी आज्ञा का पालन किया । लाखों लोग उनके कहने पर जेल चले गये, लाखों लोगों ने अपने सीने पर गोलियाँ खाईं । क्या यह हो सकता है ? हाँ शर्त एक ही है कि आप प्रकाश की ओर चलें छाया आपके पीछे–पीछे चलेगी । आप तो छाया के पीछे पीछे भागते हैं, छाया ही आप पर हावी हो गयी है । छाया का अर्थ है–माया । आप प्रकाश की ओर चलिए , भगवान की ओर चलिए , सिद्धान्तों की ओर चलिए । आदर्श और सिद्धान्त–इन्हीं का नाम हनुमान है, इन्हीं का नाम भगवान है ।

मित्रो, जो हविस आपके ऊपर हावी हो गयी है उससे पीछे हटिये , तृष्णाओं से पीछे हटिये और उपासना के उस स्तर पर पहुँचने की कोशिश कीजिए जहाँ कि आपके भीतर से, व्यक्तित्व में से श्रेष्ठता का विकास होता है । भक्ति यही है । अगर आपके भीतर से श्रेष्ठता का विकास हुआ हो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आपको जनता का वरदान मिलेगा , आपको अपनी आत्मा का वरदान मिलेगा– भगवान का वरदान मिलेगा । चारों ओर से इतने वरदान मिलेंगे कि जिसको पा करके आप निहाल हो जायेंगे । भक्ति का यही इतिहास है–भक्त का यही इतिहास है । भगवान के अनुग्रह का–गायत्री माता के अनुग्रह का यही इतिहास है, यही इतिहास था और यही इतिहास रहेगा । अगर इस रहस्य को–सार को आप समझ लें , तो आपका यहाँ आना सार्थक हो जाय । आपका गायत्री अनुष्ठान सार्थक हो जाय, अगर आप इस सिद्धान्त को समझकर जायँ कि हमको सद्गुणों के विकास करने के लिए तपश्चर्या करायी जा रही है और अगर हमारी यह तपश्चर्या सही साबित हुई तो भगवान हमको यहाँ से विदा करते समय गुण , कर्म और स्वभाव की विशेषता देंगे और हमको चरित्रवान व्यक्ति के तरीके से विकसित करेंगे । चरित्रवान व्यक्ति जब विकसित होता है तब उदार हो जाता है, परमार्थ–परायण हो जाता है–लोकसेवी हो जाता है, जनहितकारी हो जाता है और वह अपनी क्षुद्र , स्वार्थ–संकीर्णताओं को कम करके लोकहित में–परमार्थ हित में अपने स्वार्थ को देखना शुरू कर देता है । आपकी अगर ऐसी मनःस्थिति हो जाय तो मैं कहूँगा कि आपने सच्ची उपासना की और भगवान का सच्चा वरदान पाया ।

आप सच्चा वरदान पा करके निहाल हो सकते हैं जिससे कि आज तक के सारे के सारे भक्त निहाल होते रहे हैं । मैंने इसी रास्ते पर चलने की कोशिश की और अपने जीवन में प्रत्यक्ष रूप से भगवान के वरदानों को देखा और पाया । मैं चाहता था कि आप लोग जो इस शिविर में आये हैं जो वसंत के निकट जा पहुँचा है यह प्रेरणा लेकर जायँ कि हम पर भगवान कृपा करें कि हमको श्रेष्ठता के लिए, आदर्शों के लिए कुछ त्याग और बलिदान करने की, चरित्र को श्रेष्ठ और उज्ज्वल बनाने के लिए प्रेरणा भीतर से मिले और बाहर से मिले । अगर ऐसी कुछ प्रेरणा आपको मिले तो उसके फल स्वरूप आप जो कुछ भी प्राप्त करेंगे, वह इतना शानदार होगा कि जिससे आप निहाल हो जायँ । आपका देश निहाल हो जाय, गायत्री माता निहाल हो जायँ, हम निहाल हो जायँ और यह शिविर निहाल हो जाय अगर आप इस तरह की कुछ प्राप्ति और उपलब्धि कर सके । आज की बात समाप्त । ।।ॐ शान्ति ।।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी —

उपासना सफल कैसे हो ?

इस अंक में अमृतवाणी संदर्भ में प्रस्तुत है एक महत्वपूर्ण प्रसंग जो उनकी [illegible] ७ फरवरी १९७९ की प्रातःकाल शान्तिकुंज प्रांगण में दिये गये प्रवचन से प्रस्फुटित हुआ । इसमें चर्चा है उपासना प्रकरण की । कई बार हम निराश हो जाते हैं कि हमारी उपासना सफल क्यों नहीं होती ? जप, अनुष्ठान, निरर्थक क्यों चले जाते [illegible] ? अटूट श्रद्धा, निर्मल चरित्र, तथा ऊँचे उद्देश्य को आधार बनाकर की गयी उपासना कभी निष्फल नहीं होती, यह युग ऋषि का इस स्तंभ में संन्देश है ।

गायत्री मंत्र हमारे साथ–साथ बोलिए–

"ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।"

देवियों ! भाइयो ! गायत्री को हमने त्रिपदा कहा है–ऋषियों ने त्रिपदा कहा है । अगर आप गायत्री मंत्र से–उपासना में सफलता प्राप्त करना चाहते हैं तो आपको एक महत्वपूर्ण शर्त पूरी करनी होगी–कुछ खास अवलम्बन लेकर चलना होगा यही मेरे जीवन का निचोड़ है, सार है, निष्कर्ष है, गायत्री को जिसने सफल बनाया आप इस आधार को समझने की कोशिश करें ।

यह प्रमुख आधार है–श्रद्धा । श्रद्धा–विहीन–विश्वास–विहीन किसी तरीके से लोग चिन्ह पूजा करते हुए चले जाते हैं जरा सफलता मिल गयी तो बाँट दिया गायत्री माता का प्रसाद, सवा रुपये का और असफलता मिली, तो गायत्री माता को फेंक दिया और कह दिया कि मेरा गायत्री पर कोई विश्वास नहीं है । गायत्री मेरी कौन लगती है ? उससे क्या लेना ? हम तो अपने फायदे के लिए गायत्री कर रहे थे । श्रद्धा का अर्थ यह नहीं है । माँ प्यार भी करती है, मिठाई भी खिलाती है और जब नाराज होती है तो गाल पर चपत भी लगाती है । बच्चे को फोड़ा हो जाता है तो डॉक्टर के पास चीरा लगवाने को भी ले जाती है–हर स्थिति में साथ रहती है । श्रद्धा वह है जो लाभ में और हानि में, सफलता और असफलता में अविचल–अटूट बनी रहे , अडिग बनी रहे । अटूट विश्वास , अटूट श्रद्धा की शक्ति असीम है । मीरा ने जब एक पत्थर पर श्रद्धा जमायी तो वह गिरिधर गोपाल हो गया । रामकृष्ण परमहंस ने जब एक पत्थर में श्रद्धा जमायी तो वह भगवान हो गया । एकलव्य ने एक मिट्टी के टुकड़े में श्रद्धा जमायी तो श्रद्धा से वह द्रोणाचार्य हो गया । यह सब श्रद्धा का चमत्कार है । नहीं साहब–गिरधर गोपाल ने बड़ी कृपा की थी मीरा पर । गिरधर गोपाल ने कोई कृपा नहीं की थी, वरन् मीरा की श्रद्धा पत्थर से टक्कर खायी और उसने एक नया भगवान बनाकर खड़ा कर लिया–छाया पुरुष के तरीके से जो मीरा के साथ–साथ चला करता था । रामकृष्ण परमहंस की श्रद्धा ने काली से टक्कर मारी और उनका विश्वास काली के रूप में श्रद्धा की छाया बनकर खड़ा हो गया । वही सहायता करता था । विश्वास बड़ी चीज है ।

मैं आपको श्रद्धा की सामर्थ्य की बात कह रहा था । विचारणा भी एक शक्ति है, धन भी एक शक्ति है, बल भी एक शक्ति है, किन्तु दुनिया में सबसे बड़ी एक ही शक्ति और सामर्थ्य है खासतौर से आध्यात्मिक क्षेत्र में और वह है–श्रद्धा की शक्ति । श्रद्धा की शक्ति का विकास करते हैं हम गुरु के माध्यम से । हमने अपने गुरु के माध्यम से अपनी श्रद्धा को परिपक्व किया है । अब हमारी उपासना में केवल हमारा गुरु ही रह गया है । हमने भगवान की अलग शकल बनादी है । वह बंशी बजाता हुआ नहीं है , वरन् बाल बखेरे हुए नंग–धड़ंग है, जिसके पास कपड़े भी नहीं हैं, उसी रूप का भगवान । वह बहुत सामर्थ्यवान है । हमारा गुरु हमारे पास बैठा रहता है । वह कैसे बना लिया आपने ? बेटे हमने श्रद्धा की दृष्टि से बना लिया । श्रद्धा की शक्ति असीम है । श्रद्धा भगवान के समान है । हमने अपनी उपासना में श्रद्धा की शक्ति को महत्व दिया है और उसे इतना अटूट मन में बनाकर रखा है कि हमारी श्रद्धा को कोई डगमग नहीं कर सकता । हम सब चीज गँवा देंगे , पर श्रद्धा नहीं गँवा सकते । श्रद्धा हमारा सम्बल है, हमारी शक्ति है । श्रद्धा के आधार पर ही हमने गायत्री माता को पाया है । यदि आपको उपासना करनी है तो उपासना

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

के पीछे एक ही शक्ति का समावेश करना—उसका नाम है श्रद्धा । श्रद्धा में शक्ति है—चाहे मंत्र में करो, चाहे गुरु में करो, चाहे उपासना में करो, चाहे भगवान में करो—किसी में भी करो—श्रद्धा जिसमें जोड़ दी जायेगी उसी में चमत्कार खड़े हो जायेंगे । यदि माला के साथ में आपने श्रद्धा का समावेश किया है तो मैं विश्वास दिलाता हूँ—आप सफल होंगे । मेरे जीवन का अनुभव और निचोड़ नम्बर एक—जिसके सहारे मैंने आध्यात्मिक प्रगति की, गायत्री माता को अपनी मुट्ठी में लिया और खरीद लिया—श्रद्धा की कीमत पर ।

श्रद्धा के साथ ही जरूरी है—चरित्र । चरित्र किसे कहते हैं ? चरित्र इसे कहते हैं—कपड़े को रंगने से पहले धोने की जरूरत पड़ती है । धोयेंगे नहीं अगर तो उस पर रंग नहीं चढ़ेगा । राम का नाम बीज है । बीज में बड़ी शक्ति है, लेकिन उसके लिए जमीन चाहिए । हर जगह बीज काम नहीं दे सकता । प्रत्येक व्यक्ति का मंत्र सार्थक नहीं हो सकता । मंत्र को सार्थक करने के लिए , भगवान को अवतरित करने के लिए स्वच्छ मन की जरूरत है । मन आपका साफ नहीं है तो भगवान आपको दिखायी नहीं देगा । मैला मन—गलीज मन, दुष्ट मन, स्वार्थी चरित्र, भ्रष्ट चरित्र यदि आपका है तो मैं यह कहता हूँ कि भगवान आपके पास आयेंगे तो सही, पर टक्कर मारकर वापस चले जायेंगे । उनकी नाक सड़ जायेगी और बदबू के मारे भाग खड़े होंगे । भगवान इस मामले में बहुत संवेदनशील हैं । वह एक बात परखते हैं—आदमी का ईमान—आदमी का चरित्र आदमी की वृत्ति , आदमी के गुण आदमी के कर्म और स्वभाव क्या हैं ? अगर आप साफ हैं, अगर अपने आपको साफ बनाने की कोशिश की है तो मैं यह कहता हूँ कि भगवान आपके पास भागते हुए चले आयेंगे । रंगाई से पहले धुलाई जरूरी है । कारतूस की अपनी कीमत है, पर बन्दूक की भी कीमत है, उसके बिना कारतूस चल नहीं सकता ।

मंत्र सार्थक होते हैं, लेकिन हर एक के मंत्र सार्थक नहीं होते । चरित्रवान के मंत्र सार्थक होते हैं । शृंगी ऋषि का प्रसंग आता है । उनके पिता ने ब्राह्मणत्व पैदा करने के लिए उनको जंगल में रखा । खान—पान के बारे में, स्त्रियों के बारे में, सारी लोकभावनाओं के बारे में , तृष्णा और वासना के बारे में उनको दूर रखा । जब राजा दशरथ के यहाँ पुत्रेष्टियज्ञ हुआ तो जरूरत इस बात की हुई कि कोई ऐसा ऋषि—कोई ऐसा संत तलाश किया जाय जिसके बोले हुए मंत्र सार्थक होते हुए चले जायें । गुरुवशिष्ठ से कहा गया । उनने कहा—हम आपका पुत्रेष्टि यज्ञ करा तो दें, पर हमारी वाणी के उच्चारण से आपको संतान नहीं हो सकती । क्यों नहीं हो सकती ? हमारी वाणी जल गयी, क्योंकि हम विवाहित हैं और हमारे सौ बच्चे हैं । सौ बच्चे होने से हमारा ब्रह्मचर्य समाप्त हो गया । मंत्र तो हमें आते हैं, पर हमारे वेदमंत्रों में कोई शक्ति नहीं है , इसलिए वे फलित नहीं हो सकते । फिर उन्होंने किसे ढूँढ़ा ? एक ही आदमी—शृंगीऋषि जिसने जीवन भर में यह नहीं जाना था कि स्त्रियाँ कैसी होती हैं ? वासना किसे कहते हैं ? तृष्णा किसे कहते हैं ? उन्होंने अपना व्यक्तित्व और चरित्र उच्चकोटि का बनाकर रखा था । उसी के फलस्वरूप उनके मंत्र सार्थक होते चले गये । पुत्रेष्टि-यज्ञ कराया और राजा दशरथ के राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न—चार भगवान पैदा हुए । किससे हुए यज्ञ से—नहीं । यज्ञ तो वशिष्ठ भी करा सकते थे, अतः यज्ञ से नहीं—वे ब्राह्मण के मुख में से पैदा हुए थे । "ब्राह्मणोश्च मुखमासीत्"—ब्राह्मण के मुख में भगवान रहता है । उसके रहता है जो ब्राह्मण होता है, चरित्रवान होता है । भगवान के लिए सबसे बड़ी परख यही है कि हमारा भक्त हमारे ऊपर विश्वास करता है कि नहीं । विश्वास करने वाले व्यक्ति का नाम चरित्रवान है ।

साधक को चारित्रवान होना चाहिए । आप यह मत समझिये कि हर आदमी भगवान को बहला सकता है । वह हर आदमी के चंगुल में आने वाले नहीं हैं । अगर यह बात रही होती तो चोर, उचक्के , बेईमान और दुष्ट—दुराचारी भी भगवान को पकड़ करके और चाहे जिस तरीके से अपना उल्लू सीधा करते और देवी को बकरी भेंट करके चाहे जो काम करा लेते । भगवान को पाने के लिए मनुष्य को चरित्रवान होना चाहिए । शृंगीऋषि तब बच्चे ही थे । एक बार राजा परीक्षित ने ध्यान में बैठे उनके पिता लोमश ऋषि के गले में साँप डालकर अपमानित कर दिया । शृंगीऋषि खेलने चले गये थे । लौट कर आये तो देखा कि हमारे पिता का अपमान किया गया है । क्रोध से वे काँपने लगे । उन्होंने जल हाथ में लिया, मंत्र पढ़ा और कहा कि जो मरा हुआ साँप हमारे बाप के गले में पड़ा हुआ है वह जिन्दा हो जाय । साँप जिन्दा हो गया । साँप से उन्होंने कहा—साँप तू वहाँ चला जा जहाँ कहीं भी दुनिया में कोई भी व्यक्ति क्यों न हो जिसने हमारे पिताजी का अपमान किया है उसे तू काट खा—जिन्दा मत छोड़ना । यही हुआ, तक्षक राजा परीक्षित की ओर चल दिया । लोमश ऋषि की आँखें खुलीं तो उन्होंने कहा—बेटे तूने यह क्या कर डाला ?

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

राजा ने गलती कर दी तो हमें तो नहीं करनी चाहिए । पर अब क्या कर सकते थे, तीर तो निकल चुका था–मुँह से मंत्र के रूप में । लोमश ऋषि ने एक विद्यार्थी को भेजकर परीक्षित को संदेश दिया कि सातवें दिन तुझे साँप काट ही खायेगा, इसलिए तुझे सात दिन में जो करना हो सो कर ले । राजा ने भागवत कथा सुननी आरंभ कर दी । सातवाँ दिन आया और तक्षक ने काट खाया ।

मैं क्या कह रहा हूँ–मंत्रों की शक्ति , भगवान की शक्ति, उपासना की शक्ति के बारे में जिसमें एक चीज जुड़ी ही रहनी चाहिए और उसका नाम है–चरित्र । दुश्चरित्र आदमी, दुष्ट आदमी, दुराचारी आदमी यह ख्याल करे कि हम यह मंत्र जप करके–माला घुमाकर के–पूजा करके किसी देवी–देवता को प्रसन्न करके काबू में ला सकते हैं तो यह बिलकुल असंभव है । मेरी जिन्दगी का सार यही है चरित्र वाला पक्ष जिसमें मैंने अपने आपको धोबी के तरीके से धोया और धुनिये के तरीके से धुना । धुनिया जैसे थोड़ी सी रुई को धुन–धुन करके इतनी मोटी बना देता है और धोबी कपड़े को पीट–पीट करके सफेद झक बना देता है, हमने भी अपने चरित्र को उसी प्रकार धोया और भगवान का अनुग्रह पाया । यह उसी का परिणाम है जो आपके सामने है । अगर आप उपासना का–मंत्र का लाभ देखना चाहते हैं, कोई आध्यात्मिक चमत्कार देखना चाहते हैं तो श्रद्धा उगाइये और चरित्र को धोइये । विधि आपको नहीं आती है तो इससे कोई नुकसान नहीं । बाल्मीकि को विधि नहीं आती थी । 'उलटा नाम जपा जग जाना । बाल्मीकि भये ब्रह्म समाना ।।" उलटा नाम जप करके भी आप भगवान को पा सकते हैं आप गलत मंत्र बोलिये गलत उच्चारण से भी उद्धार हो जाता है । जो स्त्रियाँ नहीं बोल पाती उन्हें हम "ऊँ भूर्भुवः स्वः" सिखा देते हैं । जिन्हें ऊँ भूर्भुवः स्वः भी नहीं आता तो उन्हें केवल "ऊँ सिखा देते हैं । जब हम अफ्रीका गये तो बहुत से नीग्रो लोगों को गायत्री मंत्र सिखाया । बहुत कोशिश करने पर भी उन्हें सही बोलना नहीं आया । वे बोले "गुरु जी ! हमें गलत गायत्री मंत्र आता है, उससे कोई नुकसान तो नहीं होगा ? " नहीं , कोई नुकसान नहीं होगा । गायत्री ऐसी नहीं है कि आपके मंत्र गलत हो जायँ तो उसके लिए जान की ग्राहक बन जाय । आपके अक्षर गलत हो जाते हैं तो हो जाने दीजिये । विधि में आप कहीं भूल करते हैं तो हमारी जिम्मेदारी । नवरात्रि अनुष्ठान में हम कहा करते हैं कि विधि आपकी गलत हो जाय तो उसका पाप हम पर लगा दीजिए । विधि की कोई कीमत नहीं है, जैसी विधि आती हो कर लीजिए , पर विधा के बारे में ध्यान रखिये ।

श्रद्धा व चरित्र के बाद अगला जो उद्देश्य गायत्री मंत्र के साथ जुड़ा हुआ है–वह हमारे जीवन का सार और निचोड़ है–ऊँचा उद्देश्य रखिये । छोटे उद्देश्यों के लिए , घटिया कामों के लिए नहीं , भगवान के सामने किसी बड़े काम के लिए पल्ला पसारिये । भगवान को जिन्दगी में साझीदार के तरीके से बनाइये–हिस्सेदार बनाइये । हिस्सेदार बनाना सबसे कीमती चीज है । कुछ चीज पाना चाहते हैं तो पाने के तरीके तीन हैं–एक माँगिये , भाई साहब कुछ दे दीजिए कुछ नहीं है हमारे पास । दूसरा तरीका है कर्ज लेने का और तीसरा तरीका है–अपना हक माँगने का–कि हमने महीने भर मेहनत और मशक्कत की है पैसा लाइये हमारा । यह हमारा ड्यू है । फोकट में भी क्या कुछ मिल सकता है ? जहाँ तक मैंने समझा है कि फोकट नाम की चीज दुनिया में कोई नहीं है नहीं साहब हमने तो यही सुना है कि देवताओं से और गुरु से फोकट में आशीर्वाद मिल सकता है । बेटे , आशीर्वाद मिल भी सकता है, पर अगले जन्म में तुझे कर्ज के रूप में देना पड़ेगा । फोकट में लेना और फोकट में खाना अपने आपको दीन बनाना, दरिद्र बनाना, नीच बनाना और जलील बनाने के बराबर है । भगवान के सामने हमको जलील नहीं बनना चाहिए । जलालत हमको नामंजूर है । आत्मविश्वास और आत्म सम्मान की रक्षा हमको हर हालत में करनी चाहिए । हमें किसी के आगे पल्ला नहीं पसारना चाहिए । पल्ला पसारने का कोई नियम दुनिया में नहीं है । हर चीज कीमत देकर पायी जाती है ।

मित्र, आपको जिस आदमी ने यह बात सिखा दी है कि अध्यात्म देवी–देवताओं की खुशामद को कहते हैं, गुरु की खुशामद को कहते हैं, सिद्ध पुरुषों की खुशामद को कहते हैं और कमायी किये बिना–मेहनत किये बिना चापलूसी से जीभ की नोक की हरफरी करके, माला पहना करके–सवा रुपया दक्षिणा दे करके यह चीजें पायी जा सकती हैं, वह गलत आदमी था और आप उससे भी गलत आदमी हैं जो ऐसी बातों पर विश्वास करते हैं । दुनिया कायदे पर टिकी हुई है–नियम पर टिकी हुई है ।

मित्रो , आप उच्च उद्देश्यों के लिए गल जाना । हमने अपने गुरु के साथ में वायदा किया हुआ है कि हम आपकी आज्ञानुसार चलेंगे और अपनी जिन्दगी में स्वयं के लिए–व्यक्तिगत फायदे के लिए कुछ

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

काम नहीं करेंगे । हम आपके लिए काम करेंगे । गुरु ने कहा–जब तुम सब कुछ हमको दे रहे हो तो हमारी हर चीज तुम्हारी है । भगवान की हर चीज हमारे गुरु की है और गुरु की हर चीज हमारी है । आपको मालूम नहीं है–हमने वसीयत की हुई है । हमारे पास जो कुछ बाप–दादे छोड़ गये थे, उसका चप्पा–चप्पा हमने समाज के हित में खर्च कर डाला । हमने अपनी हर चीज भगवान को सौंप दी और संकीर्णता को पैरों तले रौंद कर फेंक दिया है । इसके बदले में जो पाया, आप देख रहे हैं । इससे कम कीमत पर ऊँची चीजें नहीं मिल सकतीं । स्वार्थी और संकीर्ण आदमी, मक्खी और मच्छर जैसे दिल वाले कृपण और कंजूस भगवान से नहीं पा सकते । किससे पायेंगे ? बेटे हम आपको दे देंगे, क्योंकि आप हमारे बच्चे हैं । हम आपको मोहब्बत और प्यार करते हैं । हम जानते हैं कि प्यार की कीमत क्या चुकानी चाहिए । आपके दुख, दर्द, कठिनाई, मुसीबत के बारे में अगर हमने अपनी कुछ दौलत जमा की होगी तो आपकी सहायता करेंगे और आपको सुखी बनाने के लिए हरदम कोशिश करेंगे । हम यह वायदा तो नहीं करते कि आपकी हर मनोकामना को पूरी कर सकते हैं, पर भगवान ने जिस लायक बनाया होगा, जो कुछ भी हमारे पास होगा, हम आपकी मुसीबत को हल करने के लिए निश्चित रूप से कोशिश करेंगे । यह हमारी और आपके बीच की बात है।

दूसरे संत और ऋषि आप पर दया करके–करुणा करके आपकी सहायता कर सकते हैं, लेकिन आपको बच्चे समझते रहेंगे । जब तक आप माँगते रहेंगे, आपकी हैसियत बच्चों जैसी बनी रहेगी । भगवान से–गायत्री माता से ऊँची चीजें कीमती चीजें पाने के लिए आपको जो काम करना है वह है कि आप एक चीज को छोड़ जाइये । कार्लमार्क्स कहते थे कि, मजदूरो! तुम हमारी कम्पनी में साम्यवाद में भर्ती हो जाओ । इसमें तुम्हारा बस एक ही नुकसान होगा कि तुम गरीबी खो बैठोगे । इसके अलावा फायदे ही फायदे हैं और मैं कहता हूँ कि एक चीज छोड़नी पड़ेगी आपको बाकी सब नफा ही नफा है । क्या छोड़नी पड़ेगी ? कृपणता । कृपणता आप पर हावी हो गयी है । न पैसे की कमी है न रोटी की कमी है । कृपणता को छोड़कर थोड़ा दिल बड़ा कीजिये, यह आज के समय की आवश्यकता है ।

हमारे गुरु की आवश्यकता थी, उनके इशारे पर हम कठपुतली के तरीके से नाचते रहे । उनके इशारे का हमको ध्यान है । आज युग देवता का–महाकाल का इशारा यह है कि हमको जन जागृति के लिए काम करना चाहिए । हमको नवयुग लाने के लिए घर–घर में सन्देश पहुँचाना चाहिए । विचार क्रान्ति अभियान आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है, क्योंकि इस युग की सभी समस्यायें इसलिए पैदा हुई हैं कि आदमी की अकल खराब हो गयी है । न पैसा कम है न कोई चीज कम है । अकल खराब है । अकल ठीक करने के लिए हमको विचारक्रान्ति में हिस्सा लेना चाहिए । व्यक्ति और समाज, देश और धर्म–संस्कृति के लिए, मानवीय भविष्य को उज्ज्वल बानाने के लिए हमको एक काम करना चाहिए कि ज्ञानयज्ञ के विस्तार के लिए पूरी कोशिश करें–प्रयास करें । घर–घर में जायें–जन–जन के पास जायें, अलख जगायें, नवयुग का संदेश सुनायें और यह कहें कि आदमी को कृपणता छोड़नी चाहिए । अपनी मनःस्थिति को ऊँचा बनाना चाहिए । चिन्तन और चरित्र में ऊँचाइयों का–उत्कृष्टता का समावेश करना चाहिए । क्रियाकलापों में आदर्शवादिता का समन्वय करना चाहिए । यही हमारा विचार क्रान्ति अभियान है ।

इसी के लिए इस पुनर्गठन वर्ष में हमने हर आदमी पर जोर दिया है और यह कहा है कि आपको अपनी कृपणता छोड़नी चाहिए और श्रेष्ठ विचार यदि आपके पास हैं तो क्रिया रूप में परिणत करने चाहिए । खाने का सामान आपके पास है तो पकाना आना चाहिए । खाना पकायेंगे नहीं तो कैसे काम करेंगे । विचार आपके पास हैं, मन बहुत अच्छा है, श्रद्धा बहुत है तो सक्रियता के रूप में परिणत कीजिये । तो सक्रियता के रूप में विचारों को परिणत करने लिए क्या करना चाहिए ? हमारे पास एक ही काम है, जिसको ऋषि और ब्राहमण करते रहे हैं और ऋषि और ब्राह्मण करते रहेंगे उसका नाम है–'जनमानस का परिष्कार' । इसके लिए प्राचीनकाल के ब्राह्मण, प्राचीनकाल के ऋषि, प्राचीनकाल के साधु–संत और वानप्रस्थ इस कार्य को किया करते थे । आज इसकी सबसे बड़ी आवश्यकता है । इस युग की इससे बड़ी कोई आवश्यकता नहीं । योग्यता की कमी नहीं । अनाज, कपड़ा , रोटी, विद्या, साहस आदि किसी चीज की कमी नहीं है । कमी है तो अकल की । मित्रो , अकल को बढ़ाने के लिए जनमानस के परिष्कार के लिए युग देवता ने महाकाल ने पुकार लगायी है । अगर आप कृपणता को त्यागने के लिए तैयार हों, सेवावृत्ति के लिए उदारता से तैयार हो, तो मैं आप से वायदा करता हूँ कि गायत्री माता का वह चमत्कार जो ऋषियों को मिला था, ब्राह्मणों को मिला था और हमको मिला है, उसका लाभ आप भी उठा सकेंगे । आज की बात समाप्त ।ॐ शान्ति :

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.



परम पूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

'अमृतवाणी' प्रसंग में इस अंक में हम दे रहे हैं गायत्री महाविद्या पर शांतिकुंज प्रांगण में ९ फरवरी १९७८ को परम पूज्य गुरुदेव द्वारा दिया गया उद्‌बोधन । वसंत पंचमी के विशेष सत्र के पहले दिन उनने उपस्थित पाँच हजार व्यक्तियों को विशेष दावत दी—युग देवता की व कहा कि गायत्री मंत्र हमारे जीवन में फलित हुआ, आपके जीवन को भी वह इन विभूतियों से निहाल कर सकता है, यदि आप सही विधा को सही तरीके से समझ सकें । तो पढ़ें , अमृतवाणी—गायत्री महाशक्ति की फल श्रुतियों पर प्रकाश डालने वाली, चेतना में उथल—पुंथल मचा देने वाली, उनकी वक्तृता शैली के माध्यम से । आगामी अंक में वसंत पर्व के परिपेक्ष में ऐतिहासिक वसंत पर्व १२।२।७८ को दिया गया उनका क्रांतिकारी उद्‌बोधन परिजन अमृतवाणी प्रसंग में पढ़ेंगे ।

गायत्री मंत्र हमारे साथ—साथ बोलिए —

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो ! भाइयो ! मेरे पिताजी गायत्री मंत्र की दीक्षा दिलाने के लिए मुझे बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में महामना मालवीय जी के पास ले गये । महामना मालवीय जी और हमारे पिता जी सहपाठी थे । उनका विचार था कि लड़के का यज्ञोपवीत संस्कार और गायत्री मंत्र की दीक्षा महामना मालवीय जी से करायी जाय । पिता जी मुझे वहीं ले गये, तब मैं दस—ग्यारह वर्ष का रहा होऊँगा । मालवीय जी के मुँह से जो वाणी सुनी, वह अभी तक मेरे कानों में गूँजती है । हृदय के पटल और मस्तिष्क पर वह जैसे लोहे के अक्षरों से लिख दी गयी है जो कभी मिट नहीं सकेगी । उनके वे शब्द मुझे ज्यों के त्यों याद हैं जिसमें उन्होंने कहा था — "भारतीय संस्कृति की जननी गायत्री है । यज्ञ भारतीय धर्म का पिता है । इन माता—पिता को हम सभी को श्रवण कुमार की तरह से कन्धे पर रख कर सेवा करनी चाहिए ।"

गायत्री मंत्र बीज है और इसी के वृक्ष के रूप में सारा का सारा भारतीय धर्म विकसित हुआ है । बीज छोटा सा होता है बरगद का और उसके ऊपर वृक्ष इतना बड़ा विशाल होता हुआ चला जाता है । गायत्री मंत्र से चारों वेद बने । वेदों के व्याख्यान स्वरूप ब्रह्मा जी ने, ऋषियों ने और ग्रंथ बनाये, उपनिषद् बनाये, स्मृतियाँ बनायीं, ब्राह्मण, आरण्यक बनाये । इस तरह हिन्दू धर्म का विशालकाय वांगमय बनता चला गया । हिन्दू धर्म की जो कुछ भी विशेषता दिखायी पड़ती है— साधना परक, ज्ञान परक अथवा विज्ञान परक, वह सब गायत्री के बीज से ही विकसित हुई है । सारे का सारा विस्तार गायत्री बीज से ही हुआ है । बीज वही है, टहनियाँ बहुत सारी हैं । हिन्दूधर्म में चौबीस अवतार हैं । ये चौबीस अवतार क्या हैं ? एक—एक अक्षर गायत्री का एक—एक अवतार के रूप में, उनके जीवन की विशेषताओं के रूप में, उनकी शिक्षाओं के रूप में है । हर अवतार एक अक्षर है गायत्री का, जिसमें क्रियायें और लीलायें करके दिखायी गयी हैं । उनके जीवन का जो सार है वही एक—एक अक्षर गायत्री का है ।

हिन्दू धर्म के दो अवतार मुख्य हैं—एक का नाम राम और दूसरे का कृष्ण है । राम चरित का वर्णन करने के लिए बाल्मीकि रामायण लिखी गयी जिसमें २४००० श्लोक हैं और प्रति १००० श्लोक के पीछे सम्पुट लगा हुआ है गायत्री मंत्र के एक अक्षर का । श्री कृष्ण चरित भागवत् में लिखा है । श्रीमद् भागवत में भी चौबीस हजार श्लोक हैं और एक हजार श्लोक के पीछे गायत्री मंत्र के एक अक्षर का सम्पुट लगा हुआ है अर्थात् गायत्री मंत्र के एक अक्षर की व्याख्या एक हजार श्लोकों में । राम चरित हो अथवा कृष्ण चरित—दोनों का वर्णन इस रूप में मालवीय जी ने किया कि मेरे मन में बैठ गया कि यदि ऐसी विशाल गायत्री है, तो मैं खोज करूँगा उसकी और अनुसंधान करके लोगों को यह बताकर रहूँगा कि ऋषियों की बातें, शास्त्रों की बातें सही हैं— क्या ? स्तुता, मया, वरदा . . . . कामधेनु, पारस, कल्पवृक्ष आदि जो लाभ गायत्री उपासना के बताये गये हैं, उसके लिए मुझे जिन्दगी का जुआ खेलना ही पड़ेगा और खेलना ही चाहिए । मित्रो ! चार—पाँच वर्ष में ही मेरी इच्छा भगवान ने पूरी कर दी । मेरे गुरु मेरे पास आये और उनने जो बातें बतायीं उससे जिन्दगी का मूल्य मेरी समझ में आ गया । जिन्दगी का मूल्य और महत्व समझकर मैं चौंक पड़ा कि चौरासी लाख योनियों में घूमने के बाद मिलने वाली यह जिन्दगी मखौल है क्या ? इसके पीछे महान उद्देश्य छिपे हुए हैं । भगवान ने यह मौका दिया है एक, इनसानी जिन्दगी हमारे हाथ में देकर के । पर क्या हम और आप

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

इसका इस्तेमाल कर पाते हैं ?

मालवीय जी ने मुझे सबसे कीमती एक ही बात बतायी थी कि गायत्री मंत्र का सम्बल आप पकड़ लें तो पार हो सकते हैं । वे मेरे दीक्षा गुरु हैं और आध्यात्मिक गुरु वे हैं जो हिमालय पर रहते हैं । उन्होंने बताया कि जिन्दगी की कीमत समझ, जिन्दगी का ठीक इस्तेमाल करना सीख । जिन्दगी की कीमत मैंने पूरी तरीके से वसूल कर ली है । एक-एक सांस को इस तरीके से खर्च किया है कि कोई यह इलजाम मुझ पर नहीं लगा सकता कि आपने जिन्दगी के साथ मखौल किया है-दिल्लगीबाजी की है । जीवन देवता पारस है-अमृत है और कल्पवृक्ष है । इसका ठीक से इस्तेमाल करता हुआ मैं चला गया और वहाँ से चलते-चलते अभी पचपन साल की मंजिल पूरी करने में समर्थ हो गया । क्या-क्या किया ? क्या-क्या पाया ? कैसे पाया ? मैं चाहता हूँ कि चलते-चलाते आपको अपने भेद और रहस्य बताता जाऊँ कि गायत्री मंत्र कितना सामर्थ्यवान है । यह इतना कीमती है कि मात्र माला घुमाने की कीमत पर इसके लाभ नहीं प्राप्त किये जा सकते । इसके लिए कुछ ज्यादा ही कीमत चुकानी पड़ेगी ।

ऋषि, गायत्री मंत्र के बारे में क्या कहते हैं ? शास्त्रकारों ने क्या कहा है ? यह जानने के लिए मित्रो, मैंने पढ़ना शुरू किया और पढ़ते-पढ़ते सारी उम्र निकाल दी । पढ़ने में क्या-क्या पढ़ा ? भारतीय धर्म और संस्कृति में जो कुछ भी है वह सब पढ़ा । वेद पढ़े, आरण्यक पढ़ीं, उपनिषदें पढ़ीं, दर्शन पढ़ीं और दूसरे ग्रन्थ पढ़ डाले-देखूँ तो सही गायत्री के बारे में ग्रंथ क्या कहते हैं । खोजते-खोजते सारे ग्रंथों में जो पाया, उसे नोट करता चला गया । पीछे मन में यह आया कि जैसे मैंने फायदा उठाया है, दूसरे भी फायदा उठा लें तो क्या नुकसान है । उसे छपा भी डाला । लोग उससे फायदा भी उठाते हैं । असल में मैंने ग्रंथों को, ऋषियों की मान्यताओं को जानने के लिए पढ़ा और पढ़ने के साथ-साथ में यह प्रयत्न भी किया कि जो कोई गायत्री के जानकार हैं, उनसे जानूँ कि गायत्री क्या है ? और प्रयत्न करूँ कि जिस तरीके से खोज और शोध उनने की थी, उसी तरीके से मैं भी खोज और शोध करने का प्रयत्न करूँ ।

मैंने पढ़ा है कि एक आदमी बहुत पहले हुआ था जिसने गायत्री में पी .एच . डी . और डी . लिट् . किया था ? कौन था ? उसका नाम था-विश्वामित्र । विश्वामित्र उस व्यक्ति का नाम है जिसको जब हम संकल्प बोलते हैं तो हाथ में जल लेकर गायत्री मंत्र से पहले विनियोग बोलना पड़ता है । आपको तो हमने नहीं बताया ' जब आप आगे-आगे चलेंगे-ब्रह्मवर्चस् की उपासना में चलेंगे, तब हम गायत्री के रहस्यों को भी बतायेंगे । अभी तो आपको सामान्य बालबोध नियम भर बतायें हैं जो गायत्री महाविज्ञान में छपे हैं । बालबोध नियम जो सर्व साधारण के लिए हैं, उतना ही छापा है, लेकिन जो जप हम करते हैं, उसमें एक संकल्प भी बोलते हैं जिसका नाम है "विनियोग" । प्रत्येक बीज मंत्र के पूर्व एक विनियोग लगा रहता है । विनियोग में हम तीन बातें बोलते हैं-"गायत्री छन्दः सविता देवता विश्वामित्र ऋषि गायत्री जपे विनियोगः" । संकल्प जल छोड़ करके तब हम जप करते हैं । यह क्या हो गया ? इसमें यह बात बतायी गयी है कि गायत्री का पारंगत कौन आदमी था । गायत्री का अध्ययन किसने किया था, गायत्री की जानकारियाँ किसने प्राप्त कीं-गायत्री की उपासना किसने की । वह आदमी जो कि प्रामाणिक है गायत्री के सम्बन्ध में-उसका नाम विश्वामित्र है । मेरे मन में आया कि क्या मेरे लिए ऐसा संभव नहीं कि विश्वामित्र के तरीके से प्रयास करूँ । मित्रो मैं उसी काम में लग गया । पन्द्रह वर्ष की उम्र से उन्तालीस तक चौबीस वर्ष बराबर एक ही काम में लगा रहा, लोग पूछते रहे कि यह आप क्या किया करते हैं हमें भी कुछ बताइये । हमने कहा-प्रयोग कर रहे हैं-रिसर्च कर रहे हैं और रिसर्च करने के बाद में कोई चीज काम की होगी तो लोगों को बतायेंगे कि आप भी गायत्री की उपासना कीजिये, नहीं होगी तो मना कर देंगे ।

मित्रो ! २४ साल की उपासना के पश्चात् संशोधन के पश्चात् तीस साल और हो गये जब से गायत्री के प्रचार का कार्य हमनें लिया और जब हमको हमारी जीवात्मा ने यह आज्ञा दी कि यह काम की चीज है, उपयोगी चीज है-लाभदायक चीज है इसको लोगों को बताया जाना चाहिए और समझाया जाना चाहिए । जो जितना अधिकारी हो उसे उतनी ही खुराक दी जानी चाहिए । हम उपासना सिखाते रहे हैं, छोटी खुराक वालों को छोटी मात्रा देते रहे हैं, बड़ों को बड़ी मात्रा । हमने छोटे बच्चों को दूध में पानी मिले हुए से लेकर के बड़ों को घी और शक्कर मिली हुई खुराक तक विभिन्न लोगों को दी है तीस सालों में । इन तीस सालों में हमारा विश्वास अटूट होता चला गया है, श्रद्धा मजबूत होती चली गयी है । यह वह सम्बल है-वह आधार है कि अगर ठीक तरीके से कोई पकड़ सकने में समर्थ हो सकता हो तो उसके लिए नफा ही नफा है- लाभ ही लाभ है ।

गायत्री के जो सात लाभ बताये गये हैं-"स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां आयु प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिम् द्रविणं ब्रह्मवर्चसम् . . . . ।" इन्हें हमने सौ फीसदी पाया कि ये सातों के सातों लाभ एक-एक अक्षर करके इसमें सही हैं । यह हमने अपने जीवन की प्रयोगशाला में साबित किया है-अपनी जिन्दगी में परीक्षण किया है कि सातों लाभ जो गायत्री के बताये गये हैं सही हैं । इससे मनुष्य की आयु

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

बहुत बड़ी हो जाती है । कितनी बड़ी हो जाती है ? बेटे हम कुछ कह नहीं सकते, पर हमारे गुरु के बारे में अपना विश्वास है कि उनकी आयु ६०० वर्ष से कम नहीं हो सकती । गायत्री मंत्र का जप करने वाले की आयु बहुत बड़ी हो सकती है, यह तो आप अपने गुरु की बता रहे हैं । तो फिर आपकी उम्र कहाँ रही ? बेटे, हमारी उम्र बहुत बड़ी है।

७० वर्ष उम्र होने को आयी, पर सही बात यह है कि ७० साल हमारी उम्र नहीं है । हम ३५० वर्ष के हैं–७० × ५ = ३५० । आप ३५० वर्ष के कैसे हो सकते हैं ? हम इसलिए हुए कि पाँच आदमी मिलकर के जितना काम करते हैं, उतना काम हमने अपनी जिन्दगी में किया । ग्रन्थ हमने जितने लिखे हैं, अगर एक आदमी जिन्दगी में लिखने के अलावा दूसरा कोई काम नहीं करे तो भी नहीं कर सकता और हमने क्या किया ? सारी जिन्दगी भर एक आदमी तप करता रहा है । जिन्दगी के अधिकांश समय में हमारा ६ घण्टे रोज दैनिक उपासना में चला गया । इस तरह एक आदमी ने पूरा का पूरा श्रम गायत्री उपासना में किया ।

एक आदमी ने संगठन किया है । हमने देश भर का संगठन किया है । हिन्दुस्तान में और सारे संसार में जो लोग हमको गुरुजी कहते हैं और जिन्होंने हमें देखा है, जो हमारी बात को सुनते हैं–मानते हैं, जिन्होंने दीक्षा ली है, वे करोड़ों की तादाद में हो सकते हैं । एक आदमी ने इतना बड़ा संगठन ३० साल में खड़ा किया हो, मैं समझता हूँ हिस्ट्री में ऐसा उदाहरण कभी नहीं मिला होगा । मरने के बाद तो लोगों ने किये हैं । ईसा के मरने के बाद सेंटपाल ने ईसाई धर्म का विस्तार किया था तब फैला था वह धर्म । बुद्ध भगवान का मिशन उनकी जिन्दगी में नहीं फैल सका बहुत थोड़ा सा था । सम्राट अशोक ने अपना सारा राज्य बुद्ध मिशन के लिए लगाया तब कहीं उसका विस्तार हुआ । ३० साल में हमने विस्तार की व्यवस्था बनायी है, और कोई एक आदमी रह गया है जो हमेशा कहीं और दुनिया में रहता है । संतो के पास रहता है, ज्ञानियों के पास रहता है, तपस्वियों के पास रहता है । उनसे हम गर्मी प्राप्त करते रहते हैं, शक्ति प्राप्त करते रहते हैं । पूछताछ करते रहते हैं । एक और भी है हमारा है जो जगह–जगह जाता रहता है । अक्सर लोग कहते हैं कि क्यों साहब हमने सुना है कि आप वहाँ के यज्ञ में गये थे और लोगों ने देखा था । यह भी हो सकता है । स्थूल ही नहीं शरीर सूक्ष्म भी होते हैं । सूक्ष्म शरीर से हमको जगह–जगह जाना पड़ता है । जगह–जगह काम करने पड़ते हैं । पाँच व्यक्तियों की हमने बराबर जिन्दगी जियी और ३५० वर्ष की उम्र हो गयी । यह है हमारी आयु ।

प्राण । प्राण माने साहस–हिम्मत । हममें बहुत हिम्मत है । कितनी हिम्मत है–सारे के सारे पण्डित और पुरातनवादी लोग यह कहते थे कि महिलाओं को गायत्री का जप नहीं करना चाहिए और ब्राह्मण के अलावा किसी को नहीं करना चाहिए । हम अकेले ने कहा कि हर बिरादरी के लोग कर सकते हैं और महिलायें भी कर सकती हैं । पण्डितों, शंकराचार्यों–सभी से हमने लोहा लिया । सारी दुनिया में उलटी हवायें बह रही हैं, प्रवाह बह रहे हैं उनको मोड़ देने के लिए हममें बहुत ताकत है । इतनी ताकत है हममें कि जिस तरीके से मछली बहती हुई धारा को छल–छलाती हुई चीरती हुई चली जाती है उसी तरीके से हम अकेले निकल जाते हैं ।

कहाँ से आता है यह प्राण ? गायत्री में से आता है । गायत्री ने और क्या–क्या दिया ? हमको दीर्घ जीवन दिया–लम्बी आयु दी, प्राण दिया, हिम्मत दे दी, बहादुरी और साहस दे दिया, शक्ति दे दी । प्राणं, प्रजां और सन्तानें दे दी । कितनी सन्तानें दी –हम कह नहीं सकते । हमारी सन्तानें जहाँ पैदा होती हैं तो मूछों समेत पैदा होती हैं और लड़कियाँ पैदा होती हैं तो मैट्रिक पास करके पैदा होती हैं । कीर्ति–यश– यश के बारे में हमारे मुँह से शोभा नहीं देता । पर हम एक ही बात कहते हैं कि संसार में–संसार के पढ़े लिखे लोगों में से कभी किसी से यह पूछें कि आचार्य जी नाम के कोई व्यक्ति थे, तो वह छूटते ही कहेगा हम जानते हैं उन्हें । हिन्दुस्तान ही नहीं, संसार की प्रत्येक लायब्रेरी में जाइये और जाकर पूछिये कि चारों वेदों के भाष्य आपके यहाँ हैं क्या ? उत्तर हाँ में मिलेगा । नास्तिक देशों की बात मैं कहता हूँ–आप पूछिये क्यों साहब इस नाम के व्यक्ति को आप जानते हैं ? हमारा यश किसी सीमा में बँधा नहीं है–सम्प्रदाय में नहीं है, केवल हिन्दू धर्म में नहीं है, वरन् सारे विश्व में है । यह यश कहाँ से आ गया । यह बेटे गायत्री माता का दिया हुआ है ।

कीर्तिम् द्रविणं– धन । यही मत पूछिये कि हमारे पास कितना है । अभी पीछे वाली जमीन खरीदी है और जब अगलीबार वसंत पंचमी पर आप आवेंगे तो यहाँ नगर बसा हुआ मिलेगा, महल दिखायी पड़ेगा । महाराज जी कहाँ से लायेंगे ? आप हमसे माँगेंगे । नहीं बेटे, मैं तेरे सामने हाथ नहीं फैलाऊँगा मैंने इनसान के सामने हाथ नहीं पसारा तो तुझसे क्या माँगूँगा । कहाँ से आयेगा ? बेटे कहीं से आयेगा–जमीन फटेगी, आसमान से आयेगा । कौन देगा ? वही देगा जिसके बारे में अथर्ववेद ने साक्षी देते हुए कहा है–कीर्तिम्–द्रविणं–धन देने वाली और आखिर में क्या देती है सातवां फल–ब्रह्मवर्चसम् । ब्रह्मवर्चस् कौनसा है ? "ब्रह्मवर्चस्" कहते हैं तेज को । ब्रह्मतेज कैसा होता है ? ब्रह्मतेज उसे कहते हैं– जब विश्वामित्र और वशिष्ठ में संघर्ष हुआ तब विश्वामित्र हार गये और अपना राज्य छोड़कर यह कहने लगे कि वशिष्ठ जितने शक्तिशाली हैं उतना ही

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

शक्तिशाली बनकर मैं भी दिखाऊँगा । उनने एक श्लोक कहा–"धिक् बलं क्षत्रिय बलं ब्रह्मतेजो बलं बलम् ।" अर्थात् ब्रह्मतेज ही बल है । ब्रह्मवर्चस माने ब्रह्मतेज । इसे ब्राह्मणत्व का तेज कहते हैं, आध्यात्मिक तेज कहते हैं, आत्मा की शक्ति का तेज कहते हैं । गायत्री का आखिरी फल – सातवां फल ब्रह्मवर्चस होता है ।

गायत्री मंत्र के बारे में हम सारे जीवन भर प्रयत्न करते रहे और सफलता पाली । आज मैं यह कहने की स्थिति में हूँ कि ऋषियों ने जो कुछ बताया था कि गायत्री भारतीय संस्कृति का बीज है, तो वह सही है । जो शास्त्रकारों ने लिखा है, अन्यान्य उपासकों ने लिखा है, हम आज यह कहने की स्थिति में हैं कि वह सही है । आप कहते हैं या कोई गवाही भी है ? हाँ बेटे हमारी जिन्दगी गवाही है और प्रारम्भिक पन्द्रह वर्ष के बाद के ५५ साल के ५५ पन्ने गवाही हैं । हमारी जिन्दगी के प्रत्येक पन्ने को खोलते चले जाइये वह एक गवाह के रूप में अपना बयान देगा और अपनी हिस्ट्री बतायेगा । वह यह बतायेगा कि गायत्री की उपासना करते हुए ५५ साल में हमने यह पाया और यह किया । तो महाराज हमें भी मिल सकती है ? इसीलिए तो तुम्हें बुलाया है । जो हमारे लिए संभव है वह आपके लिए भी है । गायत्री आपके ऊपर भी कृपा कर सकती है । सूरज के हम रिश्तेदार नहीं हैं और आपसे कोई बैर नहीं है । आप धूप में खड़े हो जाइये सूरज की रोशनी आप को भी मिल सकती है और हमको भी । चन्द्रमा की छाया में आप भी बैठ सकते हैं और हम भी ।

तो आपने कौन सी विधि से जप किया ? कौन सी विधि से उपासना की ? बेटे हम यही बताने के लिए आज आपके सामने बैठे हैं कि किस विधि से किया । विधि नहीं एक और बात पूछी जाय । क्या ? विधा । विधि तो उसे कहते हैं जो शरीर से और वस्तुओं की सहायता से हेराफेरी से की जाती है । विधि में हाथ यों जोड़िये, चावल ऐसा नहीं यों रखिये । माला लकड़ी की हो या रुद्राक्ष की । दीपक कैसे रखें । यह सब क्या है विधि है । कलेवर का नाम विधि है । जिस विधि को आप पूजते हैं वह आवरण है । आवरण की भी जरूरत पड़ती है, उसके बिना काम नहीं चलता । अगर हमारे पास कलम न हो तो हम चिट्ठी लिख नहीं सकेंगे । बन्दूक और तलवार हाथ में हो पर चलाने की विधि न आती हो तो लड़ाई नहीं लड़ी जा सकती । अतः विधि की भी जरूरत है । लेकिन मैं यह कहता हूँ कि विधि तक सीमित रहिये मत । विधि आपको मकसद तक नहीं पहुँचा सकेगी । विधि के सहारे आप जीवन लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सकेंगे । विधि आपको भगवान तक नहीं पहुँचा सकेगी । विधि के सहारे आप भगवान की कृपा के अधिकारी नहीं बन सकते । तब क्या करना पड़ेगा ? विधि के साथ विधा को जानना होगा । विधा मीन्स – रीति, कायदा–कानून, नियम और मर्यादा । इसके बिना सफलता नहीं मिल सकती।

ऋषियों ने गायत्री को त्रिपदा कहा है । इसके तीन आधार हैं– श्रद्धा, चरित्र निष्ठा और उदारता जिसे संकीर्णता या कृपणता का त्याग भी कहते हैं । यह तीन आधार आप पकड़ लें तो मैं यकीन दिलाता हूँ कि मेरे तरीके से आपको भी सफलता मिल सकती है । आप भी गायत्री के वैसे ही सिद्ध पुरुष बन सकते हैं जैसे कि महर्षि विश्वामित्र थे और जैसा बनने के लिए मैंने छोटे बच्चे की तरह खुद को समर्पित किया । आपके लिए भी द्वार खुला है मगर त्रिपदा की तीन शर्तें पूरी कर लें तब । इन तीनों के आधार पर हमारी जिन्दगी टिकी हुई है । अगर आप गायत्री मंत्र का वह चमत्कार, जो कि ऋषियों को मिला था, उपासकों, ब्राह्मणों और हमको मिला है तो इसके लिए आप अपनी श्रद्धा को विकसित कीजिये । चरित्र के बारे में ध्यान रखिये । दोष–दुर्गुणों का त्याग कीजिए और सेवावृत्ति के लिए उदारता से तैयार हो जाइये और यह देखिये कि जनमानस के परिष्कार के लिए आप क्या कर सकते हैं । समय का, श्रम का, धन का, अपनी बुद्धि का कोई हिस्सा लगाने के लिए आप तैयार हैं क्या ? कोशिश कीजिये–हिम्मत कीजिये । बीज के तरीके से गलिये और वृक्ष के तरीके से फलिये ।

हमने तीन शर्तों पर अपने गुरु से सारी की सारी दौलत–सारे के सारे धन पाये हैं– श्रद्धा की कीमत पर, चरित्र की कीमत पर और उदार दृष्टिकोण की कीमत पर । पी . एम . टी . की मेडिकल परीक्षा की तरह यह तीन पर्चे हैं कि उदारता की दृष्टि से कितने पैने साबित होते हैं आप । चरित्र की दृष्टि से कितने पवित्र साबित होते हैं । जितने आप नम्बर लाते जायेंगे उतने परीक्षा में पास होते जायेंगे । उसी हिसाब से–उसी अनुपात से उसी मात्रा में आपके लिए सफलतायें, सिद्धियाँ, चमत्कार, अनुदान–वरदान सुरक्षित रखे हुए हैं । टिकट लीजिए– 'गिव एण्ड टेक'– दीजिये और लीजिये । मेरे जीवन के सारे के सारे निष्कर्ष और निचोड़ यही हैं । मैं चाहता हूँ इनसे आप भी लाभ उठायें और गायत्री मंत्र की महिमा और गरिमा को बढ़ायें । उपासना के बारे में ऋषियों ने–शास्त्रों ने जो कुछ कहा है, वह साबित करके दिखायें । हमने यही साबित करके दिखाने की कोशिश की और आपसे भी यही अपेक्षा करेंगे कि आप जब यहाँ से विदा हों तो वैसा ही साहस, हिम्मत और दृष्टिकोण लेकर जायँ जिससे वे तीनों आधार जो गायत्री मंत्र को–त्रिपदा को सफल और सार्थक बनाने में समर्थ रहे हैं, वही आपके जीवन में भी आयें और आप वे लाभ उठायें जो प्राचीन काल के उपासकों ने उठाया था और हमने भी । आज की बात समाप्त । ॐ शान्ति : ✱

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

वसंत पर्व १९८१ (८ फरवरी) को दिया गया उद्बोधन

परम पूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

गायत्री मंत्र हमारे साथ –

"ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।।"

देवियो ! भाइयो !! सामान्य सिद्धान्त का जिक्र मैं कल कर रहा था आपसे । अपने बाहुबल से, पुरुषार्थ से और पराक्रम से बहुत आदमियों ने भौतिक जीवन में और आध्यात्मिक जीवन में बहुत कुछ पाया है । यह मोटा सिद्धान्त आप सबको मालूम है । जिन लोगों ने उन्नतियाँ की हैं दुनिया में, अपने पराक्रम और पुरुषार्थ किये हैं, वे धन भी कमाये हैं, विज्ञान की शोधें भी की हैं और जीवन में आगे भी बढ़े हैं । आध्यात्मिक जीवन में बहुतों ने पुरुषार्थ किया है । महर्षि विश्वामित्र का नाम आपको मालूम होगा । जब उन्होंने गुरु वशिष्ठ से कहा कि हमको राजर्षि नहीं रहना है, ऋषि बनना है, तो उनने कहा कि फिर तप करना चाहिए । विश्वामित्र ने फिर तप किया । लम्बे समय तक महर्षि दधीचि ने तप किया । यह क्या है ? यह प्रयोग और पुरुषार्थ है । आपको मालूम नहीं है, तप करने और पुरुषार्थ करने से आदमी भौतिक जीवन में और आध्यात्मिक जीवन में उन्नति करते रहे हैं । इस सिद्धान्त में दो राय नहीं, एक राय है । ये क्या बात कर रहे हैं ? मैं पराक्रम और पुरुषार्थ की बात कह रहा हूँ । इनका महत्व आपकी दृष्टि में कम न होने पावे, इसलिए इस बात को बता रहा हूँ; पर यहाँ तो मुझे एक नई बात कहनी थी अनुदान की । अनुदान, जो कभी–कभी मिलते हैं और किसी खास मकसद के लिए मिलते हैं, उसकी बाबत कहनी थी । पुराने जमाने की बात बताऊँ ? अच्छा चलिए बताता हूँ । अर्जुन हार गया था दुर्योधन से और मारे–मारे फिर रहा था । पांडवों में से कोई नचकैया, कोई रसोइया बन रहे थे । थक कर बिलकुल निढाल हो गये थे । पराक्रम चुक चुका था, तब भगवान श्रीकृष्ण ने कहा–आप महाभारत में काम कीजिए । हमारे अनुदान आपको मिलेंगे । अर्जुन ने केवल गाण्डीव पर रख कर तीर चलाये थे । श्रेय उन्हीं को मिल गया । भगवान ने फतह उन्हीं की करायी । यह मैं अनुदान की बात कह रहा हूँ, भगवान कृष्ण के अनुदान की और बताऊँ ? अच्छा और बताता हूँ । सुदामा जी को पैसे की आवश्यकता पड़ी । किस काम के लिए ? सुदामा जी बड़े गरीब थे, और भिखारी थे, नंगे थे, भूखे थे । खबरदार ! सुदामा जी की शान में ऐसी बात कही, तो मैं कान उखाड़ लूँगा । ब्राह्मण की बेइज्जती मत कीजिए, संत की बेइज्जती मत कीजिए, अध्यात्म की बेइज्जती मत कीजिए । मित्रो ! बड़े शानदार आदमी थे सुदामा जी और शानदार काम के लिए–विश्वविद्यालय चलाने के लिए मदद माँगने गये थे । तब भगवान ने अपनी सारी की सारी कमाई द्वारिका से उठा करके पोरबन्दर ट्रांसफर कर दी थी । पाई–पाई सुदामा जी के सुपुर्द कर दिया था । यह श्रीकृष्ण की कथा कह रहा था मैं आपसे और राम की कहूँ । राम की कथा कहता हूँ । एक आदमी का नाम था–विभीषण । शरीर की दृष्टि से बहुत कमजोर था; लेकिन रामचन्द्र जी ने उसे रातोंरात मालदार बना दिया, लंका का मालिक बना दिया । यह कैसे हो गया ? भगवान का अनुदान था । तो और किसको दिया था ? हनुमान जी को दिया था । हनुमान जी की ताकत स्वयं की उपार्जित थी ? नहीं, स्वयं की उपार्जित नहीं थी । स्वयं की रही होती, तो उन्होंने सुग्रीव की मदद जरूर की होती । सुग्रीव की मदद करने में वे बिलकुल असफल थे । फिर क्या करने लगे ? पहाड़ उठाने लगे, समुद्र छलाँगने लगे । एक लाख पूत सवा लाख नाती–दो–दो लाख आदमियों से–दैत्यों से–जाइण्टों से– राक्षसों से अकेले मुकाबला करने लगे । राक्षस कैसे होते हैं ? दो–दो योजन मूँछें ठानी । दो–दो योजन लम्बी उनकी मूँछें थीं । ऐसे जबरदस्त राक्षसों से लड़ने के लिए आमादा हो गये, हनुमान जी । कैसे हो गये ? अनुदान था ।

आप समझिए ऊँचे सिद्धान्तों को । आप तो समझना भी नहीं चाहते । श्रीकृष्ण भगवान और रामचन्द्र जी ने हर एक को किसी खास कारज के लिए अनुदान दिये थे । नहीं साहब, मजा उड़ाने के लिए दिया था, ऐय्याशी के लिए दिया था । खबरदार !

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

भगवान के बारे में ऐसी बेइज्जती की बातें कहीं तो । बेकार की बात मत कहिए । मित्रो ! अभी पुरानी बात बतायी मैंने । अब नई बताता हूँ । बिनोवा को गाँधीजी के अनुदान मिले थे । बिनोवा अपने आप उठे थे ? नहीं, अपने आप सन्त रह सकते थे और अपनी गीता का प्रचार करते रह सकते थे; पर दूसरा गाँधी, बापू जी ने बनाया था उन्हें और जिसने वामन अवतार के तरीके से अपने डगों से सारे हिन्दुस्तान को नाप डाला और सैकड़ों-एकड़ जमीनें मिलती चली गईं और किसको मिले गाँधीजी के अनुदान ? करमसद गाँव का एक पटेल मामूली वकालत करता था । उसको सरदार पटेल बना दिया-हिन्दुस्तान का गृहमंत्री बना दिया था ।

मित्रो ! मैं अनुदान की बात कर रहा था । चलिए अभी और बताता हूँ । पंडित नेहरू ने लाल बहादुर शास्त्री को मिनिस्टर बना दिया और प्रधानमंत्री बना दिया था । लाल बहादुर शास्त्री की कोई हैसियत थी ? नहीं कोई हैसियत नहीं थी । यह क्या दिया गया था-अनुदान । नेहरू जी का अनुदान । उन्होंने हीरालाल शास्त्री. जो कि एक कन्या विद्यालय चलाते थे, राजस्थान का मुख्यमंत्री बना दिया था । ये क्या है ? ये अनुदानों की बात कह रहा था । अनुदानों का जिक्र अक्सर मैं अपने प्रवचनों में करता रहा हूँ । उसमें से एक और कड़ी मैं हमेशा अपनी शामिल करता रहा हूँ । हमने अनुदानों से पाया है । आपने तो हमारी शक्ल देखी भी नहीं है अभी तक । आपने तो हमारा एक काम देखा है । गुरुजी कितने बड़े हैं ? जितना बड़ा हमारा काम । आपकी दृष्टि में हमारा समग्र रूप नहीं आ सकता; क्योंकि आपकी आँखें बहुत छोटी हैं । आप हमारी औकात, इज्जत, ताकत और हस्ती का इतना मूल्यांकन करते हैं कि हमारी मनोकामना पूरी की कि नहीं । आपके बेटा हुआ कि नहीं हुआ । बेटा हो गया, तो गुरुजी चमत्कारी सिद्ध पुरुष और आपके बेटा नहीं हुआ तो सौ गाली । आपकी अक्ल, आपकी बुद्धि, आपकी दृष्टि ऐसी छोटी जैसी मच्छर की छोटी आँख होती है । आप हमारी हैसियत और व्यतित्व को इतना छोटा मानते हैं; जितना हमारे शरीर में कान की लम्बाई-चौड़ाई है । उतने को आप परखते हैं, उतने को सोचते हैं, उतने को देखते हैं । लेकिन हमारा व्यक्तित्व बहुत बड़ा है । कितना बड़ा है ? आप कल्पना नहीं कर सकते हैं । बीस साल निकल जाने दीजिए । जो जिन्दा रहें, जरा देखना गुरुजी किस आदमी का नाम था । हम आपकी दृष्टि में छोटे हो सकते हैं; लेकिन संसार के लिए हम बहुत बड़े आदमी हैं । जरा अगली वाली हिस्ट्री को पढ़ना । अगली वाली पीढ़ियों की आँख से हमको देखना । सारी मनुष्य जाति के इतिहास में हम एक कमाल करने जा रहे हैं । तो क्या चीज हैं ये ? अनुदान हैं हमारे । हमको बहुत शानदार अनुदान मिले हैं, ऐसे कि सारे इंसान के लिए, इंसानी समाज के लिए, इंसानी भविष्य के लिए एक ऐसा नया इतिहास लिखेंगे, जिसे कि लोग याद करते रह जायेंगे, और अचम्भे में रह जायेंगे । यह अनुदान में मिला है हमको ।

मित्रो ! मैं अनुदान की बाबत बता रहा था कि छोटे कामों के लिए अब ये दिन नहीं हैं । यदि आप हमारे पास बैठें और हमारे व्यक्तिगत जीवन में प्रवेश करें, तो आपको पता चलेगा कि आदमी का एक-एक सेकेण्ड कितना कीमती है । इसीलिए एक-एक सेकेण्ड का इन दिनों हमको सारे विश्व के लिए-सारे विश्व की सम्पदा के रूप में इस्तेमाल करना पड़ रहा है । ऐसे समय में आपका ये अनुदान सत्र हमने खास मकसद के लिए लगाया है कि आपको कुछ कीमती-सी चीजें दे दें । कभी आवश्यकता होती है, तो इसी तरह के अनुदान दिये जाते हैं । आवश्यकता पड़ी थी रामकृष्ण परमहंस को और वे इस बात की तलाश में थे कि कोई ऐसा आदमी मिल जाय, तब उसको अनुदान दे दें । बहुत मुश्किल से एक आदमी दिखाई पड़ा, जिसका नाम था विवेकानन्द । रामकृष्ण उनके पास स्वयं गये थे ? जिसको दिया जाता है, वो वजनदार आदमी होना चाहिए । अनुदान देने के लिए इन दिनों देवता व्याकुल हो रहे हैं । पहले भी व्याकुल थे; इन दिनों तो बहुत ही व्याकुल हो रहे हैं । व्याकुल देवताओं के अनुग्रह प्राप्त करने के लिए कुछ आपको काम करना है, वही बात कहनी है आपसे । हमारा गुरु व्याकुल हो रहा था और हमारे घर आया था । देवता आपके भी घर आयेगा । आप यकीन रखिये; पर देवताओं को तो आप पागल समझते हैं । पागल मत कहिए । भगवान के साथ में व्यक्तिगत तालमेल मत भिड़ाइये । भगवान व्यक्ति नहीं हैं । वह एक कायदे का नाम है-भगवान एक कानून का नाम है-भगवान एक नियम का नाम है-मर्यादा का नाम है । उसमें किसी व्यक्ति के साथ में व्यक्तिगत रूप से न तो नाखुशी की गुंजायश है और न खुशी की । न किसी के साथ में भगवान की रियायत की गुंजायश है और न भगवान के यहाँ किसी के प्रति नाराजी की गुंजायश है । नाराजी की गुंजायश रही होती, तो चाइना वालों को, रशिया वालों को, जो ईश्वर पर विश्वास नहीं करते और न केवल विश्वास नहीं करते, बल्कि गाली-गलौज भी देते रहते हैं, अब तक भगवान जी ने कचूमर निकाल दिया होता ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

तो मैं क्या कह रहा था ? मैं ये कहने वाला था कि अनुदान सत्र, जिसमें हमने आपको बुलाया है, उसकी तीन शर्तें हैं–तीन कसौटियाँ हैं । एक कसौटी ये है, जिसका अर्थ होता है–ईश्वर का विश्वास–पात्रता का विकास । इसका दूसरा नाम क्या है ? उपासना । उपासना का एक बहुत छोटा अंग है– भजन । उपासना समग्र फिलॉसफी है । उपासना किसे कहते हैं ? भगवान के नजदीक बैठना । भगवान के नजदीक बैठने का अर्थ होता है उसकी विशेषताओं को ग्रहण करना, मसलन आग के आप नजदीक बैठते हैं, तो आग की विशेषताओं को ग्रहण करते हैं । अपनी ठंडक और नमी दोनों को मिटा लेते हैं । गर्मी आपके अन्दर चली जाती है और ठंडक दूर हो जाती है । उपासना इसी को कहते हैं । उपासना का अर्थ यही होता है कि आप सिद्धान्तों के लिए अपने आपको समर्पित कर दें । श्रद्धा इसी का नाम है । समर्पण इसी का नाम है । गीता में भगवान ने बार–बार यही कहा है–"मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धिं निवेशय ।" अरे अभागे ! अपनी अक्ल को हमारे पास ला–अपनी बद्धि को–मनोकामनाओं को हमारे पास ला । आपको उपासना के लिए यही करना चाहिए । हमने भी यही किया और आपको भी यही करना चाहिए । हमने अपनी कठपुतली के सारे धागे अपने बॉस की हथेलियों में बाँध दिये हैं और वही वहाँ से नचाते रहते हैं । हमारी भक्ति इसी बात पर है कि हमने हर चीज को धागा से बाँध दिया है और ये कहा है कि आप हुक्म दीजिये । आपके हुक्म पर हम चलेंगे और आप तो जाने क्या कहते हैं ? ये कहते हैं भगवान से कि आप हमारे हुक्म पर चलिए । अपनी वासनाओं के लिए, अपनी तृष्णाओं के लिए, अपने घटियापन के लिए और अपने कमीनेपन की पूर्ति के लिए आप तो ये कहते हैं भगवान से अपने सिद्धान्तों का सफाया कर दीजिए–अपने कायदों का सफाया कर दीजिए और हमको अनड्यू एडवाण्टेज देना शुरू कर दीजिए । भगवान की शान को ध्यान में रखिए । भक्ति के नाम पर ये मत कहिए । हमारी कोई मनोकामना नहीं है । हमारी एक ही मनोकामना है–"मालिक तेरी रजा रहे और तू ही तू रहे, बाकी न मैं रहूँ, न मेरी आरजू रहे ।" यह भक्ति है । अगर यह भक्ति आप के पास आयी, तो आप देख लेना, भगवान आपके पास आयेंगे ।

यह उपासना के बारे में बता रहा था । मित्रो ! उपासना के अलावा एक और काम आपको पात्रता विकास के लिए करना पड़ेगा, उसका नाम है–साधना । साधना किसे कहते हैं ? आदतें एक, मान्यताएँ दो और आकांक्षाएँ तीन–इन तीनों को उच्चस्तरीय बनाना पड़ेगा । यही साधना है । जरा ऊँचे स्तर पर उठ के तो देखिए । जिस जमीन पर आप रहते हैं, वहाँ पर चलना बहुत मुश्किल है । एक घंटे में आप तीन मील चलेंगे; लेकिन जरा ऊँचे तो उठिए, फिर आप देखिए एक घंटे में छः सौ मील की रफ्तार से जाते हैं । बोइंग जहाज छः सौ मील की रफ्तार से चलते हैं, और जरा ऊँचे उठिए । जो उपग्रह पृथ्वी के चक्कर काटते हैं, उन चक्करों को देखिए । वे ढाई हजार मील प्रति मिनट के हिसाब से चलते हैं । आप तो वहाँ पड़े हुए हैं, जहाँ सड़न–कीचड़ भरी पड़ी है; जिसको जमीन कहते हैं; जहाँ से न चलना संभव है, न ऊँचा उठना संभव है, न जिन्दगी संभव है । लेकिन अगर आप अपने व्यक्तित्व को परिष्कृत कर लेते, तब क्या कहूँ आपसे–आप बहुत शानदार आदमी होते । तब मैं आपसे कहता–साधक । अगर आपने अपने व्यक्तित्व को परिष्कृत किया होता, तो मैं यकीन दिलाता हूँ आपको, आपका आकर्षक व्यक्तित्व देवताओं की कृपा को–भगवान की कृपा को–सिद्धियों को–अनुदानों को खींच के ले आता । आप में से हर आदमी में कबीर के बराबर, रैदास के बराबर, विवेकानन्द के बराबर योग्यता है; पर हम क्या करें । ये घटियापन तो चैन नहीं लेने देता । खा गया ये घटियापन, आपके पैसे को, आपकी अक्ल को, आपके श्रम को–हर चीज को खा लिया । साधना किसे कहते हैं ? अपने घटियापन को दूर करने कराने के लिए जद्दोजहद करना–लड़ाई करना । तपश्चर्या इसी का नाम है । उपासना इसी का नाम है । अनुष्टान इसी का नाम है । जप इसी का नाम है, भगवान के ऊपर डोरे डालने का नाम नहीं है; खुशामदें करने का नाम नहीं है ।

आध्यात्मिक उन्नति के लिए पात्रता की दो शर्तों के अतिरिक्त एक तीसरी कसौटी भी है, उसका नाम है–आराधना । भगवान के ऊपर असर डालने वाली यही एक चीज है, दूसरी कोई नहीं । उपासना, साधना स्वयं के लिए और भगवान को प्रभावित करने के लिए अन्तिम चरण रह जाता है–आराधना । आराधना का अर्थ है–लोक सेवा, जनहित, जनकल्याण, समाजसेवा । अपने समय में से, अपने श्रम में से, अपनी मेहनत में से और पैसों में से भगवान का काम कीजिए । भगवान का क्या काम है ? भगवान का एक काम है–उसकी दुनिया को सुसंस्कृत और समुन्नत बनाना; उसकी सभ्यता और संस्कृति को बढ़ाना । सभ्यता किसे

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

कहते हैं ? सभ्यता कहते हैं–लोगों की चाल–चलन में शालीनता का समावेश और संस्कृति उसे कहा गया है, जिसको उदारता कहते हैं, सेवा कहते हैं, करुणा कहते हैं, परोपकार, लोकमंगल और दान कहते हैं । आप भगवान की आराधना कीजिए, ताकि भगवान आपकी आराधना करें । हमने अपने बॉस की आराधना की है । उसने हमारी आराधना की है । हमने अपने आपको उनके सुपुर्द कर दिया है, उन्होंने अपने आपको हमारे सुपुर्द कर दिया है । ये कैसे ? वाणी से नहीं, गपबाजी से नहीं, ख्वाबों से और कल्पनाओं से नहीं । कार्य से–ऊँचे उद्देश्यों के लिए, देश के लिए, धर्म के लिए समर्पण से

मित्रो ! यह तीन काम अगर आप कर सकते हों–पात्रता विकास के लिए कुछ कदम बढ़ा सकते हों, तो उसी कदम के नाप–तौल के हिसाब से, उसी अनुपात से आपको वो अनुदान मिलेंगे, जिसे आप हजार वर्ष तक उपासना करने के बाद भी नहीं पा सकते थे; पर इन दिनों अनुदान से पा सकते हैं । कल हमने आपको अनुदानों की एक किश्त के बारे में जानकारी करायी थी, कि प्राणधारा का संचार प्राप्त करने के लिए दैवी शक्तियाँ आपकी क्या सहायता कर सकती हैं । उसके तीन लाभ हैं–एक लाभ है उसका–जीवनी शक्ति, दूसरा लाभ है उसका–साहसिकता, तीसरा लाभ है उसका–प्रतिभा । ये तीन प्रत्यक्ष सिद्धियाँ हैं । चमत्कारी सिद्धियों की बात आप मत पूछिए । उसे यदि हम आपको बता भी दें, और करा भी दें, तो मारीच के तरीके से, भस्मासुर के तरीके से, कुंभकरण के तरीके से, रावण, हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष के तरीके से तबाही के मुँह में जाना पड़ेगा । उनको तो नहीं बताते; लेकिन आपके व्यावहारिक जीवन में तीन चीजें आ सकती हैं । जीवनी शक्ति एक, हिम्मत दो, प्रतिभा तीन । जीवनी शक्ति उसे कहते हैं जिसमें आदमी अपने शरीर और जीवट को अक्षुण्ण रख सकता है, मौत से लड़ सकता है, बीमारियों से लड़ सकता है । ये क्या हैं ? ये प्राणधारा है, जो हमको भी मिली हुई है । ७१ वर्ष की उम्र में हम ५७ वर्ष के आदमी के तरीके से जिन्दा हैं । हमने कामधेनु का दूध पिया है और हमारे अन्दर प्राणधारा है, जीवट है, इसलिए श्रम करने की शक्ति, बीमार न होने की शक्ति पूरी की पूरी मात्रा में हमारे पास है, आप सुनते भी नहीं हैं ।

प्राणधारा का दूसरा फायदा – साहसिकता है । साहसिकता हिम्मत को कहते हैं, जिसके सहारे नेपोलियन जैसा दो कौड़ी का आदमी कहाँ से कहाँ जा पहुँचा था ; कोलम्बस जैसा दो कौड़ी का आदमी अमेरिका जा पहुँचा था और सारे यूरोपियनों द्वारा अमेरिका पर कब्जा कराने के लिए उतना दूर जाने में समर्थ हो गया था । ये हिम्मत है । हिम्मत तो आप में है भी नहीं । हिम्मत के नाम पर तो जनाजा निकल गया है । रोज संकल्प लेते हैं–बीड़ी नहीं पियेंगे, सिगरेट नहीं पियेंगे, फिर क्या बात हो गई ? संकल्प शक्ति का आभाव । अच्छे कामों के लिए एक इंच आपकी संकल्प शक्ति काम नहीं देती है । श्रेष्ठ कामों के लिए संकल्प करना भगवान का अनुदान है । खराब कामों के लिए तो साहस हर एक में होता है । चोरी के लिए, डकैती के लिए, बेईमानी के लिए, बदमाशी के लिए साहस हर एक में होता है; पर ऊँचा उठाने वाले साहस कभी किसी–किसी में पाये जाते हैं और जिनमें पाये जाते हैं, वे निहाल हो जाते हैं ।

तीसरी चीज का नाम है–प्रतिभा । प्रतिभा किसे कहते हैं ? जिसमें आदमी हावी हो जाता है, दूसरों पर । गाँधी जी सारे समाज पर हावी हो गये थे, बुद्ध सारे के सारे जमाने पर हावी हो गये थे । हावी होने वाली क्षमता का नाम है–प्रतिभा । प्रतिभा के अभाव में आपकी औरत तक कहना नहीं मानती । आपके बच्चे, आपके पड़ोसी, आपके सबोर्डिनेट आपका कहना नहीं मानते; लेकिन अगर आपके पास वो सामर्थ्य रही होती, तो दूसरे आदमी आपकी बात को मानने के लिए मजबूर होते ।

शरीर जल से, मन सत्य से, बुद्धि ज्ञान से और आत्मा धर्म से पवित्र बनते हैं ।

मित्रो ! हम इन्हीं वस्तुओं के आधार पर आगे बढ़े हैं । आपको भी प्राणसंचार धारा के लिए ये चीजें अनुदान में–अनुदान सत्र में हम देने को तैयार हैं । शर्त एक ही है कि आप अपने व्यक्तित्व को पात्रता के उपयुक्त बनाइए । ये समय बिल्कुल इसके लायक है कि आप ये फायदा उठा सकते हैं । आज हम आपको दूसरी किश्त सायंकाल को बतायेंगे कि सूक्ष्म शरीर में क्या–क्या चीजें अनुदान के रूप में हिमालय से मिल सकती हैं । कल तो वसंत पंचमी है । अगले दिन हम वो बतायेंगे कि कारण शरीर में विद्यमान ऋद्धि–सिद्धियों का जखीरा किस तरीके से प्राप्त कर सकते हैं । यह तीनों अनुदान आपके लिए बिल्कुल सुरक्षित हैं; शानदार हैं । ऐसे अनुदान हैं, जो आज की स्थिति की तुलना में आपको हजारों– लाखों गुना सामर्थ्यवान बना सकते हैं । हमारी बात समाप्त । ॐ शान्ति । ✷

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परम पूज्य गुरुदेव की अमृत-वाणी

इस अंक में विदेश प्रवास के समय दक्षिण अफ्रीका में केन्या की राजधानी 'मोम्बासा' में १० दिसम्बर १९७२ को परिजनों के मध्य परम पूज्य गुरुदेव द्वारा दिया गया प्रवचन दिया जा रहा है ।

गायत्री मंत्र जिन-जिन लोगों को याद हो, कृपा कर मेरे साथ-साथ बोलें-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य
धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

भवानीशंकरौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाःस्वान्तस्थमीश्वरम् ।।

गोस्वामी तुलसी दास जी जब रामायण का निर्माण करने लगे तो उनके मनमें एक विचार आया कि इतना बड़ा ग्रन्थ-जिसके जहाज पर बिठा करके संसार के प्राणियों का उद्धार किया जा सकता है, उसे बनाने के लिए मुझे क्या करना चाहिए ? इसके लिए किस शक्ति की सहायता लेनी चाहिए ? उन्होंने यह कहा कि भवानी-शंकर की वन्दना करनी चाहिए और उनकी सहायता लेनी चाहिए । उनकी शक्ति के बिना इतना बड़ा रामचरित मानस-जिस पर बिठा करके अनेक मनुष्यों को भवसागर से पार किया जा सकता है, कैसे सम्भव होगा ? उन्होंने भवानी और शंकर की वन्दना की जैसे कि सायंकाल आरती के समय हमने और आप लोगों ने भगवान शंकर और पार्वती की वन्दना की । पश्चात् उनके जी में एक और विचार आया कि आखिर भगवान शंकर हैं क्या ? शक्ति कहाँ से आ जाती है ? क्यों आ जाती है ? उद्धार कैसे हो सकता है । ऐसे अनेक प्रश्न तुलसी दास जी के मन में उत्पन्न हुए । उनका समाधान भी उसी श्लोक में हुआ जिसका कि मैंने आप लोगों के सम्मुख विवेचन किया-"भवानी शंकरौ वन्दे ' भवानी और शंकर की हम वन्दना करते हैं ।

ये कौन हैं ? 'श्रद्धा विश्वास रूपिणौ ' अर्थात् श्रद्धा का नाम पार्वती और विश्वास का नाम शंकर । श्रद्धा और विश्वास-इन दोनों का नाम ही शंकर-पार्वती है । इनका प्रतीक विग्रह, मूर्ति हम मन्दिरों में स्थापित करते हैं । इनके चरणों पर अपना मस्तक झुकाते हैं, जल चढ़ाते हैं, बेल-पत्र चढ़ाते हैं, आरती करते हैं । यह सब क्रिया-कृत्य हम करते हैं, लेकिन मूलतः शंकर क्या हैं ? श्रद्धा और विश्वास ।-याभ्यां विना न पश्यन्ति "-जिनकी पूजा किये बिना कोई सिद्ध पुरुष भी भगवान को प्राप्त नहीं कर सकते । भवानी शंकर की इस महत्ता और माहात्म्य पर मैं विचार करता रहा तब एक और पौराणिक कथा मेरे सामने आयी ।

पौराणिक कथा आती है कि एक संकट का समय था जब भगवान परशुराम को यह मालूम पड़ा कि सब जगह अन्याय, अत्याचार फैल गया, अनाचार फैल गया । इसके निवारण के लिए क्या करना चाहिए ? परशुराम जी उत्तरकाशी गये और वहाँ भगवान शिव का तप करने लगे । तप करने के पश्चात् भगवान शंकर ने उन्हें एक परशु दिया और कहा-अनीति का-अन्याय का और अत्याचार का इस संसार में से उच्छेदन किया जा सकता है और आपको करना चाहिए । भगवान शंकर की ऐसी महत्ता और ऐसी शक्ति का वर्णन पुराणों में पाया गया है, पर आज हम देखते हैं कि वह शक्ति कुंठित कैसे हो गयी ? हम शंकर की पूजा करते हैं, पर समस्याओं से घिरे हुए क्यों हैं ? शंकर की शक्ति वरदान हो करके सामने क्यों नहीं आती ? शंकर के भक्त होते हुए भी हम किस तरीके से पिछड़ते और पददलित होते चले जा रहे हैं ? भगवान हमारी कब सहायता करेंगे ? यह विचार मैं देर तक करता रहा ।

अठारह पुराणों का अनुवाद मैंने संस्कृत से हिन्दी में किया है । उसमें से शिवपुराण की एक कथा मुझे याद आयी, जिसने हमारी शंका का समाधान कर दिया कि भगवान शंकर-सहायता क्यों नहीं करते हमारी ? क्यों नहीं उनकी शक्ति का लाभ मिलता ? क्यों उनके चमत्कार हमें दिखाई नहीं पड़ते ? जब कि शंकर भगवान के भक्त जिन्होंने क्या से क्या अनुदान प्राप्त किये हैं, जो भी तप करने के लिए खड़ा हो गया वह न जाने क्या से क्या प्राप्त करता चला गया । हम और आप जैसे शिव-उपासक उस शक्ति को प्राप्त न कर सकते हों-सो ऐसी बात नहीं, पर कहीं न कहीं चूक रह जाती है-कहीं न कहीं भूल रह जाती है । उस भूल को हमें निकालना ही पड़ेगा और निकालना ही चाहिए । इसके बिना अध्यात्म का पूरा लाभ नहीं मिल सकेगा और दुनिया के सामने हम सिर ऊँचा उठा कर यह नहीं कह सकेंगे कि हम ऐसी शक्ति के उपासक हैं जो अपनी उँगली के इशारे से सारी दुनिया को हिला सकती है । तो गलती और चूक कहाँ हो गयी ? चूक और गलती वहाँ हो गयी जहाँ भगवान शिव और पार्वती का असली स्वरूप हमको समझ में नहीं आया । उसके पीछे जो फिलॉसफी है

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

वह समझ में नहीं आयी, मात्र उसका बाहरी स्वरूप समझ में आ गया ।

भगवान शंकर का भी एक कलेवर है और एक प्राण एक बहिरंग स्वरूप है और एक अंतरंग स्वरूप । जब हम दोनों को मिला देंगे तब पॉजिटिव और निगेटिव दोनों तारों को मिला करके जिस तरीके से स्पार्क उठते हैं और करेण्ट चालू हो जाता है, उसी प्रकार से भगवान का करेण्ट चालू हो जायेगा । बहिरंग रूप के बारे में आप जानते हैं और जिस तक आप सीमित हो गये हैं, वह कलेवर है जो इस मन्दिर में बैठा हुआ है । जिसके चरणों में हम मस्तक झुकाते हैं, जल चढ़ाते हैं, पूजा करते हैं, प्रार्थना करते हैं, आरती उतारते हैं और जयजयकार करते हैं—वह बहिरंग कलेवर है जिसकी भी सख्त जरूरत है, परन्तु यही सब कुछ नहीं है । हमें अंतरंग रूप के बारे में भी जानना चाहिए ।

भगवान शंकर का अंतरंग रूप क्या है ? उसकी फिलासफी क्या है ? भगवान शंकर का रूप गोल बना हुआ है । गोल क्या है—ग्लोब । यह सारा विश्व ही तो भगवान है । अगर विश्व को इस रूप में मानें तो हम उस अध्यात्म के मूल में चले जायेंगे जो भगवान राम और कृष्ण ने अपने भक्तों को दिखाया था । गीता के अनुसार जब अर्जुन मोह में डूबा हुआ था तब भगवान ने अपना विराट् रूप दिखाया और कहा—यह सारा विश्व—ब्रह्माण्ड जो कुछ भी है—मेरा ही रूप है । एक दिन यशोदा कृष्ण को धमका रहीं थीं कि तैंने मिट्टी खाई है । वे बोले—नहीं— मैंने मिट्टी नहीं खाई और उन्होंने मुँह खोलकर सारा विश्व—ब्रह्माण्ड दिखाया और कहा—यह मेरा असली रूप है । भगवान राम ने भी यही कहा था । रामायण में वर्णन आता है कि माता—कौशल्या और कागभुशुंडि जी को उनने अपना विराट् रूप दिखाया था । इसका मतलब यह है कि हमें सारे विश्व को भगवान की विभूति—भगवान का स्वरूप मानकर चलना चाहिए । शंकर की गोल पिण्डी उसी का छोटा सा स्वरूप है जो बताता है कि यह विश्व—ब्रह्माण्ड गोल है, एटम गोल है धरती माता—विश्वमाता गोल है । इसको हम भगवान का स्वरूप मानें और विश्व के साथ वह व्यवहार करें जो हम अपने लिए चाहते हैं दूसरों से, तो मजा आ जाय । फिर हमारी शक्ति, हमारा ज्ञान, हमारी क्षमता वह हो जाय जो शंकर भक्तों की होनी चाहिए ।

भगवान शंकर के स्वरूप का कैसा—कैसा सुन्दर चित्रण मिलता है । शिवजी की जटाओं में से गंगा प्रवाहित हो रही है । गंगा का मतलब है—ज्ञान की गंगा । पानी बालों में से प्रवाहित नहीं होता—यदि होगा तो आदमी डूब जायेगा , पैदल नहीं चल सकेगा । इसका मतलब यह है कि शंकर—भक्त के मस्तिष्क में से ज्ञान की गंगा प्रवाहित होनी चाहिए उसकी विचारधारा उच्चकोटि की और उच्चस्तरीय होनी चाहिए । घटिया किस्म के आदमी जिस तरीके से विचार करते हैं, जिनकी जिन्दगी का मकसद केवल एक ही है कि किसी तरीके से पेट भरना चाहिए और औलाद पैदा करनी चाहिए, शंकर जी के भक्त को उस तरह के विचार करने वाला नहीं होना चाहिए । जो कोई ऊँची बात सोच नहीं सकते, देश की, समाज की, धर्म की, लोक—परलोक की बात, कर्तव्य—फर्ज की बात जिनकी समझ में नहीं आती—उनको इन्सान नहीं हैवान कहेंगे और ज्ञान की गंगा जिन लोगों के मस्तिष्क में से प्रवाहित होती है उनका नाम शंकर का भक्त होता है । हमारे और आपके मस्तिष्क में से भी ज्ञान की गंगा बहनी चाहिए जो हमारी आत्मा को शान्ति और शीतलता दे सकती है और पड़ोस के लोगों को, समीपवर्ती लोगों को उसमें स्नान कराकर पवित्र बना सकती है । यदि हमारा मस्तिष्क ऐसा व्यवहार करता हो तो जानना चाहिए कि शंकर जी की छवि आपने अपने घरों में टाँग रखी है उसके मतलब को—उसकी फिलासफी को जान लिया और समझ लिया ।

भगवान शंकर के मस्तक के ऊपर चन्द्रमा लगा हुआ है । चन्द्रमा शान्ति का प्रतीक है जो बताता है कि हमारे मस्तिष्क को संतुलित होना चाहिए, ठंडा होना चाहिए, बलिष्ठ होना चाहिए हम पर मुसीबतें आती हैं, संकट के कठिनाई के दिन आते हैं । हर हालत में हमें अपनी हिम्मत बना करके रखनी चाहिए कि हम हर मुसीबत का सामना करेंगे । इनसानों ने बड़ी—बड़ी मुसीबतों का सामना किया है । जो घबरा जाते हैं उनका मस्तिष्क संतुलित नहीं रहता—गर्म हो जाता है । जिस व्यक्ति का दिमाग ठंडा है वही सही ढंग से सोच सकता है और सही काम कर सकता है पर जिसका दिमाग गरम हो जाता है—असंतुलित हो जाता है, तो वह काम करता है जो नहीं करना चाहिए और वह सोचता है जो नहीं सोचना चाहिए । मुसीबत के वक्त आज जब घटायें चारों ओर से हमारी ओर घुमड़ती हुई आ रही हैं, तब सबसे जरूरी बात है हम शंकर भगवान के चरणों में जायें । आरती उतारने के बाद मस्तक झुकायें और यह कहें कि आपके मस्तक पर शान्ति का प्रतीक, संतुलन का प्रतीक, विभेद का प्रतीक चन्द्रमा लटक रहा है । क्या आप हमको धीरज देंगे नहीं ? संतुलन देंगे नहीं ? क्या शान्ति नहीं देंगे ? हिम्मत नहीं देंगे ? क्या आप इतनी भी कृपा नहीं कर सकते ? अगर हमने यह प्रार्थना की होती तो मजा आ जाता, फिर हम शान्ति ले करके आते और शंकर जी के भक्तों के तरीके से रहते ।

शंकर भगवान के गले में पड़े हुए हैं काले साँप और मुण्डों की माला । काले विषधरों का इस्तेमाल इस

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

तरीके से किया है उन्होंने कि उनके लिए वे फायदेमन्द हो गये, उपयोगी हो गये और काटने भी नहीं पाये । शंकर जी की इस शिक्षा को हर शंकर भक्त को अपनी फिलॉसफी में सम्मिलित करना ही चाहिए कि विषैले लोगों से किस तरीके से 'डील' करना चाहिए, किस तरीके से उन्हें गले से लगाना चाहिए और किस तरीके से उनसे फायदा उठाना चाहिए । शंकर जी के गले पर पड़ी मुण्डों की माला भी यह कह रही है जिस चेहरे को हम बीस बार शीशे में देखते हैं, सजाने-सँवारने के लिए रंग-पावडर पोतते हैं, वह मुण्डों की हड्डियों का टुकड़ा मात्र है । चमड़ी-जिसे ऊपर से सुनहरी चीजों से रंग दिया गया है और जिस बाहरी टुकड़े के रंग को हम देखते हैं, उसे उघाड़कर देखें तो मिलेगा कि इनसान की जो खूबसूरती है उसके पीछे सिर्फ हड्डी का टुकड़ा जमा हुआ पड़ा है । हड्डियों की मुण्डमाला की यह शिक्षा है-नसीहत है मित्रो ! जो हमको शंकर भगवान के चरणों में बैठ कर सीखनी चाहिए ।

शंकर जी का विवाह हुआ तो लोगों ने कहा कि किसी बड़े आदमी को बुलाओ-देवताओं को बुलाओ । उनने कहा नहीं, हमारी बारात में तो भूत-पलीत ही चलेंगे । रामायण का छन्द है- तनु क्षीन कोउ अति पीन पावन कोउ अपावन तनु धरे ।" शंकर जी ने भूत-पलीतों का पिछड़ों का भी ध्यान रखा और अपनी बारात में ले गये । आपको भी इनको साथ लेकर चलना है । शंकर जी के भक्तो ! अगर आप इन्हें साथ लेकर चल नहीं सकते तो फिर आपको सोचने में मुश्किल पड़ेगी-समस्याओं का सामना करना पड़ेगा और फिर जिस आनन्द में और खुशहाली में शंकर के भक्त रहते हैं, आप रह नहीं पायेंगे । जिन शंकर जी के चरणों में आप बैठे हुए हैं उनसे क्या कुछ सीखेंगे नहीं ? पूजा ही करते रहेंगे आप ! यह सब चीजें सीखने के लिए ही हैं । भगवान को कोई खास पूजा की आवश्यकता नहीं पड़ती ।

शंकर भगवान की सवारी क्या थी ? बैल वह बैल पर सवार होते हैं । बैल उसे कहते हैं जो मेहनतकश होता है-परिश्रमी होता है । जिस आदमी को मेहनत करनी आती है वह चाहे भारत में हो, इंग्लैण्ड, फ्रांस या कहीं का भी रहने वाले क्यों न हो-वह भगवान की सवारी बन सकता है । भगवान सिर्फ उनकी सहायता किया करते हैं जो अपनी सहायता आप करते हैं । बैल हमारे यहाँ शक्ति का प्रतीक है, हिम्मत का प्रतीक है । आपको हिम्मत से काम लेना पड़ेगा और अपनी मेहनत तथा पसीने के ऊपर निर्भर रहना पड़ेगा, अपनी अकल के ऊपर निर्भर रहना पड़ेगा , आपके उन्नति के द्वार और कोई नहीं खोल सकता-स्वयं खोलना होगा । भैंसे के ऊपर कौन सवार होता है-देखा आपने शनीचर । भैंसा वह होता है जो काम करने से जी चुराता है । बैल-हमेशा से शंकर जी का बड़ा प्यारा रहा है । वह उस पर सवार रहे हैं, उसको पुचकारते हैं, खिलाते-पिलाते, नहलाते-धुलाते और अच्छा रखते हैं । हमको और आपको बैल बनना चाहिए-यह शंकर जी की शिक्षा है ।

भगवान शंकर मरघट में निवास करते हैं । मरघट में क्यों रहते हैं ? इसका मतलब है कि हमें जिन्दगी के साथ मौत को भी याद रखना पड़ेगा । सब चीजें याद हैं, पर मौत को हम भूल गये । अपना फायदा-नुकसान, जवानी, खाना-पीना सब कुछ याद है, पर मौत जरा भी याद नहीं है ? मौत की बात भी अगर याद रही होती तो हमारे काम करने और सोचने के तरीके कुछ अलग तरह के रहे होते । वे ऐसे न होते जैसे कि इस समय आपके हैं । अगर यह ख्याल बना रहे कि आज हम जिंदा हैं, पर कल हमें मरना ही पड़ेगा-आज मरे हैं, पर कल जिंदा रहना ही पड़ेगा तो यह स्मृति सदा बनी रहती कि हमको क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए । हमारे लिए मरघट और घर दोनों एक ही होने चाहिए । समझना चाहिए कि आज का घर कल मरघट होने वाला है और आज का मरघट कल घर होने वाला है । आज की जिन्दगी कल मौत में बदलने वाली है तो कल की मौत नयी जिन्दगी में बदलने वाली है । मौत और जिन्दगी रात और दिन के तरीके से खेल हैं, फिर मरने के लिए डरने से क्या फायदा । यह नसीहतें हैं जो शंकर भगवान मरघट में रहकर के हमको सिखाते हैं ।

भगवान शंकर न जाने क्या-क्या सिखाते हैं । उनके शरीर को देखा जाय तो मालूम पड़ेगा कि उस पर भस्म लगी हुई है और गले में मुण्डों की माला पड़ी है । अगर सही ढंग से जीवन जीना आता होता तो हमने शंकर जी की भस्म का महत्व समझा होता । पूजा करने के बाद हम हवन करते और उसकी भस्म मस्तक पर लगाते हैं । इसका अर्थ है "भस्मान्तक ँ शरीरम्-" यह शरीर खाक होने वाला है । यह शरीर मिट्टी और धूल है जो हवा में उड़ने वाला है । जिस शरीर पर हम लोगों को अहंकार और घमंड है, वह कल लोगों के पैरों तले कुचलने वाला है और हवा के धुर्रे की तरीके से आसमान में उड़ने वाला है । शंकर भगवान की यह फिलासफी अगर हमने समझी होती तो मजा आ जाता ।

शंकर भगवान की तीन आँखे हैं । दो आँखें तो सबकी होती हैं, पर शंकर जी की तीन आँखें क्यों बनायी गयीं ? शंकर भगवान की यह वह आँख है जो मनुष्य के 'विवेक की आँख कहलाती है । यह तीसरी आँख आपके भी होती है । उन्होंने इसका इस्तेमाल तब किया जब कामदेव उन्हें हैरान करने और पाप में डुबाने के लिए चला आ रहा था । जैसे ही शंकर भगवान ने तीसरी आँख खोली, कामदेव जलकर भस्म

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

हो गया । रामायण में यह कथा आप लोगों ने पढ़ी होगी, पर यह गौर क्यों नहीं किया कि तीसरी आँख क्या है ? कामदेव जलने की बात क्या है ? जिन लोगों ने साइंस पढ़ी है –वे 'थ्री डायमेन्सन' की बात समझते हैं–लम्बाई, चौड़ाई और गहराई की बात जानते हैं । तीसरी आँख हमें गहराई में घुसने की बात सिखाती है । गहराई में हम घुसते नहीं–बाहर की चीजें देखते हैं । बस दो चीजें दिखाई देती हैं–सुख और दुख, लाभ और हानि । यही दो चीजें हैं जो दोनों आँखें दिखा सकती हैं । ये दुनियावी आँखें हैं जो भगवान ने आपको दी हैं । शरीर क्या माँगता है ? इन्द्रियाँ क्या माँगती हैं ? यह हम सबको मालूम है । एक और आँख भी है जो खुशहाली की बात दिखाती है । शंकर के हर एक भक्त को भी एक तीसरी आँख रखनी चाहिए और खोलनी चाहिए और वह है दूरगामी विवेकशीलता ।

शंकर का भक्त जब अपने भगवान के चरणों में जाता है, तब वह देखता है कि उस ठप्पे पर मुझको भी अपने को ढालना चाहिए । शंकर भगवान क्या हैं–एक ठप्पा । ठप्पा उसे कहते हैं जिसमें गीली मिट्टी चिपकाकर कुम्हार बर्तन बनाता चला जाता है । शंकर भगवान के लिए पूजा और आरती ही काफी नहीं है, बल्कि यह भी आवश्यक है कि उनका भक्त उनके जैसा हो जाय । उपासना का मतलब ही होता है, पास बैठना । पास बैठने का मतलब है–उनसे सीखना, उनके साथ सम्बन्ध जोड़ना । लकड़ी जब तक आग के समीप नहीं बैठती–अग्नि नहीं बन सकती । हमको शंकर भगवान के पास तक जाना पड़ेगा, दूर रहकर ही प्रणाम करने से काम चलने वाला नहीं है । शंकर जी से चिपक जाना चाहिए और अपने आपको ठप्पा बना लेना चाहिए । हमको अपनी तीसरी आँख खोलनी चाहिए और दूर की बात सोचनी चाहिए ।

देवताओं की शिक्षाओं और प्रेरणाओं को मूर्तमान करने के लिए अपने ही हिन्दू समाज में प्रतीक पूजा की व्यवस्था की गयी है । जितने भी देवताओं के प्रतीक हैं, उन सबके पीछे कोई न कोई संकेत भरा पड़ा है, प्रेरणायें और दिशायें भरी पड़ी हैं । अभी भगवान शंकर का उदाहरण दे रहा था मैं आपको और यह कह रहा था कि सारे विश्व का कल्याण करने वाले शंकर जी की पूजा और भक्ति के पीछे जिन सिद्धान्तों का समावेश है हमको उन्हें सीखना चाहिए था, जानना चाहिए था और अपने जीवन में उतारना चाहिए था । लेकिन हम उन सब बातों को भूलते चले गये और बिल्कुल चिन्ह पूजा तक सीमाबद्ध रह गये । विश्व कल्याण की भावना को भी हम भूल गये । जिसे शिव शब्द के अर्थों में बताया गया है । 'शिव' माने कल्याण । कल्याण को दृष्टि रखकर के हमको कदम उठाने चाहिए और हर क्रिया–कलाप एवं सोचने के तरीके का निर्माण करना चाहिए । यह शिव शब्द का अर्थ होता है । कल्याण हमारा कहाँ है ? सुख हमारा कहाँ है ? यह नहीं, वरन् कल्याण हमारा कहाँ है, कल्याण को देखने की अगर हमारी दृष्टि पैदा हो जाय तो यह कह सकते हैं कि हमने भगवान शिव के नाम का अर्थ जान लिया । "ॐ नमः शिवाय" का जप तो किया, लेकिन 'शिव' शब्द का मतलब क्यों नहीं समझा । मतलब समझना चाहिए था और तब जप करना चाहिए था, लेकिन हम मतलब को छोड़ते चले जा रहे हैं और बाह्य रूप को पकड़ते चले जा रहे हैं । इससे काम बनने वाला नहीं है ।

हिन्दू समाज के पूज्य जिनकी हम दोनों वक्त आरती उतारते हैं, जप करते हैं शिवरात्रि के दिन पूजा और उपवास करते हैं, और न जाने क्या क्या प्रार्थनायें करते कराते हैं । क्या वे भगवान शंकर हमारी कठिनाइयों का समाधान नहीं कर सकते ? क्या हमारी उन्नति में कोई सहयोग नहीं दे सकते ? भगवान को देना चाहिए, हम उनके प्यारे हैं, उपासक हैं । हम उनकी पूजा करते हैं वे बादल के तरीके से हैं । अगर पात्रता हमारी विकसित होती चली जायगी तो वह लाभ मिलते चले जायँगे जो शंकर भक्तों को मिलने चाहिए ।

तकलीफों से बचकर आदर्शों को छोड़ बैठना न बहादुरी है न बुद्धिमानी । यह तो कायरता है और है नादानी । तकलीफों में पड़े–पड़े सड़ना तो और भी बुरी बात है । उनसे जूझने में ही भलाई है ।

शंकर भगवान के स्वरूप का जैसा कि मैंने आपको निवेदन किया, इसी प्रकार से सारे पौराणिक कथानकों, सारे देवी–देवताओं में संदेश और शिक्षायें भरी पड़ी हैं । काश ! हमने उनको समझने की कोशिश की होती, तो हम प्राचीनकाल के उसी तरीके से नर रत्नों में एक रहे होते जिनको कि दुनिया वाले तैतीस करोड़ देवता कहते थे । ३३ करोड़ आदमी हिन्दुस्तान में रहते थे और उन्हीं को लोग कहते थे कि वे इनसान नहीं देवता हैं, क्योंकि उनके ऊँचे विचार और ऊँचे कर्म होते थे । वह भारत भूमि जहाँ से आप लोग पधारे हैं, वह देवताओं की भूमि थी और रहनी चाहिए । आपको यहाँ देवताओं के तरीके से आना चाहिए । देवता जहाँ कहीं भी जाते हैं वहाँ शान्ति, सौन्दर्य, प्रेम और सम्पत्ति पैदा करते हैं आप लोग जहाँ कहीं भी जायँ वहाँ आपको ऐसा ही करना चाहिए । आप लोगों ने जो अब तक मेरी बात सुनी, बहुत बहुत आभार आप सब लोगों का ।

ॐ शान्ति । ✱

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.



परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी -

ब्रह्मतेजस् के अभिवर्धन की साधना : गायत्री उपासना

चैत्र नवरात्रि पर्व पर उपासना संबंधी मार्गदर्शन हेतु परम पूज्य गुरुदेव द्वारा केन्या की राजधानी नैरोबी में ११ दिसम्बर १९७२ को दिया गया प्रवचन इस अंक में प्रस्तुत है ।

गायत्री मंत्र जिन लोगों को याद हो, कृपाकर मेरे साथ कहें–

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

नारद पुराण का अनुवाद जिन दिनों मैं कर रहा था, उन दिनों एक बड़ी सुन्दर कथा पढ़ने को आयी । कथा थी एक लड़की की । राजा अश्वघोष की एक सुन्दर लड़की थी जिसके गुण ऐसे कि जो कोई भी उसको वरण कर ले, साथ रहे–उसको धन और यश की कमी न रहे, सारी की सारी शक्तियों से विभूषित हो जाय । नाम था उसका 'सावित्री' । जब वह बड़ी होकर ब्याह लायक हो गयी तो संसार भर से माँग आने लगी कि इस लड़की का हमारे राजकुमार के साथ ब्याह कर दिया जाय । पिता विवाह की तैयारी कर रहे थे । कन्या ने एक दिन पिता से कहा, पिताजी ! लड़के जिसे चाहें उसी के यहाँ कन्या को जाना चाहिए या लड़की की भी कोई अपनी इच्छा होती है । पिता ने कहा बेटी, लड़की की भी इच्छा होती है और तेरी इच्छा के बिना मैं तेरी शादी नहीं करूँगा । सावित्री ने कहा–तो मुझे इजाजत दीजिये मैं स्वयं अपने लिए लड़का तलाश करूँगी । राजा अश्वघोष ने एक रथ मँगाया, लड़की को बिठाया और कहा बेटी तू कहीं भी जाकर अपने लिए लड़का ढूँढ़ ले ।

लड़की रवाना हो गयी । कई राज्यों में पहुँची, बड़े–बड़े राजकुमारों को देखा और सबको मना करती गयी । एक दिन एक जंगल में एक लकड़हारे को देखा जो लकड़ी सिर पर रखे कहीं जा रहा था । उसने लड़के की ओर देखा और उससे कहा–लड़के ! तेरा नाम क्या है ? लड़के ने कहा–मेरा नाम है सत्यवान ! तेरे चेहरे पर तो बड़ी चमक मालूम पड़ती है ? उसने कहा–यह जो चमक है–ब्रह्मतेजस् है । ऐसा ब्रह्मतेजस् जिसे मैंने अपनी सुख–सुविधाओं को एक कोने पर रखकर और माता–पिता सेवा में संलग्न रहकर प्राप्त किया है । लड़की ने उसको देखा, पहचाना और पहचान करके गले में वरमाला पहनादी । उसने कहा–मैं सत्यवान की तलाश में थी और तू सत्यवान मुझे मिल गया । बाद में क्या हुआ ? एक साल बाद उसकी मृत्यु हो गयी और मृत्यु को परास्त करने के लिए सावित्री यमराज के पीछे–पीछे गयी और अपने पति का प्राण छुड़ा करके लायी ।

यह कथा आप सबने जरूर सुनी है । यह किसकी कथा है ? यह कथा आप सब ब्राह्मणों की है । ब्राह्मण माने–सत्यवान् । सावित्री माने–वह माँ जिसके चरणों में हम और आप रोज मस्तक नवाते हैं । जिसको हम ब्रह्मशक्ति कहते हैं, आत्मशक्ति कहते हैं । जिसको हम वेदमाता और विश्वमाता कहते हैं । वह माता सावित्री है जो तलाश करती रहती है कि किसको वरण करूँ ? किसके साथ चलूँ ? किसका पल्ला भारी करूँ ? किसके साथ रहूँ ? उसको ऐसे आदमी की जरूरत है जो सत्यवान् हो । सत्यवान् माने ब्राह्मण । यह ब्राह्मण किसी वर्ण का नाम नहीं है, किसी कौम का नाम नहीं है, किसी जाति का नाम नहीं है । ब्राह्मण वह व्यक्ति हैं जो ब्रह्म को जानते हैं । जिन्होंने ब्रह्म के तत्व को समझ लिया है, ब्रह्म के कर्तव्यों को जान लिया–वह ब्राह्मण है । ऐसे ही ब्राह्मण व्यक्ति को वरण करने के लिए, उनके साथ होने के लिए, उनके प्राण बचाने और रक्षा करने के लिए माँ गायत्री तलाश करती रहती है कि ऐसा कौन व्यक्ति है जिसके गले में जयमाला पहना दी जाय । ऐसा व्यक्ति ब्राह्मण होना चाहिए ।

गायत्री मंत्र शक्ति का पुंज है जिसकी प्रशंसा करते हुए वेद थकते नहीं । अथर्ववेद में वेदमाता गायत्री के बारे में कहा है–

"स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयान्तां...।"

सात ऋद्धियाँ, सात विभूतियाँ, सात सिद्धियाँ दिया करती है गायत्री । किसको ? ब्राह्मण को । यह शर्त है कि ब्राह्मण के अलावा और किसी को नहीं देती । कोई भी जाय वह हर एक को मना कर देती हैं । आप लोग यही सुनते भी हैं कि गायत्री का अधिकार ब्राह्मण को है । उसे गायत्री का जप करना ही चाहिए । यहाँ ब्राह्मण का अर्थ किसी वर्ण विशेष से नहीं है । यह विश्वमाता है । यह ब्राह्मण के लिए है, क्षत्रिय के लिए है, शूद्र के लिए है, हिन्दू के लिए है, मुसलमान के लिए है, पारसी के लिए है, यहूदी के लिए है, खाली लोगों के लिए है और सबके लिए है । विश्वमाता एक की नहीं हो

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

सकती । सूरज एक का नहीं हो सकता, चन्द्रमा एक का नहीं हो सकता । हवा एक की नहीं हो सकती । पृथ्वी एक की नहीं हो सकती, भगवान एक का नहीं हो सकता और गायत्री भी एक की नहीं हो सकती । वह सबकी है । लेकिन यह कैसे कहते हैं कि वह ब्राह्मण की है ? ब्राह्मण की इसलिए कहते हैं कि शक्ति को धारण करना, शक्ति को ग्रहण करना, शक्ति से ओत-प्रोत होना हर आदमी का काम नहीं है । इसके लिए भूमि चाहिए । भूमि अगर मनुष्य के पास न हो तो वह लाभ नहीं मिल सकता जो मिलना चाहिए ।

गायत्री का लाभ प्राप्त करने के लिए क्या करना पड़ेगा ? गायत्री का जप करना पड़ेगा । पुरश्चरण करने पड़ेंगे । ध्यान करना पड़ेगा । गायत्री चालीसा का पाठ करना पड़ेगा । नवरात्रियों का अनुष्ठान करना पड़ेगा । परन्तु इतना ही काफी नहीं है । तब एक और भी काम करना पड़ेगा कि जो व्यक्ति इस शक्ति को धारण करना चाहता हो उसको अपने भीतर ब्रह्मतेजस् उत्पन्न करना पड़ेगा । कोई जमाना था जब इस देश में ब्रह्मतेजस् जगमगाता था । क्षत्रिय विश्वामित्र, वन में गये । सेना सहित भूखे एक तालाब के किनारे बैठे थे । गुरु वशिष्ठ को मालूम पड़ा तो वे उनके पास गये और कहा-राजन् हमारे यहाँ अतिथि सत्कार स्वीकार कीजिए । उन्होंने कहा-महाराज । हम दस हजार व्यक्ति हैं । आपकी कोठरी में तो कंदमूल होगा और इसके अतिरिक्त क्या हो सकता है । वशिष्ठ बोले-राजन् । हमारी कोठरी में कंदमूल ही नहीं और भी बहुत कुछ होता है । तो आप सबको भोजन करा देंगे ? हाँ । सबको भोजन कराया गया ।

भोजन करने के पश्चात् विश्वामित्र ने कहा-महाराज यह शक्ति कहाँ से आयी ? वशिष्ठ ने कहा-कामधेनु हमारे पास है । यह देवताओं की पुत्री नन्दिनी है जिसके माध्यम से मैं आपको भोजन कराने में समर्थ हुआ, ब्रह्मतेजस् धारण करने में समर्थ हुआ । विश्वामित्र ने कहा-इस गाय को तो आप हमें दे दीजिए जिससे हम मनोकामना पूर्ण करेंगे । गुरु वशिष्ठ ने कहा यह गाय और किसी के यहाँ जा नहीं सकती, केवल ब्राह्मण के यहाँ रहेगी, दूसरा कोई इसे ग्रहण नहीं कर सकता-धारण नहीं कर सकता । विश्वामित्र बलपूर्वक छीनने लगे तो नन्दिनी अकेली खड़ी हो गयी । ब्रह्मास्त्र नाम है इसका । ब्रह्मास्त्र माने-ब्राह्मण का हथियार । हथियार बहुतों के पास होते हैं, पर ब्राह्मण का हथियार बहुत जोरदार है और उसका नाम है-गायत्री । दोनों में संघर्ष हुआ, विश्वामित्र की सारी सेना परास्त हो गयी । वशिष्ठ की नन्दिनी जीत गयी । तब विश्वामित्र ने एक ही शब्द कहा-"धिक्बलं क्षत्रिय बलं ब्रह्मतेजो बलम् बलम् ।" क्षत्रिय का बल, भुजाओं का बल, पैसे का बल, विद्या का बल, ज्ञान का बल-यह सभी धिक अर्थात् छोटे हैं राई-रत्ती के बराबर हैं । ब्रह्मतेज ही असली बल है ।

मित्रो ! एक जमाना याद आया जब ब्राह्मण जगद्गुरु था । ज्ञान देने के लिए विश्व में वह जाता नहीं था, वरन् सारे संसार के लोग शिक्षायें लेने के लिए हमारे पास आते थे । नालंदा और तक्षशिला के विश्वविद्यालय सारी दुनिया के लिए ज्ञान के केन्द्र बने हुए थे । ईसामसीह के बारे में जो नयी खोज की गयी है उसके अनुसार यरुशलम से चलकर एक बालक तक्षशिला के विश्वविद्यालय में आया और कई वर्षों तक पढ़ा । पढ़ने के बाद में उसने रोम और दूसरे देशों में घूम-घूमकर सत्य और अहिंसा का शिक्षण देना शुरू किया । वही बालक पीछे ईसामसीह कहलाया । सारे विश्व के लोग इन विश्वविद्यालयों में पढ़ने के लिए आते थे जिनके शिक्षक, अध्यापक, डीन, वायस चान्सलर ब्राह्मण होते थे-ऋषि होते थे और वे साधारण नहीं होते थे । मैं उनके गुणानुवाद गा रहा हूँ जिन्होंने गायत्री की शक्ति को जाग्रत करके अपने भीतर धारण किया था । यह वर्ग यदि अपने उन्हीं कर्तव्यों पर टिका रहता तो आज विश्व की दिशा कुछ अलग ही रही होती ।

पूर्वपुरुष अपने पीछे अपनी संतानों को धन-दौलत देकर जाते हैं-चीजें देकर जाते हैं, लेकिन जिम्मेदारियाँ भी देकर जाते हैं । पूर्वज ऋषि हमको अपनी जिम्मेदारियाँ देकर गये हैं कि हम विश्व का संरक्षण, विश्व का मार्गदर्शन और दिशा देने का वजन अपने ऊपर लें । जनेऊ संस्कार जब कराया जाता है तब हर ब्राह्मण को एक प्रतिज्ञा करनी पड़ती है कसम खानी पड़ती है कि-"वयं राष्ट्रे जाग्रयाम पुरोहिताः"-हम पुरोहित-हम ब्राह्मण राष्ट्रों को जिन्दा रखेंगे । राष्ट्र को देश को जीवित और जिन्दा रखने की जिम्मेदारी-जो पूर्व पुरुष छोड़ गये हैं, कदाचित् हम उसे निभा सके होते तो हमने भी सिर ऊँचा उठा करके उन्हीं बातों को कहा होता जिनकी कि प्रशंसा हमारे शास्त्रों और ग्रन्थों में ब्राह्मण की महत्ता के आगे सिर झुकाकर की गयी है । हमको उन जिम्मेदारियों को निभाना ही चाहिए जो ब्राह्मण करते रहे हैं । प्राचीन काल में ब्रह्मतेजस् के धनी चाणक्य ने देखा कि राष्ट्र में अव्यवस्था फैल रही है । भारत छिन्न-भिन्न हो रहा हैं । उन्होंने चन्द्रगुप्त को बुलाया और कहा-इसको सँभालने के लिए तुझको आगे बढ़ना चाहिए । चन्द्रगुप्त के सिर पर चाणक्य का हाथ था । वे लड़ने नहीं गये तो क्या, लेकिन ऐसी शक्ति भर दी जिससे वह न जाने क्या से क्या कर सका । यह काम आप भी कर सकते हैं यदि आपके पास गायत्री की शक्ति हो तब । लेकिन उस शक्ति को हम भूल गये । प्राचीन काल में सारा विश्व आपके चरणों में इसलिए सिर झुकाता था कि हम शासन नहीं करते थे, पर शासनों पर नियंत्रण करते थे । रामराज्य में राम का राज्य हुआ, उनके पिता दशरथ का राज्य हुआ, उनके पिता रघु का, अज का दिलीप का राज्य हुआ । पीढ़ियाँ होती चली गयीं, लेकिन गुरु वशिष्ठ का नियंत्रण बराबर बना रहा । शासन चलते थे, पर उन्हें चलाते थे ब्राह्मण । कब ? तब, जबकि वे उसकी उपासना करते थे जिसकी कि

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

आराधना करने के लिए आप लोग हजार कुण्डों का दीपक जला करके आरती उतारने चल रहे हैं । उस ब्रह्मशक्ति की जिस शक्ति से हम जगमगाते थे किसी जमाने में और राष्ट्रों पर नियंत्रण करते थे, शासकों को उत्पन्न करते–पैदा करते थे । शासकों को उतारते थे और चढ़ाते थे । विभूतियाँ हमारे चरणों के अंतर्गत रहती थीं, क्योंकि ब्रह्मतेजस् हमारे पास था ।

गायत्री आपकी माता है । आपकी माता वही नहीं है जिसने जन्म दिया, वरन् आपकी माता शक्ति की पुंज विश्वमाता है । गायत्री को, अपनी माता को हम भूल गये । जो आदमी अपनी माता को भूल जायेगा, दूध कहाँ से पियेगा ? शक्ति का पुंज है यह गायत्री मंत्र । लेकिन हमारे मंत्र न जाने क्यों चमत्कार नहीं दिखा रहे हैं ? इसलिए नहीं दिखा रहे हैं क्योंकि एक हिस्सा हमारा बाकी रह गया है । जमीन को हमने सँभाला नहीं और बीज बो दिया । चरित्र जमीन है और मंत्र बीज । बीज वहीं उगेगा–फलेगा, जहाँ जमीन होगी । जमीन नहीं होगी तो बीज कैसे फलेगा ? मनुष्य का चरित्र सबसे बड़ा है । चरित्रवान की वाणी से जो वचन कहे जायेंगे जो मंत्र बोले जायेंगे वे सत्य होते चले जायेंगे मिथ्या नहीं हो सकते। श्रृंगी ऋषि द्वारा राजा दशरथ के पुत्रेष्टि यज्ञ की कथा आपने सुनी है । अब मैं आपको अपनी जिन्दा आदमी की गवाही पेश करता हूँ । अभी पचास लाख व्यक्ति मेरे हैं । ठोस आदमी इसमें से एक लाख भी नहीं हैं जो गायत्री मंत्र की विद्या सीखने, उसकी सुविधायें प्राप्त करने के लिए आते हैं । फिर उनचास लाख कौन हैं ? ४९ लाख वे हैं जो दुखी हैं, कष्ट में हैं, मुसीबत में है, जिनको सांसारिक और मानसिक कठिनाइयों ने घेर रखा है । वे भी आते रहे हैं और कहते रहे हैं कि मेरी ये दिक्कतें हैं, आप कोई सहायता कीजिए । मैंने कहा–भगवान से प्रार्थना करूँगा और भगवान से प्रार्थना सही होती चली गयी । इस तरीके से कितने आदमी दुःखों को दूर कराने के लिए आते हैं । यह कैसे संभव हो गया ? गायत्री मंत्र की सिद्धि कैसे हो गयी ? जप करने का महत्व क्या मैं अकेला ही जानता हूँ ? दूसरे किसी ने जप नहीं किया ? बहुतों ने जप किया, फिर फल क्यों नहीं मिला ? फल इसलिए नहीं मिला कि लोगों ने अपनी जीभ को जला दिया । झूठ बोला जीभ जल गयी । पराया अन्न खाया–कुधान्य खाया–जीभ जल गयी । असत्य भाषण किया, दूसरों पर क्रोध किया–जीभ जल गयी । जली हुई जीभ के द्वारा किस तरीके से मंत्रों का उच्चारण हो और कैसे मंत्र को सफलता मिले ? जीभ जले नहीं, इसके लिए हमारे चरित्र और आचरण उच्चकोटि के होने चाहिए ।

मंत्र कारतूस की तरीके से है और मनुष्य का व्यक्तित्व बन्दूक की तरीके से । कारतूस का अपना महत्व है, पर उससे भी ज्यादा कीमती बन्दूक है जो बढ़िया लोहे की बनी और ढली हुई हो । हमे अपने चरित्र को, जीवन को उच्चकोटि का बनाना पड़ेगा । अपने आपको संयमी ब्रह्मचारी, ईमानदार, नेक और शरीफ बनाना पड़ेगा । यही तो ब्राह्मण की परिभाषा है । ब्राह्मण जन्म से नहीं कर्म से होता है । कर्म भी हमारे ब्राह्मण जैसे होने चाहिए । अभी ब्राह्मणत्व खण्डहर हो गया है, टूट फूट गया है जिसे फिर से 'रिपेयर' करने की जरूरत है । फिर हमको चरित्रवान, विद्यावान, सेवाभावी और ईमानदार बनने की जरूरत है । ऐसे व्यक्ति यदि हम अपनी साधना से पैदा कर सकते हैं तो हम ब्राह्मणत्व की सेवा कर सकते हैं और उस चमत्कार को देख सकते हैं जो गायत्री मंत्र के साथ में जुड़ा हुआ है, जो यज्ञ के माध्यम से जुड़ा हुआ है

यज्ञ की महत्ता असाधारण है । राजादशरथ के पुत्रेष्ठि यज्ञ की कथा प्रसिद्ध है । रावण जब पराजित होने लगा तब उसने रामचन्द्र जी की शक्ति का मुकाबला करने के लिए एक यज्ञ का आयोजन किया । राम और लक्ष्मण को जब पता चला तो उन्होंने कहा–यदि यज्ञ पूरा हो गया तो हमारी विजय मुश्किल हो जायगी । हनुमान जी गये और यज्ञ का विध्वंश किया । यज्ञ की शक्ति बहुत बड़ी है यह कोई समारोह या आयोजन नहीं, वरन् शक्तियों का आह्वान है । यह उन शक्तियों का आह्वान है जिसके द्वारा मनुष्य क्या से क्या बन सकता है । ब्राह्मण पैदा नहीं होता, वह यज्ञ की अग्नि में पकाया जाता है । घड़ा पैदा नहीं होता–अग्नि में अवे में पकाया जाता है । "महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीयंक्रियते तनुः"–ब्राह्मण पैदा नहीं होते, यज्ञों के द्वारा–महायज्ञों के द्वारा पकाये जाते हैं । चन्द्रोदय, और अभ्रक पकाया जाता है । खिचड़ी कहीं बनी बनायी नहीं मिलती, पकायी जाती है । ब्राह्मण भी पैदा नहीं होते, वे यज्ञ के अवे में बनाये और पकाये जाते हैं ।

प्राचीनकाल में पहले हम यज्ञ पिता को भोजन कराते थे तब भोजन करते थे । अग्निहोत्र हमारे जीवन का अंग था । गायत्री तपोभूमि में अखण्ड अग्नि स्थापित है । अखण्ड जप हमारे यहाँ होता है । उसका परिणाम है यह ब्रह्मवर्चस् जिसकी आप उपासना करते हैं । आज की परिस्थितियों में यज्ञ की बहुत जरूरत है जिसका कि आप लोग आयोजन कर रहे हैं । इससे मानव समाज की बड़ी सेवा होने वाली है । इससे लोगों के शारीरिक–मानसिक दुख दूर हो सकते हैं । आप प्रयोग करके देखिये । जो लोग हवन में सम्मिलित हों उनके शरीर की बीमारियों के बारे में इम्तहान लेकर लें देखिये कि हवन पर बैठने वालों की बीमारियाँ दूर हुई कि नहीं । मानसिक बीमारियाँ जिसमें क्रोध, काम विकार, असंतोष, झल्लाहट, सनकीपन, से लेकर पागलपन तक शामिल हैं–ऐसे लोगों को हवन पर बिठाकर देखिये कि शरीर और मन की बीमारियों को वह दूर करता है कि नहीं । यह व्यक्ति की बात है ।

अब मैं व्यक्ति की नहीं, सारे विश्व के कल्याण की बात कहता हूँ । भगवान राम जब लंका विजय करके घर आये तब गुरु वशिष्ठ से पूछा–अब क्या करना चाहिए ? उन्होंने कहा–राम ! अभी

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

तो स्थूल शरीर वाला रावण मारा गया है पर सूक्ष्म रावण जिन्दा है जो आकाश में फैला हुआ है । रावण ने जो बुरे कर्म किये थे–जो हवायें फैलायी थीं, जो गन्दे विचार फैलाये गये थे उससे सारा आकाश क्षुब्ध हो गया है, उसे शान्त करो । राम ने कहा–स्थूल रावण को तो मार दिया, पर यह कैसे मारा जायेगा ? गुरु वशिष्ठ ने कहा–अश्वमेघ यज्ञ से । रामचन्द्र जी ने दस अश्वमेघ यज्ञ किये । बनारस के जिस स्थान पर दस अश्वमेघ यज्ञ किये गये, उस स्थान का नाम दशाश्वमेघ घाट पड़ा । गुरु वशिष्ठ जी ने कहा–अब वह रावण मारा गया, क्योंकि जिस आकाश में इतनी हाय, विध्वंस और हिंसा फैली हुई थी–उसका निवारण हो गया ।

पिछले दिनों दो विश्वयुद्ध हो चुके हैं । उसमें कितनी आत्मायें मारी गयीं, कितने जीवों की हत्यायें हुई, कितनी गोलियाँ चली, कितनी बारूद आसमान में फैलायी गयी । अंतरिक्ष दूषित और गर्हित हो गया । अब जो बच्चा पैदा होता है वही संस्कार ले करके आता है गंदे आसमान में से । जो भी वृष्टि होती है, जो भी अनाज पैदा होता है, जो भी वनस्पतियाँ और प्राणी पैदा होते हैं–जन्म से ही वह संस्कार लेकर आते हैं । माता–पिता रोते हैं–अच्छी सन्तान हुई इससे न होती तो अच्छा रहता'। यह संस्कार इस आसमान में फैले हुए हैं । भगवान श्रीकृष्ण ने भी यही किया था । पाण्डवों ने कहा–भगवन् ! राजगद्दी मिल गयी अब हम शान्ति से बैठेंगे । आप बताइये हमको अब क्या करना है ? कृष्ण ने कहा–सूक्ष्म दुर्योधन अभी नहीं मारा गया । सूक्ष्म कंस, सूक्ष्म जरासंध सूक्ष्म शिशुपाल अभी नहीं मरे । केवल शरीरधारी शिशुपाल मरा । शरीरधारी कौरव मारे गये, पर सूक्ष्म कौरव मारने बाकी हैं । ये कैसे मरेंगे ? राजसूय यज्ञ किया गया ।

उस यज्ञ से आकाश–अंतरिक्ष की शुद्धि की गयी । अंतरिक्ष की शुद्धि के लिए और उन सबके लिए जो नयी पीढ़ी के लोग पैदा होने वाले हैं, जो समस्याओं से उलझे हुए हैं, जो संकट और कठिनाइयों से भरे हुए हैं–उस सारी मानव जाति का कल्याण करने के लिए जो यज्ञ कर रहे हैं–यह सबसे बड़ा परोपकार है । इससे बड़ा परोपकार और कुछ नहीं हो सकता । यह सारे मनुष्य जाति के लिए ब्रह्मभोज है । इससे बड़ा ब्रह्मभोज और दूसरा हो नहीं सकता । सारे विश्व के समस्त प्राणियों, वृक्ष–वनस्पतियों की इससे पुष्टि होती है । सब बलवान और निरोग होते हैं । सबके कषाय–कल्मष दूर होते हैं । सबको शान्ति मिलती है । यज्ञ से असंख्य मनुष्यों के रोग, शारीरिक–मानसिक विकार दूर होते हैं । इससे विश्व में शान्ति होती है । दो महायुद्धों के द्वारा, गन्दे सिनेमा और दूसरे गन्दे गीतों के द्वारा जो आकाश प्रदूषित हो गया है, इसको वेद मंत्रों के द्वारा यज्ञ से दूर किया जा सकता है । इसमें सारे विश्व का कल्याण छिपा हुआ है और आप लोगों का कल्याण भी जिन्होंने यज्ञ का संकल्प किया है । आप लोग जो यज्ञ करने जा रहे हैं उनके बारे में वेद भगवान ने ही विश्वास दिलाया, जिम्मेदारी उठायी–कसम खायी और कहा है–'जिन लोगों ने मुट्ठी भरकर सामग्री लायी–हवन कर दी, हमने उनकी मुट्ठियों को भर दिया । तुम घी का एक चम्मच भर कर लाये, हवन किया–हमने तुम्हारी मुट्ठियों को घी से भर दिया । यह बैंक में जमा करने के बराबर है । यज्ञ चीजों को जलाता नहीं है, वरन् हम जो चीजें हवन करते हैं उससे लाखों गुनी चीज इस सारे आकाश को मिल जाती हैं । यह एक वैज्ञानिक उपाय है । यज्ञ ब्रह्मतेजस् जगाने की विधि है । यह वह कर्मकाण्ड है जिससे न केवल हम और आप ब्रह्म समाज के लोग अपना कर्तव्य पालन कर सकेंगे । वरन् सारी मनुष्य जाति के प्रति भी अपने कर्तव्यों का पालन कर सकेंगे ।

गायत्री मंत्र जिसकी आप उपासना करते हैं, जिसको ब्रह्मास्त्र कहते हैं–यह ब्राह्मण का हथियार है । इसे कामधेनु कहते हैं, अमृत और पारस कहते हैं जिसको छूकर लोहा सोना हो जाता है । यह गायत्री वेदमाता है । उसके प्रति आपके कर्मकाण्ड सराहनीय हैं, लेकिन उससे भी अगला कदम आपका यह होना चाहिए कि जो भी गायत्री की उपासना करते हैं उनको सत्यवान बनना ही चाहिए, ताकि यह सावित्री जो गायत्री का ही दूसरा नाम है, आपके गले में विजय माला पहना सके । यह गायत्री शक्तियों का पुंज है, देवत्व की देवी है । यह ब्रह्मवर्चस् है । यह सब कुछ है । कोई भी ऐसी चीज नहीं जो इसके पास न हो । यह सतयुग में भी फल देती है और कलियुग में भी फल देती है, पर शर्त एक ही है कि जिन–जिन लोगों ने गायत्री उपासना के प्रति कदम बढ़ाये हैं उनको दूसरा कदम यह बढ़ाना चाहिए कि अपने जीवन को उत्तम बनायें उज्ज्वल बनाये । सदाचारी, विवेकवान, शिष्ट, पवित्र और परोपकारी बनायें । जैसे–जैसे अपने आपको साफ करते चले जायेंगे जीवन पवित्र और शुद्ध होता चला जायेगा वैसे–वैसे ही भगवान के नाम का रंग, गायत्री माता का रंग आप पर चढ़ता हुआ चला जायेगा । यह रहस्य है–चाबी है गायत्री मंत्र की और अन्य सारे अध्यात्म की ।

मित्रो ! मैं इसी राह पर अब तक चलता हुआ चला आया और यह अनुभव निकालने में समर्थ हो सका कि यह ब्रह्मतेजस् जिसकी कि आप उपासना करते हैं और मैं उपासना करता रहा, एक शक्तिपुंज है । इसके बराबर उपासना करते हुए जो लाभ उठाया जा सकता है कोई दूसरा व्यापार, दूसरा लाभ और दूसरा परमार्थ नहीं । आप लोगों ने अनेक तरह के व्यापार और कार्य किये हैं । मेरा व्यापार जिन्दगी भर यही रहा है और मैं जानता हूँ कि इस व्यापार से कितना लाभ उठाया जा सकता है–कितना लाभ उठाया गया । मैं चाहता हूँ कि मेरे तरीके से आप लोग भी लाभ उठायें और उसी तरीके से लाभान्वित हों जैसे कि आपके पूर्व पुरुष लाभान्वित होते रहे हैं ।

ॐ शान्तिः ✱

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी -

"हमने जीवन भर बोया एवं काटा"

इस अंक में हम दे रहे हैं, परमपूज्य गुरुदेव का सूक्ष्मीकरण की अवधि में वीडियो पर रिकार्ड कराया गया एक व्याख्यान जो उनने गायत्री जयंती पर आए-परिजनों के लिए जून १९८५ में दिया था । ऋद्धियाँ और सिद्धियाँ कैसे साधना से उनके जीवन में आयीं ? भगवान के खेत में बोना व कई गुना काटना जैसे लाभदायक व्यवसाय को अपने जीवन के प्रसंगों से जोड़कर वे हमें समझाते हैं कि हम सब के लिए भी वही मार्ग खुला पड़ा है ।

गायत्री मंत्र साथ-साथ-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

भाइयो, लगभग साठ वर्ष हो गये जब हमारे गुरुदेव घर पर आये थे और उन्होंने कई बातें बतायीं । शुरू में तो डर जैसा कुछ लगा, पर पीछे मालूम पड़ा कि वे पिछले तीन जन्मों से हमारे साथ रहे हैं, तब भय दूर हो गया और बातचीत शुरू हो गयी । उन्होंने कहा-अपनी पात्रता को विकसित करने के लिए तुम्हें चौबीस लक्ष के २४ साल तक २४ पुरश्चरण करने चाहिए । मैंने उनकी वह आज्ञा शिरोधार्य की और सब नियम, विधि वगैरह मालूम कर लिया कि किस प्रकार जौ की रोटी और छाछ पर रह करके २४ पुरश्चरण पूरे करने पड़ेंगे । यह पूरी जानकारी देने के बाद उन्होंने एक और बात कही जो बड़ी महत्वपूर्ण है । आज उसी के बारे में मैं आपको बताऊँगा ।

उन्होंने कहा-गायत्री मंत्र कइयों ने जपे हैं, कई लोग उपासना करते हैं, लेकिन ऋद्धियाँ और सिद्धियाँ किसी के पास नहीं आतीं । जप कर लेते हैं और लोगों से बता देते हैं कि हमने गायत्री का जप कर लिया है, लेकिन न ऋद्धि न सिद्धि । हम तो तुम्हें इस तरह की गायत्री बताना चाहते हैं जिसमें ऋद्धियाँ और सिद्धियाँ भी मिलें और इस जप से ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होने का लाभ भी मिले । हमने कहा-यह तो बड़े सौभाग्य की बात है । आप इतनी अच्छी बात बतायेंगे-इससे अधिक अच्छा और सौभाग्य हमारे लिए क्या हो सकता है ? तब उन्होंने गायत्री के २४ पुरश्चरणों की विधि बताने के बाद में एक और नयी बात बतायी-"बोना और काटना ।" उन्होंने कहा-तुम्हारे पास जो कुछ भी चीज है उसे भगवान के खेत में बोना शुरू करो, वह सौ गुना होकर फिर मिल जायगा । ऋद्धि और सिद्धि का तरीका यही है, वे फोकट में कहीं नहीं मिलतीं । दुनिया में ऐसा कोई नहीं है जो ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ बाँट रहा हो या कुछ कहीं से मिल रहा हो । इस तरह का कोई नियम नहीं है । बोने पर ही किसान काटता है । ठीक इसी तरीके से तुमको भी बोना और काटना पड़ेगा । कैसे ? बताइये सब बातें । उन्होंने कहा-देखो शरीर तुम्हारे पास है । शरीर माने श्रम और समय । इन्हें भगवान के खेत में बोओ । कौनसा भगवान ? यह विराट् भगवान जो चारों ओर समाज के रूप में विद्यमान है । इसके लिए तुम अपने श्रम, समय और शरीर को खर्च कर डालो, वह सौ गुना होकर तुमको सब मिल जायेगा नम्बर एक ।

नंबर दो-बुद्धि तुम्हारे पास है । भगवान की दी हुई संपदाओं में अकल तुम्हारे पास है । इससे बजाय इस-उस बात का चिंतन करने, अहंकार का चिन्तन करने, वासनाओं का चिन्तन करने, बेकार की बातों का चिन्तन करने की अपेक्षा-अपने चिन्तन करने की जो सामर्थ्य है-उस सारी की सारी सामर्थ्य को भगवान के निमित्त लगा दो । उनकी खेती में बोओ, यह तुम्हारी बुद्धि सौ गुनी होकर तुमको मिल जायेगी ।

तीसरी चीज है-भावनायें । मनुष्य के तीन शरीर हैं-स्थूल, सूक्ष्म और कारण । इसमें से स्थूल शरीर से श्रम होता है, सूक्ष्म शरीर में बुद्धि होती है और कारण शरीर में भावनायें होती हैं । भावनायें भी तुम्हारे पास हैं, इन्हें अपने घरेलू आदमियों के साथ में खर्च कर डालने की बजाय भगवान का जो सारा खेत है उद्यान है, उसमें बोओ और यह भावनायें तुम्हें सौ गुनी होकर के मिलेंगी । यह तीन चीजें-शरीर, बुद्धि और भावनायें भगवान ने

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

दिये हैं किसी आदमी ने नहीं । एक और चीज है जो तुम्हारी कमाई हुई है, भले ही वह इस जन्म में कमाया हो या पिछले जन्म में । वह है– धन । धन भगवान किसी को नहीं देता । मनुष्य चाहे ईमानदारी से कमा ले या बेईमानी से कमाले या मत कमाये, भगवान को इससे कोई लेना–देना नहीं है । धन जो तुम्हें मिला है–शायद तुम्हारा कमाया हुआ नहीं है । मैंने कहा–मेरा कमाया हुआ कहाँ से हो सकता है ? १४–१५ वर्ष का बच्चा कहाँ से धन कमाकर लायेगा । " अच्छा पिताजी का दिया हुआ धन है । इस सारे के सारे धन को भगवान के खेत में बो दो और यह सौ गुना होकर के मिल जायेगा ।" बस मैंने गाँठ बाँध ली और ६० वर्ष से बँधी हुई वह गाँठ मेरे पास ज्यों की त्यों चली आ रही है । गायत्री उपासना के जब २४ साल से भी अधिक हो गये, उसके बाद भी बोने और काटने का यह सिलसिला बराबर चलता रहा । आप लोग भी अगर बोयें तो आप भी सिद्धियाँ पायेंगे–ऋद्धियाँ पायेंगे जैसे कि मैंने पायीं । भगवान के नियम सबके लिए समान हैं । सूरज के लिए सब आदमी एक समान हैं । जो नियम हमारे ऊपर लागू हुए हैं वही आपके ऊपर भी लागू हो सकते हैं । आप भी ऋद्धि–सिद्धियों से सराबोर हो सकते हैं । यह चारों चीजें मेरे गुरु ने मुझे बतायी थीं और मैं आप से निवेदन कर रहा हूँ । इन चारों चीजों को अगर आप बोना शुरू करें तो वह सौ गुनी होकर के आपको मिलेंगी । मुझे तो मिल गया है और मैं अपनी गवाही देकर–साक्षी देकर आप में से हर एक–आदमी को बताना चाहता हूँ कि जो बोयेंगे–वे काटेंगे और किसान के तरीके से फायदे में रहेंगे ।

भगवान को आप क्या समझते हैं कि वे बाँटते फिरते हैं ? बाँटते तो हैं, पर उससे पहले वे माँगते फिरते हैं । भगवान की इच्छा माँगने की है । भगवान शबरी के दरवाजे पर गये थे और उससे कहा था कि हम तो भूखे हैं कुछ हो तो खाने को ले आओ । शबरी के पास बेर थे सो उन्होंने ला करके दे दिये और कहा–हमारे पास यही हैं आप खा लीजिए । केवट के पास भगवान गये थे और कहा था–भाई साहब हमको तैरना नहीं आता, मेहरबानी करके हमको, लक्ष्मण और सीताजी को पार निकाल दीजिए । केवट ने निकाल दिया । भगवान माँगते फिरते हैं । वे सुग्रीव के पास भी गये थे और कहा था कि हमारी सीता जी को कोई चुरा ले गया है, उनका पता लगाने के लिए आप अपनी सेना हमको दे दें और ऐसा कुछ इंतजाम कर दें जिससे हमारी धर्म पत्नी मिल जायँ तो बड़ी मेहरबानी होगी । सुग्रीव ने वही किया–अपना सर्वस्व दे दिया उनको । हनुमान जी का भी यही हुआ । हनुमान जी से भी वे माँगते फिरे कि हमारा भाई बीमार हो गया है–घायल हो गया है, उसके लिए आप दवा ले आइये । सीता जी को संदेश पहुँचा दीजिए, लंका से उनकी खबर ले आइये । राजा बलि की कहानी मालूम है आपको । वे बलि के पास गये थे और कहा था कि जो कुछ भी तुम्हारे पास है हमको दे दो । बलि ने कहा–क्या है हमारे पास ? तब उन्होंने कहा था कि तुम्हारे पास जमीन है, उसमें से साढ़े तीन कदम हमको दे दो । नाप लिया भगवान ने और जो कुछ भी मालमाल था सब छीन लिया ।

गोपियों से बड़ी मोहब्बत थी उनकी । उनसे कहा–तुम्हारा दही और मक्खन कहाँ रखा है । गोपियाँ समझतीं थीं कि वे भगवान हैं तो सोने–चाँदी के जेवर लायें होंगे, कोई उपहार लायें होंगे, पर वे तो कुछ नहीं लाये । उलटे, उन्होंने जो कुछ भी मक्खन तथा दही जमा किया हुआ था, वह भी छीन लिया । कर्ण जब घायल पड़े हुए थे तब अर्जुन को लेकर भगवान उनके मैदान में जा पहुँचे और कहा–अरे कर्ण, हमने सुना था कि तुम्हारे दरवाजे पर से कोई आदमी खाली हाथ नहीं जाता । हम तो कुछ माँगने आये थे, पर तुम कुछ देने की हालत में मालूम नहीं पड़ते । कर्ण ने कहा–नहीं महाराज ! ऐसा मत कीजिए–खाली हाथ मत जाइये । मेरे दाँतों में सोना लगा हुआ है जिसे उखाड़ कर मैं अभी देता हूँ आपको । उन्होंने एक पत्थर का टुकड़ा लिया और दोनों दाँत तोड़ करके एक अर्जुन के हाथ पर रखा और एक कृष्ण के । इसी तरह सुदामा जी की कहानी है । सुदामा जी की पत्नी ने उनको इसलिए भेजा था कि कृष्ण उनके मित्र हैं और वे उनसे कुछ माँगकर ले आयें तो गुजारा चले । सुदामा जी गये तो इसी ख्याल से थे, लेकिन भगवान ने उनसे पूछा कि लाये हो या कुछ माँगने आये हो । हमारे दरवाजे पर माँगने वाले तो भिखारी आते हैं, पर तुम लाये क्या हो ? पहले यह बताओ । देखा सुदामा जी के बगल में चावल की पोटली दबी थी । उस पोटली को भगवान ने उनसे माँग लिया और उस चावल को स्वयं खाया तथा अपने परिवार को खिलाया । जो कुछ भी सुदामा जी के पास था सब खाली कर दिया । बाद में उन्हें कुछ दिया होगा जरूर । गोपियों को भी दिया होगा, कर्ण को भी दिया होगा, बलि को भी दिया होगा । हनुमान, केवट, सुग्रीव–सभी को दिया होगा, पर सबसे पहले उन्होंने लिया था ।

भगवान जब कभी आते हैं तब माँगते हुए आते हैं । भगवान के साक्षात्कार जब कभी आपको होंगे तब यही मानकर चलना कि वह आप से माँगते हुए आयेंगे । संत नामदेव के पास भगवान कुत्ता का रूप बनाकर गये थे और सूखी रोटी लेकर के भागे थे, तब नामदेव ने कहा था–घी और लेते जाइये । देने के लिए उन्होंने अपना कलेजा चौड़ा किया । मेरे गुरु ने मुझ से यही कहा था । उसी वक्त से मैंने बात गिरह बाँध ली और लगातार जिंदगी के इन ६० वर्षों में देता ही चला आया हूँ जो कुछ भी संभव हुआ है । देने में कोई नुकसान नहीं है । अगर अच्छी जगह बोया जाय तब लाभ ही लाभ है, लेकिन कहीं खराब जगह पर–पत्थर पर बो दिया गया तब मुश्किल है । अच्छा खेत भगवान का खेत है, उसमें बोने

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

से ज्यादा होकर मिलेगा । आपने देखा होगा कि बादल समुद्र से लेते हैं और वर्षा कर जाते हैं, पर क्या वे खाली रह जाते हैं ? नहीं–समुद्र उन्हें दुबारा देता है । शरीर का चक्र भी इसी तरह का है । हाथ कमाता है और मुँह को दे देता है और मुँह पेट में पहुँचा देता है और वह खून बन जाता है । हाथ खाली रहा है क्या ? नहीं हाथ के पास फिर दुबारा नींद के रूप में, रक्त के रूप में, हड्डियों के रूप में, स्फूर्ति के रूप में वह ताकत आ जाती है जो उसने कमायी थी । दुनिया का ऐसा ही चक्र है । हम किसी को जो कुछ देते हैं वह घूम फिरकर हमारे पास फिर से आ जाता है । वृक्ष अपने फल, फूल, पत्ते सभी कुछ बाँटता रहता है और भगवान उसको दुबारा देते रहते हैं । भेड़ अपनी ऊन बाँटती रहती है । काटने के थोड़े दिन बाद ही शरीर पर ज्यों की त्यों दुबारा ऊन आ जाती है ।

देना बहुत शानदार चीज है, हमारे गुरु ने यही बात सिखायी थी । तो आपको कुछ मिला क्या ? यही तो मैं बताना चाहता हूँ कि मुझे मिला है और अगर आप हमारी बात पर विश्वास कर सकते हों तो अपने बारे में भी यह ख्याल कर सकते हैं कि आपको भी मिलेगा–आप भी खाली हाथ रहने वाले नहीं हैं । इस बात का हमने बराबर ध्यान दिया है । रात के वक्त भगवान का नाम लिया होगा और दिन के वक्त सूरज निकलने से लेकर के सूरज डूबने तक हमने सिर्फ भगवान की सेवायें की हैं । नाम जब कभी हमने लिया होगा तब रात के वक्त लिया होगा और दिन–समाज के रूप में फैले हुए भगवान के लिए खर्च करते रहे । हमारी ७५ साल की उम्र होने को आई । इस उम्र में ढेरों के ढेरों आदमी मर जाते हैं और जो जिन्दा भी रहते हैं वे किसी काम के नहीं रहते । ६० वर्ष के बाद प्रायः आदमी नकारा हो जाता है, पर हमारे काम करने की ताकत ज्यों की त्यों बनी हुई है । हमारा शरीर लोहे का है । लोहे का क्यों है ? इसलिए है कि हमने अपने शरीर को भगवान के काम में लगा दिया है । हमारा शरीर बहुत ठीक है और–अगर आप भी अपने शरीर को समाज के लिए खर्च करना शुरू करें तो ठीक रहेंगे । गाँधी, जवाहर, बिनोवा-तीनों ८० वर्ष के होकर मरे थे –यकीन रखिये अगर आप भी अपने शरीर को भगवान के खेत में बोना शुरू करें तो आपके लिए बहुत फायदेमंद वाली बात होगी । यह शरीर की बात हुई ।

नंबर दो–अपनी बुद्धि को हमने भगवान के खेत में बोया । बुद्धि हमारे दिमाग में रहती है । कहाँ तक पढ़े हैं आप ? हमारे गाँव में प्राइमरी स्कूल है । उस जमाने में दर्जा चार तक प्राइमरी होते थे, अब तो पाँचवीं तक होते हैं । वहीं तक हम पढ़े इसके बाद फिर कभी मौका नहीं मिला । जेल में लोहे के तसले के ऊपर कंकड़ों से अँग्रेजी पढ़ना शुरू किया, संस्कृत पढ़ना शुरू किया, अमुक भाषा शुरू किया तमुक शुरू किया । हमारी बुद्धि बहुत पैनी है । आपने देखा नहीं–चारों वेदों के भाष्य हमने किये । १८ पुराण ६ दर्शन आदि सभी के भाष्य किये । व्यास जी ने एक महाभारत लिखा था और गणेश जी को मददगार बनाकर ले गये थे । हमारा तो कोई मददगार भी नहीं है । अकेले ये हमारे हाथ ही मददगार हैं । हमने इतना साहित्य लिखा है जो सामान्य नहीं असामान्य बात है । हम प्लानिंग करते हैं । कोई आदमी अपनी खेती का, घर का प्लानिंग करता है और हम सारी दुनिया को सारे विश्व को नये सिरे से बनाने की प्लानिंग करते हैं । भारत सरकार की पंचवर्षीय योजनायें बनती हैं जिसके लिए कितना बड़ा स्टाफ–कितने मिनिस्टर और कौन–कौन लोग काम करते हैं, लेकिन हम तो सारी दुनिया का नया नक्शा बनाने के लिए इसी अकल से काम कर लेते हैं । अपनी अकल की हम जितनी प्रशंसा करें उतनी ही कम है ।

अकल के अलावा हमने अपनी भावनाओं को भी भगवान को दे दिया । जो भी कोई आदमी हमारे नजदीक आया होगा तो हमारे मन में उसके प्रति दो ही बातें रहीं हैं कि हम अपने सुख को बाँट दें और उसके दुखों को बँटा लें । यदि हम बँटा सकते होंगे तो हमने जी जान से कोशिश की है । अगर हमारे पास कोई सुख होगा–सामर्थ्य होगी तो हमने बाँटने के लिए बराबर कोशिश की है क्योंकि हमारी भावनायें हमको मजबूर करती हैं । वे कहती हैं कि तुम्हारे पास है और जिनको जरूरत है उनको दोगे नहीं ? तो हम कहते हैं कि जरूर देंगे । जो मुसीबत में हैं और कहते हैं कि हमारी मुसीबत में हिस्सा नहीं बटायेंगे क्या ? तब हम कहते हैं कि आपकी मुसीबत में हम जरूर हिस्सा बँटायेंगे । हमारी भावनायें इसी तरह की हैं । भावनायें–जिसे संवेदना कहते हैं–प्यार कहते हैं, हमने बोया है । फलतः सारी दुनिया हमको बेहद प्यार करती है । हमने प्यार दिया है, प्यार बोया है, इसलिए प्यार पाया है ।

भगवान की चीजों को हमने अमानत के तरीके से रखा और उन्हीं के खेत में बोकर उनकी ही दुनिया के लिए खर्च कर डाला । हमारे पास पिता जी का कमाया हुआ जो भी धन था हमने सब उसी के लिए खर्च कर दिया । हमारे पास जो भी जमीन थी, जेवर थे–सब बेचकर के गायत्री तपोभूमि को बनाने में, भगवान का घर बनाने में खर्च कर दिया । जो पैसा पिता जी ने छोड़ा हुआ था–एक–एक पाई खर्च कर डाला । हमने किसी का दिया हुआ धन खाया नहीं । तो आप नुकसान में रहें होंगे ? आप नुकसान की बात करते हैं–कभी आप हमारे गाँव जाइये, गायत्री तपोभूमि मथुरा, अखण्ड–ज्योति कार्यालय देखिये । आप यहाँ आइये शान्तिकुंज, गायत्री नगर देखिये–ब्रह्मवर्चस् देखिये, कितने शानदार हैं । २४०० गायत्री शक्ति पीठों को देखिये ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

इतनी तो बिल्डिंगें हैं और जो उनमें लोग रहते हैं, उन पर जो रुपया खर्च होता है वह कहाँ से आता है ? जाने कहाँ से आ जाता है कि धन हमारे लिए कम नहीं पड़ता । भगवान की तरफ हम इशारा कर देते हैं और वह हमारे लिए जिन भी वस्तुओं की आवश्यकता होती है, वह सब ज्यों की त्यों भेज देता है । यह क्या हो गया ? यह सिद्धियाँ हो गयीं । सिद्धियों में हम चार चीजें शुमार करते हैं (१) धन (२) लोगों का प्यार (३) बुद्धि और (४) शारीरिक स्वास्थ्य हमारे पास सिद्धियाँ हैं । गायत्री का जप करने से किसी के पास सिद्धियाँ आयीं हों या नहीं यह मालूम नहीं, लेकिन हमको जरूर मिली हैं । इन चारों चीजों की कोई भी परीक्षा ले सकता है ।

एक और चीज है–ऋद्धि । ऋद्धियाँ वह होती हैं जो दिखाई नहीं पड़तीं । ऋद्धियाँ तीन हैं और सिद्धियाँ चार । पहली ऋद्धि है–आत्म संतोष । हमारे भीतर इतना संतोष है जितना कि न किसी राजा को होगा, न बिडला जी को और न किसी मालदार को । उन्हें नींद नहीं आती है,–पर हमको ऐसी नींद आती है कि ढोल बजते रहें, नगाड़े बजते रहें–और हम ऐसे सो जाते हैं बिलकुल निश्चिन्त मानों दुनिया की कोई समस्या ही हमारे सामने नहीं है । आत्म संतोष के अलावा दूसरी ऋद्धि है–लोक सम्मान और जन सहयोग । हमें लोगों का सम्मान ही नहीं उनका सहयोग भी मिला है । माला पहना देना ही सम्मान करना नहीं है, वरन् जनता जिसका सहयोग कर रही हो तो मान लीजिये यह उस आदमी को सम्मान मिला है । माला तो खरीदी भी जा सकती है, लेकिन सम्मान उसमें होता है जिसमें जन सहयोग मिलता है । गाँधी जी का सहयोग किया था लोगों ने । बिनोवा का सम्मान किया था तो सहयोग भी दिया था । ढेरों की ढेरों जमीने उनकों दान में दे दी थीं । गाँधी जी के एक इशारे पर लोग जेल जाने के लिए और फाँसी के तख्तों पर झूलने के लिए–गोलियाँ खाने के लिए चले गये थे । यह उनका सम्मान था और सहयोग था । सम्मान कहते हैं सहयोग को । हमारा भगवान हमारे लिए बहुत सहयोग करता है । जनता हमको बहुत सहयोग करती है ।

तीसरी ऋद्धि है–दैवी अनुग्रह । दैवी अनुग्रह किसे कहते हैं ? आपने रामायण में कई प्रसंग पढ़े होंगे कि जब देवता प्रसन्न होते हैं तब फूल बरसाते हैं और कुछ नहीं बरसाते । कई बार अमुक पर फूल बरसाये, तमुक पर फूल बरसाये । यह क्या है ? भगवान की बिना माँगे की सहायता है । बिना माँगे की अकल, बिना माँगे के इशारे, बिना माँगे का सहयोग फूलों के तरीके से बरसते रहे हैं हमारे ऊपर । अगर ऐसा न होता तो न जाने अब तक हमारा क्या हो गया होता । समय–समय पर जो रास्ते उसने बताये हैं, ऐसे शानदार रास्ते बताये हैं कि उन पर हम चलते गये और वह हमारे ऊपर फूल बरसाते रहे । हमको हमारे पिता की संपत्ति का अधिकार मिला है, कर्तव्य और अधिकार दोनों का जोड़ा मिला हुआ है । भगवान ने हमको अपना बच्चा माना है–बेटा माना है और अधिकार दिया है कि उसको नेक काम में खर्च कर डालना । हमने उसे पिताजी के ही काम में सब खर्च कर डाला, अपने लिए कुछ नहीं रखा, इसलिए कि पिता जी का वंश, पिताजी का कुल कलंकित न होने पावे । पिताजी माने भगवान–परमेश्वर । परमेश्वर का भक्त कहलाने के कारण हमारे ऊपर कोई यह अँगुली न उठाने पाये कि यह कैसा आदमी है । हमने उनके वंश को सुरक्षित रखा है ।

भगवान ने हमको दिया तो है, पर हमने भी कुछ दिया है । पिता की मृत्यु हो जाती है और उनका कुटुम्ब रह जाता है । भाई, बहन, बच्चे–कच्चे, स्त्री सभी का पालन वह करता है जो परिवार में बड़ा होता है । अपने पिताजी के वरिष्ठ का ही नहीं, वरन् उनका जो इतना बड़ा विराट् कुटुम्ब फैला हुआ है–इन सबका पालन करने में, उनकी निगरानी करने में, उनकी देखभाल करने में जो कुछ भी हमारे लिए संभव हुआ, हमने ईमानदारी से किया है । हमने बराबर भगवान के कुटुम्ब का पालन किया है । अपना ही पेट नहीं, वरन् भगवान के कुटुम्ब का भी पालन किया है । भगवान की दुकान, भगवान का व्यवसाय, उद्योग अच्छे तरीके से चलता रहे, कोई यह न कहने पावे कि बाप इनके लिए खेत छोड़ कर मरा था–कारखाना–फैक्ट्री छोड़कर गया था और इन्होंने सब बिगाड़ डाला । व्यवसाय भगवान का–दुकान भगवान की–आप तो समझते ही नहीं, यह सारा व्यवसाय तो उसीका है । दुनिया में जो कुछ भी हो रहा है–सब उसी का उद्योग है । उसको ठीक तरह से–बढ़िया ढंग से चलाने में हमने ईमानदारी से पूरी–पूरी कोशिश की है । पिता की संपदा लेकर, उनका अधिकार लेकर के हम चुपचाप बैठ नहीं गये–बल्कि अपने फर्ज और कर्तव्य का भी पालन किया है । पिता जी का व्यवसाय चलाने में, उनके परिवार का पालन करने में, उनके कुल और वंश की सुरक्षा रखने में हमने बराबर काम किया है । आप भी यह कीजिए और निहाल हो जाइये । रास्ता एक ही है । जो कानून हमारे ऊपर लागू होता है, वही कानून आपके ऊपर भी लागू होता है । सबके लिए एक कानून एक कायदा है । भगवान न हमारे साथ रियायत करने वाले हैं न आपके साथ में उनका कोई बैर–विरोध है । तरीके वही हैं जो हमारे जीवन में बताये गये । हमारे गुरु ने हमको तरीका बताया था और हमने स्वीकार कर लिया हम अपने गुरु को बहुत–बहुत धन्यवाद देते हैं और आपको सिखाते– बताते–समझाते हैं कि आप भी उसी रास्ते पर चलिए जिस रास्ते पर हम चले हैं तो आप भी निहाल हो जायेंगे और धन्य हो जायेंगे और क्या कहें आपसे ।

ॐ शान्तिः ✱

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परम पूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

इस अंक में गायत्री जयंती (३० मई १९९३) के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत है पूज्यवर द्वारा दिया गया गायत्री जयंती १९८३ का एक उद्‌बोधन जिस में गायत्री महाविद्या के गुह्यतम पक्षों पर प्रकाश डाला गया है । पढ़ें—अमृतवाणी

गायत्री मंत्र कृपा कर हमारे साथ-साथ कहिए-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ।

देवियो, भाइयो ! जिस पुनीत गायत्री पर्व को आप मनाने के लिए आये हैं, उसका बहुत महत्व है । आपने तो केवल उसको सुना है, पर मैंने देखा है । देखा ही नही, जाना और पाया है । आपके लिए यह पर्व सामान्य जानकारी के लिए आकर्षक भी हो सकता है, पर मेरे लिए तो जीवन है । मेरे नस-नस में गायत्री पर्व घुसा हुआ है । मांस में, अस्थियों में, मस्तिष्क के प्रत्येक कण में घुसा हुआ है । जीवन की गतिविधियों में भरा हुआ है । ऐसा है यह गायत्री पर्व. जिसके लिए कितनी श्रद्धा लेकर हमने इतनी लम्बी जिन्दगी जी ली । इसमें कोई शक नहीं कि आपका दृष्टिकोण दूसरा हो सकता है और मेरा दूसरा, लेकिन हमारे दोनों के लिए यह हमारी माँ है । आप छोटे बच्चे हों तो क्या और हम बड़े बच्चे हों तो क्या ? लेकिन हम दोनों की माँ एक ही है-'गायत्री माता' जिसको हम भारतीय संस्कृति की जननी कहते हैं । भारतीय धर्म की जीवात्मा कहते हैं । वेदों के मंत्रों से लेकर पुराणों तक का सारा वाङ्मय जिसकी व्याख्या के स्वरूप बना, जिससे सारे देवी-देवता, २४ देवता, त्रिपदा के तीन देवता, २४ अक्षरों के २४ अवतार, सारे का सारा पूजा-पाठ का परिकर-गायत्री के अलावा और कुछ है नहीं । भारतीय संस्कृति और भारतीय धर्म विशुद्ध गायत्री स्वरूप हैं ।

गायत्री की महत्ता के बारे में कितना सारा बताया गया है, कितने गुण गाये गये हैं । लेकिन आमतौर से आदमी निराश देखे गये हैं और यह कहते सुने गये हैं कि हमको वे लाभ सुनने को तो मिलते हैं पर पाये नहीं जा सकते । मेरा मत इससे भिन्न है । आपकी शिकायत है कि गायत्री का कोई चमत्कार हमने नहीं देखा, लेकिन मैंने देखा है । कुछ ऐसे भी चमत्कार हैं जो मैं आपको भी दिखा सकता हूँ , पर कुछ ऐसे हैं जो मेरे लिये दिखाना संभव नहीं है अथवा दिखाना नहीं चाहता । गायत्री के ऐसे सारे के सारे चमत्कारों के बारे में ऋषियों ने जो कुछ भी कहा है, उन्हें अक्षरशः मैंने सही पाया है । फिर आपने गलत क्यों पाया और मैंने सही क्यों पाया ? गायत्री जयन्ती के पुण्य पर्व पर आइये इसी महत्वपूर्ण तथ्य पर प्रकाश डालें और पर्दे को उठाने की कोशिश करें कि हमारे लिये गायत्री क्यों चमत्कारी है और आपके लिए क्यों निराशाजनक हैं । अक्षर तो वही २४ हैं । माला तो वही है । पूजा के विधि-विधान भी वही हैं, फिर आप में फरक कैसे पड़ गया । हम यही चाहते हैं कि आप इसे जान लें ।

गायत्री के संबंध में हमारे गुरुदेव ने जब पहले दिन आये थे, तभी उसका तत्वज्ञान समझा दिया था और कहा था कि गायत्री की शक्ति बादलों की तरह बरसती है, लेकिन इसके लिए एक शर्त है कि मिट्टी मुलायम होनी चाहिए और गड्ढा होना चाहिए । मिट्टी मुलायम होगी तो हरियाली पैदा हो जायगी और गड्ढा होगा तो बादलों का पानी जमा हो जायेगा । टीले पर, चट्टानों के ऊपर पानी बरसेगा तो हरियाली कैसे पैदा हो जायगी ? बादल अपने आप में एक इकाई है, लेकिन समग्र नहीं है । जिसको ग्रहण करना है-धारण करना है उसकी अपनी स्थिति और योग्यता भी होनी चाहिए, व्यक्तित्व भी होना चाहिए । उन्होंने एक बात और कही जिसे हमने गिरह बाँध ली, पर आप तो सुनने को भी तैयार नही हैं । वह थी-'भगवान की कोई साधना नहीं होती । कोई भगवान की साधना कैसे कर सकता है ? साधना सिर्फ अपने आपे की करनी पड़ती है । अपने आपे की साधना कर लेने और पात्रता विकसित कर लेने के बाद में दैवी शक्तियों का अनुदान अनायास ही बिना माँगे मिलता हुआ चला जाता है ।' मेरे गुरु ने जिस दिन दीक्षा दी उसी दिन मुझे वास्तविकता समझा दी और कहा-कि सारे का सारा ध्यान अपने ऊपर केन्द्रित कर लीजिये मैंने अपने ऊपर केन्द्रित रखा और यही कहता रहा-आदर्शों को, सिद्धान्तों को भगवान कहते हैं, उत्कृष्टता को भगवान कहते हैं और उसी की आराधना के लिए, उसी की उपासना के लिए अपने हर एक सांस को, हर एक चप्पे को, योग्यता के हर एक कण को मैंने नियोजित कर दिया । हमने भगवान की महत्ता को समझने की कोशिश की और उसने हमको गायत्री के नजदीक ला दिया । आप तो लाखों मील दूर हैं इसलिए कि आपने केवल सुना है और कृत्यों को किया है, अतः निराश नहीं रहेंगे तो क्या करेंगे । लेकिन हमको-पूरी तरीके से सच्चे मन से हजार बार कहने की हिम्मत पड़ती है कि गायत्री शक्तिवान है, सामर्थ्यवान है और चमत्कारी है । गायत्री में वह सब कुछ है जिसके बारे में बताया गया है ।

लेकिन मित्रो ! यह कैसे संभव हो सका ? ऐसे संभव हो सका कि हमारे दृष्टिकोण में और आपके दृष्टिकोण में फरक रहा । आपने उस तरीके से उपासना की कि आपको लाभ मिला या नहीं, परन्तु हमारी नीयत दूसरी ही रही है । हमने पाने का कभी विचार ही नहीं किया । शुरू के दिन से आखिरी दिन तक हमने केवल देने का ही विचार किया है । आपने किस स्तर की उपासना की है ? हमने दधीचि जैसे स्तर की उपासना की है । हमने कमाया तो था, लेकिन देवताओं से कहा-कुछ हमारे पास है । आप दुनिया को देते हैं तो कुछ हमसे भी लेते जाइये ।' ऐसे इनसान होते भी रहे हैं

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

और हर अध्यात्म का स्तर यही होना चाहिए । देवता केवल दिया ही नहीं करते, उन्हें भी जरूरत होती है । आप जानते नहीं हैं क्या ? एक बार देवताओं को जरूरत पड़ी थी और वे इन्सानों की सहायता माँगने के लिए आये थे । उन्होंने दशरथ से कहा था कि हम बहुत हैरान हैं और हमको इंसान की मदद की जरूरत है । तब दशरथ जी कैकेयी के साथ अपना रथ लेकर स्वर्गलोक की देवताओं की सहायता करने गये थे । दधीचि ने देवताओं की जरूरत पूरी की थी और हमारे पूजा करने के तरीके भी उसी तरीके से रहे हैं । देवताओं ने एक और आदमी से हाथ पसारा । उसका नाम था—अर्जुन । अर्जुन देवताओं की मदद करने के लिए गये थे । मदद करने के बाद में जब देवताओं ने अपना काम बना लिया तो सोचा इसे उसी स्तर का कुछ इनाम देना चाहिए । सो स्वर्गलोक की सबसे खूब-सूरत महिला—उर्वशी को उनने पेश कर दिया और कहा—पैसे के बाद में लोग खूबसूरती चाहते हैं, विषय-विकारों को चाहते हैं, आप यह ले जाइये । अर्जुन ने मना कर दिया और कहा—हमने तो अपने आपको संयमी जीवन में ढाल लिया है । क्या करेंगे इन बेकार की चीजों को । तब देवताओं ने उससे भी शानदार चीज गाण्डीव दिया था जो मनुष्यों का नहीं देवताओं का बनाया हुआ था । गाण्डीव इसलिए दिया गया था कि जहाँ कहीं भी उससे तीर चलायेगा, पार करता हुआ चला जायेगा, असफल हो ही नहीं सकता । समर्थ गुरु रामदास ने शिवाजी को भवानी से तलवार दिलायी थी—ऐसी शानदार तलवार जो चीरती हुई चली गयी—पार करती हुई चली गयी ।

मित्रो ! मैंने वही किया है । उपासना मैंने इसी ढंग से की है । हमने सिर्फ एक काम किया है—अपने आपको धोया है, अपने आपके ऊपर पॉलिश की है और अपने आपको रगड़ करके तेज चाकू की तरीके से बना दिया है कि जहाँ कहीं भी मारेंगे चीरता हुआ चला जायेगा । यह है हमारा व्यक्तित्व और आप तो उलटा चलते हैं । पूजा उपासना को जीवन से दूर रखना चाहते हैं । बिजली के पॉजिटिव और निगेटिव—दोनों तारों को अलग-अलग रखना चाहते हैं तो उनके अंदर करेण्ट कैसे आयेगा । उपासना में त्याग की बात सिखाई जाती है और आप भोग की बात कहते हैं । योग भावनात्मक है, क्रियापरक नहीं । योग में जहाँ लोभ और मोह के ऊपर अंकुश लगाना पड़ता है वहाँ आप उसी की पूर्ति करना चाहते हैं । आप उलटा चलते हैं । साबुन से कोयले का काम लेना चाहते है और कोयले से साबुन का । अध्यात्म का बिलकुल उलटा चलते हैं । यह भी कोई तरीका है । मैं आपके विचारों में क्रांति लाना चाहता हूँ न केवल अध्यात्म के क्षेत्र में, वरन् सामाजिक क्षेत्र में, व्यवस्था के क्षेत्र एवं भावनात्मक क्षेत्र में भी क्रांति लाना चाहता हूँ । मैं चाहता हूँ कि इस सावित्री जयंती के पुनीत पर्व पर आप भी अपने मनकी सफाई कर ले जाइये, ब्रेनवाश कर ले जाइये, दिशा लेकर जाइये और उस वास्तविकता को जानकर जाइये कि जहाँ से चमत्कार उत्पन्न होते हैं, सिद्धियाँ उत्पन्न होती हैं ।

हमारे जीवन में ऐसा ही हुआ । २४ साल तक उपासना करता रहा और सिर्फ जौ की रोटी और छाछ खाता रहा अपनी जीभ को ठीक रखने के लिए । इसलिए कि जिस जीभ से मुझे मंत्रों का उच्चारण करना है, आशीर्वाद देने हैं, उपदेश देने हैं, लोगों को सलाह देनी है उस जीभ को जरा पैनी तो कर लूँ , फौलाद की तो बना लूँ । इसलिए पैंतीस अपनी जीभ से जद्दोजेहद की है । हमने प्रत्येक का ऊपर संयम किया है हमने समय के ऊपर, विचारों के ऊपर और अपने पैसे के ऊपर संयम किया है । हमने किसी का खाया नहीं—खिलाया है । हमने अपने आपसे जद्दोजेहद की है । पैसे के बारे में जद्दोजेहद, दिमाग के बारे में जद्दोजेहद विचारों के बारे में जद्दोजेहद, आचरण के बारे में जद्दोजेहद, समय के नियंत्रण के बारे में जद्दोजेहद किया है । हमारा मनोरंजन एक ही रहा है—भगवान का काम । हमारी भावना एक है, मन एक है, लक्ष्य एक है । हमारा प्रिय एक है और वह है हमारा भगवान । सोते हुए सपना दीखता है तो हमको भगवान का दीखता है । पूजा की कोठरी में बैठते हैं तो हमें चारों ओर भगवान की सुगंध आती है । जहाँ कहीं भी जाते और अपना दिल टटोल कर देखते हैं तो वहाँ भगवान धड़कता हुआ दिखायी पड़ता है । प्राण में, नस-नाड़ियों में, सांसों में भगवान की हवा चलती हुई दिखाई पड़ती है । हमारे चारों ओर भगवान दिखाई पड़ता है । हमने भगवान को अनुभव किया है, पर आप तो देखने की फिराक में रहते हैं । क्या देखेंगे भगवान को ? आँखों से मिट्टी देखी जाती है । मिट्टी के अलावा क्या किसी ने देखा है भगवान को ? देखा किसी ने नहीं है, पर अनुभव किया है । हमने अपनी प्रत्येक गतिविधियों में, उद्देश्यों में, विचारों में भगवान को नाचते हुए—रास करते हुए देखा है, हमारी नियति और गतिविधियाँ अध्यात्म से तालमेल खाती हैं । हम यह अनुभव करते हैं कि अध्यात्म के सही तरीके से हम नजदीक आये हैं और सही तरीके से फायदा उठाने में समर्थ हो गये हैं ।

मित्रो ! हमने क्या किया और क्या पाया ? पाने की बात मालूम है आपको जिसे मैं हजार बार बता चुका हूँ । शरीर की बाबत बता चुका हूँ कि यह शरीर भगवान का है । हमने अपने शरीर को भगवान के हाथों बेच दिया है । अब यह हमारा नहीं, हमारे 'बॉस' का है । इसलिए उसको इसकी एक बार नहीं ९९ बार रखवाली करनी पड़ेगी । हमने अपनी अकल भगवान को बेच दी है । अब यह भगवान की जिम्मेदारी है कि अकल को सँभाले । आइन्स्टीन के दिमाग के बारे में पहले ही १० लाख डालर के बीमे कराये गये थे कि मरणोपरांत उनका दिमाग निकाल लिया जायेगा और रिसर्च लैबोरेटरी में यह खोजबीन की जायेगी कि उनका इतना शानदार दिमाग किस तरीके से हो गया है । अपने बारे में अभी तो मैं कुछ नहीं बताता, पर पीछे देख लेना हमारे दिमाग के बारे में । हमने ऐसी-ऐसी अजीब कल्पनायें की हैं कि सारे विश्व के ४५० करोड़ मनुष्य तराजू के एक पलड़े पर और हमारा बाट एक पलड़े पर । हम जमीन पर रहने वाले ४५० करोड़ मनुष्यों के भाग्य को बदल डालने का दावा करते हैं । उनको हैरानी से बचा लेने का दावा करते हैं । आदमी के उज्वल भविष्य की संरचना का दावा करते हैं और इन दिनों चल रही वे हवायें जिनसे एक-एक आदमी उलटा हो

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

जाता है–इन हवाओं को–फिजाओं को मोड़–मरोड़ डालने का दावा करते हैं हम । हमारी सम्पदाओं–विभूतियों का अता–पता नहीं है, किसी को । हमारे पास बहुत सम्पदायें हैं और हमारी सेवाओं के बारे में जिसे हर आदमी जानता है कि गुरुजी के दरवाजे पर से कोई भी आदमी खाली नहीं गया है । यह हमारा शान है । इस शान को हम कायम रखेंगे । आपकी मनोकामनाओं के बारे में हमारी सहायता तो नहीं के बराबर है, लेकिन अगर आप सौ मन मुसीबत लेकर आये थे तो २५ मन मुसीबत हमने मिटा दी है । आपकी सौ फीसदी जरूरतें हम कहाँ से पूरी करेंगे, लेकिन हम यकीन पूर्वक कह सकते हैं कि ईमानदारी के साथ अपनी सामर्थ्य के अनुसार हमने हर आदमी को पूरा–पूरा फायदा पहुँचाया है । मित्रो ! यह हमारे चमत्कार हैं जिसे आप जानते हैं और जो नहीं जानते, उन बहुत सी बातों को हमने छिपा कर रखी हैं । छिपाकर रखी गयी बातों को जानने के लिए उस समय तक इंतजार करना पड़ेगा आपको जब तक हमारा शरीर जिन्दा है । सबूत हमने सब जमाकर रखे हैं । हमने कहा है कि आदमी के पाँच शरीर होते हैं और हम पाँच शरीरों से काम करते रहे हैं । हमारे जाने के बाद आप देख लेना कि आचार्य जी एक नहीं–पाँच शरीरों से काम करते रहे हैं और बहुत सी बाते हैं जो हमने सब छिपाकर रखी हैं । आप देख लेना वे चमत्कार जिन्हें रहस्य कहते हैं, जादू कहते हैं, अतीन्द्रिय क्षमतायें कहते हैं, वे सब भी हमारे पास हैं ।

गायत्री को त्रिपदा कहते हैं । इसकी व्याख्या सत्यम्–शिवम्–सुन्दरम् के रूप में, सरस्वती, काली– लक्ष्मी के रूप में, ब्रह्मा–विष्णु–महेश के रूप में, सच्चिदानन्द के रूप में की जाती है । यह उसका दर्शन पक्ष है । दर्शन और प्रयोग–कर्मकाण्ड पढ़ना हो तो 'गायत्री महाविज्ञान' में हमने सब कुछ लिख दिया है, पढ़ लीजिये । और भी कर्मकाण्डों को देखना हो तो आद्यशंकराचार्य की 'गायत्री पुरश्चरण पद्धत्ति' तथा देवी भागवत ' पढ़िये । पर जो बात मैं बताना चाहता हूँ वह सिर्फ एक है कि आदमी के जीवन में गायत्री का प्रयोग कैसे किया जाय ? आदमी के जीवन में गायत्री का समावेश कैसे हो ? अध्यात्म थिअॅरी में नहीं व्यक्तित्व में होना चाहिए और व्यक्तित्व थिअॅरी में नहीं रहता, वह आदमी के साथ घुला रहता है । हमारे साथ व्यक्तित्व घुला हुआ है । अध्यात्म हमारे मस्तिष्क में, नस–नाड़ियों में, क्रियाकलापों में, गतिविधियों में, चिन्तन में–सबमें घुला हुआ है । हमारे तीन शरीर हैं, आपके भी तीन शरीर हैं । एक है हमारा कारण शरीर जिसको अन्तरात्मा या अन्तःकरण कहते हैं । उससे हमने उपासना की है, मस्तिष्क से साधना और शरीर से आराधना की ।

उपासना कहते हैं नजदीक आने को । लकड़ी और आग जब नजदीक आ जाते हैं तब लकड़ी आग हो जाती है । हमने अपने आपको भगवान् के लिए समर्पित किया है और कहा है कि हमारी शक्तियाँ आपकी हैं । हमारा धन आपका है । हमारी अकल आपकी है । आप हुकुम दीजिये कि हमें क्या करना चाहिए ? उपासना इसी चीज का नाम है और कोई उपासना नहीं होती यह विशुद्ध रूप से विचारपरक है, भावनापरक है, आस्थापरक है, निष्ठापरक है और श्रद्धा परक है । हमारी उपासना एक ह–समर्पण की, श्रद्धा की, हमने नाले की तरीके से अपने आपको नदी के साथ में मिला दिया है और उसमें मिल जाने की वजह से हमारी हैसियत, हमारी औकात, हमारी शक्ति और हमारा स्वरूप नदी जैसा बन गया है । आप भी अपने आपको मिलाइये न और भगवान से कहिए न कि आप हुकुम कीजिए–आज्ञा कीजिए और हम चलेंगे । हमारी उपासना हमारे ऊपर इसी रूप में छायी रही है । उपासना की निष्ठा को जीवन में हमने उसी तरीके से घोलकर रखा है जैसे एक पतिव्रता स्त्री अपने पति के प्रति निष्ठावान रहती है और कहती है–"सपनेहु आन पुरुष जग नाही ।" आपके पूजाकी चौकी पर तो कितने बैठे हुए हैं । ऐसी निष्ठा होती है कोई ? एक से श्रद्धा नहीं बनेगी क्या ? मित्रों ! हमारे भीतर श्रद्धा है । हमने एक का पल्ला पकड़ लिया है और सारे जीवनभर उसी का पल्ला पकड़े रहेंगे । हमारा प्रियतम कितना अच्छा है । उससे अधिक रूपवान, सौन्दर्यवान, दयालु और सम्पत्तिवान और कोई हो नहीं सकता । हमारा वही सब कुछ है वही हमारा भगवान है । आप ऐसी निष्ठा पैदा नहीं करेंगे क्या ? उपासना इसी को कहते हैं जिसमें समर्पण की भावना हो–माँगने की नहीं देने की भावना हो । जवान औरत आती है और अपना ईमान, अपना मन, अपनी भावना, अपना शरीर, अपना गोत्र, वंश सब पति के हाथ पर रख देती है । हमने भी सब कुछ रख दिया है अपने पति के हाथ पर और कहा है कि हम आपके हैं और आपके होकर के रहेंगे । आपके अलावा हमारा कौन है और हम किसके–नजदीक जायेंगे । किसका पल्ला पकड़ेंगे । आपका कहना नहीं मानेंगे तो किसका मानेंगे । आप ही हमारे हैं और हम आपके हैं । मित्रो ! यह उपासना है हमारी जिसने हमारी अन्तरात्मा को भक्ति से भर दिया है । भक्ति कहते हैं समर्पण को । इसी को 'अद्वैत' कहते हैं, 'एकत्व' कहते हैं ।

गायत्री उपासना का दूसरा स्वरूप है–साधना । साधना अपने आपको करने को कहते हैं । हमने अपने आपको कितना कसा है, शरीर को, इन्द्रियों को कितना कसा है । अपने व्यवहार को कितना कसा है । अपनी इच्छा–आकांक्षाओं और महत्वाकांक्षाओं को चूरा करके फेंक दिया है । अपने आप को धोने के लिए, परिष्कृत करने के लिए, हमने धोबी के तरीके से बेरहमी के साथ पीट–पीट कर धोया है और धुनिये के तरीके से अपने आपको धुना है । क्या आप अपने आप से जद्दोजेहद नहीं करेंगे ? अपने आप से लड़ेंगे नहीं क्या ? गायत्री का चमत्कार देखने का अगर आपका मन है, वास्तविक रूप में गायत्री से मोहब्बत है तो आप साधना के लिए अमादा हो जाइये साधक बनिये । साधना भगवान की नहीं अपनी होती है । भगवान पर क्या चंदन चढ़ायेंगे, चावल चढ़ायेंगे, स्नान–करायेंगे ? भगवान पर रहम कीजिए । पहले अपनी गंदगी धोइये, अपने को स्नान कराइये । अपना तो कराते नहीं हैं स्नान–भगवान को और करायेंगे । अपने आपको धोइये–साधना इसी को कहते हैं ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

मित्रो ! हमने आराधना की है । आराधना उसे कहते हैं जिससे सेवा पूजा करनी पड़ती है । सेवा हमने भगवान की की है । भगवान किसे कहते हैं ? सिद्धान्तों को कहते हैं, आदर्शों को कहते हैं । उन खिलौनों को भगवान नहीं कहते जिनको आपने भगवान मान रखा है । वे तो हमारी ध्यान-धारणा के लिए एक "मीडियम" हैं । आदर्शों को भगवान कहते हैं जिसके तईं हमारी गतिविधियाँ, हमारे पसीने का एक-एक चप्पा, समय का एक-एक कण लगा है । सत्प्रवृत्तियों के संवर्धन को-लोकमंगल को, संस्कृति की सेवा को आराधना कहते हैं । सूरज निकलने से लेकर डूबने तक हम बराबर भगवान के काम में लगे रहते हैं । यही हमारा भजन है, उपासना है, तप है और सेवा है । आपकी अन्तरात्मा को उछाल देने के लिए ही हमारी वाणी चलती है । जनता जनार्दन को ऊँचा उछाल देने के लिए हमारी लेखनी चलती रहती है । हमारी गतिविधियों का चप्पा-चप्पा इसी के लिए चलता रहता है लोकहित के लिए जनता जनार्दन के लिए, सत्प्रवृत्तियों के संवर्धन के लिए हम बराबर १२ घण्टे काम करते हैं । यह हमारी आराधना है, मसक्कत है । हमारा श्रम है-साधन है । भौतिक सामर्थ्य जो कुछ भी है हमने आराधना में लगा दिया है, चिन्तन साधना में और अन्तःकरण उपासना में लगा दिया है । यह हैं चमत्कारों के स्रोत । आप इसको सुनना, नोट करके रखना और जहाँ तक संभव हो सके वहाँ तक चलना । भागना नहीं आता दौड़ना नहीं आता तो छोटे बच्चे की तरीके से दीवाल पकड़ कर-गाड़ी के सहारे चलना सीखिये-एक कदम आगे बढ़िये । लोभ, मोह की हथकड़ी और बेड़ी को-जिसने आपको मजबूती से जकड़ रखा है-छोड़िये-थोड़ा ढीला करिये फिर देखिये आपको आगे बढ़ने का मौका मिलता है कि नहीं श्रेष्ठता की दिशा में, शालीनता की दृष्टि में, महानता की दिशा में एक कदम आगे बढ़ाइये । अपने बच्चों, संबंधियों मित्रों के प्रति हमने अपने कर्तव्य का पालन किया है । उनके लिए संस्कृति छोड़ी है, संस्कार छोड़े हैं, परम्परायें छोड़ी हैं और आप तो लालच करते हैं उनके लिए जमा करना चाहते हैं । जो हराम का खायेगा देख लेना उसका पेट फटेगा । पेट फटने का मतलब है-कुमार्गगामी, दुर्व्यसनी होना, हराम का पैसा किसी को भी नहीं फला है । हराम के पैसे ने आज तक किसी को भी निर्मल क्षीर नहीं बनाया है । वह अपनी दुर्गति कराकर रहेगा ।

मित्रो ! हमारे आध्यात्मिकता की यही निशानी है-एक हमारा पराक्रम-जिसमें हमने पुराने ढर्रे को-लोभ और लालच को तोड़ने की कोशिश की है और दूसरा पराक्रम-जिसमें हमने आगे बढ़ने की कोशिश की है । इस तरह हम सिद्धान्तों की दिशा में, उद्देश्यों की दिशा में, आगे बढ़ते चले गये और उनमें चमत्कार पाया । गायत्री माता बड़ी चमत्कारी है । इसमें सिद्धियों के जखीरे भरे पड़े हैं-साधनों के जखीरे भरे पड़े हैं और न जाने क्या क्या भरा पड़ा है । गायत्री की महत्ता को मैं किस मुँह से कहूँ जिसमें आदमी भौतिक जीवन में समृद्ध हो जाता है और आध्यात्मिक जीवन में सुसंस्कृत हो जाता है । हमने आध्यात्मिक जीवन में सुसंस्कारिता पायी है और भौतिक जीवन में समृद्धि । यह समृद्धि हमारे काम आयी है और हमारे मित्र और कुटुम्बियों में से हर एक के काम आयी है । ऐसी समृद्धि आप नहीं इकट्ठी करेंगे क्या ?

आज गायत्री जयंती के दिन मेरा भाव और मन था कि आपको अपने जीवन के रहस्य, निश्चय और अपने विश्वासों को आपके सामने परदे की तरीके से खोल करके ही रहूँ-रहस्यों को बताऊँ । आपको चमत्कारों की दिशा में गायत्री माता का अनुग्रह प्राप्त करने की पूरी-पूरी छूट है, लेकिन इस दिशा में चलिये तो सही । धीरे चलिये, पर शुरूआत तो करिये । शुरूआत करने के लिए हमने प्रज्ञा अभियान चलाया है । इससे दुनिया का भला होगा कि नहीं, पर आपका जरूर भला हो जायेगा । आप अपने आप पर नियंत्रण करते और उदार बनाने में जरूर समर्थ हो जायेंगे । आप समर्थ हो गये तो दुनिया जरूर समर्थ हो जायगी । साँचे हमारे सही होंगे तो हम सैकड़ों खिलौने अच्छे ढालने में समर्थ हो सकेंगे । साँचे ही अगर ठीक न हो सकेंगे तो हम दुनिया को कैसे ढालेंगे ? आप पहले अपने आपको बदल डालिये । हमने अपने आपको जितना बनाया है, भगवान हमें उसी हिसाब से अनुग्रह देते हुए चले गये । यही है हमारा रहस्य और यही है हमारी आत्मकथा । यही है हमारे सारे के सारे रहस्यों का उद्घाटन जो आज गायत्री जयंती के दिन हमने आप लोगों के सामने अपना जी खोलकर रख दिया है । आपको करना हो तो इसी तरीके से करना-न करना हो तो आपकी मर्जी । आपको खेल-खिलवाड़ पसंद है तो ठीक है बच्चों की तरीके से खेल-खिलवाड़ ही करते रहिए । इसमें भी क्या हर्ज है । मनोरंजन ही सही, लेकिन आप लम्बी चीजें नहीं पा सकेंगे । लम्बी चीजें-महत्वपूर्ण चीजें पाने के लिए-जिसकी आज बहुत जरूरत है, आपको यही करना चाहिए । अब हम जगह खाली कर रहे हैं और आपको उस जगह पर बिठा रहे हैं और यह कहते हैं कि जैसी शानदार जिन्दगी हमने जी ली, चमत्कारों से भरी हुई जिन्दगी हमने जी ली । जैसे महिमा और गरिमा हमने प्राप्त करली, आपको हम दावत देते हैं आज गायत्री जयंती के दिन कि यह रास्ता आपके लिए भी खुला हुआ है । जरा हिम्मत दिखाइये न-हम दावत देते हैं-आप आइये और जिस रास्ते पर हम चले हैं आप भी चलिए । जो हिम्मत हमने दिखायी है आप भी दिखाइये और इसी जीवन में धन्य और कृत-कृत्य हो जाइये । अपने आपको कृतकृत्य बना लीजिए और सारे समाज को धन्य बना दीजिए । ऐसा मौका फिर कभी पायेंगे क्या ?

आज गायत्री जयंती के दिन मेरे मन के उद्गार यही थे जो मैंने आप लोगों के सामने पेश कर दिये-व्याख्यान के रूप में नहीं वरन् सिर्फ इसलिए कि आप इस पर विचार करें, और गौर करने के बाद में ऐसे कदम बढ़ायें जैसे हमने अपने जीवन में बढ़ाये । इसी आशा के साथ आज हम आप लोगों को विदा करते हैं कि आप इन पर बार-बार विचार करेंगे और बार-बार यह कोशिश करेंगे कि इन सिद्धान्तों को जहाँ तक संभव हो वहाँ तक जीवन में उतारने की कोशिश करेंगे । आज की बात खतम ।

सर्वेभवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु माकश्चिद दुख माप्नुयात ✻

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

एक अंतरंग कार्यकर्ता गोष्ठी

(२५ मार्च १९८७)

इस अंक में एक अंतरंग गोष्ठी का प्रसंग प्रस्तुत है जिसमें परपूज्य गुरुदेव ने अपने कक्ष से अपने परिजनों को जो शांतिकुंज गायत्री तपोभूमि व क्षेत्रों में विखरे पड़े हैं, संबोधित करते हुए उनसे आदर्श कार्यकर्ता के रूप में विकसित होने का आग्रह किया था । यह ऐतिहासिक गोष्ठी मूलतः काफी लम्बी थी, संपादन के साथ पाठकों के लिए प्रस्तुत है ।

अपने बच्चों से, साथियों से, मिशन के कार्यकर्ताओं से मिलने का मेरा बड़ा मन था । पर संयोग नहीं मिल पा रहा था । पहले मन यह था कि यहाँ बुलाऊँ और बुला करके एक-एक से बात करूँ और अपने मन को खोलकर आप सबके सामने रखूँ और आपकी नब्ज भी देखूँ , पर अब यह संभव नहीं रहा । कितने कार्यकर्ता हैं ? यहाँ शांतिकुंज के स्थायी कार्यकर्ता एवं सामयिक स्वयं संवक आये हुए हैं । एक समुदाय जो शुरू में आया था वह समुदाय, न केवल यहाँ का, वरन् गायत्री तपोभूमि का, वह भी हमारा समुदाय है । सब लोगों को बुलाने के लिए मैं विचार करता रहा कि क्या ऐसा संभव है कि एक-एक करके आदमियों को बुलाऊँ और अपने जीवन के अनुभव सुनाऊँ और अपनी इच्छा और आकांक्षा बताऊँ । लेकिन एक-एक करके बुलाने में तो मालूम पड़ा कि यह संख्या तो इतनी बड़ी है कि इनको बुलाने में महीनों लगाऊँ तो भी पूरा नहीं हो सकेगा । इसलिए आप यह मानकर चलिए कि आप से व्यक्तिगत बात की जा रही है और एकांत में, अकेले में बुलाकर के, कंधे पर हाथ रखकर के, और आप से ही कहा जा रहा है किसी और से नहीं ।

आप इन बातों को अपने जीवन में प्रयोग करेंगे तो मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि आपकी ऐसी उन्नति होती चली जायगी जैसी कि एक छोटे से देहात में जन्म लेने के बाद हम उन्नति करते चले आये और उन्नति के ऊँचे शिखर पर जा पहुँचे । आपके लिए भी यह रास्ता खुला हुआ है । आपके लिए भी सड़क खुली हुई है । लेकिन अगर आप ऐसा नहीं कर पायेंगे तो आप यह विश्वास रखिये कि आप घटिया आदमी रहे होंगे किसी भी समय में और घटिया ही रह कर जायेंगे । भले से ही आप शांतिकुंज में रहें या भले से ही गायत्री तपोभूमि में रहें । आपकी कोई कहने लायक महत्वपूर्ण प्रगति न हो सकेगी और आप वह आदमी न बन सकेंगे जैसे कि बनाने की मेरी इच्छा थी ।

अब क्या करना चाहिए ? आपको वह काम करना चाहिए जो कि हमने किया है । क्या किया है आपने ? क्रिया-कलाप गिनाऊँ आप को ? नहीं क्रिया-कलाप नहीं गिनाऊँगा । क्रियाकलाप गिनाऊँगा तो मुझे वहाँ से चलना पड़ेगा जहाँ से कांग्रेस का वालन्टियर हुआ और फिर यहाँ आकर के होते-होते वहाँ आ गया जहाँ अब हैं । यह बड़ी लम्बी कहानी है । उन सब कहानियों का अनुभव और निष्कर्ष निकालना आपके लिए मुश्किल हो जायगा । उस पर तो ध्यान नहीं देता, लेकिन मैं सैद्धांतिक रूप से बताता हूँ ।

हमने आस्था जगायी श्रद्धा जगायी । निष्ठा जगायी । निष्ठा, श्रद्धा और आस्था किसके प्रति जगायी ? व्यक्ति के ऊपर ? व्यक्ति तो माध्यम होते हैं । हमारे प्रति गुरुजी के प्रति श्रद्धा है । बेटा यह तो ठीक है, लेकिन वास्तव में सिद्धांतों के प्रति श्रद्धा होती है । आदर्शों के प्रति श्रद्धा होती है । व्यक्तियों के प्रति श्रद्धा, मूर्तियों के प्रतिश्रद्धा , देवताओं के प्रति श्रद्धा टिकाऊ नहीं होती । इसका कोई ज्यादा महत्व नहीं । महत्वपूर्ण वह जो सिद्धांतों के प्रतिनिष्ठा होती है । हमारी सिद्धांतों के प्रतिनिष्ठा रही । आजीवन वहाँ से जहाँ से चले-जहाँ से विचार उत्पन्न किया है, वहाँ से लेकर निरंतर अपनी श्रद्धा की लाठी को टेकते-टेकते यहाँ तक चले आये और यहाँ आ पहुँचे । अगर यह श्रद्धा की लाठी हमने पकड़ी न होती तो तब संभव है कि हमारा चलना-इतना लम्बा सफर पूरा न होता । यदि सिद्धांतों के प्रति हम आस्थावान न हुए होते तो संभव है कि कितनी बार भटक गये होते और कहाँ से कहाँ चले गये होते और हवा का झोंका उड़ाकर हमको कहाँ ले गया होता ? लोभों के झोंके, मोहों के झोंके, नामवरी के झोंके, यश के झोंके, दबाब के झोंके ऐसे हैं

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

कि आदमी को लम्बी राह पर चलने के लिए मजबूर कर देते हैं और कहीं से कहीं घसीट ले जाते हैं । हमको भी घसीट ले गये होते । ये आदमियों को घसीट ले जाते हैं । बहुत से व्यक्ति थे जो सिद्धांतवाद की राह पर चले और भटक करके कहाँ से कहाँ जा पहुँचे ।

भस्मासुर का पुराना नाम बताऊँ अपको । मारीचि का पुराना नाम बताऊँ आपको । ये सभी योग्य और तपस्वी थे । पहले जब उन्होंने उपासना-साधना शुरू की थी, तब अपने घर से तप करने के लिए हिमालय पर गये थे । तप और पूजा-उपासना के साथ-साथ में कड़े नियम और व्रतों का पालन किया था तब वे बहुत मेधावी थे, लेकिन समय और परिस्थियों के भटकाव में वे कहीं के मारे कहीं चले गये । भस्मासुर का क्या हो गया ? मारीचि का क्या हो गया ? जिसको प्रलोभन सताते हैं, वे भटक जाते हैं और कहीं के मारे कहीं चले जाते हैं ।

तो श्रद्धा आदमी को टिकाऊ बनाये रखने के लिए एक रस्सी या एक सम्बल है जिसके सामने-जिसको पकड़ करके मनुष्य सीधी राह पर चलता हुआ चला जाता है । भटक नहीं पाता । आप भटकना मत । घर से आप चले थे न, यह विचार लेकर चले थे न कि हम लोक कल्याण के लिए-जन मंगल के लिए घर छोड़कर चले गये हैं । आप जब कभी भी भटकन आये तो आप अपने उस दिन को-उस समय की मन; स्थिति को याद कर लेना जबकि आपके भीतर से श्रद्धा का एक अंकुर उगा था और अंकुर उगकर के फिर आपके भीतर एक उमंग पैदा हुई थी और उमंग को लेकर के आप यहाँ आ गये थे । आप को याद है जब आप यहाँ आये थे , जिस दिन आप आये थे उसी मन को याद रखना ।

साधु-बाबा जी जिस दिन घर से निकलते हैं, उस दिन यह श्रद्धा लेकर निकलते हैं कि हमको संत बनना है । महात्मा बनना है, ऋषि बनना है, तपस्वी बनना है । लेकिन थोड़े दिनों बाद वह जो उमंग होती है वह ढीली पड़ जाती है और ढीली पड़ने के बाद में संसार के प्रलोभन उनको खींचते हैं । किसी की बहिन-बेटी की ओर देखते हैं, किसी से पैसा लेते हैं । किसी को चेला-चेली बनाते हैं । किसी की हजामत बनाते हैं । फिर जाने क्या से क्या हो जाता है । पतन का मार्ग यहीं से आरंभ होता है । ग्रैविटी-गुरुत्वाकर्षण पृथ्वी की हर चीज को ऊपर से नीचे की ओर खींचती है । संसार भी एक ग्रैविटी है जो ऊपर से नीचे की ओर खींचती है । आप लोगों से सबसे मेरा यह कहना है कि आप ग्रैविटी से खिंचना मत रोज सबेरे उठकर भगवान का नाम लिया कीजिये और भगवान के नाम के साथ में यह विचार किया कीजिये कि हमने किन सिद्धांतों के लिए समर्पण किया था । और पहला कदम जब उठाया था तो किन सिद्धांतों के आधार पर उठाया था उन सिद्धांतों को रोज याद कर लिया कीजिये । रोज याद किया कीजिए कि हमारी उस श्रद्धा में, और उस निष्ठा में, उस संकल्प में और उस त्यागवृत्ति में कहीं फर्क तो नहीं आ गया । संसार ने हमको खींच तो नहीं लिया । वातावरण ने हमको गलीज तो नहीं बना दिया । कहीं हम कमीने लोगों की नकल तो नहीं करने लगे । आप यह मत करना ।

यह नहीं करेंगे तो क्या हो जायेगा ? यदि आपकी श्रद्धा कायम रही तो फिर एक नयी चीज पैदा होगी । बीज यदि ठीक तरीके से बोया गया है तो उसमें से अंकुर जरूर पैदा होगा । फिर क्या पैदा होगा-आपको काम करने की लगन पैदा होगी । काम करने की ऐसी लगन-ऐसी लगन की आप ने जो काम पूरा किया है । उसको पूरा करने के लिए कितने मजबूत कदम उठाये जायें । कितने तेज कदम उठाये जायें, यह आपसे करते ही बनेगा आप फिर यह नहीं कहेंगे कि हमने छः घण्टे काम कर लिया, चार घण्टे काम कर लिया । यहाँ बैठे हैं, वहाँ बैठे हैं । ओवरटाइम लाइये और ज्यादा काम हम क्यों करेंगे ? नहीं फिर आप काम किये बिना रह नहीं सकेंगे ।

हमारा भी यही हुआ । श्रद्धा जब उत्पन्न हुई तो हमने यह सोचा कि कहीं ऐसा न हो कि प्रलोभन हमको खींचने लगें । तो वहाँ से घर की संपत्ति को त्याग करने से लेकर के स्त्री के जेवरों से लेकर के और जो कुछ भी था, सबको त्याग करते चले आये कि कहीं प्रलोभन खींचने नहीं लगें। प्रलोभन खींचने नहीं पाये और वह श्रद्धा हमको निरंतर बढ़ाती हुई चली आयी । फिर उसने लगन को कम नहीं होने दिया । घियामण्डी के मकान में १७ वर्ष तक बिना बिजली के हमने काम किया । न उसमें पंखा था न उसमें बल्ब । मकान मालिक से झगड़ा हो गया था, सो मकान मालिक कहता था कि मकान खाली करो तो उसने बिजली के सैंक्शन पर साइन नहीं किये थे और बिजली हमको नहीं मिली । १७ वर्षों तक हम केवल मिट्टी के तेल की बत्ती जलाकर रात को दो बजे से लेकर सबेरे तक अपना पूजा-पाठ से लेकर के और अपना लेखन कार्य तक बराबर करते रहे । पंखा था नहीं, घोर गर्मियों के दिनों में लू में भी काम करते रहे । १८ घण्टे काम करते रहे । यह काम हमने किया ।

अब क्या बात रह गयी-दो बातों के अलावा । दो बातों में से आप में से हर आदमी को देखना चाहिए कि हमारी श्रद्धा कमजोर तो नहीं हुई । एक और हमारी लगन कमजोर तो नहीं हुई आर्थात् परिश्रम करने के प्रति जो हमारी उमंग और तरंग होनी चाहिए , उसमें कमी तो नहीं आ रही । किसान अपने घर के काम समझता है तो सबेरे से उठता है और शाम को रात के नौ बजे-१०बजे तक बराबर घर के कामों में लगा रहता है । वह १८ घण्टे काम करता है । किसी से शिकायत नहीं करता कि

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

हमको १८ घण्टे रोज काम करना पड़ता है । हमें अवकाश नहीं मिला या हमको इतवार की छुट्टी नहीं मिली और हमको यह नहीं हुआ वह नहीं हुआ, इसकी कोई शिकायत नहीं करता क्योंकि वह समझता है कि हमारा काम है । यह हमारी जिम्मेदारी है । खेत को रखना, जानवरों को रखना और बाल-बच्चों की देखभाल करना यह हमारा काम है । जिम्मेदारी हर आदमी को दिन-रात काम करने के लिए लगन लगाती है और वह आपके प्रति भी है । आपको भी व्यक्तिगत जीवन में अपनी श्रद्धा को कायम रखना-एक और अपनी लगन को जीवन्त रखना-दो काम तो आपके व्यक्तिगत जीवन के हैं, वह आपको करने चाहिए ।

अब एक और नयी बात शुरू करते हैं । नयी बात यह है कि यह मिशन हमने कितने परिश्रम से बनाया । कितना विस्तार इसका हो गया, कितना फैल गया, कितना खुल गया । कितना विस्तार होता जाता है । आप सुनते रहते हैं न-हजार कुण्ड के यज्ञीय समाचार आपको मिलते हैं । आपको २४०० शक्ति पीठों की स्थापना की बात मिलती है । इस साल जो युगनिर्माण सम्मेलन हुए हैं-इन सम्मेलनों की बात याद है । यहाँ तक कि शिविर चलते हैं उनकी बात याद है । गवर्नमेन्ट के कितने शिविरों को हम चलाते हैं, इसकी बात याद है । यहाँ का फिल्म स्टूडियो, टी.वी. स्टूडियो, फिल्म चलाने वाले हैं-यह सब बातें आपको याद हैं । बहुत बड़ा काम है । बहुत बड़ी योजना है । इस काम को हमने आरंभ किया, लेकिन अब यह जिम्मेदारी हम आपके सुपुर्द करते हैं । आप में से हर आदमी को हम यह काम सौंपते हैं कि आप हमारे बच्चे के तरीके से हमारी दुकान को चलाइये, बन्द मत होने दीजिये । हम तो अपनी बिदाई ले जायेंगे, लेकिन जिम्मेदारी आपके पास आयेगी । आप कपूत निकलेंगे तो, तो फिर आदमी आपकी बहुत निंदा करेगा और हमारी बहुत निंदा करेगा ।

कबीर का बच्चा ऐसा हुआ था जो कबीर के रास्ते पर चलता नहीं था तो सारी दुनिया ने उससे यह कहा-'बूड़ा वंश कबीर का उपजा पूत कमाल ।' आपको कमाल कहा जायगा और यह कहा जायगा कि कबीर तो अच्छे आदमी थे, लेकिन उनकी संतानें दो कौड़ी की भी नहीं हैं । आपको-संतानों को दो कौड़ी की पैदा नहीं करना है । आपको इस कार्य का विस्तार करना है । जो काम हम करते रहे हैं. वह अकेले हमने नहीं किया । मिलजुल करके ढेरों आदमियों के सहयोग से किया है और यह सहयोग हमने प्यार से खींचे हैं, भावना से खींचे हैं, लगन से खींचे हैं । समझा करके खींचे हैं, आत्मीयता के आधार पर खींचे हैं । ये गुण आपके भीतर पैदा हो जायें तो जो आदमी आपके साथ-साथ काम करते रहते हैं, उनको भी मजबूत बनायें रहेंगे और नये आदमी जिन की कि इससे आगे भी आवश्यकता पड़ेगी । अभी ढेरों आदमियों की आवश्यकता पड़ेगी । आपको संकल्प का नाम याद है न-'नयायुग लाने का संकल्प ।' नयायुग लाने का संकल्प दो आदमियों का काम है, चार आदमियों का काम है, हजारों आदमियों का काम है । जो काम हमने अपने जीवन में किया है वही काम आपको करना है ।

नये आदमियों को बुलाने का भी आपका काम है । कैसे बुलाना ? यहाँ शांतिकुंज में कितने आदमी काम करते हैं ? यहाँ २५० के करीब आदमी काम करते हैं । एक कुटुम्ब बनाकर बैठे हैं और उस कुटुम्ब को हम कौन सी रस्सी से बाँधे बैठे हैं ? प्यार की रस्सी से बाँधे हुए हैं , आत्मीयता की रस्सी से बाँधे हुए हैं, भावना की रस्सी से बाँधे हुए हैं । ये रस्सियाँ आपको तैयार करनी चाहिए ताकि आप नये आदमियों को बाँध करके अपने पास रख सकें और जो आदमी वर्तमान में हैं आपके पास उनको मजबूती से जकड़े रह सकें । नहीं तो आप इनको भी मजबूती से जकड़े नहीं रह सकेंगे, यह भी नहीं रहेंगे । इनकी सफाई भी आपको करनी है । आत्मीयता अगर न होगी और आपका व्यक्तित्व न होगा तो आपके लिए इनकी सफाई करना भी मुश्किल हो जाएगा ।

इस लिए क्या करना चाहिए ? आपके पास एक ऐसी प्रेम की रस्सी होनी चाहिए आपके पास ऐसी मिठास की रस्सी होनी चाहिए । आपके पास अपने व्यक्तिगत जीवन का उदाहरण पेश करने की ऐसी रस्सी होनी चाहिए जिससे प्रभावित करके आप आदमी के हाथ जकड़ सकें, पैर जकड़ सकें, काम जकड़ सकें । सारे के सारे को जकड़ करके जिन्दगी भर अपने साथ बनाये रख सकें । यह काम आपको भी विशेषता के रूप में पैदा करना पड़ेगा । संस्थायें इसी आधार पर चलती हैं । संस्थाओं की प्रगति इसी आधार पर टिकी है । संस्थायें जो नष्ट हुई हैं, संगठन जो नष्ट हुए हैं, इसी कारण नष्ट हुए हैं । चलिए मैं आपको एक-दो उदाहरण सुना देता हूँ ।

एक मैं उदाहरण सुनाऊँगा-स्वामी श्रद्धानन्द का । उन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन में अपने मकान को बेच करके गुरुकुल कांगड़ी नाम के एक छोटे से गाँव में कायम बनाया । इस विद्यार्थियों को [illegible] रखने की हैसियत नहीं थी, इसलिए पढ़ाना भी उनने ही शुरू कर दिया । रसोइया रखने की हैसियत नहीं थी, इसीलिए खाना पकाना भी उन्होंने शुरू कर दिया । यह लगन, यह निष्ठा जिन किन्हीं ने भी देखी, वही आदमी प्रभावित होता हुआ चला गया, वही सहयोगी होता हुआ चला गया । यह उनका विश्वास था जिसने मकान बेच [illegible] लगन थी [illegible] से लेकर के खाना पकाने तक के और पढ़ाने तक के-और बच्चों के कपड़े

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

धोने तक के-सारे के सारे काम अपने जिम्मे लिये । उनकी लगन, उनकी श्रद्धा-बस यही दो शक्तियाँ जागीं, बस मैग्नेट बन गया-चुम्बक बन गया और लोगों का पैसा भी आता चला गया । यह भी होता हुआ चला गया-बढ़ता हुआ चला गया । गुरुकुल कांगड़ी बन गयी और स्वामी श्रद्धानन्द की वजह से ४०-४५ आदमी उनके जमाने में-गुरुकुल कांगड़ी जिन दिनों स्थापित हुई थी-ऐसे पैदा हुए जिन्होंने हिन्दुस्तान में तहलका मचा दिया । आर्य समाजियों में नया जीवन फूँक दिया । नये गुरुकुल उन्हीं दिनों खुले थे और ढेरों के ढेरों गुरुकुल खुले थे । स्वामी जी ने उनको आज्ञा दी थी कि जैसा गुरुकुल यहाँ का गुरुकुल कांगड़ी है-तुम अपने क्षेत्र में वैसा ही गुरुकुल कायम करना । तो उन्हीं दिनों २० के करीब गुरुकुल स्थापित हुए थे ।

मैं अभी और उदाहरण सुनाता हूँ आपको । प्रेम महाविद्यालय का नाम सुना है आपने । हमारी गायत्री तपोभूमि से कुछ आगे जाकर के वृन्दावन रोड़ पर बना हुआ है । पहले जहाँ प्रेम महाविद्यालय था-राजा महेन्द्र प्रताप ने अपनी जमीन तो दान कर दी थी, बना भी दिया, लेकिन उसको चलाने के लिए बाबू सम्पूर्णानन्द और आचार्य जुगुलकिशोर , ब्रह्मचारी कृष्ण चन्द्र जैसे पहली श्रेणी के लोग आये जिनका कि व्यक्तिगत चरित्र-ज्ञान नहीं चरित्र और लगन उनमें थी । उन्होंने क्या काम किया कि प्रेम महाविद्यालय में जो विद्यार्थी पढ़ने आते थे, उनमें ऐसी लगन फूँक दी-ऐसे प्राण फूँक दिये ऐसी जान फूँक दी कि यू. पी. कांग्रेस का सारे का सारा काम सत्याग्रह के दिनों में उन्होंने किया । यू. पी. सत्याग्रह में किसी जमाने में जब नमक सत्याग्रह प्रारंभ हुआ था तब पहली श्रेणी का था जिसमें कि इतने आदमी गिरफ्तार हुए, इतने आदमी जेल गये । इतने आन्दोलन हुए । इस सब का श्रेय ६० फीसदी श्रेय जो है प्रेम महाविद्यालय के विद्यार्थियों को था जो पहले साल में पढ़े । दूसरे साल में पढ़े , तीसरे साल में पढ़े । उन पढ़े हुए विद्यार्थियों ने इतना हा-हाकार मचा दिया कि गवर्नमेन्ट को प्रेम महाविद्यालय बन्द करना पड़ा । जितने भी विद्यार्थी थे चाहे वे सत्याग्रह कर रहे थे चाहे नहीं कर रहे थे-प्रेम महाविद्यालय के सारे विद्यार्थियों को मकानों से पकड़-पकड़ करके जेल में बन्द कर दिया कि इनको बागी बना दिया गया है ।

दो उदाहरण-एक मैंने श्रद्धानन्द का उदाहरण सुनाया दूसरा मैंने प्रेम महाविद्यालय का उदाहरण सुनाया । लगन की बात कह रहा हूँ , आप से लगन की और आप से श्रद्धा की बात कह रहा हूँ । श्रद्धा और लगन श्रद्धा और लगन । लगन आदमी के अन्दर हो तो सौ गुना काम करा लेती है । इतना काम करा लेती है-इतना काम करा लेती है कि हमारे काम को देखकर आपको आश्चर्य होगा । इतना साहित्य लिखने से लेकर इतना बड़ा संगठन खड़ा करने तक और इतनी बड़ी क्रांति करने से लेकर के इतने आश्रम बनाने तक जो काम शुरू किये हैं वे कैसे हो गये ? बेटा, यह श्रम है श्रम । यह हमारा श्रम है । यदि हमने श्रम से जी चुराया होता तो उसी तरीके से घटिया आदमी होकर के रह जाते जैसे कि अपना पेट पालना ही जिनके लिए मुश्किल हो जाता है । चोरी-ठगी से, चोरी-चालाकी से जहाँ कहीं से मिलता पेट भरने के लिए, कपड़े पहनने के लिए और अपना मौज-शौक पूरा करने के लिए पैसा इकट्ठा करते रहते, पर इतना बड़ा काम संभव न होता ।

तो क्या करना चाहिए । बेटे, मैं नही बताता हूँ । कैसे कहूँ आपको, देख लीजिये और हमको पढ़ लीजिये । हमारी श्रद्धा को पढ़ लीजिये । जिस दिन से हमने साधना के क्षेत्र में, सेवा के क्षेत्र में, अध्यात्म के क्षेत्र में कदम बढ़ाया, उस दिन से लेकर आज तक हमारी निष्ठा ज्यों की त्यों बनी हुई है । इसमें कहीं एक राई-रत्ती, सुई के नोंक के बराबर फर्क नहीं आया और भविष्य में भी कोई फर्क नहीं आयेगा । जिस दिन तक हमारी लाश उठेगी उस दिन तक आप कभी यह नहीं सुनेंगे कि इन्होंने अपनी श्रद्धा डगमगा दी । इन्होंने अपने विश्वास में कमी कर दी ।

एक जगह नारियल बिक रहे थे । एक मछुआरे ने दाम पूछा, तो उसने आठ आने बताये । वह सस्ते में देने की जिद करने लगा । दुकानदार ने कहा-एक मील आगे चले जाओ वहाँ नारियल का बगीचा है । सस्ते वहाँ मिलेंगे । वहाँ पहुँचा तो भाव चार आने का था । वह और सस्ता माँगने लगा, तो दुकानदार ने कहा-पेड़ पर चढ़ जाओ और मुफ्त में तोड़ लाओ । वह चढ़ गया । कई नारियल लिये । पर नीचे झाँक कर देखा, तो ऊँचाई से गिरने का भय लगने लगा ।

उसने भगवान् से प्रार्थना की यदि सही सलामत नीचे पहुँचूँ, तो पाँच ब्राह्मण को भोजन कराऊँगा एवं खूब दान दूँगा । धीरे-धीरे सँभल-सँभल कर उतरा । आधी दूरी पर आ गया, तो बोला दो ब्राह्मण को भोजन कराऊँगा , और नीचे उतरा तो एक की बात करने लगा । जब जमीन पर आ गया, तो बोला ब्रह्म सबके भीतर है । मेरे और परिवार के भीतर भी तो ब्रह्म होने के कारण सभी ब्राह्मण हैं । हम सब लोग नित्य की तरह साथ भोजन करेंगे तो ब्रह्मभोज का संकल्प सहज ही पूरा हो जायेगा ।

आपत्ति के समय परोपकार करने की मनौती प्रायः इसी प्रकार अपूर्ण रह जाती है ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

आप हमारी वंश परम्परा को जानिये और हम मरने के बाद में जहाँ कहीं भी रहेंगे भूत बन कर देखेंगे । हम देखेंगे कि जिन लोगों को हम पीछे छोड़ कर आये थे, उन्होंने हमारी परम्परा को निबाहा है और अगर हमको यह मालूम पड़ा कि इन्होंने हमारी परम्परा नहीं निबाही और इन्होंने व्यक्तिगत तानाबाना बुनना शुरू कर दिया और अपना व्यक्तिगत अहंकार, अपनी व्यक्तिगत यश कामना और व्यक्तिगत धन-संग्रह करने का सिलसिला शुरू कर दिया । व्यक्तिगत रूप से बड़ा आदमी बनना शुरू कर दिया, तो हमारी आँखों से आँसू टपकेंगे और जहाँ कहीं भी हम भूत होकर के पीपल के पेड़ पर बैठेंगे, वहाँ जाकर के हमारी आँखों से जो आँसू टपकेंगे - आपको चैन से नहीं बैठने देंगे और मैं कुछ कहता नहीं हूँ । आपको हैरान कर देंगे हैरान । दुर्वासा ऋषि के पीछे विष्णु भगवान का चक्र लगा था तो दुर्वासा जी तीनों लोकों में घूम आये थे, पर उनको चैन नहीं मिला था । आपको भी चैन नहीं मिलेगा । अगर हमको विश्वास देकर के विश्वासघात करेंगे तो मेरा शाप है आपको कि आपको चैन नहीं पड़ेगा कभी भी और न आपको यश मिलेगा, न आपको ख्याति मिलेगी, न उन्नति होगी । आपका अधःपतन होगा । आपका अपयश होगा और आपकी जीवात्मा आपको मारकर डाल देगी । आप यह मत करना अच्छा

मुझे अपने मनकी बात कहनी थी सो मैंने कह दी । अब करना आपका काम है कि इन बतायी हुई बातों को किस हद तक कार्यस्त करें और कहाँ तक चलें । बस ये ही मोटी-मोटी बातें थीं जो मैंने आपसे कही । बस मेरा मन हलका हो गया । अब आप इन्हें सोचना । मालूम नहीं आप इन्हें कार्य रूप में लायेंगे या नहीं लायेंगे । यदि लायेंगे तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी और मैं समझूँगा कि आज मैंने जी खोलकर आपके सामने जो रखा था आपने उसे ठीक तरीके से पढ़ा , समझा और जीवन में उतार करके उसी तरह का लाभ उठाने की संभावना शुरू कर दी जैसे कि मैंने अपने जीवन में की ।

यह रास्ता आपके लिए भी खुला है, भले आप पीछे-पीछे आइये साथ आइये । हमको देखिये और अपने आपको ठीक करिये । बस आज की बात समाप्त । 卐

द्वापर युग में मालप देश में शिखिध्वज नाम का एक राजा था / उसकी पत्नी सौराष्ट्र की राजकन्या थी-नाम था उसका चूड़ाला / बहुत समय तक दोनों उपभोग में निरत रहे / पीछे उनके मन में आत्म ज्ञान की आकांक्षा हुई / दोनों अपने-अपने ढंग से इस प्रयास में अग्रसर रहने लगे / रानी ने संक्षेप में समझ लिया था कि दृष्टिकोण को बदल लेना और अन्तःकरण को साध लेना ही ब्रह्मज्ञान है / सो उस उपलब्धि पर वह बहुत प्रसन्न रहने लगी / राजा को भी सिखाती, तो वे स्त्री के प्रति हीनभावना रखने के कारण उसकी बात पर ध्यान नहीं देते थे /

राजा को कर्मकाण्डपरक तप-साधना में विश्वास था, सो वे एक दिन चुपचाप रात्रि में उठ कर वन चले गये / रानी ने योगबल से जान लिया, सो राजकाज स्वयं चलाने लगीं / राजा के कुछ काल के लिए प्रवास जाने की बात कह दी /

एक दिन उनने राजा से मिलने की इच्छा की, सो सूक्ष्म शरीर से वहीं जा पहुँची, जहाँ राजा था / वेष ऋषि कुमार का बनाया / परिचय पूछने पर अपने को नारद पुत्र कहा / राजा के साथ उनकी ज्ञान चर्चा चल पड़ी / पर संध्या होते ही वे दुःखी होने लगे / बोले मुझे दुर्वासा का शाप लगा है / दिन में पुरुष और रात्रि में नारी हो जाता हूँ / आपके पास टिक सकूँगा /

राजा ने कहा-आत्मा न स्त्री है, न पुरुष / न इनमें कोई छोटा है, न बड़ा / उसने जैसी कोई बात नहीं है / आप हमारे मित्र हो गये हैं, प्रसन्नतापूर्वक साथ में रहें / कई दिन बीत गये / मित्रता प्रगाढ़ हुई, तो स्त्री बने ऋषि कुमार ने कहा-मेरी कामना-वासना प्रबल हो रही है / रुका नहीं जाता / राजा ने कहा आत्मा पर कुसंस्कार न पड़े, तो शरीर क्रियाओं में कोई दोष नहीं है / उनका काम-क्रीड़ा प्रकरण चल पड़ा / न राजा को खेद था, न पश्चात्ताप / अब वे स्त्री-पुरुष को समान मानने लगे थे /

चूड़ाला ने अपना असली रूप प्रकट किया और राजा को महल में वसीट लाई / स्त्री को हेय मानने और उसके परामर्श की उपेक्षा करने का हेय भाव उनके मन से विदा हो गया / राजा ने चूड़ाला को अपना गुरु माना प्रसन्नतापूर्वक राजकाज चलाते हुये आत्म ज्ञान में लीन रहे /

वशिष्ट ने कहा-हे राम आत्मा एक है / स्त्री-पुरुष होने से कोई अंतर नहीं आता / दृष्टिकोण बदल जाने पर ही मनुष्य ब्रह्मज्ञानी हो जाता है /

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी
त्रिपदा गायत्री के तीन चरण व उनका मर्म

पूज्यवर द्वारा

(४ जून १९८० को दिया गया प्रवचन)

गायत्री मंत्र साथ-साथ -

ॐ भूर्भुवः स्वःतत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

मित्रो ! हमारा सत्तर वर्ष का सम्पूर्ण जीवन सिर्फ एक काम में लगा है और वह है-भारतीय धर्म और संस्कृति की आत्मा की शोध । भारतीय धर्म और संस्कृति का बीज है-गायत्री मंत्र । इस छोटे से चौबीस अक्षरों के मंत्र में वह ज्ञान और विज्ञान भरा हुआ पड़ा है जिसके विस्तार में भारतीय तत्वज्ञान और भारतीय नृतत्व विज्ञान दोनों को खड़ा किया गया है । ब्रह्माजी ने चार मुखों से चार चरण गायत्री का व्याख्यान चार वेदों के रूप में किया । वेदों से अन्यान्य धर्मग्रंथ बने । जो कुछ भी हमारे पास है-इस सबका मूल जड़ हम चाहें तो गायत्री मंत्र के रूप में देख सकते हैं । इसलिए इसका नाम गुरु मंत्र रखा गया है, बीजमंत्र रखा गया है । बीजमंत्र के नाम से-गायत्री मंत्र के नाम से इसी एक मंत्र को जाना जा सकता है और गुरुमंत्र इसे कहा जा सकता है । हमने प्रयत्न किया कि सारे भारतीय धर्म और विज्ञान को समझने की अपेक्षा यह अच्छा है कि इसके बीज को समझ लिया जाय, जैसे कि विश्वामित्र ने तप करके इसके रहस्य और बीज को जानने का प्रयत्न किया । हमारा पूरा जीवन इसी एक क्रियाकलाप में लग गया । जो बचे हुए जीवन के दिन हैं, उसका भी हमारा प्रयत्न यही रहेगा कि हम इसी की शोध और इसी के अन्वेषण और परीक्षण में अपनी बची हुई जिंदगी को लगा दें ।

बहुत सारा समय व्यतीत हो गया । अब लोग जानना चाहते हैं कि आपने इस विषय में जो शोध की-जो जाना, उसका सार-निष्कर्ष हमें भी बता दिया जाय । बात ठीक है, अब हमारे महाप्रयाण का समय नजदीक चला आ रहा है तो लोगों का यह पूछताछ करना सही है कि हर आदमी इतनी शोध नहीं कर सकता । हर आदमी के लिए इतनी जानकारी प्राप्त करना तो संभव भी नहीं है । हमारा सार और निष्कर्ष हर आदमी चाहता है कि बताया जाय । क्या करें ? क्या समझा आपने ? क्या जाना ? अब हम आपको यह बताना चाहेंगे कि गायत्री मंत्र के ज्ञान और विज्ञान में जिसकी कि व्याख्या स्वरूप ऋषियों ने सारे का सारा तत्वज्ञान खड़ा किया है, क्या है ?

गायत्री को त्रिपदा कहते हैं । त्रिपदा का अर्थ है-तीन चरण वाली-तीन टाँगवाली । तीन टुकड़े इसके हैं जिनको समझ करके हम गायत्री के ज्ञान और विज्ञान की आधारशिला को ठीक तरीके से जान सकते हैं । इसका एक भाग है विज्ञान वाला पहलू विज्ञान वाले पहलू में आते हैं तत्वदर्शन, तप, साधना, योगाभ्यास, अनुष्ठान, जप, ध्यान आदि । यह विज्ञान वाला पक्ष है । इससे शक्ति पैदा होती है । गायत्री मंत्र का जप करने से, उपासना और ध्यान करने से-उसके जो महात्म्य बताये गये हैं कि इससे यह लाभ होता है, अमुक लाभ होते हैं, अमुक कामनायें पूरी होती है । अब यह देखा जाय कि यह कैसे पूरी होती है और कैसे पूरी नहीं होती । कब यह सफलता मिलती है और कब नहीं मिलती । किसी भी बीज को पैदा करने के लिए तीन चीजों की आवश्यकता होती है-भूमि उसके पास होनी चाहिए । भूमि के अलावा खाद और पानी का इंतजाम होना चाहिए । अगर यह तीनों चीजें उसके पास न होंगी तब फिर मुश्किल है । तब फिर वह बीज पल्लवित होगा कि नहीं, कहा नहीं जा सकता । गायत्री मंत्र के बारे में भी यही तीन बाते हैं कि यदि गायत्री मंत्र के साथ तीन चीजें मिला दी जायँ या किसी भी आध्यात्मिक उपासना के साथ मिलादी जायें तो उसके ठीक परिणाम होने संभव हैं । अगर यह तीन चीजें नहीं मिलायी जायेंगी तब फिर यही कहना पड़ेगा कि इसमें सफलता की आशा कम है ।

गायत्री उपासना के संबंध में हमारा लम्बे समय का जो अनुभव है-वह यह है कि जप करने की विधियाँ और कर्मकांड तो वही हैं जो सामान्य पुस्तकों में लिखे हुए हैं या बड़े से लेकर छोटे लोगों ने किये हैं । किसी को फलित होने और किसी को न फलित होने का मूल कारण यह है कि उन तीन तत्वों का समावेश करना लोग भूल जाते हैं जो किसी भी उपासना का प्राण हैं । उपासना के साथ एक तथ्य यह जुड़ा हुआ है कि अटूट श्रद्धा होनी चाहिए । श्रद्धा की एक अपने आप में शक्ति है । बहुत सारी शक्तियाँ हैं-जैसे बिजली की शक्ति है, भाप की शक्ति है, आग की

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

शक्ति है, उसी तरीके से श्रद्धा की भी एक शक्ति है । पत्थर में से देवता पैदा हो जाते हैं, झाड़ी में से भूत पैदा हो जाता है, रस्सी में से साँप हो जाता है और न जाने क्या-क्या हो जाता है श्रद्धा के आधार पर । अगर हमारा और आप का किसी मंत्र के ऊपर , जप, उपासना के ऊपर अटूट विश्वास है, प्रगाढ़-निष्ठा और श्रद्धा है तो मेरा अब तक का अनुभव यह है कि उसको चमत्कार मिलना चाहिए और उसके लाभ सामने आने चाहिए । जिन लोगों ने श्रद्धा से विहीन उपासनाएँ की हैं, श्रद्धा से रहित केवल मात्र कर्मकाण्ड संपन्न किये हैं, केवल जीभ की नोक से जप किये हैं और अँगुलियों की सहायता से मालायें घुमाई हैं, लेकिन मन में वह श्रद्धा न उत्पन्न कर सके, विश्वास उत्पन्न न कर सके, ऐसे लोग खाली रहेंगे । बहुत सारा जप करते हुए भी अगर अटूट श्रद्धा और विश्वास के साथ उपासनायें की जायँ तो यह एक ही पहलू ऐसा है जिसके आधार पर हम यह आशा कर सकते हैं हमारे अच्छे परिणाम निकलने चाहिए, और उपासना को पूरा-पूरा लाभ देना चाहिए । यह एक पक्ष हुआ ।

दूसरा-उपासना को सफल बनाने के लिए परिष्कृत व्यक्तित्व का होना नितांत आवश्यक है । परिष्कृत व्यक्तित्व क़ा मतलब यह है कि आदमी चरित्रवान हो, लोकसेवी हो, सदाचारी हो, संयमी हो अपने व्यक्तिगत जीवन को श्रेष्ठ और समुन्नत बनाने वाला हो । अब तक ऐसे ही लोगों को सफलतायें मिली हैं । अध्यात्म का लाभ स्वयं पाने और दूसरों को दे सकने में केवल वही साधक सफल हुए हैं जिन्होंने कि जप, उपासना के कर्मकाण्डों के सिवाय अपने व्यक्तिगत जीवन को शालीन, समुन्नत , श्रेष्ठ और परिष्कृत बनाने का प्रयत्न किया है । संयमी व्यक्ति, सदाचारी व्यक्ति जो भी जप करते हैं, उपासना करते हैं उनकी प्रत्येक उपासना सफल हो जाती है । दुराचारी आदमी, दुष्ट आदमी, नीच पापी और पतित आदमी भगवान का नाम लेकर यदि चाहें तो पार नहीं हो सकते । भगवान का नाम लेने का परिणाम यह होना चाहिए कि आदमी का व्यक्तित्व सही हो और वह शुद्ध बने । अगर व्यक्ति को शुद्ध और समुन्नत बनाने में रामनाम सफल नहीं हुआ तो जानना चाहिए कि उपासना की विधि में बहुत भारी भूल रह गयी । और नाम के साथ में काम करने वाली बात को भला दिया गया । परिष्कृत व्यक्तित्व उपासना का दूसरा वाला पहलू है-गायत्री उपासना के संबंध में अथवा अन्यान्य उपासनाओं के संबंध में ।

तीसरा-हमारा अब तक का अनुभव यह है कि उच्चस्तरीय जप और उपासनायें तब सफल होती हैं जब कि आदमी का दृष्टिकोण और महत्वाकांक्षायें भी ऊँची हों । घटिया उद्देश्य लेकर के, निकृष्ट कामनायें और वासनायें लेकर के अगर भगवान की उपासना की जाय और देवताओं का द्वार खटखटाया जाय, तो देवता सबसे पहले कर्मकाण्डों की विधि और विधानों को देखने की अपेक्षा यह मालूम करने की कोशिश करते हैं कि इसकी उपासना का उद्देश्य क्या है ? किस काम के लिए करना चाहता है ? अगर उन्हीं कामों के लिए जिसमें कि आदमी को अपनी मेहनत और परिश्रम के द्वारा कमाई करनी चाहिए, उसको सरल और सस्ते तरीके से पूरा कराने के लिए देवताओं का पल्ला खटखटाता है तो वे उसके व्यक्तित्व के बारे में समझ जाते हैं कि यह कोई घटिया आदमी है और घटिया काम के लिए हमारी सहायता चाहता है । देवता भी बहुत व्यस्त हैं । देवता सहायता तो करना चाहते हैं, लेकिन सहायता करने से पहिले यह तलाश करना चाहते हैं कि हमारा उपयोग कहाँ किया जायगा ? किस काम के लिए किया जायगा ? यदि घटिया काम के लिए उनका उपयोग किया जाने वाला है, तो वे कदाचित ही कभी किसी के साथ सहायता करने को तैयार होते हैं । ऊँचे उद्देश्यों के लिए देवताओं ने हमेशा सहायता की है ।

मंत्रशक्ति और भगवान की शक्ति केवल उन्हीं लोगों के लिए सुरक्षित रही है जिनका दृष्टिकोण ऊँचा रहा है । जिन्होंने किसी अच्छे काम के लिए-ऊँचे काम के लिए भगवान की सेवा और सहायता चाही है, उनको बराबर सेवा और सहायता मिली है । इन तीनों बातों को हमने प्राणपण से प्रयत्न किया और हमारी गायत्री उपासना में प्राण संचार होता चला गया । प्राण संचार अगर होगा तो हर चीज प्राणवान और चमत्कारी होती चली जाती है और सफल होती जाती है । हमने अपने व्यक्तिगत जीवन में चौबीस लाख के चौबीस साल में चौबीस महापुरश्चरण किये । जप और अनुष्ठानों की विधियों को संपन्न किया । सभी के साथ जो नियमोपनियम थे, उनका पालन किया-यह भी सही है, लेकिन हर एक को यह ध्यान रहना चाहिए कि हमारी उपासना में कर्मकांडों का-विधि विधानों का जितना ज्यादा स्थान है उससे कहीं ज्यादा स्थान इस बात के ऊपर है कि हमने उन तीन बातों को-जो आध्यात्मिकता की प्राण समझी जाती हैं-उन्हें पूरा करने की कोशिश की है । अटूट श्रद्धा और अडिग विश्वास गायत्री माता के प्रति रख करके और उसकी उपासना के संबंध में अपनी मान्यता और भावना रख करके प्रयत्न किया है और उसका परिणाम पाया है । व्यक्तित्व को भी जहाँ तक संभव हुआ है परिष्कृत करने के लिए पूरी कोशिश की है । एक ब्राह्मण को और एक भगवान के भक्त को जैसा जीवन जीना चाहिए-हमने भरसक प्रयत्न किया है कि उसमें किसी तरह से कमी न आने पावे । उसमें पूरी-पूरी सावधानी हम बरतते रहे हैं । अपने आपको धोबी के तरीके से धोने में और धुनिये की तरीके से धुनने में हमने आगा-पीछा नहीं किया है । यह हमारी उपासना को फलित और चमत्कृत बनाने का एक बहुत

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

बड़ा कारण रहा है । उद्देश्य हमेशा से ऊँचा रहे । उपासना हम किस काम के लिए करते हैं, हमेशा यह ध्यान बना रहा । पीड़ित मानवता को ऊँचा उठाने के लिए, देश-धर्म, समाज और संस्कृति को समुन्नत बनाने के लिए हम उपासना करते हैं, अनुष्ठान करते हैं । भगवान की प्रार्थना करते हैं । भगवान ने देखा कि किस नीयत से यह आदमी कर रहा है । भगीरथ की नीयत को देखकर के गंगा जी स्वर्ग से पृथ्वी पर आने के लिए तैयार हो गयी थीं और शंकर भगवान उनकी सहायता करने के लिए तैयार हो गये थे । हमारे संबंध में भी ऐसा ही हुआ । ऊँचे उद्देश्यों को सामने रख करके चले तो दैवी शक्तियों की भरपूर सहायता मिली । हमारा अनुरोध यह है कि जो कोई भी आदमी यह चाहते हों कि हमको अपनी उपासना को सार्थक बनाना है तो उन्हें इन तीनों बातों को बराबर ध्यान में रखना चाहिए ।

हम देखते हैं कि अकेला बीज बोना सार्थक नहीं हो सकता । उससे फसल नहीं आ सकती । फसल कमाने के लिए बीज-एक, भूमि दो और खाद-पानी तीन-इन तीनों चीजों की जरूरत है । निशाना लगाने के लिए बन्दूक-एक, कारतूस-दो और निशाना लगाने वाले का अभ्यास तीन-यह तीनों होंगी तब बात बनेगी । मूर्ति बनाने के लिए पत्थर, एक छेनी-हथौड़ा दो और मूर्ति बनाने की कलाकारिता तीन । लेखन कार्य के लिए कागज, स्याही और शिक्षा तीनों चीजों की जरूरत है । मोटर चलाने के लिए मोटर की मशीन, तेल और ड्राइवर तीनों चीजों की जरूरत है । इसी तरीके से उपासना के चमत्कार अगर किन्हीं को देखने हों, उपासना की सार्थकता की परख करनी हो तो इन तीनों बातों को ध्यान में रखना पड़ेगा जो हमने अभी निवेदन किया-उच्चस्तीय दृष्टिकोण, परिष्कृत व्यक्तित्व और अटूट श्रद्धा-विश्वास। इन तीनों को मिलाकर के जो कोई भी आदमी उपासना करेगा, निश्चयपूर्वक और विश्वासपूर्वक हम कह सकते हैं कि आध्यात्मिकता के तत्वज्ञान का जो कुछ भी माहात्म्य बताया गया है-कि आदमी स्वयं लाभान्वित होता है, समर्थ बनता है, शक्तिशाली बनता है, शांति पाता है, स्वर्ग-मुक्ति जैसा लाभ प्राप्त करता है और दूसरों की सेवा सहायता करने में समर्थ होता है सही है ।

गायत्री मंत्र के संबंध में हम यही प्रयोग और परीक्षण आजीवन करते रहे और पाया कि गायत्री मंत्र सही है, शक्तिमान है । सब कुछ उसके भीतर है, लेकिन है तभी जब गायत्री मंत्र के बीज को तीनों चीजों से समन्वित किया जाय । उच्चस्तरीय दृष्टिकोण, अटूट श्रद्धा-विश्वास और परिष्कृत व्यक्तित्व यह जो करेगा पूरी सफलता पायेगा । हमारे अब तक के गायत्री उपासना संबंधी अनुभव यही हैं कि गायत्री मंत्र के बारे जो तीनों बातें कही जाती हैं-पूर्णतः सही हैं । गायत्री को कामधेनु कहा जाता है-यह सही है । गायत्री को कल्पवृक्ष कहा जाता है, यह सही है । गायत्री को पारस कहा जाता है, इसको छूकर के लोहा सोना बन जाता है-यह सही है । गायत्री को अमृत कहा जाता है, जिसको पीकर के अजर और अमर हो जाते हैं, यह भी सही है । यह सब कुछ सही उसी हालत में हैं जबकि गायत्री रूपी कामधेनु को चारा भी खिलाया जाय, पानी पिलाया जाय, उसकी रखवाली भी की जाय । गाय को चारा आप खिलायें नहीं और दूध पीना चाहें तो यह कैसे संभव होगा ? पानी पिलायें नहीं ठंड से उसका बचाव करें नहीं, तो कैसे संभव होगा ? गाय दूध देती है, यह सही है, लेकिन साथ-साथ में यह भी सही है कि इसको परिपुष्ट करने के लिए-दूध पाने के लिए उन तीन चीजों की जरूरत है जो कि मैंने अभी आप से निवेदन किया ।

अब से २२०० वर्ष पूर्व चीन साम्राज्य-चीन में 'चुंग क्यो' नामक एक राजकुमार रहता था जो अपने को मृत्युंजयी मानता था / राजपद पर जब वह आसीन हुआ तो चीन के समस्त विरोधी राज्यों पर अपना आधिपत्य जमा लिया और अपने को न केवल उन राज्यों का, वरन् समूचे जगत का शासक घोषित कर दिया / उसने अपने नाम को दिग्विशासक तथा चीन का प्रथम सर्वशक्तिमान सम्राट के रूप में प्रतिपादित किया /

उस अतिवादी एवं महत्वाकांक्षी सम्राट का विश्वास था कि मृत्योपरांत भी वह जीवित अवस्था की तरह ही विराट ब्रह्मांड का शासन सँभालेगा / तदर्थ उसने ३६ वर्ष तक अपने लिए कब्र के निर्माण में ही समय बिता दिया / जीवन भर वह स्वर्ग में अपने शानदार प्रवेश का ही ख्वाब देखता रहा / जीवन के अंतिम ११ वर्ष के दौरान उसने हजारों कलाकारों, शिल्पियों तथा युद्ध कैदियों को एक भव्य महल के निर्माण में लगाये रखा जो मरने के बाद उसके शव-पेटिका का आश्रय स्थल बना /

यह विज्ञान पक्ष की बात हुई । अब ज्ञान पक्ष की बात आती है । यह मेरा ७० वर्ष का अनुभव है कि गायत्री के तीन पाद-तीन चरण में तीन शिक्षायें भरी हैं और ये तीनों शिक्षायें ऐसी हैं कि अगर उन्हें मनुष्य अपने व्यक्तिगत जीवन में समाविष्ट कर सके तो धर्म और अध्यात्म का सारे का सारा रहस्य और तत्वज्ञान का उसके जीवन में समाविष्ट होना संभव है । तीन पक्ष त्रिपदा गायत्री हैं-(१) आस्तिकता

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

(२) आध्यात्मिकता (३) धार्मिकता । इन तीनों को मिला करके त्रिवेणी संगम बन जाता है । ये क्या हैं तीनों ?

पहला है-आस्तिकता । आस्तिकता का अर्थ है ईश्वर का विश्वास । भजन-पूजन तो कई आदमी कर लेते हैं, पर ईश्वर -विश्वास का अर्थ यह है कि सर्वत्र जो भगवान समाया हुआ है, उसके संबंध में यह दृष्टि रखें कि उसका न्याय का पक्ष-कर्म का फल देने वाला पक्ष इतना समर्थ है कि उसका कोई बीच-बचाव नहीं हो सकता । भगवान सर्वव्यापी है, सर्वत्र है, सबको देखता है, अगर यह विश्वास हमारे भीतर हो तो, हमारे लिए पाप कर्म करना संभव नहीं होगा । हम हर जगह भगवान को देखेंगे और समझेंगे कि उसकी न्याय, निष्पक्षता हमेशा अक्षुण्ण रही है । उससे हम अपने आपका बचाव नहीं कर सकते । इसलिए आस्तिक का-ईश्वर विश्वासी का पहला क्रिया-कलाप यह होना चाहिए कि हमको कर्मफल मिलेगा, इसलिए हम भगवान से डरें । जो भगवान से डरता है उसको संसार में और किसी से डरने की जरूरत नहीं होती । आस्तिकता-चरित्रनिष्ठा और समाजनिष्ठा का मूल है । आदमी इतना धूर्त है कि वह सरकार को झुठला सकता है, कानूनों को झुठला सकता है, लेकिन अगर ईश्वर का विश्वास उसके अंतःकरण में जमा हुआ है तो वह बराबर ध्यान रखेगा । हाथी के ऊपर अंकुश जैसे लगा रहता है, आस्तिकता का अंकुश हर आदमी को ईमानदार बनने के लिए,अच्छा बनने के लिए प्रेरणा करता है, प्रकाश देता है ।

ईश्वर की उपासना का अर्थ है-जैसा ईश्वर महान है वैसे ही महान बनने के लिए हम कोशिश करें । हम अपने आपको भगवान में मिलायें । यह विराट् विश्व भगवान का रूप है और हम इसकी सेवा करें, सहायता करें और इस विश्व उद्यान को समुन्नत बनाने की कोशिश करें, क्योंकि हर जगह भगवान समाया हुआ है । सर्वत्र भगवान विद्यमान है-यह भावना रखने से *'आत्मवत् सर्वभूतेषु'* की भावना मन में पैदा होती है । गंगा जिस तरीके से अपना समर्पण करने के लिए समुद्र की ओर चल पड़ती है, आस्तिक व्यक्ति, ईश्वर का विश्वासी व्यक्ति भी अपने आपको भगवान में समर्पित करने के लिए चल पड़ता है । इसका अर्थ यह हुआ कि भगवान की इच्छायें मुख्य हो जाती हैं । व्यक्तिगत महत्वाकांक्षायें , व्यक्तिगत कामनायें भगवान की भक्ति समाप्त कराती हैं और यह सिखाती हैं कि ईश्वर के संदेश, ईश्वर की आज्ञायें ही हमारे लिए सब कुछ होनी चाहिए । हमें अपनी इच्छा भगवान पर थोपने की अपेक्षा, भगवान की इच्छा को अपने जीवन में धारण करना चाहिए । आस्तिकता के ये बीज हमारे अन्दर जमे हुए हों, तो जिस तरीके से वृक्ष से लिपट कर बेल उतनी ही ऊँची हो जाती है जितना कि ऊँचा वृक्ष है । उसी प्रकार से हम भगवान की ऊँचाई के बराबर ऊँचे चढ़ सकते हैं । जिस तरीके से पतंग अपनी डोरी बच्चे के हाथ में थमाकर आसमान में ऊँचे उड़ती चली जाती है । जिस तरीके से कठपुतली के धागे बाजीगर के हाथ में बँधे रहने से कठपुतली अच्छे से अच्छा नाच-तमाशा दिखाती है । उसी तरीके से ईश्वर का विश्वास, ईश्वर की आस्था अगर हम स्वीकार करें हृदयंगम करें और अपने जीवन की दिशा-धारायें भगवान के हाथ में सौंप दें । अर्थात् भगवान के निर्देशों को ही अपनी आकांक्षायें मान लें तो हमारा उच्चस्तरीय जीवन बन सकता है और हम इस लोक में शांति और परलोक में सद्गति प्राप्त करने के अधिकारी बन सकते हैं ।

आस्तिकता गायत्री मंत्र की शिक्षा का पहला वाला चरण है । इसका दूसरा वाला चरण है-आध्यात्मिकता आध्यात्मिकता का अर्थ होता है-आत्मावलंबन, अपने आपको जानना, आत्मबोध । *"आत्मा ऽ वारे ज्ञातव्य"* अपने आपको जानना । अपने आपको जानने से हम बाहर-बाहर भटकते रहते है । कई अच्छी आकांक्षाओं को पूरा करने के लिये, अपने दुखों का कारण बाहर तलाश करते फिरते रहते हैं । जानते नहीं कि हमारी मनःस्थिति के कारण ही हमारी परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं । अगर हम यह जान पायें, तब फिर हम अपने आपको सुधारने के लिए कोशिश करें । स्वर्ग और नरक हमारे ही भीतर हैं । हम अपने ही भीतर स्वर्ग दबाये हुए हैं-अपने ही भीतर नरक दबाये हुए हैं । हमारे मनःस्थिति के आधार पर ही परिस्थितियाँ बनती हैं । कस्तूरी का हिरण चारों तरफ खुशबू की तलाश करता फिरता था, लेकिन जब उसको पता चला कि वह तो नाभि में ही है, तब उसने इधर-उधर भटकना त्याग दिया और अपने भीतर ही ढूँढ़ने लगा । फूल जब खिलता है तब भौंरे आते ही हैं, तितलियाँ आती हैं । बादल बरसते तो हैं लेकिन जिसके आँगन में जितना पात्र होता है, उतना ही पानी देकर के जाते हैं । चट्टानों के ऊपर बादल बरसते रहते हैं, लेकिन घास का

सज्जनता का चिह्न है नम्रता । इसी को सभ्यता और शिष्टता भी कहते हैं । विद्या का वास्तविक प्रतिफल भी यह है । "थोथा चना-बाजे घना" -इस उक्ति को अहंकारियों पर चरितार्थ होते देखा जाता है । वे वस्तुतः जैसे होते हैं, उससे कहीं बढ़-चढ़ कर अपने को व्यक्त करते हैं । किसी को धमकाना, किसी को निहाल कराने का आश्वासन भी प्रायः ऐसे ही क्षुद्र लोग देते देखे गये हैं । इसमें व्यक्ति का घटियापन ही छलकता है । आत्म सम्मान की रक्षा करनी हो तो अहंकार से बचना ही चाहिए ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

एक तिनका भी पैदा नहीं होता । छात्रवृत्ति उन्हीं को मिलती है जो अच्छे नंबर से पास होते हैं । संसार में सौंदर्य तो बहुत हैं, पर हमारी आँख न हो तो उसका क्या मतलब । संसार मे संगीत गायन तो बहुत हैं, शब्द बहुत हैं, पर हमारे कान न हों, तो उन शब्दों का क्या मतलब । संसार में ज्ञान-विज्ञान तो बहुत हैं, पर हमारा मस्तिष्क न हो तो उसका क्या मतलब । ईश्वर उन्हीं की सहायता करता है जो अपनी सहायता आप करते हैं । इसलिए आध्यात्मिकता का संदेश यह है कि हर आदमी को अपने आपको देखना, समझना, सुधारने के लिए भरपूर प्रयत्न करना चाहिए । अपने आपको हम जितना सुधार लेते हैं, उतनी ही परिस्थितियाँ हमारे अनुकूल बनती चली जाती हैं । यह सिद्धांत गायत्री मंत्र का दूसरा वाला चरण है ।

तीसरा वाला चरण गायत्री मंत्र का है-धार्मिकता । धार्मिकता का अर्थ होता है-कर्तव्य परायणता -कर्तव्यों का पालन । कर्तृत्व, कर्म और धर्म लगभग एक ही चीज हैं । मनुष्य में और पशु में सिर्फ इतना ही अंतर है कि पशु किसी मर्यादा से बँधा हुआ नहीं है । मनुष्य के ऊपर हजारों मर्यादायें और नैतिक नियम बाँधे गये हैं और जिम्मेदारियाँ लादी गयी हैं । जिम्मेदारियों को और कर्तव्यों को पूरा करना मनुष्य का कर्तव्य है । शरीर के प्रति हमारा कर्तव्य है कि इसको हम निरोग रखें । मस्तिष्क के प्रति हमारा कर्तव्य है कि इसमें अवांछनीय विचारों को न आने दें । परिवार के प्रति हमारा कर्तव्य है कि उनको सद्गुणी बनायें। देश, धर्म, समाज और संस्कृति के प्रति हमारा कर्तव्य है कि उन्हें भी समुन्नत बनाने के लिए भरपूर ध्यान रखें लोभ और मोह के पास से अपने आपको छुड़ा करके अपनी जीवात्मा का उद्धार करना-यह भी हमारा कर्तव्य है और भगवान ने जिस काम के लिए हमको इस संसार में भेजा है, जिस काम के लिए मनुष्य योनि में जन्म दिया है, उस काम को पूरा करना भी हमारा कर्तव्य है । इन सारे के सारे कर्तव्यों को अगर हम ठीक तरीके से पूरा न कर सके तो हम धार्मिक कैसे कहला सकेंगे ?

धार्मिकता का अर्थ होता है-कर्तव्यों का पालना हमने सारे जीवन में गायत्री मंत्र के बारे में जितना भी विचार किया, शास्त्रों को पढ़ा, सत्संग किया , चिंतन-मनन किया-उसका सारांश यह निकला कि बहुत सारा विस्तार ज्ञान का है, बहुत सारा विस्तार धर्म और अध्यात्म का है , लेकिन इसके सार में तीन चीजें समाई हुई हैं (१) आस्तिकता अर्थात् ईश्वर का विश्वास (२) आध्यात्मिकता अर्थात् स्वावलंबन, आत्मबोध और अपने आपको परिष्कृत करना अपनी जिम्मेदारियों को स्वीकार करना और (३) धार्मिकता अर्थात् कर्त्तव्य परायणता । कर्तव्य परायण, स्वावलंबी और ईश्वर परायण कोई भी व्यक्ति गायत्री मंत्र का उपासक कहा जा सकता है और गायत्री मंत्र के ज्ञान पक्ष के द्वारा जो शांति और सद्गति मिलनी चाहिए उसका अधिकारी बन सकता है । हमारे जीवन के यही निष्कर्ष हैं विज्ञान पक्ष में तीन धारायें और ज्ञान पक्ष में तीन धारायें-इनको जो कोई प्राप्त कर सकता हो-गायत्री मंत्र की कृपा से निहाल बन सकता है और ऊँची से ऊँची स्थिति प्राप्त करके इसी लोक में स्वर्ग और मुक्ति का अधिकारी बन सकता है । ऐसा हमारा अनुभव ऐसा हमारा विचार और ऐसा हमारा विश्वास है । 卐

ॐ शांतिः

उदारता और आत्म संयम

पेरिस से ८० मील दूर एक देहात में जन्मे थे पेन्थिस । उनका पारिवारिक धंधा भेड़ पालना और ऊन कातना था । तनिक बड़े होते ही पेन्थिस को भी उसी धंधे में लगना पड़ा । पढ़ने का उनका मन था, पर साधन न थे । वे भेड़ चराते हुए ही अपने आप पढ़ने का प्रयत्न करते । एक दिन उनके मामा आये और इस अभिरुचि को देखकर उन्हें पढ़ाने के लिए साथ ले गये । वे पढ़े । छात्रवृत्ति पायी । उच्चशिक्षा संपन्न की और एक हजार की नौकरी पर लग गये । विवाह प्रस्ताव आने लगे । उनने स्पष्ट इनकार कर दिया और कहा-व्यर्थ का जंजाल सिर पर लादने की अपेक्षा मैं अपने श्रम और ज्ञान का उपयोग अपने जैसे निर्धन विद्यार्थियों के लिए करूँगा ।

उनने निर्धन छात्रों के लिए एक प्राइवेट विद्यालय की स्थापना की । १०० में अपना खर्च चलाते और ९०० रुपये मासिक उस विद्यालय को देते । छात्रों की प्रगति और विद्यालय की व्यवस्था देखकर अनेक लोग देखने आये और अत्यधिक प्रभावित हुए । कुछ संपन्न लोगों ने अच्छी सहायता दी । पेन्थिस ने नौकरी छोड़ दी और उसी विद्यालय को सँभालने लगे । आरंभ में केवल २० छात्र थे, पर अब उस विद्यालय में २००० निर्धन छात्र पढ़ते हैं ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परम पूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी-

दुर्गति और सद्गति का कारण, हम स्वयं

इस अंक में प्रस्तुत है ८, सितम्बर १९८० को शांतिकुंज प्रांगण में उपस्थित शिविरार्थियों के मध्य दिया गया परम पूज्य गुरुदेव का उद्बोधन । विषय सीधा हमारी समस्याओं के मूल स्रोत को स्पर्श करता हुआ उनका समाधान बताता है ।

गायत्री मंत्र साथ-साथ ॐ भूर्भवः स्वः..। साथियो ! अध्यात्म ही क्यों ?

स्रष्टा ने मनुष्य जीवन विशेष उद्देश्य के लिए बनाया है और विशेष उपहार के रूप में दिया है । भगवान ने अपने कार्य में, अपने विश्व उद्यान में सहायता करने के लिए इसको सुरम्य और समुन्नत बनाने के लिए मनुष्य को अपने सहायक के रूप में पैदा किया । उसको जो अनेक विशेषतायें दी हैं, वह एक अमानत के रूप में-एक धरोहर के रूप में दी हैं, ताकि इसका ठीक तरीके से उपयोग करके वह अपने व्यक्तिगत जीवन में सरलतापूर्वक सारा काम चला सके और निर्वाह कर सके । उसके पास जो समय बचे, शक्तियाँ बचें, उससे विश्व उद्यान को समुन्नत बनाने के लिए प्रयत्न करना उसके लिए संभव बन सके । इस दृष्टि से मनुष्य शरीर बनाया शौक -मौज के लिए नहीं बनाया । शौक मौज के लिए अगर मनुष्य शरीर बनाया होता तो फिर यह बहुत भारी पक्षपात गिना जाता । अन्य प्राणियों को जो सुविधायें नहीं मिलीं, वह मनुष्य को ही क्यों दी गयीं ? इसका एक मात्र उत्तर यही है कि जिस तरह विशेष तरीके से एक खजांची के पास खजाना जमा कर दिया जाता है, मिनिस्टर के पास विशेष अधिकार केन्द्रित कर दिये जाते हैं, उसी प्रकार भगवान ने मनुष्य को विशेष अधिकार दिये हैं, ताकि वह इस विश्व उद्यान को सुन्दर, समुन्नत , सुविकसित बनाने के लिए भगवान के कार्य में मदद करे। हममें से प्रत्येक का कर्तव्य है कि उस परम पुनीत उत्तरदायित्व को समझें जो भगवान ने हमारे ऊपर सौंपा है ।

यह हमारा बड़ा सौभाग्य है कि भगवान की इच्छा पूरी करने के साथ-साथ में उपहार के रूप में अपने जीवन का लक्ष्य भी प्राप्त कर सकते हैं । पूर्णता का लक्ष्य इस तरीके से प्राप्त कर सकते हैं कि हम भगवान की इच्छाओं को पूरा करें और अपने गुण-कर्म, स्वभाव का विकास करें । इनका विकास करने से ही यह संभव है कि हमारी आत्मा विकसित हो और आत्मा विकसित होते हुए परमात्मा के स्तर तक पहुँचने में समर्थ हो सके । इसलिए हमको स्रष्टा की इच्छा पूरी करने के लिए कटिबद्ध होना चाहिए । ऐसा यदि हम कर सकें तो हमें अध्यात्मवादी कहा जायेगा । अध्यात्म का सारे का सारा शिक्षण इसी उद्देश्य के लिए है कि व्यक्ति अपने कर्तव्यों को समझे और उत्तरदायित्वों को समझे । कर्तव्य और उत्तरदायित्वों को समझते हुए अपनी गतिविधियों का निर्धारण इस तरीके से करे-दृष्टिकोण का निर्धारण इस तरीके से करे जिसमें व्यक्ति चरित्र श्रेष्ठ बनता हो, शालीन बनता हो और समाज में सुव्यवस्था पैदा करने में सहायक बनता हो । यही है जीवन का उद्देश्य ।

आश्चर्य इस बात का है कि मनुष्य के पास जहाँ इतनी बुद्धि और सुविधा-साधन दिये गये वहाँ उसको हँसी-खुशी का जीवन जीना चाहिए था, हलका-फुलका जीवन जीना चाहिए था इतनी सुविधा उसके पास रहनी चाहिए थी कि अपना गुजारा बहुत कम में करने के बाद-सुख-सुविधा करने के बाद में सारा समय हँसी खुशी के साथ भगवान के कामों में लगा सकने में समर्थ रहा होता । ऐसा ही जीवन निर्माण हमारे लिए हुआ है, लेकिन अचंभा इस बात का है कि हममें से अधिकांश आदमी कठिनाइयों में फँसे हुए हैं । अधिकतर आदमी आपत्तियों में रोते और खीझते हुए देखे जाते हैं तो वे आगे कैसे बढ़ेंगे ? जब आपत्तियाँ ही रास्ता रोके खड़ी हैं, कठिनाइयाँ ही पग-पग पर हैरान कर रही हैं, तो आगे वाली बात कैसे बन सकती है । अब यह देखना चाहिए कि आखिर हुआ क्या ? कैसे ऐसी स्थिति आ गयी ? जब भगवान ने हमको इतने साधन दिये थे कि उन साधनों से हम अपना उद्देश्य पूरा कर सकते थे, पर उन्हें पूरा करना तो दूर उलटे कठिनाइयों में ही जकड़े रह गये-मुसीबतों में ही फँसे रह गये । बात कैसे बनेगी ? आइये हम लोग इस पर विचार करें ।

जब हम विचार करते हैं तब मालूम पड़ता है कि हमारे भीतर, हमारे चिंतन में और हमारे क्रियाकलापों में कहीं भूल पड़ जाती है । इस भूल का ही परिणाम है कि हमारी मनःस्थिति दुर्बल होने से-विकृत होने से हमारे बहिरंग जीवन में सारी की सारी परिस्थितियाँ विकृत होती चली जाती हैं और हम अभावों कष्टों और संकटों से ग्रसित होते चले जाते हैं । अगर हम

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अपने दृष्टिकोण को परिष्कृत कर सकें, अपनी गतिविधियों को सही कर सकें- अपने क्रियाकलापों में हेरफेर कर लें, तब वे सारी समस्यायें जो मनुष्य जाति को खाये जा रही हैं, जिनसे आदमी को हर वक्त बेचैन रहना पड़ता है हर समय कष्ट से घिरा रहना पड़ता है, जिससे पार पाने के लिए वह हर किसी के सामने पल्ला पसारता और नाक रगड़ता है कि आप हमारी सहायता कीजिए, तब किसी की भी सहायता प्राप्त न करनी पड़े । अध्यात्म की शिक्षा यही है कि अपने भीतर हम देखें, अपने आपको समझें , अपने आपको जानें । अपनी गलतियों के बारे में गौर करें और अपनी गतिविधियों को ठीक करने के लिए प्रयत्न करें । अगर हमने ऐसा प्रयत्न प्रारंभ कर दिया तो समझना चाहिए कि सच्चे अर्थों में हम अध्यात्मवादी हुए ।

कीचड़ जहाँ कहीं भी सड़ती है वहाँ दुर्गंध फैल जाती है, रेंगने वाले कीड़े जहाँ तहाँ घूमना शुरू हो जाते हैं, मक्खी-मच्छर पैदा हो जाते हैं । इनमें से प्रत्येक विकृति को हम दूर करना चाहें तो कठिन है, लेकिन यदि कीचड़ की गंदगी को साफ कर दिया जाय तो वह सब विकृतियाँ दूर हो जायँगी जिनसे हम परेशान थे । यही बात हमारे जीवन में भी लागू होती है । हँसता-हँसाता, खिलता-खिलाता जीवन हमारा होना चाहिए था । हमको प्रसन्न और प्रफुल्लित रहना चाहिए था । हमारी शक्ति ऐसी होनी चाहिए थी कि अपनी हलकी जिन्दगी को स्वयं पार कर लें और अपने कंधे पर बिठाकर दूसरों को पार लगा दें, लेकिन ऐसा बन नहीं पड़ता । इसका कारण यह है कि हमारे जीवन में जो अशुद्धियाँ छायी हुई हैं, उनसे हमारा मानसिक रक्त दूषित हो गया । जिस प्रकार रक्त के दूषित हो जाने पर फोड़े-फुन्सियों का निकलना स्वाभाविक है, उसी प्रकार जीवन में असंख्य विकृतियों के आजाने से असंख्य चिन्ताओं, हैरानियों, परेशानियों का निकलना संभव है । इसको दूर करने के लिए उन स्रोतों को बंद करना पड़ेगा जहाँ से ये फूटती हैं । शरीर की बीमारियों को ही लें-तो शरीर की मशीन इतनी अच्छे तरीके से बनायी गयी है कि इसको प्राकृतिक नियमों के अनुरूप अगर ठीक तरीके से चलाया जा सके तो न इसमें कमजोरी आने की कोई गुंजायश है और न बीमार पड़ने की ।

प्रकृति में हम दृष्टि डाल कर देखते हैं तो सृष्टि का कोई प्राणी बीमार नहीं मालूम पड़ता । बुढ़ापा तो सबको आता है, मरना भी सबको पड़ता है, पर बीमारी नाम की कोई चीज किसी भी योनि में दिखायी नहीं पड़ती । कहीं भी किसी को रोता-कराहता बीमारी से नहीं पाया जाता, केवल एक अभागा प्राणी मनुष्य ही है जो बार-बार बीमार पड़ता रहता है । इसका कारण क्या है ? इसका एक ही कारण है कि हमने आहार-विहार के संबंध में असंयम बरतना शुरू कर दिया । जीभ हमारी बेकाबू रही । जो चीज नहीं खानी चाहिए थी, वह हम खाते रहे । जितनी तादाद में नहीं खाना चाहिए उससे ज्यादा तादाद में खायी । फलस्वरूप हमारा पेट खराब हुआ । पेट खराब होने-उसमें सड़न होने की वजह से असंख्य बीमारियाँ खड़ी हो गयीं । अगर हम इसको ठीक करना चाहते हों तो- दवाइयों से न तो रोग ठीक हो सकते हैं और न टॉनिक खाने से-औषधियों से हमारी कमजोरी दूर हो सकती है । कमजोरी दूर करने के लिए-बीमारियों को दूर करने के लिए-चाहे अब चाहे अब से एक हजार वर्ष बाद अंततः एक ही उपाय काम में लाना पड़ेगा कि हम संयम बरतना सीखें । इन्द्रियों का निग्रह करना सीखे । समय का नियंत्रण करना सीखें । आलस्य और प्रमाद से अपनी शक्तियों का जो क्षरण होता रहता है- उसकी रोकथाम करना सीखें । अगर हमने यह सब सीख लिया तो हमारे स्वास्थ्य की गारंटी, फिर हम दीर्घजीवी बनेंगे और निरोग रह सकेंगे, भले ही हमें सस्ते मूल्य का भोजन ही क्यों न मिलता हो । गरीबी में ही निवास क्यों न करना पड़ता हो । फिर हमें किसी चिकित्सक के पास जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी, अगर हम संयम रूपी चिकित्सक की सहायता लेनी शुरू करें तब । यह आध्यात्मिकता की शिक्षा है कि हम भीतर देखें और बीमारियों की जड़काट कर दूर करें । असंयम को हटायें और सुन्दर स्वास्थ्य पायें ।

मानवीय मस्तिष्क की ओर हम देखते हैं तो मालूम पड़ता है कि इतनी बढ़िया मशीन, इतना सुन्दर कम्प्यूटर कदाचित ही दुनिया में कहीं पाया जाता हो । मानवीय मस्तिष्क में स्वर्ग के सारे के सारे तत्व भरे पड़े हैं । दृष्टिकोण आदमी का अच्छा हो तो हर जगह सौंदर्य, हर जगह प्रसन्नता, हर जगह सद्गुण, सहयोग बिखरा हुआ दिखायी पड़ेगा । सृष्टि में जहाँ कहीं भी मनुष्य अपनी दृष्टि पसार कर देखेगा तो मालूम पड़ेगा कि इसमें सर्वत्र सद्भावनायें भरी पड़ी हैं । लेकिन हम देखते हैं कि इस मस्तिष्क के द्वारा जिस तरह का चिंतन करना चाहिए था,जो काम करना चाहिए था, उसको तोड़-मरोड़ करके ऐसे बना दिया गया है कि शुद्ध चिंतन करने की अपेक्षा अशुद्ध चिंतन में ही सदा उलझा रहता है । ईर्षायें, डाह, चिन्तायें, निराशायें, भय, आशंकायें आदि जिनके कोई वास्तविक कारण नहीं होते हमारे ऊपर छायी रहती हैं और जीवन को नरक रूप में बनायें रखती हैं । अगर वास्तविक कारण हों भी तो आदमी उसको स्वाभाविक एवं सामान्य समझ करके हँसी-खेल में भी टाल सकता है, लेकिन प्रायः वह राई भर की बात को पहाड़ के बराबर बनाकर के रात-दिन उद्विग्न बना रहता है । अगर मस्तिष्क को ठीक रखा जा सके तो हम इसी मस्तिष्क के द्वारा भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति के लिए न जाने कितने द्वार खोल सकते हैं । यदि यह न बन पड़े तो कम से कम इतना तो कर ही सकते हैं कि चारों ओर जो भय, आशंकायें, निराशायें दिखायी पड़ती हैं,

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

उनसे तो दूर बचे ही रह सकते हैं ।

दरिद्रता पैसे की कमी का नाम नहीं है, वरन् मनुष्य की आंतरिक कृपणता का नाम दरिद्रता है । रंगीन चश्मा पहन रखा है हमने और उसी से देखते हैं जिससे हर जगह वही रंग दिखायी पड़ता है । पीलिया के मरीज को हर चीज पीली दिखायी पड़ती है । ठीक इसी तरीके से विकृत दृष्टिकोण होने पर हमें हर जगह नरक दिखायी पड़ता है । द्वेष दिखाई पड़ता है, दुश्मन दिखाई पड़ते हैं । आशंकायें और भय दिखायी पड़ते हैं । झाड़ी में से भूत और रस्सी में से साँप निकलने वाली बात आप सबने सुनी होगी । ये आशंकाएँ केवल हमारे विकृत मस्तिष्क के चिह्न हैं जो अगर ठीक न हुए तो दिक्कत पड़ेगी। इन्हें हमें दूर करना होगा । जहाँ मन की इच्छानुकूल परिस्थितियों के होने की बात है, वहाँ उससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह है कि हम अपने मस्तिष्क के चिंतन करने के तरीके को सुधार लें । चिंतन करने का तरीका अगर सँभाला-सुधारा जा सके तो सामान्य परिस्थितियों में भी हँसी-खुशी की भरी हम जिंदगी काट सकते हैं । संत इमर्सन कहते थे कि हमें नरक में भेज दीजिए , हम वहीं अपने लिए स्वर्ग बना लेंगे । बात सही है । शालीनता का दृष्टिकोण रखने वाले, ऊँचे दृष्टिकोण रखने वाले, वास्तविकता को समझने वाले इस दुनिया में हर समय हँसते-हँसाते हुए पाये जा सकते हैं ।

तीसरा क्षेत्र-परिवार संस्था का है जो कितना अस्तव्यस्त दिखायी पड़ता है । जिस परिवार में हम रहते हैं, भगवान ने उसका गठन स्वर्गीय आनन्द के लिए किया है, लेकिन उसके लाभों से हम वंचित रह जाते हैं । एक बाड़े में जिस तरीके से बहुतसी भेड़ें रहती हैं, एक जेलखाने में जैसे बहुत से कैदी रहते हैं, उसी तरीके से हम अपने कुटुम्बों के बीच में निर्वाह करते रहते हैं । कहने को तो संबंधी कहे जाते हैं, रिश्तेदार भी कहे जाते हैं, पर जैसा स्नेह सौजन्य, सद्भाव, सेवा-सहकारिता इत्यादि का वातावरण होना चाहिए था, कुटुम्बों में कहीं दिखाई नहीं पड़ता । इसका कारण यह है कि कुटुम्बों को बनाने और उनकी देखभाल करने वाले यह भूल जाते हैं कि उनके पारिवारिक उत्तरदायित्व क्या हैं ? पारिवारिक उत्तरदायित्वों को लोगों ने यह समझ रखा है कि हम अपने कुटुम्बियों को प्रसन्न बनाने के लिए उनकी इच्छानुकूल चलें । उनके लिए धन-दौलत, सामान इकट्ठा करें जिससे कि वे प्रसन्न रह सकें । यह सब करने से कुछ लाभ नहीं होता, वरन् इससे मनुष्यों की आदतें खराब होती चली जाती हैं । घर के वातावरण में विलासिता की, हरामखोरी की दुष्प्रवृत्तियाँ पैदा होती हैं और उसके दुष्परिणाम दुर्व्यसनों के रूप में और दूसरी बुराइयों के रूप में देखने को मिलते हैं ।

जरूरत इस बात की है कि हम अपने पारिवारिक उत्तरदायित्वों को समझें और उनको भावनात्मक तथा मानसिक संपदायें दें । हम उनको श्रमशील बनने की आदत सिखायें, स्वच्छता की, व्यवस्था की आदत सिखायें । नियमितता का समय का पालन करना सिखायें । भाषण में मधुरता और शिष्टाचार का समावेश करना सिखायें । यह बातें तभी सिखायी जा सकती हैं जब हम स्वयं अपने आपको उस ढाँचे में ढाल लें । अपने आपको अच्छे ढाँचे में ढालकर के हम अपने समीपवर्ती लोगों को अपेक्षाकृत अच्छा शिक्षण दे सकते हैं । परिवारों में अगर हम अपने आप को उदाहरण रूप में प्रस्तुत कर सकें तो यही हमारे घर और कुटुम्ब नर-रत्नों की खदान बन सकते हैं और उनमें से एक से एक बढ़िया हीरक-एक से एक बढ़िया आदमी निकल सकते हैं । भूत-पलीतों के रहने लायक खण्डहर जिस तरीके से होते हैं, प्रायः हमारे परिवारों की स्थितियाँ वही हैं । न उनमें शांति है न चैन । घर में जाते तो हैं, पर भाग खड़े होने का मन करता है । यह पारिवारिक जीवन में आनन्द के अभाव के कारण है और उस अभाव का कारण है-हमारा विकृत दृष्टिकोण । दृष्टिकोण को अगर हम सुधार पायें तो घर का रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति बड़ा आनन्ददायक मिले । उनके साथ सहकारिता का जीवन जीते हुए सद्भावना के आधार पर हम अपने घरों में स्वर्गीय आनन्द लेने में समर्थ हो सकते हैं ।

जहाँ कहीं भी हम देखते हैं, प्रत्येक क्षेत्र में मुसीबतें ही दिखायी पड़ती हैं । आर्थिक कठिनाइयों से आज हर आदमी दुखी पाया जाता है । सोचा जाता है कि यदि कुछ बाहरी आमदनी हो जाय तो शायद आर्थिक कठिनाइयाँ दूर हो जायँ । लेकिन यह बात एक सीमा तक ही सही है, सौ फीसदी नहीं । अगर हम ज्यादा आमदनी नहीं भी बढ़ा सकते हों तो भी ऐसे उपाय हैं कि हम आर्थिक तंगी से बच सकते हैं । जितनी अपनी आमदनी है उसके हिसाब से बजट बनाकर चलें तो यह पूरी तरह से संभव है कि हम ठीक तरीके से जीवनयापन कर लें । जीवन तो बहुत तरीके से जिया जा सकता है । कोई जरूरी नहीं कि कोई बहुत खर्चीला जीवन ही जियें । दुनिया में ऐसे बहुत से आदमी हैं जो कम से कम में गुजारा कर लेते हैं । क्या हमारे लिए यह संभव नहीं है ? अगर हम खर्च से कम आमदनी करते हैं तो कम खर्च में गुजारा करें और आर्थिक कठिनाई जैसी मुसीबतों से सहज ही छुटकारा पायें । हम अपनी योग्यता बढ़ायें, श्रम करने की सामर्थ्य बढ़ायें । योग्यता बढ़ाने से, श्रम ज्यादा करने से पैसा ज्यादा मिलता है । आलस्य और प्रमाद जिन लोगों पर छाया रहता है दरिद्रता स्थायी रूप से उनके पास बनी रहेगी । शारीरिक दरिद्रता आलस्य के रूप में और मानसिक दरिद्रता प्रमाद के रूप में जिन लोगों के पास है, कितना ही धन होने पर भी वे गरीबों जैसा-दरिद्रों जैसा जीवन ही जियेंगे ।

सामाजिक जीवन में हम देखते हैं कि किस तरीके से चारों ओर विकृतियाँ

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

उनकी यह व्याकुलता जितनी गहरी हुई-आश्चर्य भी उतना ही घना हुआ । आखिर कैसे हो सकी नारी की अवमानना अवहेलना ? जिसके कारण उनकी स्थिति पंख कटे पक्षी की सी हो गई । युग ऋषि के शब्दों में कहें तो "आज के इन प्रचलनों का प्राचीन भारतीय संस्कृति के साथ कोई ताल-मेल नहीं खाता । स्वर्ग और नरक-आकाश और पाताल में जितना अंतर है उतना ही नारी के प्रति प्राचीनकाल में उच्चस्तरीय श्रद्धा रखे जाने और सुविधा दिए जाने की स्थिति में और इस हेय प्रतिबंधन की स्थिति में समझा जा सकता है ।"

जिसे सामंती काल के असुर युग में *द्वारं किमेकं नरकस्य ? नारी ।* अर्थात् नरक का द्वार कहकर उपेक्षणीय ठहराया । वैदिक ऋषिगण उसी की प्रशंसा करते नहीं अघाए । एक स्थान पर तो शास्त्रकार ने यहाँ तक निःसंकोच भाव से कह दिया ।

नारी त्रैलोक्य जननी,
नारी त्रैलोक्य रूपिणी ।
नारी त्रिभुवनाधारा,
नारी शक्ति स्वरूपिणी ॥

इसका सबसे बड़ा प्रमाण वैदिक भारत में ईश्वर की मातृ रूप में प्रतिष्ठा है । माँ की गरिमा एवं महत्ता को आदिकाल से मनीषियों ने समझते हुए मातृ शक्ति की आराधना एवं पूजा का विधि विधान बनाया । चेतनशील मानव ने सभ्यता की ओर जैसे ही कदम रखना प्रारंभ किया उसके मस्तिष्क के समक्ष यह प्रश्न उभरा वह आया कहाँ से ? यहीं से माँ के प्रति श्रद्धा भाव उत्पन्न हुआ और ईश्वर को आदि जननी मानकर आराधना प्रारंभ की । यहीं से प्रेरणा पाकर संसार की सभी संस्कृतियों में मातृशक्ति की उपासना किसी न किसी रूप में प्रचलित है ।

चाहे वह इटली की फारचुना के रूप में हो, रोम की साइवेलें, ग्रीक की हेरा, मध्यपूर्व की मान्ट हो, अथवा उत्तरी अफ्रीका की तिवायत । मैक्सिको की एसिस हो, यूनान में अनोन्का, सीरिया में अस्टीटें, मोआब में आख्तर और अबीसीनियाँ में आसार के नाम से नारी शक्ति ही पूजित रही है । बेबीलोन यही अर्चना लाया और मिश्र ने आइसिस के रूप में संपन्न की । प्रायः विश्व के हर कोने ने परमेश्वर को नारी के रूप में पूजित कर नारीत्व के प्रति अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए हैं और इसकी प्रेरक शक्ति भारत भूमि रही है । आज इससे अधिक महान आश्चर्य और क्या होगा कि जहाँ से नारी को श्रद्धा देने की प्रेरणा उमगी परंपरा के रूप में पनपी-समूचे विश्व में व्यापक बनी-वहीं का नारी जीवन दुर्दशाओं और विडंबनाओं से ग्रस्त है ।

इस महान आश्चर्य से चकित पूज्य गुरुदेव तनिक आक्रोश भरे स्वर में समाज के कर्णधारों से प्रश्न करते है-'इस पीड़ित नारी से नर को क्या मिला ? उसे असहाय बनाकर किसने क्या पाया ? घर-परिवार के लोगों की इससे क्या, सुविधा बढ़ी ? पति को उससे क्या सहयोग मिला ? बच्चे क्या अनुदान पा सके ? देश की अर्थव्यवस्था एवं प्रगति में पिछड़ी नारी ने क्या योगदान दिया ? समाज को समुन्नत बनाने में वह क्या योगदान दे सकी ? इन प्रश्नों पर विचार करने से लगता है नारी को पीड़ित, पददलित, उपेक्षित रखा जाना किसी प्रकार उचित नहीं हुआ । समय पूछता है कि अनुचित को कब तक सहन किया जाएगा और कब तक चलने दिया जाएगा ?"

इससे उनके संवेदना के आँसू ही नहीं छलके पौरुष की प्रचडंता से भुजाएँ भी फड़की, महाकाल का संकल्प उनके स्वरों में मुखरित हुआ "इक्कीसवीं सदी नारी सदी"। यह उद्घोष नारी जागरण का मंत्र बना और वे बने इस महामंत्र के द्रष्टा । साथ ही प्रारंभ हुआ अविराम प्रयासों का सिलसिला । उनके भावपूर्ण प्रयासों को उन्हीं के शब्दों में टाँके तो "शांतिकुंज की स्थापना का मूल प्रयोजन महिला जागरण अभियान का आरंभ करके उसे नारी के समग्र उत्कर्ष की अनेकानेक गतिविधियों को विश्वव्यापी बनाना है ।"

अभियान के क्रियाकलाप चार भागों में विभक्त किए गए -

१-साहित्य प्रकाशन२-नारी शिक्षण सत्र ३-संगठन द्वारा संघ शक्ति का उदय ४-रचनात्मक कार्यक्रमों का व्यापक विस्तार । साहित्य प्रकाशन के सिलसिले में न केवल शत- सहस्र पुस्तकें प्रकाशित हुई बल्कि " महिला जाग्रत अभियान " पत्रिका ने भी प्रवाह पकड़ा ।

साहित्य प्रकाशन का उद्देश्य जहाँ एक ओर नारी की व्यथा वेदना से संवेदनाशील जन-मानस को अवगत करांना था वहीं दूसरी ओर उसकी गरिमा की गौरवपूर्ण प्रतिष्ठा का अदम्य प्रयास भी था । संवेदना को झकझोरते हुए उनके शब्द दृष्टव्य हैं "आर्थिक दृष्टि से परावलंबी नारी पग-पग पर मन मारकर रहती है, पैसे-पैसे के लिए दूसरे के सामने गिड़गिड़ाती है । घर की खुशहाली में कोई योगदान नहीं दे पाती । उपेक्षिताओं , परित्यक्ताओं, विधवाओं की दुर्गुति होती है । उन्हें और उनके बच्चों को क्या-क्या सहना पड़ता है इसके हाहाकार भरे दृश्य पर्दे के पीछे छिपे रहते हैं । यदि उन्हें देखने, सुनने और अनुभव करने का अवसर

घड़ा जब तक घड़ा था उसे अपने स्वास्थ्य और सौंदर्य पर बड़ा अभिमान था । लेकिन एक दिन दीवाल से चोट लगी और उसका सारा घमंड चूर-चूर हो गया । घड़ा टुकड़े होकर जमीन पर बिखर गया ।

स्वयं की यह स्थिति देख वह विधाता को कोसने लगा 'तू कितना निष्ठुर और बेरहम है, तुझे मेरी प्रसन्नता भी नहीं देखी गई । तू सदैव हँसते-खेलते चेहरों को यों ही मिट्टी में मिलाया करता है । धरती ने उसकी विकलता से भरी आवाज सुनी और फूटे घड़े को शांत करती हुई बोली- "वत्स ! ऐसा न कहो तुम्हें पता नहीं टुकड़े-टुकड़े होकर किस अनंतता में लीन हो जाने का वरदान पा रहे हो ।'

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

मिले तो चट्टान को भी फफक-फफक कर रोना पड़ेगा ।.....इसका स्वरूप प्रस्तुत कर सकना न लेखनी के लिए संभव है न वाणी के लिए । उस भुक्तभोगी शरीर और अन्तरात्मा को रेतने वाली असहनीय पीड़ा को कोई आप बीती के रूप में अनुभव कर सके तो ही जान सकता है ।''

इस कारुणिक प्रस्तुतीकरण के [illegible] है नारी की गौरव गरिमा निहित [illegible] हुए शब्द ''नारी ब्रह्मविद्या है, [illegible] है, शक्ति है, पवित्रता है, कला है [illegible] वह सब कुछ है जो इस संसार में [illegible] सौन्दर्य के रूप में दृष्टिगोचर होता है । [illegible] कामदेनु है, अन्नपूर्णा है, सिद्धि है, सिद्धि है और वह सब कुछ है जो मानव प्राणी के समस्त अभावों, कष्टों एवं संकटों को निवारण करने में समर्थ है । यदि उसे श्रद्धासिक्त सद्भावना के साथ सींचा जाय तो यह सोमलता विश्व के कण-कण को स्वर्गीय परिस्थितियों से ओत-प्रोत कर सकती है ।''

एक अन्य स्थान पर दृष्टव्य है- ''नारी को वरिष्ठ और नर को कनिष्ठ ठहराने वाली अपनी सांस्कृतिक मान्यता हर दृष्टि से सही है । दानी बड़ा होता है उपभोक्ता छोटा ।.....उस अनुदानी की समता कौन कर सकता है जिसने अपने स्वेद कणों और स्नेह विन्दुओं के मणिमुक्तकों से उस हार-उपहार को विनिर्मित किया और गले में धारण कराया । इतना ही नहीं ''नारियाँ मूर्तिकार तो अद्वितीय हैं । पत्थर की नहीं वे प्राणवान प्रतिमाएँ अपने शरीर की प्रयोगशाला में बनाकर प्रस्तत करती हैं । उनके समान मूर्तिकार, चित्रकार श्रद्धाकार कौन हो सकता है ? परमेश्वर ने अपना दृश्यमान और चेतनात्मक सौंदर्य उसी में उड़ेल दिया है ।''

इसी गरिमा की जीवन प्रतिष्ठा के लिए युगावतार का समूचा जीवन क्षण-क्षण कर्मरत रहा । कन्या प्रशिक्षण सत्र हो महिलाओं की संगठन चेतना का जागरण । सबके पीछे यही प्रेरणा क्रियाशील रही । सामान्य क्रम में स्थूल क्रियाकलापों की समीक्षा करने वाले इसकी तुलना नारी जाग्रति के लिए विगत समय में क्रियारत होने वाले ईश्वर चन्द्र विद्यासागर आचार्य कर्वे, राजा राम मोहन राय आदि प्रयासों से कर सकते हैं ।

परन्तु इस प्रयास में बहुत कुछ ऐसा है जो अतुलनीय है । अच्छा हो इसे उन्हीं शब्दों में ग्रहण करें ''यह नहीं सोचना चाहिए कि यह बरसाती बादल कुछ घड़ी गर्जन-तर्जन करके ठंडा पड़ जाएगा । यदि यह कुछ व्यक्तियों का या संगठनों का प्रयास होता तो वैसी आशंका की जा सकती थी । पर यथार्थता कुछ और ही है । कालचक्र गतिशील हो रहा है और उसने युग बदलने जैसी करवट ली है । सूक्ष्मजगत में वे संभावनाएँ बन चली हैं जो अपने प्रचंड प्रवाह से कितने ही महत्वपूर्ण परिवर्तन प्रस्तुत करेंगी । नारी का पुनरुत्थान उन्हीं में से एक सुनिश्चित तथ्य है ।

वस्तुतः महाकाल का यह प्रथम आश्वासन है, जिसके पीछे पिछड़ों को ऊँचे उठाकर समता का धरातल बनाने के लिए वचनबद्ध दैवी शक्तियों ने आश्वासन दिलाया है । लोकमानस भी समय की प्रचंड धारा के विपरीत बने रहने का देर तक प्रयास नहीं करता रह सकता । तूफान मजबूत पेड़ों को भी उखाड़ फेंकता है । घटाटोप वर्षा में छप्परों से लेकर झोंपड़ों तक को बहते देखा जाता है । पानी का दबाव बड़े - बड़े बाँधों में भी दरार डालने और उन्हें बहा ले जाने का दृश्य प्रस्तुत करता है । यह महाकाल की हुँकार ही है, जिसने नारी को पिछड़े क्षेत्र से हाथ पकड़कर आगे बढ़ने के लिए धकेला और घसीटा है । अब न सिर्फ नारी के भाग्य में स्वतः की बेड़ियों से मुक्ति लिख दी गई है । वरन् विधाता ने उसे मुक्ति दूत बनने का गरिमापूर्ण दायित्व भी सौंपा है । जिन्हें सूक्ष्म दृष्टि प्राप्त है-वे अनुभव कर सकते हैं कि यह अपने युग का सुनिश्चित निर्धारण है । जो इन्हीं दिनों पूरा होने वाला है ।''

महाकाल की यह हुँकार ही उनके संकल्प के स्वरों में मुखरित हुई । इसी हेतु चली थी उनकी प्रचंड तप साधना और सक्रिय हुए थे विचारात्मक एवं क्रियात्मक प्रयास । उनके इन प्रयासों का अंतिम भाग इन्हीं दिनों पूरा होने को है । जो संवेदनशील अंतःकरण युग ऋषि के इन भाव स्पंदनों का स्पर्श पा सके हों । जिनके अंतरतम में इन दिनों नारी उत्थान की सेवा-साधना तपश्चर्या करने का मन हो वे अपनी उपयुक्त दिशा पाने के लिए शांतिकुंज हरिद्वार से संपर्क स्थापित कर सकते हैं ।

अभागा है वह मनुष्य या राष्ट्र जो भागवत् मुहूर्त के आने पर सोया हुआ रहे या उसके उपयोग के लिए तैयार न हो, क्योंकि उसके स्वागत के लिए दीया सँजोकर नहीं रखा गया और उसकी पुकार की ओर से कान बंद कर लिये गये हैं । पर कहीं अधिक अभागे हैं वे जो सशक्त और तैयार होते हुए भी, उस शक्ति का अपव्यय करते हैं और उस मुहूर्त का दुरुपयोग करते हैं, उनके भाग्य में होती है पूरी न हो सकने वाली क्षति या एक सघन विनाश । -स्वीन्द्र

''इक्कीसवीं सदी-नारी सदी '' के महामंत्र की साधना इसी पुण्यवेला में युग ऋषि के संरक्षण में की जानी है । इसके लिए पूर्वकाल का स्वस्थ सांस्कृतिक परंपराओं एवं वर्तमान के विवेक पूर्ण विचारों का सामंजस्य बैठाकर समाज को प्रशिक्षित करना होगा । भारतीय आध्यात्मिक धरातल पर मातृ शक्ति की पुनः प्रतिष्ठापना करनी होगी । तभी समाज एवं विश्व का उज्वल भविष्य संभव है । तथा नारी धात्री एवं निर्मात्री की महत्वपूर्ण भूमिका संपादित करने में सक्षम होगी । जिसके लिए वह अभी भी अपनी कारणसत्ता में प्रयत्नरत है । ॐ

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

आपत्तिकाल का अध्यात्म-

परम पूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

इस अंक में प्रस्तुत है 13 सितम्बर 1978 को शांतिकुंज परिसर में पूज्यवर द्वारा दिया गया उद्बोधन जैसा कि परिजन-पाठकगण भली-भाँति जानते हैं । इस स्तम्भ के अंतर्गत विगत दो वर्षों से हम परम पूज्य गुरुदेव द्वारा विगत चालीस वर्ष की अवधि में दिए गए व्याख्यानों-गोष्ठियों-प्रवचनों का सम्पादित रूप प्रस्तुत करते हैं । हमारा प्रयास है कि हमें विगत इन वर्षों के सभी रिकॉर्डेड ऑडियो कैसेट्स, स्पूल्स, आदि सुलभ हो जायें ताकि अध्यात्म के वैविध्यपूर्ण प्रतिपादन पर बहुमुखी रूप में अभिव्यक्त यह अमृतवाणी जन-जन तक पहुँच सके, । किन्हीं पुराने जुड़े परिजनों के पास ऐसी सामग्री हो तो शांतिकुंज संपर्क कर उपलब्ध करायें । उनके नाम के कृतज्ञता-ज्ञापन के साथ अमृतवाणी के अंशों का संपादन कर इन्हें पुस्तकाकार छपाये जाने की भी अगले दिनों योजना है । सूक्तियों का भी विषयानुसार एक कोश अगले दिनों प्रकाशित होगा जो इन्हीं अमृतवाणी प्रसंगों से लिया जायेगा ।

तो प्रस्तुत है इस अंक की अमृतवाणी, जिसमें आपत्तिकाल की-संधिवेला की घटी में जाग्रत परिजनों की भूमिका व उस विशिष्ट अध्यात्म की चर्चा है जो भविष्य का निर्माता होगा ।

गायत्री मंत्र साथ-साथ -

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो, भाइयो ! कुछ समय ऐसे होते हैं जिनको हम सामान्य कह सकते हैं । सामान्य समय में सामान्य प्रकार की गतिविधियाँ चलते रहने का औचित्य समझ में आता है । रोज आदमी पैदा होते हैं, बढ़ते हैं, खेती-बाड़ी करते हैं, ब्याह-शादी होते हैं, बाल-बच्चे होते हैं, बड़े होते हैं और मौत के मुँह में चले जाते हैं । यह सामान्यक्रम है जो चलता रहता है । इसमें अचंभे की कोई नयी बात नहीं है, लेकिन कभी-कभी कोई ऐसे समय भी आते हैं जिनको हम विलक्षण कह सकते हैं । जिनको 'आपत्तिकाल' कहा जा सकता है । मनुष्य के जीवन में आपत्तिकाल भी कई बार आते हैं । आपत्तिकाल में सामान्य प्रकार की प्रक्रियायें लड़-खड़ा जाती हैं । घर में आग लग जाय, छप्पर जल रहा हो, उस समय खाना, नहाना सब कुछ छोड़ कर जलते छप्पर पर पानी डालने के लिए सभी दौड़ पड़ते हैं । दुर्घटना हो जाय, रास्ते में अपने बच्चे का एक्सीडेण्ट हो जाय तो आफिस जाना छोड़कर पहले बच्चे को अस्पताल ले जायेंगे और प्लास्टर कराकर आयेंगे । यह क्या कह रहे हैं ? आपत्तिकाल की बात कह रहे हैं । आपत्तिकाल की कीमत जो समझते हैं, मर्यादायें समझते हैं, उनको यह भी ध्यान है कि आपत्तिकाल के लिए आपत्तिकालीन व्यवस्थायें बनायी जाती हैं ।

देश के ऊपर जब कोई दुश्मन हमला कर देता है तो क्या करना पड़ता है ? दुश्मन बनना पड़ता है । सैनिकों की छुट्टियाँ बंद करदी जाती हैं । नहीं साहब, हमारा व्याह है, मुहूर्त भी छट गया है । आपका व्याह होगा अगले साल में अभी तो दुश्मन ने हमला कर दिया है, इसलिए आपकी छुट्टियाँ रद्द की जाती हैं और आपको लड़ने के लिए जाना होगा । हमारी माँ मर गयी है उसका श्राद्ध करना है । श्राद्ध करना है तो अगले साल करना, इस वक्त बंद कीजिए । यह सब सामान्य समय की बातें हैं । सामान्य समय पर श्राद्ध भी करना चाहिए। बाप बीमार है तो उसका इलाज भी करना चाहिए । सामान्य समय पर अपनी लड़की बड़ी हो गयी है तो उसके लिए दूल्हा भी ढूँढ़ना चाहिए । पर असामान्य समय पर यदि आप मिलेट्री में हैं तो मोर्चे पर जाना चाहिए और अगर मिलेट्री में नहीं हैं तो यदि भर्ती के लिए हुक्म दे दिया गया है कि नौ जवानों में से हर एक को भर्ती होना पड़ेगा, तब आप भर्ती हो जाइये । नहीं साहब, हमारा बी. ए. सेकण्ड ईयर है, हम फेल हो जायेंगे, थर्ड डिवीजन हो जायेंगे । आपकी बात सही है, लेकिन यह उस समय के लिए सही है जबकि सामान्य समय हो । सामान्य समय में आपको ट्यूशन करना चाहिए, पढ़ना चाहिए और जब आपत्तिकाल है तब पढ़ाई बंद करनी चाहिए । क्या करें ? आप एन. सी.सी. सीखिये और तुरंत मिलेट्री में चले जाइये, क्योंकि यह आपत्तिकाल है । आपत्तिकाल की मर्यादा जो आदमी समझते हैं, वे यह जानते हैं कि इसमें सामान्य जीवन के क्रम और सामान्य जीवन की व्यवस्थाओं के बारे में बाहर से अलग से विचार करना पड़ता है ।

साथियो ! मैं यह कह रहा था आपसे कि यह आपत्तिकाल है जिसमें से आप गुजर रहे हैं । इसे अगर आप हमारी आँखों से देख पायें तो आप देख सकते हैं कि कैसे तूफान आ रहे हैं, कैसी आँधियाँ आ रही हैं । आपको अपनी आँखों से दिखाई नहीं पड़ सकता, क्योंकि आप सामने की चीजें देखते हैं । आपको केवल वही चीज दिखाई पड़ती है जो सामने है । जमीन

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

आपको चलती हुई दिखाई नहीं पड़ सकतीं । आपकी आँखें बहुत छोटी हैं । आप तो कहेंगे कि मकान कहाँ भाग रहे हैं पेड़ कहाँ भाग रहे हैं, वे जहाँ रात में थे वहीं पर अब भी हैं । सब गलत बात है । बेटे , एक मिनट में ६००० मील चाल से पृथ्वी इस तेजी से भागती हुई चली जा रही है कि उसके सामने बन्दूक की गोली भी कोई चीज नहीं है । इस तेजी के साथ दनदनाती हुई पृथ्वी भाग रही है । आपको तो दिखाई नहीं देता, पर चन्द्रमा की जमीन पर जो लोग गये थे , उन्होंने आकर खबर दी है कि चन्द्रमा की जमीन पर हमारी पृथ्वी तीन गुना बड़ी दिखाई देती है । वह ग्लोब के तरीके से रंग-बिरंगी चलती हुई दिखाई पड़ती है यह क्या है ? आँखों का फरक है जो आपको दिखाई नहीं देता कि क्या हो रहा है ? गूलर के फूल के बीच में बंद रहने वाले भिनगे को कुछ पता नहीं है कि कब रात हुई कब दिन । धूप है या वर्षात् , महामारी फैली है या सब कुछ ठीक चल रहा है । आपकी अकल और बनावट अगर गूलर के भिनगे की तरीके से हो तो मैं कुछ नहीं कह सकता । तब आपके लिए दिन सामान्य हैं । जैसे हमेशा थे वैसे ही अब भी जगत की गति का असर आपके ऊपर नहीं हो सकता । **"सबसे भले विमूढ़ जिनहि न व्यापत जगत गति ।" जिनके लिए वही रोटी खाना, पैसा कमाना, बच्चे पैदा करना, इसके अतिरिक्त और कोई समस्या नहीं है, उन्हें मूढ़ के सिवाय और क्या कहा जाय ?**

जिनके पास न अकल है, न दूर दृष्टि है और न ही जिन्हें कर्तव्यों का भान है-उनके लिए मैं कुछ नहीं कह सकता, पर आपको मैं उनसे अलग मानता हूँ कि आप अलग किस्म के आदमी हैं । आप ऐसे आदमी हैं जिनको कि भगवान ने तीसरी वाली आँख देना शुरू कर दिया है । तीसरी वाली आँख क्या होती है ? वह जो हम त्राटक से याद कराते हैं । तीसरी आँख खोलने के लिए प्रकाश का ध्यान कराते हैं । तीसरी आँख कहते हैं प्रकाश को जिससे कि बहुत दूर तक दिखाई पड़ता है । दूर की बातें दिखाई पड़ती हैं ? हमको मौत दिखाई पड़ती है, अगला जन्म दिखाई पड़ता है । हमको अपना भविष्य दिखाई पड़ता है , भगवान दिखाई पड़ता है मरने के बाद का चौरासी लाख योनियों का चक्र दिखायी पड़ता है और यह दिखाई पड़ता है कि हमारी अवांछनीय गतिविधियाँ जो आज हैं, वे हमारे लिए क्या नुकसान-दायक हो सकती हैं । आगे चलकर इनकी क्या प्रतिक्रिया हो सकती है । आज हम जुलाब की गोली खा रहे हैं तो कल क्या हो सकता है । यह क्या है ? यह समझदारी की निशानी है जिसमें कि आदमी को अपने बावत और दुनिया की बाबत आगे की बात दिखाई पड़ती है । जो आगे की बात सोचते हैं उनको यह आपत्तिकाल दिखाई पड़ता है । वर्तमान-कालीन यह युग संध्या है । युग संध्या किसे कहते हैं ? युग जब बदलते हैं तब ध्वंस और निर्माण साथ-साथ चलते हैं । दोनों प्रक्रियायें मिलकर चलती हैं, इन्हें युग संध्या कहते हैं । युग संध्या कैसी होती है, इसका एक नमूना मैं आपको बता सकता हूँ । बताइये क्या है? बेटे एक युग वह है जिस समय हम एक पेट में बैठे हुए थे । पेट में से बैठकर के जब हमारा परिवर्तन हुआ, हमारे जीवन का दूसरा वाला चरण बढ़ा-जन्म हुआ, तो हाहाकार मच गया । यह क्या था आपत्तिकाल था परिवार के लिए । सारे का सारा काम, खाना, पीना सब एक ओर । यह क्या नई आफत आ गयी क्या हुआ था हमारा जन्म हुआ था ।

नये युग का जन्म होने जा रहा हैं । दो बातें होनी हैं-एक निर्माण की, दूसरा निर्माण से पहले ध्वंस होना है । ध्वंस भी होना है । इमारत जब बनाई जाती है, तब जमीन की खुदाई करनी पड़ती है । पीछे मिट्टी डालकर कुटाई पिटाई करते हैं और गड्ढे को ठीक करके तब दीवार की चिनाई की जाती है "नया मंदिर बनेगा, खंडहरी दीवार तोड़ो तुम " यह गीत लड़कियाँ गाती रहती हैं, आपने सुना नहीं है ? भगवान के जब अवतार होते हैं तब एक काम नहीं करते-मात्र धर्म की स्थापना करते हुए नहीं आते, वरन् अनीति का ध्वंस करते हुए भी आते हैं । भगवान जब अवतार लेते हैं तब कल्याण करते ही नहीं आते, वरन् सफाया करते हुए भी आते हैं । सफाया किये बिना नया नहीं बन सकता । निर्माण के लिए ध्वंस आवश्यक है । ध्वंस के बिना निर्माण संभव नहीं है । दोनों चीजें आपस में मिली हुई हैं । एक चीज का ध्वंस होता है तो दूसरी चीज का निर्माण होता है । एक आदमी मरता है तो दूसरा जन्म लेता है । नयी पीढ़ी पैदा करेंगे। बहुत शानदार नयी पीढ़ियाँ पैदा होंगी ।

अवतारों की प्रक्रिया के साथ में दोनों बातें एक साथ जुड़ी हुई हैं-एक और ध्वंस की दूसरी ओर निर्माण की । **" परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् " साधुओं का उद्धार बाद में करेंगे, पहले दुष्कृतों को मारकर खतम करेंगे ।** आप सोचते हैं कि भगवानजी आयेंगे तो रामराज्य लेकर के आयेंगे, शक्ति लेकर, शांति लेकर के आयेंगे। तो सही, पर आप यह भी ध्यान रखिये कि वे लाखों-करोड़ों के लिए रोना-पीटना और हाहकार भी लेकर आयेंगे । वे दया बरसायेंगे, तो क्रोध भी बरसायेंगे । दोनों तरह का संतुलन मिलता रहता है जब कभी परिवर्तन की संध्या वेला होती है । परिवर्तन की इस संध्या में आपको न तो कोई विशेष समय की मांग दिखाई पड़ती है, न कर्तव्यों की पुकार सुनाई पड़ती है और न ही भगवान का अवतार दिखाई पड़ता है । चारों ओर क्या हो रहा है-आपको दिखाई पड़ना चाहिए । अगर आप विमूढ़ ही बने रहे, रोटी खाने और पैसा कमाने से लेकर बच्चे पैदा करने तक के चक्र में ही पड़े रहे तो फिर मैं क्या कह सकता हूँ । लेकिन अगर आपके भीतर जीवन आ गया होगा, जाग्रति आ गयी होगी तो आपकी एक और आँख खुल गयी होगी जिसको त्राटक साधना में हमने बहुत महत्व दिया है ।

पंचकोशीय उपासना में इस वर्ष हमने त्राटक को बहुत महत्व दिया है और कहा है कि आपकी मदद करने के लिए हम तैयार हैं । यह आपत्तिकाल है, इसलिए आप कोई विशेष उपासना न करें तो भी कोई हर्ज की बात नहीं है। आपके बदले हम कर देंगे । आप

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अपनी उपासना थोड़ी देर करें तो भी काम चल सकता है । नहीं गुरूजी हम तो योगाभ्यास सीखेंगे, कुण्डलिनी जागरण सीखेंगे। बेटे , यह इतना सरल और सस्ता नहीं है जितना कि तू समझता है । इसमें सारे के सारे जीवन का कायाकल्प करना पड़ता है । अपने व्यक्तित्व को और चरित्र को उलटा-पुलटा करना पड़ता है । यह शीर्षासन है जीवनक्रम का । अध्यात्म क्या है ? जीवन का शीर्षासन है । तू क्या इसे बाजीगरी समझता है कि यह कर लूँगा वह कर लूँगा । इसमें ऐसा कुछ नहीं है, वरन् इसमें जीवन की दिशा उलटी जाती है , जीवन को पलटा जाता है । योगी की परिभाषा एक ही है कि योगी दिन में सोया करता है और रात में जागा करता है । क्या मतलब है इसका ? यह *"अश्वत्थम् प्राहुरव्ययम्"* अर्थात् पीपल का पेड़ है जिसकी टाँगे ऊपर हैं, जड़ें ऊपर हैं और उसकी शाखाएँ एवं पत्ते नीचे हैं । मतलब यह कि दुनिया वाले जिधर चलते हैं, उससे ये तरकीबें भिन्न हैं । दुनिया वाले लोगों के सोचने, करने का जो तरीका है, आकांक्षा, इच्छाओं का जो ढंग है, उससे आध्यात्मिक जीवन की प्रक्रियायें भिन्न हैं जिन्हें अलग ढंग से करना पड़ता है ।

मैं आपसे निवेदन कर रहा था कि पूजा-उपासना के बारे में, सिद्धि-चमत्कारों के बारे में, देवताओं के दर्शन के बारे में, ऋद्धि-सिद्धियाँ पाने के बारे में जो तरह-तरह के खेल-खिलवाड़ आप करते रहते हैं, उसमें न पड़ें तो अच्छा है । क्योंकि आपके लिए वह कठिन पड़ेगा । आप पहली मंजिल पर ही टक्कर खाकर चकनाचूर हो जायेंगे । जब आपसे ब्रह्मचर्य के लिए कहा जायगा कि शारीरिक ब्रह्मचर्य उतना आवश्यक नहीं जितना कि मानसिक ब्रह्मचर्य आवश्यक है, तब आप दाँत निकाल देंगे और कहेंगे कि शारीरिक ब्रह्मचर्य तो हमसे सधता नहीं, फिर मानसिक ब्रह्मचर्य की बात ही अलग है । चौबीस घंटे हमारा दिमाग और आँखें दुराचार में लगी रहती हैं । जब बेटे तेरी सारी शक्ति इसी में खर्च हो जायेगी तब फिर तेरा सहस्रार चक्र कहाँ से जागेगा ? सहस्रार चक्र में लगने वाली सारी शक्ति इसी में लय कर देंगे, तब फिर वह जागेगा कैसे ? सहस्रार को जाग्रत करने वाला जो प्रकाश है वह तो आपकी आँखों के रास्ते सारे के सारे वाइब्रेशन्स तरंगों में से नष्ट हो जायगा फिर आप कहें कि गुरु जी हमारा सहस्रार जगा दीजिए, तो कैसे जगायें हम, इसके अंदर जो गर्मी थी, ऊर्जा थी वह तो तूने खतम कर दी । इसी तरह आहार के आधार पर जो तेरा रक्त बनता है और जिससे बनता है मन, तमोगुणी अन्न, अनीति बेईमानी का कमाया हुआ अन्न, हराम का कमाया हुआ अन्न खाकर के तैने उसे तमोगुणी बना लिया है । उसे मैं कैसे स्थिर कर दूँ । सारे का सारा अन्न जिसे तू खाता है उसमें तमोगुण ही तमोगुण भरा हुआ है-रजोगुण की सीमा में भी नहीं । पूरा परिश्रम चुका करके जो अन्न खरीदा नहीं गया वह भी बेईमानी का है । केवल चोरियाँ डाका डालकर लाया गया अन्न ही नहीं , यह भी अभक्ष्य होता है । प्राचीनकाल के पिपलादि ऋषि, कणादि ऋषि एवं अन्य दूसरे ऋषि सबसे पहले इस बात के लिए योगाभ्यास करते थे कि हमारे आहार के लिए अन्न कहाँ से आता है जिससे हमारा रक्त बनता है, शरीर बनता है जिससे हमें अच्छा कर्म करना आता है और हमारा मन जिसमें अच्छे विचार आते हैं-वह कहाँ से बनता है-अन्न से बनता है ।

बेटे, कान में उँगली लगा लेना या हरवक्त नाक में से प्राणायाम कर लेना भर योगाभ्यास नहीं है । योगाभ्यास जीवन का उपक्रम है जिससे जीवन में परिवर्तन करना पड़ता है । साधु को, तपस्वी को, अपने जीवन की प्रक्रिया उलटी करनी पड़ती है । साधु या ब्राह्मण एक जीवन क्रम है, जीवन की एक फिलॉसफी है । सोचने और काम करने का एक तरीका है । योगाभ्यास, प्राणायाम आदि उसके ऊपर के शृंगार हैं । शान चढ़ाने के पत्थर हैं जिस पर घिस कर तलवार पर धार निकाली जाती है । लोहा न हो तो लकड़ी की तलवार नहीं बन सकती । अध्यात्म मार्ग पर भगवान की कृपा अनुकंपा पाने के लिए, सिद्धियाँ प्राप्त करने के लिए, आत्मशांति प्राप्त करने के लिए सबसे ज्यादा एक ही चीज की जरूरत है दूसरी कोई नहीं और उसका नाम है-व्यक्तित्व का परिष्कार । इसके लिए वहाँ से साधनायें शुरू करनी पड़ती हैं जहाँ से मनुष्य के आहार और व्यवहार को संयमित करना पड़ता है । जीभ पर संयम करना पड़ता है, इन्द्रियों पर संयम करना पड़ता है, कामेन्द्रिय पर संयम करना पड़ता है । यह शुरूआत है । फिर मनका संयम करना पड़ता है । यह एक साइन्स है । उपासना में मन को अस्त-व्यस्त नहीं जाने दिया जाता । उससे कहा जाता है कि हमारा और हमारे भगवान का संबंध है, आप यहीं रहिए । इतने पर भी यदि मन भागता है तो भगवान की किताब पढ़िये, भगवान की शकल देखिये, भगवान से बातचीत कीजिए । बातचीत नहीं कर सकते तो भगवान का ध्यान कीजिए । ज्ञान, ध्यान की बात करके मन को पकड़ करके रखिये ।

मन के निग्रह के बाद समय का निग्रह करना पड़ेगा अपने आपको शिकंजे की तरीके से कसना पड़ेगा । यही तो एक संपत्ति है तेरे पास और दूसरी कोई चीज नहीं है । समय को व्यवस्थित नहीं किया तो फिर तेरे हाथ कुछ भी नहीं रह जायगा । विनोबा भावे से लेकर गाँधी जी तक जितने भी महापुरुष और अध्यात्मवादी हुए हैं, उनने समय को इस तरीके से कसा है कि एक क्षण भी बेकार न जाने पाये । यही तो दौलत है तेरे पास जिससे चाहे आत्म-कल्याण करले, चाहे जनता की सेवा करले, चाहे अपना स्वास्थ्य बनाले, चाहे परिवार की सेवा करले । प्रगति करनी है तो समय का संयम करना पड़ेगा । और किसका संयम करना पड़ेगा ? धन का संयम करना पड़ेगा । क्योंकि धन का संयम जब तक तू नहीं करता तब तक सैकड़ों तरह की बुराइयाँ आ जायेंगी । आलस्य, अहंकार, शराबखोरी, अपव्यय आदि सारी बीमारियाँ तो अनायास ही तेरे भीतर आ जायेंगी । धन का अगर संयम न कर सकेगा तो जो कुछ पुण्य-परमार्थ कर

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

सकता होगा , सो नहीं करेगा और यदि इसे औलाद के लिए छोड़कर चला जायगा तो वे आपस में लड़ेंगी और उनका सफाया हो जायेगा । उपार्जन और व्यय कैसे करना चाहिए-यह जीवन की एक शैली है, एक व्यवस्था है, एक क्रम है और एक आधार है ।

अध्यात्म एक साइन्स है जिसमें जीवन का क्रम बदलना पड़ता है । इसलिए मैं आपसे निवेदन कर रहा था कि इस आपत्तिकाल में योगाभ्यासी बनने के लिए, सिद्ध, महात्मा बनने के लिए कोशिश मत कीजिए । इस आपत्तिकाल में जिस चीज की जरूरत है आप वही काम करें । हम आपकी सहायता करेंगे । इस आपत्तिकाल में हमने अपने गुरु की सहायता की है और उसने हमारे लिए आवश्यकताओं को पूरा किया है । आपत्तिकाल में हनुमान जी ने रामचन्द्र जी की मदद की थी और रामचन्द्र जी ने जिन सिद्धियों की जरूरत थी पहाड़ उठाने से लेकर समुद्र छलांगने तक की सिद्धियाँ दे डाली थीं । रामचन्द्रजी ने कहा था-आप हमारा काम कीजिए और हम आपका काम करेंगे । यह भी एक तरीका है-अंधे और पंगे का । अंधे की पंगे ने मदद की थी और पंगे ने अंधे की । आप हमारी मदद कीजिए और हम आपकी मदद करेंगे । आपके पास धन कम है, तो बेटे, मेरे पास कम है, पर जिससे हमारा संपर्क और संबंध है वह बड़ा मालदार आदमी है । उसकी बैंक बहुत बड़ी है । आप इसमें शामिल क्यों नहीं हो जाते ? आप हमारी कंपनी में बीमा करा लीजिए । हमारा बड़ी कंपनी में बीमा है । इसलिए हमने आपसे यह कहा था कि आप हमारी शृंखला में शामिल हो जाइये और उपासना का उत्तरदायित्व हमारे ऊपर छोड़ दीजिए तो काफी है । तो हम क्या करें गुरु जी ? बेटे, आप वही करें जो हम अपने गुरु का करते हैं । आपके लिए सबसे बेहतरीन, सबसे अच्छा-सबसे नफे का सौदा यह है कि जिस तरह से हमने अपने गुरु का कहना माना है और उसके कहने के मुताबिक यह योगाभ्यास कर रहे हैं जो उसने हमको सुपुर्द कर दिये और जिससे शक्तियाँ पैदा होती हैं, आप भी ऐसा ही करें ।

जिस योगाभ्यास को आप इतना सरल समझते हैं, वह सरल नहीं, वरन् इतना कठिन है कि आप कर नहीं पायेंगे । आप समझते हैं कि गायत्री माता का अनुष्ठान २४ हजार जप में हो जाता है ? तो यह इतने से पूरा नहीं होता । गायत्री ब्राह्मण की कामधेनु है । अतः जप करने से पहले ब्राह्मण बन । नहीं साहब , ब्राह्मण नहीं बनेंगे, रहेंगे तो हम डाकू और रहेंगे तो हम हत्यारे-कसाई ही, पर २४ हजार का जप करेंगे । तब बेटे इससे क्या हो जायगा ? गंदे नाले में गंगाजल डालते रहें तो क्या बनेगा ? गंगा जी में तू गंदे नाले को डाल दे तो गंगा जल हो भी सकता है, पर गंदे नाले में लाकर के एक किलो गंगा जल डाल देगा तो क्या सारा का सारा गंदा नाला शुद्ध हो जायगा ? गंदा नाला शुद्ध नहीं होगा , वरन् वह गंगा जल भी गंदा नाला हो जायगा । तू मोटी बातें भी समझता क्यों नहीं मोटी बातें समझ । इसलिए मैं आप लोगों में से हर एक का उत्साह जिसमें योगाभ्यास शामिल थे, तरह-तरह की जादूगरी शामिल थी, तरह-तरह के चमत्कार देखना और तरह-तरह की सिद्धियाँ देखना शामिल थे, तरह-तरह के शब्द कानों में सुनने शामिल थे, उनसे आपको निरस्त करता हूँ और यह कहता हूँ कि आप इधर से मन हटा लें और हमारी साधना में शामिल हो जायँ । कैसे शामिल हो जायँ ? यह आपत्तिकाल है । आपत्तिकाल में आपत्तिकालीन कार्यक्रम बना लें तो ठीक रहेगा । आपत्तिकालीन क्रियाकलाप में आप एक कार्यक्रम यह बना लें कि आप अपनी व्यक्तिगत महत्वांकांक्षाओं को कम कर दें । सामान्य भारतीय जिस स्तर का जीवनयापन करता है, वहाँ तक आप अपने को सीमाबद्ध कर लें तो आप आपत्तिकाल में युग की माँग और समय की मांग के लायक कुछ कर पायेंगे । अगर आपकी महत्वाकांक्षायें जिन्दा रहीं तो आप कुछ नहीं कर पायेंगे , क्योंकि आदमी की महत्वाकांक्षाओं के पूरा होने की कोई गारंटी नहीं है । आपत्तिकालीन इस युग संध्या में अपने कर्तव्यों का पालन करने के लिए अगर आपकी इच्छा है तो आपको भगवान के कार्यों में सहायक होना चाहिए और योगाभ्यास का साधना का पहला कदम यह मानकर चलना चाहिए कि हमारे लिए इतना ही काफी है जितने में हमारा गुजारा हो सके । औसत भारतीय स्तर के हर आदमी के हिस्से में जितना आता है, उसी स्तर का आप अपना और अपने परिवार का खान पान रहन-सहन और संग्रह बना लें ।

मित्रो ! महत्वाकांक्षायें अगर आपके दिमाग पर हावी रहीं तो हमको कहना पड़ेगा कि आपत्तिकालीन युग में आप कुछ नहीं कर पायेंगे । नामवरी के लिए , यश, लोभ या भड़कावे-बहकावे में आकर परोपकार के नाम पर कुछ खेल-खिलौना थोड़ा-बहुत कर भी लें, पर असल में आप कुछ ठोस काम कर नहीं पायेंगे । अपनी महत्वाकाक्षाओं को कम करिये । तो क्या महत्वाकांक्षायें खत्म कर देने से आदमी का वर्चस् खत्म नहीं हो जायगा ? नहीं बेटे, उसके प्वाइंट बढ़ा दें, दिशायें बदल दें । जीवन को बड़प्पन की अपेक्षा महानता की दिशा में मोड़ दें कि हम महान बनेंगे । महान किसे कहते हैं ? जो सिद्धांतों के लिए काम करते हैं, आदर्शों के लिए काम करते हैं । इस दिशा में महत्वाकांक्षाओं को जितना बढ़ाना चाहें बढ़ा दें । गुरुजी हम तो ऋषि बनेंगे । बेटा, हम तुझे ऋषि बनायेंगे-ऋषि की महत्वाकांक्षा बढ़ा । हम तुझे ब्रह्मर्षि बना देंगे, राजर्षि बना देंगे, देवर्षि बना देंगे , पर शर्त एक ही है कि हमारे रास्ते पर चल और उधर की महत्वाकांक्षायें कम करके इधर की महत्वाकांक्षाओं में लगा दे, फिर जो भी तू कहेगा, हम बना देंगे।

हम आपको सेठ नहीं बना सकते, मिनिस्टर नहीं बना सकते , राजा भी नहीं बना सकते, पर आपकी आध्यात्मिक महत्वाकांक्षाओं को हम पूरा कर सकते हैं, क्योंकि वे स्वाभाविक और सरल हैं । उसमें दैवी शक्तियाँ सहायता करती हैं, पर आपकी भौतिक महत्वाकांक्षाओं में दैवी शक्तियाँ सहायता नहीं करतीं । उसमें आपका कर्म और पुरुषार्थ सहायता करता है । यही घूम-

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

घाम करके दैवी कृपा, आशीर्वाद के रूप में आ जाता है । फोकट में दैवी कृपा आदमी की भौतिक महत्वाकांक्षा को पूरा करने में सहायक नहीं होती है । यदि देवता पैसा देते होते तो हिन्दुस्तान जैसा देश जो देवताओं का देश कहलाता है, गरीब नहीं रहा होता लक्ष्मी जी की पूजा करते हुए सात पीढ़ियाँ व्यतीत हो गयीं फिर भी गरीबी हमारे घर से निकली नहीं, लक्ष्मी जी आयीं नहीं । हमने सुना है देवता कृपा करते हैं ? देवता कृपा नहीं करते, भौतिक जीवन में योग्यतायें काम करती हैं, पुरुषार्थ काम करता है । जापानियों से पूछ कर आइये कि आपको जो संपत्ति मिली है उसे क्या लक्ष्मी जी ने भेजा है या आपके पुरुषार्थ ने । हर जापानी यही कहेगा कि हमारे पुरुषार्थ ने भेजा है, लक्ष्मी जी की इसमें कोई सहायता नहीं । देवताओं की सहायता एक काम में आती है- आध्यात्मिक जीवन आंतरिक जीवन के विकास में, जो कि वास्तविक जीवन है और सारी की सारी सफलताओं का केन्द्र है । यही जीवन आपका विकसित हो सकता है ।

इस आपत्तिकाल में जो सामान्य समय नहीं है, यदि आप अपने जीवन की रीति-नीति और गतिविधियों को बदल दें, अपने भौतिक जीवन की महत्वाकांक्षाओं को कम कर दें । जितने कम में गुजारा हो सकता हो उतने कम पैसे, कम समय में अपना गुजारा कर लें और बाकी सारे का सारा समय श्रेष्ठ कामों के लिए, आध्यात्मिक कार्यों के लिए, आपत्तिकालीन क्रिया-कलापों के लिए समय की मांग को पूरा करने में लगा दें । यह नीति अगर आपकी समझ में आ जायगी तो फिर मैं कहता हूँ कि बाद का रास्ता आपका साफ है । फिर आपकी मुक्ति का रास्ता खुल गया और जो चीजें आप चाहते थे, उसके मिलने की गारंटी हो गयी । यदि आपने अपने आपको बदल दिया तो सिद्धियाँ भी मिल जायेगी । सूरदास ने अपने आपको बदल दिया था तो वे विल्वमंगल से सूरदास हो गये थे । भगवान उनको इसी जीवन में मिल गये थे । तुलसीदास ने अपना जीवन क्रम बदल दिया था तो भगवान उनको इसी जीवन में मिल गये थे । बाल्मीकि ने अपने जीवनक्रम को बदल दिया था तो भगवान उनको इसी जीवन में मिल गये थे । बुरे से बुरे आदमियों में से जिन्होंने भी अपने जीवन क्रम को बदल दिया, उनको भगवान मिले थे । लेकिन जिन्होंने अपने जीवनक्रम में हेर-फेर नहीं किया, भगवान के ऊपर जाल फेंकते रहे और यह कहते रहे कि हमको दिला दीजिए । बेटा और आप हमारी डकैती में फायदा करा दीजिए , बेटे ये देवी-देवता और भगत दोनों ही मरेंगे और दोनों ही पिटेंगे । मैं चाहता हूँ कि आप इस अज्ञान से-इस जंजाल से निकल आयें तो अच्छा है । मैं चहता हूँ कि आपके सामने अध्यात्म की, शांति की, भगवान के प्यार की, सिद्धियों की , चमत्कारों की, जीवन की सार्थकता की एक स्पष्ट रूपरेखा हो तो काम चल जाये ।

यह आपत्ति धर्म है इसमें आप लोग एक काम करना कि अपनी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं को जितना कमकर सकते हों-कम करना, ताकि उसी सीमा में आप ब्राह्मण होते चले जायँ । उसी सीमा में संत हो जायँ । जिस सीमा में आप ब्राह्मण है, संत है- उसी सीमा के हिसाब से, उसी मर्यादा के हिसाब से आपको भगवान की कृपा मिलेगी । देवाताओं की , सिद्ध पुरुषों की सहायता मिलेगी । जो भी चीज आप चाहते हैं वह सब चीजें मिलेंगी विशेषकर इस आपत्तिकाल में, यदि आप अपने व्यक्तित्व को विकसित करलें तो । इस जमाने में युग निर्माण जैसे महान कार्य के लिए , जलती हुई आग को बुझाने के लिए और उज्वल भविष्य की संभावनाओं को बढ़ाने के लिए महाकाल ने आपसे समय मांगा है । यदि आप अपनी भौतिक महत्वाकांक्षायें कम करके आध्यात्मिक महत्वाकांक्षाओं में अपने मनको लगा सकें तो आपको शक्ति भी मिलेगी , समय भी बचेगा, पैसा भी बचेगा, अकल भी बचेगी, श्रम भी बचेगा । इतना ज्यादा सामान बचेगा कि आप कहने लगेंगे कि हम तो अपने आपको अभावग्रस्त समझते थे, पर हमारे पास इतनी ज्यादा दौलत निकल पड़ी कि हम दुनिया को निहाल कर सकते हैं ।

आपको करना क्या है ? आपके जिम्मे जो काम सुपुर्द किये गये हैं, वे परिव्राजक के काम सुपुर्द किये गये हैं । आपको परिव्राजक की वास्तविक भूमिका निभानी है, इससे कम में काम नहीं चलेगा । परिव्राजक की योजना को पूरा करने के लिए, परिव्राजक के उत्तरदायित्वों और कर्तव्यों को निभाने के लिए वही काम करना पड़ेगा कि आप अपनी महत्वाकांक्षाओं को कम कर दें और सामान्य जीवन-यापन करने से संतोष कर लें । संतोष करने के बाद में यह देखें कि हमारे पास कितना ज्यादा समय है । उस समय का सदुपयोग कहीं भी कर सकते हैं । बाहर क्षेत्रों में भी भेज सकते हैं और अपने क्षेत्र में, गाँव में भी आप काम कर सकते हैं । वास्तव में परिव्राजक एक संकल्प है, एक व्रत है, एक नियम है, एक उपासना है, जिसमें श्रेष्ठ प्रकाश देने के लिए संपर्क स्थापित करना पड़ता है । संपर्क स्थापित कीजिए अपने घर-परिवार वालों से, अपने बच्चों से, अपने पड़ोसी और मोहल्ले वालों से । जिस दफ्तर में आप काम करते हैं, वहाँ लोगों से संपर्क स्थापित कीजिए अच्छे उद्देश्यों के लिए । आप वहाँ भी परिव्रजा कर सकते हैं । आप दुकानदार हैं तो वहाँ भी सबेरे से शाम तक ५० आदमी आते हैं । दुकानदारी के साथ-साथ श्रेष्ठ कामों के लिए भी आप उतना समय निकाल सकते हैं । आप हर आदमी को २४ घण्टे अच्छी सलाह दे सकते हैं, श्रेष्ठ प्रेरणायें दे सकते हैं और सामान्य जीवन क्रम के साथ परिव्राजक व्रत का- जिसका उद्देश्य जनसंपर्क है हर समय पालन करते रह सकते हैं । आप कहीं भी जायँ , हम आपसे यह नहीं पूछेंगे कि इनमें कितनी सफलता मिली । सफलता मिले या न मिले, पर प्रयास कितना किया, यह समयदानियों से हमारा मूल प्रश्न रहेगा ।

इस युग की सबसे बड़ी मांग समयदान है । समयदान का दस सूत्री कार्यक्रम आप समझ लें और पूरा करने की कोशिश करें, तो बात पूरी होगी ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

पहले आप बाहर जाइये और अपने आपसे, दूसरों से भी कहिए कि युग बदल रहा है । यह आपत्तिकाल है । आपत्तिकाल में भगवान ने प्रत्येक जाग्रत आत्मा से समय माँगा है । इस आड़े समय में आप समय दे पावें तो वह हीरे मोती , जवाहरात के बराबर है । समय की पुकार के ऊपर जिन्होंने समय दिया, वे बेटे, गाँधी जी के मिनिस्टर हो ये । स्वतंत्रता सेनानी हो गये और आज उन्हें पेन्शन मिल रही है । क्यों ? क्योंकि आपत्तिकाल में जब राष्ट्र पर आपत्ति आयी थी तो देश को आजाद कराने के लिए वे सत्याग्रही सेना में शामिल हो गये थे और जेल की यातनायें सही थीं । तो गुरु जी आप ऐसा कीजिये कि मुझे भी कहीं स्वतंत्रता सेनानियों में जेल भिजवा दीजिए । तीन महीने की जेल हो जायेगी और स्वतंत्रता सेनानी बन जायेंगे । ढाई सौ रुपया पेन्शन मिल जायेगी । बेटे तुझे मिलेगी नहीं, क्योंकि समय चूक गया । जेल जाने का भी समय था, अब वह समय कहाँ है अब आपत्तिकालीन समय है यह । युग बदल रहा है । आज का समय देना हीरे के बराबर , मोती के बराबर सोने के बराबर , जवाहरात के बराबर है । अगर अगली बार देगा तो तू क्या देगा । जब समय बदल जायगा तब हम तेरे समयदान का क्या करेंगे ? फिर समय की जरूरत नहीं पड़ेगी ।

इसलिए आप यहाँ से जाने के बाद में स्वयं से, अपने आप से और हर जाग्रत आत्मा से यह कहना कि सन् १९७८ से लेकर के सन् २००० तक के ये २२ वर्ष ऐसे हैं जिनमें दुनिया का कायाकल्प हो जायेगा । कैसे हो जायेगा, इस संबंध में मैं बेकार की भविष्यवाणियाँ तो नहीं करता, बेकार की भविष्य-वाणियाँ करना मुझे नापसंद है, पर मैं दो भविष्य वाणियाँ कहे देता हूँ-कि लोगों में बहुत तबाही आयेगी । संसार में बहुत तबाही आयेगी । तब आपको राहत के लिए लोगों में काम करना पड़ेगा । तबाही क्यों आयेगी ? क्योंकि आवांछनीय तत्व जहाँ कहीं भी हैं वे सब घटेंगे । घटने के लिए विनाश होगा और विकास के लिए नये निर्माण भी होंगे । नये निर्माण के लिए आपको समय देना पड़ेगा और श्रम करना पड़ेगा । विनाश में तो आपको सहायता नहीं करनी पड़ेगी, पर राहत कामों में आपको सहायता करनी पड़ेगी, ताकि आपका आत्मबल विकसित हो सके और आपका देवत्व विकसित हो सके । यह काम होगा ? हाँ बेटे होगा । अभी भी हो रहा है । तो विनाश कौन-कौन कर रहा है ? विनाश आपस में हम लोग कर रहे हैं । मारकाट से भी कर रहे हैं, बीमारियाँ भी कर रही हैं , बाढ़े भी कर रही हैं और जाने कौन-कौन कर रहा है । जहाँ कहीं भी देखिए हर जगह सूखे के साथ गीला जल रहा है और गीले के साथ सूखा जल रहा है । सब जगह तबाही ही तबाही मची है ।

बेटे यह आपत्तिकाल है, राहत कार्यों में लगना पड़ेगा । भगवान कोई नुकसान पहुँचाने वाला है हमें यह नहीं मालूम , पर हर जाग्रत आत्मा से यह कहने वाला है कि आप जहाँ पीड़ा हो वहाँ सहायता कर सकते हैं । इसमें आपकी आत्म-परीक्षा है और वर्चस् का अनुदान है । क्या आप मुसीबत में जहाँ के तहाँ हृदयहीन बने बैठे रहेंगे । मदद नहीं करेंगे ? जाग्रत आत्माओं के सामने आपत्तिकाल ने पुकारा है कि आप राहत कार्यों के लिए मदद कीजिये । राहत कार्य केवल बाढ़ और भूकंप के नहीं हो सकते । पीड़ा और पतन इस जमाने में अभी और फैलेंगे । इनसे राहत दिलाने के लिए ही मैं आपसे कहता हूँ । देखते नहीं गुंडागर्दी कैसे बढ़ती चली जाती है, दूसरे अपराध कैसे बढ़ते चले जाते हैं । इस तरह के राहत कार्यों में आपकी हर जगह जरूरत है । आपको निर्माण के एक नहीं लाखों कार्य करने हैं । ये इम्तहान की घड़ियाँ हैं । आपको निर्माण कार्यों के लिए ईंट और चूने की भूमिका निभानी है । प्रत्येक व्यक्ति से समय इसी के लिए माँगा गया है । गाँधी जी ने कभी समय मांगा था । राम ने कभी समय माँगा था, कृष्ण ने कभी समय माँगा था । हम भी आपसे समय माँगते हैं । समय की किसी के पास कमी नहीं है, केवल दिलेरी और साहस की कमी है, उदारता की कमी है । अगर आप अपने भीतर दिलेरी और उदारता पैदा कर सकें तो काम बन जाय ।

आप यहाँ से जाने के बाद एक बात हर एक से कहना, अपने से सौ बार कहना और जो कोई जाग्रत आत्मा दिखाई पड़े उस से कहना कि महाकाल ने एक ही निमंत्रण भेजा है-समय की माँग का निमंत्रण । आप परिव्राजक हैं । जन संपर्क में आप जहाँ कहीं भी जायँ, आप कृपा करके एक ही बात कहना हर आदमी से जो कोई भी आपको भजन करता हुआ, पूजा करता हुआ दिखाई दे उससे यही कहना कि अगर आप भगवान का अनुग्रह पाने को इच्छुक हों, भगवान की सहायता करने को इच्छुक हों, तो गुरूजी ने पल्ला पसार करके,

> ***विश्व के बेहतर मस्तिष्क की आज इच्छा है कि एक दूसरे से युद्ध करते हुए अलग स्वतंत्र राज्य नहीं हो बल्कि स्वतन्त्र और एक दूसरे पर निर्भर मित्र देशों का महासंघ हो ।***
>
> ***जो गरीबों और विकलांगों की सेवा करता है, वह ईश्वर की सेवा करता है ।***
>
> ***– महात्मा गाँधी***

महाकाल ने पल्ला पसार करके, युग के देवता ने पल्ला पसार करके हर आदमी से समय माँगा है । आपके पास समय हो तो हमें दे-नवयुग के निर्माण के लिए, राहत कार्यों के लिए, पीड़ा और पतन से लोहा लेने के लिए, सत्प्रवृत्तियों के संवर्धन में योगदान देने के लिए और दुष्प्रवृत्तियों से संघर्ष करने के लिए । दोनों हाथ से इस आपत्तिकाल में भगवान ने पुकार की है । अगर आप कर सकते हों तो करना, यहाँ से जाने के पश्चात् । समय देना केवल उनके लिए संभव हो सकता है जो अपनी भौतिक महत्वाकांक्षाओं पर नियंत्रण लगा सकते हैं । इसके अलावा कोई समय नहीं दे सकता मित्रो ! मैंने अपनी बातें कह दीं ।

समाप्त । 卐

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परम पूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी-

संधिकाल के महत्व पर एक विशिष्ट उद्‌बोधन

(दिनांक २४-१२-७९)

इस अंक में प्रस्तुत संधिवेला, जो युगपरिवर्तन का संदेश लेकर आयी है, का महत्व एवं परिजनों को इसमें क्या कुछ करना है, इसका विशद मार्गदर्शन है विशिष्ट त्रैमासिक सत्रों में शांतिकुंज परिसर में २४ दिसम्बर १९७९ को परम पूज्य गुरुदेव द्वारा अभिव्यक्त इन महत्वपूर्ण विचारों की सरिता में पाठक अवगाहन करें, जो आज के समय के लिए और भी सामयिक एवं हमें चुनौती देते दिखाई पड़ रहे हैं ।

गायत्री मंत्र साथ-साथ -

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो, भाइयो ! इस समय जिसमें हम और आप रह रहे हैं, यह युग संधि का समय है । युग-संधि क्या है ? युग-संधि उसे कहते हैं जबकि दो महत्वपूर्ण चीजें आपस में बदलती हैं-जैसे संध्या का समय । एक संध्या प्रातःकाल होती है और एक सांयकाल होती है । दिन खत्म हो जाता है, रात आ जाती है, यह सायंकाल की संधि का समय है । रात चली जाती है और सबेरा आने लगता है, यह प्रातःकाल की संधि का समय है । दो चीजें जब मिलती हैं, तब उनको संधि कहते हैं-संध्याकाल कहते हैं । यह संध्या का समय है जिसमें एक दैत्य विदा होने जा रहा है और देव प्रकट होने जा रहा है । दैत्य वह, जिसको हम पदार्थवाद-भौतिकवाद कहते हैं जो देखने में चमकदार, शक्तिशाली और सामर्थ्यवान है, लेकिन भीतर से कलुषित है । उसकी प्रतिक्रियायें स्वयं के लिए भी और दूसरों के लिए भी दुःखद हैं । रावण जिया तो सही, जप, तप भी किया, सोने की लंका भी बनायी , लेकिन ऋषियों को मारता-काटता रहा, दुःख देता रहा और दुख पाता रहा और अंततः दुःख पा करके ही मरा । स्वयं भी दुःख पाया और स्त्री-बच्चों को भी दुःख से जलते-भुनते देखा । दैत्य दुःख देता है और दुःख पाता है । देखने में उसका बाहरी कलेवर सोने जैसा चमकदार मालूम पड़ता है । उसकी ताकत ऐसी मालूम पड़ती है मानो दस सिर और बीस भुजाओं वाला हो । सामान्य मनुष्य से ज्यादा ताकतवर होता है दैत्य-जाइंट। जाइंट पहली बार विदा होने जा रहा है । फिर कौन आने वाला है ? अब देव का युग सहृदयता का युग, सादगी , सज्जनता और सद्‌भावना का युग आने वाला है । 'जाइंट' जो जाने वाला है, जिसे हम स्वार्थपरता कहते हैं, संकीर्णता, निष्ठुरता और कृपणता कहते हैं, वह आज जन-जन के भीतर छा गया है । आज आदमी कितना संकीर्ण, कितना स्वार्थी हो गया है । उसे दूसरों के बारे में कोई चिंता नही, केवल अपनी ही चिंता । यह कौन होता है ? केवल अपनी ही चिंता करने वाले को दैत्य कहते हैं । दैत्य मनोवृत्ति के रूप में भी आता है और व्यक्ति के रूप में भी आ सकता है । उसकी यही पहचान है ।

दैत्य कहाँ रहते हैं ? कहाँ बतावें आपको । अपना मुँह शीशे में देखिये तो आपको दिखाई पड़ेगा कि दैत्य-राक्षस जाइंट आपके भीतर बैठा हुआ है । जिसकी हविस जितनी ज्यादा है वह उतना ही बड़ा दैत्य है । हर एक की हविश आसमान को छू रही है । सौ रुपये महीने कमाने वाले का भी गुजारा नहीं । हविश का राक्षस इस तरीके से उछलता और उबलता रहता है कि अच्छे कार्यों के लिए, भजन-पूजन के लिए कुछ नहीं बचता हमारे पास, फिर सेवा के लिए, परमार्थ के लिए देवपूजन के लिए कहाँ बचेगा ? आपके पास है क्या जिससे पूजन करेंगे । आपके पास तो बची हुई एक हविश है जिसको पूरा करने के लिए आप हर एक को निगलना चाहते हैं । आपकी ख्वाहिशें इतनी बढ़ी हैं कि आप हर एक का सफाया करना चाहते हैं, हर एक को अपने पेट में भर लेना चाहते हैं । पेट में कौन भरता है-दैत्य । वह कभी भजन करता है रावण के तरीके से, तो कभी मारीच के तरीके से पूजन करता है । चारों ओर दैत्य छाया हुआ है । यह पढ़ा-लिखा भी है, बलवान है और विद्यावान भी है । कुबेर के खजाने में बँधा हुआ भी है यह "जाइंट" जो आज सारे के सारे विश्व के मानस पटल पर छा गया है । दैत्य अब मरने जा रहा है-विदा होने जा रहा है ।

अब क्या आने वाला है ? देव आने वाला है । देव किसे कहते हैं ? शराफत को कहते हैं-भलमनसाहत को कहते हैं । देवता कहाँ रहते हैं ? आसमान में रहते हैं ? नहीं । देवता एक सभ्यता का नाम है-संस्कृति का नाम है । इसी तरह दैत्य एक सभ्यता का नाम है-संस्कृति का नाम है । देव और दानव दो संस्कृतियों के नाम हैं । आज हर जगह दैत्य-संस्कृति, जाइंट-संस्कृति, बड़प्पन की संस्कृति, अहंकार की संस्कृति, विलासिता की संस्कृति , वेश्याचार की संस्कृति के रूप में हर मनुष्य के ऊपर हावी है । चाहे वह लंबे तिलक लगाता हो, चाहे पैण्ट पहनता हो । सब इस मामले में एक ही हैं कोई फरक किसी में नहीं पड़ता । अब यह सभ्यता खतम होने जा रही है और नयी देव सभ्यता प्रारंभ होने वाली है । शायद आपको दिखलाई न पड़ता हो, पर हमको दिखाई पड़ता है । कैसे दिखाई पड़ता ? आप समुद्र के किनारे बैठ जाइये । आपको आने वाले जहाजों के मस्तूल पानी के ऊपर दिखाई पड़ेंगे । इससे अंदाजा लगा लिया जाता है कि अभी मस्तूल दिखाई दे रहा है, थोड़ी देर में पूरा जहाज सामने आ जायेगा । बादल जब चमकते हैं तब हमको मालूम पड़ जाता है कि पानी गिरने वाला है । पहले वाली संभावनायें देखकर मालूम पड़ जाता है कि कुछ हेर-फेर होने वाला है-परिवर्तन होने वाला है । परिवर्तन का

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

संकेत पाकर बिल्ली अपने बच्चों को लेकर चल देती है । मकड़ी अपने जाले को समेट लेती है । भविष्य की जानकारियाँ सभी को होती हैं । चिड़ियों और कुत्तों को भी तथा अन्य प्राणियों को भी । दिव्यदर्शियों को भी होती हैं और परिस्थितियों का अनुमान लगाने वाले कम्प्यूटरों को भी । ये सभी भविष्य के बारे में अनुमान लगा लेते हैं और इनमें से अधिकांश अनुमान सही भी होते हैं ।

युग संधि का जो यह समय है, उसमें एक ओर मालूम पड़ता है कि विनाश अपनी आखिरी बाजी लगाने जा रहा है । हारा हुआ जुआरी अंत में जो कुछ भी मिलता है उसी को दाँव पर लगा देता है, यहाँ तक कि बीबी को भी दाँव पर लगा देता है । वह बागी हो जाता है और क्या करता है ? चरम सीमा पर जा पहुँचता है । दैत्य भी इन दिनों चरमसीमा पर जा पहुँचेगा । अब वह समय निकट आ गया जिसमें दैत्य अपनी चरमसीमा पर होगा । आपने देखा होगा कि प्रातःकाल जब सूर्य उदय होने वाला होता है तो अँधेरा सबसे ज्यादा उसी वक्त होता है । रात्रि घनीभूत कब होती है-जब प्रातःकाल नजदीक आ जाता है । दीपक की सबसे बड़ी लौ कब होती है-जब दीपक बुझना शुरू होता है । चींटी के पंख कब उगते हैं ? जब उसके मरने के दिन नजदीक आते हैं । जब आदमी मरने को होता है तो बहुत जोर से सांस लेता है और चेहरे पर चमक मालूम पड़ती है ।

मित्रो ! युग संधि के बारे में कई तरह के विचार हैं कितनी ही तरह की मान्यतायें हैं । उसमें एक यह कि एक पक्ष नष्ट होने वाला है और एक पक्ष जीवंत होने वाला है । ऐसे समय को 'प्रसव पीड़ा ' कहते हैं जिसमें एक ओर प्रसूता के ऊपर जान की बन रही है । वह जीवन और मौत के झूले में झूल रही है । दूसरी ओर है खुशी, उमंग, मुसकान-कि नया बच्चा गोदी में आने वाला है । एक ओर खुशी भी होती है संतोष होता है कि नया बच्चा आने वाला है और दूसरी ओर प्रसव पीड़ा में जान भी निकलती है । यह प्रसव पीड़ा का समय है-युग की पीड़ा का-युग परिवर्तन का समय है जिसमें हम और आप रह रहे हैं । इसमें दैत्य मरने जा रहा है और देव अपना जन्म लेने जा रहा है-उदय होने जा रहा है ।

आपको इसका आभास कैसे मिलता है ? हम कई आदमियों से मालूम करते हैं-कई फैकल्टीज से मालूम करते हैं, कई विचारकों से मालूम करते हैं तो नतीजा उसी स्थान पर जा पहुँचता है कि युग परिवर्तन का समय नजदीक आ गया । यह विनाश और विकास का संधिकाल है । इस संबंध में आकाश की जानकारी रखने वालों से पूछताछ की तो उन्होंने कहा कि अब दुनिया में घुटन पैदा होने वाली है । हवा के अंदर गर्मी और विषाक्तता इस कदर बढ़ती जा रही है कल कारखानों के द्वारा मशीनों के द्वारा, उद्योगों के द्वारा कि सारा का सारा वातावरण विषाक्त होता जा रहा है । शहरों की गंदगी कहाँ डालते हैं ? नदियों में , परिणाम स्वरूप सारी की सारी नदियाँ विषैली होती चली जा रही हैं । अब गंगा तक का पानी न नहाने लायक रहा है न पीने लायक । न केवल हिन्दुस्तान में, वरन् सारे संसार में हवा और पानी खराब होते जा रहे हैं । हम चारों ओर से हवा और पानी के रूप में जहर पी रहे हैं। बढ़ता शोर-कोलाहल आदमी के मस्तिष्क को पागल बनाने के लिए काफी है । जिस तरह से कुपोषण के कारण छोटे बच्चे मौत के मुँह में चले जाते हैं, उसी तरीके से इन कुप्रभावों से आदमी की शारीरिक और मानसिक सेहत अब खराब होने वाली है ।

मौसम के जानकारों का कहना है कि अगले दिन हमारे लिए मुसीबत के होंगे । क्योंकि तापमान इस कदर बढ़ता चला जा रहा है कि उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों पर जो बर्फ जमा है, वह बेतहाशा गलने वाली है और जल प्रलय का दृश्य सामने आने वाला है । इतिहास बताता है कि पृथ्वी जब से बनी है तब से कई बार ऐसे मौके आये हैं जब जल प्रलय हुई है और आबादियाँ डूब गयी हैं । धरती बिना आबादी के रह गयी है और क्या बुरे दिन नजदीक मालूम पड़ते हैं ?

सांख्यिकी के जानकारों से जब हम पूछते हैं कि आपका क्या ख्याल है तो वे भी लगभग यही बात कहते हैं कि अगले दिन बहुत खराब आ रहे हैं । क्यों आने वाले हैं ? इसलिए आने वाले हैं कि जनसंख्या बेहद बढ़ती चली जा रही है । जनसंख्या का पृथ्वी पर बढ़ना एक बहुत बड़ा जुर्म है एक बड़ा जोखिम है । पृथ्वी के भीतर असंख्य प्राणियों को जीवित रखने लायक खुराक नहीं है और न इसकी लंबाई-चौड़ाई इतनी है कि रबर की तरीके से हम इसको फैलादें । इनसानों की एक सीमित मात्रा ही इस पर रह सकती है और खुराक पा सकती है । लेकिन इनसान के ऊपर जहालत इस कदर हावी होती चली जा रही है कि कीड़े-मकोड़ों के तरीके से, चूहे और कुत्तों के तरीके से ढेरों के ढेरों पिल्ले और बिल्लियाँ पैदा होते चले जाते हैं और दुनिया के लिए आफत पैदा करते रहते हैं । बच्चे यदि इसी कदर बढ़ते रहे तो आप देख लेना दुनिया भूखों मरेगी । फिर यह 'नेचर' ऐसे बेहूदे लोगों के लिए हमेशा तीन डंडे तैयार रखती है-एक महामारी, दूसरा-अकाल और तीसरा-महायुद्ध । "इकॉलाजी " के हिसाब से महामारियाँ फैलेंगी और मक्खी, मच्छरों के तरीके से आनावश्यक रूप से बढ़ी हुई औलादों को समाप्त कर देंगी । तूफान आयेंगे , लड़ाइयाँ होंगी, अकाल पड़ेंगे ताकि भूख के मारे जरूरत से ज्यादा बढ़ी हुई आबादियाँ खत्म हो जायँ । ये मुसीबतें आयेंगी और जरूर आयेंगी ।

और कौन क्या कह रहा था ? जो ग्रह-नक्षत्र विद्या के जानकार हैं, वे कह रहे थे कि पृथ्वी का खाविंद सूर्य है । ये दोनों मियाँ बीबी के तरीके से रहते हैं । सूरज कमाता रहता है और पृथ्वी को भेजता रहता है । उसी के आधार पर पृथ्वी जिंदा रहती है, फलती-फूलती है और हरी-भरी बनी रहती है । अगर सूरज की कमाई इसके हिस्से में न आयी होती तो यह मर गयी होती, मंगल और बुध की तरीके से जल-गल रही होती । या फिर प्लूटो और नेप्चून के तरीके से इतनी ठंडी होती कि यहाँ बर्फ के अलावा और कुछ न होता । यदि सूरज ने अपनी आँखे मोड़ली होतीं तो यह शनि और शुक्र की तरह गैस का गुब्बारा बनकर रह रही होती । लेकिन यह सूरज की मोहब्बत है जिसकी कमाई यह खाती रहती है और उससे गर्मी और रोशनी लेती रहती है । 'लाइफ' कहाँ से आ गयी धरती पर सूरज से । कीड़े-मकोड़े , जीव-जंतु इनसान सभी इन्हीं दोनों के 'कम्बिनेशन' से पैदा हुए हैं । पृथ्वी और सूरज का बहुत घना संबंध है । अब इसमें फरक आ गया है । तलाक की नौबत तो नहीं आने वाली है, लेकिन नाखुशी

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

की बहुत परिस्थितियाँ पैदा हो गयी हैं । सूरज का पहले का भी इतिहास है कि जब कभी भी पृथ्वी और सूरज के संबंधों में जरा भी फरक आया है, घर में कलह उत्पन्न हो गया है । अब यह कलह फिर उत्पन्न होने वाला है । सन् १९८१ से सूरज के ऊपर 'स्पाट्स' उत्पन्न होने वाले हैं जो लगातार बीस वर्ष तक चलेंगे । 'स्पॉट्स' किसे कहते हैं ? 'स्पॉट्स' उन्हें कहते हैं जिनमें कि एक-एक लाख मील लम्बी लपटें-ज्वालायें सूरज में से निकलती हैं और वे इतनी खतरनाक विकिरण पैदा करती हैं कि उसका सबसे बड़ा प्रभाव पृथ्वी पर पड़ता है । पहले भी कई बार ऐसे विकिरण आ चुके हैं और उसने पृथ्वी के संतुलन बिगाड़ दिये हैं । दूसरी बात अगले दिनों ऐसे सूर्य ग्रहण शृंखलाबद्ध रूप से आ रहे हैं जैसे कि ८०० वर्षों के इतिहास में कभी नहीं आये इनका परिणाम सारा विश्व देखेगा ।

तीसरी बात जो खगोल विद्या के जानकार बताते हैं वह यह कि सन् ८१ के बाद में एक और आपत्ति आने वाली है-वृहस्पति गरम होने वाला है । अंतर्ग्रही परिस्थितियों के जानकार भी बतलाते हैं कि अगले बीस पच्चीस साल-सन् १९८० से २००५ तक का समय युग-संधि का वह पक्ष है जो नुकसान देय है-खौफ-नाफ पक्ष है अखण्ड-ज्योति में आपने कई बार ऐसी भविष्यवाणियाँ पढ़ी होंगी । अब कुछ और लेख जनवरी और फरवरी १९८० के अंक में जा रहे हैं ताकि लोगों को आगाह किया जा सके । यह लोगों को डराने वाली बात नहीं है, वरन् परिस्थितियों का विश्लेषण है । इसी तरह एक और तथ्य है जिसकी वजह से हम कह सकते हैं कि यह नुकसान के समय हैं । इसके लिए धर्मशास्त्रों की गवाहियाँ पेश कर सकते हैं । बाइबिल में ईसा की वह भविष्यवाणियाँ हैं जिन्हें "सेवन टाइम्स" के नाम से जाना जाता है । उनके अनुसार यह समय सन् ८० से सन् २००० तक का समय होता है । उन भविष्यवाणियों का सारांश केवल तबाही है इंसानों पर आने वाली तबाही है । कुरान की भविष्यवाणी को हम देखते हैं तो उसमें लिखा है कि १४ वीं सदी में कयामत आयेगी । कयामत का मतलब नुकसान भी हो सकता है । अभी वह कयामत जिसमें पृथ्वी का सफाया हो जायगा , बहुत देर की बात है, लेकिन नुकसान का समय जरूर नजदीक है, मुसलमानों के लिए ही नहीं हम सबके लिए भी । सूरदास के ग्रंथों से लेकर प्राचीन धर्मशास्त्रों , भविष्य पुराण, कल्कि पुराण, आदि सभी भविष्यवाणियों से भरे पड़े हैं । इससे मालूम पड़ता है कि अगले बीस वर्ष तबाही के खौफनाक वर्ष आ रहे हैं ।

युग-संधि का एक लक्षण यह होता है कि तबाही होती है । एक सत्ता उखाड़ी जाती है और दूसरी जमायी जाती है । क्रांतियाँ होती हैं । एक चले गये, दूसरे आ गये ! नुकसान होते रहे। दुनिया में जब एक सत्ता उखड़ती है और दूसरी सत्ता आती है , तब हमेशा गड़बड़ियाँ फैलती हैं, नुकसान होते हैं दूसरी बातें होती हैं । युग संधि का यह पक्ष नंबर एक है । इसका एक और पक्ष है-सुनहरा वाला पक्ष जिसको हम 'प्रसव पीड़ा' कहते हैं और उसका जिक्र भी कर चुके हैं । इसमें बीज गलता जाता है और अंकुर पैदा होता जाता है । धान रोपी जाती है-खुशी के गीत गाये जाते हैं कि अगले दिन फसल होने वाली है । भवन का शिलान्यास किया जा रहा है, नींव चिनी जा रही है और अगले दिनों भवन खड़ा हो जायगा । यह क्या है ? उज्वल भविष्य की संभावनायें हैं-शिलान्यास के रूप में, अंकुर पैदा होने के रूप में, बच्चा पैदा होने के रूप में । अगर आप देख सकते हों तो इन दिनों उज्वल भविष्य की संभावनायें भी सामने है । जिस युग संधि में हम रह रहें हैं उसे आपत्ति काल कह सकते हैं-आपत्ति धर्म कह सकते हैं । ऐसे समय में जाग्रत आत्माओं की विशेष जिम्मेदारी होती है । उनको कुछ खासतौर से देख-भाल करनी-साज-सँभाल करनी पड़ती है । परिवर्तन की घड़ियों में खासतौर से देखभाल करना उन लोगों की खास जिम्मेदारी हो जाती है जो जगे हुए आदमी हैं जिनमें से मैं आपको भी शुमार करता हूँ ।

ऐसे समय कुछ खास समय होते हैं जिन्हें आपत्तिकालीन समय के नाम से पुकारते हैं । मसलन मोहल्ले में आग लग जाय छप्पर जलने लगे, तो आपको सामान्य काम बन्द कर देना चाहिए और बाल्टी लेकर रेत लेकर के चल पड़ना चाहिए और जहाँ भी आग लगी है, बुझाना चाहिए । आपत्तिकालीन समय में आपत्तिकालीन फर्जों को अंजाम देना पड़ता है । दुर्घटनायें घट जायँ, भूकंप आ जायँ, रेलगाड़ी का एक्सीडेण्ट हो जाय, आपके पड़ोस में और सैकड़ों लोग घायल पड़े हों, तब आप यह नहीं कह सकते कि हमारे पास समय नहीं है फुरसत नहीं है । यह कहना बंद कीजिये । इस तरह के जो काम सामूहिक जिम्मेदारी के होते हैं, उनको पूरा करने में लग जाना चाहिए । नये युग का-नये जमाने का-महाकाल का-प्रज्ञावतार का खासतौर से आप लोगों से तकाजा है, उन लोगों से जो जाग्रत हैं-जगे हुए हैं जिस में मैं आपको शुमार करता हूँ-जिनकी कि अकल जनसाधारण से ऊँची है । जनसाधारण से मेरा मतलब है-वे आदमी जो सिर्फ पेट के लिए जिंदे रहते हैं । इनको अपने स्वार्थ के अलावा -अपने मतलब के अलावा दूसरी चीज दिखायी नहीं देती । उनको न भगवान दीखता है, न दया-धर्म दीखता है न देश दीखता है न संस्कृति दीखती है । लोभी, लालची और लिप्सा में डूबे हुए आदमी, हविस के मारे हुए आदमी को मैं जनसाधारण आदमी कहता हूँ । वे उस भगवान की पूजा करना चाहते हैं जो दोंना भर-भर के दे जाता है, बाल-बच्चे पैदाकर जाता है और इनाम दे जाता है । ऐसे भगवान की पूजा बंद कीजिए । वह भगवान नहीं हो सकता जो आवश्यकता को देखे बिना, औचित्य और अनौचित्य को देखे बिना हर एक की मनोकामना पूरी करता रहता है । जो भगवान आज आदमी के ऊपर छाया हुआ है वह भगवान नहीं शैतान है । भगवान की कुछ परिभाषा होनी चाहिए, कुछ क्रम होना चाहिए । भगवान सिद्धान्तों को कहते हैं, आदर्शों को कहते हैं, उत्कृष्टता को सचाई को कहते हैं, ईमानदारी और वफादारी को कहते हैं, संस्कृति की सेवा को कहते हैं । आप लोग जो तीन महीने के शिविर में आये हैं उनमें से मुझे वे आदमी मालूम पड़ते हैं जो भगवान को जानते हैं, भगवान की परिभाषा जिनके दिमाग में आ गयी है । जो भगवान से संबंध रखने वाले हैं, भगवान को प्यार करने वाले हैं और भगवान उन पर कृपा करने वाला है । आप सामान्य मनुष्यों की अपेक्षा कुछ आसामान्य मालूम पड़ते हैं । आसामान्य मनुष्यों से मुझे कुछ कहना है । सामान्य मनुष्य को मैं जानता

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

हूँ कि वह दुखियारा है । उस बीमार को दवा की जरूरत है । ये मेरे पास आते रहते हैं और मैं उनसे यही पूछता रहता हूँ कि बेटे, बता क्या बात है ? क्या तकलीफ है । हारी-बीमारी से लेकर बेटे-बेटी की शादी-ब्याह, नौकरी, पदोन्नति तक की बातें करते हैं और मैं उनसे यही कहता हूँ कि भगवान से प्रार्थना करेंगे और करा देंगे तेरा काम । बस उस गरीब को और क्या चाहिए ।

मित्रो; क्या होना चाहिए ? बालकों को गुब्बारे के अलावा-टॉफी और चॉकलेट के अलावा कुछ नहीं मालूम । उनसे कुछ काम नहीं होने वाला । वे तो गोदी में खेलने लायक और प्यार करने लायक हैं । वे मुसीबत में कुछ सहायता करने वाले नहीं हैं । उन से धर्म-अध्यात्म की , लोक-परलोक की, भगवान की, समाज संस्कृति की कुछ भी बात नहीं कहते । उनसे तो यही कहा जा सकता है कि अपना पेट भरिये, अपनी हविस पूरी करिये और इन्सान के तरीके से गुजारा कीजिए । लेकिन आप से कहना है, क्योंकि आप में वह तत्व हमें दिखायी पड़ते हैं जो जीवंतों में होने चाहिए । जीवंत वे जो सामान्य मनुष्यों से ऊँचे उठे हुए होते हैं-जैसे आपने सुबह सूरज को निकलते हुए देखा होगा । सबसे पहले सूरज की किरणें पहाड़ों की चोटी पर आती हैं, पेड़ों पर आती हैं, फिर नीचे आते आते जमीन पर आती हैं । भगवान भी उनके ऊपर आते हैं जिनके पास दिल होता है-हृदय होता है, जिनके पास भावनायें होती हैं । भगवान बंसरी बजाते हुए , डमरू बजाते हुए या तीर-कमान चलाते हुए नहीं आते । तो फिर क्या करते हैं ? वे सिद्धांतों को ले करके आते हैं, आदर्शों को लेकर के आते हैं । वे ऐसी भावनायें और हूक लेकर के आते हैं जो ऊँचे स्तर के लोगों में , भावनाशीलों में दिखाई देती है ।

आप क्या कहना चाहते हैं ? मैं यही कहना चाहता हूँ कि इस युग-संधि की वेला में आप कुछ महत्वपूर्ण काम कर पायें तो आपके लिए शान की बात-गरिमा की बात होगी । क्या करना चाहिए ? करने को तो ढेरों के ढेरों काम पड़े हैं, पर हमने इन तीन महीनों में जो आपको याद दिलाया है वह यह कि हमको जमाने की फिजाँ बदल देनी चाहिए । बहुत सारे संकट हैं, लेकिन दुनिया का सबसे बड़ा संकट-आस्था संकट है । अकल का संकट नहीं है । पुराने जमाने में कोई कोई पढ़े लिखे होते थे , बाकी सारी की सारी जनता बिना पढ़ी थी । हमारी माताजी जिनके पेट से हम पैदा हुए हैं, बिलकुल बिना पढ़ी थीं । उन्होंने हमें बालकपन से ही इस प्रकार के संस्कार दिये कि हम भूल नहीं सकते । हमारा सबसे बड़ा गुरु हमारी माँ है, जो हमारे भीतर नैतिक, सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन के सारे के सारे गुणों को अपने दूध के साथ में पिला करके और गोदी में खिला करके हमको सिखाकर के गयी थीं और मातायें भी ऐसी हो सकती हैं । बहुत से आदमी ऐसे हो सकते हैं जिनके पास शिक्षा न हो और ऐसे आदमी शिक्षित हो भी सकते हैं जिनकी अकल का तो कहना ही क्या । इसके बारे में कल भी कह चुका हूँ कि मालाबार हिल के ऊपर एक वकील रहता था जिसने हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बीच में इस कदर खाई पैदा कर दी कि दोनों देशों में तबाही आ गयी । यह है अकल-जिसके ऊपर हम लानत भेजते हैं । आप लोगों को एक ही काम करना है कि इस अकल को-विचारों को बदल देना है । शोध अनुसंधान वालों से भी हमने यही कहा है कि आप केवल एक चीज की शोध कीजिये कि आदमी की विवेक बुद्धि को और चिंतन के ऊँचे वाले स्तर को जो गडबड़ा गया है - उसको ठीक कीजिए क्योंकि आज आदमी बुद्धिजीवी हो गया है । उसकी बुद्धि को हर क्षेत्र में पटक-पटक कर मारना है । जिस तरह धोबी कपड़े को पीट-पीट कर धुलाई करता है, वैसे ही अकल को पीट-पीट कर ठीक करना है । यह अकल जिसका दूसरा नाम- 'बेअकली ' है, जो अकल का लिवास ओढ़ करके आदमी के दिमाग और जीवन पर हावी हो रही है, इसको पटक मारनी है जिससे इसको ठिकाने लगाया जा सके ।

अब आप क्या करना चाहते हैं ? अब हम एक और काम करना चाहते हैं कि हमारा छोटा सा समूह-छोटा सा समुदाय एक और प्लानिंग करके चले तो मजा आ जाय । ऐसे समय में हम मूकदर्शक हो करके नहीं रह सकते । हमारा छोटा सा जखीरा ऐसे समय में पानी पिलाने के लिए जागरूकों की टोली में चलेगा ही । अभी हम बच्चे हैं, छोटी बाल्टी हमारे पास है, हाथ छोटे हैं, तो क्या हुआ, अपना फर्ज हमें पूरा करना ही चाहिए । युग-संधि के इस वर्तमान समय में कुछ काम करने की हैसियत में हम हैं, उसे पूरा करने के लिए हम आमादा हो जायँ तो ज्यादा अच्छा होगा । इसके लिए हमने चार पंचवर्षीय योजनायें बनायी हैं । हमारा अपना भी ऐसा ख्याल है और जिन लोगों से हम मिलते-जुलते हैं या जिनका नियंत्रण हमारे ऊपर है, उनकी सलाह मशविरा से भी हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि अगले २० साल सन् ८० से लेकर सन् २००० तक का समय ऐसा है जिसमें एक कोने में 'नये युग' का पौधा विकसित हो इस लायक हो जायगा कि उसकी छाया में लोगों को बिठाया जा सके । हम विनाश को, जो संभावनाओं के रूप में डराता रहता है, उस स्थिति में नीचे कर सकेंगे-निरस्त कर सकेंगे । जिससे लोगों को राहत मिले और वे चैन की सांस ले सकें । आदमी का संतुलन २० साल में बन जायेगा, ऐसा हमारा ख्याल है । पाँच-पाँच वर्ष की चार योजनायें जो हमने बनायी हैं, मैं नहीं जानता कि कब तक सँभालूँगा पर मैं इतना जरूर कहता हूँ कि चारों योजनाओं के गति पकड़ने तक हम किसी न किसी रूप में कहीं न कहीं अपना बजूद कायम रखेंगे और यह कोशिश करेंगे कि नया युग लाने का जो आन्दोलन शुरू किया है उसका फल भी देखने को मिल जाय ।

पहली योजना बहुत सिम्पल है, दूसरी योजना उससे कठिन है, तीसरी योजना और कठिन है और चौथी योजना सबसे ज्यादा कठिन है । पाँच सूत्री कार्यक्रम प्रत्येक के लिए है । सबकी जानकारियाँ कराने से आप परेशान हो जायगें और कहेंगे कि इतना बड़ा प्लान है जिसे हम पूरा नहीं कर सकेंगे । अतः हम आपको प्रायमरी कक्षा की जानकारी देते हैं कि प्राथमिक योजना में आप व्यक्तिगत रूप से और सामूहिक रूप से वातावरण को संशोधित करने की कोशिश करें । जो फिजाँ और हवा लोगों को धकेले ले जा रही है जिससे हर चीज सूख गयी है, उसे दूर करने और लड़ाई लड़ने के लिए हमको दो काम करने चाहिए । एक तो आप अपनी व्यक्तिगत साधना में पहली जनवरी से दो चीजें मिला

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

दें । पहली यह कि नया युग लाने के लिए एक धारा एक प्रवाह कहीं से चला है, हम उसी से प्रभावित होते हैं और आपको भी प्रभावित करने के लिए उसी ताकत का इस्तेमाल करते हैं । जो महान शक्ति इतना बड़ा कार्य कर रही है नये युग को ला रही है-उसके साथ संपर्क बनाने वाली साधना-उपासना जो बहुत सरल है , आप पहली जनवरी से चाहें तो कर सकते हैं । इसके लिए आपको नित्य प्रात: काल साढ़े चार बजे सांस के रूप में उस प्राण को खींचना है । हम भी प्रात: काल उस प्राण रूपी माँ के दूध को पीते हैं, शक्तियाँ आ जाती हैं । दिन भर हम उछलते रहते हैं फुदकते रहते हैं । आप लोगों को-जाग्रत आत्माओं को उस दूध को जो प्रात:काल प्राणधारा के रूप में आता है, ग्रहण करना चाहिए और रात्रि को सोते समय वातावरण में उसे तीर कमान की तरह इस तरीके से छोड़ना चाहिए कि इस वातावरण को संशोधित करने में मदद कर सके । इसकी एक उपासना पद्धति है जिसे मैं फिर कभी समझा दूँगा कि दोनों उपासनायें एक प्रात: काल की और दूसरी रात्रि को सोते समय कैसे करनी चाहिए ?

दूसरा है महापुरश्चरण , जिसमें सामूहिक उपासना मुख्य है । सामूहिक उपासना में बड़ी शक्ति है । एक समय पर एक मन से एकाग्र होकर की गयी उपासना स्वर विज्ञान के हिसाब से और शक्ति संचार के हिसाब से अदभुत सामर्थ्य उत्पन्न करती है । इसलिए हम कहते रहते हैं कि गायत्री मंत्र एक साथ बोलिये । मंत्र एक साथ बोले जाते हैं । स्वर एक साथ होने चाहिए । हवन में भी हम साथ बोलने पर जोर देते रहते हैं । एक समय पर एक साथ एक क्रम से की हुई उपासना का वह फल होता है, जैसे कि लोहे के बड़े पुलों पर से होकर जब कभी सिपाही चलते हैं तो कदम मिलाकर लेफ्ट-राइट चलने से उन्हें मनाकर दिया जाता है, क्योंकि उससे पुल टूटने का खतरा रहता है । आप लोग सामूहिक रूप से एक साथ एक ही समय एक सी ध्वनि, एक ताल-लय, एक नाद का उपयोग कर सकें तो स्वर विद्युत का एक बहुत बड़ा आधार विनिर्मित होगा और वातावरण के संशोधन का प्रयोजन पूरा करेगा । इस तरह एक व्यक्तिगत उपासना है और दूसरी सामूहिक । यह हमारे पंचवर्षीय योजना के आध्यात्मिक प्रयोग हैं । भौतिक और रचनात्मक प्रयोग अलग है जो अपने स्थान पर चलते रहेंगे ।

एक और भी हमारा प्रयत्न है और वह उससे भी ज्यादा शानदार है । देवात्माओं के अवतरित होने का ठीक यही समय है । देवात्मायें युग को सँभालने के लिए-युग को परिवर्तित करने के लिए जन्म लेने को व्याकुल हो रही हैं । जब रामचन्द्र जी आये थे तो उनके साथ में देवता आये थे । उन्होंने कहा था-जिस जमाने में आप पैदा हुए हैं-आदमी दो कौड़ी के हो गये हैं । आदमियों से सहायता नहीं मिलेगी आपको । मरने-मिटने के लिए और बड़े काम सँभालने के लिए तो आदमी शायद ही मिल पायें आपको, लेकिन हम चलेंगे और रीछ, बंदरों के रूप में सारे के सारे देवता चलने के लिए आमादा हो गये थे । उन्होंने रीछ-बंदरों के यहाँ जन्म लिया था, परन्तु इनसानों के घरों के घुटन भरे वातावरण में जन्म लेने से मना कर दिया था और कहा था कि इन पेटुओं के यहाँ हम कैसे रहेंगे जिनमें कषाय और कल्मष भरे हुए हैं । जिन घरों में स्वयंभू मनु और शतरूपा रानी की परंपरायें नहीं हैं, उन घरों में हम कैसे जियेंगे ? उनका कुधान्य खाकर हम कितने दिन जियेंगे ? इसलिए देवताओं ने मनाकर दिया था और रीछ-बंदरों के घरों में पैदा हुए थे ।

आज की आवश्यकतायें सूक्ष्म हैं । मैं आपसे सूक्ष्म बातें कह रहा हूँ -विशुद्ध अध्यात्म की बातें । स्थूल बातें, समाज सेवा की बातें, पुरुषार्थ की बातें कल करूँगा । इस समय का सबसे बड़ा काम यह है कि युग को बदलने के लिए सामान्य नहीं, असामान्य आदमियों की जरूरत है । इसके लिए भीम, अर्जुन, भरत और हनुमान चाहिए । इसके लिए स्वराज्य लाने वाले गांधियों, नेहरूओं और सुभाष चन्द्रों की जरूरत है । बड़ी आत्माओं की, जबर्दस्त हस्तियों की जरूरत है । मैं चाहता हूँ कि हैवानों के पेट में से जन्म लेने के लिए देवताओं को मजबूर न होना पड़े और इनसानियत को कलंकित न होना पड़े । कितना ही अच्छा होता कि सन् १९८० से देवता इनसानों के यहाँ जन्म लेते । इसके लिए हमें घरों का वातावरण ठीक करना चाहिए । हमारे दाम्पत्य जीवनों में मनु और शतरूपा रानी की संस्कारों वाली परंपरा पैदा होनी चाहिए, ताकि देवताओं का आह्वान किया जा सके । हमारे घरों में कुंती की परंपरा पैदा होनी चाहिए ताकि देवता उनकी कोख में और गोद में खेलने के लिए रजामंद हो सकें । देवता हर एक के यहाँ नहीं आ सकते । शकुंतला के पेट में से भरत आये थे । सीता के पेट में से लव-कुश आये थे । घर-परिवारों में ऐसी परिस्थितियाँ फिर से पैदा करने के लिए ही हमने 'परिवार निर्माण योजना' को जन्म दिया है और कहा है कि परिवारों में धार्मिक वातावरण बनाइये । दाम्पत्य जीवन में पूजा उपासना की, आरतियों की, पंचयज्ञों की, गायत्री माता को प्रणाम करने की न्यूनतम् उपासना की परंपरा आरंभ कीजिए । सारे के सारे घरों का वातावरण बनाने के लिए, ताकि कोई देवात्मा यदि जन्म लेने के इच्छुक हों तो उनको मौका मिल सके ।

मित्रो ! हमने इस कुंभ मेले पर जाति-विरादियों के शिविर लगाये हैं । इस माध्यम से हम विवाह परंपरा में ब्राह्मविवाहों का प्रचलन करना चाहते हैं । ब्राह्म विवाह से मतलब है-आदर्श विवाह, शालीनता के बिना खर्च के विवाह । आज सभी जगह असुर विवाहों , दैत्य-विवाहों का प्रचलन है जिसमें बेटे वाला बेटी वाले का पेट फाड़ डालता है । दोनों तरफ पैसे की होली जलती है । ऐसे घरों में देवता नहीं गुंडे, धूर्त, राक्षस और कंस पैदा होंगे , हिप्पी और एक्टर पैदा होंगे और जन्म देने वालों के लिए आफत पैदा करेंगे । इसीलिए हमने विवाह परंपरा को शानदार बनाया है और इसलिए शानदार बनाया है कि हमारे परिवारों में हमारे घरों में देवता जन्म ले सकें । यदि यह परंपरा चल पड़ी फिजाँ फैल पड़ी एक की देखा-देखी दूसरे ने ग्रहण कर लिया, तब फिर हमारी आर्थिक, सामाजिक, नैतिक और भावनात्मक परिस्थितियों में जमीन-आसमान जैसा फरक आ सकता है । यह वह चीज है जो हमने पहली तीन पंच वर्षीय योजना में शामिल की है चौथी और भी अधिक क्रांतिकारी है जिसका जिक्र मैं कल करूँगा । आज अपनी बात यहीं समाप्त करता हूँ ।

॥ ॐ शान्ति: ॥

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परम पूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी-

महायज्ञों का स्वरूप व उद्देश्य

आज स्थान-स्थान पर भारत व विश्व में अश्वमेध यज्ञ हो रहे हैं । भारत वर्ष में ज्ञानयज्ञों व अश्वमेध यज्ञों की परंपरा रही है । यह क्यों व किस लिए होते थे, इसकी जानकारी देने वाला एक सामयिक उद्‌बोधन परम पूज्य गुरुदेव का इस अंक में प्रस्तुत है जो उनने २९ सितम्बर १९७८ को शांतिकुंज प्रांगण में उपस्थित शिविरार्थी समुदाय के समक्ष दिया था । पढ़ें, मनन करें, अमृतवाणी का ।

गायत्री मंत्र साथ-साथ -

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

मनुष्य के सामने अनेकों समस्यायें हैं । आइये विचार विनिमय करने के पश्चात् उनका समाधान करें । प्राचीन काल से यही तरीका रहा है । तब सरकारें भी अपना काम करती थीं, पर समाज सरकारों पर आश्रित नहीं था । सरकार का अपना एक दायरा है छोटा सा, कि चोर-उचक्कों को पकड़ना चाहिए । देश की सुरक्षा के लिए अगर खतरा पैदा हो, तो सामना करना चाहिए और जो टैक्स वसूल होता है, उसे प्रजा की उन्नति में खर्च करना चाहिए । बस यहीं दायरा है सरकार का, इससे ज्यादा नहीं । मनुष्यों के विचारों पर, भावनाओं पर सरकार का कोई असर नहीं होता । पैसे का असर होता है, पैसा आपको देना पड़ेगा , लेकिन अगर यह कहा जाय कि आप ब्रह्मचर्य से रहिये , तो कहेंगे कि नहीं । आप हमें पकड़ कर गिरफ्तार कर लीजिए, फेमिली प्लानिंग तो आप जबरदस्ती भी कर सकते है, पर ब्रह्मचर्य आपके कहने से नहीं हो सकता । आप कौन होते हैं कहने वाले ? विचारों के ऊपर भावनाओं के ऊपर सरकार का कोई नियंत्रण नहीं होता तब इन पर किसका नियंत्रण होता है-समाज का नियंत्रण होता है, विचारशीलों का नियंत्रण होता है । विचार तैयार करना, समाज की परंपराओं को तैयार करना और उनको दिशा देना विचारशीलों का काम है ।

हमारी समाज व्यवस्था ऐसी है कि उसमें बार-बार विकृतियाँ खड़ी हो जाती हैं और बार-बार उनका समाधान ढूँढने की आवश्यकता पड़ती है । इसलिए बार-बार हम विचारशील लोगों को एकत्रित होना पड़ता है । प्राचीन काल में विचारशीलों के एकत्रित होने की पद्धति-विचार विनिमय की पद्धति-समस्याओं के समाधान करने की पद्धति का नाम था-यज्ञ । दो तरह के यज्ञ होते थे । प्राचीन काल के यज्ञों का जब हम इतिहास देखते हैं तो दो तरह के बड़े यज्ञों का वर्णन मिलता है । एक इतिहास मिलता है राजसूय यज्ञों का । राजसूय यज्ञ कैसे होते थे ? जैसा युधिष्ठिर ने किया था । अश्वमेध कैसे होते थे ? जैसा कि रामचन्द्र जी के जमाने में हुआ था । अश्वमेध का घोड़ा छोड़ करके उन्होंने उसके द्वारा विचारशीलों को निमंत्रण भेजा था और यह कहा था कि आप लोग एक स्थान पर एकत्रित हों-संघबद्ध हों । एक दूसरे का कहना मानें, मिलजुल कर चलें । राजसूय यज्ञ इसी प्रकार राजनीतिक दिग्विजय के लिए होते थे । इस तरह के बड़े-बड़े यज्ञ होते थे, जहाँ सब लोग जमा होते थे और राजनीतिक समस्याओं के ऊपर, सांस्कृतिक समस्याओं पर, आर्थिक समस्याओं के ऊपर, सुरक्षात्मक समस्याओं के ऊपर विचार विनिमय होते थे और जो फैसले होते थे, वे सर्वमान्य होते थे । इनमें सामूहिक हवन भी होता था । तब प्रत्येक आदमी के दैनिक जीवन के क्रिया-कृत्य में भी हवन होता था, पर सामूहिक यज्ञों में ऐसा नहीं होता था कि दस-ग्यारह हजार आदमी आ गये और कहने लगे कि लाइये १०-११ हजार हवन कुंड खोदिये । १० हजार चौके चलाइये । १० हजार चिमटे और तवे लाइये । जब एक स्थल पर खाना पक सकता है , मिलजुल कर सामूहिक दावत खाई जा सकती है तो एक ही स्थल पर हवन क्यों नहीं हो सकता ? सामूहिक हवन कैसे हो सकता है ? ऐसे ही जैसे हम और आप एक सौ कुंडीय यज्ञों के बड़े आयोजनों में करते हैं । लोग पारी-पारी से आते जाते हैं । उनसे यही कहा जाता है कि अपनी पारी से आते जाइये , परिक्रमा एक साथ लगाते जाइये और जयकारा एक साथ बोलते जाइये , सामूहिकता का मजा भी आयेगा और सुविधा व्यवस्था भी रहेगी । राजसूय यज्ञ, अश्वमेध यज्ञ सामूहिक होते थे, जिनमें हवन मुख्य होता है ।

उस जमाने में हवन किये बिना कोई रोटी भी नहीं खाता था । अग्निहोत्र हमारा स्वाभाविक दैनिक कृत्य है । जिस प्रकार स्नान, भजन, भोजन दैनिक कृत्य हैं, उसी प्रकार गायत्री उपासना और यज्ञ हमारा आध्यात्मिक नित्य कर्म है और होना ही चाहिए । बड़े यज्ञ कभी-कभी होते थे । उनमें बड़ी समस्याओं का समाधान करने के लिए , राजनीतिक समस्याओं का समाधान करने के लिए बड़ी जन-गोष्ठियाँ होती थीं । इनमें राजनीतिज्ञ , समाज विज्ञानी, तथा समाज पर अधिकार-प्रभाव रखने वाले श्रेष्ठजन जमा होते थे और सामाजिक समस्याओं, आर्थिक समस्याओं एवं अन्यान्य समस्याओं का मिलजुल कर समाधान खोजते थे । इसमें सरकार का कोई हस्तक्षेप नहीं होता था, वरन उसे कहा जाता था कि आपको ऐसा मानना चाहिए और कानून बनाना चाहिए । इसीलिए प्राचीनकाल में राजनीतिक क्षेत्र के लोग राष्ट्रीय विद्रोह के नाम पर जगह-जगह जमा होते थे और स्थानीय समस्याओं तथा सामाजिक समस्याओं के समाधान किये जाते थे । बीच-बीच में कभी-कभी राजनीतिक असेम्बलियों की धार्मिक असेम्बलियों की अलग-अलग मीटिंग होती थी । इसका एक और पक्ष था जिसका नाम था-वाजपेय यज्ञ । वाजपेय यज्ञों में मोक्ष की भावनात्मक और चिंतन-परक नैतिक आध्यात्मिक जो भी समस्यायें होती थीं, उनका समाधान करने के लिए वे लोग एकत्र होते थे जिन्हें हम धार्मिक कह सकते हैं । उनके भी आयोजन होते थे । उन आयोजनों को ही नाम था वाजपेय यज्ञ ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

किया था और उसमें चार लाख आदमी आये थे और पाँच दिन ठहरे थे । पाँच दिन में ४० लाख आदमियों को भोजन कराया ५० लाख रुपये खर्च हुए थे-४० लाख भोजन में और १० लाख अन्यान्य व्यवस्थाओं में । कहाँ से आया था ? बस यही नहीं बता सकता आपको कि कहाँ से आया था, लेकिन हम आपको यह बताते हैं कि यह जो आयोजन है, यह जो इतनी बड़ी व्यवस्था है-यह प्रज्ञावतार की व्यवस्था है और यह फैलती हुई चली जायगी । आप लोग भाग्यवान हैं कि जिन लोगों ने आगे आ करके इस संकल्प को अपने जिम्मे लिए हैं । जिनने अपने जिम्मे लिये हैं, वे क्या पूरे हो जायँगे ? हाँ पूरे हो जायँगें, यदि आपका शौर्य, साहस और पराक्रम घटिया दर्जे का होगा, तभी यज्ञ असफल होगा और आपके योग्यता की घोषणा करने की जरूरत नहीं पड़ेगी । तब आपको अयोग्य ठहराना पड़ेगा । यज्ञ तो हमारे पूरे हो जायँगे, कोई भी चिंता मत करना, लेकिन आपको यहाँ से जाना है तो अपने पुरुषार्थ और पराक्रम की तैयारियाँ करके जाना चाहिए । यह काम बड़ा है और श्रेय भी आपको खूब मिलेगा । आप समय पर जाग गये, यह बहुत अच्छी बात है । समय पर न जागते तो काम तो हो जाता, पर आपको जो श्रेय मिल रहा था, वह नहीं मिल सकता था । स्वतंत्रता आन्दोलन में जिनकों तीन-तीन महीने की सजा हो गयी, उनको अब ३०० रुपये पेंशन मिलती है और वे स्वतंत्रता सेनानी का ताम्रपत्र लिए फिरते हैं । यह वक्त भी ऐसा है कि अगर आप नहीं चूकते हैं तो अच्छा है । अगर आप इस समय को पहचान लें, समय की प्रधानता को देख लें, भगवान की इच्छा और भगवान की महानता को समझ लें तो ज्यादा अच्छा है । फिर आपका भी नंबर उसी तरीके से आ जाता है जैसे कि हम बार-बार गिलहरी को और जटायु गिद्ध को याद करते रहते हैं । गिद्ध और गिलहरी ने समय को पहचान लिया था । उनने अपनी जुर्रत दिखाई-हिम्मत दिखायी कि किस समय पर क्या करना चाहिए । उनमें हिम्मत थी-हौसला था-भावना थी और वे अजर-अमर हो गये । गिलहरी वाला वक्त, गिद्ध वाला वक्त, जेल जाने वाला वक्त, फिर से आ गया है । आज आप चाहें तो प्रज्ञावतार का हाथ बँटा सकते हैं । आप चाहें तो युग परिवर्तन की वेला में आगे वाली पंक्ति में, चलने वाली सेना में अपना नाम लिखा सकते हैं ।

तो क्या यह यज्ञ आगे फैलेगा ? हाँ यह यज्ञ आगे बहुत फैलेगा और गायत्री माता सुनिश्चित रूप से विश्वव्यापी बनेंगी आप देख लेना । हम तो रहेंगे नहीं और आप भी शायद न रहें, पर आपकी औलाद जरूर रहेगी । आप देखना सारे विश्व का जो यह नवीनीकरण हो रहा है, उस नवोनीकरण में गायत्री की फिलॉसफी और यज्ञ की कार्य पद्धति की मुख्य भूमिका रहेगी । आदमी का व्यवहार कैसा होगा-यह प्रेरणा हमको यज्ञ से मिलेगी और मनुष्य का चिंतन कैसा होगा, व्यक्ति का, समाज का, राष्ट्र का और विश्व का चिंतन कैसा होगा ? यह सारी की सारी प्रेरणायें गायत्री के उस बीज मंत्र से मिलेंगी जो चिरपुरातन और चिरनवीन है । चिर-पुरातन और चिर-नवीन का ऐसा संयोग कदाचित ही कहीं मिलेगा । नवीनतम् युग और प्राचीनतम् संस्कृति-दोनों का समन्वय करने के लिए हम बहुत महत्वपूर्ण प्रयत्न कर रहे हैं । आप उसमें सम्मिलित हो रहे हैं, यह अधिक खुशी की बात है ।

अब क्या करना चाहिए ? अब आप एक काम करना कि पहले वाले यज्ञों और इन यज्ञों में क्या मौलिक फरक है, यह समझ कर जाना । इसी के लिए आपको यहाँ बुलाया है । पहले वाले यज्ञों में पैसा प्रमुख था । पैसा हमको दे दीजिए और जो भी आप कहेंगे हम लाकर के आपको दे देंगे । आप चाहे १०० कुंडीय यज्ञ करा लें, चाहे हजार कुंडीय-सब व्यवस्था घर बैठे हो जायगी । लेकिन इन यज्ञों में पैसा नहीं जन शक्ति मुख्य है । जन शक्ति का वह अंश जो धर्म-श्रद्धा से जुड़ा हुआ है । उसका संग्रह करना बहुत बड़ा काम है । इसके लिए हम यहाँ से कलावा बाँध कर आपको भेज देंगे और आप अपने घर जाकर हमारी 'टीम' के साथ काम करना । हमें कमेटी नहीं, टीम चाहिए । खिलाड़ियों की एक टीम होती है जो जीने-मरने और हँसने-खेलने में एक साथ रहती है । दस आदमियों की एक टीम हम यहाँ से भेज देंगे, आप उसके साथ काम करना । आपका काम सफल हो जायगा । सफल न होगा तो हम सफल कर देंगे । सफलता-असफलता की आप चिंता मत करना । आपको जो हमने काम सौंपे हैं उसे एक निष्ठ हो करके एकभाव से तत्पर हो करके करें । इसमें परीक्षा आपकी सफलता की नहीं वरन् इस बात की है कि आपने कितनी मेहनत की-भाग-दौड़ करने में कितना समय लगाया । अगर आप यह काम कर सकेंगे, जो अत्यधिक महत्वपूर्ण आयोजन-जिसको हम 'वाजपेय यज्ञ' कहते हैं, नवयुग के आगमन की पुनीत वेला का शुभ आयोजन कहते हैं । प्रभात-कालीन नवयुग आने की आरती कहते हैं, धर्मानुष्ठान कहते हैं, आप धन्य हो जायेंगे । यह इतना महत्वपूर्ण कार्य है जो देखने-सुनने में छोटा मालूम पड़ता है । गाँधी जी के नमक सत्याग्रह का लोग मखौल उड़ाते थे कि नमक बना करके स्वराज्य ले लेंगे । नमक से स्वराज्य आता है कहीं ? आज हम देखते हैं कि नमक सत्याग्रह कैसे सफल हुआ ।

२५ कुण्डीय यज्ञों का आयोजन भी गायत्री महापुरश्चरण की शृंखला मिला करके मालूम पड़ता है कि यह कोई साधारण कृत्य है, धर्मानुष्ठान है, पूजा पाठ है । देखने में इसका रूप जो भी हो, इसकी संभावना बहुत बड़ी है । इसके आधार पर मनुष्य के तीनों शरीरों के स्वास्थ्य संवर्धन का, मनुष्य समाज को नये ढंग से शिक्षित करने का-शालीन बनाने का-विश्वव्यापी आंदोलन का यह हमारा शुभारंभ है । आप यह मानकर चलना कि विश्व का नया निर्माण करने के लिए हमारा यह अनुष्ठान उसी तरह का आयोजन है जिसमें कि मनुष्य के उज्वल भविष्य के निर्माण के लिए जो दैवी शक्तियाँ काम कर रही हैं जिसके शुभारंभ और श्रीगणेश के दिन यह हमारा गायत्री महापुरश्चरण संपन्न होता है । इसमें सहयोग देने के लिए, इस अवसर का लाभ उठाने के लिए आप लोग हमारे साथ आइये । गोवर्धन उठाया जा रहा है आप उसमें हिस्सा बँटाने के लिए अपनी लाठी लेकर खड़े हो जाइये । हमें प्रसन्नता है कि आप जरूर लाठी लेकर खड़े होंगे और गोवर्धन उठाने में सहायता करेंगे । सेतु बाँधा जा रहा है, हमें खुशी है कि आप लोग भी अपने पत्थर और लकड़ी लेकर के इसमें सहयोग देने के लिए आ गये । आपका यह सहयोग जितना सराहनीय है, उतना ही मानव जाति के नये निर्माण में सहायक सिद्ध होगा । यह आपका सौभाग्य है जो आप लोगों को यहाँ खींच करके ले आया । यह सौभाग्य आप लोगों को बहुत कुछ प्रदान करे, ऐसी परब्रह्म परमात्मा से प्रार्थना है ।

॥ ॐ शांति ॥

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परम पूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी-

(५ अप्रेल १९७६ को शांतिकुंज प्रांगण में पूज्यवर का उद्‌बोधन)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो, भाइयो ! गुरु द्रोणाचार्य ने जब पाण्डवों को विद्याध्ययन कराया, तो प्राचीन परंपरा के अनुरूप उन्होंने वही मंत्र पढ़ाये जो ब्राह्मण ग्रंथों में लिखे हुए हैं । शतपथ ब्राह्मण में विद्यार्थी को अक्षर ज्ञान से भी पहले जो पाठ पढ़ाया जाता है-वह है-"**सत्यंवद् धर्मम् चर, स्वाध्याया मा प्रमदितव्यम्।**" यह ऋचायें अक्षर ज्ञान से भी पहले याद करायी जाती हैं जिससे आदमी को मालूम पड़ जाये कि विद्या का उद्देश्य क्या है ? ज्ञान का उद्देश्य क्या है ? पढ़ने का उद्देश्य क्या है ? उद्देश्य पहले बताया जाता है और उसका प्रयोग पीछे पढ़ाया जाता है । क, ख, ग पीछे पढ़ाया जाता है, पहले यह बताया जाता है कि यह किस काम के लिए है । द्रोणाचार्य ने पाँचों पाण्डवों को प्राचीन परंपरा के अनुरूप वही पाठ पढ़ाये-***सत्यं वद, धर्मं चर, स्वाध्याया मा प्रमदितव्यम्*** । चारों पांडवों ने तो वे सारे के सारे पाठ याद कर लिये , लेकिन सबसे बड़े भाई युधिष्ठिर वह पाठ याद न कर सके । उन्होंने कहा-गुरुदेव ! पाठ थोड़ा जटिल है । 'सत्यंवद' कहिये तो मैं सुना देता हूँ , लेकिन अध्यात्म में कोई ज्ञान ऐसा नहीं है जो केवल जबान की नोक से कहा जाय और कान के छेदों से सुना जाय और जो परिणाम उसके बताये गये हैं उन्हें पूरा करने में समर्थ हो सके । जीभ का नहीं यह अध्यात्म का विषय है । आपने जो पाठ मुझे पढ़ाया उसके लिए मैंने कोशिश की कि वह मेरे जीवन में प्रयोग होता हुआ चला जाय और मेरी जीवात्मा इसको धारण करले तो बात बने । महाराज युधिष्ठिर सारे जीवन भर इसी पाठ को याद करते रहे । उसमें भी एक बार गलती हो गयी थी और 'नरो वा कुंजरोवा '-हाथी है या अश्वस्थामा आदमी यह पता नहीं चला, ऐसा कहकर उन्होंने गलती कर ही डाली ।

मित्रो, अध्यात्म में जो शिक्षण हम प्राप्त करते हैं उसको जीवन में उतारना पड़ता है । इससे कम में कोई बात बनती नहीं-गाड़ी आगे बढ़ती नहीं । उच्चारण हमारे लिए आवश्यक तो है, पर काफी नहीं है । राम नाम या गायत्री मंत्र तो सभी याद कर लेते हैं । केन्या पूर्वी अफ्रीका का हमारा लड़का यहाँ बैठा हुआ है । उसके यहाँ कांगो का एक तोता है जो ऐसा बढ़िया गायत्री मंत्र बोलता है कि उसकी और मनुष्य की आवाज में कोई फरक ही नहीं मालूम पड़ता । पर क्या इतने से सुग्गे को गायत्री माता सिद्ध हो गयी ? क्या वह आशीर्वाद दे सकता है ? नहीं , क्योंकि उसे मात्र अक्षर याद हैं । अक्षर याद कर लेने भर से अध्यात्म का कोई उद्देश्य पूरा नहीं होता, जैसा कि आम लोगों का ख्याल है । आम लोगों को मुद्दतों से इसी तरह बहकाया जाता रहा है कि अक्षर याद कीजिए, अक्षरों का उच्चारण कीजिए और स्वर्गलोक को चले जाइये । राम नाम लीजिए, राम का नाम सुनिये और सीधे राम लोक को चले जाइये । पर ऐसा होता नहीं है । शुरुआत हम रामनाम से करें, ठीक है । नाम तो लेना ही पड़ता है, नाम नहीं लेंगे तो बात कैसे बनेगी ? जिस तक पहुँचना है उसका नाम तो लेना ही पड़ेगा । स्टेशन का नाम बताये बिना तो उसका टिकट भी नहीं मिलता । वस्तु का नाम बताये बिना दुकानदार से कहते रहिये कि अमुक चीज, यह चीज वह चीज दे दीजिए तो वह भी कहेगा कि भाग यहाँ से । नाम की पहले जरूरत है, क्योंकि नाम हमको दिशा बताता है । लेकिन अगर नाम के उच्चारण तक ही सीमित रहा गया तो समझना चाहिए कि जिस तरीके से सुग्गा रामनाम और गायत्री मंत्र बोलता रहता है, पर लाभ कुछ नहीं पाता, उसी तरह उससे कम या अधिक लाभ आपको भी नहीं मिलेगा ।

नाम उच्चारण आवश्यक है, पर इससे आगे उसे हमारी अंतरात्मा में इस गहराई तक समा जाना चाहिए कि वह हमारे व्यवहार में उतरने लगे । इस संदर्भ में प्रहलाद की घटना मुझे याद हो आयी । प्रहलाद को उसके मास्टर ने सबसे पहले पट्टी पूजन कराया और राम नाम पट्टी पर लिखकर कहा-पहले रामनाम लिख, पीछे क, ख ग भी बतायेंगे । वह रोज रामनाम लिखने लगा । पहले दिन दूसरे दिन, तीसरे दिन-चौथे दिन भी राम नाम । मास्टर ने कहा-अब राम नाम लिखना बंद करो और गिनती लिखो । उसने कहा नहीं साहब, अभी तो हम राम नाम ही पढेंगें, क्योंकि यह पाठ अभी पक्का नहीं हो पाया और वह राम नाम ही पट्टी पर लिखकर लाता रहा । पिता से शिकायत की गयी । उन्होंने कहा बच्चे ! आगे वाली पढ़ायी पढ़नी चाहिए । उसने कहा-नहीं, जहाँ तक ज्ञान का संबंध है, वहाँ तक एक पढ़ायी पक्की कर लेनी चाहिए तब आगे पढ़ना चाहिए । प्रहलाद सारी जिंदगी भर उसी पढ़ाई में लगे रहे और उसे पक्की करते रहे । बार-बार गायत्री मंत्र याद करने की बात कहते हैं और अभी २४ हजार का जप करा रहे हैं । आप यह पूछ सकते हैं कि क्यों साहब गायत्री मंत्र तो वही है, उसे चाहे हम एक बार जप कर लें या २४ हजार बार । फिर आप बार-बार क्यों कराते हैं ? उससे क्या फायदा ? गायत्री मंत्र याद भी हो गया और उसका अर्थ भी हम समझ गये-कि हे भगवान हमारी बुद्धि को शुद्ध-पवित्र बना दीजिए । आप यही रेपिटिशन ' बार -बार क्यों कराते हैं ? किस काम के लिए कराते हैं ? आपको यह सवाल करना चाहिए और इसका जवाब मालूम करना चाहिए ।

साथियो 'रेपिटिशन' इसलिए कराते हैं कि हमारा मस्तिष्क बड़ा भुलक्कड़ है । ऐसा भुलक्कड़ है कि इससे ज्यादा भुलक्कड़ इस दुनिया में कोई होगा क्या ? जहाँ तक भौतिक जीवन का सवाल है , वहाँ तक हम और आप बिलकुल सही हैं, कभी भुलक्कड़ नहीं हो सकते । इस मामले में हमारा दिमाग बहुत चालाक है, लेकिन इस मामले में वह इतना

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

वाहियात है कि हम अपने जीवन लक्ष्य को अनायास ही भूल जाते हैं । हम कौन हैं ? हमारा लक्ष्य क्या है ? हमारा कर्तव्य क्या है ? हमारे जीवन का स्वरूप क्या है ? हमको मालूम नहीं है । मूल चीज को हम एकदम भूल जाते हैं । बाहर की सब चीजें हमको याद रहती हैं कि दुकान में कितना नफा होगा, किसका लेना है, किसका देना है आदि बातें हमको ऐसे याद रहती हैं कि कभी भी उसमें भूल नहीं पड़ती लेकिन जहाँ तक अपनी जीवात्मा का सवाल है, परमात्मा का सवाल है, इसमें भूल पर भूल होती चली जाती है । इसलिए इस भुलक्कड़पन को दूर करने के लिए हम बार-बार आप से गायत्री मंत्र का जप कराते हैं, ताकि आपकी जीवात्मा में वह घुल जाय और आपकी स्मरण में-अंत: चेतना में उसको प्रवेश करने का मौका मिल जाय । ग्रामोफोन के रिकार्ड के तरीके से हमारी जीभ की नोक कई तरह के अक्षरों का-मंत्रों का उच्चारण कर लेती है, पर हमारे जीवन में वे समाविष्ट नहीं हो पाते-प्रवेश नहीं कर पाते । फलत: हमको बार-बार याद करना पड़ता है । उच्चस्तरीय सिद्धांतों को जीवन में प्रवेश कराने के लिए , अंत: चेतना में नये संस्कार जमाने के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है, जिस तरह इम्तहान की तैयारी के लिए, बच्चों को अपना पाठ पक्का करने के लिए उसे बार-बार याद करना पड़ता है, उसी प्रकार हम आपको गायत्री मंत्र के जप के रूप में बार-बार रेपिटिशन' कराते हैं । ताकि आपकी याददाश्त में से जो वेश कीमती चीज भूल गयी उस गँवायी हुई चीज को आप तलाश कर पायें ।

भगवान रामचन्द्र की सीता जी को रावण चुरा ले गया । रामचन्द्र जी ने पहाड़ों से, नदियों से, तालाबों से पेड़ों से, हवा से-हर एक से पूछताछ की कि कहीं सीता आपने देखी है । क्या सीता के बिना राम बिलकुल निर्जीव से हो गये थे । उनकी जीवात्मा निकल गयी थी । वे हारे-थके हुओं के तरीके से बन-बन में घूम रहे थे और सीता-सीता पुकारते थे । हम भी पुकारते हैं अपनी जीवात्मा को, जिसको कि हमने गँवा दिया है-खो दिया है । साँप के फन में से और हाथी के सिर में से मणि निकल जाती है तो वह बेकार हो जाता है । साँप और हाथी के सिर में यह मणि होती है कि नहीं, यह तो मुझे नहीं मालूम , लेकिन मैं जानता हूँ कि मनुष्य के भीतर-एक मणि अवश्य होती है जिसको गवाँ देने के बाद आदमी निष्प्राण हो जाता है । निस्तेज, निर्जीव-छूँछ हो जाता है और व्यथाओं, कष्टों चिंताओं से घिर जाता है । सारे जीवन पर निराशा के बादल छा जाते हैं । वह मणि है हमारी जीवात्मा-जिसको हमने गँवा दिया । अब तो लोहार की मरी हुई धौंकनी की तरीके से सांस भर चलती है । आज आदमी मरे हुए के बराबर है । मनुष्य जीवन के साथ जो श्रेष्ठतायें उमंग, उत्साह और उल्लास जुड़े हुए होते हैं जिन्हें कि आदमी अमृत की तरीके से बिखेरता रहता है, वह चेहरे पर कहीं दिखायी नहीं देती । ऐसे खीजे हुए बेचैन एवं चिंतित आदमी को मैं मरे हुए में शुमार करता हूँ । सीताजी के चले जाने के बाद रामचंद्र जी चिंतित-दु:खी हो गये थे और अपना उत्साह, आनंद अपनी खुशी को सीता के नाम से पुकारते थे । हम भी आपसे निवेदन करते हैं कि आप अपनी सीता को पुकारिये -आत्मा को पुकारिये, जिसका नाम हमने गायत्री माता रख दिया है । गायत्री माता को पुकारने के लिए गायत्री मंत्र का जप करने के लिए हमने कहा है ।

गायत्री माता क्या हो सकती है ? गायत्री माता बेटे, आपकी जीवात्मा हो सकती है और वह उच्चस्तरीय जीवात्मा जब आपके अंत: करण में प्रवेश करती है तो आपको आनंद और उल्लास से भर देती है और देवता बना देती है । वह गायत्री माता-जो बीस साल पहले आपको एक छवि के रूप में सुपुर्द की थी, जिसको आप चंदन , धूपबत्ती चढ़ाते थे, प्रणाम करते थे-माला घुमाते थे, बहुत पुरानी बात है । जब आप छोटे वाले बालक थे, तब हमने बताया था कि गायत्री माता हंस पर सवारी करती है और-हाथ में पुस्तक, पुष्प, कमंडलु लिए रहती है । पर आज मैं ज्ञान की बात कहता हूँ । जिस गायत्री माता का हम " जप कराते हैं, उपासना और अनुष्ठान कराते हैं, उसकी फिलॉसफी , उसका तत्वज्ञान, उसका सार, प्रकाश और मूल बताना चाहते हैं । मैं समझता हूँ कि अब आप इस लायक हो गये हैं कि खुले दिल से, खुले मन से, आपको हम असलियत समझा सकते हैं कि आखिर गायत्री माता क्या हो सकती है जिसका हमें जप करना चाहिए और जप करने का उद्देश्य क्या हो सकता है जिसके लिए हम आपको बार-बार कहते हैं । जो सिद्धियों की-चमत्कारों की देवी है, जो शांति की-वरदान की देवी है, जो ऐसी देवी है जिसको प्राप्त करने के बाद में और कुछ प्राप्त करना बाकी नहीं रह जाता । वह गायत्री मंत्र जो गुरु वशिष्ठ के पास था, जो विश्वामित्र के पास था जिन्होंने अपना सारा राजपाट छोड़ कर जंगल में तप करने के बाद गायत्री माता का साक्षात्कार किया था और जिसने कहा था-**धिक्बलं क्षत्रिय बलं ब्रह्म तेजो बलंबलम्** । मैं आपको उसी गायत्री मंत्र को बताना चाहता हूँ जो आपको निहाल कर सकता है-धन्य कर सकता है और आपको चमत्कारी बना सकता है , महामानव बना सकता है-देवता बना सकता है और भगवान बना सकता है ।

वह गायत्री मंत्र जो '**मह्यम दत्वा ब्रजतब्रह्मलोकम्** ' प्रदान करता है । ब्रह्मतेजस् और ब्रह्मवर्चस् प्रदान करता है । यह गायत्री माता का प्राण है जिसका हमने कलेवर-शकल बना करके रखा है, अन्यथा जो निराकार शक्तियाँ हैं वे देखी और दिखायी नहीं जा सकतीं । उनकी शकलें नहीं होती हैं । ठंडी, गर्मी, प्रेम, मोहब्बत , क्रोध जैसी संवेदनाओं की शकल नहीं हो सकती भगवान की केवल संवेदनायें, विचारणायें, प्रेरणायें, निष्ठायें, आस्थायें और अनुभूतियाँ हो सकती हैं । उनकी कोई शकल नहीं हो सकती । शकल हमारी कल्पना है । कल्पना इसलिए है कि हमको निष्ठा तक पहुँचने के लिए रास्ता मिल जाय । जिस तरह इंजैक्शन की सुई शरीर के भीतर रक्त में दवा पहुँचा देती है, उसी प्रकार शकलों के माध्यम से हमारा मस्तिष्क किसी चीज को पकड़ सकता है । शकल के बिना, नाम और रूप के बिना हमारी स्मरण शक्ति और दिमाग की बनावट काम नहीं कर सकती और हम उन संवेदनाओं को पकड़ नहीं सकते । इस संवेदना को , निष्ठा और आस्था को पकड़ने के लिए हमने शकलों की-मूर्तियों की कल्पना की है ।

गायत्री माता क्या हो सकती है ? अब मैं उसके शकल की व्याख्या करूँगा । गायत्री माता-बेटे , एक जवान स्त्री का नाम है जैसे कि हमने फोटों में छापा है और मंदिर में

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

स्थापित किया है । जवान स्त्री इसलिए कि उसके प्रति तेरे भीतर मातृ बुद्धि पैदा हो, आँखों में शुद्ध पवित्रता का भाव पैदा हो, क्योंकि मनुष्य की भावना और ईमान दो बातों में सबसे ज्यादा गंदा हो जाता है । एक धन को देखकर, दूसरा जवान स्त्री को देखकर । एक पैसे को देखकर आदमी भ्रष्ट हो जाता है । दूसरे विपरीत सैक्स की जवानी देखकर न जाने कैसा शैतान दिमाग में आ जाता है कि आदमी सब कुछ भूल जाता है, यहाँ तक कि अपने कर्तव्यों को भी भूल जाता है । कामिनी और कांचन-दोनों को देख करके जो अपने ईमान को सही रख सकता है, उसे कह सकते हैं कि यह आदमी बहादुर है-शूरवीर है । इसके पास वह शक्ति है जिसका नाम-ब्रह्मवर्चस् है । जिसके पास ब्रह्मवर्चस् है वह भगवान को भी मजबूर कर सकता है कि आप आइये जमीन पर और हमारे सामने खड़े होइये । भगवान को इसके आधार पर हम खड़ा कर सकते हैं । भगवान को इसके सामने नत होना पड़ता है । मित्रो, ब्रह्मवर्चस् और ब्रह्मतेजस् वह शक्ति है जो भगवान को अपना भक्त बना लेने के लिए मजबूर कर देती है । यह ब्रह्मतेजस् आता कहाँ से है ? चरित्र में से आता है । पूजा-चरित्र के लिए है । पूजा से भगवान नहीं मिल सकते, पूजा हमारा माध्यम है, लक्ष्य नहीं । पूजा के माध्यम से हम अपनी चरित्रनिष्ठा, विचारशीलता और आंतरिक उदात्तता का विकास करते हैं । उपासना इसी के लिए की जाती है ।

मित्रो , ब्रह्मवर्चस् प्राप्त करने के लिए हमको वह साहसिकता जगानी पड़ेगी जो कि अध्यात्म का मूल उद्देश्य है । उसी के लिए सारे का सारा क्रिया कलेवर खड़ा किया गया है जिसमें सत्संग भी आता है , रामायण पाठ, गीता पाठ, गायत्री जप, देवदर्शन, तीर्थ यात्रा आती है । ये सब के सब साधन हैं और साध्य हैं-अपनी अंतरात्मा का परिष्कार । अंतरात्मा का परिष्कार जिस हिसाब से, जिस अनुपात से होता हुआ चला जाता है, उसी हिसाब, से भगवान और उनकी शक्तियाँ मनुष्य के नजदीक आती हुई चलीं जाती हैं । अध्यात्म इसी के लिए बनाया गया था । उसका मूल उद्देश्य आदमी को श्रेष्ठ मनुष्य बनाना है, क्रमशः जीवात्मा से महात्मा , महात्मा से देवात्मा और देवात्मा से परमात्मा बनाना है । इन सीढ़ियों को पार करते हुए चलना है । इसी मूल उद्देश्य को पूरा करने के लिए सारे के सारे धर्मशास्त्र बनाये गये, योगाभ्यास बनाये गये, तपश्चर्याएँ बनायी गयीं । साधना विज्ञान बनाये गये और सारे का सारा अध्यात्म का इतना बड़ा कलेवर बनाया गया । आपको इसके उद्देश्यों को-पूजा उपासना के उद्देश्यों को समझना चाहिए ।

ब्रह्मवर्चस पैदा करने वाली गायत्री माता की छवि हमको यह बात बताती है कि हमारी आँखों में दिव्य तत्व का प्रवेश होना चाहिए । हमारी आँखों में जो चीज जैसी है, उसी तरह की देखने का माद्दा पैदा होना चाहिए । नारी क्या हो सकती है ? नारी हमारी माँ हो सकती है, बेटी हो सकती है, बहिन हो सकती है और उससे भी ऊँचा एक और स्थान है-उसको धर्मपत्नी कह सकते हैं । पत्नी नहीं धर्मपत्नी-जो हमारी सह अंगनी-सहधर्मिणी है, और समाज को श्रेष्ठ नागरिक देने के उद्देश्य से है । दोनों हाथों से जिस तरीके से नाव को चलाते हैं, उसी तरीके से स्त्री -पुरुष दोनों मिल करके जीवन की नौका को खेने के लिए और उसे पार करने के लिए खड़े हो जाते हैं । स्त्री हमारी सहधर्मिणी है, इसलिए वह देवी है और पूजा करने योग्य है । अगर यह वृत्ति अपने भीतर बसायी और बनायी जा सके तो हमारे मस्तिष्क की दिव्य सत्ता का अस्सी फीसदी बिखराव में जो नष्ट होता हुआ चला जाता है उसे बचाया-रोका जा सकता है और अपनी आँखों में वह तेजस् पैदा किया जा सकता है जिसके आधार पर हम भगवान को भी मजबूर कर सकते हैं और भौतिक लोगों को भी प्रभावित कर सकते हैं । अगर अपनी आँखों के द्वारा जो बिजली नष्ट होती रहती है उसको रोक पायें तब-मैं आपसे कहता हूँ कि आपकी और हमारी आँखों में गाधारी की तरीके से वह तेजस् पैदा हो सकता है कि हम अपने बच्चों को अगर यह आशीर्वाद दें कि तेरा शरीर लोहे का हो जायेगा तो लोहे का बन सकता है और अपनी आँखों में वह ब्रह्मतेजस् पैदा किया जा सकता है जो गाँधी जी की आँखों में था । ३२ वर्ष की उम्र में उन्होंने अपनी स्त्री को 'बा' कहना शुरूकर दिया था, इससे उनकी आँखों में वह ब्रह्मतेजस् पैदा हुआ कि ब्रिटेन के प्रधान मंत्री चर्चिल को अपने वायसराय को यों लिखना पड़ा कि आप गाँधी जी से आँख मत मिलाना , उसकी आँखों में हिप्नॉटिक पावर है । जिसको भी देख लेता है उसी को वह प्रभावित कर लेता है उसी को मैस्मराइज कर देता है और अपने चंगुल में फँसा लेता है । आप में से हर आदमी की आँखों में वह मैग्नेट पैदा हो सकता है जिससे आप अपने लोगों को, पड़ोसियों को और हर आदमी को प्रभावित कर सकते हैं, अगर आप अपनी आँखों की शक्ति का बिखराव रोक पायें तब ।

मित्रो, गायत्री माता हंस के ऊपर सवारी करती हैं । हंस से मतलब उस प्रतीक से है जो हमारे भीतर एक वृत्ति पैदा करती है । संकल्प पैदा करती है कि जो आदमी हंस है गायत्री माता उसके ऊपर सवारी करेंगी । हंस गायत्री माता का प्रतीक है जो जवान स्त्री के प्रति-भिन्न सैक्स के प्रति-दिव्यता का - पवित्रता का भाव पैदा करता है । हंस वह आदमी, जो मोती खाये-जिसके ऊपर दाग-धब्बे न हो । जो दूध और पानी को अलग करना जानता हो अर्थात् जिसके रोम-रोम में इंसाफ भरा हुआ पड़ा हो । हंस मोती खाता है अर्थात् जो विवेकवान हैं वे मोती खाते हैं अर्थात् न्याय की कमाई खाते हैं, ईमानदारी की कमाई खाते हैं और शुद्ध चीजें खाते हैं । वह आदमी हंस हैं जो दूध और पानी में फरक करते रहते हैं अर्थात् जो चीज सामने आती है उसमें से यह फरक करते हैं कि उचित क्या है और अनुचित क्या है ? यह कसौटी है खरे-खोटे की पहिचान की । पुराने जमाने में जब सोने-चाँदी के सिक्के चलते थे, तब उनके ऊपर कसौटी लगाई जाती थी कि कौन सिक्का खरा है और कौन खोटा । आपके पास जो भी घटना आये, परिस्थिति आये, व्यक्ति या विचार आये, प्रत्येक के ऊपर कसौटी लगाइये और

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

देखिये कि क्या इसमें उचित है और क्या अनुचित है । कौन नाराज होता है और कौन खुश होता है -यह देखना आप बंद कीजिए । यह दुनिया ऐसे पागलों की दुनिया है कि अगर आपने यह विचार करना शुरू कर दिया कि हमारे हितैषी किस बात में प्रसन्न होंगे तो फिर आप कोई सही काम नहीं कर सकते । सही काम करना है तो फिर आपको यह बात उठाकर ताक पर रखनी पड़ेगी कि कौन नाराज होगा कौन नहीं । अगर आपको भगवान को प्रसन्न करना है और अपने ईमान को प्रसन्न करना है, जीवात्मा को प्रसन्न करना है तो लोगों की नाराजगी और प्रसन्नता की बाबत विचार करना एक दम बंद कर देना पड़ेगा । हमको भगवान की प्रसन्नता की जरूरत है, लोगों की प्रसन्नता की नहीं । आपको सर्टीफिकेट लेना है तो अपनी जीवात्मा का लीजिये और किसी का मत लीजिए ।

मित्रो , वह गायत्री मंत्र जिसका हम आपको जप कराते हैं-जिस गायत्री माता की उपासना कराते हैं, वह सिर्फ उस आदमी के गले में माला पहना सकती है जो सत्यवान है। सत्यवान और सावित्री की कथा आपने सुनी होगी कि उसने सत्यवान् का वरण किया था और कहा था कि हमने अपनी मनमर्जी से व्याह किया है । यह सावित्री और गायत्री एक ही शक्ति का नाम है । गायत्री और सावित्री वरण कर सकती हैं ? वरदान दे सकती है ? कहना मान सकती है ? उत्तर है-हाँ । नंदा नाई के बदले में पैर दबाने भगवान गये थे और गायत्री माता भी आपको दूध पिलाने के लिए और आपके पैर दबाने के लिए आ सकती हैं, आपका वरण कर सकती हैं, पर शर्त एक ही है कि आपको सत्यवान होना चाहिए । जो सत्यवान नहीं है जिन्होंने अपना सारा जीवन झूठवान, बना करके रखा है । जिसके व्यवहार में झूठ, विचारों में झूठ, नियम में झूठ, रोम रोम में झूठ भरा पड़ा है, उसका यदि ख्याल हो कि गायत्री मंत्र बोलने के बाद में किसी ऐसी शक्ति को गुलाम बना सकता है जो उसके मनमर्जी के मुताबिक जो भी मनोकामना होगी, उसको पूरा कर दिया करेगी, तो मेरे हिसाब से यह ख्याल गलत है । दुनिया में ऐसी कोई देवी नहीं है जो किसी पूजा-पत्री करने वाले को निहाल इसलिए कर दिया करे कि उसने इतना जप किया, धूपबत्ती जलायी या इतना हवन कर दिया है । हवन , धूपबत्ती और जप की संख्या के नाम पर प्रसन्न होकर आदमी की मनोकामना को पूरी कर दिया करे, ऐसी देवी दुनिया में नहीं है ।

गायत्री क्या हो सकती है ? उसका वाहन हंस क्या हो सकता है ? उसका सार और आधार समझाने की हमने भी कोशिश की है कि गायत्री उपासना से आपकी आँखों के अंदर दिव्यता, पवित्रता आनी चाहिए जिससे आपको प्रत्येक के भीतर देवत्व दिखता हुआ चला जाय । कांचन और कामिनी के प्रति अपना दृष्टिकोण साफ करके देखें, ताकि आपकी आँखों में अर्जुन और शिवाजी की तरीके से वह तेज आ जाय । अर्जुन को गांडीव मिला था-आँखों का संयम कर लेने से और उर्वशी के प्रति अपनी मातृ बुद्धि रखने की वजह से और छत्रपति शिवाजी को देवी से तलवार मिली थी । तलवार और गांडीव देवी-देवता देते हैं या नहीं, लेकिन वे साहसिकता के रूप में, आदर्शवादिता के रूप में, चरित्रनिष्ठा के रूप में अवतरित अवश्य होते हैं और उसमें हजार हाथी के बराबर बल हो जाता है । अगर गांडीव में तथा शिवाजी की तलवार में हजार हाथी के बराबर ताकत रही होगी तो मैं इसको अंचभा नहीं मानता, सब सही है । अंतरात्मा की महानता में कितना बल होता है-आप से मैं कैसे कह सकता हूँ । आपने तो देखा भी नहीं है । अगर आप अध्यात्म की छाया में खड़े हुए होते तो आप को मालूम पड़ता कि गाँधी, बुद्ध, ईसा और विवेकानंद में कितनी बड़ी ताकत थी और संतों में कितनी बड़ी ताकत थी । अध्यात्म को आप समझते तक तो हैं नहीं । बार-बार वही माला, वही धूपबत्ती तक अपने आपको सीमित किये हुए हैं फिर आपको किस तरीके से आध्यात्मिक लाभ हो सकता है ? गायत्री माता-जिसकी हम आपको उपासना कराते हैं, अनुष्ठान कराते हैं, उसकी भक्ति के अगर आप इच्छुक हैं तो यहाँ से जाने से पूर्व कम से कम उसका सही स्वरूप अपनी अंतरात्मा में अवश्य निर्धारित कर लीजिए । इससे आपका फायदा तो होगा ही, साथ ही अध्यात्म के ऊपर जो एक कलंक आ गया है कि इसका कोई महात्म्य नहीं है कोई फल नहीं है, वह दूर हो जायेगा । प्राचीनकाल में केवल सात ऋषि थे और उन सात ऋषियों की वजह से सारी दुनिया में अध्यात्म जिंदा था । अगर दुनिया में सात आदमी भी अध्यात्मवादी रह जायँ तो भी अध्यात्म जिंदा रहेगा । वही आदमी अध्यात्म के स्वरूप को जिंदा रखेंगे और उनकी वजह से ढेरों आदमी आजायेंगे ।

बेटे, हमने अपनी जिंदगी में सही अध्यात्म को समझने की और जीवन में उतारने की कोशिश की और ढेरों आदमी आ गये । हम से एक लाख आदमी वे बँधे हुए हैं जो अखण्ड-ज्योति पढ़ते हैं । अखण्ड-ज्योति कौन-कौन पढ़ता है-अपने से बँधने का यह मैने मानदंड रखा है । इससे एक लाख आदमी बँधे हुए हैं और एक लाख के सहारे, जो उनके स्त्री -बच्चे, पड़ोसी हैं सब मिलाकर ५० लाख हो जाते हैं । एक सही अध्यात्मवादी ५० लाख आदमियों को प्रकाश देने में समर्थ है । हम लोगों को यह यकीन दिलाने-विश्वास दिलाने में समर्थ है कि गायत्री मंत्र में कुछ जान है और लोगों ने देखा कि आचार्य जी गायत्री मंत्र का जप करते हैं, इस मंत्र में कोई शक्ति होती है । बस इसी एक वजह से इतने लोग इकट्ठा हो रहे हैं और अभी जब तक मैं जिंदा हूँ मैं समझता हूँ कि सारी दुनिया भर में करोड़ों आदमियों को गायत्री मंत्र का उपासक बनाकर जाऊँगा क्योंकि मैं एक सही अध्यात्मवादी आदमी हूँ और लोगों को यह मालूम है कि उपासना और उपासना का फल इनके पास है । इसलिए एक आदमी काफी है और सबके सब नास्तिक हो जायँ तो इससे कोई बनता बिगड़ता नहीं है उस एक आदमी की वजह से ही ढेरों आदमी अध्यात्मवादी बन जायँगे । इसलिए मैं चाहता था कि अध्यात्म का-गायत्री माता का असली स्वरूप आप समझ

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

करके जायँ, तब काम चले । तब फायदा हो । तब उद्देश्य की पूर्ति हो । तब फिर आपको भी आनंद आये, कुछ हमको भी आनंद आये । भगवान को आनंद आये गायत्री माता को आनंद आये । फिर सबकी शिकायतें दूर हो जायँगी । आपके पास वास्तविकता आ जायगी और आपको जप करने के आधार और कारण मालूम पड़ते हुए चले जायँगे ।

हम आपको जो बार-बार जप कराते हैं, उसके कई प्वाइंट हैं । पहला प्वाइंट मैंने आपको शिक्षक-छात्र का पढ़ने -पढ़ाने का बताया है । दूसरा है-व्यायामशाला का । व्यायामशाला में आप जाइये और पहलवान जी से पूछिये-क्यों साहब, क्या हो रहा है ? आप कितने दंड बैठक करते हैं । उत्तर मिलेगा २०० -३०० बैठक करते हैं । यह क्या है ? 'रेपिटिशन ' जिसे बार-बार करना पड़ता है । मिलेट्री वाले-लेफ्ट-राइट और कवायद के रूप में रोज रियाज करते हैं । संगीत को जानने वाले रोज अपना रियाज करते रहते हैं । रियाज हाथ से गया कि संगीत हाथ से गया । स्नान करने और दाँत मांजने में हम रोज रेपिटिशन करते हैं । वर्तन साफ करते हैं तब, कपड़े साफ करते हैं तब-यह सब रेपिटिशन है । मन के ऊपर जो मलिनतायें छायी हुई हैं, उसे धोने के लिए राम नाम के माध्यम से, बार-बार जप करने के माध्यम से रेपिटिशन करना पड़ता है । हम बार-बार भगवान को पुकारते हैं । गज और ग्राह की लड़ाई में गज की एक टाँग ग्राह के मुँह में चली गयी थी और ग्राह उसे घसीटता हुआ चला जा रहा था । जब गज ने देखा कि हमारा कोई ठिकाना नहीं है , बचाव की कोई सूरत नहीं है, तो उसने आवाज लगायी और भगवान को १००८ बार पुकारा । गजराज के एक हजार आठ बार पुकारने पर भगवान दौड़े हुए चले आये । बेटे, एक टाँग मुँह में पकड़ कर घसीट ले गया था, कौन ? ग्राह, किसकी ? गजकी और आप लोगों की तो सारी की सारी टांगों को पकड़ कर यह मगर घसीटे ले जा रहा है । एक-काम, दूसरा-क्रोध तीसरा-लोभ , चौथा मत्सर, पांचवाँ-अहंकार, छठा-मोह-ये छह ग्राह कहाँ-कहाँ चिपके हैं-गर्दन पर, हाथ-पैर पर और पूँछ पर। ये सभी मुँह से पकड़ कर घसीटे ले जा रहे हैं । इसलिए हम भगवान को पुकारते हैं कि हे भगवान ! आप कहाँ हैं ? आइये । हमारी जीवात्मा आप कहाँ हैं ?आइये । हमारे जीवन लक्ष्य , हमारे उद्देश्य, हमारे जीवन की महानता आप कहाँ हैं ? हे हमारे आदर्श आप कहाँ हैं ? आप आइये और हमको ले करके चलिए । बेटे, इसी के लिए हम जप कराते हैं आप से ।

जप का मोटा उद्देश्य तो मैं कितनी बार आपको समझाता रहा हूँ । गायत्री मंत्र का टाइप राइटर से उदाहरण देता रहा हूँ । मंत्र का हमारी जीभ से उच्चारण होता है । इससे शक्ति केन्द्र खुल जाते हैं । बार-बार एक लयबद्ध और क्रमबद्ध शब्दों के उच्चारण करने से एक गति पैदा होती है-शब्द की गति । लोहे के पुल के ऊपर फौजी कदम से कदम मिलाकर चलते हैं तो क्रमबद्ध एक लय उत्पन्न होती है जिससे पुल के गिरने का जोखिम पैदा हो जाता है । इसलिए उन्हें कदम से कदम मिलाकर पुल पर चलने से मना कर दिया जाता है । इसी तरह एक लयबद्ध, क्रमबद्ध दिशाबद्ध ढंग से उच्चारण किया हुआ शब्द इतना शक्तिशाली हो जाता है जिसे समझना मेरे लिए मुश्किल है । लेकिन साइंस के साथ मैं आपको समझा सकता हूँ कि बार-बार एक ही शब्द को एक ही गति से, एक ही चक्र को घुमा देने से 'सेन्ट्रीफ्यूगल' फोर्स पैदा हो जाती है । श्रेष्ठ शब्दों के गुंथन और बार-बार उनके उच्चारण के माध्यम से हमारे भीतर सेंट्रीफ्यूगल फोर्स पैदा हो जाती है । इसके अतिरिक्त बार-बार एक ही शब्दोच्चारण का एक साइकोलॉजिकल प्वाइंट भी है । पैरासाइकोलॉजी एवं मेटाफिजिक्स के हिसाब से हमारी चेतना चार हिस्सों में बँटी हुई है जिसे प्रशिक्षित करने के लिए चार आधार और स्तर हैं । पहला वाला स्तर जिसको हम 'लर्निंग' कहते है । यह दिमाग का वह स्तर है जो केवल एक बात को समझा देने से जानकारी मिल जाती है-जैसे आपको बता दिया कि ऋषिकेश यहाँ से २२ मील है । इसकी जानकारी आपको हो गयी । दूसरी परत वह है जिसे हम 'रिटेंन्शन' कहते हैं अर्थात् प्रस्तुत जानकारी को स्वभाव का अंग बना लेना । जिस बात को हम निरंतर करते रहते हैं, बहुत दिनों बाद वह हमारे स्वभाव में शामिल हो जाती है, आदत में शामिल हो जाती है । यह 'रिटेंन्शन' कहलाता है । एक और परत है, जिसमें बहुत सी चीजें दबी हुई पड़ी रहती हैं और बड़ी मुश्किल से ही कभी-कभी याद आ जाती हैं । चेतना की इस परत में बहुत सारी चीजें दबी हुई पड़ी होती हैं जिन्हें हम भूल गये हैं । भूली हुई उन चीजों के ऊपर जब हम जोर देते हैं-उन पर प्रकाश फेंकते हैं तो वे स्मृतियाँ उठ कर खड़ी हो जाती हैं - जाग जाती हैं जिसे "रीकाल" कहते हैं । आखिरी परत है-"रीकॉग्नीशन" । 'रीकॉग्नीशन' उसे कहते हैं जिसमें कि मान्यताएँ, आस्थाएँ, निष्ठाएँ और विश्वास जम जाते हैं । एक के बाद एक परत मिलती हुई चली जाती है । जप के द्वारा, उपासना के द्वारा अपनी जीवात्मा को उस स्थिति पर ले जाना पड़ता है जिसमें कि 'रीकॉग्नीशन' की स्थिति पैदा हो जाती है ।

"सीयराम मय सब जग जानी" यह वाक्य हमने हजार बार पढ़ा और हजार बार सुना है, लेकिन हमारे भीतर न राम के प्रति भावना पैदा होती है और न सिया के प्रति भावना पैदा होती है । हर आदमी हमें शिकार मालूम पड़ता है , हर मर्द शिकार मालूम पड़ता है-हर औरत शिकार मालूम पड़ती है । जबान से हम कहते रहते हैं तो क्या बना ? रीकॉग्नीशन नहीं हो सका । मान्यताएँ, निष्ठाएँ परिपक्व नहीं हो सकीं । निष्ठाओं को परिपक्व करने के लिए बराबर रस्सी से जिस तरीके से पत्थर के ऊपर निशान बनाने के लिए रगड़ करनी पड़ती है, उसी तरीके से जप के द्वारा-उपासना के द्वारा बार-बार रगड़ बना करके अपनी अंत: चेतना के ऊपर निष्ठायें जमानी पड़ती हैं । इसीलिए हम आपको जप कराते हैं इस तथ्य को आप लोग ध्यान रखना । आप जप करने का स्वरूप समझिये-कारण समझिये । किस कारण से जप कराते हैं-यह वजह समझिये । अगर आप समझ जायँगे तो ठीक है, फिर आपको जप करना हो तो करना और न करना हो तो मत करना, पर कम से कम आपकी मान्यता तो सही होनी चाहिए । मान्यतायें सही हो जायँ -जानकारी सही हो जाय तो ठीक है । तब आप समझना कि पचास फीसदी मंजिल पार कर ली, । आगे आपकी मर्जी । आज की बात समाप्त ।

ॐ शांति: शांति: शांति: 卐

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परम पूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी-

(सूक्ष्मीकरण की वेला में जनवरी १९८६ में प्रसारित पूज्यवर का वीडियो संदेश)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो, भाइयो ! अध्यात्म एक विज्ञान है । इसका सही अर्थ और मर्म न समझ पाने के कारण ही इस क्षेत्र में अंधविश्वास पनपा है । नयी पीढ़ी के लोग कहते हैं कि यह अंधविश्वास है । इसके पीछे वे तर्क देते हैं कि जो कर्मकांड लिखे हुए हैं, उसको जब हम करते हैं तो जो उसके परिणाम और फल बताये गये हैं, वे नहीं मिलते तो उनके कहने के मुताबिक यह अंधविश्वास सही है ? और जो विश्वासी है वे कहते हैं कि ऋषियों को, शास्त्रकारों को, आप्त पुरुषों को जिन्होंने अध्यात्म के विधि-विधानों के ऊपर इतना जोर देकर कहा है-तो उनको झूठ बोलने से क्या फायदा ? इसके पीछे कोई न कोई सच्चाई होनी चाहिए । अध्यात्म विज्ञान है अथवा अंधविश्वास है, यह तलाश करने के लिए हमने अपनी पूरी की पूरी जिंदगी इस काम के लिए खर्च कर डाली और अब हम जिस नतीजे पर पहुँचे हैं, उस नतीजे को आप लोगों को सुनाने का हमारा मन है ।

लोहा जब खदानों से निकलता है, तब आपने देखा होगा-कच्चा निकलता है-मिट्टी मिला हुआ होता है । धातुएँ जब जमीन में से निकलती हैं तब सभी कच्ची होती हैं । उनमें मिट्टी का सम्मिश्रण होता है । आग पर तपाने के बाद में उनका वास्तविक स्वरूप निकलता है । मिट्टी गल जाती है और लोहा, सोना तथा दूसरी धातुयें निकल आती हैं । तेल के बारे में भी यही बात है । कोयला जो होता है उसे भी साफ करना पड़ता है । हर चीज को साफ करना पड़ता है । जो व्यक्ति अध्यात्म का प्रयोग करता है, अगर अपनी सफाई का भी ध्यान रखता है, तो जानना चाहिए कि उसको परिणाम मिलेगा और अगर उसने सफाई का ध्यान नहीं रखा, अपने आपका संशोधन नहीं किया है, उसको ठीक तरीके से काम में लाने की स्थिति में नहीं है, तो फिर मान लीजिये कि वह कर्मकांड केवल अंधविश्वास है । अंधविश्वास से क्या काम निकलने वाला है ? इसलिए साधक को अपने जीवन में जीवन का परिष्कार करना पड़ता है । पात्रता का विकास करना पड़ता है । पात्रता का विकास न करे -जीवन का संशोधन न करे तो उसका वह लाभ जो मिलना चाहिए नहीं मिलेगा । तब फिर अंधविश्वास कहलाने वाली बात सही है और अगर आदमी उसके समग्र स्वरूप को समझता है और समय, स्वरूप की कीमत चुकाने के लिए तैयार है, तो फिर मैं समझता हूँ । कि इसको विज्ञान ही होना चाहिए ।

मेरी सारी जिंदगी इसी काम में खर्च हुई है और मैंने पाया है-कि अध्यात्म एक विज्ञान है-साइंस है और यह सही है । कैसे ? इस तरीके से कि हमारे गुरु ने-हमारे मास्टर ने 'बॉस' ने सबसे पहले यह समझाया कि कारतूस से भी ज्यादा बन्दूक का सही होना आवश्यक है । कर्मकांड अपने आप में पर्याप्त नहीं है । उसको चलाने वाला जो व्यक्ति है, वह सही होना चाहिए । बीज में अपनी शक्ति है । जो बीज जमीन में बोते हैं वही पैदा होता है । आम बोते हैं तो आम पैदा होता है, बबूल बोते हैं तो बबूल पैदा होता है । गेहूँ बोते हैं तो गेहूँ पैदा होता है-यह बात सही है, लेकिन इससे भी ज्यादा सही यह बात है कि जमीन ठीक होनी चाहिए । जमीन को जोता नहीं गया है, खाद-पानी नहीं दिया गया है-तो ऐसी ऊबड़-खाबड़ जमीन में अच्छी पैदावार की आप कैसे उम्मीद रखेंगे ? इसलिए अध्यात्म के साथ में दो सिद्धांत जुड़े हुए हैं । एक सिद्धांत यह मिला हुआ है कि जो इसके लिए कर्मकांड बताये गये हैं, वह करने चाहिए । दूसरी इससे भी सही बात यह है कि जो आदमी प्रयोग करने वाला है, उसे व्यक्तित्व की दृष्टि से बहुत साफ, बहुत पैना और बड़ा तीखा होना चाहिए । तीखे व्यक्तित्व के ऊपर-बढ़िया वाली बन्दूक के अंदर अगर आपने कारतूस रखी है तो निसाना सही लगेगा और बहुत दूर तक लगेगा । लेकिन अगर आपके पास बन्दूक नहीं है या नकली बन्दूक है और खाली कारतूस लेकर के आप चलाने का मन करते हैं तो फिर आपकी बात बनेगी नहीं । तो फिर आप इसे अंधविश्वास भी कह सकते हैं ।

खेत में जो बीज बोया जाता है वही पैदा होता है, इसमें कोई दो राय नहीं, लेकिन अगर खेत में खाद-पानी नहीं लगायेंगे, जुताई नहीं करेंगे, तब फिर कुछ भी पैदा नहीं होगा । तब फिर आपको यही कहना पड़ेगा कि बीज बोना, खेती करना-मेहनत करना बेकार है । इस तरीके से बीज बोना अंधविश्वास हो गया और अगर आपने ढंग से-कायदे से बीज बोया है तो बीज बोना विज्ञान हो गया । लोहे के बारे में आप जानते हैं कि वह जमीन से मिट्टी मिला हुआ निकलता है । उससे आप कोई बर्तन बनाना चाहें, हथियार बनाना चाहें, औजार बनाना चाहें तो कुछ नहीं बन सकता । लेकिन अगर आपने उसे तपाया है और तपाकर के मिट्टी वाले हिस्से को जला दिया है, तब फिर आप उस लोहे से जो कुछ भी बनाना चाहें बना सकते हैं । ज्यादा टेम्परेचर देंगे तो फिर स्टील बना सकते हैं-फौलाद बना सकते हैं और दूसरी कीमती चीजें बना सकते हैं । लौह भस्म भी बना सकते हैं, मंडूर भस्म भी बना सकते हैं । यह सब चीजें ताप के ऊपर टिकी हुई हैं । लोहे के ऊपर नहीं । लोहा तो जैसा है वैसा ही रहेगा । यही बात अध्यात्म के सिद्धांतों के बारे में है । अध्यात्म के सिद्धांतों को जो आदमी अपने जीवन में प्रयोग करता है और अपने आपको सही बना लेता है तो उसके चमत्कार जरूर दिखाई पड़ेंगे । ऋद्धियाँ और सिद्धियाँ-जैसा कि उनके बारे में बताया गया है सब बिलकुल सही बैठेंगी । कहीं भी गलती करने का अवसर नहीं आयेगा अगर आपने अपने जीवन को साफ किया है तब ।

सर्वत्र पात्रता के हिसाब से मिलता है । वर्तन अगर आपके पास है तो उसी बर्तन के हिसाब से आप जो चीज लेना चाहें तो ले भी

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

सकते हैं । खुले में रखें तो पानी उसके भीतर भरा रह सकता है । दूध देने वाले के पास जायँगे तो जितना बड़ा वर्तन है उतना ही ज्यादा दूध देगा । ज्यादा लेंगे तो वह फैल जायगा और फिर वह आपके किसी काम नहीं आयेगा । इसलिए पात्रता को अध्यात्म में सबसे ज्यादा महत्व दिया गया है, जो आदमी अध्यात्म का प्रयोग करते हैं, वे अपने व्यक्तिगत जीवन मे अपनी पात्रता का विकास कर रहे हैं कि नहीं कर रहे हैं-यह बात बहुत जरूरी है । आदमी का व्यक्तित्व अगर सही नहीं है तो यह सब बातें गलत हैं । कपड़े को रंगने से पहले धोना होगा । धोयें नहीं और मैले कपड़े पर रंग लगाना चाहें तो रंग कैसे चढ़ेगा ? रंग आयेगा ही नहीं-गलत-सलत हो जायेगा । इसी प्रकार से अगर आप धातुओं को गरम नहीं करेंगे तो उससे जेवर नहीं बना सकते । हार नहीं बना सकते । क्यों ? इसलिए कि आपने सोने को गरम नहीं किया है । गरम करने से आप इनकार करते हैं । फिर बताइये जेवर किस तरीके से बनेगा ? इसलिए गरम करना आवश्यक है । जो आदमी साधना के बारे में दिलचस्पी रखते हैं या उससे कुछ लाभ उठाना चाहते हैं, उन्हें सबसे पहला जो कदम उठाना पड़ेगा, वह है अपने व्यक्तित्व का परिष्कार । साधना भगवान की नहीं की जाती वरन् अपने आपकी की जाती है । उपासना भगवान की की जाती है । कर्मकांड किसी की मनुहार नहीं है, खुशामद नहीं है, कोई बाजीगरी नही हैं । कर्मकांड का सार, उद्देश्य और मकसद यह है कि आदमी अपने आपको ठीक बनाकर इस लायक बनाले कि उसके माध्यम से कर्मकांडों के मंत्रों के जो विधि-विधान हैं, देवपूजन हैं, उनका समुचित लाभ उठाया जाना संभव हो सके ।

इसके लिए आदमी को संयमी बनना पड़ता है आपने देखा होगा कि रेलगाड़ी को चलाने के लिए थोड़ी भाप बनाई जाती है और पिस्टन के साथ जोड़ दी जाती है । यही सम्प्रहीत भाप रेलगाड़ी और इंजन सहित हजारों लाखों मन बोझ को खींच ले जाती है । अगर यही भाप फैलादी जाय तो वह हवा में चारों तरफ बिखर जायगी और फिर किसी काम नहीं आयेगी । इसी तरीके से व्यक्ति के बारे में भी यही बात लग होती है कि उसे सही तरीके से ठीक किया जाय । कोयले से ही हीरा बनता है । हीरा कोई अलग चीज नहीं वरन् साफ किया हुआ कोयला ही हीरा कहलाता है । कच्चा पारा सस्ता होता है और शरीर के लिए नुकसान देय भी, लेकिन अगर उसी पारे को मकरध्वज बनालें तो वह बहुत कीमती होता है, रसायन कहलाता है और बुड्ढे को जवान बना देता है और बहुत से मर्जों में काम आता है । अध्यात्म के बारे में भी यही बात है कि इससे व्यक्ति को स्वयं अपने आपको ठीके करना पड़ता है । मंत्र आप किससे जपेंगे-वाणी से । वाणी अगर आपने ठीक की हुई नहीं है तो फिर आप मंत्र जप कैसे कर पायेंगे और उसका परिणाम किस तरीके से निकल पायेगा । ठीक की हुई वाणी का अर्थ यह होता है कि जीभ को ऐसी होनी चाहिए जिससे आप किसी दूसरे आदमी को गलत रास्ते पर नहीं ले जायँ । अगर आपने जीभ को इस तरीके से बना करके रखा है तो आपकी जिह्वा चमत्कार दिखाने में समर्थ हो सकेगी ।

इस बारे में, मैं एक पुराना किस्सा सुनाना चाहता हूँ-शृंगीऋषि का। उनके पिता ने शृंगीऋषि को इस तरीके से पाला अपने आश्रम में कि उनको स्त्रियों एवं अन्य बातों के बारे में कुछ मालूम न था । राजा दशरथ के पुत्र नहीं होता था । गुरुवशिष्ठ ने कहा-आप शृंगीऋषि के पास जाइये । अगर वे आपके पुत्रेष्ठि यज्ञ-अनुष्ठान को पूरा करा देंगें तो आपका उद्देश्य पूरा हो जायेगा । राजा ने पूछा-शृंगीऋषि में क्या बात है जो अन्यान्य ब्राह्मणों में नहीं है । गुरु वशिष्ठ ने कहा-दूसरे ब्राह्मणों को कर्मकांड आते हैं, विधि-विधान आते हैं, मंत्र बोलना आता है, लेकिन अपने स्वयं के जीवन को जैसा बनाना चाहिए, वैसा बनाने के बारे उन्होंने न कभी ख्याल किया और न उसका अभ्यास किया । शृंगीऋषि के पिता ने अभ्यास कराया है । जब शृंगीऋषि आये और राजा दशरथ का पुत्रेष्ठि यज्ञ कराया तो उनकी तीनों रानियों से चार बच्चे हुए और चारों बच्चे साधारण नहीं भगवान के स्तर के थे । क्योंकि उनकी वाणी में बल था । शृंगीऋषि को प्रयोग करना आता था । यही ऋषि परंपरा है । शारीरिक श्रम, बुद्धि, समय, धन, भावनायें, व्यक्तित्व ये सारी चीजें ऐसी हैं जो एक-एक करके ठीक करनी चाहिए । हमारे जीवन में यही करना पड़ा और उसी का यह परिणाम है कि जो कुछ हमने पाया उसमें से हर चीज को सही पाया । कोई चीज ऐसी नहीं पायी जिसके बारे में हम यह कह सकें कि हमको इसमें संदेह रह गया है कि अध्यात्म विज्ञान नहीं है

वस्तुतः अध्यात्म विज्ञान है । इस विज्ञान को और ज्यादा तेज करने के लिए अब हम आप लोगों से विदा होते हैं । विदा होने का मतलब है कि अब हमारी और आपकी बातचीत का सिलसिला, जो इतने लंबे समय से चलता रहा है, आगे से चलना अब मुमकिन नहीं है । आगे से अब हमारा दूसरा कार्यक्रम यह है कि अध्यात्म के विज्ञान को जिस हद तक हमने समझा है, उस हद तक यह लोभ हमसे अब संवरण नहीं होता कि इससे भी ज्यादा फायदा होना चाहिए । व्यक्तियों की व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान होना अध्यात्म से संभव है, लेकिन समूह का समाज का और सारे विश्व का समाधान होने के लिए उससे भी बड़ी ताकत की जरूरत है । अब तक हमने जैसी उपासना की है, उससे भी बड़ी उपासना करने की अब हमको आवश्यकता पड़ी है । इसलिए अब आप लोगों से बिदा लेते हैं । क्यों ? साथ रहते तो क्या हर्ज था ? तब यह हर्ज था कि शक्ति बिखर जाती । पहले भी ऐसा हुआ है । कई व्यक्तियों को इसी तरीके से करना पड़ा है । पाण्डिचेरी वाले अरविंद घोष के बारे में आपने सुना है श्री अरविंद ने कई इंतजाम किये कि अँग्रेजों को हिन्दुस्तान से भगा दिया जाय, लेकिन उसमें सफलता नहीं मिली । आखिर में उनकी समझ में आया कि रूहानी शक्ति को इकट्ठा करना चाहिए । रूहानी शक्ति ही इस दुनिया में सबसे बड़ी शक्ति है । उससे बड़ी कोई शक्ति नहीं है । वे पाण्डिचेरी चले गये । वहाँ अँग्रेजों की हुकूमत नहीं थी । वहाँ जाकर उनने तप करना शुरू कर दिया और तप से इतनी गर्मी पैदा की कि सारे के सारे वातावरण को 'साइक्लोन्स' चक्रवातों से भर दिया ! जब ज्यादा गर्मी पड़ती है तब साइक्लोन-चक्रवात आते हैं और पेड़ों को, छप्परों को उखाड़ कर फेंक देते हैं । इसी प्रकार श्री अरविंद के तप करने की वजह से ऐसे साइक्लोन आये जिन्होंने पेड़ों को जड़ों से उखाड़ कर फेंक दिया । क्या नाम थे—

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

साइक्लोनों के ? इनमें से एक साइक्लोन का नाम था गाँधी, एक का नाम था मालवीय, एक नाम था जवाहार लाल नेहरू , एक का नाम था-सरदार पटेल, एक का नाम था सुभाषचन्द्र बोस, लाला लाजपतराय-वगैरह-वगैरह जब वे उठे तब अँग्रेजों को बोरी विस्तर बाँधने पड़े । ऐसे जबरदस्त थे साइक्लोन । वे महापुरुष थे-महामानव थे । इनके व्यक्तित्व और इनकी हस्तियाँ ऐसी जबरदस्त थीं जो बहुत दिनों से पैदा नहीं हुई थीं ।

वे कैसे हुई । यह श्री अरविंद एवं श्री माँ का तप था और किसका महर्षि रमण का तप था । महर्षि रमण ने भी इन्हीं दिनों ऐसा तप किया था जिससे कि सारे के सारे वातावरण में गर्मी पैदा हो गयी थी और उससे हिन्दुस्तान की आजादी के लिए बड़े-बड़े काम संपन्न हो गये थे । महर्षि रमण और श्री अरविंद के अतिरिक्त बाहरी दुनिया में भी कई व्यक्ति हुए हैं । बाहर कौन हुआ है आइन्स्टीन । उन्होंने भी अपनी शक्तियों को बिखरने से बचाने के और अपने वैज्ञानिक उद्देश्य को पूरा करने के लिए एकांत में रहना शुरू कर दिया था । उनके रहने की जगह ऐसी थी जहाँ कोई भी नहीं जा सकता था । जिसको उनके पास जाना होता था, वे नौकर की मार्फत अपना विजिटिंग कार्ड भिजवा देते थे और जब उनको फुर्सत होती थी तभी वे किसी को बुलाते थे अन्यथा किसी की हिम्मत नहीं होती थी जो उनके पास जाय उनसे बातचीत करे । टाल्स्टाय ने भी अपने जीवन के अंतिम दिनों में ऐसा ही किया था । वे मौनधारण करने लगे थे । मौनधारण करने का मतलब है अपनी शक्तियों को एकत्र करना । अब हम भी अपनी शक्तियों को एकत्र करने के लिए मौनधारण करते हैं । आप कोई यह मत सोचिये कि आप लोगों से कोई हमारी नाराजगी है । आप हमको बहुत प्यारे हैं और हमेशा बहुत प्यारे रहेंगे । प्यार में हम कुछ भी कमी नहीं आने देंगे और न ही दूर रहने से हमारे और आपके बीच कुछ फरक पड़ेगा । सूर्य, चन्द्रमा और समुद्र के नजदीक क्या कभी गये हैं आप ? वे आप से करोड़ों मील दूर हैं, फिर भी अपनी शक्ति से आपको कितना फायदा पहुँचाते हैं । हम और आप भी पास-पास खड़े रहें, पास-पास बैठे रहें देखते रहें, इसकी कोई जरूरत हमें नहीं दीखती । अब इससे आगे आप हमें नहीं भी देखें तो उससे कुछ बनता बिगड़ता नहीं । आपने अपना दिल देखा है क्या ? फेफड़े देखे हैं क्या ? गुर्दे देखें हैं क्या ? वे दिन- रात चौबीसों घंटे आपकी सेवा में लगे रहते हैं । हमको आप इसी तरीके से मानिये कि दिल की तरीके से आपके साथ हम चौबीसों घंटे लगे रहेंगे । गुर्दे की तरीके से आपकी जिंदगी को साफ करेंगे । फेफड़ों की तरीके से आक्सीजन पहुँचाने के लिए हम से जो कुछ भी मुमकिन होगा बराबर करते रहेंगे । इसलिए आप तो इस बात को त्याग दीजिए कि गुरु जी से मिलना-जुलना नहीं हो सकेगा ।

मिलने-जुलने की प्रक्रिया को हम सिर्फ इसलिए बंद कर रहे हैं कि अब तक आध्यात्मिक जीवन से जो अपने व्यक्तियों का, समाज का जो हितकर सकते थे किया, अब समस्यायें ऐसी पैदा हो गयी हैं जो बड़ी हैं और उनके लिए बड़ी तैयारी करनी पड़ेगी । छोटे कामों के लिए छोटी तैयारी करनी पड़ती है । चिड़िया को मारना होता है तो गुलेल भर से काम चल जाता है, या छोटी बन्दूक से भी मार सकते हैं । किसी डाकू को मारना होता है, शेर को मारना होता है तो स्टेनगन की जरूरत पड़ती है । जब कुछ बड़े काम करने पड़ते हैं या शत्रु सेना पर हमला बोलना होता है तब तोपों की जरूरत पड़ती है । अब समय कुछ इस प्रकार का आ गया है कि हमको बड़े कदम उठाने पड़ सकते हैं-पड़ेंगे । अब छोटे कदमों से आज की समस्यायें हल होने वाली नहीं हैं । कौन-कौन सी समस्यायें हैं ? आपकी आँखों को दिखाई नहीं पड़ेगा । आपको सूर्य का परिभ्रमण तथा पृथ्वी की परिक्रमा कहाँ दिखाई पड़ती है । हमारी आँखें आपकी अपेक्षा अधिक तेज हैं । वे कुछ ऐसी समस्यायें देख रही हैं जो कि बहुत ही मुश्किल है । इन मुश्किल समस्याओं को हल करने के लिए बड़ी शक्ति की जरूरत है । मुश्किल समस्यायें क्या हैं ? एक समस्या यह है कि वातावरण में जहर भरता जा रहा है । हवा में जहर, पानी में जहर, मिट्टी में जहर-सभी जगह औद्योगीकरण के द्वारा, मोटर-वाहनों के द्वारा, रासायनिक खादों एवं एटमी विकिरण के द्वारा जहर ही जहर भरता जा रहा है । जिससे कैंसर से लेकर अन्यान्य बीमारियाँ पैदा हो रही हैं । यह चीजें वह हैं जिसे साइंस ने तमाम जगह भर दी हैं । पर एक चीज ऐसी है जो सांइस ने तो नहीं भरी है, पर हमारे और आपके ख्यालातों से जन्मी है जिससे कि यह परोक्ष वातावरण गंदा हुआ है । परोक्ष वातावरण की इस गंदगी को दूर करने की, साफ करने की भरसक जरूरत है ।

सफाई किस तरीके से की जाय ? हमको उसके लिए मुनासिब स्थान और मुनासिब कदम उठाने की जरूरत है । अब हम बड़े कदम उठायेंगे । अब तक जैसे अनुष्ठान किये हैं, वैसे अनुष्ठानों से काम नहीं चलेगा । अब हमको बड़े अनुष्ठान करने चाहिए । पिछले अनुष्ठानों में हम लोगों से मिलते भी रहे हैं और काम भी करते रहे हैं, पर आगे अब क्या करना है ? आगे हम अकेले पड़ जायेंगे । अकेले से काम नहीं चलेगा । रामचन्द्र जी से अकेले से काम नहीं चला था । इसलिए वे सुग्रीव को बुलाने के लिए गये-हनुमान को बुलाने के लिए गये । फिर नल और नील को बुलाने के लिए गये जिनने समुद्र पर सेतु बना दिया । सबने मिलकर लंका को पार करने की फतह करने की तैयारी की । अकेले रामचन्द्र जी नहीं कर पाये । उन्होंने जब रामराज्य की स्थापना की, तब भी इन्हीं लोगों की सहायता की जरूरत पड़ी । अकेले रामचन्द्र जी रामराज्य की स्थापना नहीं कर सकते थे । हम भी अकेले नहीं कर पायेंगे । कुन्ती ने श्रीकृष्ण भगवान की आज्ञा मान करके उनके लिए पाँच सहायक पैदा किये थे । पाँच देवताओं की शक्तियों से वे पैदा हुए थे, जिनके नाम थे-अर्जुन, भीम, युधिष्ठिर, नकुल और सहदेव । एक का नाम कर्ण था जो सूर्य के अंश से पैदा हुए थे । काम बड़ा था-छोटा नहीं ।

एक बार ऐसा हुआ कि सब जगह पानी का अभाव हो गया । पानी के बिना कुँए , तालाब सूख गये । कहीं पानी दिखाई नहीं पड़ रहा था । सब जगह त्राहि-त्राहि मच गयी कई वर्ष हो गये कहीं पानी नहीं बरसा । कुछ चीजें हैं जिन्हें मनुष्य अपने आप नहीं कर सकता, उसे बड़ों की सहायता से पूरा करता है । उसके लिए बड़ी शक्तियों की सहायता चाहिए । भगीरथ ने विचार किया कि इसके लिए स्वर्ग से गंगा जमीन पर लायी जाय । गंगा को स्वर्ग

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

से जमीन पर लाने के लिए वे तप करने चले गये । उन्हें खुशामद नहीं करनी पड़ी । खुशामद करने, प्रार्थना करने, चावल चढ़ाने, धूप-दीप-नैवेद्य चढ़ाने से कोई भी बड़ी शक्ति काबू में नहीं आ सकती । ऐसे बड़े कामों के लिए तप करने पड़ते हैं । भगीरथ ने जैसे-जैसे तप किया और तप करके गंगा को स्वर्ग से लाये तो देवताओं ने भी मदद की । जो अपनी मदद आप करता है उसकी ईश्वर भी मदद करता है । शंकर भगवान ने उनकी मदद की । हमारे गुरु ने भी हमारी मदद की है, क्योंकि हमारे सामने बड़े मकसद रहे हैं । शुरू से आखिर तक जो कुछ भी काम हम करते रहे हैं, बड़े उद्देश्यों के लिए करते रहे हैं । अगर यह बात यह नीयत नहीं रही होती और यह नीयत रही होती जो कुछ भी हम अपने लिए, अपने बाल-बच्चों के लिए, रिश्तेदारों के लिए करेंगे तब ये सब देवता हम को सूँघ कर भाग खड़े हुए होते । आप देवताओं की शक्ति का इस्तेमाल करना चाहते हैं तो उनको एक ही बात बतानी पड़ेगी कि हम किसी बड़े काम के लिए-बड़े मकसद के लिए-बड़े उद्देश्यों के लिए कुछ काम करना चाहते हैं । भगीरथ ने जब यह बताया कि गंगा हमें इसलिए चाहिए कि जो पीढ़ियाँ सदियों से अनास्था के कारण शाप से जल रही हैं, सारी धरती सूखी पड़ी है, उसके लिए चाहिए तो गंगा भी तैयार हो गयी और उनकी मदद करने के लिए शंकर जी भी तैयार हो गये और गंगा ने उनकी जटाओं में गिरने के बाद जमीन पर बहना शुरू कर दिया ।

देवताओं के ऊपर एक बार एक और मुसीबत आयी । ऐसा हुआ कि वृत्रासुर नामक एक दैत्य ने देवताओं को मारपीट कर भगा दिया और उनका इन्द्रासन वगैरह राज सिंहासन छीन लिया । देवताओं ने देखा कि इसको मारने के लिए तपस्वी की शक्ति चाहिए । तपस्वी की शक्ति से बड़ी और किसी की शक्ति नहीं होती । वे दधीचि के पास गये । दधीचि ने कहा-कि मेरी आस्थियों का वज्र यदि बने तो वह इतना मजबूत हो सकता है कि सब देवता एक ओर , राक्षस एक ओर और मेरी अस्थियों से बना हुआ वज्र एक ओर । तपस्वी दधीचि ने इन्द्र को बुलाया और कहा कि आप हमारी हड्डियाँ ले जाइये और उससे वज्र बनाकर वृत्रासुर के विरुद्ध काम में लाइये । ऐसा ही हुआ । इन्द्र ने उन्हीं हड्डियों से वज्र बनाया और उससे वृत्रासुर का नाश किया और बड़ा काम हो गया ।

बड़े कामों के लिए बड़ी ताकत की जरूरत पड़ती है । हमारे सामने भी काम बड़ा है । इसके लिए बड़े त्याग की जरूरत है । इसमें दधीचि जैसे, भगीरथ जैसे त्याग करने वाले होने चाहिए, बड़े आदमी होने चाहिए । बड़े आदमी आयेंगे कहाँ से ? हमने आपसे कहा है कि भगवान केवल उसी की सहायता करता है जो बड़े कामों के लिए बड़े उद्देश्यों के लिए अपने आपको सौंप देते हैं । सुग्रीव के साथ भी यही हुआ और हनुमान के साथ भी यही हुआ । पहले दोनों बालि का मुकाबला नहीं कर सकते थे और जान बचाकर एक पहाड़ पर जा छिपे थे और वहीं पर किसी प्रकार अपना गुजारा कर रहे थे । लेकिन जब दोनों रामचन्द्र जी के साथ जुड़ गये और सीता की खोज करने और लंका का दहन करने का जोखिम उठाने को तैयार हो गये तो वही हनुमान भी पहाड़ उखाड़ने और लंका जलाने सहित समुद्र को छलांग मारने में समर्थ हो गये । जो आदमी जोखिम नहीं उठा सकता , केवल फायदा ही फायदा तलाश करता है, उस को मैं क्या कह सकता हूँ , लेकिन जो महापुरुष हैं वे महान कामों के लिए ही सहायता करते हैं । उन्होंने रामराज्य की स्थापना के लिए बड़े गजब के काम किये और रामचन्द्र जी का इतना प्यार पाया कि उन्हें रामपंचायतन में स्थान मिला । यह वह तथ्य है कि जिसने अपने आपको रामचन्द्र जी के सुपुर्द कर दिया । सुपुर्द करके तो देखिये कि बदले में क्या मिलता है । इसी तरीके से नल-नील ने, रीछ-बानरों ने एक ऐसा पुल बना दिया जो पानी पर तैरता था । तो क्या नल-नील में इतनी ताकत थी ? नहीं, भगवान की ताकत थी । अच्छे उद्देश्यों के लिए , अच्छे कामों के लिये भगवान की हमेशा सहायता मिलती रही है और आगे भी मिलती रहेगी ।

कुन्ती के पाँचों पुत्रों में अर्जुन सहित पाँच पाण्डव थे । जब उनको वनवास हो गया तो अपनी जान बचाने के लिए वे मारे-मारे फिरते थे । नहीं साहब वे बड़े ताकतवर थे और उन्होंने कौरवों को मार गिराया और महाभारत फतह करके दिखा दी । तो फिर पहले क्यों नहीं दिखा दी थी ? पहले इसलिए नहीं दिखा सके थे कि पहले भगवान नहीं थे उनके साथ । भगवान किसके साथ होते हैं ? उसके साथ होते हैं जो बड़े कामों के लिए समर्पित हो जाते हैं । बड़े कामों के लिए अब हम आप से अलग हो रहे हैं । आप में से कई आदमी बड़े ताकतवर भी हैं, शक्तिशाली भी हैं । कौन कौन ताकतवर हैं ? ताकतवर मैं उन्हें मानता हूँ जो कि बुद्धिजीवी हैं, जो कलाकार हैं, संपन्न हैं और जो राजनेता हैं और किसे मानते हैं भावनाशीलों को मानते हैं । आप लोग तो भावनाशील हैं । भावनाशीलों ने ही दुनिया में ऐसे-ऐसे गजब के बड़े-बड़े काम किये हैं कि सारी दुनिया को हिला करके रख दिया है । भावनाशील किसी से भी कम नहीं हैं राजनेताओं से भी नहीं । तब क्या करना है ? अब हमको इससे आगे आने वाले समय में अकेला नहीं रहना है । पाँच बच्चे ऐसे पैदा करना है जो बड़े हों । वायु-पवन ने एक बच्चा पैदा किया था जिसका नाम था-हनुमान-बजरंगबली । ऊपर से एक शिला पर पटक दिया कि देखें यह है कुछ या नहीं । बच्चे ने पत्थर की शिला को तोड़कर फेंक दिया और वह बजरंगबली कहलाया । कर्ण जो था वह सूर्य से पैदा हुआ था । उसके पास कवच, कुंडल थे । इसी तरह से हमको अपने सहायकों की आवश्यकता पड़ी है । ऊपर जिन पाँच ताकतवरों का नाम गिनाया है, उनको ठीक करना और सही रास्ते पर लाना एक बड़ा काम है । जो अगले ही दिनों संपन्न होने जा रहा है ।

तो फिर आपको क्या करना पड़ेगा ? आपको कभी करना हो अध्यात्म के विज्ञान की तरीके से देखना हो, उसे अंधविश्वास न कहना हो तो कृपा करके आप भगवान का तरीका समझना, भगवान का कायदा समझना, भगवान के मन को समझना । भगवान का मन क्या है ? भगवान का मन यह कि वे माँगते हैं । जो कोई भी सामने आता है, हर एक से माँगते हैं । किसको दें किसको नहीं दें, इसकी उनकी एक ही परीक्षा है कि वह आदमी देने को तैयार है कि नहीं । यदि देने को तैयार है तो भगवान उसको देंगे । उन्होंने जिससे भी मिला पहले माँगा । शबरी के पास गये तो माँगते गये कि हम तो भूखे हैं ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

गोपियों के पास गये तो माँगते गये कि हम भूखे हैं । राजा कर्ण के पास गये तो उससे कहा कि हमको सोना चाहिए । राजा बलि के पास गये तो कहा-कि हमको जमीन चाहिए । जहाँ कहीं भी भगवान गये हैं उनमें से हर एक से माँगा है और जिस किसी ने दिया है वह खाली हाथ रहने नहीं पाया है । भगवान ने सबसे माँगा है । हमारे गुरु ने भी हमसे माँगा था और जब हमने दिया तो उसके बदले में क्या पाया ? उनने कहा-जो तुम्हारे पास है-वह दे । मैंने कहा-कहाँ दूँ , किसको दूँ । तो उनने कहा-भगवान की खेती में बो दे । अपने पास जो कुछ भी था हमने सब भगवान की खेती में बो दिया और जो कुछ भी बोया सौगुना होकर के पाया । हमारे पास शरीर है । शरीर हमने बोया और शरीर सौगुना होकर हमने पाया । आपने सुना नहीं है अभी एक पागल आया था और उसने सिर से पैर तक सैकड़ों छुरे चलाये, रिवाल्वर तान दिया, पर उसमें से कोई बाल तक बाँका नहीं हुआ । यह शक्तियाँ भगवान की दी हुई हैं । भगवान की दी हुई यह शक्तियाँ किसी को भी मिल सकती हैं, आपको भी ।

इस तरीके से हमने अपना शरीर दिया था और शरीर पाया । हमने अपनी बुद्धि दी । अपनी सारी बुद्धि का इस्तेमाल अपने लिए नहीं समाज के लिए किया । हमारी जो बुद्धि है वह इतनी पैनी और तीखी है कि आप यह जानकर अचंभे में रह जायेंगे । व्यास जी ने एकमहाभारत लिखा था और उसके लिए गणेश जी को स्टेनो टाइपिस्ट बनाकर ले गये थे । हमारे पास कोई स्टेनोटाइपिस्ट नहीं है । हमारी यह भुजायें ही स्टेनोटाइपिस्ट हैं । इसी से हमने इतना साहित्य लिखा है जो कि हमारे वजन से भी भारी है । यह हमारी बुद्धि है । हमारे पास धन है । हमारे पास तो नहीं था, पर पिताजी का दिया हुआ था, जिसे सारे का सारा समाज को दे दिया । गायत्री तपोभूमि को दे दिया । उससे जो कुछ बचा हुआ था उससे अपने गाँव में एक स्कूल बना दिया । उसके बाद भी कुछ धन बचता दिखाई दिया तो कुछ और इंतजाम करके गाँव में ही एक अस्पताल बना दिया । सारी की सारी चीजें ऐसी बना दीं जो समाज की हैं । आप पूछेंगे कि तो फिर आपका धन चला गया होगा और आप गरीबी में दिन काट रहेंगे ? नहीं, हम गरीबी में दिन नहीं काटते । आप देखते नहीं जहाँ हम रहते हैं कितने दामों की है । आपने शांतिकुंज देखा है लाखों रुपयों का बना हुआ है । गायत्री तपोभूमि लाखों रुपयों का बना हुआ है । ब्रह्मवर्चस् लाखों रुपयों का बना हुआ है । हमें लाखों से कम में गिनती ही नहीं आती । क्यों ? इसलिए नहीं आती कि जो हमारे पास था हमने भगवान को, समाज को दिया है । बोया है और बोने के बदले में काटा है ।

अध्यात्म विज्ञान है या अंधविश्वास- अगर आपका मन यह जानने को हो तो फिर आपको यह ध्यान रखना चाहिए कि अध्यात्म का सही तरीका क्या है । सही तरीका नहीं मालूम है, इसलिए आप बेकाबू होते हैं- परेशान हैं । आप केवल पूजापाठ करते हैं, कर्मकाण्ड करते हैं, परंतु कर्मकांड के साथ-साथ में जीवन को जैसा ऊँचा बनाना चाहिए वैसा ऊँचा बनाने के लिए आप का मन नहीं करता । आप कोई प्रयत्न नहीं करते । आप मन से कीजिये-प्रयत्न कीजिए, फिर देखिये कि भगवान आपकी सहायता करता है कि नहीं । भगवान झूठा है कि सच्चा है ? भगवान सच्चा है । और कैसा है ? कैसा देखा है आपने ? भगवान को हमने प्रतिच्छाया के रूप में और प्रतिध्वनि के रूप में देखा है । शीशे में आप जैसा अपना चेहरा देखते हैं भगवान हूबहू वैसा ही होता है । भगवान को हमने देखा कि बिलकुल हमारे जैसा है । हमारे जैसा उसका ईमान, हमारे जैसा उसका मन, हमारी जैसी उसकी बुद्धि, हमारे जैसे उसका प्यार- हमारे भगवान का बिलकुल हमारे जैसा है । गुंबज में जो आवाज लगाते हैं, ठीक वही आवाज प्रतिध्वनित होकर सुनाई देती है । इसी प्रकार जो आवाज हम लगाते हैं वही आवाज सुनाई देती है । हम कहते हैं-लीजिए और आप आवाज लगाते हैं कि लाइये भगवान जी आपके पास जो कुछ है हमारे सुपुर्द कीजिए । भगवान भी इसके बदले में आवाज लगाते हैं कि लाइये आपके पास क्या है, हमारे सुपुर्द कीजिए । आप कहते हैं कि हम तो देने वाले नहीं है, भगवान भी कहते हैं कि हम देने वाले नहीं हैं । दोनों में जद्दो जेहद होती है । राम और भरत में राजगद्दी को लेकर लड़ाई हो गयी थी । राम कहते थे कि हमारा भरत इस गद्दी पर बैठेगा और भरत कहते थे कि राजगद्दी पर तो हमारे भाई राम बैठेंगे । दोनों के बीच में जद्दो जेहद होती रही-लड़ाई होती रही । गेंद को दोनों ठोकरें मारते रहे और गेंद यहाँ पड़ी कभी वहाँ पड़ी । हमारे और हमारे भगवान के बीच प्यार की बातें हुई हैं और लड़ाई की बातें भी हुई हैं । लड़ाई इस बात पर हुई है कि भगवान ने बीसियों बार हमसे कहा है कि हमारे पास जो कुछ भी है तू ले ले । हमने कहा-जो कुछ भी हमारे पास है आप लेलें । हम देने की कोशिश करते हैं । भगवान से हमने यह नहीं कहा कि आप हमें यह दीजिए-वह दीजिये, हमारे पास यह कम है हम न तो भिखारी हैं और न दीन-दुर्बल , हम ब्राह्मण हैं और हम तपस्वी हैं । हम शक्तिशाली हैं और इसीलिए हमने भगवान से कहा कि आपको जो कुछ जरूरत है-माँगिये । भगवान ने कहा-क्यों नहीं जरूरत है ? समाज के लिए-देश के लिए क्यों नहीं जरूरत है । दुनिया में जो तहस-नहस मचा हुआ है, विष फैला हुआ है, उसके लिए तेरी हड्डियों की जरूरत है, तप की जरूरत है । हमने कहा-लीजिए इस दधीचि का सब कुछ आपके सामने है ।

भगवान को आपने कैसे देखा ? भगवान को हमने घोड़े-हाथी पर सवार नहीं देखा । हमने भगवान को पायलट की तरीके से देखा और अपने बॉडीगार्ड की तरीके से देखा । भगवान हमारे बॉडीगार्ड की तरीके से चलता है और यह कहता है कि आप जो कहेंगे हम वही करेंगे । आप आगे-आगे चलिए हम पीछे से सँभाल लेंगे । हमारा पायलट आगे-आगे चलता है और कहता है कि देखिये रास्ता साफ है । मैं रास्ता साफ करता हूँ आपके लिए-आप आगे बढ़िये । भगवान इस तरह का है । ऐसा भगवान आप चाहते हों तो आप वही रास्ता अख्तियार करना जो हमने अख्तियार किया है । हमारा जीवन एक वैज्ञानिक अध्यात्म के साथ मिला हुआ है, इसलिए उसका परिणाम भी हमने वैज्ञानिक अध्यात्म जैसा ही पाया है । आपसे भी प्रार्थना है कि आप भी ऐसे ही करना । आप भी वही पायेंगे जो कि हमने पाया है ।

॥ ॐ शांति ॥ 卐

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परम पूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी-

वसंत पर्व १९८६ पर दिया गया विशिष्ट उद्बोधन

ॐभूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो, भाइयो ! वसंत पर्व पर हमें हमेशा नये संदेश मिलते रहे हैं । जिस सत्ता के साथ हमारा बड़ा घनिष्ट संबंध है और जिसकी आज्ञा से हमारा सारा जीवन व्यतीत हुआ है, जिसको हमने अपने आपे का समर्पण किया है, उस समर्पण वाली शक्ति ने हमसे यह वायदा किया था कि वसंत पंचमी के समय पर हर साल का एक कार्यक्रम बना कर भेजा करेंगे । वह सुबह हमको मिल गया है । आप में से कई आदमी वसंत पंचमी पर यहाँ आये होंगे, पर वह भावावेश का समय था । दो वर्ष बाद हम आपको मिले हैं तो भावावेश की ही बातें हमने कहीं और आपको क्या करना है और हमें क्या करना है, इसके संबंध में एक छपा हुआ इश्तहार बाँट दिया । मालूम नहीं आपने ध्यान दिया अथवा नहीं । गुरुजी के साक्षात्कार हो गये-दर्शन कर लिये-बहुत हो गया ।

पिछले दिनों किसी ने यह अफवाह फैला दी थी कि-गुरुजी बीमार पड़े हैं । उन लोगों को यह बताने के लिए कि हमारे शरीर में कोई खराबी नहीं है और न कभी कोई खराबी होगी हमारे शरीर में । अगर कभी हमारी मृत्यु हुई तो आप यह समझना कि गुरुजी का ट्रांसफर हुआ है । किसी महत्वपूर्ण काम के लिए उनको भेज दिया गया है और जो काम अभी हम स्थूल शरीर से करते हैं उसकी अपेक्षा सौगुना अधिक काम कर रहे होंगे । क्योंकि शरीर का बंधन ही ऐसा है कि हमको बहुत दूर तक चलने नहीं देता । इसलिए जो काम अभी हम इस शरीर से नहीं कर सकते, उसकी अगर आवश्यकता पड़ी-गुरुदेव को आवश्यकता पड़ी तो स्थूल शरीर से सूक्ष्म शरीर में बदल जाने के लिए भले से हम कुछ ऐसा करें, लेकिन फिलहाल अभी ऐसी कुछ योजना नहीं है । न हम बीमार हैं और न हमें कोई कष्ट है और न कोई बात है । हम ठीक तरीके से अपनी यह साधना-उपासना कर रहे हैं । हमें सूक्ष्मीकरण के लिए कहा गया था, उस साधना में हम मुस्तैदी से लगे हुए हैं । इस बारे में इतना ही कहना काफी है कि हमारे बारे में आपको कोई चिंता करने की बात नहीं है । चिंता तो आपकी हमको करनी है । आप क्यों करेंगे ? बच्चे माँ-बाप की चिंता क्यों नहीं करेंगे कि पिता जी का यह काम कैसे होगा ? वह काम कैसे होगा ? पिताजी का कर्ज कैसे चुकेगा ? बच्चों को क्या पता ? पिता को ही यह ध्यान रखना पड़ता है कि अगर हम नहीं रहे या आगे चलकर बच्चे बड़े होंगे तो उनको खिलाने-पिलाने का क्या इंतजाम करना पड़ेगा । इनके रहने के लिए मकान का, इनके ब्याह-शादी का क्या इंतजाम करना पड़ेगा ? इनके काम धंधे का क्या इंतजाम करना पड़ेगा । यह चिंता करना बड़ों का काम है । हम बड़े हैं । आपसे उम्र में भी बड़े हैं, विद्या में भी बड़े हैं, ज्ञान में भी बड़े हैं, तप में भी बड़े हैं, भावनाओं में भी बड़े हैं । हम बड़े हैं तो यह हमारा काम है कि आप सब लोगों का ध्यान रखें ।

विगतवर्ष जब वसंत पंचमी का उत्सव हुआ था, तब हमने बहुत सी बातें कहीं थी, पर उनमें से विशेष रूप से ध्यान देने लायक दो बातें खास थीं । एक बात यह है कि-यह युग-संधि का समय है, जिसमें आभी पंदरह वर्ष बाकी हैं सन् २००० आने में । यह खराब समय अभी खतम नहीं हुआ है । पहले सभी समझते थे कि यह खतम हो गया है, पर अभी न तो-प्रकृति प्रकोप खत्म हुए हैं न हारी-बीमारी । हारी-बीमारी के ऐसे-ऐसे चक्कर हैं कि एक दिन में एक-एक गाँव में २२-२३ बच्चों की मृत्यु हो जाती है । कभी-कभी चौपायों में ऐसी बीमारी फैलती हैं कि वे सारे के सारे ढेर हो जाते हैं । कभी-कभी भूकंप आ जाते हैं । अभी-अभी हिन्दुस्तान में इस तरीके से तूफान आये कि लाखों आदमियों को तबाह करके रख दिया । इस तरीके से चीजें पैदा हो जाती हैं और न जाने कहाँ से आ जाती हैं । नेचर-प्रकृति हमसे नाराज हो गयी है । इंसानों का चाल-चलन देखकर प्रकृति ने नाराजगी से अपना बदला चुकाने का निश्चय किया है और वह बराबर बदला चुका रही है और हैरानी पैदाकर रही है ।

एक बात हमने यह कही और आप सबको सावधान किया था कि आप लोग सावधान रहना । तो क्यों साहब ! हमारे सावधान रहने से क्या हो जायगा । मान लीजिए कोई ऐसी बीमरी आ जाय, मुसीबत आ जाय, बाढ़ आ जाय, कोई ऐसा उपद्रव खड़ा हो जाय तो हम क्या करेंगे ? इसीलिए हमने कहा था कि अभी हम आपसे अलग नहीं हुए हैं । अभी हम आप से ज्यों के त्यों जुड़े हुए हैं । हमारी शक्ति के दो हिस्से जरूर हो गये हैं । अभी तक जो शक्ति सीमित थी और गायत्री परिवार की शाखाओं में ही भरती जाती थी, संगठन करने या आयोजन करने या सम्मेलन बुलाने में-शिविर लगाने में खर्च हो जाती थी, अब दो साल की सूक्ष्मीकृत साधना में अपनी शक्ति को इस हिसाब से विकसित किया है कि पचास परसेंट शक्ति से हमारे पास जो अभी थोड़े से २४ लाख व्यक्ति हैं, उनकी हम सुरक्षा कर लेंगे । पचास फीसदी शक्ति हम सुरक्षा में लगायेंगे । आपकी हारी-बीमारी में, घाटे में, दुख में, मुसीबत में, हैरानी में हमारी आधी शक्ति बराबर काम करती रहेगी । इसमें भी आप कमी नहीं पायेंगे, चाहे आप कैसी ही मुसीबत में क्यों न फँसे हो और लोगों से आप हर हालत में नफे में रहेंगे-यह हमारा वायदा है और यह हमारा आप से कहना है । एक और बात हमने यह कही थी कि अब आपको बार-बार हरिद्वार आने और बार-बार हमसे मिलने की आवश्यकता नहीं है । इसका बहुत सीधा सा सरल रास्ता हमने निकाल लिया है । वह यह है कि यदि हमसे मिलने की आवश्यकता हो तो आप दस बार लंबे-

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

लंबे प्राणायाम करना और प्राणायाम करने के बाद में सिर के ऊपर दाहिना हाथ फिराना । हाथ फिराने के बाद में देखना कि जो कुछ भी आपके मन में विचार थे, वह सबके सब बाहर निकल गये और हमारे विचारों का भीतर आना शुरू हो गया । उस वक्त जो विचार उठें उसको यह मान लेना कि यह गुरुजी की बात है-विचार है । यह रविवार के दिन करना चाहिए । हो सके तो नित्य करना चाहिए ।

एक बात हमने यह कही थी कि आपके देखभाल की, आपके सुख-शांति की, आपको आगे बढ़ाने की -ऊँचा उठाने की, आपके दु:ख-दर्दों को कम करने की जिम्मेदारी हमारी है । आपको कोई मुसीबत हो-हैरानी की बात हो तो माता जी से कह देना अथवा जो कोई भी हों यहाँ । हमने सात सदस्यों की एक कमेटी बनायी है-ट्रस्टी बनाये हैं । ये ऐसे हैं जो अपने घर से ही अपना खर्च चलाते हैं, ऊँची योग्यता के हैं । यहाँ के कामों को बड़ी ईमानदारी और जिम्मेदारी से संभालते हैं और हमको यकीन हो गया है कि ये आदमी हमेशा अपनी जिम्मेदारियों को सँभालते रहेंगे । उनके सुपुर्द हमने यह कर दिया है कि जो कोई भी यहाँ आया करें, इनके हाथों लिख कर दे दिया करे वह हम तक पहुँच जायेगा और हम आपका काम कर देंगे । यह हम आप से वायदा करते हैं और आपको बचन देते हैं । हमने आपके लिए अपने व्यक्ति-अपने नुमाइंदे नियुक्त किये हैं जो आपसे संबंधित बातों को ठीक से समझा सकें । जो बातें आपसे, आपके बाल-बच्चों से संबंधित हैं, आपके पैसे से संबंधित है, आपके शरीर से, आपके सुख और दु:ख से संबंधित हैं, उसके बारे में हमारा जो वायदा है जो दायित्व है, उसके बारे में ये आदमी आपको ठीक से समझा देंगे । अपने इन नुमाइंदों को हम आपकी सेवा में भेज रहे हैं ।

एक बहुत बड़ा काम हमने किया है-यज्ञीय परंपरा का पुनर्जीवन । वैसे तो सारी जिंदगी भर हमने बड़े ही काम किये हैं । हमारा जीवन बड़ा है । हमारे ऊपर बहुत बड़ी जिम्मेदारियाँ डाली गयी हैं । दिमाग तो हमारा बड़ा है ही , पर हमारा कलेजा बहुत बड़ा है । इतना कलेजा है कि हाथी का या तो होगा या ह्वेल का । उससे कम भारी कलेजा हमारा नहीं है । हमें वजनदार काम सौंपे गये हैं । हाथी के ऊपर जब वजन रखा जाता है तब भारी वजन रखा जाता है । शेर को छलांग मारनी पड़ती है तो बड़ी छलांग मारता है । इसीलिए हमारे कंधों पर बड़े काम डाले गये हैं । यह जो युग संधि के दिन हैं, इसमें अनेकों काम पूरे करने के लिए हमें सौंपे गये हैं, और उन सौंपे गये कामों को क्या हम अकेले पूरा कर लेंगे ?-यह कहना जरा मुश्किल है । क्योंकि जब रामचन्द्र जी ने रावण को मारा था, तब अकेले उन्होंने मारा हो सो बात कहाँ थीं । उनके साथ में नल-नील थे, जामवंत थे, हनुमान थे, अंगद थे और कितने ही रीछ-वानर थे । सबने मिलकर मारा था । इसी तरीके से सबको मिलाकर हमको एक ऐसा अनुष्ठान करना है जैसा कि पहले-जिस दिन से ब्रह्मा जी ने धरती बनायी थी, उस वक्त से न कभी हुआ था और न कभी होगा ।

एक संकल्प हमारा यह है कि एक लाख यज्ञ करें । एक लाख गायत्री यज्ञ कहाँ होंगे ? हमारी इच्छा है कि एक लाख अलग-अलग स्थानों पर करें ताकि हर गाँव का वातावरण, हर गाँव की सुरक्षा, हर गाँव में हमारा और हमारे गुरुदेव का प्राण इस यज्ञ के माध्यम से जा पहुँचे । यज्ञ एक माध्यम है । जिस तरीके से लाउडस्पीकर हमारी आवाज को पकड़ कर उसे बाहर फैलाने का एक माध्यम है, इसी तरीके से यज्ञ एक माध्यम है जो कि हमारी आवाज को पकड़ रहा है-हमारे गुरुदेव की आवाज को पकड़ रहा है, गायत्री माता की आवाज को पकड़ रहा है । तो गुरुजी आज कल तो पैसे की तंगी है, सूखा पड़ गया है-अकाल पड़ गया है-तूफान आ गया है-कैसे होगा यज्ञ ? बेटे, हमने उस हिसाब से इन यज्ञों को रखा ही नहीं है । जो यज्ञ रखे हैं वे ऐसे हैं कि ज्यादा से ज्यादा स्थानों में हों और उनमें गरीब से गरीब लोग भी भाग लें । यह यज्ञ भीलों में भी हों, अछूतों से भी हों-सब जगह हो जायँ । इस यज्ञ में यह बात रखी है कि गुड़-जो सब घरों में होता है, उस गुड़ में जरा सा घी मिला दीजिए और उनकी बेर जैसी छोटी-छोटी गोलियाँ बना लीजिए। यहाँ से हम अभिमंत्रित की हुई जो हवन सामिग्री भेजेंगे, उसे उन सबके ऊपर-जितनी भी गुड़ की गोलियाँ बनी हुई हैं-उनके ऊपर रख दीजिए और उनसे हवन कर लीजिए । गुरु जी । वेदियाँ कौन बनायेगा ? हमको तो बनाना नहीं आता । जमीन पर चौरस वेदियाँ बनेंगी और उन्हीं पर हवन होगा । यज्ञशाला का सारा सामान हम अपनी जीप गाड़ियों में रखकर भेंजेगे, आपको कुछ नहीं करना पड़ेगा । गुड़ और घी मिलाकर के मुश्किल से एक रुपये लागत आयेगी और उसी से यज्ञ पूरा हो जायेगा । इसमें गरीब आदमी भी एक रुपया खर्च कर सकता है । इसके लिए आप यह भी कर सकते हैं कि पाँच कुण्डीय, नौ कुण्डीय, ५१ कुण्डीय यज्ञ के स्थान पर एक कुण्डीय यज्ञ से काम चला सकते हैं । इसमें यह भी हो सकता है कि आप पाँच कन्याओं को पीले कपड़े-पहना कर भेज दीजिए । वे पाँच कन्यायें आपके नुमाइन्दे के रूप में, पाँच देवियों के रूप में, गायत्री के पाँच मुख के रूप में बैठ जायँगी और वही हवन कर लेंगी । यह छोटा सा हवन है । इस में आपको कोई सामान इकट्ठा नहीं करना है, केवल गुड़ की एक डली और थोड़ा सा घी लायें जिससे बेर के बराबर गोलियाँ बन जायेंगी और उसी से हवन हो जायगा । इसमें एक रुपये की लागत आयेगी । इस तरीके से हम एक लाख स्थानों पर यज्ञ करेंगे और यह यज्ञ आपको कराने हैं ।

इसके लिए आपको पाँच नयी जगह बनानी है । आपको हम पाँच-पाँच गाँवों का सरपंच बना रहे हैं-पाँच पाँच गाँव सुपुर्द कर रहे हैं । आप एक ही जगह पर नहीं रहेंगे, वरन् पाँच जगहों पर काम करेंगे । इस मिशन को इस स्थान पर पाँच जगहों पर फैलाने की कोशिश करेंगे । आपके समीपवर्ती जो गाँव हैं, नगर हैं, उनमें एक-एक मिशन की शाखा स्थापित कीजिए । शाखा स्थापित करने में हमारे दो काम तो पहले से ही चल रहे थे-एक यह कि एक माला गायत्री का जप सबको करना चाहिए । गायत्री चालीसा का पाठ और एक माला का गायत्री जप-यह दोनों काम तो पहले से ही हमने आपके सुपुर्द कर दिये थे । अब इस नये वसंत पंचमी से दो काम और सुपुर्द करते हैं । पहला यह कि आपको नये स्थानों पर पाँच यज्ञ करने हैं । हमको नये स्थानों की जरूरत है । इस बार हमने ५१

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

कुण्डीय या सौ कुण्डीय यज्ञों को कराने की स्पष्ट मनाही कर दी है और कहा है कि अभी मात्र एक कुण्ड का यज्ञ होगा । उसी से हमारा संतोष होगा । सौ कुण्डीय यज्ञों से नहीं बड़े यज्ञों की आवश्यकता अभी नहीं बाद में होगी । तब हम बता देंगे । इससे न उद्देश्य की पूर्ति होगी, न लक्ष्य पूरा होगा और न एक लाख की संख्या पूरी होगी । इसलिए जो भी आप लोग हमारी आवाज को सुन रहे हैं, उन सबका काम व उद्देश्य है कि वे सभी अपने-अपने समीपवर्ती गाँवों में जाकर के यह देखें कि एक-एक कुण्ड का हवन कहाँ-कहाँ होना संभव है । यह बात नंबर एक हो गयी ।

बात नंबर दो यह है कि आपके पास एक प्रचार मंडली होनी चाहिए । प्रचार मंडली का अर्थ यह है कि अब हमने इसके लिए संगीत को माध्यम बनाया है । नारद जी के पास भी संगीत था, शंकर जी के पास भी संगीत था । सरस्वती के पास संगीत था, विष्णु के पास संगीत था । सबने संगीत के माध्यम से प्रचार किया था । हमको अब जो भी व्याख्यान करना है-संगीत के माध्यम से करेंगे-व्याख्यानों से नहीं । व्याख्यानों में वक्ता का प्राण काम नहीं करता, लेकिन जो संगीत हमारे बनाये हुए हैं-हमारे मिशन से बनाये हुए हैं और देव कन्याओं ने गाये हैं, उन्हीं संगीतों में यह प्रभाव होगा कि लोगों को हिला करके रख देंगे और उनके हृदय के भीतरी हिस्सों को छुयेंगे । यह संगीत यहीं से जायेगा और व्याख्यान भी हमारा यहीं से जायेगा । एक-एक यज्ञ में हम अपना वीडियो बनाकर भेजेंगे । बीडियो उसे कहते हैं जो आदमी की तरीके से आवाज भी सुनाता है और शकल भी दिखाता है । वह हमारी और माता जी की शकल भी दिखायेगा और आवाज भी सुनायेगा और देवकन्याओं का गीत भी सुनायेगा । कुँवारी कन्याओं की वाणी में ओजस्विता भी ज्यादा होती है और उसमें प्रभाव भी ज्यादा होता है । उनका भी टैप भेजेंगे और अपना तथा माता जी का भी टैप भेजेंगे-जहाँ-कहीं भी आप एक कुण्ड का हवन करेंगे । सामान्यतया हमने यह आशा की है कि आप पाँच कुण्ड का हवन करेंगे पाँच नये स्थानों पर । हर एक जिम्मेदार आदमी को जिसको हमने शक्ति पीठें कहा है -समर्थ शाखा कहा है, उपशाखा और स्वाध्याय मंडल कहा है उनमें से हर एक आदमी जो हमारा प्रज्ञा पुत्र है-जो हमसे घनिष्ट है, हम चाहते हैं कि वह सौ नये गाँवों में हमको बिठा दे । हजारों गाँव ऐसे हैं जो हमने देखे नहीं । सात लाख गाँव हैं हिन्दुस्तान के जो अभी हमने देखे नहीं । शहरों में हम गये हैं, बड़े कस्बों में गये हैं, पर गाँवों में तो गये ही नहीं । इस बार गाँवों में जाने का हमारा मन है । यह प्रबंध आप कीजिये । अभी हम जो अपने आदमी आपके पास भेज रहे हैं, सिर्फ इस काम के लिए कि आप सब मिलकर के इस तरह का संकल्प लें और सब मिलजुलकर काम करें । एक लाख कुण्ड का-एक लाख वेदियों का हवन हमें करना है जिसमें हमारा भी व्याख्यान होगा, माता जी का भी व्याख्यान होगा और हमारे गुरु का संरक्षण भी होगा और लागत क्या है-एक रुपया । इस तरह का व्यापक स्तर पर आयोजन करने का हमारा मन है । इसके लिए आप जी जान से कोशिश करें ।

यह वर्ष समयदान का वर्ष है । हमने आप लोगों से समयदान माँगा है । लोगों ने कहा था कि हम गुरु जी की हीरक जयंती मनायेंगे । तो आप क्या करेंगे हीरक जयंती में ? हवन करेंगे, जुलूस निकालेंगे ? नहीं-जो हम कहें सो कीजिए और हमारा कहना यह है कि एक गाँव पीछे एक यज्ञ हो एक कुण्ड का या पाँच कुण्ड हो और उसमें पाँच कन्यायें बैठें और उसी में हमारा वीडियो दिखाया जाय । इस तरह एक काम तो हमारा यही है-एक लाख यज्ञों को पूरा करना । हमारा यह संकल्प अधूरा नहीं रह जाय । बाकी संकल्प तो हमारे अधूरे रहे नहीं हैं । चारों वेदों के भाष्य का संकल्प अधूरा नहीं रहा, हजार कुण्डीय यज्ञ का अधूरा नहीं रहा-तब नहीं रहा जब हम वहाँ थे, पर इस समय हम नहीं हैं । इस समय हमारी जगह पर हैं आप, तब पाँच यज्ञों की जिम्मेदारी भी आप सँभालिए और उन यज्ञों को अपने समीपवर्ती गाँवों में कीजिये । वहाँ शाखा स्थापित कीजिए ताकि हमारी शाखायें जितनी भी हों-पाँच गुनी अधिक बढ़ जायँ । अभी २४०० शाखायें हैं । उसमें पाँच का गुणा कर दीजिए तो एक लाख से अधिक हो जायँगी । कम से कम एक लाख स्थानों पर इस तरह गायत्री परिवार का प्रचार करने के लिए-शाखायें स्थापित करने के लिए हमारी इच्छा है और इसलिए आप हमारे इस काम में मदद कीजिए ।

नंबर दो-इसके लिए प्रचारक मंडालियों की आवश्यकता पड़ेगी, ताकि आप प्रत्येक घरों में जा करके हमारा संदेश सुना सकें । इसके लिए आपको अपना तथा प्रत्येक प्रज्ञा पुत्र का-परिवार के हर सदस्यों का जन्म दिन मनाना पड़ेगा । जन्म दिन मनाने में केवल एक कुण्डीय हवन कर लेने भर से काम नहीं चलेगा, वरन् कुछ धूमधड़ाका भी होना चाहिए । इसके लिए संगीत प्रचारकों की जरूरत पड़ेगी । संगीत प्रचारकों के लिए आपको यह करना है कि यहाँ शांतिकुंज में जो युगशिल्पी सत्र चलते हैं उसमें एक आदमी आप भेज दीजिए जो यहाँ से प्रशिक्षण लेकर जाने के बाद में वहाँ के लोगों को प्रवचन करना, हवन करना सिखा देगा, संगीत सिखा देगा । पहले भी युगशिल्पी सत्र में आ चुके हैं लोग, पर तब संगीत पर इतना जोर नहीं दिया गया था । अब नये शिक्षण में हमारा ध्यान संगीत पर है । मध्यकालीन जितने भी संत हुए हैं, उनने संगीत के माध्यम से अपना प्रचार किया है । कबीर ने अपना प्रचार संगीत के माध्यम से किया था । मीराबाई , चैतन्य महाप्रभु आदि ने संगीत के प्रचार से अपना काम किया था । मध्यकालीन सभी संतों ने वाणी के व्याख्यान द्वारा नहीं, बल्कि संगीत के द्वारा प्रचार किया था । तो आपके यहाँ से भी एक मंडली ऐसी होनी चाहिए जो यहाँ से संगीत सीखकर के जाए । इसका नाम हमने वक्ता विश्वविद्यालय रखा है । संगीत और यज्ञ कराना हम सिखा देंगे । इसके लिए आप लोग अपने-अपने यहाँ से एक-एक आदमी ऐसा भेजिये जो जीवंत हो जिसमें जान हो जिसको हम आपके क्षेत्र का अध्यापक बनाकर के भेज सकें । मंडली आपको तैयार करनी है प्रचार आपको करना है, मिशन के विचार आपको फैलाने हैं । इसके लिए गाँव जन्मदिन के समय, तथा त्यौहारों के अवसर पर मीटिंग बुला लीजिए -काम के लोगों को बुला लीजिए । अबकी बार जो भी यज्ञ होंगे, उसमें हमने यह इन्तजाम किया है कि ढाई सौ से ज्यादा आदमी न आयें । क्योंकि हम जो

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

वीडियो भेजेंगे उसमें दो सौ से ढाई सौ आदमी ही आ सकेंगे ।

एक बात और जो करनी है वह यह कि अब हमारा विश्व विद्यालय चलने वाला है । इसमें हम एक लाख व्यक्तियों को पढ़ाने वाले हैं । लेकिन हमारे इस मिशन के लिए हर एक आदमी को शांतिकुंज आना तो मुश्किल है । अत: वह एक नया प्रशिक्षित अध्यापक जो यहाँ से जायेगा वही अपने स्थानीय लोगों को बुलाकर के वही शिक्षण देगा जो हम यहाँ युगशिल्पी सत्र में बुलाकर देते हैं । इस तरीके से देशभर में जितनी भी शाखायें हैं यदि उनमें से दस-दस आदमी भी आजाएँ तो एक लाख आदमी हो जाते हैं । इस तरह के अब तक जितने भी विश्वविद्यालय चले हैं उनमें से किसी में भी एक लाख विद्यार्थी नहीं थे । न किसी आंदोलन में एक लाख व्यक्ति शामिल हुए । घुमाफिरा कर वही चले जाते थे, इसलिए उनके नाम और संख्यायें बढ़ जाती थीं, लेकिन लाख व्यक्ति कभी नहीं रहे । हमारा मन है कि एक लाख व्यक्तियों को हम पढ़ाकर जायँ जिससे वे यों कहें कि गुरुजी ने हमको पढ़ाया था । गुरुजी के हाथ का सर्टीफिकेट हमारे पास है । जो भी आदमी यहाँ युगशिल्पी सत्र में आयेंगे उनको हम सर्टीफिकेट देंगे कि तुमको अध्यापक नियुक्त किया है । इस तरह से एक लाख अध्यापक नियुक्त करने का हमारा संकल्प है । आप लोग इन दो कामों में हमारी मदद करेंगे । अब शांतिकुंज से हम अपने आदमी इसलिए भेज रहे हैं कि जो भी जीवंत आदमी हैं, प्राणवान आदमी हैं वे इस बात का संकल्प लें कि हीरक जयंती वर्ष में कि इस कार्य को हम करेंगे ही । जो भी काम आप करें, उसका पानी लेकर संकल्प कर दीजिये, वह संकल्प हमारे पास आ जायेगा और तब समाधान होगा ।

दो-तीन काम और हैं जो आपको करने हैं । हरीतिमा संवर्धन के लिए कुछ पेड़ भी लगाये जाने चाहिए । जड़ी-बूटी औषधालय हमारे यहाँ है, हम चाहते हैं कि वह भी आपके यहाँ हो जाय । अभी जो हवन सामग्री बाहर से माँगाते हैं, उसके पेड़-पौधे आप अपने खेतों में खुद पैदा कर लें और उसी को कूट-पीस कर प्रयुक्त कर लिया करें । इस तरह के कई काम हैं जो आप कर सकते हैं । आपके पास कमरे हों तो छोटे बच्चों के स्कूल चला सकते हैं । जगह न हो तो आप किराये पर ले लीजिए । किसी से एक कमरा माँग लीजिए और कह दीजिए कि जितने समय तक हमारे काम आयेगा-उतने समय तक मिशन का है, शेष सारे समय आपका है चाहे जैसा उपयोग कीजिए । या फिर कोई धर्मशाला में एक कमरा ले लीजिए । कोई मंदिर टूटा-फूटा हो-उसकी मरम्मत करा लीजिए तो उसका जीर्णोद्धार भी हो जायगा । अब तक २४०० शक्तिपीठें बनाई हैं जिनमें से किसी-किसी में लाखों रुपये लगे हैं । वे हैं तो सही, पर उन्हें अपने स्थान पर रहने दीजिए । अब कुछ ऐसी नयी शक्तिपीठें भी हो सकती हैं जो छप्पर की छायी हुई हों, जिन्हें हर साल नये सिरे से बदल दिया जाय । कुछ ऐसी भी शक्तिपीठें हो सकती हैं जो खपरैल से छायी गयी हों जिन्हें बरसात में ठीक कर लें और उसी से काम चला लिया करें । जब जरूरत हो तो उसी में बच्चों के संस्कार कर लें जन्म दिन मना लें, उसी में अपनी पाठशाला चला लें । या कहीं किसी का एक कमरा माँगलें, इसके लिए हम आपको यकीन दिलाते हैं कि अच्छे उद्देश्यों के लिए वह आपको मिल जायगा ।

इन सब कार्यों के लिए हम अपने कार्यकर्ता भेज रहे हैं कि आप सब वहाँ इकट्ठा होकर यह विचार करें कि गुरुजी ने नये वर्ष के लिए जो संकल्प लिए हैं, उस संकल्प के कई उद्देश्य हैं । उसमें से एक तो यह है कि इन दिनों का जो वातावरण है उसमें प्रलय होने जैसी दुर्घटनायें होना संभव है । दूसरा यह है कि इन बीस सालों में आप लोग किसी मुसीबत में फँस सकते हैं । आपको तो दिखाई नहीं पड़ता, परंतु मुझे दिखाई पड़ता है कि आप किसी मुकदमें में पड़ सकते हैं या कोई और बात हो सकती है । कोई अकाल की चपेट में आ सकते हैं या कोई और कठिनाई उठा सकते हैं जिन्हें देखना हमारा काम है और इसीलिए हम यह आयोजन कर रहे हैं । यह आयोजन हम इसलिए भी कर रहे हैं कि सारे संसार में जो दुर्घटनायें घट रही हैं-चाहे वह ईरान-ईराक का युद्ध हो, फिलिस्तीन और इस्रायल का युद्ध हो, या अमेरिका की नक्षत्र युद्ध योजना हो या परमाणु युद्ध की विभीषिका । हमने पचास फीसदी अपनी शक्ति ऐसे कामों के लिए सुरक्षित रखी है कि जिससे इस वातावरण को शुद्ध करने में और जो आदमी इस तरह की बातें करने के लिए तुले हुए बैठे हैं-आमादा बैठे हैं और जिन्होंने अरबों-खरबों डालर खर्च करके वह साधन बनाये हैं, उनकी भी हम रोकथाम करेंगे । अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए, संसार में शांति स्थापित करने के लिए और आप लोगों की व्यक्तिगत समस्याओं के लिए-इन तीनों उद्देश्यों के लिए यह कार्यक्रम हमने बनाये हैं । हम आशा करते हैं कि आप सब मिलकर संकल्प लेंगे कि यह काम गुरुजी का तो हम कर ही डालेंगे ।

मित्रो ! हम चाहते हैं कि जो वजनदार काम हमारे गुरुजी ने हमारे जिम्मे सौंपा है, उस वजनदार काम को पूरा करने में हम समर्थ हो सकें । समर्थ बनने के लिए "बैकिंग शक्ति" भी होनी चाहिए और वह "बैकिंग शक्ति " आप होंगे । हमारी पीठ पीछे वाली शक्ति आप होंगे । इसलिए इस वर्ष के सौंपे हुए जो काम हैं, उनको आप किस सीमा तक पूरा कर सकेंगे और किस सीमा तक पूरा नहीं कर सकेंगें, यह ध्यान रखना है । हमने हर वर्ष वसंत पंचमी पर संकल्प लिए हैं । अबकी बार हम आपसे संकल्प कराने के लिए लेते हैं कि आप क्या करेंगे और अगले वर्ष आपका कार्यक्रम क्या होगा । बस, यही हमारा उद्देश्य था । इसी के लिए हमने आपको बुलाया था । अब जो यज्ञ होंगे उनमें आप लोगों को एकत्रित होकर के सामूहिक रूप से संकल्प लेने की उम्मीद और अपेक्षा कर रहे हैं । बस यही कहना था आप लोगों से । 卐

ॐ शांति: ।

> ***दुर्भाग्य कभी आप के पीछे हाथ धोकर पड़ जाए , ऐसा लगने लगे कि कोई उपाय प्रगति पथ पर स्थिर रखने में समर्थ नहीं है, चारों ओर असफलता ही असफलता, अंधकार ही अंधकार प्रतीत हो रहा है, तब आप महापुरुषों के ग्रंथ पढ़ें, जीवन ज्योति मिलेगी ।***
>
> ***-पं. श्रीराम शर्मा आचार्य***

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परम पूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

६ अप्रेल १९७६ को शांतिकुंज परिसर में दिया गया उद्‌बोधन

गायत्री मंत्र हमारे साथ साथ

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्

साधना स्वर्ण जयंती वर्ष में हम आपको गायत्री उपासना के साथ साथ विशेष रूप से जो शिक्षण देते हैं वह ध्यान का शिक्षण है । उपासनायें दो हैं नाम और रूप की उपासनायें । नाम और रूप के बिना उपासना हो नहीं सकती यह दो यूनिवर्सल उपासनायें हैं । किसी भी मजहब में चले जाइये व्यक्ति नाम जरूर ले रहा होगा मुसलमान तसबीह पर नाम ले रहा होगा । ईसाई पादरियों को आप माला जपते हुए देखेंगे । आर्य समाजी प्रकाश का ध्यान कर रहे होंगे । अन्य अमुक तरह का ध्यान कर रहे होंगे । नादयोग वाले कान में आने वाली आवाजों का ध्यान कर रहे होंगे । बहरहाल ध्यान जरूर करना पड़ता है । ध्यान के बिना गति किसी की नहीं है । इसीलिए हमने कहा है कि जप के साथ साथ आप ध्यान किया कीजिए । स्थूल ध्यान मूर्ति पूजा के माध्यम से होता है तस्वीरों के माध्यम से होता है, क्योंकि मनुष्य का मानसिक विकास इतना नहीं हो पाया है कि वह बिना किसी फोटोग्राफ के, बिना किसी मूर्ति के किसी चीज का ध्यान कर सके लेकिन जब वह विषय पक्का हो जाता है तब फिर मूर्ति की कोई खास जरूरत नहीं रह जाती । तब हम अपने भीतर बैठे हुए भगवान का साक्षात्कार कर सकते हैं । उसका ध्यान कर सकते हैं ।

ध्यान का क्या मतलब है ? ध्यान का मतलब है कि हमारे जीवन के दो पक्ष हैं । एक पक्ष वह है जो बाहर फैला हुआ पड़ा है । हमारे कानों के सूराख बाहर को हैं और हमारी आँखों के सूराख बाहर को हैं । हम बाहर की चीजों को देख सकते हैं और बाहर कौन बैठा हुआ है कौन जा रहा है, यह भी बता सकते हैं । बाहर की चीजें हमको दिखाई पड़ती हैं, किंतु भीतर की चीजें हमको बिलकुल दिखाई नहीं पड़तीं । तो क्या भीतर कोई चीज नहीं है ? बेटे असल में जो कुछ भी चीज है वह भीतर ही है बाहर नहीं है बाहर केवल दिखाई पड़ती है, पर असल में हर चीज भीतर है जिंदगी कहाँ है ? जिंदगी बाहर नहीं हमारे भीतर है और बुद्धि जिसकी वजह से हम रुपया कमाते हैं, सम्मान कमाते हैं, वह बाहर नहीं हमारे भीतर हैं जिसकी वजह से हम हर चीज कमा सकते हैं । भीतर हमें दिखाई नहीं पड़ता और हम कहते हैं कि हे भगवान, यह आपने क्या मखौल कर दिया मनुष्य के साथ कि बाहर की चीजों की जानकारी दे दी, पर भीतर की चीजों की नहीं दी । भीतर जो चीजें संपत्तियाँ, विभूतियाँ, देवत्व और महानता दबी हुई पड़ी हैं वह हमको दिखाई नहीं पड़तीं । हमको अपना बेटा दिखाई पड़ता है, संपत्ति दिखाई पड़ती है, यह और वह दिखाई पड़ता है, और न जाने क्या क्या दिखाई पड़ता हैं, पर हमको अपना भविष्य नहीं दिखाई पड़ता, आत्मा दिखाई नहीं पड़ती, परमात्मा दिखाई नहीं पड़ता । यहाँ तक कि हमारे भीतर वाले कलपुर्जे तक दिखायी नहीं पड़ते । आँखें तक दिखाई नहीं पड़तीं । भीतर की तो बात कौन कहे बाहर की भी दिखायी नहीं पड़ती अच्छा बताइये आप की नाक कैसी है ? भवें कैसी हैं ? पलकें कैसी हैं ? जब आपको बाहर की चीजें ही नहीं दिखती, केवल इधर उधर की चीजें ही दिखायी देती हैं, तो फिर भीतर की कैसे दिखेंगी ? इसीलिए गरेबान में मुँह डाल करके जब हम भीतर तलाश करते हैं तो उसको ध्यान कहते हैं । अपने भीतर झाँकने का नाम ही ध्यान है ।

ध्यान किसका किया जाता है ? स्वयं का या भगवान का ? बेटे स्वयं तो क्या और भगवान तो क्या दोनों एक ही हैं । स्वयं का विकसित रूप ही भगवान है हमारा विकसित रूप जो है-'शिवोऽहं' 'सच्चिदानंदोऽहं' 'तत्वमसि' 'अयमात्माब्रह्म' 'प्रज्ञानंब्रह्म' है वेदांत के यह सारे के सारे महावाक्य यह बताते हैं कि हमारा परिष्कृत रूप भगवान है । हमारा भगवान हमारा परिष्कृत रूप ही है । डायमण्ड क्या है ? डायमण्ड और कोयले में कोई खास फर्क नहीं है । एकाध इसके एलीमेण्ट्स और एकाध इसके भीतर के जो जर्रे हैं उनमें फर्क पड़ता है, अन्यथा हीरा और कोयला एक ही है । आत्मा और परमात्मा एक है । यह थोड़ा सा सीमाबद्ध है तो वह असीम है । यह अणु है और वह विभु है । यह मायाग्रस्त है तो वह मुक्त है । बस इतना ही फर्क है । अगर हम अपने आपको साफ करलें तो हम उसको प्राप्त कर सकते हैं । इसलिए हम प्रकाश का ध्यान करते हैं, भीतर वाले का ध्यान करते हैं । अपने लक्ष्य का ध्यान करते हैं, जीवन का ध्यान करते हैं । तो गुरुजी आपने इसीलिए सूरज का ध्यान बता दिया है ? हाँ बेटे, वह तो हमने प्रतीक बता दिया है । उसकी चमक देखकर अगर आप यह अंदाजा लगाते हों कि हमारे ध्यान में चमक आ जाती है या नहीं आती अथवा आपके ध्यान में गायत्री माता आ जाती हैं या नहीं आती हैं, तो उससे बनता-बिगड़ता नहीं है । उससे केवल यह बात साबित होती है कि आपके दिमाग की परिपक्व अवस्था आयी कि नहीं । प्रकाश से मेरा मतलब वह नहीं है जो आप समझते हैं । प्रकाश को अध्यात्म में जिस अर्थ में लिया गया है, उस अर्थ से मेरा मतलब है । प्रकाश 'डिवाइन लाइट' लेटेन्ट लाइट' या ज्ञान के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है । यह चमक के अर्थ में प्रयुक्त नहीं हुआ है । चमक का अर्थ ज्ञान है । जिस प्रकाश के लिए हमने कहा है वह है जिस के लिए भगवान से हमने प्रार्थना की है ' तमसोमा ज्योतिर्गमय'। हे भगवान ! हमको अंधकार की ओर नहीं प्रकाश की ओर ले चलिए। अध्यात्म में प्रकाश शब्द कहीं भी प्रयुक्त हुआ है वहाँ ज्ञान के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

ध्यान के लिए जो हमने यह बताया कि आप प्रकाश का ध्यान किया कीजिये, तो कहाँ-कहाँ प्रकाश का ध्यान किया करें ? अभी स्वर्ण जयंती साधना वर्ष में हमने आपको तीन जगह ध्यान करने के लिए कहा है । एक आप मस्तिष्क में ध्यान किया कीजिये । दूसरा अंतरात्मा में हृदय स्थान पर और तीसरा नाभि स्थान पर ध्यान किया कीजिये । हमारे तीन शरीर हैं और तीनों शरीरों के ये तीन केन्द्र हैं । इन तीनों के भीतर प्रकाश चमकना चाहिए । प्रकाश हमारे तीनों शरीरों के भीतर प्रविष्ट होना चाहिए । इसका क्या अर्थ है ? इसका अर्थ यह है कि प्रकाश जब हमारी नसों में आये, नाड़ियों में आये-शरीर में आये तो नाभि में होकर आयें । नाभि में से होकर इसलिए कि माता और बच्चे का जो संबंध सूत्र है वह नाभि से जुड़ा होता है । इसलिए स्थूल शरीर का केन्द्र नाभि को माना गया है । जिस प्रकार माता के शरीर में से उसका रक्त नाभि से होकर हमारे शरीर में आता था और दोनों का संबंध जुड़ा हुआ था, उसी प्रकार भगवान का प्रकाश नाभि में से होकर हमारे शरीर के भीतर आता है । जब वह प्रकाश आयेगा तब आपकी हड्डियाँ चमकेंगी, रक्त चमकेगा, मांस चमकेगा । चमकने से मेरा मकसद यह है कि तब आपके भीतर कर्मनिष्ठा, स्फूर्ति, साहसिकता, श्रम के प्रति प्यार, कर्मों के प्रति प्यार, कर्मयोग के प्रति प्यार, कर्तव्य परायणता के प्रति प्यार उभरेगा । यह कर्मयोग है । कर्मयोग शरीर का योग है । प्रकाश का ध्यान करने वाला कभी ठाली बैठ नहीं सकता । वह सतत् सत्कर्मरत ही रहेगा ।

तीन योग हैं-कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग । प्रकाश के माध्यम से इन तीनों योगों को हृदयंगम करने के लिए मैंने आपको कहा है । भगवान का प्रकाश जब कभी शरीर में आयेगा तो कर्मयोग के रूप में आयेगा और आदमी कर्तव्यनिष्ठ होता हुआ दिखाई पड़ेगा । उसके लिए 'वर्क इज वरशिप' होगा । पूजा कर्म-श्रेष्ठ कर्म, आदर्श कर्म, लोकोपयोगी कर्म, मर्यादाओं से बँधे हुए कर्म-सभी कर्मयोग के अंतर्गत आते हैं जो हमें सिखाते हैं कि जब प्रकाश हमारे शरीर में आता है तो हमारे शरीर की प्रत्येक क्रिया को कर्मनिष्ठ होना चाहिए । परिश्रमी होना चाहिए । यह बताता है कि आदमी को जो प्रकाश का ध्यान करता है उसे हरामखोर और आलसी नहीं होना चाहिए । चोर और हरामखोर मेरी दृष्टि से दोनों बराबर हैं । महाराज जी हमारा बेटा बड़ा हो गया है और खूब कमाता खाता है और हम तो अपनी मौज करते हैं । नहीं बेटे, कामचोर और चोर में तो कामचोर ही बड़ा होता है । मनुष्य के लिए यह सबसे बड़ी गाली है । कामचोर सबसे खराब आदमी है । नहीं गुरुजी हमको तो पेंशन मिलती है और हम मौज करते हैं । नहीं बेटे हम तुझे मौज नहीं करने देंगे । जब तक जिंदा है तब तक शरीर से तुझे कर्म करना पड़ेगा । अपने लिए रोटी खाने-पेट भरने को है, दूसरों के लिए तो नहीं है । उसके लिए कर । गुरुजी ! हमारे बेटे तो पढ़ गये और हम अब निश्चिंत हो गये । तेरे ही तो पढ़ गये समाज के बेटे तो नहीं पढ़े । चल रात को नाइट स्कूल चलाया कर और दूसरों के बच्चों को पढ़ाया कर । इसलिए मित्रो, क्या करना पड़ेगा कि जब वह प्रकाश, जो मैंने जप के साथ-साथ करने के लिए बताया है, अगर वह आपके भीतर नसों में स्फूर्ति के रूप में आये तो जब तक आप जिंदा हैं तब तक हम काम करेंगे, कर्मयोगी बनेंगे, मेहनत करेंगे-मशक्कत करेंगे, श्रेष्ठ काम करेंगे, कर्तव्यों का पालन करेंगे । जो हमारे लिए, हमारे समाज के लिए, देश के लिए, धर्म के लिए सबके लिए कर्तव्यों का बंधन बँधा हुआ है, इसका हम पालन करेंगे । अगर इस तरह की स्फूर्ति और नाड़ी अभ्यास बन जाये तो मैं समझूँगा कि आप कर्म योगी हैं और आपने उस प्रकाश के ध्यान को जो मैंने बताया था-उसे सीख लिया और उसका मकसद समझ गये ।

दूसरा वाला प्रकाश का ध्यान करने के लिए जो मैंने बताया था और यह कहा था कि आप अपने मस्तिष्क में प्रकाश का ध्यान किया कीजिए । आपके मस्तिष्क में-मन में जब प्रकाश आये तब आपको ज्ञानयोगी होना चाहिए । कर्मयोगी शरीर से, ज्ञानयोगी मस्तिष्क से । आपके मस्तिष्क के भीतर जो भी विचार आयें निषेधात्मक नहीं, विधेयात्मक विचार आने चाहिए । अभी तो आप लोगों के मस्तिष्क में विचारों की कितनी भीड़, कितने मक्खी-मच्छर, कितनी वे चीजें जो आपके किसी काम की नहीं हैं, कितने विचार, कितनी कल्पनायें आती रहती हैं । उनका यदि आप विश्लेषण करें तो देखेंगे कि मस्तिष्क में जाने कितने मक्खी-मच्छरों जैसे विचार भरे पड़े हैं । अभी उनमें से एक तो गुस्से का भरा था, एक कामवासना का विचार करता रहा, एक सिनेमा का विचार करता रहा । एक यह विचार करता रहा कि मैंने लॉटरी के तीन टिकट खरीदे हैं उसमें से तीन-तीन लाख रुपये तो मिल ही जायेंगे । उन रुपयों से क्या-क्या करूँगा-अमुक काम करूँगा, अमुक बच्चे को, अमुक को दूँगा-आदि बेसिर पैर की सारी की सारी बातें सारे के सारे ताने बाने बुन रहा है । इससे आपकी सारी शक्तियाँ निरर्थक होती जा रही हैं । यह सब बेकार की कल्पनायें हैं जिनके पीछे न कोई तारतम्य है, न वास्तविकता है और न इनसे आपको कुछ लेना देना है । इस प्रकार की कल्पनायें निरर्थक और अनर्थ मूलक ही होती है । सार्थक कल्पनायें अगर आपके मस्तिष्क में आयीं होतीं, क्रमबद्ध रूप से आपने विचार किया होता तो आपमें से अधिकांश व्यक्ति वाल्टेयर हो गये होते, रवीन्द्रनाथ टैगोर हो गये होते अगर आपने अपनी कल्पनाओं को क्रमबद्ध बनाया होता, दिशाबद्ध बनाया होता, उत्कृष्ट और सक्षम बनाया होता । हमारी एक ही विशेषता है कि हम विद्वान हैं । इसलिए विद्वान हैं कि हमने अपने चिंतन की धाराओं को सीमाबद्ध-दिशाबद्ध करके रखा है । हमारा चिंतन अनावश्यक बातों में कभी भी नहीं जाता । जब कभी जायेगा क्रमबद्ध बातों में जायेगा, दिशाबद्ध बातों में जायगा, आदर्श बातों में जायगा और जो संभव है उनमें जायगा । हमारा मस्तिष्क इतना ताना-बाना बुनता है कि वह एक

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

वास्तविकता और व्यावहारिकता पर टिका रहता है । जो अवास्तविक है, अव्यवहारिक है और जो अनावश्यक है-ऐसे सारे के सारे विचारों को हम बाहर से ही मना कर देते हैं कि-'नो एडमीशन' यहाँ नहीं आ सकते, बाहर जाइये । आपको दाखिला हमारे मस्तिष्क में नहीं मिल सकता ।

मित्रो, ज्ञानयोग उस चीज का नाम है जिसमें कि अपने भीतर चिंतन में जो अवांछनीय तत्व घुलते चले जाते हैं, उनको हम हिम्मत के साथ रोकें और जिन चीजों की आवश्यकता है, जो चिंतन हमारे भीतर आना चाहिए उस चिंतन को बुला करके-निमंत्रित करके अपने भीतर स्थिर करें, तो हमारा मस्तिष्क वह हो सकता है जिसे हम ज्ञान का भंडार कह सकते हैं । विद्या की दृष्टि से, ज्ञान की दृष्टि से, सुलझाव की दृष्टि से एक से एक बहुमूल्य चीजें इसके भीतर से निकलती हुई चली आ सकती हैं । ज्ञान की गंगा हमारे मस्तिष्क में से वैसी ही बह सकती है जैसे कि शंकर जी के मस्तिष्क में से प्रवाहित होती थी । हमारे मस्तिष्क में संतुलन का चन्द्रमा उसी तरीके से टँगा रह सकता है जैसे कि शंकर भगवान के मस्तिष्क पर टँगा हुआ था और हमारा तीसरा नेत्र-विवेक का नेत्र, दूरदर्शिता का नेत्र उसी तरीके से खुल सकता है जैसे कि शंकर भगवान के मस्तिष्क पर खुला हुआ था । मित्रो, यह ज्ञानयोग की साधना है । प्रकाश चमकना चाहिए हमारे ज्ञान को और विचारों को संतुलित और सुव्यवस्थित करने के लिए । अगर आपको ऐसा ज्ञान आये तो मैं समझूँगा कि हमने आपको अनुष्ठान में और साधना स्वर्ण जयंती वर्ष में सम्मिलित करके जिस ध्यान की बाबत बताया है उसको आपने जान लिया और उसका व्यावहारिक स्वरूप समझ गये । अगर आप उसका व्यावहारिक रूप नहीं जान पाये और कल्पना लोक में ही उड़ते रहे तो फिर ख्वाब ही देखते रहेंगे-सपने ही देखते रहेंगे । अध्यात्म सपना नहीं व्यावहारिक है । यह हमारे इसी जीवन से ताल्लुक रखता है और आज से ताल्लुक रखता है । ख्वाबों का अध्यात्म नहीं है, सपनों का अध्यात्म नहीं है । ख्वाबों का-सपनों का भगवान नहीं है । भगवान है तो वह जो हमारे आज के-अभी के जीवन में आना चाहिए और हमारे व्यक्तित्व के रूप में प्रकट होना चाहिए । हमारे भीतर से प्रकट होना चाहिए ।

मित्रो, तीसरा वाला प्रकाश का जो ध्यान हमने बताया है, वह अंतःकरण का प्रकाश है, विश्वासों का प्रकाश है, आस्थाओं का-निष्ठाओं का-करुणा का प्रकाश है । जो चारों ओर प्रेम के रूप में प्रकाशित होता है । हम प्रेम के रूप में भक्ति योग करते हैं । भक्तियोग से क्या मतलब होता है ? भक्तियोग का मतलब है-मोहब्बत । जिस तरह से हम व्यायामशाला में अभ्यास करते हैं और उससे अपने शरीर और कलाइयों को मजबूत बनाते हैं और फिर उसका हर जगह इस्तेमाल करते हैं । सामान उठाने में, कपड़े धोने में, बिस्तर उठाने में करते हैं । हर जगह काम में लाते हैं-किसको ? जो व्यायामशाला में ताकत इकट्ठा की थी उसको । इसी तरीके से हम भगवान के साथ मोहब्बत शुरू करते हैं, प्यार शुरू करते हैं, भक्ति करते हैं । भगवान की भक्ति के माध्यम से जो हम ताकत इकट्ठा करते हैं, उस मोहब्बत को हर जगह फैल जाना चाहिए । हम अपने शरीर को मोहब्बत करें ताकि इसको हम अस्तव्यस्त न होने दें-नष्ट-भ्रष्ट न होने दें । हम अपने शरीर को प्यार करें ताकि वह निरोग होकर के दीर्घजीवी बन सके । यह हमारा शरीर के प्रति प्यार है । यह भक्ति है शरीर के प्रति भगवान की । मन के प्रति हमारी भक्ति यह है कि हम पागलों की तरीके से अपने मन-मस्तिष्क को खराब न कर दें । यह देव मंदिर है और इतना सुंदर मंदिर है कि हमारे विचारों की क्षमता सूर्य की क्षमता के बराबर है । इसको हम असंतुलित न होने दें । हम अपने आप से प्यार करें । अपनी जीवात्मा से प्यार करें ।

जीवात्मा ! जीवात्मा की तो हमने इतनी उपेक्षा की है कि यह विचारी कराहती रहती है और यह पूछती रहती है कि दोस्त हमारा क्या होना है ? बेटे हमारा क्या होना है ? यह पूछते-पूछते वह बूढ़ी हो गयी । बुढ़िया पूछती रहती है कि बेटा हमारा भी कुछ होना है क्या ? और आप कहते रहते हैं कि अरे बुढ़िया । तू तो मरने वाली है । तेरा तो यही बद्रीनाथ है तू कहीं मत जा यहीं पड़ी रह । यह बुढ़िया जो है हमारी जीवात्मा है और यह ऐसे ही कसकती-कराहती रहती है । वह अंधी हो गयी है, आँखों से दिखायी नहीं पड़ता जीवात्मा को । अपनी जीवात्मा से यदि हमें प्यार रहा होता तो बेटे वह जवान हो गयी होती । जीवात्मा से मोहब्बत अगर हमें होती तो वह इतनी प्रचंड और प्रखर हो गयी होती कि हम साक्षात् भगवान के रूप में काम आते । पर हमारी जीवात्मा मर गयी क्योंकि हम उससे प्यार नहीं करते । हम किसी से प्यार करते हैं क्या ? नहीं, हम किसी से प्यार नहीं करते । बीबी से प्यार करते हैं ? नहीं ! बीबी के लिए तो हम जोंक है । खून की प्यासी जोंक जिससे चिपकती है उसका खून पी जाती है । औरत के लिए तो हम जोंक हैं । उसकी जवानी हमने चूस ली । उसको छूँछ बना दिया । पचासों बीमारियों की वह मरीज बन गयी है । उसके पास जो कुछ भी था, अपने माँ-बाप के घर से गुलाब का सा शरीर लेकर आयी थी हमने उसको वासना की आग में जला दिया । वह जली हुई औरत कराहती-कसकती-सिसकती हुई पड़ी रहती है । जल्लाद छुरे लेकर के जिस तरह से मारता है, हमने भी अपनी औरत में इतने छुरे मारे इतने छुरे मारे कि सारा का सारा खून निकाल करके फेंक दिया । बच्चे पर बच्चा पैदा करते रहे और वह चिल्लाती रही कि हमारी हड्डिया इस लायक नहीं है और हमारे पास मांस उतना नहीं है, कृपा कीजिये अब हम बच्चा पैदा नहीं कर सकते और आप हैं कि बच्चे पैदा करते चले गये । वह हजार बीमारियाँ लेकर के कभी हकीम जी के यहाँ चक्कर काटती है कभी आचार्य जी के यहाँ चक्कर काटती है और कहती है कि गुरुजी यह बीमारी है, वह बीमारी है । अगर आपने अपनी स्त्री को प्यार किया होता तो उसको पढ़ाया होता

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

शिक्षा दी होती, दीक्षा दी होती । उसके स्वास्थ्य की रखवाली की होती और उसको सुयोग्य बनाया होता । उसको विकसित किया होता और श्रेष्ठ बनाया होता । पर अब तो वह किसी काम की नहीं बची ।

प्यार है आपके पास ? भक्ति है आपके पास ? नहीं है । अगर भक्ति और प्यार रहा होता तो आपने अपने माँ-बाप की सेवा की होती । बहिन-भाइयों की सेवा की होती । अपने बच्चों की सेवा की होती । नहीं, गुरुजी हमने तो की है । बेटे आप सेवा करना नहीं जानते । प्यार करना जानते ही नहीं हैं । आप तो एक ही बात जानते हैं -पैसा । बेटे को पैसा दे जा । अरे क्यों पड़ा हुआ है इन बच्चों के पीछे । इनका भविष्य खराब करने के लिए पैसा जमा करता चला जा रहा है, क्या इनको शराबी बनायेगा, अय्यास बनायेगा ? दुराचारी बनायेगा ? क्या बनायेगा ? नहीं, महाराज जी मैं तो पैसा छोड़ करके जाऊँगा , बेटे को देकर के जाऊँगा और वह सारी की सारी जिंदगी मौज करेगा । बेटे वह मौज नहीं अपनी जिंदगी खराब करेगा और सबका सत्यानाश करेगा । प्यार, मित्रो किसे कहते हैं, आप जानते नहीं हैं । प्यार एक ही चीज का नाम है जिसमें आदमी को दिया जाता है । प्यार का अर्थ देना होता है । जिसको भी हम प्यार करते हैं-उसको हम कुछ दिये बिना नहीं रह सकते । हम बच्चे को प्यार करेंगे तो उसको कुछ देंगे । जिस किसी को भी प्यार करेंगे उसको हम देंगे । भक्तियोग का अर्थ है-दया, भक्तियोग का अथ है-करुणा, भक्तियोग का अर्थ है-प्रेम, भक्तियोग का अर्थ है-सेवा । नहीं महाराज जी सेवा का अर्थ होता है-मूर्ति पर टन-टन घंटी बजा दी, बस हो गयी नवधा भक्ति । तो यही है तेरी नवधा भक्ति-कौन सी-'पाद सेवनम् पंखाझलनम्'-पाद सेवन और पंखा झलने को ही नवधा कहता है । जो बातें भक्ति की हैं उनसे तो हजारों मील दूर भागते रहते हैं और स्वांग करते रहते हैं-खेल-खिलौने बनाते रहते हैं । दंड-कमंडल पेलते हैं और भगवान को भी धोखा देते हैं और अपने को भी धोखा देते हैं और कहते हैं कि नवधा भक्ति करते हैं । बेटे, इसे नवधा भक्ति नहीं कहते ।

मित्रो, क्या करना पड़ेगा ? भक्तियोग के उस वास्तविक स्वरूप को समझना पड़ेगा जिसके लिए हमने आपको बताया था कि आप प्रकाश का ध्यान किया कीजिए । प्रकाश का ध्यान करेंगे तब फिर आपको वहाँ चलने का मौका मिल जायेगा जहाँ कि 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' की बात बतायी थी । एकाग्रता ध्यान का एक उद्देश्य है । बिखराव को रोकना भी कह सकते हैं, क्योंकि हमने अपने आपको सब जगह बिखेर दिया है । यदि हमने अपने आपको एक लक्ष्य पर केन्द्रीभूत किया होता तो बंदूक की नली में से बारूद जिस तरीके से एक दिशा में चली जाती है और लक्ष्य भेद करने में सफल होती है, हम भी अपने जीवन लक्ष्य में सफल हो गये होते । अर्जुन ने अपने बिखराव को एक केन्द्र पर इकट्ठा कर लिया था । द्रौपदी-स्वयंवर में जब वह गया था तो द्रोणाचार्य ने लोगों से पूछा था कि क्या दिखाई पड़ता है ? किसी ने कहा-मछली की पूँछ , तो किसी ने कहा-मछली की टाँग, मछली का पेट । तो आचार्य द्रोण ने कहा-आप मछली का निशाना नहीं बेध सकते , भागिये यहाँ से । फिर अर्जुन से पूछा-कि आपको क्या दिखाई पड़ता है ? अर्जुन ने कहा-हमें एक ही चीज दिखाई पड़ती है और वह है मछली की आँख । तो मारिये निशाना और सफलता का वरण कीजिये । मित्रो, असंख्य दिशाओं में फैला हुआ हमारा मस्तिष्क कभी सफलता नहीं पा सकता। इसे एक दिशा में इकट्ठा कीजिये ।

यह ध्यान जो हम आपको बताते हैं-मेडिटेशन कराते हैं और कहते हैं कि अपने मन का बिखराव-फैलाव रोकिये । फैलाव के कारण न आपका विद्या पढ़ने में मन लगता है, न स्वास्थ्य संवर्धन में कभी मन लगता है । हर समय बिखराव ही बिखराव । यह जो मन की अस्त-व्यस्त स्थिति है, इसको आप इकट्ठा कीजिए भगवान के माध्यम से, जप के माध्यम से, ध्यान के माध्यम से और प्रत्येक काम को जब करना हो तो इतना तीखा अभ्यास डालिए कि जब जो काम करना पड़े उसी में तन्मय हो जायें । सांसारिक कार्य में भी और भगवान के कार्य में भी । यह एकाग्रता अध्यात्मिकता का गुण है । आप जब भी जो भी काम करें उसमें इतने तन्मय हो जायें कि 'वर्क इन वर्क' 'प्ले इन प्ले' अर्थात् जब आप खेलें तो इस कदर खेलें कि खेल के अतिरिक्त और कोई चीज ध्यान में ही न रहे और जब आप काम करें तो इस मुस्तैदी से काम करें कि काम के अलावा आपको कोई दूसरी चीज दिखाई ही न पड़े । इस तरह की तन्मयता के साथ किये गये काम सफलता के उच्चशिखर तक पहुँचा देते हैं । मित्रो, तन्मयता हमारे जीवन का वह वास्तविक स्वरूप होना चाहिए जो वैज्ञानिकों के पास होता है । वैज्ञानिकों में और साधारण बी. एस. सी. में कोई विशेष फर्क नहीं पड़ता-दोनों एक जैसे होते हैं । वैज्ञानिक उसे कहते हैं जो अपने रिसर्च कार्य में जब लगता है तो इतना गहरा डूबता हुआ चला जाता है जैसे मोती ढूढ़ने के लिए पनडुब्बा सागर में गहराई तक चला जाता है और उसको बीन करके ले आता है । यह एकाग्रता का चमत्कार है । आपको एकाग्रता केवल भजन में ही नहीं लानी है, वरन् हर काम में इसका अभ्यास करना है । एकाग्रता का अभ्यास न होने के कारण ही सदैव यह शिकायत बनी रहती है कि गुरुजी हमारा मन भजन पूजन में नहीं लगता । तो क्या किसी काम में आपकी एकाग्रता होती है ? हर काम में बिखराव है । आप अपने मन को निग्रहीत करना सीखिये । जब जो काम करना हो तब उसमें इतनी मुस्तैदी से तन्मय होना सीखिये ताकि आप जब भजन करना शुरू करें तो भजन में भी उतनी तन्मयता हो जाये जितनी एक योगी की होती है यदि आपने प्रकाश का ध्यान करना सही तरीके से सीख लिया तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आप वह सब कुछ प्राप्त कर सकेंगे जो एक अध्यात्मवादी को प्राप्त करना चाहिए ।

ॐ शांति: ॐ

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परम पूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी-

(सूक्ष्मीकरण की वेला में जनवरी १९८६ में प्रसारित पूज्यवर का वीडियो संदेश)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो, भाइयो ! अध्यात्म एक विज्ञान है । इसका सही अर्थ और मर्म न समझ पाने के कारण ही इस क्षेत्र में अंधविश्वास पनपा है । नयी पीढ़ी के लोग कहते हैं कि यह अंधविश्वास है । इसके पीछे वे तर्क देते हैं कि जो कर्मकांड लिखे हुए हैं, उसको जब हम करते हैं तो जो उसके परिणाम और फल बताये गये हैं, वे नहीं मिलते तो उनके कहने के मुताबिक यह अंधविश्वास सही है ? और जो विश्वासी है वे कहते हैं कि ऋषियों को, शास्त्रकारों को, आप्त पुरुषों को जिन्होंने अध्यात्म के विधि-विधानों के ऊपर इतना जोर देकर कहा है-तो उनको झूठ बोलने से क्या फायदा ? इसके पीछे कोई न कोई सच्चाई होनी चाहिए । अध्यात्म विज्ञान है अथवा अंधविश्वास है, यह तलाश करने के लिए हमने अपनी पूरी की पूरी जिंदगी इस काम के लिए खर्च कर डाली और अब हम जिस नतीजे पर पहुँचे हैं, उस नतीजे को आप लोगों को सुनाने का हमारा मन है ।

लोहा जब खदानों से निकलता है, तब आपने देखा होगा-कच्चा निकलता है-मिट्टी मिला हुआ होता है । धातुएँ जब जमीन में से निकलती हैं तब सभी कच्ची होती हैं । उनमें मिट्टी का सम्मिश्रण होता है । आग पर तपाने के बाद में उनका वास्तविक स्वरूप निकलता है । मिट्टी गल जाती है और लोहा, सोना तथा दूसरी धातुयें निकल आती हैं । तेल के बारे में भी यही बात है । कोयला जो होता है उसे भी साफ करना पड़ता है । हर चीज को साफ करना पड़ता है । जो व्यक्ति अध्यात्म का प्रयोग करता है, अगर अपनी सफाई का भी ध्यान रखता है, तो जानना चाहिए कि उसको परिणाम मिलेगा और अगर उसने सफाई का ध्यान नहीं रखा, अपने आपका संशोधन नहीं किया है, उसको ठीक तरीके से काम में लाने की स्थिति में नहीं है, तो फिर मान लीजिये कि वह कर्मकांड केवल अंधविश्वास है । अंधविश्वास से क्या काम निकलने वाला है ? इसलिए साधक को अपने जीवन में जीवन का परिष्कार करना पड़ता है । पात्रता का विकास करना पड़ता है । पात्रता का विकास न करे -जीवन का संशोधन न करे तो उसका वह लाभ जो मिलना चाहिए नहीं मिलेगा । तब फिर अंधविश्वास कहलाने वाली बात सही है और अगर आदमी उसके समग्र स्वरूप को समझता है और समय, स्वरूप की कीमत चुकाने के लिए तैयार है, तो फिर मैं समझता हूँ । कि इसको विज्ञान ही होना चाहिए ।

मेरी सारी जिंदगी इसी काम में खर्च हुई है और मैंने पाया है-कि अध्यात्म एक विज्ञान है-साइंस है और यह सही है । कैसे ? इस तरीके से कि हमारे गुरु ने-हमारे मास्टर ने 'बॉस' ने सबसे पहले यह समझाया कि कारतूस से भी ज्यादा बन्दूक का सही होना आवश्यक है । कर्मकांड अपने आप में पर्याप्त नहीं है । उसको चलाने वाला जो व्यक्ति है, वह सही होना चाहिए । बीज में अपनी शक्ति है । जो बीज जमीन में बोते हैं वही पैदा होता है । आम बोते हैं तो आम पैदा होता है, बबूल बोते हैं तो बबूल पैदा होता है । गेहूँ बोते हैं तो गेहूँ पैदा होता है-यह बात सही है, लेकिन इससे भी ज्यादा सही यह बात है कि जमीन ठीक होनी चाहिए । जमीन को जोता नहीं गया है, खाद-पानी नहीं दिया गया है-तो ऐसी ऊबड़-खाबड़ जमीन में अच्छी पैदावार की आप कैसे उम्मीद रखेंगे ? इसलिए अध्यात्म के साथ में दो सिद्धांत जुड़े हुए हैं । एक सिद्धांत यह मिला हुआ है कि जो इसके लिए कर्मकांड बताये गये हैं, वह करने चाहिए । दूसरी इससे भी सही बात यह है कि जो आदमी प्रयोग करने वाला है, उसे व्यक्तित्व की दृष्टि से बहुत साफ, बहुत पैना और बड़ा तीखा होना चाहिए । तीखे व्यक्तित्व के ऊपर-बढ़िया वाली बन्दूक के अंदर अगर आपने कारतूस रखी है तो निसाना सही लगेगा और बहुत दूर तक लगेगा । लेकिन अगर आपके पास बन्दूक नहीं है या नकली बन्दूक है और खाली कारतूस लेकर के आप चलाने का मन करते हैं तो फिर आपकी बात बनेगी नहीं । तो फिर आप इसे अंधविश्वास भी कह सकते हैं ।

खेत में जो बीज बोया जाता है वही पैदा होता है, इसमें कोई दो राय नहीं, लेकिन अगर खेत में खाद-पानी नहीं लगायेंगे, जुताई नहीं करेंगे, तब फिर कुछ भी पैदा नहीं होगा । तब फिर आपको यही कहना पड़ेगा कि बीज बोना, खेती करना-मेहनत करना बेकार है । इस तरीके से बीज बोना अंधविश्वास हो गया और अगर आपने ढंग से-कायदे से बीज बोया है तो बीज बोना विज्ञान हो गया । लोहे के बारे में आप जानते हैं कि वह जमीन से मिट्टी मिला हुआ निकलता है । उससे आप कोई बर्तन बनाना चाहें, हथियार बनाना चाहें, औजार बनाना चाहें तो कुछ नहीं बन सकता । लेकिन अगर आपने उसे तपाया है और तपाकर के मिट्टी वाले हिस्से को जला दिया है, तब फिर आप उस लोहे से जो कुछ भी बनाना चाहें बना सकते हैं । ज्यादा टेम्परेचर देंगे तो फिर स्टील बना सकते हैं-फौलाद बना सकते हैं और दूसरी कीमती चीजें बना सकते हैं । लौह भस्म भी बना सकते हैं, मंडूर भस्म भी बना सकते हैं । यह सब चीजें ताप के ऊपर टिकी हुई हैं । लोहे के ऊपर नहीं । लोहा तो जैसा है वैसा ही रहेगा । यही बात अध्यात्म के सिद्धांतों के बारे में है । अध्यात्म के सिद्धांतों को जो आदमी अपने जीवन में प्रयोग करता है और अपने आपको सही बना लेता है तो उसके चमत्कार जरूर दिखाई पड़ेंगे । ऋद्धियाँ और सिद्धियाँ-जैसा कि उनके बारे में बताया गया है सब बिलकुल सही बैठेंगी । कहीं भी गलती करने का अवसर नहीं आयेगा अगर आपने अपने जीवन को साफ किया है तब ।

सर्वत्र पात्रता के हिसाब से मिलता है । वर्तन अगर आपके पास है तो उसी बर्तन के हिसाब से आप जो चीज लेना चाहें तो ले भी

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

सकते हैं । खुले में रखें तो पानी उसके भीतर भरा रह सकता है । दूध देने वाले के पास जायँगे तो जितना बड़ा वर्तन है उतना ही ज्यादा दूध देगा । ज्यादा लेंगे तो वह फैल जायगा और फिर वह आपके किसी काम नहीं आयेगा । इसलिए पात्रता को अध्यात्म में सबसे ज्यादा महत्व दिया गया है, जो आदमी अध्यात्म का प्रयोग करते हैं, वे अपने व्यक्तिगत जीवन मे अपनी पात्रता का विकास कर रहे हैं कि नहीं कर रहे हैं-यह बात बहुत जरूरी है । आदमी का व्यक्तित्व अगर सही नहीं है तो यह सब बातें गलत हैं । कपड़े को रंगने से पहले धोना होगा । धोयें नहीं और मैले कपड़े पर रंग लगाना चाहें तो रंग कैसे चढ़ेगा ? रंग आयेगा ही नहीं-गलत-सलत हो जायेगा । इसी प्रकार से अगर आप धातुओं को गरम नहीं करेंगे तो उससे जेवर नहीं बना सकते । हार नहीं बना सकते । क्यों ? इसलिए कि आपने सोने को गरम नहीं किया है । गरम करने से आप इनकार करते हैं । फिर बताइये जेवर किस तरीके से बनेगा ? इसलिए गरम करना आवश्यक है । जो आदमी साधना के बारे में दिलचस्पी रखते हैं या उससे कुछ लाभ उठाना चाहते हैं, उन्हें सबसे पहला जो कदम उठाना पड़ेगा, वह है अपने व्यक्तित्व का परिष्कार । साधना भगवान की नहीं की जाती वरन् अपने आपकी की जाती है । उपासना भगवान की की जाती है । कर्मकांड किसी की मनुहार नहीं है, खुशामद नहीं है, कोई बाजीगरी नही हैं । कर्मकांड का सार, उद्देश्य और मकसद यह है कि आदमी अपने आपको ठीक बनाकर इस लायक बनाले कि उसके माध्यम से कर्मकांडों के मंत्रों के जो विधि-विधान हैं, देवपूजन हैं, उनका समुचित लाभ उठाया जाना संभव हो सके ।

इसके लिए आदमी को संयमी बनना पड़ता है आपने देखा होगा कि रेलगाड़ी को चलाने के लिए थोड़ी भाप बनाई जाती है और पिस्टन के साथ जोड़ दी जाती है । यही सम्प्रहीत भाप रेलगाड़ी और इंजन सहित हजारों लाखों मन बोझ को खींच ले जाती है । अगर यही भाप फैलादी जाय तो वह हवा में चारों तरफ बिखर जायगी और फिर किसी काम नहीं आयेगी । इसी तरीके से व्यक्ति के बारे में भी यही बात लग होती है कि उसे सही तरीके से ठीक किया जाय । कोयले से ही हीरा बनता है । हीरा कोई अलग चीज नहीं वरन् साफ किया हुआ कोयला ही हीरा कहलाता है । कच्चा पारा सस्ता होता है और शरीर के लिए नुकसान देय भी, लेकिन अगर उसी पारे को मकरध्वज बनालें तो वह बहुत कीमती होता है, रसायन कहलाता है और बुड्ढे को जवान बना देता है और बहुत से मर्जों में काम आता है । अध्यात्म के बारे में भी यही बात है कि इससे व्यक्ति को स्वयं अपने आपको ठीके करना पड़ता है । मंत्र आप किससे जपेंगे-वाणी से । वाणी अगर आपने ठीक की हुई नहीं है तो फिर आप मंत्र जप कैसे कर पायेंगे और उसका परिणाम किस तरीके से निकल पायेगा । ठीक की हुई वाणी का अर्थ यह होता है कि जीभ को ऐसी होनी चाहिए जिससे आप किसी दूसरे आदमी को गलत रास्ते पर नहीं ले जायँ । अगर आपने जीभ को इस तरीके से बना करके रखा है तो आपकी जिह्वा चमत्कार दिखाने में समर्थ हो सकेगी ।

इस बारे में, मैं एक पुराना किस्सा सुनाना चाहता हूँ-शृंगीऋषि का। उनके पिता ने शृंगीऋषि को इस तरीके से पाला अपने आश्रम में कि उनको स्त्रियों एवं अन्य बातों के बारे में कुछ मालूम न था । राजा दशरथ के पुत्र नहीं होता था । गुरुवशिष्ठ ने कहा-आप शृंगीऋषि के पास जाइये । अगर वे आपके पुत्रेष्ठि यज्ञ-अनुष्ठान को पूरा करा देंगें तो आपका उद्देश्य पूरा हो जायेगा । राजा ने पूछा-शृंगीऋषि में क्या बात है जो अन्यान्य ब्राह्मणों में नहीं है । गुरु वशिष्ठ ने कहा-दूसरे ब्राह्मणों को कर्मकांड आते हैं, विधि-विधान आते हैं, मंत्र बोलना आता है, लेकिन अपने स्वयं के जीवन को जैसा बनाना चाहिए, वैसा बनाने के बारे उन्होंने न कभी ख्याल किया और न उसका अभ्यास किया । शृंगीऋषि के पिता ने अभ्यास कराया है । जब शृंगीऋषि आये और राजा दशरथ का पुत्रेष्ठि यज्ञ कराया तो उनकी तीनों रानियों से चार बच्चे हुए और चारों बच्चे साधारण नहीं भगवान के स्तर के थे । क्योंकि उनकी वाणी में बल था । शृंगीऋषि को प्रयोग करना आता था । यही ऋषि परंपरा है । शारीरिक श्रम, बुद्धि, समय, धन, भावनायें, व्यक्तित्व ये सारी चीजें ऐसी हैं जो एक-एक करके ठीक करनी चाहिए । हमारे जीवन में यही करना पड़ा और उसी का यह परिणाम है कि जो कुछ हमने पाया उसमें से हर चीज को सही पाया । कोई चीज ऐसी नहीं पायी जिसके बारे में हम यह कह सकें कि हमको इसमें संदेह रह गया है कि अध्यात्म विज्ञान नहीं है

वस्तुतः अध्यात्म विज्ञान है । इस विज्ञान को और ज्यादा तेज करने के लिए अब हम आप लोगों से विदा होते हैं । विदा होने का मतलब है कि अब हमारी और आपकी बातचीत का सिलसिला, जो इतने लंबे समय से चलता रहा है, आगे से चलना अब मुमकिन नहीं है । आगे से अब हमारा दूसरा कार्यक्रम यह है कि अध्यात्म के विज्ञान को जिस हद तक हमने समझा है, उस हद तक यह लोभ हमसे अब संवरण नहीं होता कि इससे भी ज्यादा फायदा होना चाहिए । व्यक्तियों की व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान होना अध्यात्म से संभव है, लेकिन समूह का समाज का और सारे विश्व का समाधान होने के लिए उससे भी बड़ी ताकत की जरूरत है । अब तक हमने जैसी उपासना की है, उससे भी बड़ी उपासना करने की अब हमको आवश्यकता पड़ी है । इसलिए अब आप लोगों से बिदा लेते हैं । क्यों ? साथ रहते तो क्या हर्ज था ? तब यह हर्ज था कि शक्ति बिखर जाती । पहले भी ऐसा हुआ है । कई व्यक्तियों को इसी तरीके से करना पड़ा है । पाण्डिचेरी वाले अरविंद घोष के बारे में आपने सुना है श्री अरविंद ने कई इंतजाम किये कि अँग्रेजों को हिन्दुस्तान से भगा दिया जाय, लेकिन उसमें सफलता नहीं मिली । आखिर में उनकी समझ में आया कि रूहानी शक्ति को इकट्ठा करना चाहिए । रूहानी शक्ति ही इस दुनिया में सबसे बड़ी शक्ति है । उससे बड़ी कोई शक्ति नहीं है । वे पाण्डिचेरी चले गये । वहाँ अँग्रेजों की हुकूमत नहीं थी । वहाँ जाकर उनने तप करना शुरू कर दिया और तप से इतनी गर्मी पैदा की कि सारे के सारे वातावरण को 'साइक्लोन्स' चक्रवातों से भर दिया ! जब ज्यादा गर्मी पड़ती है तब साइक्लोन-चक्रवात आते हैं और पेड़ों को, छप्परों को उखाड़ कर फेंक देते हैं । इसी प्रकार श्री अरविंद के तप करने की वजह से ऐसे साइक्लोन आये जिन्होंने पेड़ों को जड़ों से उखाड़ कर फेंक दिया । क्या नाम थे—

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

साइक्लोनों के ? इनमें से एक साइक्लोन का नाम था गाँधी, एक का नाम था मालवीय, एक नाम था जवाहार लाल नेहरू , एक का नाम था-सरदार पटेल, एक का नाम था सुभाषचन्द्र बोस, लाला लाजपतराय-वगैरह-वगैरह जब वे उठे तब अँग्रेजों को बोरी विस्तर बाँधने पड़े । ऐसे जबरदस्त थे साइक्लोन । वे महापुरुष थे-महामानव थे । इनके व्यक्तित्व और इनकी हस्तियाँ ऐसी जबरदस्त थीं जो बहुत दिनों से पैदा नहीं हुई थीं ।

वे कैसे हुई । यह श्री अरविंद एवं श्री माँ का तप था और किसका महर्षि रमण का तप था । महर्षि रमण ने भी इन्हीं दिनों ऐसा तप किया था जिससे कि सारे के सारे वातावरण में गर्मी पैदा हो गयी थी और उससे हिन्दुस्तान की आजादी के लिए बड़े-बड़े काम संपन्न हो गये थे । महर्षि रमण और श्री अरविंद के अतिरिक्त बाहरी दुनिया में भी कई व्यक्ति हुए हैं । बाहर कौन हुआ है आइन्स्टीन । उन्होंने भी अपनी शक्तियों को बिखरने से बचाने के और अपने वैज्ञानिक उद्देश्य को पूरा करने के लिए एकांत में रहना शुरू कर दिया था । उनके रहने की जगह ऐसी थी जहाँ कोई भी नहीं जा सकता था । जिसको उनके पास जाना होता था, वे नौकर की मार्फत अपना विजिटिंग कार्ड भिजवा देते थे और जब उनको फुर्सत होती थी तभी वे किसी को बुलाते थे अन्यथा किसी की हिम्मत नहीं होती थी जो उनके पास जाय उनसे बातचीत करे । टाल्स्टाय ने भी अपने जीवन के अंतिम दिनों में ऐसा ही किया था । वे मौनधारण करने लगे थे । मौनधारण करने का मतलब है अपनी शक्तियों को एकत्र करना । अब हम भी अपनी शक्तियों को एकत्र करने के लिए मौनधारण करते हैं । आप कोई यह मत सोचिये कि आप लोगों से कोई हमारी नाराजगी है । आप हमको बहुत प्यारे हैं और हमेशा बहुत प्यारे रहेंगे । प्यार में हम कुछ भी कमी नहीं आने देंगे और न ही दूर रहने से हमारे और आपके बीच कुछ फरक पड़ेगा । सूर्य, चन्द्रमा और समुद्र के नजदीक क्या कभी गये हैं आप ? वे आप से करोड़ों मील दूर हैं, फिर भी अपनी शक्ति से आपको कितना फायदा पहुँचाते हैं । हम और आप भी पास-पास खड़े रहें, पास-पास बैठे रहें देखते रहें, इसकी कोई जरूरत हमें नहीं दीखती । अब इससे आगे आप हमें नहीं भी देखें तो उससे कुछ बनता बिगड़ता नहीं । आपने अपना दिल देखा है क्या ? फेफड़े देखे हैं क्या ? गुर्दे देखें हैं क्या ? वे दिन- रात चौबीसों घंटे आपकी सेवा में लगे रहते हैं । हमको आप इसी तरीके से मानिये कि दिल की तरीके से आपके साथ हम चौबीसों घंटे लगे रहेंगे । गुर्दे की तरीके से आपकी जिंदगी को साफ करेंगे । फेफड़ों की तरीके से आक्सीजन पहुँचाने के लिए हम से जो कुछ भी मुमकिन होगा बराबर करते रहेंगे । इसलिए आप तो इस बात को त्याग दीजिए कि गुरु जी से मिलना-जुलना नहीं हो सकेगा ।

मिलने-जुलने की प्रक्रिया को हम सिर्फ इसलिए बंद कर रहे हैं कि अब तक आध्यात्मिक जीवन से जो अपने व्यक्तियों का, समाज का जो हितकर सकते थे किया, अब समस्यायें ऐसी पैदा हो गयी हैं जो बड़ी हैं और उनके लिए बड़ी तैयारी करनी पड़ेगी । छोटे कामों के लिए छोटी तैयारी करनी पड़ती है । चिड़िया को मारना होता है तो गुलेल भर से काम चल जाता है, या छोटी बन्दूक से भी मार सकते हैं । किसी डाकू को मारना होता है, शेर को मारना होता है तो स्टेनगन की जरूरत पड़ती है । जब कुछ बड़े काम करने पड़ते हैं या शत्रु सेना पर हमला बोलना होता है तब तोपों की जरूरत पड़ती है । अब समय कुछ इस प्रकार का आ गया है कि हमको बड़े कदम उठाने पड़ सकते हैं-पड़ेंगे । अब छोटे कदमों से आज की समस्यायें हल होने वाली नहीं हैं । कौन-कौन सी समस्यायें हैं ? आपकी आँखों को दिखाई नहीं पड़ेगा । आपको सूर्य का परिभ्रमण तथा पृथ्वी की परिक्रमा कहाँ दिखाई पड़ती है । हमारी आँखें आपकी अपेक्षा अधिक तेज हैं । वे कुछ ऐसी समस्यायें देख रही हैं जो कि बहुत ही मुश्किल है । इन मुश्किल समस्याओं को हल करने के लिए बड़ी शक्ति की जरूरत है । मुश्किल समस्यायें क्या हैं ? एक समस्या यह है कि वातावरण में जहर भरता जा रहा है । हवा में जहर, पानी में जहर, मिट्टी में जहर-सभी जगह औद्योगीकरण के द्वारा, मोटर-वाहनों के द्वारा, रासायनिक खादों एवं एटमी विकिरण के द्वारा जहर ही जहर भरता जा रहा है । जिससे कैंसर से लेकर अन्यान्य बीमारियाँ पैदा हो रही हैं । यह चीजें वह हैं जिसे साइंस ने तमाम जगह भर दी हैं । पर एक चीज ऐसी है जो सांइस ने तो नहीं भरी है, पर हमारे और आपके ख्यालातों से जन्मी है जिससे कि यह परोक्ष वातावरण गंदा हुआ है । परोक्ष वातावरण की इस गंदगी को दूर करने की, साफ करने की भरसक जरूरत है ।

सफाई किस तरीके से की जाय ? हमको उसके लिए मुनासिब स्थान और मुनासिब कदम उठाने की जरूरत है । अब हम बड़े कदम उठायेंगे । अब तक जैसे अनुष्ठान किये हैं, वैसे अनुष्ठानों से काम नहीं चलेगा । अब हमको बड़े अनुष्ठान करने चाहिए । पिछले अनुष्ठानों में हम लोगों से मिलते भी रहे हैं और काम भी करते रहे हैं, पर आगे अब क्या करना है ? आगे हम अकेले पड़ जायेंगे । अकेले से काम नहीं चलेगा । रामचन्द्र जी से अकेले से काम नहीं चला था । इसलिए वे सुग्रीव को बुलाने के लिए गये-हनुमान को बुलाने के लिए गये । फिर नल और नील को बुलाने के लिए गये जिनने समुद्र पर सेतु बना दिया । सबने मिलकर लंका को पार करने की फतह करने की तैयारी की । अकेले रामचन्द्र जी नहीं कर पाये । उन्होंने जब रामराज्य की स्थापना की, तब भी इन्हीं लोगों की सहायता की जरूरत पड़ी । अकेले रामचन्द्र जी रामराज्य की स्थापना नहीं कर सकते थे । हम भी अकेले नहीं कर पायेंगे । कुन्ती ने श्रीकृष्ण भगवान की आज्ञा मान करके उनके लिए पाँच सहायक पैदा किये थे । पाँच देवताओं की शक्तियों से वे पैदा हुए थे, जिनके नाम थे-अर्जुन, भीम, युधिष्ठिर, नकुल और सहदेव । एक का नाम कर्ण था जो सूर्य के अंश से पैदा हुए थे । काम बड़ा था-छोटा नहीं ।

एक बार ऐसा हुआ कि सब जगह पानी का अभाव हो गया । पानी के बिना कुँए , तालाब सूख गये । कहीं पानी दिखाई नहीं पड़ रहा था । सब जगह त्राहि-त्राहि मच गयी कई वर्ष हो गये कहीं पानी नहीं बरसा । कुछ चीजें हैं जिन्हें मनुष्य अपने आप नहीं कर सकता, उसे बड़ों की सहायता से पूरा करता है । उसके लिए बड़ी शक्तियों की सहायता चाहिए । भगीरथ ने विचार किया कि इसके लिए स्वर्ग से गंगा जमीन पर लायी जाय । गंगा को स्वर्ग

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

से जमीन पर लाने के लिए वे तप करने चले गये । उन्हें खुशामद नहीं करनी पड़ी । खुशामद करने, प्रार्थना करने, चावल चढ़ाने, धूप-दीप-नैवेद्य चढ़ाने से कोई भी बड़ी शक्ति काबू में नहीं आ सकती । ऐसे बड़े कामों के लिए तप करने पड़ते हैं । भगीरथ ने जैसे-जैसे तप किया और तप करके गंगा को स्वर्ग से लाये तो देवताओं ने भी मदद की । जो अपनी मदद आप करता है उसकी ईश्वर भी मदद करता है । शंकर भगवान ने उनकी मदद की । हमारे गुरु ने भी हमारी मदद की है, क्योंकि हमारे सामने बड़े मकसद रहे हैं । शुरू से आखिर तक जो कुछ भी काम हम करते रहे हैं, बड़े उद्देश्यों के लिए करते रहे हैं । अगर यह बात यह नीयत नहीं रही होती और यह नीयत रही होती जो कुछ भी हम अपने लिए, अपने बाल-बच्चों के लिए, रिश्तेदारों के लिए करेंगे तब ये सब देवता हम को सूँघ कर भाग खड़े हुए होते । आप देवताओं की शक्ति का इस्तेमाल करना चाहते हैं तो उनको एक ही बात बतानी पड़ेगी कि हम किसी बड़े काम के लिए-बड़े मकसद के लिए-बड़े उद्देश्यों के लिए कुछ काम करना चाहते हैं । भगीरथ ने जब यह बताया कि गंगा हमें इसलिए चाहिए कि जो पीढ़ियाँ सदियों से अनास्था के कारण शाप से जल रही हैं, सारी धरती सूखी पड़ी है, उसके लिए चाहिए तो गंगा भी तैयार हो गयी और उनकी मदद करने के लिए शंकर जी भी तैयार हो गये और गंगा ने उनकी जटाओं में गिरने के बाद जमीन पर बहना शुरू कर दिया ।

देवताओं के ऊपर एक बार एक और मुसीबत आयी । ऐसा हुआ कि वृत्रासुर नामक एक दैत्य ने देवताओं को मारपीट कर भगा दिया और उनका इन्द्रासन वगैरह राज सिंहासन छीन लिया । देवताओं ने देखा कि इसको मारने के लिए तपस्वी की शक्ति चाहिए । तपस्वी की शक्ति से बड़ी और किसी की शक्ति नहीं होती । वे दधीचि के पास गये । दधीचि ने कहा-कि मेरी आस्थियों का वज्र यदि बने तो वह इतना मजबूत हो सकता है कि सब देवता एक ओर , राक्षस एक ओर और मेरी अस्थियों से बना हुआ वज्र एक ओर । तपस्वी दधीचि ने इन्द्र को बुलाया और कहा कि आप हमारी हड्डियाँ ले जाइये और उससे वज्र बनाकर वृत्रासुर के विरुद्ध काम में लाइये । ऐसा ही हुआ । इन्द्र ने उन्हीं हड्डियों से वज्र बनाया और उससे वृत्रासुर का नाश किया और बड़ा काम हो गया ।

बड़े कामों के लिए बड़ी ताकत की जरूरत पड़ती है । हमारे सामने भी काम बड़ा है । इसके लिए बड़े त्याग की जरूरत है । इसमें दधीचि जैसे, भगीरथ जैसे त्याग करने वाले होने चाहिए, बड़े आदमी होने चाहिए । बड़े आदमी आयेंगे कहाँ से ? हमने आपसे कहा है कि भगवान केवल उसी की सहायता करता है जो बड़े कामों के लिए बड़े उद्देश्यों के लिए अपने आपको सौंप देते हैं । सुग्रीव के साथ भी यही हुआ और हनुमान के साथ भी यही हुआ । पहले दोनों बालि का मुकाबला नहीं कर सकते थे और जान बचाकर एक पहाड़ पर जा छिपे थे और वहीं पर किसी प्रकार अपना गुजारा कर रहे थे । लेकिन जब दोनों रामचन्द्र जी के साथ जुड़ गये और सीता की खोज करने और लंका का दहन करने का जोखिम उठाने को तैयार हो गये तो वही हनुमान भी पहाड़ उखाड़ने और लंका जलाने सहित समुद्र को छलांग मारने में समर्थ हो गये । जो आदमी जोखिम नहीं उठा सकता , केवल फायदा ही फायदा तलाश करता है, उस को मैं क्या कह सकता हूँ , लेकिन जो महापुरुष हैं वे महान कामों के लिए ही सहायता करते हैं । उन्होंने रामराज्य की स्थापना के लिए बड़े गजब के काम किये और रामचन्द्र जी का इतना प्यार पाया कि उन्हें रामपंचायतन में स्थान मिला । यह वह तथ्य है कि जिसने अपने आपको रामचन्द्र जी के सुपुर्द कर दिया । सुपुर्द करके तो देखिये कि बदले में क्या मिलता है । इसी तरीके से नल-नील ने, रीछ-बानरों ने एक ऐसा पुल बना दिया जो पानी पर तैरता था । तो क्या नल-नील में इतनी ताकत थी ? नहीं, भगवान की ताकत थी । अच्छे उद्देश्यों के लिए , अच्छे कामों के लिये भगवान की हमेशा सहायता मिलती रही है और आगे भी मिलती रहेगी ।

कुन्ती के पाँचों पुत्रों में अर्जुन सहित पाँच पाण्डव थे । जब उनको वनवास हो गया तो अपनी जान बचाने के लिए वे मारे-मारे फिरते थे । नहीं साहब वे बड़े ताकतवर थे और उन्होंने कौरवों को मार गिराया और महाभारत फतह करके दिखा दी । तो फिर पहले क्यों नहीं दिखा दी थी ? पहले इसलिए नहीं दिखा सके थे कि पहले भगवान नहीं थे उनके साथ । भगवान किसके साथ होते हैं ? उसके साथ होते हैं जो बड़े कामों के लिए समर्पित हो जाते हैं । बड़े कामों के लिए अब हम आप से अलग हो रहे हैं । आप में से कई आदमी बड़े ताकतवर भी हैं, शक्तिशाली भी हैं । कौन कौन ताकतवर हैं ? ताकतवर मैं उन्हें मानता हूँ जो कि बुद्धिजीवी हैं, जो कलाकार हैं, संपन्न हैं और जो राजनेता हैं और किसे मानते हैं भावनाशीलों को मानते हैं । आप लोग तो भावनाशील हैं । भावनाशीलों ने ही दुनिया में ऐसे-ऐसे गजब के बड़े-बड़े काम किये हैं कि सारी दुनिया को हिला करके रख दिया है । भावनाशील किसी से भी कम नहीं हैं राजनेताओं से भी नहीं । तब क्या करना है ? अब हमको इससे आगे आने वाले समय में अकेला नहीं रहना है । पाँच बच्चे ऐसे पैदा करना है जो बड़े हों । वायु-पवन ने एक बच्चा पैदा किया था जिसका नाम था-हनुमान-बजरंगबली । ऊपर से एक शिला पर पटक दिया कि देखें यह है कुछ या नहीं । बच्चे ने पत्थर की शिला को तोड़कर फेंक दिया और वह बजरंगबली कहलाया । कर्ण जो था वह सूर्य से पैदा हुआ था । उसके पास कवच, कुंडल थे । इसी तरह से हमको अपने सहायकों की आवश्यकता पड़ी है । ऊपर जिन पाँच ताकतवरों का नाम गिनाया है, उनको ठीक करना और सही रास्ते पर लाना एक बड़ा काम है । जो अगले ही दिनों संपन्न होने जा रहा है ।

तो फिर आपको क्या करना पड़ेगा ? आपको कभी करना हो अध्यात्म के विज्ञान की तरीके से देखना हो, उसे अंधविश्वास न कहना हो तो कृपा करके आप भगवान का तरीका समझना, भगवान का कायदा समझना, भगवान के मन को समझना । भगवान का मन क्या है ? भगवान का मन यह कि वे माँगते हैं । जो कोई भी सामने आता है, हर एक से माँगते हैं । किसको दें किसको नहीं दें, इसकी उनकी एक ही परीक्षा है कि वह आदमी देने को तैयार है कि नहीं । यदि देने को तैयार है तो भगवान उसको देंगे । उन्होंने जिससे भी मिला पहले माँगा । शबरी के पास गये तो माँगते गये कि हम तो भूखे हैं ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

गोपियों के पास गये तो माँगते गये कि हम भूखे हैं । राजा कर्ण के पास गये तो उससे कहा कि हमको सोना चाहिए । राजा बलि के पास गये तो कहा-कि हमको जमीन चाहिए । जहाँ कहीं भी भगवान गये हैं उनमें से हर एक से माँगा है और जिस किसी ने दिया है वह खाली हाथ रहने नहीं पाया है । भगवान ने सबसे माँगा है । हमारे गुरु ने भी हमसे माँगा था और जब हमने दिया तो उसके बदले में क्या पाया ? उनने कहा-जो तुम्हारे पास है-वह दे । मैंने कहा-कहाँ दूँ , किसको दूँ । तो उनने कहा-भगवान की खेती में बो दे । अपने पास जो कुछ भी था हमने सब भगवान की खेती में बो दिया और जो कुछ भी बोया सौगुना होकर के पाया । हमारे पास शरीर है । शरीर हमने बोया और शरीर सौगुना होकर हमने पाया । आपने सुना नहीं है अभी एक पागल आया था और उसने सिर से पैर तक सैकड़ों छुरे चलाये, रिवाल्वर तान दिया, पर उसमें से कोई बाल तक बाँका नहीं हुआ । यह शक्तियाँ भगवान की दी हुई हैं । भगवान की दी हुई यह शक्तियाँ किसी को भी मिल सकती हैं, आपको भी ।

इस तरीके से हमने अपना शरीर दिया था और शरीर पाया । हमने अपनी बुद्धि दी । अपनी सारी बुद्धि का इस्तेमाल अपने लिए नहीं समाज के लिए किया । हमारी जो बुद्धि है वह इतनी पैनी और तीखी है कि आप यह जानकर अचंभे में रह जायेंगे । व्यास जी ने एकमहाभारत लिखा था और उसके लिए गणेश जी को स्टेनो टाइपिस्ट बनाकर ले गये थे । हमारे पास कोई स्टेनोटाइपिस्ट नहीं है । हमारी यह भुजायें ही स्टेनोटाइपिस्ट हैं । इसी से हमने इतना साहित्य लिखा है जो कि हमारे वजन से भी भारी है । यह हमारी बुद्धि है । हमारे पास धन है । हमारे पास तो नहीं था, पर पिताजी का दिया हुआ था, जिसे सारे का सारा समाज को दे दिया । गायत्री तपोभूमि को दे दिया । उससे जो कुछ बचा हुआ था उससे अपने गाँव में एक स्कूल बना दिया । उसके बाद भी कुछ धन बचता दिखाई दिया तो कुछ और इंतजाम करके गाँव में ही एक अस्पताल बना दिया । सारी की सारी चीजें ऐसी बना दीं जो समाज की हैं । आप पूछेंगे कि तो फिर आपका धन चला गया होगा और आप गरीबी में दिन काट रहेंगे ? नहीं, हम गरीबी में दिन नहीं काटते । आप देखते नहीं जहाँ हम रहते हैं कितने दामों की है । आपने शांतिकुंज देखा है लाखों रुपयों का बना हुआ है । गायत्री तपोभूमि लाखों रुपयों का बना हुआ है । ब्रह्मवर्चस् लाखों रुपयों का बना हुआ है । हमें लाखों से कम में गिनती ही नहीं आती । क्यों ? इसलिए नहीं आती कि जो हमारे पास था हमने भगवान को, समाज को दिया है । बोया है और बोने के बदले में काटा है ।

अध्यात्म विज्ञान है या अंधविश्वास- अगर आपका मन यह जानने को हो तो फिर आपको यह ध्यान रखना चाहिए कि अध्यात्म का सही तरीका क्या है । सही तरीका नहीं मालूम है, इसलिए आप बेकाबू होते हैं- परेशान हैं । आप केवल पूजापाठ करते हैं, कर्मकाण्ड करते हैं, परंतु कर्मकांड के साथ-साथ में जीवन को जैसा ऊँचा बनाना चाहिए वैसा ऊँचा बनाने के लिए आप का मन नहीं करता । आप कोई प्रयत्न नहीं करते । आप मन से कीजिये-प्रयत्न कीजिए, फिर देखिये कि भगवान आपकी सहायता करता है कि नहीं । भगवान झूठा है कि सच्चा है ? भगवान सच्चा है । और कैसा है ? कैसा देखा है आपने ? भगवान को हमने प्रतिच्छाया के रूप में और प्रतिध्वनि के रूप में देखा है । शीशे में आप जैसा अपना चेहरा देखते हैं भगवान हूबहू वैसा ही होता है । भगवान को हमने देखा कि बिलकुल हमारे जैसा है । हमारे जैसा उसका ईमान, हमारे जैसा उसका मन, हमारी जैसी उसकी बुद्धि, हमारे जैसे उसका प्यार- हमारे भगवान का बिलकुल हमारे जैसा है । गुंबज में जो आवाज लगाते हैं, ठीक वही आवाज प्रतिध्वनित होकर सुनाई देती है । इसी प्रकार जो आवाज हम लगाते हैं वही आवाज सुनाई देती है । हम कहते हैं-लीजिए और आप आवाज लगाते हैं कि लाइये भगवान जी आपके पास जो कुछ है हमारे सुपुर्द कीजिए । भगवान भी इसके बदले में आवाज लगाते हैं कि लाइये आपके पास क्या है, हमारे सुपुर्द कीजिए । आप कहते हैं कि हम तो देने वाले नहीं है, भगवान भी कहते हैं कि हम देने वाले नहीं हैं । दोनों में जद्दो जेहद होती है । राम और भरत में राजगद्दी को लेकर लड़ाई हो गयी थी । राम कहते थे कि हमारा भरत इस गद्दी पर बैठेगा और भरत कहते थे कि राजगद्दी पर तो हमारे भाई राम बैठेंगे । दोनों के बीच में जद्दो जेहद होती रही-लड़ाई होती रही । गेंद को दोनों ठोकरें मारते रहे और गेंद यहाँ पड़ी कभी वहाँ पड़ी । हमारे और हमारे भगवान के बीच प्यार की बातें हुई हैं और लड़ाई की बातें भी हुई हैं । लड़ाई इस बात पर हुई है कि भगवान ने बीसियों बार हमसे कहा है कि हमारे पास जो कुछ भी है तू ले ले । हमने कहा-जो कुछ भी हमारे पास है आप लेलें । हम देने की कोशिश करते हैं । भगवान से हमने यह नहीं कहा कि आप हमें यह दीजिए-वह दीजिये, हमारे पास यह कम है हम न तो भिखारी हैं और न दीन-दुर्बल , हम ब्राह्मण हैं और हम तपस्वी हैं । हम शक्तिशाली हैं और इसीलिए हमने भगवान से कहा कि आपको जो कुछ जरूरत है-माँगिये । भगवान ने कहा-क्यों नहीं जरूरत है ? समाज के लिए-देश के लिए क्यों नहीं जरूरत है । दुनिया में जो तहस-नहस मचा हुआ है, विष फैला हुआ है, उसके लिए तेरी हड्डियों की जरूरत है, तप की जरूरत है । हमने कहा-लीजिए इस दधीचि का सब कुछ आपके सामने है ।

भगवान को आपने कैसे देखा ? भगवान को हमने घोड़े-हाथी पर सवार नहीं देखा । हमने भगवान को पायलट की तरीके से देखा और अपने बॉडीगार्ड की तरीके से देखा । भगवान हमारे बॉडीगार्ड की तरीके से चलता है और यह कहता है कि आप जो कहेंगे हम वही करेंगे । आप आगे-आगे चलिए हम पीछे से सँभाल लेंगे । हमारा पायलट आगे-आगे चलता है और कहता है कि देखिये रास्ता साफ है । मैं रास्ता साफ करता हूँ आपके लिए-आप आगे बढ़िये । भगवान इस तरह का है । ऐसा भगवान आप चाहते हों तो आप वही रास्ता अख्तियार करना जो हमने अख्तियार किया है । हमारा जीवन एक वैज्ञानिक अध्यात्म के साथ मिला हुआ है, इसलिए उसका परिणाम भी हमने वैज्ञानिक अध्यात्म जैसा ही पाया है । आपसे भी प्रार्थना है कि आप भी ऐसे ही करना । आप भी वही पायेंगे जो कि हमने पाया है ।

॥ ॐ शांति ॥ 卐

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परम पूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी-

वसंत पर्व १९८६ पर दिया गया विशिष्ट उद्बोधन

ॐभूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो, भाइयो ! वसंत पर्व पर हमें हमेशा नये संदेश मिलते रहे हैं । जिस सत्ता के साथ हमारा बड़ा घनिष्ट संबंध है और जिसकी आज्ञा से हमारा सारा जीवन व्यतीत हुआ है, जिसको हमने अपने आपे का समर्पण किया है, उस समर्पण वाली शक्ति ने हमसे यह वायदा किया था कि वसंत पंचमी के समय पर हर साल का एक कार्यक्रम बना कर भेजा करेंगे । वह सुबह हमको मिल गया है । आप में से कई आदमी वसंत पंचमी पर यहाँ आये होंगे, पर वह भावावेश का समय था । दो वर्ष बाद हम आपको मिले हैं तो भावावेश की ही बातें हमने कहीं और आपको क्या करना है और हमें क्या करना है, इसके संबंध में एक छपा हुआ इश्तहार बाँट दिया । मालूम नहीं आपने ध्यान दिया अथवा नहीं । गुरुजी के साक्षात्कार हो गये-दर्शन कर लिये-बहुत हो गया ।

पिछले दिनों किसी ने यह अफवाह फैला दी थी कि-गुरुजी बीमार पड़े हैं । उन लोगों को यह बताने के लिए कि हमारे शरीर में कोई खराबी नहीं है और न कभी कोई खराबी होगी हमारे शरीर में । अगर कभी हमारी मृत्यु हुई तो आप यह समझना कि गुरुजी का ट्रांसफर हुआ है । किसी महत्वपूर्ण काम के लिए उनको भेज दिया गया है और जो काम अभी हम स्थूल शरीर से करते हैं उसकी अपेक्षा सौगुना अधिक काम कर रहे होंगे । क्योंकि शरीर का बंधन ही ऐसा है कि हमको बहुत दूर तक चलने नहीं देता । इसलिए जो काम अभी हम इस शरीर से नहीं कर सकते, उसकी अगर आवश्यकता पड़ी-गुरुदेव को आवश्यकता पड़ी तो स्थूल शरीर से सूक्ष्म शरीर में बदल जाने के लिए भले से हम कुछ ऐसा करें, लेकिन फिलहाल अभी ऐसी कुछ योजना नहीं है । न हम बीमार हैं और न हमें कोई कष्ट है और न कोई बात है । हम ठीक तरीके से अपनी यह साधना-उपासना कर रहे हैं । हमें सूक्ष्मीकरण के लिए कहा गया था, उस साधना में हम मुस्तैदी से लगे हुए हैं । इस बारे में इतना ही कहना काफी है कि हमारे बारे में आपको कोई चिंता करने की बात नहीं है । चिंता तो आपकी हमको करनी है । आप क्यों करेंगे ? बच्चे माँ-बाप की चिंता क्यों नहीं करेंगे कि पिता जी का यह काम कैसे होगा ? वह काम कैसे होगा ? पिताजी का कर्ज कैसे चुकेगा ? बच्चों को क्या पता ? पिता को ही यह ध्यान रखना पड़ता है कि अगर हम नहीं रहे या आगे चलकर बच्चे बड़े होंगे तो उनको खिलाने-पिलाने का क्या इंतजाम करना पड़ेगा । इनके रहने के लिए मकान का, इनके ब्याह-शादी का क्या इंतजाम करना पड़ेगा ? इनके काम धंधे का क्या इंतजाम करना पड़ेगा । यह चिंता करना बड़ों का काम है । हम बड़े हैं । आपसे उम्र में भी बड़े हैं, विद्या में भी बड़े हैं, ज्ञान में भी बड़े हैं, तप में भी बड़े हैं, भावनाओं में भी बड़े हैं । हम बड़े हैं तो यह हमारा काम है कि आप सब लोगों का ध्यान रखें ।

विगतवर्ष जब वसंत पंचमी का उत्सव हुआ था, तब हमने बहुत सी बातें कहीं थी, पर उनमें से विशेष रूप से ध्यान देने लायक दो बातें खास थीं । एक बात यह है कि-यह युग-संधि का समय है, जिसमें आभी पंदरह वर्ष बाकी हैं सन् २००० आने में । यह खराब समय अभी खतम नहीं हुआ है । पहले सभी समझते थे कि यह खतम हो गया है, पर अभी न तो-प्रकृति प्रकोप खत्म हुए हैं न हारी-बीमारी । हारी-बीमारी के ऐसे-ऐसे चक्कर हैं कि एक दिन में एक-एक गाँव में २२-२३ बच्चों की मृत्यु हो जाती है । कभी-कभी चौपायों में ऐसी बीमारी फैलती हैं कि वे सारे के सारे ढेर हो जाते हैं । कभी-कभी भूकंप आ जाते हैं । अभी-अभी हिन्दुस्तान में इस तरीके से तूफान आये कि लाखों आदमियों को तबाह करके रख दिया । इस तरीके से चीजें पैदा हो जाती हैं और न जाने कहाँ से आ जाती हैं । नेचर-प्रकृति हमसे नाराज हो गयी है । इंसानों का चाल-चलन देखकर प्रकृति ने नाराजगी से अपना बदला चुकाने का निश्चय किया है और वह बराबर बदला चुका रही है और हैरानी पैदाकर रही है ।

एक बात हमने यह कही और आप सबको सावधान किया था कि आप लोग सावधान रहना । तो क्यों साहब ! हमारे सावधान रहने से क्या हो जायगा । मान लीजिए कोई ऐसी बीमरी आ जाय, मुसीबत आ जाय, बाढ़ आ जाय, कोई ऐसा उपद्रव खड़ा हो जाय तो हम क्या करेंगे ? इसीलिए हमने कहा था कि अभी हम आपसे अलग नहीं हुए हैं । अभी हम आप से ज्यों के त्यों जुड़े हुए हैं । हमारी शक्ति के दो हिस्से जरूर हो गये हैं । अभी तक जो शक्ति सीमित थी और गायत्री परिवार की शाखाओं में ही भरती जाती थी, संगठन करने या आयोजन करने या सम्मेलन बुलाने में-शिविर लगाने में खर्च हो जाती थी, अब दो साल की सूक्ष्मीकृत साधना में अपनी शक्ति को इस हिसाब से विकसित किया है कि पचास परसेंट शक्ति से हमारे पास जो अभी थोड़े से २४ लाख व्यक्ति हैं, उनकी हम सुरक्षा कर लेंगे । पचास फीसदी शक्ति हम सुरक्षा में लगायेंगे । आपकी हारी-बीमारी में, घाटे में, दुख में, मुसीबत में, हैरानी में हमारी आधी शक्ति बराबर काम करती रहेगी । इसमें भी आप कमी नहीं पायेंगे, चाहे आप कैसी ही मुसीबत में क्यों न फँसे हो और लोगों से आप हर हालत में नफे में रहेंगे-यह हमारा वायदा है और यह हमारा आप से कहना है । एक और बात हमने यह कही थी कि अब आपको बार-बार हरिद्वार आने और बार-बार हमसे मिलने की आवश्यकता नहीं है । इसका बहुत सीधा सा सरल रास्ता हमने निकाल लिया है । वह यह है कि यदि हमसे मिलने की आवश्यकता हो तो आप दस बार लंबे-

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

लंबे प्राणायाम करना और प्राणायाम करने के बाद में सिर के ऊपर दाहिना हाथ फिराना । हाथ फिराने के बाद में देखना कि जो कुछ भी आपके मन में विचार थे, वह सबके सब बाहर निकल गये और हमारे विचारों का भीतर आना शुरू हो गया । उस वक्त जो विचार उठें उसको यह मान लेना कि यह गुरुजी की बात है-विचार है । यह रविवार के दिन करना चाहिए । हो सके तो नित्य करना चाहिए ।

एक बात हमने यह कही थी कि आपके देखभाल की, आपके सुख-शांति की, आपको आगे बढ़ाने की -ऊँचा उठाने की, आपके दु:ख-दर्दों को कम करने की जिम्मेदारी हमारी है । आपको कोई मुसीबत हो-हैरानी की बात हो तो माता जी से कह देना अथवा जो कोई भी हों यहाँ । हमने सात सदस्यों की एक कमेटी बनायी है-ट्रस्टी बनाये हैं । ये ऐसे हैं जो अपने घर से ही अपना खर्च चलाते हैं, ऊँची योग्यता के हैं । यहाँ के कामों को बड़ी ईमानदारी और जिम्मेदारी से संभालते हैं और हमको यकीन हो गया है कि ये आदमी हमेशा अपनी जिम्मेदारियों को सँभालते रहेंगे । उनके सुपुर्द हमने यह कर दिया है कि जो कोई भी यहाँ आया करें, इनके हाथों लिख कर दे दिया करे वह हम तक पहुँच जायेगा और हम आपका काम कर देंगे । यह हम आप से वायदा करते हैं और आपको बचन देते हैं । हमने आपके लिए अपने व्यक्ति-अपने नुमाइंदे नियुक्त किये हैं जो आपसे संबंधित बातों को ठीक से समझा सकें । जो बातें आपसे, आपके बाल-बच्चों से संबंधित हैं, आपके पैसे से संबंधित है, आपके शरीर से, आपके सुख और दु:ख से संबंधित हैं, उसके बारे में हमारा जो वायदा है जो दायित्व है, उसके बारे में ये आदमी आपको ठीक से समझा देंगे । अपने इन नुमाइंदों को हम आपकी सेवा में भेज रहे हैं ।

एक बहुत बड़ा काम हमने किया है-यज्ञीय परंपरा का पुनर्जीवन । वैसे तो सारी जिंदगी भर हमने बड़े ही काम किये हैं । हमारा जीवन बड़ा है । हमारे ऊपर बहुत बड़ी जिम्मेदारियाँ डाली गयी हैं । दिमाग तो हमारा बड़ा है ही , पर हमारा कलेजा बहुत बड़ा है । इतना कलेजा है कि हाथी का या तो होगा या ह्वेल का । उससे कम भारी कलेजा हमारा नहीं है । हमें वजनदार काम सौंपे गये हैं । हाथी के ऊपर जब वजन रखा जाता है तब भारी वजन रखा जाता है । शेर को छलांग मारनी पड़ती है तो बड़ी छलांग मारता है । इसीलिए हमारे कंधों पर बड़े काम डाले गये हैं । यह जो युग संधि के दिन हैं, इसमें अनेकों काम पूरे करने के लिए हमें सौंपे गये हैं, और उन सौंपे गये कामों को क्या हम अकेले पूरा कर लेंगे ?-यह कहना जरा मुश्किल है । क्योंकि जब रामचन्द्र जी ने रावण को मारा था, तब अकेले उन्होंने मारा हो सो बात कहाँ थीं । उनके साथ में नल-नील थे, जामवंत थे, हनुमान थे, अंगद थे और कितने ही रीछ-वानर थे । सबने मिलकर मारा था । इसी तरीके से सबको मिलाकर हमको एक ऐसा अनुष्ठान करना है जैसा कि पहले-जिस दिन से ब्रह्मा जी ने धरती बनायी थी, उस वक्त से न कभी हुआ था और न कभी होगा ।

एक संकल्प हमारा यह है कि एक लाख यज्ञ करें । एक लाख गायत्री यज्ञ कहाँ होंगे ? हमारी इच्छा है कि एक लाख अलग-अलग स्थानों पर करें ताकि हर गाँव का वातावरण, हर गाँव की सुरक्षा, हर गाँव में हमारा और हमारे गुरुदेव का प्राण इस यज्ञ के माध्यम से जा पहुँचे । यज्ञ एक माध्यम है । जिस तरीके से लाउडस्पीकर हमारी आवाज को पकड़ कर उसे बाहर फैलाने का एक माध्यम है, इसी तरीके से यज्ञ एक माध्यम है जो कि हमारी आवाज को पकड़ रहा है-हमारे गुरुदेव की आवाज को पकड़ रहा है, गायत्री माता की आवाज को पकड़ रहा है । तो गुरुजी आज कल तो पैसे की तंगी है, सूखा पड़ गया है-अकाल पड़ गया है-तूफान आ गया है-कैसे होगा यज्ञ ? बेटे, हमने उस हिसाब से इन यज्ञों को रखा ही नहीं है । जो यज्ञ रखे हैं वे ऐसे हैं कि ज्यादा से ज्यादा स्थानों में हों और उनमें गरीब से गरीब लोग भी भाग लें । यह यज्ञ भीलों में भी हों, अछूतों से भी हों-सब जगह हो जायँ । इस यज्ञ में यह बात रखी है कि गुड़-जो सब घरों में होता है, उस गुड़ में जरा सा घी मिला दीजिए और उनकी बेर जैसी छोटी-छोटी गोलियाँ बना लीजिए। यहाँ से हम अभिमंत्रित की हुई जो हवन सामिग्री भेजेंगे, उसे उन सबके ऊपर-जितनी भी गुड़ की गोलियाँ बनी हुई हैं-उनके ऊपर रख दीजिए और उनसे हवन कर लीजिए । गुरु जी । वेदियाँ कौन बनायेगा ? हमको तो बनाना नहीं आता । जमीन पर चौरस वेदियाँ बनेंगी और उन्हीं पर हवन होगा । यज्ञशाला का सारा सामान हम अपनी जीप गाड़ियों में रखकर भेंजेगे, आपको कुछ नहीं करना पड़ेगा । गुड़ और घी मिलाकर के मुश्किल से एक रुपये लागत आयेगी और उसी से यज्ञ पूरा हो जायेगा । इसमें गरीब आदमी भी एक रुपया खर्च कर सकता है । इसके लिए आप यह भी कर सकते हैं कि पाँच कुण्डीय, नौ कुण्डीय, ५१ कुण्डीय यज्ञ के स्थान पर एक कुण्डीय यज्ञ से काम चला सकते हैं । इसमें यह भी हो सकता है कि आप पाँच कन्याओं को पीले कपड़े-पहना कर भेज दीजिए । वे पाँच कन्यायें आपके नुमाइन्दे के रूप में, पाँच देवियों के रूप में, गायत्री के पाँच मुख के रूप में बैठ जायँगी और वही हवन कर लेंगी । यह छोटा सा हवन है । इस में आपको कोई सामान इकट्ठा नहीं करना है, केवल गुड़ की एक डली और थोड़ा सा घी लायें जिससे बेर के बराबर गोलियाँ बन जायेंगी और उसी से हवन हो जायगा । इसमें एक रुपये की लागत आयेगी । इस तरीके से हम एक लाख स्थानों पर यज्ञ करेंगे और यह यज्ञ आपको कराने हैं ।

इसके लिए आपको पाँच नयी जगह बनानी है । आपको हम पाँच-पाँच गाँवों का सरपंच बना रहे हैं-पाँच पाँच गाँव सुपुर्द कर रहे हैं । आप एक ही जगह पर नहीं रहेंगे, वरन् पाँच जगहों पर काम करेंगे । इस मिशन को इस स्थान पर पाँच जगहों पर फैलाने की कोशिश करेंगे । आपके समीपवर्ती जो गाँव हैं, नगर हैं, उनमें एक-एक मिशन की शाखा स्थापित कीजिए । शाखा स्थापित करने में हमारे दो काम तो पहले से ही चल रहे थे-एक यह कि एक माला गायत्री का जप सबको करना चाहिए । गायत्री चालीसा का पाठ और एक माला का गायत्री जप-यह दोनों काम तो पहले से ही हमने आपके सुपुर्द कर दिये थे । अब इस नये वसंत पंचमी से दो काम और सुपुर्द करते हैं । पहला यह कि आपको नये स्थानों पर पाँच यज्ञ करने हैं । हमको नये स्थानों की जरूरत है । इस बार हमने ५१

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

कुण्डीय या सौ कुण्डीय यज्ञों को कराने की स्पष्ट मनाही कर दी है और कहा है कि अभी मात्र एक कुण्ड का यज्ञ होगा । उसी से हमारा संतोष होगा । सौ कुण्डीय यज्ञों से नहीं बड़े यज्ञों की आवश्यकता अभी नहीं बाद में होगी । तब हम बता देंगे । इससे न उद्देश्य की पूर्ति होगी, न लक्ष्य पूरा होगा और न एक लाख की संख्या पूरी होगी । इसलिए जो भी आप लोग हमारी आवाज को सुन रहे हैं, उन सबका काम व उद्देश्य है कि वे सभी अपने-अपने समीपवर्ती गाँवों में जाकर के यह देखें कि एक-एक कुण्ड का हवन कहाँ-कहाँ होना संभव है । यह बात नंबर एक हो गयी ।

बात नंबर दो यह है कि आपके पास एक प्रचार मंडली होनी चाहिए । प्रचार मंडली का अर्थ यह है कि अब हमने इसके लिए संगीत को माध्यम बनाया है । नारद जी के पास भी संगीत था, शंकर जी के पास भी संगीत था । सरस्वती के पास संगीत था, विष्णु के पास संगीत था । सबने संगीत के माध्यम से प्रचार किया था । हमको अब जो भी व्याख्यान करना है-संगीत के माध्यम से करेंगे-व्याख्यानों से नहीं । व्याख्यानों में वक्ता का प्राण काम नहीं करता, लेकिन जो संगीत हमारे बनाये हुए हैं-हमारे मिशन से बनाये हुए हैं और देव कन्याओं ने गाये हैं, उन्हीं संगीतों में यह प्रभाव होगा कि लोगों को हिला करके रख देंगे और उनके हृदय के भीतरी हिस्सों को छुयेंगे । यह संगीत यहीं से जायेगा और व्याख्यान भी हमारा यहीं से जायेगा । एक-एक यज्ञ में हम अपना वीडियो बनाकर भेजेंगे । बीडियो उसे कहते हैं जो आदमी की तरीके से आवाज भी सुनाता है और शकल भी दिखाता है । वह हमारी और माता जी की शकल भी दिखायेगा और आवाज भी सुनायेगा और देवकन्याओं का गीत भी सुनायेगा । कुँवारी कन्याओं की वाणी में ओजस्विता भी ज्यादा होती है और उसमें प्रभाव भी ज्यादा होता है । उनका भी टैप भेजेंगे और अपना तथा माता जी का भी टैप भेजेंगे-जहाँ-कहीं भी आप एक कुण्ड का हवन करेंगे । सामान्यतया हमने यह आशा की है कि आप पाँच कुण्ड का हवन करेंगे पाँच नये स्थानों पर । हर एक जिम्मेदार आदमी को जिसको हमने शक्ति पीठें कहा है -समर्थ शाखा कहा है, उपशाखा और स्वाध्याय मंडल कहा है उनमें से हर एक आदमी जो हमारा प्रज्ञा पुत्र है-जो हमसे घनिष्ट है, हम चाहते हैं कि वह सौ नये गाँवों में हमको बिठा दे । हजारों गाँव ऐसे हैं जो हमने देखे नहीं । सात लाख गाँव हैं हिन्दुस्तान के जो अभी हमने देखे नहीं । शहरों में हम गये हैं, बड़े कस्बों में गये हैं, पर गाँवों में तो गये ही नहीं । इस बार गाँवों में जाने का हमारा मन है । यह प्रबंध आप कीजिये । अभी हम जो अपने आदमी आपके पास भेज रहे हैं, सिर्फ इस काम के लिए कि आप सब मिलकर के इस तरह का संकल्प लें और सब मिलजुलकर काम करें । एक लाख कुण्ड का-एक लाख वेदियों का हवन हमें करना है जिसमें हमारा भी व्याख्यान होगा, माता जी का भी व्याख्यान होगा और हमारे गुरु का संरक्षण भी होगा और लागत क्या है-एक रुपया । इस तरह का व्यापक स्तर पर आयोजन करने का हमारा मन है । इसके लिए आप जी जान से कोशिश करें ।

यह वर्ष समयदान का वर्ष है । हमने आप लोगों से समयदान माँगा है । लोगों ने कहा था कि हम गुरु जी की हीरक जयंती मनायेंगे । तो आप क्या करेंगे हीरक जयंती में ? हवन करेंगे, जुलूस निकालेंगे ? नहीं-जो हम कहें सो कीजिए और हमारा कहना यह है कि एक गाँव पीछे एक यज्ञ हो एक कुण्ड का या पाँच कुण्ड हो और उसमें पाँच कन्यायें बैठें और उसी में हमारा वीडियो दिखाया जाय । इस तरह एक काम तो हमारा यही है-एक लाख यज्ञों को पूरा करना । हमारा यह संकल्प अधूरा नहीं रह जाय । बाकी संकल्प तो हमारे अधूरे रहे नहीं हैं । चारों वेदों के भाष्य का संकल्प अधूरा नहीं रहा, हजार कुण्डीय यज्ञ का अधूरा नहीं रहा-तब नहीं रहा जब हम वहाँ थे, पर इस समय हम नहीं हैं । इस समय हमारी जगह पर हैं आप, तब पाँच यज्ञों की जिम्मेदारी भी आप सँभालिए और उन यज्ञों को अपने समीपवर्ती गाँवों में कीजिये । वहाँ शाखा स्थापित कीजिए ताकि हमारी शाखायें जितनी भी हों-पाँच गुनी अधिक बढ़ जायँ । अभी २४०० शाखायें हैं । उसमें पाँच का गुणा कर दीजिए तो एक लाख से अधिक हो जायँगी । कम से कम एक लाख स्थानों पर इस तरह गायत्री परिवार का प्रचार करने के लिए-शाखायें स्थापित करने के लिए हमारी इच्छा है और इसलिए आप हमारे इस काम में मदद कीजिए ।

नंबर दो-इसके लिए प्रचारक मंडालियों की आवश्यकता पड़ेगी, ताकि आप प्रत्येक घरों में जा करके हमारा संदेश सुना सकें । इसके लिए आपको अपना तथा प्रत्येक प्रज्ञा पुत्र का-परिवार के हर सदस्यों का जन्म दिन मनाना पड़ेगा । जन्म दिन मनाने में केवल एक कुण्डीय हवन कर लेने भर से काम नहीं चलेगा, वरन् कुछ धूमधड़ाका भी होना चाहिए । इसके लिए संगीत प्रचारकों की जरूरत पड़ेगी । संगीत प्रचारकों के लिए आपको यह करना है कि यहाँ शांतिकुंज में जो युगशिल्पी सत्र चलते हैं उसमें एक आदमी आप भेज दीजिए जो यहाँ से प्रशिक्षण लेकर जाने के बाद में वहाँ के लोगों को प्रवचन करना, हवन करना सिखा देगा, संगीत सिखा देगा । पहले भी युगशिल्पी सत्र में आ चुके हैं लोग, पर तब संगीत पर इतना जोर नहीं दिया गया था । अब नये शिक्षण में हमारा ध्यान संगीत पर है । मध्यकालीन जितने भी संत हुए हैं, उनने संगीत के माध्यम से अपना प्रचार किया है । कबीर ने अपना प्रचार संगीत के माध्यम से किया था । मीराबाई , चैतन्य महाप्रभु आदि ने संगीत के प्रचार से अपना काम किया था । मध्यकालीन सभी संतों ने वाणी के व्याख्यान द्वारा नहीं, बल्कि संगीत के द्वारा प्रचार किया था । तो आपके यहाँ से भी एक मंडली ऐसी होनी चाहिए जो यहाँ से संगीत सीखकर के जाए । इसका नाम हमने वक्ता विश्वविद्यालय रखा है । संगीत और यज्ञ कराना हम सिखा देंगे । इसके लिए आप लोग अपने-अपने यहाँ से एक-एक आदमी ऐसा भेजिये जो जीवंत हो जिसमें जान हो जिसको हम आपके क्षेत्र का अध्यापक बनाकर के भेज सकें । मंडली आपको तैयार करनी है प्रचार आपको करना है, मिशन के विचार आपको फैलाने हैं । इसके लिए गाँव जन्मदिन के समय, तथा त्यौहारों के अवसर पर मीटिंग बुला लीजिए -काम के लोगों को बुला लीजिए । अबकी बार जो भी यज्ञ होंगे, उसमें हमने यह इन्तजाम किया है कि ढाई सौ से ज्यादा आदमी न आयें । क्योंकि हम जो

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

वीडियो भेजेंगे उसमें दो सौ से ढाई सौ आदमी ही आ सकेंगे ।

एक बात और जो करनी है वह यह कि अब हमारा विश्व विद्यालय चलने वाला है । इसमें हम एक लाख व्यक्तियों को पढ़ाने वाले हैं । लेकिन हमारे इस मिशन के लिए हर एक आदमी को शांतिकुंज आना तो मुश्किल है । अत: वह एक नया प्रशिक्षित अध्यापक जो यहाँ से जायेगा वही अपने स्थानीय लोगों को बुलाकर के वही शिक्षण देगा जो हम यहाँ युगशिल्पी सत्र में बुलाकर देते हैं । इस तरीके से देशभर में जितनी भी शाखायें हैं यदि उनमें से दस-दस आदमी भी आजाएँ तो एक लाख आदमी हो जाते हैं । इस तरह के अब तक जितने भी विश्वविद्यालय चले हैं उनमें से किसी में भी एक लाख विद्यार्थी नहीं थे । न किसी आंदोलन में एक लाख व्यक्ति शामिल हुए । घुमाफिरा कर वही चले जाते थे, इसलिए उनके नाम और संख्यायें बढ़ जाती थीं, लेकिन लाख व्यक्ति कभी नहीं रहे । हमारा मन है कि एक लाख व्यक्तियों को हम पढ़ाकर जायँ जिससे वे यों कहें कि गुरुजी ने हमको पढ़ाया था । गुरुजी के हाथ का सर्टीफिकेट हमारे पास है । जो भी आदमी यहाँ युगशिल्पी सत्र में आयेंगे उनको हम सर्टीफिकेट देंगे कि तुमको अध्यापक नियुक्त किया है । इस तरह से एक लाख अध्यापक नियुक्त करने का हमारा संकल्प है । आप लोग इन दो कामों में हमारी मदद करेंगे । अब शांतिकुंज से हम अपने आदमी इसलिए भेज रहे हैं कि जो भी जीवंत आदमी हैं, प्राणवान आदमी हैं वे इस बात का संकल्प लें कि हीरक जयंती वर्ष में कि इस कार्य को हम करेंगे ही । जो भी काम आप करें, उसका पानी लेकर संकल्प कर दीजिये, वह संकल्प हमारे पास आ जायेगा और तब समाधान होगा ।

दो-तीन काम और हैं जो आपको करने हैं । हरीतिमा संवर्धन के लिए कुछ पेड़ भी लगाये जाने चाहिए । जड़ी-बूटी औषधालय हमारे यहाँ है, हम चाहते हैं कि वह भी आपके यहाँ हो जाय । अभी जो हवन सामग्री बाहर से माँगाते हैं, उसके पेड़-पौधे आप अपने खेतों में खुद पैदा कर लें और उसी को कूट-पीस कर प्रयुक्त कर लिया करें । इस तरह के कई काम हैं जो आप कर सकते हैं । आपके पास कमरे हों तो छोटे बच्चों के स्कूल चला सकते हैं । जगह न हो तो आप किराये पर ले लीजिए । किसी से एक कमरा माँग लीजिए और कह दीजिए कि जितने समय तक हमारे काम आयेगा-उतने समय तक मिशन का है, शेष सारे समय आपका है चाहे जैसा उपयोग कीजिए । या फिर कोई धर्मशाला में एक कमरा ले लीजिए । कोई मंदिर टूटा-फूटा हो-उसकी मरम्मत करा लीजिए तो उसका जीर्णोद्धार भी हो जायगा । अब तक २४०० शक्तिपीठें बनाई हैं जिनमें से किसी-किसी में लाखों रुपये लगे हैं । वे हैं तो सही, पर उन्हें अपने स्थान पर रहने दीजिए । अब कुछ ऐसी नयी शक्तिपीठें भी हो सकती हैं जो छप्पर की छायी हुई हों, जिन्हें हर साल नये सिरे से बदल दिया जाय । कुछ ऐसी भी शक्तिपीठें हो सकती हैं जो खपरैल से छायी गयी हों जिन्हें बरसात में ठीक कर लें और उसी से काम चला लिया करें । जब जरूरत हो तो उसी में बच्चों के संस्कार कर लें जन्म दिन मना लें, उसी में अपनी पाठशाला चला लें । या कहीं किसी का एक कमरा माँगलें, इसके लिए हम आपको यकीन दिलाते हैं कि अच्छे उद्देश्यों के लिए वह आपको मिल जायगा ।

इन सब कार्यों के लिए हम अपने कार्यकर्ता भेज रहे हैं कि आप सब वहाँ इकट्ठा होकर यह विचार करें कि गुरुजी ने नये वर्ष के लिए जो संकल्प लिए हैं, उस संकल्प के कई उद्देश्य हैं । उसमें से एक तो यह है कि इन दिनों का जो वातावरण है उसमें प्रलय होने जैसी दुर्घटनायें होना संभव है । दूसरा यह है कि इन बीस सालों में आप लोग किसी मुसीबत में फँस सकते हैं । आपको तो दिखाई नहीं पड़ता, परंतु मुझे दिखाई पड़ता है कि आप किसी मुकदमें में पड़ सकते हैं या कोई और बात हो सकती है । कोई अकाल की चपेट में आ सकते हैं या कोई और कठिनाई उठा सकते हैं जिन्हें देखना हमारा काम है और इसीलिए हम यह आयोजन कर रहे हैं । यह आयोजन हम इसलिए भी कर रहे हैं कि सारे संसार में जो दुर्घटनायें घट रही हैं-चाहे वह ईरान-ईराक का युद्ध हो, फिलिस्तीन और इस्रायल का युद्ध हो, या अमेरिका की नक्षत्र युद्ध योजना हो या परमाणु युद्ध की विभीषिका । हमने पचास फीसदी अपनी शक्ति ऐसे कामों के लिए सुरक्षित रखी है कि जिससे इस वातावरण को शुद्ध करने में और जो आदमी इस तरह की बातें करने के लिए तुले हुए बैठे हैं-आमादा बैठे हैं और जिन्होंने अरबों-खरबों डालर खर्च करके वह साधन बनाये हैं, उनकी भी हम रोकथाम करेंगे । अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए, संसार में शांति स्थापित करने के लिए और आप लोगों की व्यक्तिगत समस्याओं के लिए-इन तीनों उद्देश्यों के लिए यह कार्यक्रम हमने बनाये हैं । हम आशा करते हैं कि आप सब मिलकर संकल्प लेंगे कि यह काम गुरुजी का तो हम कर ही डालेंगे ।

मित्रो ! हम चाहते हैं कि जो वजनदार काम हमारे गुरुजी ने हमारे जिम्मे सौंपा है, उस वजनदार काम को पूरा करने में हम समर्थ हो सकें । समर्थ बनने के लिए "बैकिंग शक्ति" भी होनी चाहिए और वह "बैकिंग शक्ति " आप होंगे । हमारी पीठ पीछे वाली शक्ति आप होंगे । इसलिए इस वर्ष के सौंपे हुए जो काम हैं, उनको आप किस सीमा तक पूरा कर सकेंगे और किस सीमा तक पूरा नहीं कर सकेंगें, यह ध्यान रखना है । हमने हर वर्ष वसंत पंचमी पर संकल्प लिए हैं । अबकी बार हम आपसे संकल्प कराने के लिए लेते हैं कि आप क्या करेंगे और अगले वर्ष आपका कार्यक्रम क्या होगा । बस, यही हमारा उद्देश्य था । इसी के लिए हमने आपको बुलाया था । अब जो यज्ञ होंगे उनमें आप लोगों को एकत्रित होकर के सामूहिक रूप से संकल्प लेने की उम्मीद और अपेक्षा कर रहे हैं । बस यही कहना था आप लोगों से । 卐

ॐ शांति: ।

> ***दुर्भाग्य कभी आप के पीछे हाथ धोकर पड़ जाए , ऐसा लगने लगे कि कोई उपाय प्रगति पथ पर स्थिर रखने में समर्थ नहीं है, चारों ओर असफलता ही असफलता, अंधकार ही अंधकार प्रतीत हो रहा है, तब आप महापुरुषों के ग्रंथ पढ़ें, जीवन ज्योति मिलेगी ।***
>
> ***-पं. श्रीराम शर्मा आचार्य***

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परम पूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

६ अप्रेल १९७६ को शांतिकुंज परिसर में दिया गया उद्‌बोधन

गायत्री मंत्र हमारे साथ साथ

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्

साधना स्वर्ण जयंती वर्ष में हम आपको गायत्री उपासना के साथ साथ विशेष रूप से जो शिक्षण देते हैं वह ध्यान का शिक्षण है । उपासनायें दो हैं नाम और रूप की उपासनायें । नाम और रूप के बिना उपासना हो नहीं सकती यह दो यूनिवर्सल उपासनायें हैं । किसी भी मजहब में चले जाइये व्यक्ति नाम जरूर ले रहा होगा मुसलमान तसबीह पर नाम ले रहा होगा । ईसाई पादरियों को आप माला जपते हुए देखेंगे । आर्य समाजी प्रकाश का ध्यान कर रहे होंगे । अन्य अमुक तरह का ध्यान कर रहे होंगे । नादयोग वाले कान में आने वाली आवाजों का ध्यान कर रहे होंगे । बहरहाल ध्यान जरूर करना पड़ता है । ध्यान के बिना गति किसी की नहीं है । इसीलिए हमने कहा है कि जप के साथ साथ आप ध्यान किया कीजिए । स्थूल ध्यान मूर्ति पूजा के माध्यम से होता है तस्वीरों के माध्यम से होता है, क्योंकि मनुष्य का मानसिक विकास इतना नहीं हो पाया है कि वह बिना किसी फोटोग्राफ के, बिना किसी मूर्ति के किसी चीज का ध्यान कर सके लेकिन जब वह विषय पक्का हो जाता है तब फिर मूर्ति की कोई खास जरूरत नहीं रह जाती । तब हम अपने भीतर बैठे हुए भगवान का साक्षात्कार कर सकते हैं । उसका ध्यान कर सकते हैं ।

ध्यान का क्या मतलब है ? ध्यान का मतलब है कि हमारे जीवन के दो पक्ष हैं । एक पक्ष वह है जो बाहर फैला हुआ पड़ा है । हमारे कानों के सूराख बाहर को हैं और हमारी आँखों के सूराख बाहर को हैं । हम बाहर की चीजों को देख सकते हैं और बाहर कौन बैठा हुआ है कौन जा रहा है, यह भी बता सकते हैं । बाहर की चीजें हमको दिखाई पड़ती हैं, किंतु भीतर की चीजें हमको बिलकुल दिखाई नहीं पड़तीं । तो क्या भीतर कोई चीज नहीं है ? बेटे असल में जो कुछ भी चीज है वह भीतर ही है बाहर नहीं है बाहर केवल दिखाई पड़ती है, पर असल में हर चीज भीतर है जिंदगी कहाँ है ? जिंदगी बाहर नहीं हमारे भीतर है और बुद्धि जिसकी वजह से हम रुपया कमाते हैं, सम्मान कमाते हैं, वह बाहर नहीं हमारे भीतर हैं जिसकी वजह से हम हर चीज कमा सकते हैं । भीतर हमें दिखाई नहीं पड़ता और हम कहते हैं कि हे भगवान, यह आपने क्या मखौल कर दिया मनुष्य के साथ कि बाहर की चीजों की जानकारी दे दी, पर भीतर की चीजों की नहीं दी । भीतर जो चीजें संपत्तियाँ, विभूतियाँ, देवत्व और महानता दबी हुई पड़ी हैं वह हमको दिखाई नहीं पड़तीं । हमको अपना बेटा दिखाई पड़ता है, संपत्ति दिखाई पड़ती है, यह और वह दिखाई पड़ता है, और न जाने क्या क्या दिखाई पड़ता हैं, पर हमको अपना भविष्य नहीं दिखाई पड़ता, आत्मा दिखाई नहीं पड़ती, परमात्मा दिखाई नहीं पड़ता । यहाँ तक कि हमारे भीतर वाले कलपुर्जे तक दिखायी नहीं पड़ते । आँखें तक दिखाई नहीं पड़तीं । भीतर की तो बात कौन कहे बाहर की भी दिखायी नहीं पड़ती अच्छा बताइये आप की नाक कैसी है ? भवें कैसी हैं ? पलकें कैसी हैं ? जब आपको बाहर की चीजें ही नहीं दिखती, केवल इधर उधर की चीजें ही दिखायी देती हैं, तो फिर भीतर की कैसे दिखेंगी ? इसीलिए गरेबान में मुँह डाल करके जब हम भीतर तलाश करते हैं तो उसको ध्यान कहते हैं । अपने भीतर झाँकने का नाम ही ध्यान है ।

ध्यान किसका किया जाता है ? स्वयं का या भगवान का ? बेटे स्वयं तो क्या और भगवान तो क्या दोनों एक ही हैं । स्वयं का विकसित रूप ही भगवान है हमारा विकसित रूप जो है-'शिवोऽहं' 'सच्चिदानंदोऽहं' 'तत्वमसि' 'अयमात्माब्रह्म' 'प्रज्ञानंब्रह्म' है वेदांत के यह सारे के सारे महावाक्य यह बताते हैं कि हमारा परिष्कृत रूप भगवान है । हमारा भगवान हमारा परिष्कृत रूप ही है । डायमण्ड क्या है ? डायमण्ड और कोयले में कोई खास फर्क नहीं है । एकाध इसके एलीमेण्ट्स और एकाध इसके भीतर के जो जर्रे हैं उनमें फर्क पड़ता है, अन्यथा हीरा और कोयला एक ही है । आत्मा और परमात्मा एक है । यह थोड़ा सा सीमाबद्ध है तो वह असीम है । यह अणु है और वह विभु है । यह मायाग्रस्त है तो वह मुक्त है । बस इतना ही फर्क है । अगर हम अपने आपको साफ करलें तो हम उसको प्राप्त कर सकते हैं । इसलिए हम प्रकाश का ध्यान करते हैं, भीतर वाले का ध्यान करते हैं । अपने लक्ष्य का ध्यान करते हैं, जीवन का ध्यान करते हैं । तो गुरुजी आपने इसीलिए सूरज का ध्यान बता दिया है ? हाँ बेटे, वह तो हमने प्रतीक बता दिया है । उसकी चमक देखकर अगर आप यह अंदाजा लगाते हों कि हमारे ध्यान में चमक आ जाती है या नहीं आती अथवा आपके ध्यान में गायत्री माता आ जाती हैं या नहीं आती हैं, तो उससे बनता-बिगड़ता नहीं है । उससे केवल यह बात साबित होती है कि आपके दिमाग की परिपक्व अवस्था आयी कि नहीं । प्रकाश से मेरा मतलब वह नहीं है जो आप समझते हैं । प्रकाश को अध्यात्म में जिस अर्थ में लिया गया है, उस अर्थ से मेरा मतलब है । प्रकाश 'डिवाइन लाइट' लेटेन्ट लाइट' या ज्ञान के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है । यह चमक के अर्थ में प्रयुक्त नहीं हुआ है । चमक का अर्थ ज्ञान है । जिस प्रकाश के लिए हमने कहा है वह है जिस के लिए भगवान से हमने प्रार्थना की है ' तमसोमा ज्योतिर्गमय'। हे भगवान ! हमको अंधकार की ओर नहीं प्रकाश की ओर ले चलिए। अध्यात्म में प्रकाश शब्द कहीं भी प्रयुक्त हुआ है वहाँ ज्ञान के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

ध्यान के लिए जो हमने यह बताया कि आप प्रकाश का ध्यान किया कीजिये, तो कहाँ-कहाँ प्रकाश का ध्यान किया करें ? अभी स्वर्ण जयंती साधना वर्ष में हमने आपको तीन जगह ध्यान करने के लिए कहा है । एक आप मस्तिष्क में ध्यान किया कीजिये । दूसरा अंतरात्मा में हृदय स्थान पर और तीसरा नाभि स्थान पर ध्यान किया कीजिये । हमारे तीन शरीर हैं और तीनों शरीरों के ये तीन केन्द्र हैं । इन तीनों के भीतर प्रकाश चमकना चाहिए । प्रकाश हमारे तीनों शरीरों के भीतर प्रविष्ट होना चाहिए । इसका क्या अर्थ है ? इसका अर्थ यह है कि प्रकाश जब हमारी नसों में आये, नाड़ियों में आये-शरीर में आये तो नाभि में होकर आयें । नाभि में से होकर इसलिए कि माता और बच्चे का जो संबंध सूत्र है वह नाभि से जुड़ा होता है । इसलिए स्थूल शरीर का केन्द्र नाभि को माना गया है । जिस प्रकार माता के शरीर में से उसका रक्त नाभि से होकर हमारे शरीर में आता था और दोनों का संबंध जुड़ा हुआ था, उसी प्रकार भगवान का प्रकाश नाभि में से होकर हमारे शरीर के भीतर आता है । जब वह प्रकाश आयेगा तब आपकी हड्डियाँ चमकेंगी, रक्त चमकेगा, मांस चमकेगा । चमकने से मेरा मकसद यह है कि तब आपके भीतर कर्मनिष्ठा, स्फूर्ति, साहसिकता, श्रम के प्रति प्यार, कर्मों के प्रति प्यार, कर्मयोग के प्रति प्यार, कर्तव्य परायणता के प्रति प्यार उभरेगा । यह कर्मयोग है । कर्मयोग शरीर का योग है । प्रकाश का ध्यान करने वाला कभी ठाली बैठ नहीं सकता । वह सतत् सत्कर्मरत ही रहेगा ।

तीन योग हैं-कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग । प्रकाश के माध्यम से इन तीनों योगों को हृदयंगम करने के लिए मैंने आपको कहा है । भगवान का प्रकाश जब कभी शरीर में आयेगा तो कर्मयोग के रूप में आयेगा और आदमी कर्तव्यनिष्ठ होता हुआ दिखाई पड़ेगा । उसके लिए 'वर्क इज वरशिप' होगा । पूजा कर्म-श्रेष्ठ कर्म, आदर्श कर्म, लोकोपयोगी कर्म, मर्यादाओं से बँधे हुए कर्म-सभी कर्मयोग के अंतर्गत आते हैं जो हमें सिखाते हैं कि जब प्रकाश हमारे शरीर में आता है तो हमारे शरीर की प्रत्येक क्रिया को कर्मनिष्ठ होना चाहिए । परिश्रमी होना चाहिए । यह बताता है कि आदमी को जो प्रकाश का ध्यान करता है उसे हरामखोर और आलसी नहीं होना चाहिए । चोर और हरामखोर मेरी दृष्टि से दोनों बराबर हैं । महाराज जी हमारा बेटा बड़ा हो गया है और खूब कमाता खाता है और हम तो अपनी मौज करते हैं । नहीं बेटे, कामचोर और चोर में तो कामचोर ही बड़ा होता है । मनुष्य के लिए यह सबसे बड़ी गाली है । कामचोर सबसे खराब आदमी है । नहीं गुरुजी हमको तो पेंशन मिलती है और हम मौज करते हैं । नहीं बेटे हम तुझे मौज नहीं करने देंगे । जब तक जिंदा है तब तक शरीर से तुझे कर्म करना पड़ेगा । अपने लिए रोटी खाने-पेट भरने को है, दूसरों के लिए तो नहीं है । उसके लिए कर । गुरुजी ! हमारे बेटे तो पढ़ गये और हम अब निश्चिंत हो गये । तेरे ही तो पढ़ गये समाज के बेटे तो नहीं पढ़े । चल रात को नाइट स्कूल चलाया कर और दूसरों के बच्चों को पढ़ाया कर । इसलिए मित्रो, क्या करना पड़ेगा कि जब वह प्रकाश, जो मैंने जप के साथ-साथ करने के लिए बताया है, अगर वह आपके भीतर नसों में स्फूर्ति के रूप में आये तो जब तक आप जिंदा हैं तब तक हम काम करेंगे, कर्मयोगी बनेंगे, मेहनत करेंगे-मशक्कत करेंगे, श्रेष्ठ काम करेंगे, कर्तव्यों का पालन करेंगे । जो हमारे लिए, हमारे समाज के लिए, देश के लिए, धर्म के लिए सबके लिए कर्तव्यों का बंधन बँधा हुआ है, इसका हम पालन करेंगे । अगर इस तरह की स्फूर्ति और नाड़ी अभ्यास बन जाये तो मैं समझूँगा कि आप कर्म योगी हैं और आपने उस प्रकाश के ध्यान को जो मैंने बताया था-उसे सीख लिया और उसका मकसद समझ गये ।

दूसरा वाला प्रकाश का ध्यान करने के लिए जो मैंने बताया था और यह कहा था कि आप अपने मस्तिष्क में प्रकाश का ध्यान किया कीजिए । आपके मस्तिष्क में-मन में जब प्रकाश आये तब आपको ज्ञानयोगी होना चाहिए । कर्मयोगी शरीर से, ज्ञानयोगी मस्तिष्क से । आपके मस्तिष्क के भीतर जो भी विचार आयें निषेधात्मक नहीं, विधेयात्मक विचार आने चाहिए । अभी तो आप लोगों के मस्तिष्क में विचारों की कितनी भीड़, कितने मक्खी-मच्छर, कितनी वे चीजें जो आपके किसी काम की नहीं हैं, कितने विचार, कितनी कल्पनायें आती रहती हैं । उनका यदि आप विश्लेषण करें तो देखेंगे कि मस्तिष्क में जाने कितने मक्खी-मच्छरों जैसे विचार भरे पड़े हैं । अभी उनमें से एक तो गुस्से का भरा था, एक कामवासना का विचार करता रहा, एक सिनेमा का विचार करता रहा । एक यह विचार करता रहा कि मैंने लॉटरी के तीन टिकट खरीदे हैं उसमें से तीन-तीन लाख रुपये तो मिल ही जायेंगे । उन रुपयों से क्या-क्या करूँगा-अमुक काम करूँगा, अमुक बच्चे को, अमुक को दूँगा-आदि बेसिर पैर की सारी की सारी बातें सारे के सारे ताने बाने बुन रहा है । इससे आपकी सारी शक्तियाँ निरर्थक होती जा रही हैं । यह सब बेकार की कल्पनायें हैं जिनके पीछे न कोई तारतम्य है, न वास्तविकता है और न इनसे आपको कुछ लेना देना है । इस प्रकार की कल्पनायें निरर्थक और अनर्थ मूलक ही होती है । सार्थक कल्पनायें अगर आपके मस्तिष्क में आयीं होतीं, क्रमबद्ध रूप से आपने विचार किया होता तो आपमें से अधिकांश व्यक्ति वाल्टेयर हो गये होते, रवीन्द्रनाथ टैगोर हो गये होते अगर आपने अपनी कल्पनाओं को क्रमबद्ध बनाया होता, दिशाबद्ध बनाया होता, उत्कृष्ट और सक्षम बनाया होता । हमारी एक ही विशेषता है कि हम विद्वान हैं । इसलिए विद्वान हैं कि हमने अपने चिंतन की धाराओं को सीमाबद्ध-दिशाबद्ध करके रखा है । हमारा चिंतन अनावश्यक बातों में कभी भी नहीं जाता । जब कभी जायेगा क्रमबद्ध बातों में जायेगा, दिशाबद्ध बातों में जायगा, आदर्श बातों में जायगा और जो संभव है उनमें जायगा । हमारा मस्तिष्क इतना ताना-बाना बुनता है कि वह एक

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

वास्तविकता और व्यावहारिकता पर टिका रहता है । जो अवास्तविक है, अव्यवहारिक है और जो अनावश्यक है-ऐसे सारे के सारे विचारों को हम बाहर से ही मना कर देते हैं कि-'नो एडमीशन' यहाँ नहीं आ सकते, बाहर जाइये । आपको दाखिला हमारे मस्तिष्क में नहीं मिल सकता ।

मित्रो, ज्ञानयोग उस चीज का नाम है जिसमें कि अपने भीतर चिंतन में जो अवांछनीय तत्व घुलते चले जाते हैं, उनको हम हिम्मत के साथ रोकें और जिन चीजों की आवश्यकता है, जो चिंतन हमारे भीतर आना चाहिए उस चिंतन को बुला करके-निमंत्रित करके अपने भीतर स्थिर करें, तो हमारा मस्तिष्क वह हो सकता है जिसे हम ज्ञान का भंडार कह सकते हैं । विद्या की दृष्टि से, ज्ञान की दृष्टि से, सुलझाव की दृष्टि से एक से एक बहुमूल्य चीजें इसके भीतर से निकलती हुई चली आ सकती हैं । ज्ञान की गंगा हमारे मस्तिष्क में से वैसी ही बह सकती है जैसे कि शंकर जी के मस्तिष्क में से प्रवाहित होती थी । हमारे मस्तिष्क में संतुलन का चन्द्रमा उसी तरीके से टँगा रह सकता है जैसे कि शंकर भगवान के मस्तिष्क पर टँगा हुआ था और हमारा तीसरा नेत्र-विवेक का नेत्र, दूरदर्शिता का नेत्र उसी तरीके से खुल सकता है जैसे कि शंकर भगवान के मस्तिष्क पर खुला हुआ था । मित्रो, यह ज्ञानयोग की साधना है । प्रकाश चमकना चाहिए हमारे ज्ञान को और विचारों को संतुलित और सुव्यवस्थित करने के लिए । अगर आपको ऐसा ज्ञान आये तो मैं समझूँगा कि हमने आपको अनुष्ठान में और साधना स्वर्ण जयंती वर्ष में सम्मिलित करके जिस ध्यान की बाबत बताया है उसको आपने जान लिया और उसका व्यावहारिक स्वरूप समझ गये । अगर आप उसका व्यावहारिक रूप नहीं जान पाये और कल्पना लोक में ही उड़ते रहे तो फिर ख्वाब ही देखते रहेंगे-सपने ही देखते रहेंगे । अध्यात्म सपना नहीं व्यावहारिक है । यह हमारे इसी जीवन से ताल्लुक रखता है और आज से ताल्लुक रखता है । ख्वाबों का अध्यात्म नहीं है, सपनों का अध्यात्म नहीं है । ख्वाबों का-सपनों का भगवान नहीं है । भगवान है तो वह जो हमारे आज के-अभी के जीवन में आना चाहिए और हमारे व्यक्तित्व के रूप में प्रकट होना चाहिए । हमारे भीतर से प्रकट होना चाहिए ।

मित्रो, तीसरा वाला प्रकाश का जो ध्यान हमने बताया है, वह अंतःकरण का प्रकाश है, विश्वासों का प्रकाश है, आस्थाओं का-निष्ठाओं का-करुणा का प्रकाश है । जो चारों ओर प्रेम के रूप में प्रकाशित होता है । हम प्रेम के रूप में भक्ति योग करते हैं । भक्तियोग से क्या मतलब होता है ? भक्तियोग का मतलब है-मोहब्बत । जिस तरह से हम व्यायामशाला में अभ्यास करते हैं और उससे अपने शरीर और कलाइयों को मजबूत बनाते हैं और फिर उसका हर जगह इस्तेमाल करते हैं । सामान उठाने में, कपड़े धोने में, बिस्तर उठाने में करते हैं । हर जगह काम में लाते हैं-किसको ? जो व्यायामशाला में ताकत इकट्ठा की थी उसको । इसी तरीके से हम भगवान के साथ मोहब्बत शुरू करते हैं, प्यार शुरू करते हैं, भक्ति करते हैं । भगवान की भक्ति के माध्यम से जो हम ताकत इकट्ठा करते हैं, उस मोहब्बत को हर जगह फैल जाना चाहिए । हम अपने शरीर को मोहब्बत करें ताकि इसको हम अस्तव्यस्त न होने दें-नष्ट-भ्रष्ट न होने दें । हम अपने शरीर को प्यार करें ताकि वह निरोग होकर के दीर्घजीवी बन सके । यह हमारा शरीर के प्रति प्यार है । यह भक्ति है शरीर के प्रति भगवान की । मन के प्रति हमारी भक्ति यह है कि हम पागलों की तरीके से अपने मन-मस्तिष्क को खराब न कर दें । यह देव मंदिर है और इतना सुंदर मंदिर है कि हमारे विचारों की क्षमता सूर्य की क्षमता के बराबर है । इसको हम असंतुलित न होने दें । हम अपने आप से प्यार करें । अपनी जीवात्मा से प्यार करें ।

जीवात्मा ! जीवात्मा की तो हमने इतनी उपेक्षा की है कि यह विचारी कराहती रहती है और यह पूछती रहती है कि दोस्त हमारा क्या होना है ? बेटे हमारा क्या होना है ? यह पूछते-पूछते वह बूढ़ी हो गयी । बुढ़िया पूछती रहती है कि बेटा हमारा भी कुछ होना है क्या ? और आप कहते रहते हैं कि अरे बुढ़िया । तू तो मरने वाली है । तेरा तो यही बद्रीनाथ है तू कहीं मत जा यहीं पड़ी रह । यह बुढ़िया जो है हमारी जीवात्मा है और यह ऐसे ही कसकती-कराहती रहती है । वह अंधी हो गयी है, आँखों से दिखायी नहीं पड़ता जीवात्मा को । अपनी जीवात्मा से यदि हमें प्यार रहा होता तो बेटे वह जवान हो गयी होती । जीवात्मा से मोहब्बत अगर हमें होती तो वह इतनी प्रचंड और प्रखर हो गयी होती कि हम साक्षात् भगवान के रूप में काम आते । पर हमारी जीवात्मा मर गयी क्योंकि हम उससे प्यार नहीं करते । हम किसी से प्यार करते हैं क्या ? नहीं, हम किसी से प्यार नहीं करते । बीबी से प्यार करते हैं ? नहीं ! बीबी के लिए तो हम जोंक है । खून की प्यासी जोंक जिससे चिपकती है उसका खून पी जाती है । औरत के लिए तो हम जोंक हैं । उसकी जवानी हमने चूस ली । उसको छूँछ बना दिया । पचासों बीमारियों की वह मरीज बन गयी है । उसके पास जो कुछ भी था, अपने माँ-बाप के घर से गुलाब का सा शरीर लेकर आयी थी हमने उसको वासना की आग में जला दिया । वह जली हुई औरत कराहती-कसकती-सिसकती हुई पड़ी रहती है । जल्लाद छुरे लेकर के जिस तरह से मारता है, हमने भी अपनी औरत में इतने छुरे मारे इतने छुरे मारे कि सारा का सारा खून निकाल करके फेंक दिया । बच्चे पर बच्चा पैदा करते रहे और वह चिल्लाती रही कि हमारी हड्डिया इस लायक नहीं है और हमारे पास मांस उतना नहीं है, कृपा कीजिये अब हम बच्चा पैदा नहीं कर सकते और आप हैं कि बच्चे पैदा करते चले गये । वह हजार बीमारियाँ लेकर के कभी हकीम जी के यहाँ चक्कर काटती है कभी आचार्य जी के यहाँ चक्कर काटती है और कहती है कि गुरुजी यह बीमारी है, वह बीमारी है । अगर आपने अपनी स्त्री को प्यार किया होता तो उसको पढ़ाया होता

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

शिक्षा दी होती, दीक्षा दी होती । उसके स्वास्थ्य की रखवाली की होती और उसको सुयोग्य बनाया होता । उसको विकसित किया होता और श्रेष्ठ बनाया होता । पर अब तो वह किसी काम की नहीं बची ।

प्यार है आपके पास ? भक्ति है आपके पास ? नहीं है । अगर भक्ति और प्यार रहा होता तो आपने अपने माँ-बाप की सेवा की होती । बहिन-भाइयों की सेवा की होती । अपने बच्चों की सेवा की होती । नहीं, गुरुजी हमने तो की है । बेटे आप सेवा करना नहीं जानते । प्यार करना जानते ही नहीं हैं । आप तो एक ही बात जानते हैं -पैसा । बेटे को पैसा दे जा । अरे क्यों पड़ा हुआ है इन बच्चों के पीछे । इनका भविष्य खराब करने के लिए पैसा जमा करता चला जा रहा है, क्या इनको शराबी बनायेगा, अय्यास बनायेगा ? दुराचारी बनायेगा ? क्या बनायेगा ? नहीं, महाराज जी मैं तो पैसा छोड़ करके जाऊँगा , बेटे को देकर के जाऊँगा और वह सारी की सारी जिंदगी मौज करेगा । बेटे वह मौज नहीं अपनी जिंदगी खराब करेगा और सबका सत्यानाश करेगा । प्यार, मित्रो किसे कहते हैं, आप जानते नहीं हैं । प्यार एक ही चीज का नाम है जिसमें आदमी को दिया जाता है । प्यार का अर्थ देना होता है । जिसको भी हम प्यार करते हैं-उसको हम कुछ दिये बिना नहीं रह सकते । हम बच्चे को प्यार करेंगे तो उसको कुछ देंगे । जिस किसी को भी प्यार करेंगे उसको हम देंगे । भक्तियोग का अर्थ है-दया, भक्तियोग का अथ है-करुणा, भक्तियोग का अर्थ है-प्रेम, भक्तियोग का अर्थ है-सेवा । नहीं महाराज जी सेवा का अर्थ होता है-मूर्ति पर टन-टन घंटी बजा दी, बस हो गयी नवधा भक्ति । तो यही है तेरी नवधा भक्ति-कौन सी-'पाद सेवनम् पंखाझलनम्'-पाद सेवन और पंखा झलने को ही नवधा कहता है । जो बातें भक्ति की हैं उनसे तो हजारों मील दूर भागते रहते हैं और स्वांग करते रहते हैं-खेल-खिलौने बनाते रहते हैं । दंड-कमंडल पेलते हैं और भगवान को भी धोखा देते हैं और अपने को भी धोखा देते हैं और कहते हैं कि नवधा भक्ति करते हैं । बेटे, इसे नवधा भक्ति नहीं कहते ।

मित्रो, क्या करना पड़ेगा ? भक्तियोग के उस वास्तविक स्वरूप को समझना पड़ेगा जिसके लिए हमने आपको बताया था कि आप प्रकाश का ध्यान किया कीजिए । प्रकाश का ध्यान करेंगे तब फिर आपको वहाँ चलने का मौका मिल जायेगा जहाँ कि 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' की बात बतायी थी । एकाग्रता ध्यान का एक उद्देश्य है । बिखराव को रोकना भी कह सकते हैं, क्योंकि हमने अपने आपको सब जगह बिखेर दिया है । यदि हमने अपने आपको एक लक्ष्य पर केन्द्रीभूत किया होता तो बंदूक की नली में से बारूद जिस तरीके से एक दिशा में चली जाती है और लक्ष्य भेद करने में सफल होती है, हम भी अपने जीवन लक्ष्य में सफल हो गये होते । अर्जुन ने अपने बिखराव को एक केन्द्र पर इकट्ठा कर लिया था । द्रौपदी-स्वयंवर में जब वह गया था तो द्रोणाचार्य ने लोगों से पूछा था कि क्या दिखाई पड़ता है ? किसी ने कहा-मछली की पूँछ , तो किसी ने कहा-मछली की टाँग, मछली का पेट । तो आचार्य द्रोण ने कहा-आप मछली का निशाना नहीं बेध सकते , भागिये यहाँ से । फिर अर्जुन से पूछा-कि आपको क्या दिखाई पड़ता है ? अर्जुन ने कहा-हमें एक ही चीज दिखाई पड़ती है और वह है मछली की आँख । तो मारिये निशाना और सफलता का वरण कीजिये । मित्रो, असंख्य दिशाओं में फैला हुआ हमारा मस्तिष्क कभी सफलता नहीं पा सकता। इसे एक दिशा में इकट्ठा कीजिये ।

यह ध्यान जो हम आपको बताते हैं-मेडिटेशन कराते हैं और कहते हैं कि अपने मन का बिखराव-फैलाव रोकिये । फैलाव के कारण न आपका विद्या पढ़ने में मन लगता है, न स्वास्थ्य संवर्धन में कभी मन लगता है । हर समय बिखराव ही बिखराव । यह जो मन की अस्त-व्यस्त स्थिति है, इसको आप इकट्ठा कीजिए भगवान के माध्यम से, जप के माध्यम से, ध्यान के माध्यम से और प्रत्येक काम को जब करना हो तो इतना तीखा अभ्यास डालिए कि जब जो काम करना पड़े उसी में तन्मय हो जायें । सांसारिक कार्य में भी और भगवान के कार्य में भी । यह एकाग्रता अध्यात्मिकता का गुण है । आप जब भी जो भी काम करें उसमें इतने तन्मय हो जायें कि 'वर्क इन वर्क' 'प्ले इन प्ले' अर्थात् जब आप खेलें तो इस कदर खेलें कि खेल के अतिरिक्त और कोई चीज ध्यान में ही न रहे और जब आप काम करें तो इस मुस्तैदी से काम करें कि काम के अलावा आपको कोई दूसरी चीज दिखाई ही न पड़े । इस तरह की तन्मयता के साथ किये गये काम सफलता के उच्चशिखर तक पहुँचा देते हैं । मित्रो, तन्मयता हमारे जीवन का वह वास्तविक स्वरूप होना चाहिए जो वैज्ञानिकों के पास होता है । वैज्ञानिकों में और साधारण बी. एस. सी. में कोई विशेष फर्क नहीं पड़ता-दोनों एक जैसे होते हैं । वैज्ञानिक उसे कहते हैं जो अपने रिसर्च कार्य में जब लगता है तो इतना गहरा डूबता हुआ चला जाता है जैसे मोती ढूढ़ने के लिए पनडुब्बा सागर में गहराई तक चला जाता है और उसको बीन करके ले आता है । यह एकाग्रता का चमत्कार है । आपको एकाग्रता केवल भजन में ही नहीं लानी है, वरन् हर काम में इसका अभ्यास करना है । एकाग्रता का अभ्यास न होने के कारण ही सदैव यह शिकायत बनी रहती है कि गुरुजी हमारा मन भजन पूजन में नहीं लगता । तो क्या किसी काम में आपकी एकाग्रता होती है ? हर काम में बिखराव है । आप अपने मन को निग्रहीत करना सीखिये । जब जो काम करना हो तब उसमें इतनी मुस्तैदी से तन्मय होना सीखिये ताकि आप जब भजन करना शुरू करें तो भजन में भी उतनी तन्मयता हो जाये जितनी एक योगी की होती है यदि आपने प्रकाश का ध्यान करना सही तरीके से सीख लिया तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आप वह सब कुछ प्राप्त कर सकेंगे जो एक अध्यात्मवादी को प्राप्त करना चाहिए ।

ॐ शांति: ॐ

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

धारावाहिक विशेष लेखमाला-१५

गायत्री जयंती पुण्यतिथि पर विशेष

परमपूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

गायत्री रूपी वटवृक्ष जिनकी ब्राह्मणत्व रूपी उर्वर भूमि में फलित हुआ

परमपूज्य गुरुदेव का महाप्रयाण आज से चार वर्ष पूर्व इन्हीं दिनों गायत्री जयंती के दिन हुआ था, जब उनने अस्सी वर्ष जिये गये अपने जीवन के दृश्य रूप को समेटकर स्थूल-दृश्य काया के बंधनों से मुक्त हो स्वयं को उस महाविराट से जोड़ लिया था, जिसका दिग्दर्शन उन्हीं की सूक्ष्म व कारण सत्ता के रूप में आज सभी को हा रहा है । सोलहवें चित्रकूट अश्वमेध यज्ञ के समापनवेला में लिखे जा रहे इस विशेष लेख में पूज्यवर के ब्राह्मण रूप में जिये गये जीवन के विशिष्ट क्षणों के माध्यम से ब्राह्मणत्व की वह चिंतन परक व्याख्या है, जो आज समाज में तथा कथित बुद्धि जीवियों-जातिवाद की संदेहभरी राजनीति करने वाले क्षुद्रमना व्यक्तियों की जिव्हा पर विराजमान है । ब्राह्मण क्या है ? कैसा होता है ? कैसे हर कोई बन सकता है ? उसका दार्शनिक विवेचन इस पूर्वार्ध में पढ़ें । उतरार्ध में हम उनके जीवन के व्यावहारिक पहलुओं का ब्राह्मणत्व के परिप्रेक्ष्य में वह दिग्दर्शन करायेंगे, जो हम सबने इन्हीं चर्मचक्षुओं से देखा है ।

"जड़ें जमीन में न हों, ऐसे पेड़ की कल्पना करना कठिन है । ठीक इसी तरह ब्राह्मणत्व विकसित किये बगैर गायत्री साधना के चमत्कारी परिणाम हथियाने की सोच बेकार है । ब्राह्मणत्व ही वह आधार है वह उर्वर भूमि है जिसकी गोद में गायत्री का वट बीज अपनी चमत्कारी परिणति प्रस्तुत करता है । परमपूज्य गुरुदेव के जीवन में हम सबने गायत्री महाशक्ति की जिन आश्चर्यजनक शक्तियों को देखा, जाना, अनुभव किया, लाभान्वित हुए , इसके रहस्य का खुलासा करते हुए उन्हीं के शब्द हैं-"हमारा जीवन प्रयोग प्रत्यक्ष है । हमने सारे जीवन ब्राह्मण बनने की साधना की । इसके लिए पल-पल तपे, इंच-इंच बढ़े । जिंदगी में यज्ञोपवीत संस्कार का वह क्षण कभी नहीं भूला जब महामना मदनमोहन मालवीय ने गायत्री महामंत्र सुनाने के साथ ही कहा था "गायत्री ब्राह्मण की कामधेनु है"। "ब्राह्मण जन्म से नहीं जीवन साधना से बना करते हैं । इस तथ्य को न समझने वाले छुटपुट पूजा पत्री करने और उलट-पलटी माला खिसकाने के सहारे लंबे चौड़े स्वप्न देखते और विफल-मनोरथ, निराश, असफल बने रहते हैं ।"

सामान्य क्रम में यह सत्य किसी को कबीरदास की उलटबाँसी जैसा लग सकता है । हो भी क्यों न ? ब्राह्मण घर में जन्म लेने, ब्राह्मण कहलाने के बावजूद-ब्राह्मण बनने का उपदेश किस अनबूझ पहेली से कम है । इस उलझन को सुलझाते हुए उनके शब्द हैं- "ब्राह्मणत्व एक साधना है । मनुष्यता का सर्वोच्च सोपान है । इस साधना की ओर उन्मुख होने वाले क्षत्रिय विश्वामित्र और शूद्र ऐतरेय भी ब्राह्मण हो जाते हैं । साधना से विमुख होने पर ब्राह्मण कुमार अजामिल और धुंधकारी शूद्र हो गए । सही तो है जन्म से कोई कब ब्राह्मण हुआ है । ब्राह्मण वह जो समाज से कम से कम लेकर उसे अधिकतम दे । स्वयं के तप, विचार और आदर्श जीवन के द्वारा अनेकों को सुपथ पर चलना सिखाये ।"

इसे न समझ पाने के कारण बहुधा लोग भ्रमित होते रहते हैं । बहुत से इसका नाम सुनकर गर्वित हो उठते हैं । अपनी जाति-दंभ में फूल उठते हैं । अनेकों के चेहरों पर 'ब्राह्मण ' शब्द तिरस्कार और उपेक्षा के भावों को घना कर देता है किंतु इन ढेर सारे भावों का उद्दीपन सिर्फ गलत अवधारणा का परिणाम है । यदि अवधारणा सही होती तो वैदिक वाङ्मय के पारिभाषिक शब्दों का सम्यक ज्ञान होने पर इन विवादों का कोई फेर न पड़ता । प्राच्यविद् आई. ए. रोजेट ने भी अपनी रचना 'वैदिक इण्डिया' में इस तथ्य को स्वीकारा है । उनके अनुसार यह शब्द जाति कुल, गोत्र, रूप, रंग, का द्योतक न होकर एक मनोवैज्ञानिक अवस्था का द्योतक है । यह विकसित व्यक्तित्व की विशेष अवस्था है । इसका ठीक-ठीक समानार्थी शब्द जब यहीं के प्राचीन अर्वाचीन चिंतन में नहीं है, तब पश्चिम के रीते कोश से कुछ आशा करना व्यर्थ है ।

वैसे भी पश्चिमी मनोविज्ञान ने ज्यादातर रोगियों की छान-बीन की है । बीमार, भग्न मानसिकता इन विचारकों के कार्य की सीमा रेखा बन गई । स्वस्थ लोगों के अभाव में उनकी सारी खोजें रोग अध्ययन पर आधारित हैं और एक स्वस्थ व्यक्ति नितांत अलग होता है अस्वस्थ व्यक्ति से । फ्रायड का कभी सामना नहीं पड़ा स्वस्थ व्यक्तित्व स । पड़ता भी क्यों ? सही सलामत आदमी को क्या गरज पड़ी है वैद्य डाक्टरों के पास जाने की । इसी कारण उसने समूचे व्यक्तित्व को मुख, गदा, लिंग प्रध । काम प्रसुप्ति एवं जननांगीय अवयव में समेट दिया । यही हाल उस जमे

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अनेकों का है । इनका विवेचन देखने से लगता है जैसे आदमी के जीवन में कामुकता के सिवाय और कुछ बचा ही नहीं । लेकिन इस सिद्धांत रचना में उसकी गलती भी क्या ? यदि मानसिक रूप से बीमार न हो तो उसे मनःचिकित्सक के पास जाने की क्यों सूझेगी ? यही कारण है, फ्रायड, एडलर, जैनेव इन सभी ने अपने सिद्धांतों की इमारत बीमार मन की जमीन पर खड़ी की ।

समग्रता के परिप्रेक्ष्य में देखने पर समूचा व्यक्तित्व-परक अध्ययन तीन वर्गों में बँटा दीखता है । एक रोगात्मक, सारा पश्चिमी अध्ययन इसी खाँचे में समा जाता है । केवल अभी-अभी इधर कुछ संपूर्ण धारणाएँ मजबूती पकड़ती जा रही हैं, जो कि स्वस्थ व्यक्ति के बारे में सोचती हैं । लेकिन वे एकदम आरंभ पर ही हैं । पहले कदम भी नहीं उठाये गये । दूसरे प्रकार के अध्ययन वे जो स्वस्थ व्यक्ति के बारे में सोचते हैं । स्वस्थ मन पर आधारित हैं । ये हैं पूरब के मनोविज्ञान पर-बौद्ध, पतंजलि, झेन, सूफी-इन्होंने इस पर गहरी खोज की हैं । तरह-तरह की साधना प्रणालियों का विकास यहाँ देखने को मिलता है । विकासमान व्यक्तित्व तमाम सारी अतीन्द्रिय क्षमताओं की चर्चा यहाँ सुनने को मिलती है । कुल मिलाकर इनकी मदद व्यक्तित्व विकास की पूर्णता पाने के लिए है ।

फिर एक तीसरा प्रकार है, जिसे गुरजिएफ 'परम मनोविज्ञान' कहता है । इसकी दशा अविकसित है । इसमें विकास की पूर्णता पाये हुए व्यक्तित्वों का अध्ययन करने की चेष्टा हैं । श्री अरविंद की पुस्तक 'सीक्रेट ऑफ द वेद' में वैदिक ऋषियों के इन्हीं प्रयासों पर संकेत हैं । उनका खुद का भी थोड़ा-बहुत प्रयास है । ब्राह्मणत्व की साधना के चरम शिखर पर पहुँचने वाला कैसा होगा ? यहीं पर उसकी एक झलक देखने को मिलती है ।

स्वस्थ व्यक्तित्व को अगर बखूबी जाँच करें, उसकी विकास यात्रा के आरंभिक विंदु की ओर देखें तो वह अवस्था है जड़त्व की । [illegible] उनको घेरे रहता है [illegible] कारण इनको न तो सोचने [illegible] करता है और न कुछ करने [illegible] और कर्म दोनों से [illegible] राक्षस है इनका इसे पहचानने [illegible] का उपाय सिर्फ एक है [illegible] । श्रम का कुठार ही इस तमस् की कारा को तोड़ने में सक्षम है । इसे जोर पकड़ने करने का मतलब है ब्राह्मणत्व की ओर उन्मुख होना ।

श्रम होगा तो अर्जन होगा । फिर शुरूआत भले शरीर करे पर साथ तो मन को भी देना पड़ेगा । कर्म और चिंतन इन दोनों पैरों के बिना ब्राह्मणत्व की राह पर कैसे चला जा सकेगा । इस अर्जन की अवस्था में होता है [illegible] का जागरण । कामनाओं-इच्छाओं का उदय, अतृप्ति की जलन का अहसास इसी अवस्था की देन है । अर्जन का सदुपयोग अपने लिए नहीं औरों के लिए हो । इस भावना का उभार धीरे-धीरे व्यक्तित्व को उस धरातल पर लाकर खड़ा कर देता है जहाँ वह अनेकों को संरक्षण देने लगता है ।

मनुष्य में कर्म, चिंतन और भाव तीनों का ही विकास ठीक ठीक हो सके इसी का विज्ञान विधान गायत्री मंत्र है । इसे ऋषियों द्वारा अन्वेषित ऐसी वैज्ञानिक पद्धति के रूप में जाना जा सकता है-जिसका प्रयोग मानवीय व्यक्तित्व में अंतर्निहित समस्त शक्तियों को जगा सके और उसे पूर्णता दे सके । इस तरह ब्राह्मणत्व और गायत्री एक ही सिक्के के दो पहलू हैं । एक की चाहत दूसरे का प्रयोग करने के लिए प्रेरित करती है । दूसरे का प्रयोग पहले की प्राप्ति कराता है ।

आधुनिक युग में परम पूज्य गुरुदेव ने अपने जीवन में इस गंभीर प्रयोग की सफल साधना की । निष्कर्ष में उन्होंने कहा- [illegible] । की तुलना अमृत, पारस और कल्पवृक्ष से की गई है । इनके [illegible] के संपर्क में आकर मनुष्य अपने वास्तविक [illegible] का-बल और महत्व का, पक्ष और प्रयोजन को ठीक तरह समझ लेता है । इस आस्था के आधार पर विनिर्मित [illegible] र्य-पद्धति को [illegible] रहने पर वह ब्राह्मण बन जा[illegible] ही लौकिक रूप में उस[illegible] परिस्थितियों का जीवन जं[illegible] ब्राह्मण की आस्थाएँ एवं [illegible] इतने ऊँचे स्तर की होती हैं [illegible] निवास स्थान अंतःकरण में निर्झर झरने जैसा आनन्द [illegible] उपलब्ध होता रहता है ।

गायत्री निःसंदेह पारस [illegible] जिसने उसे छुआ वह लोहे से [illegible] गया । गुण, कर्म और स्वभाव में सहज उत्कृष्टता उत्पन्न करना इस [illegible] प्रतिफल है । जिसकी आंतरि[illegible] विकसित होगी, उसकी बाह्य [illegible] निखर होना नितांत स्वाभाविक [illegible] निखर प्रतिभा जहाँ कहीं भी होगी [illegible] सफलताएँ और समृद्धियाँ [illegible] सामने खड़ी दिखाई देंगी । [illegible] को महान बनाने की सामर्थ्य औ[illegible] नहीं केवल अंतरंग की महत्ता [illegible] और स्वभाव की उत्कृष्टत[illegible] । गायत्री का तत्वचिंतन उसी [illegible] बढ़ाता और सँवारता है । [illegible] उसे पारस कहने में कोई आ[illegible] । इसे पाकर अंतरंग ही हर्षा[illegible] निमग्न नहीं रहता, बहिरंग [illegible] स्वर्ण जैसी आभा से दीप्तिम[illegible] है । इतिहास का पन्ना [illegible] इस प्रतिपादन से भरा पड़ा है [illegible] इस तत्वज्ञान को अपनाकर कितने [illegible] और कुरूप लौह खण्ड स्व[illegible] जैसे बहुमूल्य, महान, अग्रणी एवं [illegible] बनने में सफल हुए हैं ।

कल्पना की ललक और [illegible] ही मानव जीवन का सबसे [illegible] आकर्षण है । कल्पना लोक [illegible] उड़ाने वाले ही कलाकार व[illegible] सरसता नाम की जो अनुभू[illegible] तरंगित, आकर्षित एवं उल्लसि[illegible] रहती हैं, उनका निवास कल्प[illegible] हो है । भावनाओं में ही [illegible] उद्गम है । आहार निद्रा से [illegible] तृप्ति तक की सामान्य शारीरि[illegible] ये मनोगम्य तब लगती हैं, [illegible] सुव्यवस्थित मानवी[illegible] तारतम्य जुड़ा हो अन्यथा [illegible] और भार रूप क्रियाकलाप [illegible]

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

जाती हैं । उच्च कल्पनाएँ अभावग्रस्त असमर्थ जीवन में भी आशाएँ और उमंगें संचारित करती रहती हैं । संसार में जितना शरीर संपर्क से उत्पन्न सुख है । उससे लाख-करोड़ गुना कल्पना, विचारणा एवं भावना पर अवलंबित है । इस दिव्य संस्थान को सुव्यवस्थित करने और परिस्थितियों के साथ ठीक तरह ताल-मेल बिठा लेने की अद्‌भुत सामर्थ्य गायत्री के साधनात्मक प्रयोगों से मिलती है । इसी लिए उसे कल्पवृक्ष कहते हैं ।

पर गायत्री साधना के ये सभी लाभ जीवन में तभी मिलते हैं जब लक्ष्य ब्राह्मणत्व की प्राप्ति हो अन्यथा यह समर्थ महामंत्र भी सामान्य कर्मकाण्ड बन कर रह जाता है । एक बार पारस्परिक चर्चा में पूज्य गुरुदेव ने ब्राह्मणत्व को स्पष्ट करते हुए कहा था "ब्राह्मण की सही माने में पूँजी तो विद्या और तप है--जो उसे गायत्री मंत्र की साधना से मिलती है । भौतिक सुविधाओं के मामले में तो उसे सर्वथा अपरिग्रही होना चाहिए ।" फिर कुछ रुक कर थोता रोप व्यक्त करते हुए बोले-"खेद है आज अपरिग्रह को दरिद्रता समझ लिया गया जबकि अपरिग्रह का मतलब है स्वयं पर विश्वास, समाज पर विश्वास और ईश्वर पर विश्वास और ब्राह्मण का जीवन इसका चरमादर्श है । जब मनुष्य का स्वयं पर, समाज पर और भगवान पर पूरी तरह विश्वास उठ जाता है तभी वह लालची होकर सुविधाएँ बटोरने लगता है ।

ऐसे विश्वासी और उदार व्यक्तित्व जिस काल में बहुसंख्यक थे, उस समय को धरती का सतयुग माना गया । श्रीमद् भागवत के ग्यारहवें स्कंध के बारहवें अध्याय के दसवें श्लोक में साफ उल्लेख है कि सतयुग में सिर्फ एक वर्ण था, ब्राह्मण (हंस) तभी सतयुग का एक और नाम प्रचलित हुआ ब्राह्मण युग । इसका मतलब यह नहीं कि व्यक्तित्व की अन्य व्यवस्थाएँ नहीं थी । बल्कि सभी लोग अपनी-अपनी अवस्था से इस ओर निष्ठा पूर्वक बढ़ रहे थे और ब्राह्मणत्व की ओर जो निष्ठा पूर्वक बढ़े सो ब्राह्मण । जिस तरह ब्रह्मचर्य का साधक ब्रह्मचारी कहलाता है, उसी तरह ब्राह्मणत्व का साधक भी ब्राह्मण की संज्ञा से विभूषित होता है । अपनी इसी निष्ठा की बदौलत धीवर कन्या के पुत्र व्यास, दासीपुत्र सत्यकाम जाबाल ब्राह्मणत्व की चरमावस्था पा सके । आज के जमाने में भी कायस्थ घराने में जन्म लेने वाले श्री अरविंद स्वामी विवेकानन्द वैश्यकुल में जन्म लेने वाले गाँधी जैसे अनेकों हैं जिन्होंने अपने व्यक्तित्व विकास की साधना द्वारा ब्राह्मणत्व उपलब्ध किया । विदेशों में यह नाम भले न प्रचलित हो पर इसका मतलब यह नहीं कि वहाँ ब्राह्मण नहीं हुए । सुकरात, योरो, इमर्सन, आइन्सटीन सौ टंच खरे ब्राह्मण थे ।

व्यक्तित्व विकास की यह साधना पूरी हुई, इसे कैसे पहचाने ? इस पहेली को गीता ने अपने अठारहवें अध्याय के बयालीसवें श्लोक में सुलझाया है । इसके अनुसार अंत:करण का निग्रह, आचरण एवं व्यवहार की परिष्कृत स्थिति सरल आस्तिक बुद्धि अपरिग्रह आदि ऐसे लक्षण हैं जिनसे इन्हें पहचाना जा सकता है । प्राचीन समय में ब्राह्मणों ने अपने कर्तव्य का निर्वाह किया भी । स्मृतियों की विविधता इसका प्रमाण है । जिसे देखकर हर्ष के समय आये चीनी यात्री ह्वेनसांग ने इसे ब्राह्मणों का देश घोषित किया । आधुनिक युग में ब्राह्मणत्व विकसित करने की प्रेरणा देने वाले परमपूज्य गुरुदेव ने सामाजिक उपादेयता की दृष्टि से इसे दो वर्गों में बाँट दिया-विचारक एवं प्रचारक । दूसरे शब्दों में कहें तो ब्राह्मण और साधु । असलियत में दोनों एक से हैं । विचारक इनकी वह स्थिति है जो नव विधान का निर्माण करती और सामयिक समस्याओं का समाधान खोजती है । प्रचारक वर्ग समाज को पुराने और अनुपयोगी विधान को छोड़ने और नव विधान पर चलाने के लिए प्रतिबद्ध होता है । कमोवेश दोनों पर बराबर का दायित्व है ।

इसी दायित्व के निर्वाह पर भावी समाज की स्थिरता समृद्धि और सतयुग की सृष्टि टिकी हुई है । इसी कारण इन्हें सावधान करते हुए भागवतकार ग्यारहवें स्कन्ध के बारहवें अध्याय के बयालीसवें श्लोक में कहते हैं- *ब्राह्मणस्यहि देहोऽयं क्षुद्र कामाय नेष्यते* "-ब्राह्मण का जीवन क्षुद्र कामनाओं के लिए नहीं है । जीवन और समाज के संरक्षण की जिम्मेदारी इसी की है ।"

उनका ही आह्वान करते हुए परम पूज्य गुरुदेव के शब्द हैं -"इस आड़े वक्त में संस्कृति ने ब्राह्मणत्व को पुकारा है । यदि वह कहीं जीवित हो तो आगे आये । जाति और देश में हम वर्ण का संबंध नहीं जोड़ते । ब्राह्मण हम उन्हें कहते हैं जिनके मन में आदर्शवादिता के लिए इतना दर्द मौजूद हो कि वह अपनी वासना-तृष्णा से बचाकर शक्तियों का एक अंश अध्यात्म की प्राण रक्षा के लिए लगा सकें । किसी भी वंश में पैदा क्यों न हुआ हो पर जिनमें मानवीय आदर्शों की रक्षा में कुछ त्याग और बलिदान करने का शौर्य एवं साहस उठता है वस्तुत: वही ब्राह्मण कहा जाने का अधिकारी है । उसी वर्ग ने समय-समय पर ईश्वरीय प्रयोजन की पूर्ति में महत्वपूर्ण भूमिकाएँ प्रस्तुत की हैं ।"

"आज फिर वही परीक्षा की घड़ी आ गई, जब मानवता की जीवन रक्षा करने के लिए बड़े से बड़ा त्याग करने की हिम्मत दिखाई जाय, और संस्कृति को इस कलंक से बचाया जाय कि उसका संरक्षक ब्राह्मणत्व मर गया था, इसलिए उसकी जीवन रक्षा न हो सकी । अपने परिजनों को जिनमें ब्राह्मणत्व का शौर्य साहस विद्यमान हो समाज की पुकार पूरी करने के लिए आमंत्रित किया जा रहा है । आमंत्रण को स्वीकारें और गायत्री साधना की उन चमत्कारी विभूतियों को अपने जीवन में पायें-जिन्हें हमने पाया और धन्य हुए ।"

उनकी वाणी का यह दर्द एवं ब्राह्मणत्व का मर्म हमारी समझ में आजाय तो माँ गायत्री व ज्ञान गंगा भागीरथी का अवतरण दिवस हमारे जीवन में पूरी सार्थकता व प्रेरणाओ के साथ उतर जाएगा, इसमें तनिक भी अविश्वास हमें नहीं करना चाहिए । 卐

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

शक्ति भंडार से स्वयं को जोड़ कर तो देखें

(गुरुपूर्णिमा की पूर्ववेला में शांतिकुंज परिसर में १९७७ में दिया गया उद्‌बोधन)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ -

ॐ भूर्भुवःस्वःतत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्

मनुष्य की सामान्य शक्ति सीमित है । प्रत्येक प्राणी को भगवान ने इतना ही सामान दिया है कि वह अपने जीवन का गुजारा कर ले । कीड़ों-मकोड़ों और पशु-पक्षियों को सिर्फ इतना ही ज्ञान, साधन, शक्ति और इंद्रियाँ मिली हैं ताकि वे अपना पेट भर लें और प्रकृति की इच्छा पूरी करने के लिए अपनी औलाद पैदा करते रहें । इससे ज्यादा कुछ उनके पास है नहीं, लेकिन आपके पास है । अगर आपको इससे कुछ ज्यादा जानना और प्राप्त करना है, तो आपको वहाँ जाना पड़ेगा जहाँ शक्तियों के भांडागार भरे पड़े हैं । एक जगह ऐसी भी है जहाँ बहुत शक्ति भरी पड़ी है, जहाँ संपत्तियों का कोई ठिकाना नहीं । जहाँ समृद्धि की अनंतशक्ति है । सारे विश्व का मालिक कौन है ? भगवान । यह उसी का तो सामान है जिससे उन्होंने दुनिया को बना दिया । यहाँ जो कुछ भी वैभव आप देखते हैं, वह भगवान के भंडार का एक छोटा सा चमत्कार है । पृथ्वी के अलावा और भी लोक हैं । उन सबमें भी भगवान का भंडार भरा पड़ा हुआ है । बड़ा संपत्तिवान है भगवान । आपको यदि संपत्तियों की सफलताओं की, विभूतियों की जरूरत है, तो अपना पुरुषार्थ इस काम में खर्च करिये कि उस भगवान के साथ में अपना रिश्ता बना लीजिए । उसके साथ जुड़ने में अगर आप समर्थ हो सकें तो, यह सबसे बड़ा पुरुषार्थ होगा । आप भगवान के साथ में अपना रिश्ता बना लें तो मजा आ जाये ।

मालदार आदमी से रिश्ता बना लेने पर क्या हो सकता है ? लालबहादुर शास्त्री का नाम सुना है आपने, वे बिलकुल एक छोटे से आदमी थे । लेकिन पंडित नेहरू के साथ में उन्होंने अपने घनिष्ट संबंध बना लिए जिसकी वजह से वे एम. पी. हो गये । उनकी सहायता से वे यू. पी. के मिनिस्टर भी हो गये और फिर मरने के पश्चात् उनके उत्तराधिकारी भी हो गये । बहुत शानदार थे लालबहादुर शास्त्री , यह उनके अपने पुरुषार्थ का उतना फल नहीं था, जितना कि नेहरू जी के सहयोग का । उनकी निगाह में उनकी इज्जत जम गयी थी । उन्होंने देख लिया था कि यह आदमी बड़ा उपयोगी है, उसकी सहायता करनी चाहिए । उसकी सहायता से उनने भी लाभ उठाया, इसलिए पंडित नेहरू ने उनकी भरपूर सहायता की । ठीक यही बात हर जगह लागू होती है । भगवान एक सर्वशक्तिमान सत्ता है । उसके साथ अगर आप अपना संबंध जोड़ लें तब आपकी मालदारी का कोई ठिकाना न रहेगा । तब आप इतने संपन्न हो जायेंगे कि मैं आपसे क्या क्या कहूँ । आप बापा जलाराम के तरीके से संपन्न हो सकते हैं, आप सुदामा के तरीके से मालदार भी हो सकते हैं, विभीषण और सुग्रीव के तरीके से मुसीबतों से बचकर के फिर से अपना खोया हुआ राजपाट पा सकते हैं । नरसी मेहता के तरीके से हुण्डी भी आप पर बरस सकती है । यहाँ कुछ कमी है क्या ? यहाँ कोई कमी नही है । इसलिये यहाँ जो आपको बुलाया गया है उसका एक कारण यह भी है कि आप से कहा जाये कि आप भगवान से रिश्ता जोड़ लें। आप जो पूजा करते हैं, उपासना करते हैं, भजन करते हैं , उसका मतलब यह है कि आप इन उपायों के माध्यम से अपना रिश्ता भगवान से जोड़ लें । एक गरीब घर की लड़की की यदि किसी मालदार पति के साथ में शादी हो जाये तो वह दूसरे ही दिन से उसकी मालकिन हो जाती है, क्योंकि उसने उससे रिश्ता मिला लिया ।

रिश्ता मिलाने के लिए क्या करना पड़ता है ? बस यही तो मुझे आपसे कहना था । रिश्ता मिलाने में आप ख्याल करते हैं कि रिश्वत देनी पड़ती है, चापलूसी करनी पड़ती है, पर इस ख्याल को आप हटा दीजिए । रिश्वत देकर के भगवान को अपना मित्र बना सकते हैं ? उसका अनुग्रह प्राप्त कर सकते हैं ? ऐसा मत कीजिए । साथ ही आप यह विचार मत कीजिए कि जीभ की नोक से कुछ मीठी बातें, कुछ चापलूसी की बातें और स्तोत्र पाठ करने के बाद में भगवान को आप अपना बना सकते हैं । भगवान की साझेदारी पर आप यकीन कीजिए और यह समझिये कि भगवान आपकी जुबान को नहीं, आपकी नीयत को देखता है । दृष्टिकोण को देखता है, चरित्र को देखता है, चिंतन को देखता है और आपकी भावनाओं को देखता है । अगर आप इस क्षेत्र में सूने हैं तो आपके कर्मकाण्ड कोई बहुत ज्यादा कारगर नहीं हो सकते । आप देखते हैं न कि कितने पंडित लोग हैं जो तरह-तरह के विधि-विधान और कर्मकाण्ड जानते हैं , पर सब खाली हाथ रहते हैं । आपने देखा है न कि साधु-महात्मा तरह-तरह के जाप करते हैं, पूजा-पाठ करते हैं, स्नान, ध्यान करते हैं, तीर्थ यात्रा करते हैं, लेकिन उनकी नियत भावना और दृष्टिकोण अगर ऊँचा न हुआ, व्यक्तित्व

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

ऊँचा न हुआ, अंत:करण ऊँचा न हुआ, तब उनका लाल-पीले कपड़े पहन लेना, तरह-तरह के आडंबर बना लेना और तरह-तरह के क्रिया-कृत्य कर लेना बिलकुल बेकार चला जाता है और सामान्य स्तर के नागरिकों से भी गयी बीती जिंदगी जीते हैं ।

भगवान की कृपा कहाँ मिलती है ? भगवान को प्राप्त करने का जो असली रहस्य है, उसे आपको जानना ही चाहिए । क्या करना होगा ? आपको भगवान के साथ जुड़ जाना होगा । जुड़ जाने को ही उपासना कहते हैं । उपासना का मतलब ही है जुड़ जाना-पास बैठना । किस तरह से जुड़ जायें । मैं आपको कुछ थोड़े से उदाहरण बताऊँगा । जुड़ना किसे कहते हैं ? आपने आग में लकड़ी को गिरते हुए देखा है न । उस लकड़ी की क्या कीमत है-दो कौड़ी की-जिसे आप पैर के नीचे फेंक दीजिए तो क्या, या तोड़कर फेंक दीजिए तो क्या-इधर से उधर करते रहिए । उसकी कोई कीमत नहीं हो सकती, पर आग के साथ में यदि उसको मिला दिया जाय तो आप देखेंगे कि थोड़ी ही देर में लकड़ी गरम होने लगती है और आग हो जाती है । तब आप उसे छू भी नहीं सकते और जो गुण अग्नि देवता के हैं वही गुण उस नाचीज लकड़ी में भी आ जाते है । ठीक यही तरीका व्यक्ति को, जीवात्मा को परमात्मा के साथ मिलाने का हैं । क्या करें ? नजदीक तो आइये आप । नजदीक आने का बस एक ही तरीका है-अपने आपको सौंप देना-होम देना । भगवान की इच्छा पर चलना । लकड़ी अपने आपको सौंप देती है और होम देती है । आग जब उसको जलाती है तो जलने में वह रजामंद हो जाती है । उसी के साथ जब वह घुल गयी तो वह उसी का रूप हो जाती है । हमारी और आपकी नियति यह हो कि हम भगवान के साथ में घुल जायें । घुलने का मतलब है सौंप देंगे । उनको अपने में नहीं मिला लेंगे, अपनी मर्जी के ऊपर नहीं चलायेंगे, वरन् हम अपने को उनकी मर्जी के मुताबिक चलायेंगे । इसी का नाम समर्पण है । इसी का नाम विलय और विसर्जन है । इसी का नाम शरणागति है । बहुत से नाम इसको दिये गये हैं । उपासना का तत्वज्ञान इसी पर टिका हुआ है कि आप भगवान के अनुयायी होते हैं कि नहीं, उसका अनुशासन मानते हैं कि नहीं । आप भगवान की इच्छानुसार चलते हैं कि नहीं, उसके बताये हुए इशारे एवं संकेत पर चलते हैं कि नहीं । उपासना के साथ जुड़ा हुआ एक मात्र यही प्रश्न है और कोई दूसरा नहीं ।

यह ख्याल ठीक नहीं है कि आप अपनी मनमर्जी पर चला सकते हैं और चलायेंगे । भगवान आपकी मर्जी पर क्यों कर चलने लगे ? भगवान के अपने कुछ नीति-नियम हैं, मर्यादा आरै कायदे हैं । आपकी खुशामद की वजह से आपकी मनोकामना पूरी करने के लिए भगवान अपने नीति-नियम को छोड़ देंगे, मर्यादा और कायदे कानून को छोड़ देंगे और अपने आपको पक्षपाती होने का इलजाम लगवायेंगे-कलंक लेंगे क्या ? नहीं ऐसा भगवान कर नहीं सकेंगे । अगर आपके मन में यह ख्याल हो कि मिन्नतों और खुशामदों से भगवान को कहीं नजदीक ला सकते हैं और उपासना कर सकते हैं तो आप यह ख्याल छोड़ दीजिए । तब क्या करना पड़ेगा ? तब एक ही काम करना पड़ेगा कि आप अपने आपको भगवान को सौंप दीजिए । अपने आपको उनके हाथ की कठपुतली बना लीजिए, फिर देखिए भगवान क्या से क्या करवाते हैं । पानी दूध में मिल जाता है और उसकी हैसियत दूध के बराबर हो जाती है । छोटी सी ना चीज बूँद समुद्र में गिरती है और अपनी हस्ती को उसी में विसर्जित कर देती है और समुद्र की कीमत की हो जाती है । छोटी सी बूँद की हैसियत समुद्र के बराबर हो जाती है । दो कौड़ी का गंदा, कीचड़ से भरा हुआ नाला जब नदी में शामिल हो जाता है, तब वह नदी हो जाता है । उसका पानी नदी की तरह से पूजा जाता है । गंगा में गिरे हुए नाले का गंदा जल भी गंगाजल कहलाता है । यह कैसे हो गया ? नाले ने अपने आपको समर्पित कर दिया । किसको ? नदी को । यदि समर्पित न करता तब ? तब आपकी मन: स्थिति का होता और गंगा जी से कहता-आप नाला बन जाइये और हमारी मर्जी पूरी कीजिए । हमारे साथ-साथ रहिए । पर ऐसा हो नहीं सकता । भगवान को आप अपने जैसा नहीं बना सकते । अपनी मर्जियाँ पूरी कराने के लिए उन्हें मजबूर नहीं कर सकते । आपको ही उनके पीछे चलना पड़ेगा ।

मित्रो, पारस के बारे में आप लोगों ने सुना होगा कि पारस को छूकर लोहा सोना हो जाता है, बदल जाता है । यदि लोहा वैसा ही रहे और पारस से कहे कि आप लोहा बन जाइये, तो यह संभव नहीं । पारस लोहा नहीं बन सकता । लोहे को ही बदलना पड़ेगा । चंदन के पास उगे हुए पौधे चंदन की खुशबू देते हैं और चंदन बन जाते हैं । पर आप तो यह चाहते हैं कि चंदन को ही हम जैसा बनना चाहिए । चंदन आप जैसा नहीं बन सकता । छोटी झाड़ियों को ही चंदन जैसा खुशबूदार बनना चाहिए । चंदन बदबूदार झाड़ी नहीं बन सकता । भगवान पर दबाव मत डालिए । तब क्या करना पड़ेगा ? आप उसके साथ में घुल जाइये, लिपट जाइये । बेल देखी है न आपने, वह पेड़ के साथ में लिपट जाती है और जितना ऊँचा पेड़ है, उतनी ऊँची होती चली जाती है । यदि बेल अपनी मनमर्जी से फैलती तो सिर्फ जमीन पर फैल सकती थी, और ऊँचा उठना मुमकिन नहीं था । परंतु इतनी ऊँची कैसे हो गयी ? क्योंकि वह पेड़ से गुथ गयी, लिपट गयी । आप भी भगवान से गुथ जाइये , लिपट जाइये, फिर देखिये कि आपकी ऊँचाई भी पेड़ पर लिपटी हुई बेल के बराबर होती है कि नहीं । भगवान बहुत ऊँचा है, आप उसके साथ जुड़कर के देखिये, उसके अनुशासन को पालिए । उसकी इच्छा के साथ चलिये, फिर आप देखिये कि भगवान के बराबर बन जाते हैं कि नहीं। पतंग अपने आपको बच्चे के हाथ में सौंप देती है । बच्चे के हाथ में उस बँधी हुई डोरी का एक सिरा होता है जिसे वह झटका देता रहता है और पतंग आसमान में जा पहुँचती है । पतंग अपनी डोरी को बच्चे के सुपुर्द न करे तब, उसे जमीन पर पड़ा रहना पड़ेगा ।

आप अपने जीवन की बागडोर

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

और जीवन का आधार भगवान के हाथ में न सौंपे, उसकी मर्जी के अनुसार न चलें तो आप पतंग की तरीके से आसमान पर उड़ने की अपेक्षा मत कीजिए । आपने दर्पण देखा है न, उसके सामने जो चीज आती है वह दर्पण में वैसे ही दिखाई पड़ने लगती है । आपके जीवन में चारों ओर से दोष-दुर्गुण एवं कल्मष छाये हुए हैं, इसलिए आपका दर्पण भी-मानसिक स्तर भी वैसा ही बन गया है । लेकिन अगर आप भगवान को सामने रखें, उसके नजदीक जायें तो आप देखेंगे कि आपके जीवन में भी भगवान की आभा-भगवान की शक्ति उसी तरीके से बन जाती है जैसे कि दर्पण के सामने खड़े हुए आदमी की बन जाती है । वंशी अपने आपको पोली कर देती है और खाली कर देती है । पोली और खाली कर देने के बाद में फिर बजाने वाले के पास जा पहुँचती है और उससे कहती है कि आप बजाइये, जो आप कहेंगे वही मैं गाऊँगी । बजाने वाला फूँक मारता जाता है और वह बजती जाती है । भगवान को फूँक मारने दीजिए, और आप बजने के लिए तैयार हो जाइये ।

कठपुतली को आपने देखा होगा । उसके धागे बाजीगर के हाथ में लगे होते हैं । बाजीगर इशारे करता जाता है, और कठपुतली बिना कुछ कहे नाचना शुरू कर देती है । दुनिया को दिखाई पड़ता है कि कठपुतली का नाच कितना शानदार हुआ । पर वस्तुतः यह कठपुतली का नाच नहीं वरन् बाजीगर का कमाल है कठपुतली ने तो अपने शरीर के हिस्सों में धागे बँधवाये और उनको बाजीगर के हाथ में सौंप दिया समर्पण कर दिया । बस, यही आपको भी करना पड़ेगा । कठपुतली के तरीके से अगर आप बाजीगर के हाथ में अपनी जिंदगी की नाव सौंप सकते हों, अपने विचार और चिंतन सौंप सकते हों, अपनी इच्छाएँ और आकांक्षाएँ सौंप सकते हों, तो फिर देखिये कि कैसा मजा आ जाता है । आप उस जेनरेटर से संबद्ध हो जाइये जिसके साथ में जुड़ने के बाद ही बल्ब जलता है । पंखें तभी चलते हैं जब उनका संबंध बिजली घर से जुड़ जाता है । अगर आप सुनेंगे नहीं, जुड़ेंगे नहीं, तब आप रखे रहिए, आपकी कीमत ढाई रुपये है । आप प्रकाश नहीं दे सकते । आपकी हैसियत है तो ठीक है, वह आपको मुबारक, लेकिन अगर आप अनंत शक्ति के साथ न जुड़े तो सब बेकार है । अनंत शक्ति के साथ अगर आप जुड़ेंगे तो फिर देखेंगे कि कितना कमाल कर सकते हैं । इसलिए आदमी की सबसे बड़ी समझदारी यह है कि अपने आपको भगवान के साथ में जोड़ लें । उसकी शक्तियों के साथ में अपनी सत्ता को मिला दें । यह काम जरा भी कठिन नहीं है, वरन् बहुत सरल है । नल आपने देखा है न, जब वह टंकी के साथ जुड़ जाता है जिसमें पानी भरा हुआ है तो उसको बराबर पानी मिलता रहता है । अपने आप में अकेला नल कुछ भी तो नहीं है, लेकिन जब टंकी के साथ में रिश्ता मिला लिया तो उसकी कीमत बढ़ गयी । उस नल से अब आपको बराबर पानी मिलता रहेगा ।

वक्त छोटा हो तो क्या, नाचीज हो तो क्या, यदि आपने सच्चे मन से भगवान के साथ अपने-आपको जोड़कर रखा है, तो भगवान की जो संपदा है, जो विभूतियाँ हैं, वह भक्त की अपनी हो जाती हैं और बराबर उसको मिलती चली जाती हैं । इसके लिए क्या करना पड़ेगा ? अपने आपको सौंपना पड़ेगा और क्या करना पड़ेगा भगवान को बहकाना , फुसलाना और अपनी मर्जी पर चलाना बंद करना पड़ेगा । आपको ही उसका कहना मानना पड़ेगा, आपको ही समर्पण करना पड़ेगा । बीज अपने आप को ही बनाना पड़ेगा । भगवान के खेत में अपने आपको बोइये, फिर देखिये कैसी फसल आती है । मक्का का एक दाना खेत में बो देते हैं और उसका पौधा खड़ा हो जाता है, भुट्टे आ जाते हैं और एक-एक भुट्टे में हजार-हजार दाने होते हैं । इस तरह एक बीज के-हजारों दाने हो जाते हैं । आप अपने आपको भगवान के खेत में बोइये, गलिये, फिर देखिये आपकी स्थिति कहाँ से कहाँ पहुँच जाती है । गलने का मन है नहीं, हिम्मत है नहीं , तो फिर काम कैसे चलेगा । आप गलने की हिम्मत नहीं करेंगे, बीज को जिंदगी भर अपनी पोटली में रखे रहेंगे और यह अपेक्षा करते रहेंगे कि जमीन हमारे खेत लहलहादे और हमको नहीं गलना पड़े , ऐसा कहीं हुआ है क्या ? ऐसा नहीं होगा । आपको गलना पड़ेगा । अगर आप नहीं गलेंगे तब आप भगवान से क्या उम्मीद करेंगे ?

आपने सुना है न कि भगवान की आदत कुछ ऐसी है कि माँगते रहते हैं । पहले हाथ पसारते हैं, बाद में कुछ देने की बात कहते हैं । उनके हाथ पर आप कुछ रख नहीं सकते तो फिर आप क्या पायेंगे ? चावलों से, धूपबत्ती से आप भगवान को खरीद नहीं सकेंगे । आप आरती करके पा नहीं सकेंगे । जीभ की नोक से स्तोत्र पाठ करके या छोटे-बड़े कर्मकाण्ड करके भगवान के अनुग्रहों के आप अधिकारी नहीं हो पायेंगे । तो फिर क्या करना पड़ेगा ? आपको अपना दृष्टिकोण, चिंतन और चरित्र, भावना और लक्ष्य सब का सब भगवान के साथ में जोड़ना पड़ेगा । जिस दिन आप यह करने को तैयार हो जायेंगे तो उस दिन आप देखियेगा क्या-क्या होता है । भगवान की मर्जी तो पूरी करिये फिर देखिये आपको कुछ मिलता है या नहीं । भगवान नीयत देखते हैं । अभी मैंने सुदामा का नाम लिया था । सुदामा ने अपनी पोटली दे दी थी , बाद में भगवान ने उन्हें जो दिया वह आप जानते हैं । जिसके पास भी भगवान जाते हैं माँगते जाते हैं, देते हुए नहीं । शबरी के पास भगवान गये थे तो कोई सोना -चांदी या हीरे-मोती लेकर नहीं गये थे । वे माँगते हुए गये थे कि अरे हम बहुत भूखे हैं कुछ खाना खिलाइये । शबरी के पास जूठे बेर थे-जो कुछ भी था भगवान के सुपुर्द कर दिया । गोपियों के पास भी गये थे । गोपियों से भगवान प्यार करते थे और उनसे यही पूछते थे-लाइये आप कुछ दीजिए । कुछ नहीं तो छाछ ही माँगते थे । कर्ण से भी माँगने गये थे, बलि से भी माँगने गये थे । हर जगह भगवान माँगते ही चले आते हैं । भगवान कहीं भी जाते हैं तो मनुष्य की पात्रता को परखने के लिए, उसकी महानता को विकसित करने के लिए एक ही दबाव डालते हैं कि आपके पास क्या है , उसे सुपुर्द

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

कीजिए । भगवान की आदत को आप जानेंगे नहीं तो मुश्किल पड़ेगा और अपने आप को सौंपने के लिए अमादा न होंगे तो आप भगवान को अपना नहीं बना सकेंगे ।

भगवान की भक्ति किसे कहते हैं ? [illegible] पर आपने तो उसे कठपुतली के तरीके से चलाने और भक्ति से उचित और अनुचित जो कुछ भी फायदे होते हों, उठा लेने को मान लिया है । आप अपनी भक्ति की इस परिभाषा को बदल दीजिए । भक्ति कैसी होती है ? इसकी एक कहानी सुनाता हूँ आपको । लैला-मजनू की कहानी सुनी है न आपने, न सुनी हो तो सुनिये । एक मजनू था जो लैला को प्यार करता था और चाहता था कि उससे शादी हो जाये । लेकिन उसका बाप तैयार नहीं था । उसने कहा-हम भिखारी के साथ अपनी बेटी की शादी नहीं करेंगे । तब लैला ने सोचा-चलो मैं ही अपनी मर्जी से शादी कर लेती हूँ, लेकिन पहले देखूँ तो सही कि ऐसे ही अपनी खुदगर्जी के लिए-मतलब के लिए ही मुझे अपने शिकंजे में कसना चाहता है, या वास्तव में मुझे प्यार करता है । प्यार करने का अर्थ होता है-देना । सो उसने सोचा चलो उसकी परीक्षा लेनी चाहिए । उसने अपनी एक बाँदी को भेजा । उसने मजनू से कहा कि लैला बहुत बीमार है, तो वह बहुत दुखी हुआ । बाँदी ने कहा-दुखी होने से क्या फायदा कर सकते हो तो कुछ मदद कीजिए । अगर प्यार करते हैं तो कुछ कीजिए न । तो उसने कहा, क्या दूँ ? बाँदी ने कहा कि डाक्टरों ने कहा है कि लैला की नसों में खून चढ़ाया जायेगा । तो क्या आप अपना खून देंगे जिससे लैला की जान बचायी जा सके । मजनू फौरन तैयार हो गया और चाँदी का जो कटोरा बाँदी लायी थी उसे अपने खून से लबालब भर दिया और बोला-बाँदी जल्दी आना अभी मेरे शरीर में जितना भी रक्त है मैं सब उसके सुपुर्द कर दूँगा । मैं उसे मुहब्बत करता हूँ और मुहब्बत का अर्थ होता है देना । इसलिए मैं तो देने ही देने वाला हूँ । बाँदी रक्त का कटोरा लेकर चली गयी । शेष नकली मजनुओं को भगा दिया गया लैला ने अपने बाप से कहा कि जो मुझ से इतनी मुहब्बत करता है और जो मुहब्बत की कीमत को समझता है उसके साथ तो मैं रहूँगी ही । लैला की मजनू के साथ शादी हुई थी । आपकी भी शादी भगवान के साथ हो सकती है, आप जरूर भगवान के साथ शादी कर सकते हैं ।

इसके लिए करना क्या चाहिए ? एक ही बात करनी चाहिए-भगवान की मर्जी पर चलने के लिए आमादा हो जाइये । जो कुछ वह आप से चाहते हैं, वह आप कीजिए । आप चाहते हैं ठीक है, लेकिन जो आप चाहते हैं उससे पहले भगवान ने बहुत कुछ दे दिया है । उसने आपको इनसान की ऐसी बेहतरीन और समर्थ जिंदगी दी है कि इसके आधार पर आप अपनी मनमर्जी पूरी कर सकते हैं । मनमर्जी के लिए कोई कमी नहीं है । आपके हाथ कितने बड़े हैं, अकल कितनी बड़ी है, आपकी आँखें और जुबान कितनी शानदार है । आप अपनी दैनिक जरूरतों की-जिनकी भगवान से अपेक्षा करते हैं, उनके लिए अपेक्षा मत कीजिए । आप जो पुरुषार्थ से कमाते हैं उसमें संतोष कर सकते हैं अथवा कम में काम चला सकते हैं आप अपनी हवस और अपनी ख्वाहिशें, तमन्नाऐं और इच्छायें अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए क्या भगवान को दबोचेंगे, भगवान को मजबूर करेंगे क्या ? क्या वह कर्तव्य की बात को छोड़ दें और आपके लिए पक्षपात करने लगें और कर्मफल की महत्ता का परित्याग कर दें । आप ऐसा मत कीजिए, भगवान को न्यायधीश रहने दीजिए । आप भगवान को बेइज्जत मत कीजिए । आप अपनी मर्जी के लिए उनको पक्षपाती मत बनाइये । ऐसा वे करेंगे भी नहीं । आप बनाना चाहें तो भी वे नहीं करेंगे ।

इसलिए तरीका सिर्फ एक ही है कि आप उस शक्ति के भंडार के साथ में अपने आपको मिला लीजिए, जोड़ लीजिए । मिलाने और जोड़ने का तरीका वही है अर्थात् आपको उनकी मर्जी पर चलना पड़ेगा । आप अपनी मर्जियाँ खत्म कीजिए, अपनी आकांक्षायें खत्म कीजिए अपनी इच्छायें खत्म कीजिए । आप उन्हीं के हो जाइये और उन्हीं के साथ रहिए । जब आप भगवान के साथ हो जाते हैं तो वे आपके हो जाते हैं । आप उनके हो जाइये और अपना बना लीजिए राजा हरिश्चन्द्र बिके थे एक बार, डोमराजा खरीद ले गया था उन्हें । भगवान भी चौराहे पर बिकने के लिए खड़े हैं । वे आवाज लगाते हैं कि हम बिकने के लिए खड़े हैं कि हमको खरीद लिया जाय । जो हमको खरीद लेगा, उसी की सेवा करेंगे, उसी के साथ-साथ रहेंगे । आप चाहें तो उनको खरीद सकते हैं । क्या कीमत है ? आप अपने आपको उनके हाथों बेच दीजिए और उन्हें अपने हाथों खरीद लीजिए । स्त्री अपने हाथों अपने आपको अपने पति के हाथों सौंप देती है, अपने आपको बेच देती है और इसकी कीमत पर पति को खरीद लेती है । बस यही मित्रता का रास्ता है, यही भगवान की भक्ति का रास्ता है । आपको अपने जीवन में हेर फेर करना ही पड़ेगा और करना ही चाहिए । आप अपने घिनौने चिंतन को बदल दीजिए, छोटे दृष्टिकोण को बदल दीजिए । लोभ और लालच से बाज आइये और भगवान की सुन्दर दुनिया को ऊँचा बनाने के लिए शानदार बनाने के लिए, उनके राजकुमार के तरीके से उनकी संपदा को, उनकी सृष्टि को ऊँचा और अच्छा बनाने के लिए कमर कसकर खड़े हो जाइये । आप समर्पित हो जाइये, शरणागति में आइये, विलय कीजिए-विसर्जन कीजिए, फिर देखिये आप क्या पाते हैं ? बीज के तरीके से गल जाइये और पेड़ के तरीके से उगने की तैयारी कीजिए । आप त्याग नहीं करेंगे तो पा कैसे लेंगे । जो त्याग करना है उसमें जप करना ही काफी नहीं है, जरूरी तो है, पर काफी नहीं । भगवान को चावल चढ़ा देना, धूपबत्ती उतार देना, आरती उतारना जरूरी तो है, पर काफी नहीं है । ज्यादा करने के लिए आप अपना कलेजा चौड़ा कीजिए और तैयारी कीजिए । आज मुझे यही निवेदन करना था, आप सब लोगों से ।

ॐ शांतिः । 卐

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परम पूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी-

कैसे हो आध्यात्मिक कायाकल्प ?

शांतिकुंज में सतत् कल्प साधना सत्र चलते रहे हैं । उन दिनों पूज्यवर स्वयं साधकों को संबोधित कर कल्प प्रक्रिया की जटिलताओं एवं कैसे अपने अंदर परिवर्तन लाया जाय, इस विषय पर उद्‌बोधन देते थे । इसी विषय पर दो अंकों में प्रकाशित दो प्रवचनों की पहली कड़ी यहाँ प्रस्तुत है । १९८३—८४ के इन प्रवचनों को जिनने सुना है—हृदयंगम किया है, उनके जीवन को एक नयी दिशा मिली, न केवल स्वास्थ्य सुधरा, चिंतन परिष्कृत हुआ एवं आत्मिक प्रगति का पथ भी प्रशस्त हुआ । पढ़ें—अमृतवाणी—

गायत्री मंत्र, साथ-साथ-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

कल्प साधना के लिए आप सभी यहाँ शांतिकुंज आये हैं । कल्प आखिर है क्या, जिसके लिए हमने आपको यहाँ बुलाया है । कल्प का अर्थ होता है-परिवर्तन । आपको बदलने का हमारा मन है । आप यदि अभी तक दुखी जीवन जीते रहे हैं तो सुखी जीवन जियें । आप बीमार जीवन जीते रहे हैं तो स्वस्थ जीवन जियें । आप यदि गुत्थियों से उलझा हुआ जीवन जीते रहे हैं तो अब हँसता—हँसाता जीवन जियें । यदि घिनौना, कमजोर और उपेक्षित जीवन जीते रहे हैं तो अब ऐसा शानदार जीवन जियें कि जिसको देखकर आपका भी जी बाग-बाग हो जाय और जो कोई भी बाहर इसे देख पाये, उसकी भी खुशी का ठिकाना न रहे ऐसा ही आपके जीवन में कायाकल्प करने का हमारा मन था । आपने हमारे विचारों को पढ़ा होगा और उसी से प्रभावित होकर यहाँ आये हैं । आइये अब विचार करें कि यह कैसे संभव होगा ? इसके लिए क्या करना पड़ेगा ? इन सारे प्रश्नों पर गंभीरता से हम और आप विचार करें ।

आमतौर से कल्प साधना के बारे में यह भ्रम फैला हुआ है कि कल्प माने बूढ़े से जवान हो जाना, पर यह एक भ्रांति है । बूढ़े का जवान होना संभव नहीं है क्योंकि यह प्रकृति के नियमों के विरुद्ध है । प्रकृति के नियमों को कोई बदल नहीं सकता । सूर्य पूर्व से निकलता है और पश्चिम में डूबता है । ऐसा हो सकता कि सूर्य पश्चिम से निकले और पूर्व में डूबा करे । भगवान ने प्रकृति के नियमों को ऐसा बना दिया है कि वे अपने स्थान पर यथावत् रहेंगे और जब से बने हैं तब से और जब तक सृष्टि रहेगी, तब तक बने रहेंगे । इसलिए बूढ़े आदमी का जवान होना नामुमकिन है । पुराणों में कथायें तो हैं, पर मालूम नहीं वे कहाँ तक ठीक हैं । आपने च्यवन ऋषि की बात सुनी होगी जो बूढ़े थे और जवान हो गये थे । आपने राजा ययाति की कहानी भी सुनी होगी कि बेटे की जवानी लेकर वह बूढ़े से जवान हो गये थे । लोगों ने कोशिशें तो की हैं, यूरोप में भी बहुत प्रयत्न हुए हैं-वृद्धों को जवान बनाने के लिए । पर सफलता नहीं मिली । स्टालिन रूस का अधिनायक था । उसको बंदर की ग्रंथियाँ काट-काट कर लगायीं और यह कोशिश की गयी कि वह फिर से जवान हो जाय, पर ऐसा नहीं हो सका । प्रकृति से लड़ाई लड़ना नामुमकिन है । किसी को यह आशा नहीं करनी चाहिए कि हमारा बूढ़ा शरीर जवान बन जायेगा, पर हाँ यह आशा हम-आप में से हर व्यक्ति कर सकता है कि कमजोरी और बीमारी जो हमने आपने बुला कर रखी हैं, उसको इनकार कर दें और यह कह दें कि हम आपको अपने यहाँ रखने की स्थिति में नहीं हैं, कृपा करके आप चली जाइए । इनको हम भगा सकते हैं, क्योंकि ये प्राकृतिक नहीं हैं ।

जीवधारी पैदा होते हैं और मरते भी हैं, पर न कोई बीमार रहता है और न कोई कमजोर रहता है । जब कमजोरी आती है तो मौत के मुँह में चले जाते हैं । भला कमजोर जिंदगी जीना कौन पसंद करेगा और ऐसी जिंदगी कौन पसंद करेगा जो बीमारियों से घिरी हुई हो । कमजोरी और बीमारियों से घिरा हुआ होना-यह प्रकृति के विरुद्ध है । इसको आप और हम हटा सकते हैं । शरीर के बारे में यहीं तक मुमाकिन है और इसके आगे कुछ नहीं हो सकता । शरीर के कायाकल्प से अगर आप का मतलब हो और इसी ख्याल से अगर आप यहाँ आए हों तो कृपा करके यह बात नोट कर लीजिए शरीर के बारे में कि यह जो आपकी उमर है वह आगे ही बढ़ेगी, पीछे की ओर घटेगी नहीं । जवान को तो बच्चा कैसे बना पायेंगे हम ? बच्चे को माँ के पेट में तो कैसे धकेल पायेंगे ? संभव नहीं है । आपकी उमर तो जरूर बढ़ेगी और आपके शरीर पर जो प्रभाव पड़ेगा, वह सब पड़ना ही चाहिए । लेकिन आपका स्तर बदल जायेगा । आकृति तो ज्यों की त्यों रहेगी, पर प्रकृति बदल जायगी । प्रकृति को बदलना मुमकिन है । यदि आपकी प्रकृति बदल जायेगी तो परिस्थितियाँ भी बदल

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

जाएँगी । जैसा कि आप सभी जानते हैं कि मन:स्थिति का ही नाम परिस्थिति है । मन: स्थिति अगर आदमी बदल ले तो परिस्थितियों के बदलने में कोई शक नहीं है । बस यही कायाकल्प है । इसी को हम कराना चाहते हैं ।

आपके भीतर वाला माद्दा यदि बदल जाए तो आपके बाहर वाला जरूर बदल जाएगा । मन:स्थिति में हेर-फेर कर लें तो उसके अनुसार परिस्थितियाँ अपने आप बदल जाएँगी । इसलिए कल्प साधना से आपको जो यहाँ अर्थ लेना चाहिए, वह यह लेना चाहिए कि यहाँ जो आपसे कराया जाने वाला है या आपको जो करना है, या हम जो आपसे कराने के लिए दबाव डालेंगे तो सिर्फ इस बात का दबाव डालेंगे कि आपका भीतर वाला हिस्सा- जिसका अर्थ होता है-मन, बुद्धि और चित्त, जिसका अर्थ होता है जीवात्मा, जिसका अर्थ होता है आपका दृष्टिकोण, चिंतन और चरित्र बदल जाय । अगर इसे हम बदल दें तो आप विश्वास रखिए कि आपका जीवन पिछले दिनों जैसा भी कुछ रहा है, भविष्य में वैसा रह ही नहीं सकता। आपने इतिहास पढ़ा होगा और आपको उन भक्तों के नाम याद होंगे जो पहले सामान्य स्थिति में गये-बीते थे, लेकिन जब उन्होंने अपना मन, स्तर और दृष्टिकोण बदल दिया तो कितना कमाल हो गया । उनकी जिंदगी कैसी शानदार हो गयी । अगर उन्होंने भीतर वाले हिस्से को अर्थात् दृष्टिकोण को बदला न होता तो बाहर वाली परिस्थितियाँ बिलकुल मामूली आदमी के तरीके की रही होतीं ।

इस संदर्भ में, मैं आपके सामने कुछ ऐसे आदमियों के नाम रखना चाहता हूँ कि परिवर्तन कैसे होते हैं । शंकराचार्य को आप जानते हैं न । शंकराचार्य एक मामूली घर के लड़के थे । उनकी माता यह उम्मीद करती थी कि पढ़ाने के बाद में लड़के की शादी-ब्याह कर देंगे । बाल-बच्चे होंगे, नाती-पोते खिलायेंगे, लेकिन शंकर ने अपना दृष्टिकोण बदल लिया और माँ से इनकार कर दिया । उन्होंने अपने भावी लक्ष्य और भावी जीवन का एक स्वरूप बना लिया । यह स्वरूप उनका अपना बनाया हुआ था । यह दृष्टिकोण उन्होंने स्वयं बनाया था । कार्यपद्धति उन्होंने स्वयं बनायी । बाद में सहायता दूसरों ने भी की । शुरूआत तो उन्होंने ही किया । शंकराचार्य फिर क्या हुए ? वे शंकर भगवान के अवतार माने जाते हैं । अगर आदि शंकराचार्य ने अपने दृष्टिकोण में हेर-फेर न किया होता तो तब फिर वही होता जो उनकी माँ चाहती थीं । वे एक मामूली पंडित-पुरोहित होते, जन्म-पत्रियाँ बनाते-फिरते, पूजा-पाठ कराते फिरते , बाल-बच्चे होते और गये-बीते स्तर के होते । पर जब दृष्टिकोण उन्होंने बदल दिया तो आदि शंकराचार्य हो गये ।

हर आदमी को यह अधिकार मिला हुआ है कि वह चाहे जैसा बन जाय । भगवान ने हर आदमी को इस लायक बनाया है कि वह चाहे तो अपने आपको बदल दे । विवेकानंद की बात आपको मालूम है न । वे एक मामूली से विद्यार्थी थे । खास प्रतिभावानों में उनकी शुमार नहीं होती थी । घर की परिस्थितियाँ भी ऐसी थीं । पिता जी के मरने के बाद घर-गृहस्थी का वजन भी उन पर आ गया था । लेकिन यह सब होते हुए भी उन्होंने यह निश्चय किया कि अपने सोचने के तरीके, अपने दृष्टिकोण और अपने जीवन का लक्ष्य तथा उद्देश्य बदल देंगे । यही उन्होंने किया भी । जब इस बात का फैसला उन्होंने कर लिया तो रामकृष्ण परमहंस के साथ उनकी संगति हो गयी । तो क्या रामकृष्ण परमहंस ने उनकी सहायता की ? नहीं, ऐसा मत कहिए । रामकृष्ण परमहंस के लिए सहायता करना मुमकिन रहा होता, तो हजारों आदमी उनके पास आया करते थे और उनसे दीक्षा लेते थे । हजारों आदमी उनके शिष्य कहलाते थे, पर एक भी तो नहीं हुआ । केवल एक आदमी हुआ-विवेकानंद । तो क्या रामकृष्ण की कृपा एक पर ही थी ? नहीं, असलियत यह नहीं है । उनकी सब पर कृपा बरसती थी पर उन्होंने अपने को बदला नहीं, जबकि विवेकानंद ने अपने आपको भीतर से बदल लिया । बदले हुए आदमी की कौन सहायता नहीं करेगा ? आप जिस दिशा में भी आगे बढ़ना चाहते हैं, उसमें सहायता करने वालों की दुनियाँ में कुछ कमी है क्या ? विवेकानंद की भी सहायता हुई ।

और किसकी सहायता हुई ? सदन का नाम सुना है आपने कि वह कैसा आदमी था । कसाई का धंधा करता था, जानवर काटता था पवित्र शालिग्राम पत्थर के बदले माँस तौल-तौल कर बेचता था । बेचता ईमानदारी से था हर आदमी की दृष्टि में उसकी कीमत दो कौड़ी की थी । लेकिन जब उसने आपको बदल लिया ईश्वरीय सत्ता से तादात्म्य बिठा लिया तो भगवान के 'भक्तों' में सदन कसाई मूर्धन्य हो गये । मन: स्थिति बदल जाने के बाद में परिस्थितियाँ क्यों नहीं बदलेंगी ? पहले जिससे लोग नफरत करते थे, उसी को सब प्रणाम करने लगे । मस्तक झुकाने लगे और न जाने क्या-क्या करने लगे । बाल्मीकि का नाम आपने सुना है न, पहले उसकी कैसी जिंदगी थी । पहले वे घटिया वाली, खराब वाली जिंदगी जी रहे थे । आदमी उससे भयभीत रहता था । हर आदमी का उस पर धिक्कार बरसता था , लेकिन जब उन्होंने अपने आपको बदल लिया तब वह संत बाल्मीकि हो गये, ऋषि बाल्मीकि हो गये । उनका जीवन इतना शानदार हो गया कि भगवान राम को अपनी धर्म पत्नी सीता की हिफाजत के लिए, उनकी गार्जियन शिप के लिए और कोई संत न दिखाई पड़ा । बाल्मीकि ही सीताजी द्वारा सुसंतति उत्पादन हेतु- सबसे बड़े संत दिखाई पड़े । उनके आश्रम में भगवान राम ने अपनी पत्नी और बच्चों को सहर्ष रहने दिया ताकि उनका पालन-पोषण संस्कार औ शिक्षण ठीक ढंग से हो सके । वही बाल्मीकि जिनका पूर्व का जीवन दस्यु का था, उनक कायाकल्प हो गया वे संत, ऋषि ,देव पुरुष ब गए वही कायाकल्प करने के लिए आ लोग यहाँ आये हैं । भीतर वाले को बद दीजिए, फिर देखिये परिस्थितियाँ बदलती है कि नहीं ।

हमने आपके सामने बाल्मीकि उदाहरण पेश किया । अभी मेरा मन कुछ उ उदाहरण पेश करने का है । आम्रपाली का न सुना होगा आपने । वह एक वेश्या थी जिस हर आदमी ऐसे समझता था कि हम क्या व

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

आप से । उसने कितने आदमियों की जिंदगी खराब की थी । लेकिन जब उसने अपने आपको बदल दिया, तब फिर आम्रपाली-आम्रपाली नहीं रही-वेश्या नहीं रही, वह भगवान बुद्ध की बेटी हो गयी । सारे के सारे एशिया के अधिकांश देशों में वह घूमी । महिला संगठन की दृष्टि से उसने न जाने क्या से क्या कर डाला कैसे हो गया यह सब ? उसने अपने आपको बदल दिया और उसका कायाकल्प हो गया । कायकल्प कैसे होगा ? यही मैं आपको बताने वाला हूँ , पर पहले आपको यह जान ही लेना चाहिए कि कायाकल्प भीतर से होता है । बाहरी शरीर के कायाकल्प से कोई मतलब नहीं है । आंतरिक कायाकल्प की विधा प्राचीनकाल में भी रही है और अभी भी है तथा आगे भी रहेगी । इसी के लिए हमने आपको बुलाया है।

ध्रुव का नाम सुना होगा आपने, वह बिलकुल एक सामान्य दर्जे के राजकुमार थे । राजाओं के ढेरों बच्चे होते हैं । एक को गोद में लिया और एक को गोद से उतार दिया । जरासी परिवार की एक घटना । उससे ध्रुव ने अपने आपको बदल लिया । उन्होंने कहा-राजकुमार रहना नहीं है और यदि रहना ही होगा तो भगवान के राजकुमार क्यों नहीं रहेंगे । बस, भगवान का राजकुमार बनने का फैसला कर लिया उसने । दृढ़ निश्चयी की सहायता करने वाले कम हैं क्या ? नारद जी आ गये और उनने उसकी सहायता की । नारद जी बाकी बच्चों-ध्रुव के भाई-बहनों के पास क्यों नहीं गये ? उनसे क्यों नहीं कहा ? नहीं नारद जी उनसे कह नहीं सकते थे, क्योंकि जो आदमी अपना निश्चय स्वयं करता है उसी की सहायता दूसरे करते हैं । आपने वह काहवत सुनी होगी-'ईश्वर उन्हीं की सहायता करता है जो अपनी सहायता आप करते हैं ।' यह बात बिलकुल सोलह आने सच है । प्रहलाद का नाम जानते हैं न, अगर वह अपने दैत्य बाप के कहने पर चला होता और पुरानी परंपरा पर चला होता तो सिवाय दैत्य के क्या हो सकता था ? बाप-दादे जो काम करते थे, वही काम प्रहलाद भी करता । परंतु प्रहलाद ने अपने आपको बदल दिया । इसी तरह गुरुनानक का नाम भी आपने सुना होगा । गुरुनानक के पिताजी मामूली सा व्यापार करते थे । वे चाहते थे कि उन का लड़का भी व्यापार करे । व्यापार के लिए एक बार पैसा भी दिया जिसे उन्होंने परमार्थ में खर्च कर डाला । बाप के कहने पर वे चले नहीं उनकी बातें मानने से इनकार कर दिया मित्रों ने, पड़ोसियों ने भी कहा होगा, पर एक का भी कहना उन्होंने नहीं माना । अपने ईमान और भगवान का कहना उन्होंने माना । अपने ईमान और भगवान का कहना मानने वाले नानक का क्या होगया देखा है न आपने कि सारे संसार में कितनी इज्जत है उनकी । सिक्ख धर्म में उन्हें भगवान मानते हैं । वे महान बन गये, पर अगर बाप की मर्जी पर चले होते तो पुराने ढर्रे पर ही गाड़ी लुढ़कती रही होती और वे बिलकुल मामूली से आदमी होते और एक बनिये की दुकान कर रहे होते । ढेरों बच्चे पैदा करके मामूली आदमी के तरीके से जिंदगी बसर कर रहे होते । पर ऐसा नहीं हुआ । नानक का कायकल्प हो गया । नानक संत हो गये, ऋषि हो गये, भगवान हो गये, अवतार हो गये।

शिवाजी की भी यही कहानी है । उनके पिताजी मिलेट्री में नौकरी करते थे वे जैसे मामूली घर-गृहस्थी के बच्चे होते हैं, उसी तरह थे । यदि ढर्रे का जीवन जिया होता और उस ढर्रे से इनकार न किया होता तथा अपने लिए कोई नया निर्धारण न किया होता या निश्चय न किया होता तो क्या आप विचार कर सकते हैं कि शिवाजी वैसे ही रहे होते जैसे कि हम उन्हें छत्रपति शिवाजी कहते हैं । यह कैसे हुआ ? कायाकल्प हो गया । वह शिवाजी जो माता के पेट में से पैदा हुआ था, घर-गृहस्थी में गुजारा करता था, उसकी तुलना में महापुरुष शिवाजी की रूप रेखा बिलकुल अलग है । इसी तरह चन्द्रगुप्त का नाम आपने सुना होगा । चाणक्य ने उसके अंदर की कसक को देखा और उसे पढ़ लिया । उसकी पात्रता को देखा और उसके भीतर हो रहे मनःस्थिति के बदलाव को देखा । चाणक्य ने उसे क्या से क्या बना दिया । गाँधी जी परिस्थिति से ऐसे ही थे क्या ? उनके पिताजी एक छोटी स्टेट के दीवान थे । वह अपने लड़के को वकील बनाना चाहते थे । गाँधी जी यदि उनके अनुसार चले होते तो एक मामूली वकील रहे होते । सफल या असफल-यह बात दूसरी है । पर सिवाय वकील के और कुछ नहीं हो सकते थे । लेकिन जब उन्होंने यह निश्चय किया कि हमको कुछ बनना है और जिंदगी का बड़ा उद्देश्य पूरा करना है, तो वे फिर महात्मा गाँधी हो गये, अवतार हो गये, बापू हो गये और युग प्रवर्तक हो गये । लाखों आदमियों को दिशा देने वाले हो गये । आखिर यह हुआ कैसे ? भगवान ने कर दिया क्या ? नहीं । तो फिर भाग्य ने किया क्या ? नहीं । तो फिर किसी आदमी ने किया होगा । नहीं, किसी ने भी नहीं किया । उन्होंने स्वयं अपना कायाकल्प कर लिया था । सहायता जरूर औरों ने की । सहायता का तो दुनिया में द्वार खुला है । बुरे लोगों के लिए भी सहायता का द्वार खुला हुआ है और अच्छे लोगों के लिए भी खुला है । गाँधी जी के बावत यही हुआ । बुद्ध के बारे में भी यही बात लागू होती है । बुद्ध भगवान क्या थे ? एक मामूली राजा के लड़के थे । छोटी उम्र में विवाह-शादी कर दी गयी थी । लेकिन जब उन्होंने यह निश्चय किया कि हमें बड़प्पन की दिशा में चलना है, कुछ महान कार्य करने हैं, तो बुद्ध का कायाकल्प हो गया और वे भगवान बुद्ध हो गये।

उपरोक्त पुराने उदाहरण मैंने इसलिए दिये हैं कि आप विचार कर सकें कि हमारा बदलना संभव है । चलिये आपका यह ख्याल हो शायद कि हम तो मामूली आदमी हैं । हमारी घिनौनी और गंदी जिंदगी रही है । जिसके कारण हम नहीं बदल पायेंगे और जिस ढर्रे पर हम चल रहे हैं, जिस कोल्हू में हम पिल रहे हैं, उसी में हम पिलते रहेंगे तो यह आपकी मर्जी के ऊपर है, अन्यथा मामूली और घिनौने आदमी तो और भी आसानी से बदल सकते हैं । यह आपकी मर्जी के ऊपर है कि आप चाहें तो इस तरीके से भी रह सकते हैं जैसे कि अभी रह रहे हैं । लेकिन अगर आपका मन हो कि हमको बदल जाना चाहिए तो सूरदास का उदाहरण आपके सामने है । सूरदास कैसें आदमी थे ? आप जानते हैं न । विल्वमंगल का नाम सुना है न

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

आपने कैसी घिनौनी और कामुक जिंदगी थी उनकी । पर जब कायाकल्प हुआ तो अंधा होने के बाद में भगवान उन्हें अपनी लाठी पकड़ा कर ले जाते थे । तुलसीदास की भी पिछली जिंदगी ऐसी थी कि कामुकता से पीड़ित होकर उन्होंने मुर्दे पर सवार होकर नदी पार की थी । साँप की पूँछ पकड़कर छत पर चढ़ गये और अपनी धर्म पत्नी के पास पहुँचे थे । धर्म पत्नी ने यह कहा था कि 'जितना प्यार आप हमसे करते हैं, यदि उतना ही प्यार आप भगवान से करें, तो क्या से क्या हो सकता है ? यह बात उनके मन में लग गयी और लगने के बाद में उन्होंने अपने आपको बदल दिया । बदला हुआ जीवन तुलसीदास का आप जानते हैं न । रामायण को बनाने वाले उस तुलसीदास को आप जानते हैं जिनके बारे में -प्रसिद्ध है कि "तुलसीदास चंदन घिसें, तिलक देत रघुवीर ।"

भगवान राम तुलसीदास को चंदन लगाते थे और श्रीकृष्ण भगवान सूरदास को लाठी पकड़ाकर साथ-साथ घूमते हैं । ऐसा हो सकता है क्या ? हाँ हो सकता है और आपके लिए भी हो सकता है, यकीन रखिये । यकीन दिलाने के लिए ही हमने आपको यहाँ बुलाया है कि आप चाहें तो जरूर कर सकते हैं । यह कैसे होगा ? इसमें दो आदमियों के सहयोग की जरूरत पड़ती है, अकेले आप नहीं कर पायेंगे । लेकिन कोई बाहर का आदमी अकेला आपकी सहायता करना चाहे तो वह भी मुमकिन नहीं है । आप प्रयत्न कीजिए हम आपकी सहायता करेंगे । मरीज को दवा खानी होती है और परहेज करना होता है । चिकित्सा करने वाला दूसरा आदमी होता है । हम आपकी चिकित्सा कर सकते हैं, लेकिन परहेज तो आपको ही करना पड़ेगा । दवा तो आपको ही खानी पड़ेगी । आपने देखा होगा कि अंडा किस तरीके से फूटता है । मुर्गी के पेट में से अंडा निकलता है । मुर्गी की दया न हो तो अंडा कहाँ से आये । जन्म लेने से पहले अंडे के भीतर रहने वाले बच्चे को मेहनत करनी पड़ती है और अपनी ताकत के हिसाब से अंडे को भीतर से तोड़ना पड़ता है । कोई और तोड़ने नहीं आता । आपने देखा होगा कि जब बच्चा बाहर आता है तो अंडे के भीतर बैठे उस चूजे को मेहनत करनी पड़ती है । अपनी ताकत से वह अंडे में दरार डालता है और फूट कर बाहर निकल पड़ता है । यह मेहनत उसकी अपनी है । अंडे को जन्म मुर्गी देती है, छाती से लगाकर पालती भी है सेती भी है । यह सब काम मुर्गी का है, लेकिन उस अंडे को तो चूजे को ही तोड़ना पड़ता है । भ्रूण तो माता ने बनाया है । पेट में रहे हुए गर्भ को खुराक माता ने दी है । दूध माता ने ही पिलाया है, लेकिन पेट में से निकलने की ताकत, मेहनत तो पेट में रहने वाले बच्चे को ही करनी पड़ती है । अगर पेट में रहने वाला बच्चा इनकार कर दे कि हम तो बाहर नहीं निकलते, धक्का-मुक्की नहीं करते, तब फिर 'डिलिवरी' नहीं हो सकती । बाहर निकलने के लिए पूरी की पूरी जिम्मेदारी उस बच्चे के ऊपर है जो पेट में बैठा हुआ है । प्रसव तो माता ही करती है, दर्द तो माता को ही होता है, पर जब तक बच्चे की ताकत, हुकूमत काम नहीं करती, उसके पहले या पीछे उसे जन्म नहीं दे सकती ।

आपको अंडे के तरीके से अपना दायरा तोड़ना पड़ेगा, बच्चे के तरीके से बाहर तो निकलना पड़ेगा । आपको जो करना है, यही करना है कि आपके ऊपर जो केंचुली लगी हुई है, यदि आप उसे उतार देंगे तो आप साँप के तरीके से दौड़ते हुए चले जायेंगे । केंचुली लगा हुआ साँप कहाँ भाग पाता है । लोग पत्थर फेंकते रहते हैं, पर वह वैसे ही बैठा रहता है । केंचुली उतार दी तो न जाने कहाँ से कहाँ जा पहुँचता है । आप अपने पुराने कुसंस्कारों की केंचुली उतार दीजिये और नये रास्ते पर चलिए । पिंजरे से आप बाहर निकलें, पिंजरे से बाहर आपको ही निकलना है । हथकड़ियाँ और बेड़ियाँ तोड़ने के लिए मशक्कत आपको ही करनी है । अपनी सहायता आप करेंगे तो हम जरूर सहायता करेंगे । आप यकीन रखिये । सहायता करने के लिए ही तो हम बुलाते हैं आपको । हम आपको सहायता का यकीन दिलाते हैं, लेकिन अगर आप यह ख्याल करते हों कि केवल हमारी सहायता से आपकी समस्यायें हल हो जायँगी, तो यह मुमकिन नहीं है । आप और हम मिलजुल कर कार्य करें । आप हमारा कहना मानें और हम आपके लिए मदद करें । अंधे और पंगे के तरीके से हम लोग मिलजुलकर नदी पार कर लें । तब परिस्थितियाँ भी ऐसी बदल जायँगी कि मजा आ जायगा ।

कायाकल्प से हमारा मतलब यही था कि आपके लिए हम सहायता करेंगे कि आप बदल जायें । आप पर हम दबाव डालेंगे कि जिस तरह की जिंदगी आप जीते रहे हैं, वह मुनासिब नहीं है । आप का जो स्वरूप अब तक का रहा है, वह आपके लिए मुनासिब स्वरूप नहीं है । हम आप पर दबाव डालने वाले हैं कि आप इस स्वरूप को आगे चलाने से इंकार कर दें और एक काम करें कि ताकत लगायें, कोशिश करें, जुर्रत करें, साहस इकट्ठा करें कि हमें अपनी जिंदगी को बदलना है । फिर आप देखिये हम आपकी पूरी-पूरी मदद करेंगे । विवेकानंद की सहायता रामकृष्ण परम हंस ने की थी । हम परमहंस तो नहीं हैं, पर आप यकीन रखिये कि आपकी सहायता हम उतनी ही कर सकते हैं और श्रेष्ठ व्यक्ति बना सकते हैं । आप तैयार हो जाइये । अगर आप तैयार हैं तो आप यकीन रखिये कि आपका जीवन बदल जायगा और ऐसा शानदार जीवन बन जायगा कि आप स्वयं तो अपने आप में आश्चर्य करेंगे ही, साथ ही जो कोई भी आपको यहाँ से जाने के बाद देखेगा, वह भी आश्चर्य करेगा । अगर आपको यह दावत स्वीकार हो तो फिर आप तैयार हो जाइये, हिम्मत कीजिए, उसके लिए संघर्ष कीजिए और अनुशासन पालने के लिए तैयार हो जाइये । फिर देखिये आपका भविष्य कैसे शानदार बनता है । कायाकल्प से हमारा उद्देश्य यही था और आपको भी कायाकल्प का यही उद्देश्य समझना चाहिए और अपनी तैयारी के लिए जो मुनासिब हो, वह करने के लिए कमर कसकर खड़े होना चाहिए ।

ओऽम् शांति : ५

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परम पूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी-

कैसे हो आध्यात्मिक कायाकल्प-२

(कल्प साधना संबंधी प्रवचन का उत्तरार्ध)

गायत्री मंत्र साथ-साथ -

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

मित्रो, कल्प साधना के संबंध में कल थोड़ी सी जानकारी दी थी कि यह कल्प आखिर है क्या ? यह भी बताया था कि कल्प माने है- परिवर्तन । पर यह परिवर्तन क्या होगा ? कौन करेगा ? कैसे संभव होगा ? आप कुछ सहयोग करेंगे और हम आपकी सहायता करेंगे । कल हमने कहा था कि आपको अपने भीतर के दृष्टिकोण को बदल देना चाहिए । क्रिया भी इसमें सहायक है । इसके लिए आपसे जप करा रहे हैं, अनुष्ठान करा रहे हैं, ध्यान करा रहे हैं । भोजन के बारे में- आहार की भी साधना करा रहे हैं । ये क्रियायें हैं । इन क्रियाओं का मतलब सिर्फ इतना है कि आप अपने भीतर वाले दृष्टिकोण, चिंतन, चरित्र, स्वभाव, रुचि और आकांक्षाओं को बदल दें । अगर आपने यह अनुमान लगा लिया हो कि केवल क्रिया करने से जादूगरी के तरीके से आपको कहीं आसमान से कोई सिद्धियाँ आ टपकेंगी, तो आप इस ख्याल को निकाल दीजिए । करना आपको ही पड़ेगा । आपके किये बिना कोई रास्ता नहीं है । आप अगर चुपचाप बैठकर के गुरुजी के आशीर्वाद, सीधे गायत्री माता के आशीर्वाद से या किसी मंत्र के चमत्कार से बदलना चाहते हों और अपनी परिस्थितियों को सुधारना चाहते हों और स्वयं कष्ट उठाने से इनकार करते हों तो ख्याल रखिये आपको सफलता मिलने वाली नहीं है । एक महीने का समय भी आपका बेकार चला जायेगा । अच्छा हो आप वास्तविकता को पहले समझलें, फिर कदम बढ़ायें ।

कल आपको यह बताया था कि किस तरीके से लोगों ने अपने आपको बदल लिया और मनःस्थिति बदलने के बाद में परिस्थितियाँ किस तरीके से बदल गयीं । कायाकल्प का स्वरूप यही है । फिर कायाकल्प में करना क्या पड़ता है ? चलिए इसके लिए एक उदाहरण मैं आपको सुनाऊँगा । वह उदाहरण महामना मालवीय जी का है । महामना मालवीय जी ने एक कायाकल्प किया था । वे भी यही सोचते थे कि शरीर का कायाकल्प होगा । हम कह चुके हैं कि शरीर का कायाकल्प संभव नहीं है, लेकिन मन का कायाकल्प करने के लिए भी प्रक्रिया वही इस्तेमाल करनी पड़ती है जो शरीर के कायाकल्प के लिए कभी की जाती रही होगी, या कभी सफल होती रही होगी । महामना मालवीय जी का कायाकल्प कैसे हुआ था ? मथुरा जिले में कोसी नाम की एक जगह है । उसके पास जंगल में एक महात्मा रहते थे-तपसी बाबा उनका नाम था । उन्होंने मालवीय जी से संपर्क स्थापित किया और कहा कि हम आपका कायाकल्प करा देंगे - आपके बुढ़ापे को जवानी में बदल देंगे । यह प्रक्रिया जिस तरीके से इस्तेमाल की गयी, वह आपके लिए बहुत ध्यान देने लायक है और आपके मानसिक कायाकल्प में वह प्रक्रिया जरूर सहायता कर सकती है ।

क्या हुआ था उनका ? उनके तीन काम हुए थे । मालवीय जी को सबसे पहले पंचकर्म करने पड़े थे । पंचकर्म किसे कहते हैं ? पंचकर्म कहते हैं शरीर के संशोधन को । इसमें स्नेहन, स्वेदन, वमन, विरेचन और वस्ति आदि पंचकर्मों के द्वारा शरीर का शोधन किया जाता है । पंचकर्मों में वमन, विरेचन द्वारा आमाशय में जितना भी मल और जहर भरा पड़ा था उसे निकाल दिया । आँतों में जितना भी जहर भरा पड़ा था उसे उलटी और दस्त कराके बाहर निकाल दिया । यह दो कृत्य हो गये । तीन और रह जाते हैं, जिनमें स्वेदन कहते हैं-पसीना निकालने को अर्थात् भाप देकर पसीना निकालना । पसीना इसलिए निकाला गया कि उनके शरीर में जहाँ कहीं भी कोई विषाणु भरे होंगे या संचित मल भरा होगा, उसको निकालने का प्रयत्न किया गया । इसके बाद उन्हें बार-बार छींक दी गयीं । जुकाम के कीटाणु अथवा मस्तिष्क में जो मल भरे पड़े थे, उनको निकाला गया । इस तरीके से सारे के सारे मलों का संशोधन किया गया । इस तरीके से कल्प का पहला कृत्य-पहला अध्याय मलों का संशोधन है । जिनको भी पूरा न सही अधूरा ही शारीरिक कायाकल्प करना होगा तो पहले मलों का निष्कासन करना पड़ेगा । दूसरा, मालवीय जी को यह करना पड़ा कि चालीस दिन एक झोंपड़ी के भीतर कैद रहना पड़ा । चारों ओर से झोंपड़ी बंद थी, न सूरज की रोशनी जाती थी, न हवा जाती थी, न धूप जाती थी । बस उसके भीतर एकांत कोठरी में चालीस दिन उनको काटने पड़े । उसी में नहाते थे, पूजा-पाठ करते थे । जो कुछ खाना खाते रहे होंगे, वह भी उसी में भेज दिया जाता था । शौचादि क्रिया भी उसी में करते थे । बहरहाल उसमें से निकलना नहीं होता था । टहलना होता तो उसी

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

में टहलते । ठीक इसी तरीके से चालीस दिन उन्होंने काटे ।

अध्याय नम्बर दो में मैं आपको यह समझाने वाला हूँ कि इन तीनों क्रियाओं का क्या उद्देश्य है और ये तीनों क्रियायें मनः क्षेत्र का कायाकल्प करने के लिए भी किस तरीके से लागू हो सकती हैं ? दो बातें हो गयीं-एक हुआ उनका मल संशोधन और दूसरा हुआ एकांत सेवन । तीसरा एक और पक्ष यह था कि उनको विशेष पदार्थ खिलाये गये । क्या खिलाये गये , ऐसे पदार्थ खिलाये गये जिससे कि उनके शरीर में नये कोषाणु बने, नया जीवन आये । उनमें गिलोय जैसी टॉनिक टाइप की कुछ चीजें ऐसी थीं जिन्हें एक फ्लास्क में बंद करके रखते थे और सात दिन बाद जब वह तैयार हो जाती थी तो पीस कर उन्हें पिलाते थे जिससे कि कायाकल्प में पुरानी खराबियाँ निकल जायँ और नयी अच्छाइयाँ शुरू हो जायँ । यही कृत्य चालीस दिन तक चलता रहा । चालीस दिन के बाद क्या लाभ हुआ, ज्यादा तो मुझे नहीं मालूम, पर इतने लाभ तो मालवीय जी ने स्वयं छापे थे कि मेरी स्मरण शक्ति ठीक हो गयी है और सफेद बाल काले हो गये हैं । ऐसे कई लाभ उनको हुए थे । ये लाभ कब तक टिके थे, इस बारे में मुझे कुछ नहीं कहना क्योंकि मैंने शारीरिक कायाकल्प की बाबत कुछ कहा भी नहीं है और कुछ ऐसा कराने की स्थिति में भी मैं नहीं हूँ , लेकिन मानसिक कायाकल्प में भी इन्हीं तीनों सिद्धांतों को बराबर आपको लागू करना पड़ेगा । इससे कम में कुछ काम चलने वाला नहीं है । एक काम आपको यह करना पड़ेगा कि आपके भीतर जो भी संचित मल, आवरण, और विक्षेप हैं, जो भी कषाय और कल्मष भरे पड़े हैं, उनकी ओर गौर करना पड़ेगा । न केवल गौर करना पड़ेगा, वरन् इन्हें निकालना भी पड़ेगा । जद्दोजेहद करनी पड़ेगी, लड़ना पड़ेगा ।

आपका पिछला जीवन कैसे कुसंस्कारों से भरा पड़ा है और उन कुसंस्कारों को दूर करने के लिए आपको क्या करना चाहिए और यह कैसे संभव है ? हमारी प्रायश्चित्त प्रणाली इसी के लिए है । प्रायश्चित्त पद्धति में यह बताया जाता है कि आदमी की आध्यात्मिक उन्नति में सबसे बड़ी रुकावट उसके पुराने किये हुए कर्म हैं । पुराने दुष्कर्म पत्थर की तरह से रास्ते में खड़े हो जाते हैं और एक कदम भी आगे बढ़ने नहीं देते, बार-बार रोक देते हैं । क्योंकि उसका भविष्य बुरा होता है, उसको दंड मिलने हैं, इसलिए अच्छे काम भी नहीं करने देते और अच्छे कामों की ओर से मन उचाट देते हैं । इसलिए पहला काम हर साधक को अपने आपकी धुलाई के रूप में करना पड़ता है । रंगने से पहले धुलाई करनी पड़ती है । धुलाई अगर नहीं की जाय तो कपड़ा रंगा नहीं जाएगा । इसलिए पहला काम यह करना पड़ता है । कल्प साधना में जो आप आये हैं तो यह कार्य पद्धति आपको समझनी होगी । आपके ऊपर दबाव डाला जायगा और आप में उत्साह पैदा किया जायगा कि आपके अंदर पिछले स्वभाव पिछली गंदी आदतें और पिछली क्रिया पद्धति जो जम गयी है, उसको आप हटा दीजिए । उसको निकालिए, उसको छोड़िये । बुरी आदतें यदि छोड़ने से न छूटती हों तो उनसे लड़ना शुरू कीजिए । उनके विरुद्ध बगावत कीजिए । उनको अस्वीकार कर दीजिए , उनका असहयोग कीजिए और उनका दबाव मानने से इनकार कर दीजिए । आपके कायाकल्प में यह करने का पहला काम है । आप यह न करेंगे तो कल्प साधना, जिसके रंगीन सपने हमने दिखाये हैं और यह बताया है कि आपका जीवन दैवी जीवन होकर रहेगा और आप अच्छे शानदार आदमी होकर रहेंगे, पूरा हो सकना संभव नहीं है । यह एक काम तो आपको करना ही चाहिए । अगर आप यह नहीं करेंगे और पुराने घिनौने जीवन के ढर्रे पर ही चलते रहेंगे तो फिर हम क्या कर पायेंगे । फिर आपकी पूजा-उपासना क्या कर लेगी आपको जप और अनुष्ठान चमत्कार कैसे दिखा पायेंगे ? जादू-चमत्कार जैसा अध्यात्म नहीं है । अध्यात्म तो मानसिक पुरुषार्थ को कहते हैं । मानसिक पुरुषार्थ का यह एक काम तो आपको करना ही पड़ेगा ।

दूसरा काम एक और आपको यहाँ करना पड़ेगा । उसका अर्थ है- जैसे मालवीय जी को चालीस दिन तक एक कोठरी में एकांत सेवन करना पड़ा था, आपको भी यहाँ चालीस दिन तो नहीं, पर एक महीने भर तक एकांत सेवन करना चाहिए । यह खास बात है । आपको निवास करने के लिए हमने एक कोठरी खासतौर से इसलिए दी है कि आप यह मान कर चलें कि आप एकाकी हैं । आप अकेले रह रहे हैं । इस दुनिया में आप अकेले हैं । अकेले ही आप आये थे और अकेले ही आपको जाना है, चलना है । किसी रास्ते पर हों तो भी आपको अकेले ही चलना है । वही एकांत सेवन है । इसी को कुटी प्रवेश कहते हैं । इसी को गुफा प्रवेश कहते हैं । प्राचीनकाल के संत-महात्मा गुफा में घुस जाते थे, कोठरियों में रहते थे, एकांत सेवन करते थे-क्यों ? क्योंकि उनके बाहर का-चारों ओर का जंजाल, जिसने उनको बुरी तरह से चक्रव्यूह में फँसे हुए अभिमन्यु के तरीके से जकड़ लिया है, उसमें से पार हो सकें । उससे अपने आपको अलग अनुभव कर सकें । अपनी समस्याओं का समाधान करने के लिए आपको एकांत चाहिए । एकांत अगर आपको नहीं मिलेगा तो आप विचार तक नहीं कर पायेंगे कि क्या करें ? हमको क्या करना है ? पुरानी चीजों से कैसे आपको छुटकारा पाना है और नयी चीजों को कैसे अपनाना है । इन दोनों के लिए एकांत सेवन आपके लिए आवश्यक है । एक महीने का यह एकांत सेवन आपके लिए बहुत महत्व पूर्ण है । आपको रोका गया है कि आप जगह-जगह मत जाइये,

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

घूमिये मत । तीर्थ यात्रा के बहाने यहाँ-वहाँ मटरगश्ती मत कीजिए यहाँ-वहाँ चक्कर मत काटिये कहीं मत जाइये । ऋषीकेश मत जाइये । एक महीने भर आपको एक ही जगह रहना है ।

आपको ऐसे रहना चाहिए जैसे कि माता के गर्भ में बच्चा रहता है । कल्पना कीजिए कि आप जिस कोठरी में अथवा गायत्री नगर-शांतिकुंज जिसमें आप निवास करते हैं, यह माताजी का गर्भ है और आप माताजी के गर्भ में पल रहे हैं । आपका नया जन्म हो रहा है । आप अपना कायाकल्प करा रहे हैं । पेट में जो भ्रूण रहता है, वह चुपचाप बैठा रहता है । गड़बड़ नहीं फैलाता है । जो माता देती रहती है, उसी से अपना गुजारा करता रहता है । माता जिस हैसियत में रखती है, उसी में रहता है । आपको भी इसी हैसियत में रहना चाहिए । आपको यह अनुभव करना चाहिए कि आप यहाँ शांतिकुंज में निवास करते हैं, गायत्री नगर में निवास करते हैं । यह क्या है ? गुरु जी का बर्तन पकाने का आँवा है । कुम्हार को आप जानते हैं, वह बर्तन बनाता है और बनाने के बाद में कच्चे बर्तनों को पकाता है । इस आँवे में से खिलौने भी निकलते हैं और न जाने क्या-क्या निकलते हैं । आप चाहें तो यह मान सकते हैं कि गुरुजी ने यह आँवा लगाया हुआ है । कहाँ है आँवा ? इस कोठरी में जिसमें कि आप रहते हैं । शांतिकुंज को आप आँवा मानिये । इस आँवे में आपको कैद कर दिया गया है और आपको पकाया जा रहा है । अगर आप एक महीने तक पकते रहेंगे, गड़बड़ नहीं फैलायेंगे, तो मजा आ जायगा । आप अपने चित्त को इधर-उधर मत ले जाइये । घर वालों को याद मत कीजिए, बाहर वालों की समस्या पर ध्यान मत दीजिए । मन को इधर-उधर भागने मत दीजिए, शरीर को यहाँ-वहाँ भटकने मत दीजिए । यहाँ-वहाँ घूमते रहेंगे तो बताइये फिर काम कैसे बनेगा । कोई बच्चा माँ के पेट में दंगल मचाये कि मम्मी मैं तो अभी नौ महीने पेट में नहीं रह सकता, जरा छुट्टी दे दीजिए मैं बाजार में से घूमकर आऊँ । तब आप समझ सकते हैं कि बच्चे का क्या हाल होगा । इसी तरह से अगर कुम्हार के बर्तन चुपचाप बैठे न रहें और यह कहें कि साहब हम शाम को आ जाया करेंगे, पर दिन में तो बाजार में घूमा करेंगे और रात को आँवे में घुस जाया करेंगे । आप ही बताइये, तब बर्तन पकेंगे क्या ? सब बिगड़ जायगा । इसलिये आप बाहर की चिंता न कीजिए और न मन को बाहर भागने दीजिए ।

तो क्या काम करें ? यही मैं बताने वाला था कि अगर आप तीसरा वाला काम पूरा कर लेते हैं तो समझना चाहिए कि आपके कल्प-साधना का उद्देश्य पूरा हो गया और जिस लक्ष्य पर पहुँचने की आप इच्छा करते थे, अथवा जिस लक्ष्य पर हम आपको पहुँचाना चाहते थे, वह निश्चित रूप से सफल हो जायगा । एक काम और कीजिये कि जिस तरह से मालवीय जी से तीसरा जो काम टॉनिक सेवन का कराया गया था, आपको भी टॉनिक सेवन करना चाहिए । टॉनिक सेवन से क्या मतलब है ? टॉनिक सेवन से मतलब है कि जिन विचारों का आप में अभाव रहा है, उन विचारों को फिर से सेवन करना शुरू कीजिए । टॉनिक तो आपको मिला ही नहीं । इस संदर्भ में आप तो कुपोषण के शिकार रहे हैं । अथवा विकृत भोजन करते रहे हैं । इसलिए आपका सारे का सारा मानसिक स्वास्थ्य गड़बड़ा गया है । तब क्या करें ? तब आपको भविष्य में ऐसी विचाराधारा के साथ, ऐसे लोगों के साथ, ऐसे लक्ष्य के साथ, ऐसी महान सत्ता के साथ अपने आपको संपर्क में रखना है जो आपको महान बनाने में समर्थ है ? जो आपको सहारा दे सकती है, ऊँचा उठा सकती है । आप उसके संपर्क में आइये । इस बीच आप भगवान से संपर्क मिलाने की कोशिश कीजिए और लोगों से अपने आपको पीछे हटाइये । थोड़े दिनों के लिए यह मान कर चलिए कि आप और आप का भगवान दो ही हैं । फिर लक्ष्य की प्राप्ति आसान हो जायगी ।

भगवान किसे कहते हैं ? भगवान सद्गुणों के, सत्प्रयासों के, आदर्शों के समुच्चय का नाम है । एक भगवान तो वह है जो सारे विश्व को सँभालता है, जिसको हम नियामक सत्ता कह सकते हैं, नियमन-नियंत्रण कह सकते हैं । एक भगवान वह है जो विश्वव्यापी है । विश्वव्यापी भगवान के लिए तो आप उसका कायदा पालन कीजिए और फायदा उठाइये । कायदे को तोड़ेंगे तो मार खायेंगे । वह भगवान तो आदमी के लिए न्याय और नियमन के अलावा दूसरा कुछ करता भी नहीं है । लेकिन जो हमारी व्यक्तिगत सहायता कर सकता है, वह हमारी 'सुपरकांशसनेस' है, हमारी अंतरात्मा है । अंतरात्मा को ही परमात्मा कहते हैं । गुण-कर्म, स्वभाव की विशेषता का नाम परमात्मा है । उसी को सुपरकांशसनेस कहते हैं । आप उसके साथ में अपने आपको जोड़ दीजिए । अभी तक आपका संबंध कुसंस्कारों के साथ-घिनौनेपन के साथ रहा है । घटिया लोगों के साथ रहा है । चारों ओर जो वातावरण छाया हुआ है, वह आपको गिरावट के अलावा और क्या नसीहत देगा । आपने जो स्वभाव सीखा है वह घिनौने जीवन के अलावा क्या सिखा सकता है । आप चारों तरफ से नर-पशुओं से घिरे हैं । आप थोड़े दिनों के लिए इस दायरे से बाहर हो जाइये और बाहर होकर के ऐसे लोगों के साथ रिश्ता बनाइये जिनके समुदाय में जाकर के आपका ऊँचा उठना संभव है । ऋषियों के साथ संबंध बनाइये, संतों के साथ संबंध बनाइये, देवताओं के साथ संबंध बनाइये, भगवान के साथ संबंध मिलाइये ।

ये सब हैं क्या ? बिलकुल हैं और आपके साथ हैं, आप देख नहीं पा रहे हैं । यहाँ जिस कोठरी में आप

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

रहते हैं, जिस वातावरण में रहते हैं, उसमें चारों ओर संत छाया हुआ है, ऋषि छाया हुआ है, चारों ओर भगवान छाया हुआ है और साथ में आदर्श छाये हुए हैं । दृष्टिकोण छाये हुए हैं, प्रेरणायें छाई हुई हैं और आपको ऊँचा उठाने के लिए जो दिशाधारायें आवश्यक थीं, छाई हुई हैं । आप इनके साथ अपना संबंध मिलाइये । आप पीछे मुड़ करके मत देखिये, आगे की तरफ विचार कीजिए । आप महानता के साथ में जुड़ जाइये, आदर्शों के साथ में जुड़ जाइये । एक महीने तक तो आपको यही करना है, अपने आपको साधना में लगाये रखना है, चिंतन-मनन करना है । इस बीच में आपको जप और अनुष्ठान करना है, योगाभ्यास करना है, और अपने आपका परिशोधन करना है । तो क्या हम अकेले कर लेंगे ? नहीं आप अकेले कहाँ हैं । पीठ पीछे हम जो हैं । हम आपकी जरूर सहायता करेंगे । इम्तहान में पास तो बच्चे ही होते हैं, पढ़ना तो उन्हीं को पड़ता है, स्कूल तो वही जाया करते हैं, पर क्या आप समझते हैं कि बच्चे जब स्कूल जाते हैं तो अपने ही बलबूते पर पास हो जाते हैं ? माता उनके खाने-पीने का प्रबंध करती है, पिता उनकी फीस का इंतजाम करते हैं, मास्टर उनको पढ़ाने में सहायता करते हैं । तीनों ओर की सहायता मिलती है तब कहीं वह हो पाता है कि उनकी पढ़ने की मेहनत और पुरुषार्थ सफल हो जाये । हम आपके लिए सब तीनों इंतजाम कर रहे हैं । माता आपको खुराक देने के लिए तैयार है । आपको ऊँचा उठाने के लिए पिता का जो कर्तव्य था, उसको पूर्ण करने के लिए हम तैयार हैं । गुरु का-हम और हमारे गुरु-वह भी इस वातावरण में -जिसमें आप निवास करते हैं, आपकी सहायता के लिए हम तीनों तैयार हैं ।

गुरु के रूप में वह सत्ता जिसके आधार पर शांतिकुंज बनाया गया है और जिसकी आज्ञा से ये कल्प-साधना के शिविर लगाये गये हैं, ऐसी परम सत्ता आपको गुरु के तरीके से मार्गदर्शन करने की लिए तैयार है और सहर्ष यहाँ विद्यमान है । आप लोग उसका फायदा उठाइये, वे आपकी सहायता करेंगे । हमको चाहें तो आप वही मान सकते हैं, अभिभावक मान सकते हैं । हमारे पास जो कुछ तप होगा, पुण्य होगा, ज्ञात होगा, चरित्र होगा, दबाव होगा, तो आप यकीन रखिये कि हम न केवल आप पर दबाव डालेंगे, सिखावेंगे, वरन् उसका एक हिस्सा भी देंगे, बाप भी तो अपने बच्चे को शिक्षा ही थोड़े देता है, सहायता भी देता है । हमारी शिक्षा भी आपको मिलने वाली है और सहायता भी मिलने वाली है । माता जी का भी आपको स्नेह मिलने वाला है, प्यार दुलार भी मिलने वाला है और अनुदान भी मिलने वाला है । तीन तरफ से आपके ऊपर सौभाग्य की वर्षा होने वाली है । आप कैसे भाग्यवान है । आप माता जी का स्नेह यहाँ पा रहे हैं, पिता का अनुशासन और उनका सहयोग प्राप्त कर रहे हैं । आप कैसे भाग्यवान हैं जो एक ऐसे महान गुरु से जो न केवल आपको, वरन् आप जैसे लाखों व्यक्तियों को, न केवल लाखों व्यक्तियों को, बल्कि सारे जमाने को और सारे जमाने की प्रवृत्तियों को मार्गदर्शन करने में समर्थ है और जो इस लायक हैं कि सारे जमाने को पलट कर रख देगा । आपको तीनों का सहयोग मिलता रहता है, आपके भाग्य की सराहना किये बिना हम रह नहीं सकते । आपके लिए कल्प की संभावनायें बिलकुल सुनिश्चित हैं । आपका भूतकाल जैसे था, वह यहाँ का यहीं रह जाये, आपका पुराना वाला केंचुल यहीं रह जाये और आप जायें तो ऐसे नये आदमी होकर जायें कि मजा आ जाये ।

अभी तक आप जिस पिंजड़े में कैद रहे हैं, उसकी तीलियों को काटने का हमारा मन है । आप भी थोड़ा प्रयत्न कीजिए, थोड़ा हम प्रयत्न करेंगे । अपने पंखों को पैने कीजिए, ताकि जैसे ही पिंजड़े की तीलियाँ कटे आप इसमें से भागना शुरू कर दें तीलियाँ हम काट देते हैं, पंखों को आप पैना कीजिए । अगर आप अपने पंखों को पैना नहीं करेंगे-सिकोड़ कर रखेंगे, तो हम तीलियाँ काट भी दें तो भी आप पिंजड़े में वहीं बैठे रहेंगे पंख तो आपको ही उड़ाने हैं, हम उड़ेंगे थोड़े ही । हम तो तीलियाँ काटेंगे । आप हमारे सहयोग का फायदा उठाइये । यहाँ की परिस्थितियों का फायदा उठाइये यहाँ के मार्गदर्शन का फायदा उठाइये और अपने भाग्य तथा भविष्य को शानदार बनाने के लिए कमर कसकर तैयार हो जाइये ।

आप गुफा में रहिए, एकांत सेवी रहिए, इदय की गुफा में घुस जाइये । अंतर्मुखी होकर रहिए, बाहर की बातों में विचार मत कीजिए केवल अपनी ही समस्या पर विचार कीजिए, अपने भविष्य के बारे में विचार कीजिए, अपने भूतकाल पर विचार कीजिए और अपने भविष्य का निर्धारण करने के लिए वह काम कीजिए जिनकी कि आपको जरूरत है । हमारे सहयोग को आप ग्रहण कीजिए, उसे हजम कीजिए । हम आपको थाली में भोजन परोस कर देते हैं, आप खाइये उसको और उसे पचा जाइये । खाना आपका काम है पचाना आपका काम है । भोजन हम तो हम दे पायेंगे, आपके बदले हम पचा थोड़े ही देंगे । खाइये आप परोसते हम हैं । दोनों का सहयोग भगवान करे कितना शानदार हो और आपके उज्ज्वल भविष्य करने में इस शिविर का कितना बड़ा योगदान हो आप यह देख पायेंगे और यह संभव है जैसी कि हम आशा करते थे और आपको आशा दिलाते थे । थोड़ा सा उत्साह दिखाइये, थोड़ा सा मनोबल बढ़ाइये, फिर देखिये आपको यह कल्प साधना सत्र कितना शानदार और कितना आपके भविष्य को उज्ज्वल करने में सहायक सिद्ध होता है ।

ॐ शांति : शांति: ॐ

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी-

आज के प्रज्ञावतार की युग के देवता की अपील

(४-८-८३ को शांतिकुंज परिसर में दिया गया उद्‌बोधन)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ -

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो, भाइयो ! मनुष्य के जीवन में अनेक प्रकार के सौभाग्य आते हैं और उन सौभाग्यों के लिए आदमी सदा अपने आपको सराहता रहता है, पर ऐसे सौभाग्य कभी-कभी ही आते हैं, हमेशा नहीं । शादी-व्याह कभी-कभी ही होते हैं, रोज नहीं । 'कन्वोकेशन' में डिग्री रोज नहीं मिलती, वह जीवन में एकाध बार ही मिलती है जब हाथ में डिग्री लिये और सिर पर टोप पहने हुए फोटो खिंचवाते हैं । सौभाग्य के ऐसे दिन कभी-कभी आते हैं, उनमें लाटरी खुलना और कोई ऊँचा पद पाना भी शामिल है । लेकिन आदमी का सबसे बड़ा सौभाग्य एक ही है कि वह समय को पहचान पाये । आदमी समय को पहचान ले तो मैं समझता हूँ कि इससे बड़ा सौभाग्य दुनिया में कोई हो ही नहीं सकता । खेती-बाड़ी सब करते हैं, लेकिन जो किसान वर्षा के दिनों सही समय पर बीज बो देते हैं, वे बिना मेहनत किये अपने कोठे भर लेते हैं । गेहूँ की फसल लेने के लिए जो समय को पहचान कर बीज बोते हैं वे अच्छी फसल कमा लेते हैं । अगर बीज बोने का समय निकल जाये तब फसल की पैदावार की आप उम्मीद नहीं कर सकते । शादी-ब्याह की एक उम्र होती है और जब समय निकल जाता है तो आदमी को कई बार बहुत हैरानियाँ बरदाश्त करनी पड़ती हैं, लगभग असफलता के नजदीक पहुँच जाता है वह । जो आदमी समय को पहचान लेते हैं, वे बहुत नफे में रहते हैं । विज्ञापन निकलते रहते हैं और जो अखबारों को देख लेते हैं कि हमारे लिए जगह खाली है, तुरंत अर्जी भेज देते हैं । गाड़ियों में रिजर्वेशन होता है । जो समय पर पहुँच जाते हैं, लाइन में लग जाते हैं, उन्हें गाड़ी में सीट मिल जाती है । जो टाइम को पास कर देते हैं-निकल जाने देते हैं, वे बहुत हैरान होते हैं ।

अभी मैं समय की महत्ता बता रहा था आपको । किसलिए बता रहा था ? इसलिए कि जिस समय में हम और आप रह रहे हैं वह ऐसा शानदार समय है कि आपकी जिंदगी में और इतिहास में फिर नहीं आयेगा । आप लोगों की जिंदगी में तो दूर आने वाली नयी पीढ़ियाँ भी इसके लिए तरसती रहेंगी और कहेंगी कि हमारे बाप-दादे ऐसे समय में पैदा हुए थे । जो इसका फायदा उठा लेंगे उनके घर परिवार में सराहना होती रहेगी-समाज में-इतिहास में उनका नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा और जो सनक में बैठे रहेंगे, भूल में बैठे रहेंगे वे स्वयं पछताते रहेंगे और बाद में उनकी पीढ़ियाँ पछताती रहेंगी और कहेंगी कि ऐसे शानदार समय में हमारे बाप-दादों ने क्यों मुनासिब कदम नहीं उठाये ? यह कैसा शानदार समय है-चलिए मैं इसके कुछ आपको उदाहरण देना चाहता हूँ जिससे कि आप समझ सकें कि यह कैसा समय है और इस शानदार समय में आप थोड़े से मुनासिब कदम बढ़ा सकते हों तो मजा आ जायगा ।

आपको मैं अवतार के किस्से सुनाता हूँ । जब कभी भी अवतार हुए हैं, जब कभी भी महापुरुष हुए हैं तब उनके साथ कदम से कदम मिलाकर चलने वाले लोगों को मैं बहुत भाग्यवान कहता हूँ और बहुत समझदार मानता हूँ । उनमें से एक का नाम था हनुमान, हनुमान कौन थे ? सुग्रीव के वफादार नौकर का नाम था हनुमान । सुग्रीव को जब उसके भाई ने मारपीट कर भगा दिया, बीबी-बच्चे छीन लिये, तब सुग्रीव अपने वफादार नौकर के साथ ऋष्यमूक पर्वत पर रहने लगे । एक समय आया जब रामचन्द्र जी आये तो सुग्रीव ने हनुमान को भेजा था । हनुमान जी वामन-ब्राह्मण का रूप बनाकर उनके सामने गये थे कि कहीं ऐसा न हो कि हमारे साथ मारपीट होने लगे । तो क्या हनुमान जी कमजोर थे ? न होते तब-बालि के साथ लड़ाई की होती और अपने बॉस की बीबी को नहीं छिनने दिया होता और अपनी जायदाद नहीं छिनने दी होती लेकिन जब हनुमान जी ने समय को पहचान लिया और राम चन्द्र जी के कंधे से कंधा मिलाया-कदम से कदम मिलाया तो क्या आप समझ सकते हैं कि किसी महत्वपूर्ण शक्ति के साथ कंधा मिलाने की क्या कीमत हो सकती है ? क्या फायदा हो सकता है ? आप तो अंदाज नहीं लगा पा रहे हैं-लेकिन हनुमान जी ने लगा लिया था और वह हिम्मत दिखाई थी जो आदर्शों को जीवन में उतारने के लिए आवश्यक है । आदर्शों को पालन करने के लिए शक्ति की जरूरत नहीं है , साधनों की भी जरूरत नहीं है । साधन तो आप सबके पास हैं, पर अध्यात्म एक ही चीज का नाम है-ऊँचे ***आदर्शों के लिए हिम्मत ।*** इसी अध्यात्म को हनुमान जी ने पकड़ लिया और पकड़ने के बाद में रामचन्द्र जी से कहा कि हम आपके काम आयेंगे और आपकी मदद करेंगे । बस, यह शानदार हिम्मत हनुमान जी ने दिखायी और उस समय को पहचानने के बाद में आपको नहीं मालूम वे शक्ति के स्रोत बन गये और गजब के काम करने लगे । पहाड़ उखाड़ने लगे, समुद्र छलांगने लगे और लंका में रावण और उसके सवा दो लाख राक्षसों को चैलेंज करने लगे । कुंभकरण जैसों के साथ हनुमान जी अकेले लड़ने लगे ।

क्यों साहब, क्या बात थी कि हनुमान जी में इतनी ताकत कहाँ से आ गयी ? यह वहाँ से आ गयी जहाँ से उन्होंने अध्यात्म को अपने जीवन में उतार लिया था । अध्यात्म जीभ की नोक तक, पूजा की चौकी तक सीमित नहीं रहता । अध्यात्म उस चीज का नाम है याद रखना 'ऊँचे सिद्धांतों को अपने जीवन में धारण करने की हिम्मत को अध्यात्म कहते हैं । इससे कम भी कोई अध्यात्म नहीं है और इससे ज्यादा भी कोई अध्यात्म नहीं है । हनुमान जी ने वही अध्यात्म ग्रहण कर लिया । पूजा की थी, अनुष्ठान किया था, जप-तप किया था ? नहीं तो फिर कैसे हो गया ? ऊँचे उद्देश्यों के लिए भगवान के कंधे से कंधा मिलाकर वे चल पड़े थे और निहाल हो गये । इससे बड़ी कोई तपस्या नहीं होती है । नल-नील ने पत्थरों का पुल

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

बनाया था जो पानी पर तैरता था । इतने बड़े समुद्र पर पत्थरों से ऐसा पुल बना दिया था कि जिसमें न पाये लगे हुए थे, न झूला लगा हुआ था, न गर्डर फँसे थे और न सीमेंट की जरूरत हुई । ऐसे ही खाली पत्थर फेंकते गये और उनका बन गया पुल । क्यों साहब यह हो सकता है ? हाँ यह हो सकता है । कैसे हो सकता ? ऊँचे उद्देश्यों के लिए-खासतौर से उस समय जबकि भगवान अवतार लिया करते हैं, तब जो आदमी उनके कंधे से अपना कंधा मिला लेते हैं वे शानदार हो जाते हैं और अपनी भूमिका निभाते हैं । रीछ-वानरों ने भी भगवान की सहायता के लिए वही काम किये थे लकड़ी, ईंट-पत्थर ढोकर लाते और नल-नील के पास जमा करते जाते थे । क्यों साहब, यह कोई बड़ा काम था क्या बताइये ? कोई बड़ा काम नहीं था, लेकिन भगवान के, अवतार के साथ, उनकी क्रिया पद्धति के साथ जुड़ जाने की वजह से वे रीछ-बंदर भी न जाने क्या से क्या हो गये । हम उनकी कितनी प्रशंसा करते हैं, संतों, महात्माओं योगियों की भी उतनी नहीं करते और रीछ-बन्दरों का-जब तक उनका इतिहास में जिकर आता रहेगा वे अजर-अमर होते रहेंगे । क्यों-उनकी क्या विशेषता थी ? एक तो यह कि उन्होंने समय को पहचान लिया कि यह सही समय है । सीता जी वापस आ जाती तब कोई हनुमान कहता कि हम तो रामचन्द्र की सेना में भर्ती होंगे और सीता जी को तलाश करके लायेंगे, यह मौका हमको भी दीजिए । तब रामचन्द्र जी यही कहते कि नहीं-हनुमान भाई साहब अब समय निकल गया । आप समय भी नहीं देखते क्या ? ऐसे समय कभी-कभी ही आते हैं ।

इसी तरह गिलहरी ने क्या किया था ? अपने बालों में बालू भर कर लाती और समुद्र में पटक देती थी । बालों में बालू भर लेना कोई मुश्किल और बड़ा काम नहीं है । गिलहरियाँ ऐसे ही घूमती रहती हैं, बालू में बैठी रहती हैं और बालू भर जाती है फिर क्या खास बात थी उसमें ? यह थी कि उसने समय को पहचान लिया था कि अब भगवान आये हुए हैं, उन पर एहसान करना चाहिए । भगवान की जरूरत में-आवश्यकता में मदद करनी चाहिए । यह समझदारी उसने की और फिर गिलहरी कैसी हो गयी । मैं क्या कहूँ गिलहरी के लिए भाई साहब कि वह कितनी शानदार हो गयी भगवान का काम करने से । रामचन्द्र जी ने उसे उठा लिया और छाती से लगाया, उसकी पीठ पर हाथ फेरने लगे । उससे बहुत मुहब्बत की । किसके लिए । बालू के लिए, नहीं, राई भर बालू से क्या होता है । उन्होंने सिद्धांतों के प्रति उसकी हिम्मत के लिए, निष्ठा के लिए, उसकी जुर्रत के लिए उसको प्यार किया । मैंने सुना है कि जो गिलहरी रामचन्द्र जी की सहायता करने आयी थी, उसकी पीठ पर उनने प्यार से अपनी अँगुलियाँ फिराई थीं और वे धारीदार निशान आज भी गिलहरियों की पीठ पर पाये जाते हैं । धन्य हो गयी थी वह गिलहरी जो रामचन्द्र जी के लिए बालू लेकर आयी थी । उसने समय को पहचान लिया था । समय को आप नहीं जानते क्या ? समय को आप नहीं पहचान सकते क्या ?

मित्रो, भगवान जब भी आते हैं तो उसके कई मकसद होते हैं । एक तो आपने पहले ही सुन रखा है कि वह धर्म की स्थापना करने के लिए और अधर्म का नाश करने के लिए आते हैं । यह दो मकसद तो आपको मालूम ही है, रामायण में भी आपने पढ़ा है-सब जगह पढ़ा है । यह दो ही बातें पढ़ी हैं न आपने, अच्छा तो एक और बात हमारी ओर से आप जोड़ लीजिए जो रामचन्द्र जी ने या कृष्ण भगवान ने अपनी ओर से तो नहीं कही है, लेकिन हम अपनी ओर से कहते हैं-एक तीसरी बात । क्या कहते हैं ? जो सौभाग्यशाली हैं, उनके सौभाग्य को चमका देने के लिए, निष्ठावानों को, अपने भक्तों को सिर और माथे पर रखने के लिए भी भगवान आते हैं । उनको उछाल देने के लिए भी भगवान आते हैं । उनको इतिहास में अजर-अमर बना देने के लिए भी भगवान आते हैं । जो इस मौके को पहचान लेते हैं वे धन्य हो जाते हैं । केवट को उन्होंने धन्य बना दिया । केवट ने क्या काम किया था ? नाव में बिठाकर के रामचन्द्र जी को पार लगा दिया था बिना कुछ कीमत लिए । तो गुरुजी चलिए हम भी आपको कार में बिठाकर घुमा लायें और आप हमें केवट बना दीजिए । नहीं भाई साहब अब मुश्किल है । अब हम नहीं बना सकते तब वे खास मौके थे तब आपने पहचाने नहीं और अब शिकायत करते हैं, अपने कर्म को दोष देते हैं कि ऐसा वक्त आया था और हम कुछ कर नहीं सके । मित्रो, शबरी ने भगवान को बेर खिलाये थे जिसकी प्रशंसा करते-करते हम थकते नहीं । भगवान ने शबरी से कहा-शबरी हम भूखे हैं । भगवान को जरूरत पड़ी थी वे भूखे थे । आपकी अपनी जरूरत है, पर कभी-कभी भगवान को भी जरूरत होती है और मनुष्य के लिए वही सौभाग्य के वक्त हैं । शबरी ने मौके को पहचान लिया था कि भगवान को जरूरत है, वे माँग रहे हैं, सो उसने उनकी भूख बुझाने के लिए बेर खिलाये थे । केवट ने भी भगवान को जरूरत को पहचान लिया था कि उनके पास नाव नहीं है । वे इंतजार में खड़े हुए हैं कि कोई आये और हमको नाव में बिठाकर पार लगा दे ।

मित्रो, आदमियों की अपनी जरूरत होती है, यह तो मैं नहीं कहता कि जरूरत नहीं होती, पर कभी-कभी भगवान को भी आदमियों की जरूरत होती है । हमेशा नहीं-कभी-कभी जरूरत पड़ती है और उस कभी-कभी को मौके को जो पहचान लेते हैं वे गिलहरी के तरीके से, केवट के तरीके से, शबरी के तरीके से और रीछ-वानरों के तरीके से उनकी सहायता के लिए चल पड़ते हैं और धन्य बन जाते हैं । गिद्धों को आप जानते हैं, जब वे बूढ़े हो जाते हैं तो आपस में लड़ाई-झगड़ा करने लग जाते हैं । गिद्धों का मरना कोई बड़ी बात नहीं है, लेकिन एक गिद्ध ने समय को पहचान लिया था कि हमारी जरूरत है किसको ? सीता जी को जरूरत है कि कोई हमारी सहायता करे और वह चल पड़ा और धन्य हो गया । क्यों साहब हम भी बूढ़े हो जायँ और ऐसा कुछ करें ? नहीं भाई साहब, अब वह वक्त चला गया, आप समय को तो पहचानते नहीं । भगवान कभी-कभी हाथ पसारता है । आदमी तो भगवान के सामने हमेशा हाथ पसारता रहता है, पर भगवान आदमी के सामने कभी-कभी हाथ पसारता है और जब कभी वह हाथ पसारता है, तो उसकी हथेली पर कोई भी कुछ रख देता है तो रवीन्द्रनाथ की कविता के मुताविक उसकी झोलियाँ सोने से भर जाती हैं । टैगोर की एक कविता है-"मैं गया भीख माँगने द्वार-द्वार इकट्ठी कर ली झोली गेहूँ के दानों से एक आया भिखारी, उसने पसारा हाथ । मैंने एक दाना उसकी हथेली पर रखा चला गया भिखारी । घर आया तो मैंने अनाज की झोली को पलटा । उसमें एक सोने का दाना रखा हुआ था । टैगोर ने बंगला गीत में गाया-"मैं सिर धुन-धुन के पछताया कि मैंने क्यों नहीं अपनी झोली के सारे दाने उस भिखारी को दे दिये ।" उस भिखारी से मतलब-भगवान से है-समय से है । समय-समय पर जब कभी भगवान हाथ पसारता है और जो कोई उस समय को मौके को पहचान लेते हैं और भगवान के पसारे हुए उस हाथ पर कुछ रख देते हैं, वे न जाने क्या से क्या हो जाते हैं ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

भगवानों के और किस्से सुनाऊँ आपको ? वक्त बहुत चला गया, इसलिए और भगवानों की तो मैं नहीं कहता, पर एक भगवान को जो कल-परसों होके चुका है, उसकी बात मैं कहता हूँ । उसने भी हाथ पसारा था । उसका नाम था-गाँधी । गाँधी जी ने भी हाथ पसारा था और उनकी हथेली पर जिन लोगों ने रखा था, उनका क्या-क्या हो गया आपको मालूम नहीं है । वे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी हो गये, ताम्र पत्र धारी हो गये और तीन-तीन सौ रुपये पेंशन पाने लगे । यह खानदान त्यागियों का खानदान है । मित्रो, मिनिस्टर उसी में से हुए हैं । अब तो बात दूसरी है, लेकिन शुरू के दिनों में जब आजादी आयी थी तो सिर्फ वे ही मिनिस्टर बने थे जो स्वाधीनता सेनानी थे । आप वक्त को नहीं पहचानते, आप भगवान को नहीं जानते कि वह कभी-कभी हाथ पसारता है । जिस समय हमने आपको बुलाया है, आप यकीन रखें यह वह समय है जिसमें दुनिया बेतरीके से बदल रही है । अभी तो आपको दिखाई नहीं पड़ता कि क्या हो रहा है । आप तो यह भी नहीं देख पाते कि पृथ्वी घूम रही है । आपकी अक्ल कहती है कि पृथ्वी अपनी धुरी पर सनसनाती हुई चलती जा रही है, पर आँखें कहती हैं कि घूम रही होती तो हमारा मकान पूर्व से पश्चिम की ओर हो जाता । किसी को अपनी मौत कहाँ दिखाई देती है ? इसी तरह आपको जमाना बदलता हुआ दिखता है क्या ? नहीं दिखाई पड़ता । आपको भगवान का चौबीसवाँ अवतार होता हुआ दिखाई पड़ता है क्या ? दुनिया का कायाकल्प होता हुआ दिखाई पड़ता है क्या कि किस बुरी तरीके से गलाई-ढलाई हो रही है । आपको दिखाई न पड़ता हो तो देखिये कि हिन्दुस्तान का ही पिछले बीस-तीस साल में क्या हो गया । कभी यहाँ राजा छाये हुए थे । तीन चौथाई हुकूमत राजाओं की थी । अब है कोई राजा ? पच्चीस साल में सब तबाह हो गये । जागीरदार और जमींदार देखे हैं आपने, न देखें हों तो राजस्थान चले जाइये । वहाँ जगह-जगह किले, गाँव-गाँव किले, जो अब खंडहर के रूप में पड़े हैं, उन्हीं के अवशेष है । सब कुछ समय बहा ले गया । राजा भी चले गये, जमींदार भी चले गये और कौन चले गये ? साहूकार भी चले गये जो कभी गिरवी रखने और अच्छा खासा ब्याज कमाने का धंधा किया करते थे । बीस सालों में बहुत कुछ बदल गया ।

मित्रो, इन दिनों दुनिया दो तरीके से बदल रही है । इसे कौन बदल रहा है ? बीसवीं सदी का अवतार-जिसे हम प्रज्ञावतार कहते हैं । आदमी की अक्ल बहुत ही वाहियात है । इस अकल ने सारी दुनिया को गुत्थियों में धकेल दिया है । जितनी ज्यादा अक्ल बढ़ी है, संसार में उतनी ही ज्यादा हैरानी बढ़ी है । आप कालेजों में-विश्वविद्यालयों में चले जाइये पहले वहाँ आराजक तत्व-अवांछनीय तत्व कहाँ रहते थे, पर देखिये सारी खुराफातें कहाँ जन्म ले रही हैं ? आपको बदलता हुआ जमाना दिखाई नहीं पड़ता, आजकल बहुत हेरफेर हो रहा है । इस अक्ल ने दुनिया को हैरान कर दिया है । इस अक्ल को अक्ल से धुलाई करने के लिए एक नयी अक्ल पैदा हो रही है, जिसका नाम है-'महाप्रज्ञा' । चौबीसवाँ अवतार प्रज्ञा के रूप में जन्म ले रहा है । आपको तो नहीं दिखाई पड़ता होगा शायद, पर आप हमारी आँखों में आँखें डालकर देखें । हमारी आँखें बहुत पैनी हैं और बहुत दूर की देखने वाली हैं । हमारी आँखों में टेलिस्कोप लगे हुए हैं । आप आइये जरा हमारी आँखों में आँखें डालिए, फिर देखिये क्या हो रहा है । जमाना बेहद तरीके से बदल रहा है । यह कौन बदल रहा है ? भगवान बदल रहा है । भगवान के अवतार जब कभी भी दुनिया में हुए हैं तब भक्तजनों को अपना सौभाग्य चमकाने का मौका मिल गया है । ऊपर हमने भगवान राम का उदाहरण दिया है, अभी और दूँ उदाहरण । अच्छा तो बुद्ध का और श्रीकृष्ण भगवान का उदाहरण देता हूँ आपको । कुब्जा जो चंदन लगा देती थी, उसके उदाहरण दूँ । कितने उदाहरण दूँ आपको । भगवान के अवतारों के साथ में जिन्होंने थोड़े से भी अहसान कर दिये, वे धन्य हो गये । भगवान तो क्या महापुरुषों के साथ भी जिन्होंने थोड़ा सा भी कंधा लगा दिया वे राजगोपालाचारी हो गये, बिनोवा हो गये । उनका नाम पटेल हो गया, नेहरू हो गया, जाकिर हुसेन हो गया, राधाकृष्णन हो गया, राजेन्द्र बाबू हो गया । जिनका मैं नाम गिना रहा हूँ वे सभी हिन्दुस्तान के बादशाह हो गये । वे इसलिए बादशाह हुए कि उन्होंने समय को पहचान लिया था कि कोई खास अवतार युग को बदलने आया है और उसी की विरादरी में शामिल हो गये, उसके कंधे से कंधा मिलाकर साथ-साथ चलने की अपनी जुर्रत-हिम्मत दिखा दी ।

आज का वक्त भी ऐसा ही है आप देखिये न । उस अवतार के साथ अगर आप कंधे मिला सकते हों, चरण मिला सकते हों, आप उसके पीछे चल सकते हों, उसका भार बँटा सकते हों तो मैं आप में से हर आदमी से कहूँगा कि अगले दिनों अगर इतने शानदार, इतने भाग्यवान व्यक्ति कहलायेंगे कि आपका सौभाग्य आपके लिए सहायता ही देगा । हमने क्या किया है ? आप क्या समझते हैं कि हमने किताबें लिखी हैं, लेख लिखे हैं, लेक्चर देते हैं, पूजा करते हैं । अरे भाई साहब, पूजा तो हम चार हो घंटे करते हैं, पहले छः घंटे करते थे, पर अब चार ही घंटा करते हैं । आपको हम ऐसे आदमी बता सकते हैं जो हमसे चौगुनी पूजा करते हैं । दुनिया में और दिल्ली में चले आइये वहाँ ढेरों के ढेरों आदमी रहते हैं और लिखने का धंधा करते हैं, पैसा कमाते हैं और अपने बाल-बच्चों का पेट पालते रहते हैं । स्कूलों में-कालेजों में लेक्चर होते हैं, लेक्चर देना उनका धंधा ही है रोटी ही इस बात की मिलती है उनको । फिर आपको इस तरह के मौके क्यों मिलते चले जा रहे हैं ? क्या वजह है इसकी ? इसकी एक ही वजह है कि हमने यह पहचान लिया है कि भगवान का अवतार होता हुआ चला आ रहा है । अवतार के साथ कंधे से कंधा मिला कर, उसके कदम के साथ कदम बढ़ाकर चलने का हमने निश्चय कर लिया कि साथ-साथ रहेंगे । उसके साथ अपने जानकी बाजी लगायेंगे । तब परिणाम क्या होता है ? वही जो आग और लकड़ी का होता है । दो कौड़ी की नाचीज लकड़ी जब आग के साथ मिल जाती है तो उसकी कीमत आग के बराबर हो जाती है । जिस लकड़ी को कल बच्चे उछाले फिर रहे थे, आग के साथ रिश्ता हो जाने की वजह से आज वही कहती है कि हमें छूना मत, आप हमारा गलत इस्तेमाल मत करना । आज आपने यदि हमको फेंक दिया तो हम आपके छप्पर को जला देंगे, गाँव को जला देंगे । एक घंटे पहले मैं लकड़ी थी, पर अब मैं आग हूँ । तो आग कैसे हो गयीं आप ? हमने एक ही हिम्मत की है कि अपने आपको आग के साथ में घुला दिया है, मिला दिया है । अगर आप भी ऐसा कर सकते हों तो मैं आपको सौभाग्यवान कहूँगा ।

साथियो, भगवान तो अपना काम करेंगे ही, आप करें तो, न करें तो भी । वे भगवान रामचन्द्र जी रावण को मार सकते थे । बिलकुल मार सकते थे । रामचन्द्र जी में इतनी शक्ति थी कि रावण सहित एक-एक राक्षस को मार डालते और अकेले अपने बलबूते पर सीता जी को छुड़ा लाते । लेकिन उनको श्रेय देना था ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

भक्तों को श्रेय ऐसे ही मौके पर दिया जाता है । भक्त की परीक्षा ऐसे ही मौके पर होती है और वे समय शानदार होते हैं । इम्तहान रोज-रोज कहाँ होते हैं ? भक्तों के भी इम्तहान हमेशा नहीं होते बहुत दिनों बाद होते हैं । जिसमें आपको बुलाया गया है, उसमें नवरात्रि का अनुष्ठान करने के लिए ही आपको नहीं बुलाया है । आप अनुष्ठान करते हैं बहुत अच्छी बात है । यहाँ गंगा का किनारा, हिमालय की गोद, गायत्री तीर्थ के पवित्र वातावरण में आप गायत्री का जप कर रहे हैं, यह बहुत ही प्रसन्नता और सफलता की बात है, पर आप याद रखिये हमने केवल अनुष्ठान करने के लिए ही आपको नहीं बुलाया । हमारे मकसद बड़े हैं और वे यह हैं कि आप ऐसे सौभाग्य वाले समय में क्या कुछ लाभ उठा सकेते हैं ? क्या आप समय को पहचान सकते हैं ? क्या आप भगवान की सहायता कर सकते हैं ? क्या आप अपने जीवन में कुछ हिम्मत इकट्ठी कर सकते हैं ? हम इसीलिए बुलाते हैं और हर एक आदमी से बार-बार यही सवाल पूछते रहते हैं कि क्या आप इस शानदार समय क़ो पहचान सकते हैं ? क्या आपकी अक्ल इतनी मदद करेगी कि आप इस शानदार समय को पहचान लें ? अगर आपकी अक्ल इतनी सहायता कर दे और यह बता दे कि यह बहुत ही शानदार समय है तो फिर हम आपको एक और सलाह देते हैं कि ऐसे वक्त आप एक और हिम्मत कर डालना । कौन सी हिम्मत ? आप भगवान की माँग को तलाश करें और उसको पूरा करने की कोशिश करें । भगवान की भी कुछ माँगें होती हैं । उनने आप से भी कुछ माँगा है । उन माँगों को पूरा करने के लिए जरा आप कोशिश करें तो मजा आ जाये ।

क्या माँगें हैं भगवान की ? आप अखण्ड ज्योति के सब पाठक हैं और जानते हैं कि प्रज्ञावतार ने क्या माँगा है ? प्रज्ञावतार ने यह माँगा है कि हम लोगों के दिमागों की सफाई करें, विचारों की सफाई करें । 'प्रज्ञा' इसी का नाम है । आदमियों के दिमाग पैने तो हो गये हैं, अक्ल तो बहुत पैनी हो गयी है । अक्लमंद तो इतने हो गये हैं कि आप देखेंगे तो हैरान रह जायेंगे । अक्लमंद आदमियों ने जहाँ एक ओर बड़ी-बड़ी इमारतें बनाई हैं, बड़े-बड़े पुल बनाये हैं, बाँध बनाये हैं वहीं दूसरी ओर इन्हीं अक्लमंदों ने लोहा, सीमेन्ट-सब के सब हजम कर लिये हैं । जहाँ भी जिस भी डिपार्टमेंट में चले जाइये सब जगह अक्लमंद लोग मिलेंगे । बे अक्ल लोग तो बेचारे चप्पल चुरा सकते हैं । अक्लमंद लोगों ने सारी दुनिया को धोखा दिया हैं । दुनिया का सफाया करने की पूरी जिम्मेदारी अक्लमंदों की है । हिन्दुस्तान और पाकिस्तान का बँटवारा कराकर लाखों आदमियों का खून करा देने की जिम्मेदारी अक्लमंदों की ही है, आम बेचने वालों की नहीं । यह सब बड़े दिमाग वालों की है । इसलिए बड़े दिमाग वालों के मस्तिष्क की सफाई करने के लिए ही तो ऐसी लहर आ रही है जो दुनिया में सोचने के तरीके को बदल देगी । प्रज्ञावतार इसी का नाम है । प्रज्ञावतार की क्या माँगें हैं, इसको हम बराबर छापते रहे हैं । इसको फिर से कहने की जरूरत नहीं है, पर प्रज्ञा अभियान के रूप में आप इस लहर को समझ सकते हैं । यह प्रज्ञा अभियान इंसान का नहीं है, अगर इंसान का होता तो हमारे जैसे आदमी इसके लिए कमजोर पड़ते । लेकिन उस महाशक्ति का काम करने के लिए जब हम अमादा हैं तो फिर आप हमारी सफलताओं को नहीं देखते । आपको हमारी सफलतायें दिखाई नहीं पड़ती । आप देखिये । हमारी सामर्थ्यों, प्रतिभा, क्षमता, और अक्ल को भी देखिये, सिद्धियों को भी देखिये-सब कुछ देखिये पर मैं एक और बात कहता हूँ आप से कि आप तो इसको देखने की परिस्थिति में भी नहीं हैं क्योंकि जिस आँख से आप देखना चाहते हैं वह आँखें ऐसी नहीं है जो हमारी आध्यात्मिक सफलताओं को और हमारे प्रयासों द्वारा संसार में जो हेरफेर हो रहे हैं और होने जा रहे हैं, उनको आप देखने में समर्थ हो सकें ।

मित्रो, आप देखें या न देखें, पर सारी सफलतायें शानदार हैं । आप जरा फिर देखना, अभी तो हम हैं, कब तक जियेंगे कह नहीं सकते, लेकिन आप लोगों में से अधिकांश आदमी जियेंगे । जियेंगे तो फिर देखना और नोट करना कि हमारी सफलतायें कितनी शानदार होती हैं ? क्यों होती हैं । क्योंकि हमने अवतार के साथ में कंधे से कंधा मिलाकर हनुमान के तरीके से काम करने का निश्चय कर लिया है । राधा एक साधारण से ग्वाले की लड़की का नाम था, किंतु नाचने के लिए वह थोड़े दिन तक कृष्ण का साथ देती रही और राधा हो गयी । किसको-किसको कहें, शानदार शक्तियों का साथ देने वाले न जाने कहाँ से कहाँ पहुँच गये और क्या से क्या हो गये । इसलिए इस शिविर में हमने आपको खासतौर से यह दावत देने के लिए बुलाया है कि अगर आपका मन बड़े फायदे उठाने का है और बड़े फायदे लायक अगर आपका व्यक्तित्व है, हिम्मत है तो आप आइये, इस मौके को गवाँइये नहीं । इस मौके से पूरा-पूरा फायदा उठाइये । आप लोगों में से हर एक को हम झकझोरते हैं खासतौर से उनको जो सेवा निवृत्त हो चुके हैं, घर से निवृत्त हो चुके हैं, जिनके पास कोई महत्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ नहीं हैं, उन सबसे हम प्रार्थना करते हैं-अनुरोध-आग्रह करते हैं कि अगर आप किसी तरीके से अपना गुजारा कर सकते हों तो आप आइये और हमारी मिलेट्री में भर्ती हो जाइये । आप में से हर आदमी को प्रज्ञावतार के कंधे से कंधा मिलाने के लिए हम दावत देते हैं विशेषकर उन लोगों को जिन्होंने अपनी आदतें ठीक कर रखी हैं, परिश्रमी हैं चरित्रवान हैं और जिनका वजन भारी नहीं है अर्थात् जिम्मेदारियों का बोझ हल्का है । ऐसे लोगों के लिए सबसे बेहतरीन काम यह है कि अपना गुजारा करने के बाद में वे समाज के काम आयें । देश के काम आयें ।

मित्रो, आप में से हर उन आदमियों को भी हम दावत देते हैं जो भावनाशील हैं, जिनके ऊपर बहुत भारी वजन नहीं है, तब तो हम ठहरने के लिए कहेंगे । लेकिन थोड़ा वजन है तो उनकी भी सहायता करेंगे । हमें २४ हजार शक्तिपीठों के लिए उतने ही कार्यकर्ता चाहिए । इन इमारतों में प्राण भरने के लिए हमें कार्यकर्ताओं की जरूरत है । चौबीस हजार की भर्ती करनी है हमें । आप स्वयं अपना इंतजाम कर सकने की स्थिति में हों तो ठीक है, अन्यथा हम आपके खाने का, कपड़े का, जेब खर्च का इंतजाम बिठा देंगे । आपके बीबी-बच्चों के लिए भी जो मुनासिब खर्च होगा, वह भी हम देंगे । कौन है हमारी पीठ के पीछे, आपको तो दिखाई नहीं पड़ता । आप आँख खोलिए और देखिये कि हमारे पीछे बहुत शानदार शक्ति है । हम खाली हाथ हैं तो क्या हुआ हमारा गुरु तो खाली हाथ नहीं है । हम अपने 'बॉस' के बारे में विश्वास करते हैं । हमें यह भी विश्वास है कि अगर हमें दो हजार कार्यकर्ता रखने पड़े तो भी पैसों का इंतजाम हम कर देंगे । उनमें से अधिकांश नौकर रखने पड़े तो भी पैसों का इंतजाम हम कर देंगे । इसलिए एक विज्ञापन निकाल देंगे कि जिसे नौकरी करनी हो सीधे शांतिकुंज चले आवें । एक लाख आदमी अगले ही महीने में एप्वाइंट करके दिखा दूँ आपको । युग बदलने के लिए बहुत बड़े काम करने पड़ेंगे, परंतु यह काम नौकरों से नहीं हो

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

सकेगा । यह काम भावनाशीलों का है, त्यागियों का है । इसलिए हम आपकी खुशामदें करते हैं कि हमको भावनाशील आदमियों की जरूरत है, जनको हम प्रामाणिक कह सकें, जिनको हम परिश्रमी कह सकें । जो परिश्रमी हैं वे प्रामाणिक नहीं हैं और वे जो प्रामाणिक हैं वे परिश्रमी नहीं हैं और जो प्रामाणिक एवं परिश्रमी हैं उनको मिशन की जानकारी नहीं है । हम इनको कब तक सिखायेंगे । कितना सिखायेंगे, इनको सिखाने में कितना समय लगेगा ? हमारे पास समय बहुत कम है । हमको आदमियों की जरूरत है, अगर आप स्वयं उन आदमियों में शामिल होना चाहते हों तो आइये हम स्वागत करते हैं और आपको यह विश्वास दिलाते हैं कि आप जो भी काम करते हैं, उन सब कामों की बजाय यह बेहतरीन धंधा है । इससे बढ़िया कोई धंधा नहीं हो सकता । हमने किया है, इसलिए आपको भी यकीन दिला सकते हैं कि यह बहुत फायदे का धंधा है ।

इन दिनों हमारे पास केवल दस लाख आदमी हैं जो बहुत कम हैं । सारी दुनिया में चार सौ पैंचास करोड़ आदमी रहते हैं । अकेले हिन्दुस्तान में इन दिनों सत्तर करोड़ से ज्यादा आदमी हो गये हैं । इन सब तक पहुँचने के लिए दस लाख आदमी बहुत थोड़े हैं । अब हमें अपने कार्य क्षेत्र का विस्तार करने के लिए आपकी सहायता की जरूरत है । इसके लिए अब हमको वह वर्ग ढूँढ़ना पड़ेगा जिसको विचारशील वर्ग कहते हैं, भावनाशील वर्ग कहते हैं, त्याग और बलिदान के लिए आगे बढ़ने वाला वर्ग कहते हैं । अब हमें इंजीनियरों की जरूरत है, डाक्टरों की जरूरत है, सिपाहियों की जरूरत है, ओवरसियरों की जरूरत हैं । हमको उनकी जरूरत है जो राष्ट्र के निर्माण के काम आ सकें । नये वर्ग में नये क्षेत्र में जाने के लिए आप सब हमारी मदद कर दीजिए । क्या काम करेंगे ? हमने एक बहुत ही शानदार भवानी तलवार निकाली है । ऐसी शानदार योजना दुनिया में आज तक नहीं बनी । क्या बनी है ? हमने हर दिन हर पढ़े लिखे को नियमित रूप से बिना मूल्य युग साहित्य पढ़ाने की योजना बनायी है । आप पढ़े लिखे लोगों तक हमारी आवाज पहुँचा दीजिए, हमारी जलन को हमारी चिनगारियों को पहुँचा दीजिए । लोगों से आप यह मत कहना कि गुरुजी बड़े सिद्ध पुरुष हैं, बड़े महात्मा हैं और सबको वरदान देते हैं, वरन् यह कहना कि गुरुजी एक ऐसे व्यक्ति का नाम है जिसके-पेट में से आग निकलती है, जिनकी आँखों में से शोले निकलते हैं । आप ऐसे गुरुजी का परिचय कराना सिद्ध पुरुष का नहीं । विचारक्रांति अभियान को हमने युग साहित्य के रूप में लिखना शुरू कर दिया है और हर आदमी को स्वाध्याय करने के लिए मजबूर किया है । हमारे विचारों को आप पढ़िये और हमारी आग की चिनगारी को जो प्रज्ञा अभियान के अंतर्गत युग साहित्य के रूप में लिखना शुरू किया है, उसे लोगों में फैला दीजिए जीवन की वास्तविकता के सिद्धांत को समझिये, ख्वाबी दुनिया में से निकलिए और आदान-प्रदान की दुनिया में आइये । आपके नजदीक जितने भी आदमी हैं उनमें आप हमारे विचार फैला दीजिए । यह काम आप अपने काम करते हुए भी कर सकते हैं । आप युग साहित्य लेकर अपने सर्किल में पढ़ाना, अपने पड़ोसियों को पढ़ाना शुरू कर दीजिए । उनको हमारे विचार दीजिए, हमको आगे बढ़ने दीजिए, संपर्क बनाने दीजिए और आप हमारी सहायता कर दीजिए ताकि हम उन विचारशीलों के पास शिक्षितों के पास जाने में समर्थ हो सकें । इससे कम में हमारा काम चलने वाला नहीं है और न ही हमें संतोष होगा । मित्रो, हमारे विचारों को लोगों को पढ़ने दीजिए । जो हमारे विचार पढ़ लेगा, वही हमारा शिष्य है । हमारे विचार बड़े पैने हैं, तीखे हैं । हमारी सारी शक्ति हमारे विचारों में सीमाबद्ध है । दुनिया को हम पलट देने का जो दावा करते हैं वह सिद्धियों से नहीं अपने सशक्त विचारों से करते हैं । आप इन विचारों को फैलाने में हमारी सहायता कीजिए । अब हमको नयी पीढ़ी चाहिए इसके लिए आप पढ़े लिखे विचारशीलों में जाइये, उनके घर में जाइये, खुशामदें करिये, उनका जन्मदिन मनाइये, दरवाजा खटखटाइये और हमारी विचारधारा उन तक पहुँचाइये । यह हमारा नया कार्यक्रम है ।

मित्रो, युग साहित्य पढ़ाना, प्रज्ञा अभियान पढ़ाना, जन्म दिन मनाना-यह तीन कार्यक्रम प्रज्ञा अभियान के अंतर्गत आते हैं । आप में से जो आदमी प्रज्ञापुत्रों के रूप में हमारे साथ शामिल हो सकते हैं, वे अंगद के तरीके से आयें, नल-नील के तरीके से आयें, हनुमान के तरीके से आयें, गिलहरी के तरीके से आयें, शबरी के तरीके से आयें, केवट के तरीके से आयें । आयें तो सही, कुछ करें तो सही हमारे लिए । हम आपके लिए करेंगे आप हमारे लिए करिये । हमने गायत्री माता के लिए किया है और गायत्री माता ने हमारे लिए किया है । हमने अपने गुरु के लिए किया है और गुरु ने हमारे लिए किया है । क्या आप हमारे काम नहीं आयेंगे ? आप हमारे काम आइये और हम आपके काम आयेंगे । अब हमारा हर एक कार्यक्रम में जाना नहीं हो सकेगा, लेकिन आप में से हर एक सक्रिय कार्यकर्ता को साल भर में एक बार अपने गुरुद्वारे में अवश्य आना चाहिए । अभी तक आप हमारे पास वरदान माँगने के लिए आते रहे हैं, पर अब हम आपसे वरदान माँगते हैं आपके पसीने का वरदान आपकी मेहनत का । जब आप देने के लिए आना, कुछ पसीना बहाने के लिए आना, कुछ समय देने के लिए आना, कुछ अकल देने के लिए आना । मित्रो, अब हमें उन लोगों को बुलाना है जो आशीर्वाद देने में समर्थ हो सकें, हमारे कंधे से कंधा मिला सकें । जो हमारा गोवर्धन उठाने में लाठी का टेका लगा सकें । जो हमारे समुद्र पर पुल बाँधने में ईंट और पत्थर हो सकें और गाँधी जी के कंधे से कंधा मिलाकर जेल जा सकें । हमने सारे विश्व को अपना कार्य क्षेत्र बना लिया है । अब हम हर एक आदमी को बुलायेंगे और उसी स्तर के लिए उसमें प्राण फूँकेंगे । आप लोग इन योजनाओं में हमारी सहायता करना । भगवान ने हाथ पसारा है । हमने आपके सामने हाथ पसारा है । हमारे गुरुदेव ने हमारे सामने हाथ पसारा था । विवेकानंद के सामने रामकृष्ण ने हाथ पसारा था, चाणक्य ने चन्द्रगुप्त के सामने और समर्थ गुरुरामदास ने शिवाजी के आगे हाथ पसारा था । भगवान की हथेली पर रखने वाला आदमी कभी घाटे में नहीं रहा । आप भी घाटे में नहीं रहेंगे । हम आपके आगे हाथ पसारते हैं आपका श्रम माँगने के लिए, समय माँगने के लिए, आपकी क्षमता माँगने के लिए, आपकी भावना के लिए । अगर आप देंगे तो विश्वास कर सकते हैं कि हमारे खेत में अगर बीज बोयेंगे तो हमारी जमीन, उसको खाने वाली नहीं है । हम आपको हजार गुना फल उगाकर देंगे और आपको निहाल कर देंगे । आप कुछ दीजिए तो सही हमको । आप देना नहीं चाहते क्या ? आप दीजिए-अपना श्रम दीजिए, समय दीजिए, भावना दीजिए, यही है आपके सामने आज के प्रज्ञावतार की अपील, युग के देवता की अपील, महाकाल की अपील और हमारी अपील । आप कुछ करना चाहते हों तो करना । आज की बात अब खत्म करते हैं ।

ॐ शांति :

卐

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

आध्यात्मिक कायाकल्प की एक ही शर्त-पात्रता संवर्धन

(कल्पसाधना सत्र मार्च ८३)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

मित्रो, दो दिनों से आप यह सुन रहे हैं कि कायाकल्प क्या है ? कल्प के लिए आपको क्या करना पड़ेगा ? कल्प के लिए दूसरे भी आपकी सहायता करेंगे, पर आप यह मानकर चलिये कि आपको भी कुछ करना पड़ेगा । अगर आप कुछ नहीं करेंगे, केवल पूजा ही करते रहेंगे, भीतर वाले हिस्से को ठीक नहीं करेंगे, केवल कर्मकाण्ड तक ही सीमित रह जायेंगे तो उद्देश्य कैसे पूरा होगा ? यह कल्प कोई शारीरिक थोड़े ही है जो क्रियाओं भर से पूरा हो जायगा । यह आंतरिक कायाकल्प है, इसके लिए आपको अपनी मनःस्थिति को, अपने चिंतन को, अपनी विचारणाओं को, आस्थाओं को, दृष्टिकोण को भी बदलना पड़ेगा । यदि यह कर सकें तो समझिये कि बाहर की सहायता भी आपको जरूर मिलकर रहेगी ।

आमतौर से लोग यह समझते हैं कि देवताओं की खुशामद करके और उनसे कुछ प्राप्त करके हम अपना फायदा उठा लेंगे अध्यात्म इसी का नाम है । पर लोगों का यह ख्याल गलत है । देवताओं का अनुग्रह मिलता तो है, यह मैं नहीं कहता कि नहीं मिलता लेकिन बिना शर्त नहीं मिलता । कुपात्रों को भी नहीं मिलता । पात्रता पहले साबित करनी पड़ती है, इसके बाद में ही कहीं ऐसा होता है कि देवता कोई सहायता कर सकें और किसी भक्त या साधक को लाभ पहुँचाने में मददगार बन सकें । आपको भी यही विचार करके चलना चाहिए । आपको देवानुग्रह की आशा तो करनी चाहिए, गुरुजी के आशीर्वाद की आशा तो करनी चाहिए, गायत्री माता की कृपा की आशा तो करनी चाहिए, लेकिन उस आशा के साथ में जो एक शर्त जुड़ी है, उसे भूल नहीं जाना चाहिए । वह शर्त यह है कि आप अगर अपनी पात्रता साबित करेंगे तो देवता आपकी सहायता जरूर करेंगे और यदि आप अपनी पात्रता साबित नहीं कर सकते तो फिर यह विश्वास रखिये कि आपको निराश ही होना पड़ेगा । देवता से किसी ऐसी कृपा की आशा मत कीजिए जो कि कुपात्रों को भी मिल सकती है । देवता बड़े होशियार होते हैं, मंत्र भी बहुत होशियार होते हैं । आप कर्मकांड करें, यह अच्छी बात है, लेकिन कर्मकांडों को देखकर देवता थोड़े ही प्रसन्न होते हैं । वे तो कर्मकांडों के पीछे छिपी हुई साधक की भावनाओं को देखते हैं और अगर भावनायें सही हैं तो निश्चित रूप से वही फल देते हैं जैसा कि आपने सुना है ।

इस संदर्भ में आप एक उदाहरण पर ध्यान दीजिए । बादलों को आप देखते हैं न, वे कितनी कृपा करते हैं । बादलों के बराबर उदार देवता कौन सा हो सकता है ? वह बिना कीमत पानी बरसाता है और चाहे जितना बरसाता है वह समुद्र से लाता है और प्यासी जमीन को पानी पूरा करने के लिए कितना पानी बरसाता है । लेकिन आपको ध्यान है क्या कि उस पानी से कौन लाभ उठा पाता है ? आप यह बताइये कि उससे हर कोई फायदा उठा लेता है क्या ? हर कोई फायदा नहीं उठा सकता । बादलों से हर जगह हरियाली हो जाती है, लेकिन जो चट्टानें हैं, उन चट्टानों पर एक तिनका भी पैदा नहीं होता । आप नदी में पड़े हुए पत्थरों को जरा देखिये न । नदी के पानी से किनारे नीले हो जाते हैं, जमीन गीली हो जाती है, सब जगह गीले हो जाते हैं, पर जो चट्टान-पत्थर का टुकड़ा नदी के बीच में सैकड़ों वर्षों से पड़ा हुआ है, जरा उसे तोड़-फोड़ कर देखिये नदी का उस पर कोई अनुग्रह नहीं दीख पड़ेगा, क्योंकि वह पत्थर है । बादलों के अनुग्रह से भी उसे कोई लाभ नहीं हो सका, क्योंकि वह चट्टान है । जब कि आप देखते हैं कि बादलों के पानी से भूमि में हरियाली पैदा हो जाती है, पर चट्टान में क्यों नहीं पैदा होती । छात्रवृत्ति के बारे में आप जानते हैं कि वह फर्स्ट डिवीजन में पास होने वाले छात्रों को सरकार की ओर से दी जाती है । थर्ड डिवीजन में पास होने वाले को दी जाती है क्या ? फेल होने वाले को मिलती है क्या ? नहीं । साहब, हम पर दया कीजिए, उदारता कीजिए- यह मत कहिए । इस दुनिया में दया का, उदारता का कोई खास महत्व नहीं है ।

दुनिया में सर्वत्र पात्रता का महत्व है, उसी की परख की जाती है । आपने देखा होगा कि किसी खूब सूरत लड़की को-कन्या को बहुत से पड़ोसी, आवारा लड़के यह माँग सकते हैं कि आप अपनी लड़की हमारे हवाले कर दीजिए और हम से शादी कर दीजिए । इस संबंध में आपका क्या ख्याल है कि कोई अपनी जवान लड़की को-जो पढ़ी-लिखी भी है, सुन्दर-सुयोग्य भी है, किसी माँगने वाले के सुपुर्द कर देगा क्या ? नहीं करेगा । यद्यपि वह बेचारा प्यासा फिर रहा है कि कोई अच्छा जमाई मिल जाये तो हम पैसे भी देंगे, कपड़ा भी देंगे, खुशामद भी करेंगे, बारात भी आयेगी । वह कितना तलाश करता फिरता है । क्यों साहब-तलाश क्यों करते हैं आप जमाता को, जबकि आपके पड़ोस में ही पचास जमाता हैं और इसके लिए तैयार हैं कि हम भी आपके जमाई बनेंगे । हमको भी आप अपनी लड़की दे दीजिए, फिर बेटी का बाप क्यों नहीं देता उनको ? क्यों उनसे मनाकर देता है ? क्यों लड़ने-झगड़ने के लिए अमादा हो जाता है ? क्यों अच्छे लड़के के पास जाता है, खुशामद करता है, पैसा भी देता है, मिन्नते भी करता है ? ऐसा क्यों होता है ? क्या बता सकते हैं आप ? सिर्फ एक ही वजह है कि वह जमाता इस लायक है, उसमें इतनी पात्रता है कि वह उस

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

लड़की का गुजारा कर सके, भरण-पोषण कर सके, उस लड़की की ठीक देखभाल कर सके । इसलिए लड़की का बाप ऐसे जमाता को तलाश करता है जो कि इसके योग्य हो । ठीक-बिलकुल ठीक यही बात समझिये कि देवताओं के अनुग्रह हर एक के हिस्से में नहीं आ सकते । गुरुओं के अनुग्रह हर एक के हिस्से में नहीं आ सकते । रामकृष्ण परमहंस ने विवेकानंद को अनुग्रह दिया था । माँगने वाले तो हजारों आदमी उनके पास आते थे और अपनी छोटी-मोटी जरूरतें पूरा करा करके भाग खड़े होते थे । लेकिन वह जो देना चाहते थे वह केवल उनने विवेकानंद को ही दिया, क्योंकि उसके अंदर पात्रता का अंश पाया इसलिए अपनी आध्यात्मिक संपदा उन्हीं के सुपुर्द कर दी माता समझती है कि बच्चे को कितना दूध चाहिए, वह उसी के अनुरूप उसे देती है । माता उसकी पात्रता को समझती है ।

बादल कहाँ बरसते हैं ? वहाँ बरसते हैं जहाँ कि घनी हरियाली होती है । बादल वहाँ बरसने से इंकार कर देते हैं जहाँ पेड़ नहीं होते । रेगिस्तानों में पानी कहाँ बरसता है ? पेड़ अपनी चुंबक शक्ति से बादलों को बरसने के लिए मजबूर कर देते हैं । यही कारण है कि जहाँ पेड़ नहीं होते हैं वहाँ कम पानी बरसता है । लीबिया में कुछ दिन पहले ऐसा ही हुआ था । पेड़ काट डाले गये और उसका परिणाम यह हुआ कि पानी बरसना बंद हो गया और सूखा पड़ गया । जब फिर से पेड़ लगाये गये तब बादलों ने बरसात की, मतलब यह है कि बादल पेड़ों के चुंबकत्व से खिंचते चले आते हैं । खदानें कैसे बनती हैं, आप जानते हैं क्या ? खदानों में कहीं थोड़ा सा लोहा, थोड़ा पीतल, चाँदी, सोना बगैरह होता है और वे अपने चुंबकत्व से दूर-दूर फैले हुए अपने सजातीयकणों को अपनी ओर घसीटते रहते हैं और बड़ी खदानें बनती-बढ़ती रहती हैं । यदि इस साल सौ टन लोहा है तो अगले वर्ष दो सौ टन हो जायगा, उससे अगले साल तीन सौ टन हो जायगा । क्योंकि वह खदान जो है चारों ओर से खींचती रहती है और जमा करती रहती है । ठीक यही बात देवताओं की कृपा के बारे में है । उनकी कृपा को घसीटा जा सकता है, बुलाया जा सकता है । देवता अपने आप देंगे ? नहीं ? अपने आप कौन दे देगा ? आप अपने पैसे किसी को दे देंगे क्या ? नहीं । बैंक वाला चाहे किसी को रुपये दे देगा क्या ? नहीं । क्यों ? क्योंकि बैंक वाला उधार देने से पहले हजार बार यह तलाश करता है कि जिस आदमी को दिया जाने वाला है, वह उस पैसे का ठीक इस्तेमाल करेगा कि नहीं करेगा । बैंक का पैसा वापस मिलेगा कि नहीं मिलेगा । यह विश्वास न हो तो कोई देने को तैयार ही नहीं हो सकता । आपने देखा है न समुद्र को-समुद्र के पास कितनी सारी नदियाँ अपना सामान लेकर भागती हैं और उससे कहती हैं कि यह सब हमारा पानी लीजिए । क्यों लीजिये ? क्योंकि वे समझती हैं कि हमारे पानी को जमा करने की शक्ति इसमें है और हम जब अपने पानी को जमा करती हैं तो वह एक मुनासिब जगह पर जमा ही नहीं हो जायगा, हमें वापस मिलता भी रहेगा-वाष्पीभूत बादलों से वर्षा के रूप में ।

नदियों के तरीके से दैवी शक्तियाँ भी देती तो हैं, पर हर एक को नहीं दे सकतीं । आप यह भूल मत जाइये कि जो कोई माँगेगा, देवता उसी को दे देंगे, जो नारियल चढ़ा देगा उसी को दे देंगे । ग्यारह सौ जप कर देगा तो उसी को दे देंगे, पाठ कर देगा उसी को दे देंगे । इस तरह बरगलाने और फुसलाने से आप देवता के अनुग्रह नहीं प्राप्त कर सकते । कपड़े के तरीके से-कलेवर के तरीके से क्रियायें आवश्यक तो हैं, क्रियायें आवश्यक तो हैं चाकू की तरीके से, लेकिन सामान तो हो आपके पास । चाकू से कैसे काटेंगे कर्म को ? इसलिए केवल क्रियायें बहुत थोड़ा सा ही काम करती हैं । जो कर्मकांड आप करते हैं-जप करते हैं, और क्रिया से करते हैं, यह हैं तो महत्वपूर्ण और जरूरी भी, लेकिन आप यह ख्याल मत कीजिए कि केवल जप करने से या अन्न कम खाने से आप कोई लंबे-चौड़े फायदे उठा सकेंगे । आपको अपनी मनः स्थिति को जरूर बदलना पड़ेगा । फूल जब खिलता है तब आपने देखा होगा कि उसके ऊपर कितने भौंरे आकर बैठ जाते हैं । कितनी तितलियाँ और शहद की मधुमक्खियों के गुच्छे मँड़राने लगते हैं । कब आते हैं ? जब फूल खिलता है तब फूल के तरीके से अगर आप अपने जीवन को खिला सकते हों, अपनी पात्रता को विकसित कर सकते हैं, अपनी मनःस्थिति में हेर फेर कर सकते हों तो आपको हम यकीन दिला सकते हैं कि देवताओं के अनुग्रह आपको जरूर मिलेंगे जो आप यहाँ प्राप्त करने आये हैं । आपको गुरुओं के आशीर्वाद, हमारे आशीर्वाद मिलेंगे और दूसरे गुरु भी आपके पास आयेंगे और आपकी आवश्यकता को जरूर पूरी कर देंगे ।

पात्रता की परख हर जगह होती है । आप इस ख्याल में मत रहिए, मिन्नतें मत माँगिये, नाक मत रगड़िये, झोली मत फैलाइये और यह उम्मीदें मत कीजिए कि कोई आदमी या देवता आपकी पात्रता को देखे बिना केवल आपकी क्रिया-कृत्यों से ही प्रसन्न हो करके आपको निहाल कर जायगा । ऐसा हो नहीं सकता । आपको इतिहास मालूम है न शिवाजी को 'भवानी' नाम की एक तलवार मिली थी । क्यों मिली थी ? इसलिए मिली थी कि उसने अपनी पात्रता स्थापित की थी । उनके गुरु ने सिंहनी का दूध दुहने के लिए परीक्षा ली थी और कहा था आप जाइये सिंहनी का दूध लाइये । देखा गया कि वह इतना निष्ठावान है कि अपने कर्तव्य के लिए अपने प्राण भी दे सकता है तो भवानी से उन्होंने प्रार्थना की कि आप ऐसी तलवार दीजिए जो कि अजेय हो-अक्षय हो । अर्जुन को गाण्डीव कहाँ से मिला था ? इन्द्र देवता ने दिया था । अर्जुन को ही क्यों दिया औरों को क्यों नहीं दिया । इन्द्र ने अर्जुन को देने से पहले इम्तहान लिया था कि इतनी कीमती चीज विश्वस्त आदमी को प्रामाणिक आदमी को ही दी जाये, हर एक को नहीं दी जाये । आपको याद होगा कि जब अर्जुन वहाँ गये थे तो उनका इम्तहान लेने के लिए इन्द्रलोक की सबसे खूबसूरत युवती उर्वशी को भेजा गया था । वह

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

ऐसे हावभाव करने लगी और उससे शादी की बात कहने लगी । अर्जुन ने कहा-"आप तो हमारी माँ के बराबर हैं और हम आपके चरणों की धूल अपने सिर पर रखते हैं । आप यह समझ लीजिये कि हम ही आपकी संतान हैं ।" इस जवाब से प्रसन्न होकर इन्द्र ने यह समझ लिया कि यह व्यक्ति इस लायक है कि इसको गाण्डीव दे देना चाहिए । इन्द्र को जब यह विश्वास हो गया था कि अर्जुन गाण्डीव के लायक है तो उन्होंने उसे प्रसन्नतापूर्वक दे दिया था ।

आपको बापा जलाराम की कहानी मालूम है न । भगवान उनके यहाँ आये थे और उनको एक झोली दे गये थे जिसमें से अक्षय अन्न के भंडार निकलते थे । यह वरदान भगवान ने दिया था जो अभी भी है । आप यदि गुजरात के वीरपुर नामक गाँव में कभी पहुँचें तो आप को एक सिद्ध पुरुष जलाराम बापा का एक स्थान मिलेगा । वहाँ अन्न की एक झोली अभी भी टँगी हुई है जो भगवान ने उन्हें दी थी । जलाराम बापा की इच्छा थी कि हमारे दरवाजे पर से कोई भी खाली हाथ न जाने पाये । भगवान ने उनकी इच्छा पूरी की उन्हीं की क्यों पूरी की, औरों की क्यों नहीं की ? इच्छायें, मनोकामनायें तो सभी करते हैं, पर उनकी इच्छा पूरी क्यों नहीं करते भगवान ? क्योंकि जलाराम बापा इम्तहान में पास हो गये थे । कौन से इम्तहान में पास हो गये थे ? उन्होंने दो प्रतिज्ञायें की थीं कि जलाराम मेहनत-मजूरी करेंगे और खेती में से अनाज उगायेंगे और उनकी पत्नी ने प्रतिज्ञा की थी कि पेट भरने के बाद में जो कुछ भी अनाज हमारे पास बचेगा, उसे दुखियारों को, संतों को खिलाते रहेंगे । उनकी स्त्री खाना पकाती रहती थी सारा दिन और बापा जलाराम खेती-बाड़ी करते रहते थे । वह अनाज पैदा करते थे और उनकी धर्म पत्नी खिलाती रहती थीं । इस बीच पेट भरने के लिए जो मिल गया उसी से गुजारा कर लिया बस । संत की यही निशानियाँ हैं कि उसका चरित्र ऊँचा होना चाहिए । भक्त का चरित्र ऊँचा न हुआ तब ? तब संभी कथा-कीर्तन, भजन-पूजन जप-तप अनुष्ठान बेकार हैं । नहीं साहब हम तो अखण्ड कीर्तन करते हैं, जागरण करते हैं, जप-तप करते हैं । आप यह सब करते हैं तो आपको मुबारक, लेकिन पहले आप सिर्फ एक जवाब दीजिये कि आप अपनी पात्रता को विकसित करते हैं कि नहीं ? भगवान सिर्फ दो ही बातें देखते रहते हैं और वे आपकी मानसिक पवित्रता और आपकी पूजा तो अपने मन को धोने का एक तरीका है ।

मित्रो, भगवान को बरगलाया नहीं जा सकता, उसे फुसलाया नहीं जा सकता । भगवान के साथ में ब्लैकमेलिंग नहीं की जा सकती । भगवान के साथ में जुड़ने का एक ही सीधा रास्ता है कि अपनी पात्रता साबित करें भगीरथ के तरीके से । भगीरथ गंगा जी को माँगने गये थे । उन्हें पानी की जरूरत थी अपनी फसल के लिए और अपने बाप-दादाओं का उद्धार करने के लिए भी, साथ में इससे भी बड़ी जरूरत थी कि सारे संसार को पानी मिलना चाहिए । भगीरथ निस्वार्थ थे, उनने तप किया । यदि यह कारण रहा होता कि भगीरथ गंगाजी को अपने पास बुलायेंगे, पानी को स्टोर करेंगे, हर आदमी से पैसा वसूल करेंगे और गंगा जी से अपना उल्लू सीधा करेंगे, तो आप विश्वास रखिये तब गंगा जी कभी भी भगीरथ के चंगुल में फँसने के लिए तैयार न हुई होतीं । उनने कारण की खोज की और उस आदमी की नीयति को जाना । नीयत का अर्थ है-पात्रता, चिंतन का अर्थ है-पात्रता चरित्र का अर्थ है-पात्रता । पात्रता, आपको विकसित करनी ही चाहिए । देवताओं के अनुग्रह में कोई कमी नहीं है, यदि कमी है तो आपमें पात्रता की । गंगा हिमालय से जब निकल कर चली और बोली कि अब हम लोगों की प्यास बुझायेंगी, पशु-पक्षियों की प्यास बुझायेंगी, खेतों में हरियाली पैदा करेंगी, अब हिमालय में रहने और आपकी गोदी में ठहरने का हमारा अब जरा भी मन नहीं है, तब हिमालय ने बहुतेरा समझाया कि आप तो यहीं रहिए यहाँ क्या कष्ट है आपको ? गंगा ने कहा नहीं, कष्ट का सवाल नहीं है, पर अब हमारी आत्मा नहीं मानती है । हमारी आत्मा कहती है कि हमको अपने को श्रेष्ठ कामों में खपा देना चाहिए-लगा देना चाहिए । बस-चल पड़ीं गंगा । लोगो ने यह भी कहा कि आप सूख जायेंगी, खाली हो जायेंगी और आप दिवालिया हो जायँगी । लेकिन गंगा ने कहा-तो दिवालिया होने में क्या कोई हर्ज है ? जिंदगी एक अच्छे काम में लग जाये तो कोई हर्ज है क्या ? जब वह चल पड़ीं तो हिमालय ने देखा कि ऐसी शानदार छोकरी, ऐसा शानदार उसका मन, ऐसी शानदार उसकी भावना, इसको कमी नहीं पड़ने देना चाहिए । हिमालय ने उसको यकीन दिलाया कि बेटी । तुम बराबर बहती रहना, तुम्हारे जलस्रोत को सूखने का कभी भी मौका नहीं आयेगा । हमारी बर्फ बराबर गलती रहेगी और तुम्हारा पेट और तुम्हारी जरूरतों को पूरा करती रहेगी । लाखों वर्ष हो गये गंगा को बहते हुए, पर क्या कुछ कमी पड़ी क्या ? कमी नहीं पड़ी । देवताओं के अनुग्रह पाने के यही तरीके हैं ।

आप देवताओं का अनुग्रह पाने के लिए कल्प साधना कर रहे हैं । आपको विश्वास होगा कि गायत्री माता का हम जाप करेंगे तो गायत्री माता अनुग्रह करेंगी । जरूर अनुग्रह करेंगी गायत्री माता का स्वभाव ही है कि वह जरूर सहायता करती हैं । यह भी आपको विश्वास होगा कि गुरुदेव आशीर्वाद देंगे, अपने पुण्य का एक अंश देंगे । बिलकुल यकीन रखिये, हमने जिंदगी भर अपने पुण्य के अंश बाँटे हैं । हमें बाँटने में बड़ी खुशी होती है और लोगों को खाने में खुशी होती है, पर हमको खिलाने में खुशी होती है । हमारे ऊपर एक और शक्ति छायी हुई है जिसकी वजह से ब्रह्मवर्चस् बना है और यह शांतिकुंज बना है । जिसकी प्रेरणा से यह कल्प साधना शिविर लगाये हैं और जिनकी इच्छा से आपको यहाँ बुलाया गया है । वह आपको खाली हाथ जाने देंगे क्या ? नहीं । यह तीनों शक्तियाँ ऐसी हैं जो बराबर आपकी सहायता करने के लिए अमादा हैं और सच्चे मन से चाहती हैं कि आपको कुछ दें । गाय सच्चे मन से चाहती है कि हम अपने बच्चे को अपना सारा का सारा दूध पिला

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

दें । जो भी कुछ वह खाती है और जितना दूध बनता है वह चाहती है कि हम अपने बच्चे को पूरा का पूरा दूध पिला दें । लेकिन बच्चा तो उसका होना चाहिए । बच्चा किसी और का हुआ तब ? कुत्ते, बिल्ली का बच्चा हुआ तब ? गधी का बच्चा हुआ तब ? तो क्यों पिलायेगी गाय ! वह गाय का ही बच्चा होना चाहिए । आपको संत का बच्चा होना चाहिए । आपको ऋषियों का बच्चा होना चाहिए । आपको अध्यात्म का बच्चा होना चाहिए , अर्थात् आपका चिंतन, चरित्र और आपका व्यक्तित्व ऐसा होना चाहिए जिससे कि देवता हमेशा आपकी सहायता करते हुए चले जायँ । इससे कम में बात बनेगी नहीं । इसके लिए आपको त्याग करना ही चाहिए । आपको अपनी बुराइयाँ छोड़नी ही चाहिए, आपको उदार होना ही चाहिए और आपको अपने दृष्टिकोण में महानता साबित करनी ही चाहिए ।

मित्रो, भगवान को हम क्या कहें, वह देता तो बहुत है, लेकिन वह उस परीक्षा के बिना कहाँ देता है । आपको सुदामा जी का किस्सा याद होगा कि वह एक बार श्रीकृष्ण भगवान से कुछ माँगने के लिए गये थे और सुदामा जी के माँगने से पहले ही श्रीकृष्ण ने उनकी यह परीक्षा ले ली थी कि यह हमको भी कुछ दे पायेंगे कि नहीं ! उनकी पोटली में चावल रखा हुआ था, जिसे देखते ही कृष्ण भगवान ने कहा-पहले चावल की पोटली हमारे हवाले कर दीजिए, फिर बाद में करना बात । आप अपनी पोटली नहीं खाली कर सकते, तो हम क्यों आपके लिए खाली करेंगे ? हम क्यों आपको सहायता देंगे ? उन्होंने चावल की पोटली को उनके हाथों से छीन लिया और छीनने के बाद में उसको अपने पास रखा । बस वही चावल बढ़ते हुए चले गये और उन्हीं चाँवलों के बदले सुदामा जी को वह धन मिल गया जिसके बारे में आपने सुना होगा कि द्वारका जी से सारा धन सुदामा जी के पास चला गया था । वे चावल भगवान के खेत में बोये गये थे । यदि वह चावल लेकर सुदामा जी द्वारका नहीं गये होते , तब उनको खाली हाथ आना पड़ता । आप देंगे नहीं तो ले कहाँ से जायेंगे ? इसलिए पहले देने की बात पर विचार कीजिए, परिशोधन की बात सोचिये, पवित्रता की बात सोचिये । अपने व्यक्तित्व को ऊँचा उठाने की बात सोचिये । इतना अगर आप सोच सकते हों, तो फिर आप देखना किस कदर आपको भगवान की संहायता मिलती है ? देवताओं की कैसी सहायता मिलती है ? आपके मंत्र कैसे चमत्कारी सिद्ध होते हैं ? आपको व्रत और अनुष्ठान से कितना ज्यादा फायदा मिलता है ? भगवान तो ऐसे ही हैं जो सबको निहाल कर देते हैं । उनने द्रौपदी को निहाल कर दिया था । आपको ध्यान है कि नहीं, भगवान ने द्रौपदी को कितना वस्त्र दिया था ? लेकिन अगर आप माँगे तो क्या आपको मिलेगा ? नहीं देंगे । तो फिर ऐसा पक्षपात क्यों ? मित्रो, एक ही बात है कि द्रौपदी ने यह साबितकर दिया था कि उसको मिलने का हक है । आप भी साबित करिये कि आपको भी मिलने का हक है । आपने द्रौपदी के जीवन की वह घटना सुनी होगी कि जब एक बार वह जमुना स्नान कर रहीं थीं, तो पास में ही एक महात्मा जी स्नान कर रहे थे । उनके पास एक लंगोटी नहाने की थी और एक पहनने की । हवा का एक झोंका आया और एक लंगोटी बह गयी । जिसको पहने थे वह फट गयी । द्रौपदी ने देखा कि महात्मा जी की एक लंगोटी बह गयी और दूसरी फट गयी है और वह शर्म के मारे शरीर को छिपाकर झाड़ी के पीछे बैठ गये हैं । द्रौपदी का मन पिघल गया कि उनकी सहायता करनी चाहिए । उन्होंने अपनी साड़ी के दो टुकड़े किये और आधा टुकड़ा महात्मा जी को दे दिया और कहा-आप इससे अपने लिए दो लंगोटियाँ बना लीजिए । आपकी भी लज्जा ढक जायगी और आधी साड़ी से हमारा भी काम चल जायगा ।

यह क्या थी ? द्रौपदी की उदारता थी जो उनके कपड़े के साथ में जुड़ी थी । कपड़े की कीमत क्या हो सकती है ? कपड़ा तो जरासी कीमत का था, लेकिन जब भगवान के भंडार में चला गया तो लाखों गुना हो गया । भगवान ने देखा कि जो आदमी उदार है, उसके लिए उदार होना चाहिए । जो आदमी दयालु है, उसके लिए दयालु होना चाहिए । जो आदमी चरित्रवान है उसके लिए चरित्रवान होना चाहिए । जब दुःशासन उसे नंगी कर रहा था तो भगवान ने द्रौपदी के लिए कितना सारा कपड़ा भेजा था, कितनी सारी सहायता की थी, यह आपने भी पढ़ा-सुना होगा । आप से मुझे यही कहना था कि आप यहाँ देवता का अनुग्रह प्राप्त करने के लिए आये हैं और अगर आपको अनुदान पाने की इच्छा है तो आपकी यह इच्छा मुनासिब है-सही है आप किसी गलत फहमी में नहीं हैं, किसी अंधविश्वास में जकड़े हुए नहीं हैं । प्राचीन काल के असंख्य इतिहास ऐसे हैं जिसमें देवताओं ने सहायता की है, अनुग्रह किये हैं । आपको जरूर सहायता मिलेगी, पर एक शर्त को भूलियेगा मत । अगर आप उस शर्त को भुला देंगे तो आप घाटे में रहेंगे, आप निराश होंगे । फिर आप गाली देंगे और सोचेंगे कि मंत्र मिथ्या होते हैं, देवता मिथ्या होते हैं । क्यों मिथ्या होते हैं ? अगर आपने अपनी पात्रता का विकास नहीं किया तब, चिंतन, चरित्र, व्यवहार को उत्कृष्ट और उदार नहीं बनाया, तब आप घाटे में रहेंगे । इसके लिए ही हम आपको यह अनुष्ठान करा रहे हैं ताकि आपका चिंतन बदले, व्यक्तित्व परिष्कृत हो और आपके भीतर का कायाकल्प हो जाये, तभी देवता आपकी सहायता करेंगे । आप अपने भीतर को बदलने की कोशिश कीजिए । अपना चिंतन बदलिए, अपना चरित्र बदलिए , अपने जीवन का ढाँचा और ढर्रा बदलिये फिर देखिये आपकी बदली हुई परिस्थितियों में जो देवता नाखुश थे-मुँह मोड़े हुए थे , किस तरह आप के गुलाम हो जाते हैं कैसी आपकी सहायता करते हैं ? कैसे आपको छाती से लगाते हैं ? कैसे आपको निहाल करते हैं ? यही अनुभव हमारे जीवन का भी है और इससे आपको भी लाभ उठाना चाहिए । आप अपने आपको खाली कीजिए और निहाल होकर जाइये । बस इतना ही कहना था मुझे आप से ।

ॐ शांतिः

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी-

(गुरुपूर्णिमा पर्व-१९८६)

देवत्व विकसित करें, कालनेमि न बनें

परमपूज्य गुरुदेव का प्रस्तुत प्रवचन सूक्ष्मीकरण साधना के तुरंत बाद जन-साधारण के समक्ष पर्वों पर दिये गये उद्बोधनों में अंतिम व अत्यधिक महत्वपूर्ण है । गुरुपूर्णिमा १९८६ के बाद वे कभी शांतिकुंज के मुख्य मंच पर नहीं आए । आइए, १९९५ के वसंत की पूर्ववेला में इस अमृत धारा में अवगाहन करें व कुछ निज की आत्म समीक्षा करें ।

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।
अखण्ड मंडलाकारं व्याप्त येन चराचरम् ।
तद् पदंशितम् येन तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥

देवियो, भाइयो ! बहुत पुराने समय की बात है जब रावण सीता जी को चुरा कर ले गया था और सबके सामने यह समस्या थी कि उसका मुकाबला कैसे किया जाय ? रावण से युद्ध कैसे किया जाय ? बहुत सारे लोग थे, राजा-महाराजा भी थे, पर किसी की हिम्मत नहीं पड़ी कि रावण से लड़ने के लिए कौन जाये, अपनी जान गँवाये, कौन मुसीबत में फँसे ? इसलिए कोई भी तैयार नहीं हुआ । रामचन्द्र जी कहने लगे कि क्या कोई भी लड़ने हमारे साथ नहीं जायगा ? तो फिर क्या हुआ ? देवताओं ने विचार किया और कहा कि भगवान के काम में हमको सहायता करनी चाहिए और सुग्रीव की सेना में-हनुमान की सेना में सम्मिलित होकर रावण से लड़ने के लिए चलना चाहिए । देवताओं ने बंदर का रूप बनाया, रीछ का रूप बनाया । कहाँ रावण और कहाँ बेचारे बंदर, दोनों का कोई मुकाबला नहीं था, फिर भी वे लड़ने के लिए खड़े हो गये, क्यों ? क्योंकि वे देवता थे । देवता न होते, अगर रीछ-बंदर रहे होते तो पेड़ों पर कुदक रहे होते, मचल रहे होते, बच्चे पैदाकर रहे होते, कुछ और काम कर रहे होते, फिर वे सीता जी को छुड़ाने के लिए रामराज्य की स्थापना के लिए, लंका को तहस-नहस करने के लिए भला इस तरह के कार्य कैसे कर सकते थे ? लेकिन उन्होंने किया । आप लोगों को मैं रीछ और बंदर के रूप में देवता मानता हूँ । आज फिर उसी ऐतिहासिक घटना की पुनरावृत्ति होने जा रही है । आप लोग पहले जन्म के देवता हैं । अकेले में जब कभी आपको शांति का समय मिले-एकांत का समय मिले तब आप अपने अंदर झाँक कर देखना कि आप रीछ-बंदर हैं या देवता हैं । वास्तव में आप देवता हैं । देवताओं के सिवाय आड़े वक्त में कोई और काम नहीं आ सकता, देवता ही काम आते हैं । आप लोगों में से हर एक को मुझे यही कहना है कि आपको जब कभी अपने आप में मौका मिले तो कहना कि गुरुपूर्णिमा के दिन गुरुजी ने कहा था कि हमारे भीतर देवता बैठा हुआ है-देवता विराजमान है । देवता जो काम किया करते हैं, वे जिस काम के लिए अपना जीवन लगाया करते हैं, जिसके लिए पुरुषार्थ किया करते हैं, वही पुरुषार्थ हमारे सुपुर्द किया गया है ।

एक बात तो मुझे आपसे यही कहनी थी । दूसरी बात यह कहनी थी कि जब महाभारत हुआ था, तब अर्जुन यह कर रहा था कि हम तो पाँच पाण्डव हैं और कौरव सौ हैं और उनके पास विशाल सेना भी है, जबकि हमारे पास सेना भी नहीं है-थोड़े से पाँच-पचास आदमी हैं । ऐसे में भला युद्ध कैसे हो सकता है । हम मारे जायेंगे । इसलिए वह बार-बार मना कर रहा था और कह रहा था कि महाराज हमें लड़ाइये मत, इसमें हमको सफलता नहीं मिल सकती । आप हिसाब लगाइये कि इनसे लड़कर हम फतह कैसे पा सकेंगे ? जीत कैसे सकेंगे ? तब भगवान ने उससे कहा था कि देखो अर्जुन, इन सबको तो मैंने पहले से ही मार कर रखा है और तुम्हारे लिए सिंहासन सजाकर रखा है । तुम पाँचों को सिंहासन पर बैठना पड़ेगा, राज्य करना पड़ेगा और कौरवों को मारना पड़ेगा । ये तो सब मरे-मराये रखे हैं, तुम तो खाली तीर-कमान चलाओगे इसी तरह जो काम मेरा था सो मैंने करके रखा है । इस युग को बदलने के संबंध में जो महत्वपूर्ण कार्य करने हैं उनके संबंध में आपको तो श्रेय भर लेना है । जीतना किससे है और हारना किससे है ? न किसी से हारना है, न किसी से जीतना है । न किसी

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

को मारना है और न कोई पुरुषार्थ करना है । आपको तो जो विजयी होने का श्रेय मिलना चाहिए और वही श्रेय आपको प्राप्त करना है । अर्जुन ने भी प्राप्त किया था । इससे पहले जब वह ज्यादा बहस करने लगा था कि मेरे बाल-बच्चे हैं, मेरा काम हर्ज हो जायगा, फलाना हो जायगा, मुझे टाइम नहीं है, तब कृष्ण भगवान झल्ला पड़े और फिर उन्होंने एक हुक्म दिया-*''तस्मात् युद्धाय युजस्व''* लड़ , दुनिया भर के बहाने मत बना-लड़ाई कर । भगवान हमारा क्या होगा ? यह पूछने पर श्री कृष्ण ने कहा था कि तेरी जिम्मेदारी हम उठाते हैं, तू तो युद्ध कर ।

साथियो, आज गुरुपूर्णिमा का दिन है, आप में से हर एक आदमी की देवता की जिम्मेदारी हम उठाते हैं । देवता जब रीछ-बंदर बनकर चले आये थे तो पीछे उनके घर बीबी-बच्चे रह गये थे, कुटुम्ब रह गया था, उन सबको भगवान ने सँभाला था । आपके घर को सँभालने की, व्यापार को सँभालने की, खेती-बाड़ी को सँभालने की, हारी-बीमारी को सँभालने की जिम्मेदारी हमारी है और आपकी यह सब जिम्मेदारियाँ हम उठाते हैं । आप हमारा काम कीजिए हम आपका काम करेंगे । हम आपको यकीन दिलाते हैं, आप हमारा विश्वास कीजिए हम आपका काम जरूर करेंगे । पिता ने बच्चे का हर काम किया है । पिता से बच्चे ने जब जो माँगा है, दिया है । जब टॉफी माँगी है तो टॉफी दी है, झुनझुना माँगा तो झुनझुना दिया है । तुम तो छोटे बच्चे हो, इसलिए यही माँगते रहते हो । आते ही यह माँगते रहते हो । अब आगे से जो भी कहना हो बेटे लिखकर दे जाना । लिखना और कहना बराबर है और फिर हमारा जवाब सुनते जाना और नोट करके ले जाना कि गुरुजी ने यह वायदा किया है कि चौबीस पुरश्चरणों का जो पुण्य पहले कमाया था उसका, और अब हमको तीन साल हो गये हैं, एकांत मौन रहकर साधना की है, उसकी पुण्य संपदा जो हमारे पास जमा है, उसमें आपका हिस्सा बराबर है । माँ के पेट में जब बच्चा आता है तब कानूनन उसका हक बाप की जायदाद पर हो जाता है । इसी तरह हमारी कमाई पर आपका हक है । प्रार्थना मत कीजिए, निवेदन मत कीजिए , मनुहार मत कीजिए, वरदान मत माँगिये । आप अपना हक माँगिये कि हम आपका काम करते हैं और आपको हक चुकाना पड़ेगा । आप बीमार रहते हैं तो हम आपकी बीमारी को अच्छा करेंगे । आप पैसे की तंगी में आ गये हैं तो हम उस तंगी को भी दूर करेंगे । आप लड़ाई-झगड़े में फँस गये हैं तो हम उसमें भी आपकी मदद करेंगे । आप पर मुसीबत आ गयी है तो हम आपकी ढाल बन कर उस मुसीबत को रोकेंगे ।

श्री कृष्ण ने अर्जुन का रथ चलाया था, आपका रथ हम चलायेंगे । काहे का रथ ? आपके कारोबार का रथ, आपके व्यापार का रथ, आपके धंधे का रथ, आपके शरीर का रथ, आपकी गृहस्थी का रथ-यह सब हम चलायेंगे, इसका हम वायदा करते हैं, लेकिन साथ-साथ आपसे यह निवेदन भी करते हैं कि आप हमारे रास्ते पर आइये साथ-साथ चलिए । हमारे कंधे से कंधा मिलाइये । इसमें आपको कोई नुकसान नहीं होगा । आप यह यकीन रखिये हमने उन विरोधियों को मार कर रखा है और विजय की माला आपके लिए गूँथ कर रखी है । पाँचों पाण्डवों के लिए विजय की मालायें बनी हुई रखी थीं, मात्र उनके गले में पहनानी भर थीं । आपके लिए भी मालायें रखी हैं, मात्र आपको पहनना है, आपको श्रेय भर लेना है । यह जो नवयुग का क्रम चल रहा है, उसमें जब आप भागीदार होंगे तो श्रेय आपको ही मिलेगा । तो गुरुजी हमारे बीबी-बच्चों का क्या होगा ? बेटे, उनकी जिम्मेदारी हमारी है । यदि वे बीमार रहते हैं तो हम उनकी बीमारियाँ दूरकर देंगे । व्यापार में नुकसान होता है तो तेरे उस नुकसान को पूरा करना हमारी जिम्मेदारी है । तेरे व्यापार में जो घाटा पड़ जाय तो तू हमसे वसूल कर ले जाना, लेकिन जब बच्चा बड़ा हो जाता है तब कुछ बड़ी चीज दी जाती है जो छोटे बच्चे को नहीं दी जा सकती । अब आप जवान हो गये हैं । अब कोई बच्चा नहीं दिखाई पड़ता, आप सब जवान हो गये हैं । अब हम सबको काम-धंधे से लगायेंगे और जो हमारे पास बाकी बचा है वह भी आप सबको बाँट देंगे । नहीं गुरुजी जब आप जायँगे तब अपनी कमायी भी अपने संग ले जायेंगे ? बेटे, हम ऐसा नहीं करेंगे । हम आपको यकीन दिलाते हैं कि हमारी जो भी कमायी है वह सब आपको देकर जायेंगे चाहे वह पुण्य की कमायी हो, चाहे वह सांसारिक कमायी हो, चाहे आध्यात्मिक हो, उस कमायी में तुम्हारा हिस्सा है ।

साथियो, हमने जीवन भर दिया है । बाप-दादों की दो हजार बीघे जमीन थी, वह हम दे आये और स्त्री के पास जेवर था वह भी हम दान में दे आये । बच्चों की गुल्लक में पैसे थे वह भी हम दे आये । अब आपके पास कुछ और धन है ? नहीं बेटे, धन के नाम पर एक कानी कौड़ी का लाखवाँ हिस्सा भी हमारे पास नहीं है । आपको तलाशी लेना हो या मरने के बाद पता लगाना हो कि गुरुजी के पास क्या मिला, तो मालुम पड़ेगा कि शांतिकुंज में एक ऋषि रहा करता था और यहाँ की रोटी खाया करता था, और सारे दिन चौबीसों घंटे काम करता था । बेटे, धन के नाम पर हमारे पास कुछ भी नहीं है, लेकिन हाँ एक पूँजी है हमारे पास, यदि वह न होती तो हम इतनी बड़ी बात क्यों कहते ? हमारे पास वह पूँजी है तप की, जिसको हम सामान्य क्लास का कहते हैं । जिससे हम आपकी मुसीबतों में, कठिनाइयों में सहायता कर सकते हैं । दूसरा वह जिसमें हम आपको संसार का नेता बनाना चाहते हैं । हमको भगवान ने नेता बनाकर भेजा है । चाणक्य को नेता बनाकर

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

भेजा था । वह नालंदा विश्वविद्यालय के डीन थे । अब्राहम लिंकन को, जार्जवाशिंगटन को , गारफील्ड को नेता बनाकर भेजा था । विनोवा को नेता बनाकर भेजा है । हम भी आप में से हर एक आदमी को नेता बनाना चाहते हैं, नेता बनाने की हमारी इच्छा है । आपकी इच्छायें क्या हैं, यह हमको मालुम हो या न हो तो आप लिखकर दे जाना । हमारा एक क्रम है । जब हम बैठते हैं तब देख लेते हैं । रात में हमारा क्रम पूजा-उपासना का रहता है । सबेरे से लेकर दोपहर तक हम अपना लेख लिखते हैं ताकि अखण्ड-ज्योति बीस साल तक बराबर निकलती रहे । बीस साल के लिए लेख और जो पुस्तकें लिखनी हैं, वह सब हम लिखकर रख जायेंगे । जब यह युगसंधि समाप्त होगी और सन् २००० आयेगा , उस वक्त तक आप यह अनुभव करेंगे कि गुरुजी जो लिखकर रख गये थे, उनको लेखनी में कोई फर्क नहीं आया । उनकी वाणी में कोई फर्क नहीं आया, उनके अक्षरों में कोई फर्क नहीं आया । उनकी पुस्तकों में, पत्रिकाओं में कोई फर्क नहीं आया है । मिशन में कोई फर्क नहीं आया है और न ही आयेगा । दोपहर बाद तो अब हमने मिलना भी शुरू कर दिया है । पाँच-पच्चीस आदमी को ऊपर बुला भी लेते हैं । यह हमारा दोपहर से शाम तक का क्रम है । इस तरीके से कभी आयेंगे तो जब किसी को बहुत जरूरी काम हो तो मिल लेना । सांसारिक कठिनाइयाँ हों तो माता जी से कह देना । यह महकमा मैंने माता जी के जिम्मे कर दिया है । संसार की आपको जितनी कठिनाइयाँ हों, सब माता जी से कहियेगा । कोई आध्यात्मिक बात हो या कुछ ऊँचा उठना हो, समाज के लिए कोई बड़ा कदम उठाना हो तो फिर हमारे पास आना । बड़ा कदम नहीं उठाना है, अपनी कोई मुसीबत कहनी है तो माता जी से कह दें और कोई बड़ा कदम उठाना है तो हमारे पास आवें । हम आपके बड़े कदम उठाने में मदद करेंगे । हमने इस दुनिया में बड़े कदम उठाये हैं और बड़े कदम उठाने के लिए आपसे भी कहते हैं । दो बातें हो गयी हैं आप ध्यान रखना ।

एक और बात मैं अपने सबूत में आपको बताता हूँ जो विश्व के एक बहुत बड़े भविष्यवक्ता ने सैकड़ों वर्ष पूर्व कही थी । संसार में ऐसे भविष्य वक्ता तो बहुत से हैं जो हाथ देखकर यह बताते हैं कि तेरा विवाह कब हो जायेगा पैसा कब आयेगा, कब क्या हो जायेगा । इसी तरह जन्मपत्री बनाने वाले बहुत से लोग हैं, किंतु दुनिया में एक ऐसा व्यक्ति भी हुआ है जिसने सारे संसार की राजनीति के बारे में लिखा है जिसमें आठ सौ भविष्यवाणियाँ सही हो चुकी हैं । एक हजार वर्ष पहले हुआ था वह, नाम था नोस्ट्राडोमस । उसने ऐसी भविष्यवाणियाँ की थीं जो एकोएक सौ फीसदी सही हो जाती थीं । ब्रिटेन का तब नामोनिशान नहीं था जब नोस्ट्राडोमस पैदा हुआ था । स्काटलैण्ड था, आयरलैण्ड था, इंग्लैण्ड था, पर ब्रिटेन नहीं था, लेकिन उसमें लिखा था कि ब्रिटेन बनेगा, इतने दिनों तक राज्य करेगा और सन् १९४२ में इसका सीराजा बिखर जायेगा और तब जितना भी उसका राज्यमंडल है सब खत्म हो जायेगा । वह सब एक-एक अक्षर सही हुआ । यह तो नमूने के लिए बता रहा हूँ । उसकी ऐसी भविष्यवाणियाँ कवितामय पुस्तक में लिपिबद्ध हैं जिसे फ्रांस के राष्ट्रपति मितरा सिरहाने रखकर सोया करते हैं । उस कवितामय पुस्तक पर हजारों आदमियों ने टिप्पणियाँ की हैं । उसी में से एक आप अखण्ड-ज्योति के अगले अंक में पढ़ेंगे जो उसने हिन्दुस्तान के बारे में की है । उसकी भविष्यवाणी है कि हिन्दुस्तान का अध्यात्म और पाश्चात्य का तत्व विज्ञान-यह दोनों आपस में मिल जायेंगे पाश्चात्य भौतिक विज्ञान और अध्यात्म मिल जायेंगे । रूस और हिन्दुस्तान मिल जायेंगे । चीन से अमेरिका की लड़ाई हो जायेगी, आदि-आदि बहुत सी भविष्यवाणियाँ हैं । उन बहुत सी भविष्यवाणियों में से आपके काम की एक ही है कि हिन्दुस्तान सारी दुनिया का नेतृत्व करेगा जैसा कि आजकल अमेरिका कर रहा है । चाहे वह बम बनाये, चैलेंजर बनाये, स्टारवार की योजना बनाये, किंतु बाद का नेतृत्व भारत करेगा । हिन्दुस्तान को सारी दुनिया का नेतृत्व करने के लिए बड़े कर्मठ व्यक्ति चाहिए, बड़े शक्तिशाली और क्षमता संपन्न व्यक्ति चाहिए, बड़े लड़ाकू योद्धा चाहिए, बड़े इंजीनियर चाहिए, बड़े-बड़े समर्थ आदमी चाहिए और वही मैं [illegible] कर रहा हूँ । बेटे, तुममें योग्यता नहीं है तो तुम्हें योग्यता हम देंगे । तुम्हारी खेती-बाड़ी को ही नहीं सँभालूगा वरन् योग्यता भी दूँगा ताकि तुम संसार का नेतृत्व कर सको ।

नालंदा विश्वविद्यालय की तरीके से हमने यहाँ नेता बनाने का एक विद्यालय बनाया है । नालंदा विश्वविद्यालय में चाणक्य जहाँ पढ़ाता था उसमें दस हजार विद्यार्थी पढ़ते थे एक साथ । हमारी भी इच्छा है कि हम दस हजार विद्यार्थी एक साथ पढ़ायें , पर यहाँ इतने विद्यार्थियों के लिए जगह नहीं है । अभी यहाँ कल तक साढ़े आठाइस सौ आदमी थे, आज चार हजार हो गये हैं । ठूँस-ठूँस कर भी रखना चाहें तो चार हजार से अधिक व्यक्ति नहीं आ सकते, जबकि हमारा मन है कि जिस तरीके से चाणक्य दस हजार आदमियों को पढ़ाता था और पढ़ाकर के हिन्दुस्तान से लेकर सारे विश्वभर में अपने आदमी भेजता था । चन्द्रगुप्त को उसने चक्रवर्ती राजा बनाया था । हमारी भी इच्छा है कि ऐसे-ऐसे नेता बनायें, पर बना नहीं सकते क्योंकि जगह हमारे पास कम है । ऐसे में पढ़ा नहीं सकते । तो फिर क्या योजना है ? कुछ नयी स्कीम है जो आज गुरुपूर्णिमा के दिन कहना है और वह यह है कि प्रज्ञा विद्यालय तो चलेगा यहीं, क्योंकि केन्द्र तो यही है,

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

शक्ति का उद्भव यहीं होगा । जेनरेटर तो यहीं लगेगा, लेकिन जगह-जगह प्रज्ञा पाठशालाओं की स्थापना हमें करनी है । इसके लिए आप सब जितने भी आदमी हैं, उनको एक काम सौंपते हैं । एक महीने की प्रज्ञा पाठशालायें तो यहीं होंगी, पर पन्द्रह दिन की पाठशाला क्षेत्रों में शक्तिपीठों पर चलेंगी । यहाँ बड़े साइज का प्रमाण पत्र उत्तीर्ण होने पर दिया जाता है, पर वहाँ छोटे साइज का दिया जायगा । परीक्षा ली जायेगी और वहाँ भी हम नेता बनायेंगे । आपको हम हिन्दुस्तान का ही नहीं, सारे विश्व का नेता बनाने वाले हैं । हिन्दुस्तान में हमने दस-दस गाँवों के खण्ड काटे हैं और उन्हें एक-एक व्यक्ति के सुपुर्द किया है और कहा है कि आप अपने यहाँ प्रज्ञा पाठशालायें चलायें । पिछले साल आप लोगों ने हमारे कहने पर किसी ने यज्ञ किये, किसी ने शक्तिपीठ बनाये, किसी ने क्या किया, हजारों काम बताये और लोगों ने किये हैं । इस वर्ष अब आप सब लोग यह विचार लेकर जायँ कि या तो हम प्रज्ञा पाठशाला चलायेंगे या चलवायेंगे । इस कार्य में कोई रुकावट नहीं आवेगी ।

आज गुरुपूर्णिमा के दिन से आप लोग एक काम यह करना कि हमेशा यह अनुभव करना कि आप देवता हैं । रीछ-बंदर का लिबास पहने बैठे हैं । कोई कुर्ता पहने बैठा है, कोई धोती पहने बैठा है, कोई चश्मा लागये बैठा है, तो कोई कुछ किये बैठा है, पर आप हैं वास्तव में देवता जो किसी खास काम के लिए खास उद्देश्य के लिए किसी खास निमंत्रण पर आप काम करने के लिए आये हैं । यह हुई बात नम्बर एक, दो जो आपको मुश्किल जान पड़ती है कि संसार में से बुराइयाँ कैसे दूर होंगी और अच्छाइयों की वृद्धि कैसे होगी ? इस संबंध में नोस्ट्राडोमस की राजनीतिक भविष्यवाणी तो हमने बता दी है और अब अपनी स्वयं की भविष्यवाणी बताते हैं कि हमने आपके बैरियों को-दुश्मनों को मार दिया है । वे मरे हुए रखे हैं और आपके लिए श्रेय जीवित है-सौभाग्य जीवित है । आपके लिए मुकुट जीवित है, बड़प्पन जीवित है, आप उस बड़प्पन को उठा लेना । आज आप से तीसरी बात यह कहनी थी कि नालंदा विश्वविद्यालय बनाने का हमने संकल्प लिया था कि एक लाख कार्यकर्ता हम देश को समाज को-विश्व को देंगे । इस काम में आप लोग हमारी मदद कीजिए और पंद्रह-पंद्रह दिन के लिए अपने यहाँ प्रज्ञा पाठशाला चलाने के लिए कोशिश कीजिये । हम वहाँ पढ़ाने के लिए तो नहीं आयेंगे, पर अपनी शक्ति देंगे, अपनी बुद्धि देंगे, अपनी भावना देंगे, अपना प्राण देंगे, अपना जीवट देंगे-सब चीज देंगे इसलिए जब आदमी जायेगा तो कुछ का कुछ होकर जायेगा ।

कितने काम हो गये-तीन । एक और काम कहता हूँ, उसे ध्यान से सुनना । हमने जो लड़ाई छेड़ी है वह दुष्प्रवृत्तियों के विरुद्ध छेड़ी है और सत्प्रवृत्तियों के संवर्धन की छेड़ी है । रामराज्य स्थापना की छेड़ी है और लंका दमन की छेड़ी है । यह काम बहुत बड़ा है और इसमें कुछ मुसीबतें भी आयेंगी, पर उन मुसीबतों को आप तक नहीं पहुँचने देंगे । उन मुसीबतों को अपने ऊपर लेते रहेंगे । राणा सांगा जो था, उसे जहाँ कहीं भी दीखता कि उसके साथियों पर गाज गिरी, उनके ऊपर तलवार गिरी, वह भागकर वहीं आ जाता था और उनके बदले का भाला, तलवार अपने शरीर पर झेल जाता था । उसने ढेरों आदमी इस तरह बचा दिये थे । जब उसके शरीर पर अस्सी घाव हो गये तब वह बेहोश हो गया और अपना काम बंद कर दिया । अस्सी घाव खाने तक तो कोई भी मुसीबत आपके ऊपर नहीं आवेगी । मुसीबत आयेगी तो हमारे ऊपर आयेगी । पहले भी आयी थी । श्री कृष्ण भगवान के पास आयी थी । रामचन्द्र जी पर भी मुसीबत आयी थी । सीताहरण हो गया था । किसी का क्या हो गया । लेकिन हमारे ऊपर एक और तरह की मुसीबत आयेगी जिसकी जानकारी आपको देना चाहता हूँ । वह मुसीबत इस तरह की है जैसी कि कालनेमि ने पैदा की थी । कालनेमि रावण का कुटुंबी था । स्कन्द पुराण में कथा आती है कि वह सबकी बुद्धि बिगाड़ देता था । बड़ा भाई कुंभकरण था । उसने योगाभ्यास किया, तप किया । वह चाहता था कि ६ महीने जगा करूँ और एक दिन सोया करूँ , लेकिन कालनेमि ने उसकी ऐसी बुद्धि बिगाड़ दी-भ्रष्ट कर दी कि कुंभकरण यह माँगने लगा कि ६ महीने सोया करूँ और एक दिन जगा करूँ । अगर वह ६ महीने जगा होता तो रावण का ढेर हो गया होता । इसी तरह मारीचि ने भी तप किया था । वह स्वर्ग चाहता था, पर कालनेमि ने उसकी ऐसी बुद्धि भ्रष्ट की और कहा कि तू यह मत माँग कि मैं स्वर्ग जाऊँ, वरन् यह माँग कि सोने का हिरन बन जाऊँ । कारण चमड़े वाले को तो मारता है एक आदमी पर सोने वाले को मारेंगे सौ आदमी । बेचारा छिपा-छिपा बैठा रहता था अपने वेष को बनाये । एक बार सोने का वेष बनाया, सो सीता जी के कहने पर रामचन्द्र जी ने उसे मार डाला ।

कालनेमि की कथा सुना रहा हूँ-स्कन्द पुराण की आपको । पूतना के कोई बालक बच्चा नहीं था । कालनेमि ने उससे कहा कि तेरे बच्चा नहीं होता है तो तू जादू का मंत्र लेकर जा और श्रीकृष्ण को दूध पिला दे । तेरा दूध पियेगा तो अपनी मम्मी को भूल जायेगा और तेरे पास रहने लगेगा । कालनेमि के बहकावे में आकर पूतना बेचारी गयी कि मेरे बेटा नहीं होता तो बेटा ले आऊँ और बेटा तो मिला नहीं, उलटे थुक्काफजीहत और हुई । सूपणखा से कालनेमि ने कहा-तू ब्याह करेगी ? उसने कहा हाँ । वह बोला-राक्षस तो काले-कलूटे होते हैं, माँस खाते हैं, शराब पीते हैं तुझे गाली भी देंगे और मारेंगे भी । हम तुझे ऐसा दूल्हा बताते

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

है कि उससे खूबसूरत तुझे दुनिया में कहीं नहीं मिलेगा । बस-तेरे जाने भर की देर है, तू गयी और ब्याह हुआ । दूल्हे का नाम राम है । उनके पिता के तीन ब्याह हुए थे, राम के भी दो ब्याह करा देंगे । सीता जी भी बनी रहेंगी और तू भी बनी रहेगी और राजगद्दी पर बैठेगी । तू गोरी होगी और तेरे बच्चे भी गोरे होंगे । सूपणखा कालनेमि के बहकाने पर रामचन्द्र जी के पास गयी और अपनी फजीहत कराकर लौटी । उसकी बुद्धि जो बिगाड़ दी थी कालनेमि ने । मंथर की भी बुद्धि बिगाड़ दी थी उसने-उससे कहा कि भरत के साथ तेरा ब्याह करा देंगे । ये जो कैकेयी है वह जायेगी मर और तू रानी बनेगी-राज्य करेगी उसको समझा करके भरत के लिए राज्य माँग ले । मंथरा की ऐसी बुद्धि बिगाड़ी कि उसने कैकेयी को पट्टी पढ़ा कर अपना काम बनाना चाहा । इस तरह दुनिया भर की अंडम-बंडम करके उसने मंथरा की भी मिट्टी पलीद की ।

कालनेमि की जो यह घटना है वह हमारे ऊपर भी लागू होती है । हमारे प्राणों से प्यारे बच्चे, हमारे हृदय के टुकड़ों को अलग करके-बहका करके इनको हमसे दूर करने की कोई कालनेमि कोशिश कर रहा है । तो गुरुजी आपका नुकसान हो जायगा ? नहीं, बेटा, हमारा क्या नुकसान हो जायगा । अभी ये लड़के गा रहे थे-'कोई साथ न दे तो अकेला चल ।' अकेले चल देंगे हम । अकेले वामन ने सारी जमीन नापी थी । अकेले परशुराम ने सारी पृथ्वी पर से इक्कीस बार भार उतारा था और अकेले हम भी कम नहीं हैं, लेकिन हमको अपने बच्चे प्यारे लगते हैं । बच्चों को कोई छीन न ले जाय, चुरा न ले जाय-अगर कोई घर में से बच्चों को उठा ले जाय तो माँ-बाप को दुख होता है । हमें भी दुख होता है जब कोई कालनेमि हमारे बच्चों को हमसे दूर कर देता है-बागी कर देता है । अपने ये जो चौबीस हजार बच्चे हैं उनकी हमें फिकर है कि कोई कालनेमि उनकी बुद्धि को भ्रष्ट न कर दे । कालनेमि से हमारा नुकसान है । उसकी हमें फिकर रहती है और कोई फिकर नहीं । न मिशन की फिकर रहती है और न मरने की-न काम की । मिशन बढ़ रहा है और वह बढ़ेगा ही । काम भी हो रहा है । उसकी फिकर थोड़े ही है । काम तो बढ़ ही रहा है । गंगा में बाढ़ तो आयेगी, रुकेगी नहीं । उसे कोई रोकने वाला नहीं है । मिशन के लिए हम नहीं कहते कि आप कोई सहायता कीजिए । कहते हैं तो इसलिए कि नफा होगा आपको-आप नेता हो जायेंगे । सरदार पटेल, नेहरू, जार्ज वाशिंगटन, अब्राहमलिंकन बन जायँगे । नेता बनना जिनको पसंद होवे आगे आयें, कदम से कदम और कंधे से कंधा मिलाकर चलें । साथ नहीं चलेंगे तो योग्य आदमी कैसे बनेंगे ?

आज और कुछ नहीं कहना है, केवल इतना ही कहना है कि जो हमारे बच्चे हैं, जिनको हमने पैदा किया है, पाला है, वे हमारी छाती से अलग न होने पावें । आप हमारी छाती से अलग हो जायेंगे तो हमें बहुत दुख होगा-कष्ट होगा । किसी और बात से हमें दुख नहीं होगा, पर जब ये छोटे-छोटे बच्चे-जिनसे हमने बड़ी-बड़ी उम्मीदें लगाकर रखी हैं, वे अगर बागी होते दीखेंगे-विरोधी होते हुए दीखेंगे तो हमें बेहद कष्ट होगा । कालनेमि से तो कहना ही क्या है वह तो भगवान ने ही बनाया है । अगर वह न होता तो लंका का सत्यानाश क्यों होता ? रावण सीताजी को नहीं चुराता जो कालनेमि की माया ही थी तो किसकी हिम्मत थी जो रावण सहित लंका का सफाया करता । जहाँ-कहीं भी कालनेमि गया वहीं हाहाकार पैदा किया । बस चौथी बात यही कहनी है कि हमारा कोई भी बच्चा हमारी छाती से अलग न होने पाये । कोई चोर, कोई बाबाजी इन्हें अपनी झोली में डालकर ले जायेगा तो हमको दुख होगा कि हमारा प्यारा बच्चा हमसे दूर हो गया । कितना कष्ट होगा आप नहीं समझते । आपने तो नेतागीरी देखी है । जनतापार्टी की फजीहत देखी है कि किस तरीके से फूट डाली जाती है और कैसे अलग किया जाता है । आपने तो यही किस्से देखे हैं-वे किस्से नहीं देखे हैं कि मिलजुलकर कैसे रहते हैं ? एक हो कर कैसे रहते हैं ?

चार बातें हो गयीं बेटा अच्छा ध्यान रखना ! हमने एक बात तो यह की है कि आप रीछ-वानर के रूप में देवता हैं । दूसरी यह कि तुम्हें श्रेय देने के लिए दुश्मनों को मारकर रख दिया है और तुम्हारे लिए राज सिंहासन बनाकर रख दिया है । तुम उसको ग्रहण करना । तीसरी बात यह कि तुम अपनी व्यक्तिगत कठिनाइयों के बारे में परेशान मत होना । तुम्हारी व्यक्तिगत कठिनाइयाँ कौन हल करेगा ? हमारा पुण्य-हमारा तप करेगा । हमारा पुण्य जो पिछले समय से आया है, वह हर एक के काम आयेगा और किसी के काम नहीं आयेगा । हमारा काम रुकने वाला नहीं है, वह बढ़ता ही जायेगा । बस आप तो अपने आपको कालनेमि से बचाये रखना । बहक जायेंगे तो हमें दुख होगा कि हमारा कैसा प्यारा बच्चा था । कितने प्यार और मोहब्बत से इसको हमने पाला था, और देखो आज यह कहाँ फिर रहा । चोरों के यहाँ फिर रहा है, भिखारियों के यहाँ फिर रहा है । कहाँ-कहाँ धक्के खा रहा है । ऐसा आप लोग मत करना । यह चार बातें कहनी थी आपसे वसंत पंचमी के बाद अब व्याख्यान दिया है । आज इतना ही बहुत है । इन्हीं बातों पर बार-बार विचार करना । आपके काम की देखभाल हम करेंगे । आप देवता हैं-ध्यान रखना आपको श्रेय लेना है-सिंहासन लेना है । आपको नेता बनना है और किसी झोली वाले बाबाजी से होशियार रहना है कि वह झोली में डालकर भाग खड़ा नहीं हो । बस आपसे विदा लेते हैं । ॐ शांति । 卐

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परम पूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी-

यज्ञों से सूक्ष्म वातावरण का संशोधन एवं जन मानस का परिष्कार (दिसम्बर १९८६)

परम पूज्य गुरुदेव का प्रस्तुत प्रवचन सूक्ष्मीकरण साधना के तुरंत पश्चात् का है जो दिसम्बर १९८६ में जन साधारण के समक्ष नव वर्ष की पूर्व वेला में दिया गया । इस अमृत धारा में उज्ज्वल भविष्य के लिए किये जाने वाले विशद गायत्री महायज्ञों की विस्तृत झाँकी प्रस्तुत की गयी है और सब को उसमें सहयोग देने के लिए कहा गया है । आइये इस अमृत धारा का अवगाहन करें ।

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ।

भाइयो ! लंका-दहन के पश्चात् राक्षस तो मारे गये, लेकिन वातावरण ज्यों का त्यों गंदा बना रहा । वातावरण में राक्षसपन बराबर बना हुआ था । फिर उसका निवारण कैसे हो ? वातावरण का मुकाबला कैसे किया जाये ? तो, रामचन्द्रजी ने दस अश्वमेध यज्ञ किये थे । दशाश्वमेध-घाट, कभी आप बनारस जायें तो वहाँ देखें कि वहाँ घाट पर भगवान् राम के किये हुये दस अश्वमेधों का चिह्न है कि नहीं और उन्हीं की वजह से उस घाट का नाम 'दशाश्वमेध घाट' रखा गया है ।

कौरवों के जमाने में कंस से लेकर के जरासंध तक-जो अत्याचार कर रहे थे-वो महाभारत में मारे तो सब गये, लेकिन वातावरण नहीं मारा गया । वातावरण वैसा ही गंदा बना रहा, और वैसे ही उसमें दुष्टता भरी रही । उसका शमन कैसे हो ? इसका एक ही उपाय भगवान् कृष्ण ने बताया 'इसके लिए यज्ञ करना चाहिए ।' 'राजसूय-यज्ञ' उसी समय हुआ था और उसका उद्देश्य था-वातावरण का संशोधन ।

वातावरण दिखायी नहीं पड़ता, पर उसका प्रभाव ऐसा बुरा होता है कि चारों ओर हाहाकार फैल जाता है । आज भी वातावरण वैसा ही दूषित है, जैसा कि दो घटनायें मैंने सुनायीं जो उस समय था : आज भी चारों ओर अशांति फैली हुयी है । सारे विश्व में वातावरण की वजह से दुर्घटनायें बराबर हो रही हैं । कहीं सूखा पड़ रहा है ? कहीं पानी बरस रहा है । कहीं बाढ़ आ रही है, कहीं बीमारियाँ फैल रही हैं । ये तो यहाँ है सारे संसार भर में देखिये, लड़ाई का वातावरण बन रहा है । जगह-जगह युद्ध चल रहे हैं, जगह-जगह द्वेष हो रहे हैं, जगह-जगह मारधाड़ हो रही है, मार-काट हो रही है और आतंकवाद फैला हुआ है । बहुत सी बातें हो रही हैं । ये कैसे हो रही हैं ? ये वातावरण के दूषित होने की वजह से हो रही हैं । इसकी प्रेरणा वातावरण से मिलती है । वातावरण से प्रकृति भी नाराज है, आज प्रकृति भी हमारा संग नहीं दे रही है । फसल ठीक तरह से पैदा नहीं हो रही । मनुष्यों में जो शांति और चैन होना चाहिए, वह भी नहीं मिल रहा है ।

क्या उपाय करना चाहिए वातावरण संशोधन करने के लिए ? वायुमंडल भी दूषित है । वातावरण ही नहीं, वायुमंडल भी । कैसे ? ये कारखाने चलते हैं, मिलें चलती हैं । इनका धुँआ निकलता है । इन धुओं की वजह से वायुमंडल भी दूषित हो रहा है । एटमबमों का जो परीक्षण चल रहा है, उसकी वजह से विकिरण फैल रहा है और विकरण की वजह से संताने खराब हो रही हैं । बुरे स्वभाव की हो रही हैं । अंधी-पंगी हो रही हैं । वातावरण का प्रभाव, वायुमंडल का प्रभाव, विकिरण का प्रभाव सारे संसारभर में छाया हुआ है । इसका क्या उपाय करना चाहिए ? ये पुस्तकीय उपायों से काम नहीं चल सकता । इसके लिए तीर-तलवार काम नहीं दे सकते । मनुष्य का सांसारिक पुरुषार्थ काम नहीं दे सकता । इसके लिए आध्यात्मिक पुरुषार्थ ही कारगर हो सकता है । आध्यात्मिक पुरुषार्थों में यज्ञ की बड़ी महत्ता बतायी गयी है । ऋषियों ने बड़ी महत्ता गायी है । यज्ञ को 'पिता' बताया गया है और गायत्री को 'माँ' बताया गया है । गायत्री और यज्ञ मिलकर के 'माता-पिता' होते हैं । गायत्री यज्ञों से वह शक्ति पैदा होती है, जो कि नया दृश्य पैदा कर सके और वातावरण में जो गंदगी भरी पड़ी है उसको झाड़-बुहार कर साफ कर सके । यह सफाई करने की शक्ति केवल यज्ञ में है । यज्ञ से आप सारे संसारभर की सेवा कर सकते हैं ।

एक संत थे । उन्होंने एक चवन्नी भेजी दूसरे संत के पास और यह कहा-कि "इस चवन्नी की कोई चीज लेकर तुम्हारी जमात में जितने आदमी हैं-सबको खाना खिला दीजिए !" उन्होंने चवन्नी का घी मँगाया और उसमें से ही हींग और लौंग मँगायी, और दाल में बघार लगा दिया । सभी खाने वालों ने खाया, और सबने कहा-"हमने खा लिया" फिर दूसरे संत की परीक्षा लेने के लिए उन्होंने एक पैसा भेजा और एक पैसा भेजकर कहा-कि आप "इससे सारे संसार भर को भोजन करा दीजिए ।" "सारे संसारभर को ।" थोड़े से आदमियों को तो करा सकते हैं, पर एक पैसे में सारे संसारभर को भोजन कैसे कराया जाये ?" उन्होंने कहा-"कराया जा सकता है ?" एक पैसे का घी और हवन सामग्री उन्होंने उठाकर लिया । उस जमाने की बात कह रहा हूँ, जबकि एक पैसे की बहुत कीमत थी । तो, उसको लिया और यज्ञ कर दिया । हवन करने से

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

सारे के सारे वायुमंडल में उसकी सुगंध फैल गयी और जिस किसी ने साँस ली, इन सबकी साँस में हवन की वह सूक्ष्म सामग्री गयी । उससे सारे संसार के मनुष्यों को ही नहीं-पशुओं को, पक्षियों को, प्राणियों को, सबको खाने को मिला । आहार मिला, वायु मिली । वायु जो मिली, उससे उनका परिपोषण हुआ । उनके शरीर के रोग निवारण हुये । उससे एक पैसा कितना काम आया । किसी को एक पैसा आप दान दे दें या खिला दें, तो उससे क्या हो सकता है ? लेकिन यज्ञ कर दें, तो यज्ञ हवा में शामिल होकर के इस तरीके से फैल जाता है जैसे-पानी में तेल डाल दें आप, तो वह तमाम जगह फैल जाता है । इसी प्रकार से यज्ञ में जो चीज हवन की जाती हैं उन सबका सारे वातावरण पर असर पड़ता है । सारे वायुमंडल पर असर पड़ता है ।

वायुमंडल का संशोधन करने के लिए, प्रकृति का संशोधन करने के लिए और सारे संसार में सुख शांति लाने के लिए, कलह-क्लेशों को दूर करने के लिए, यज्ञ सबसे बड़ी चीज है भारतीय धर्म में । इसके बारे में इतनी ज्यादा प्रशंसा की गयी है, इतना महत्व बताया गया है, इतने गुणगान किये गये हैं कि यज्ञ से बड़ा पुण्य और परोपकार कोई और नहीं हो सकता । आप लोग यज्ञ कर रहे हैं इससे वायुमंडल को संशोधित करने में बहुत मदद मिलेगी । वायमंडल का संशोधन होने से बीमारियों को दूर होने से लेकर के लड़ाई-झगड़े, क्लेश कुपात्र संतानें पैदा होने से लेकर के जो भी इस तरह की कठिनाइयाँ हैं, उनके समाधान होने में मदद मिलेगी । इसलिए यह करके जो आप बड़ा पुनीत-कार्य कर रहे हैं बड़ा पुण्य कार्य कर रहे हैं उसके लिए हम बधाई देते हैं ।

इस समय इसकी क्या आवश्यकता पड़ गयी ? इस समय एक और नयी बात पैदा हो गयी । इस समय युद्ध के संकट और दूसरे संकट तो प्रत्यक्ष हैं ही जो दिखायी पड़ रहे हैं । आतंकवाद का भय भी आपको सब तरफ फैला दिखायी पड़ रहा है, सारे विश्व में दिखायी पड़ रहा है । हिन्दुस्तान में ही नहीं, पंजाब में ही नहीं सारे विश्व में ही यह वातावरण दूषित हो रहा है । इस दूषित वातावरण का संशोधन करने के लिए, यज्ञ से बड़ी कोई और वस्तु नहीं है जिससे कि हम सूक्ष्म-जगत् का परिष्कार कर सकें । इनकी वजह से ही यज्ञों को पुनरावृत्ति के रूप में करना पड़ा ।

हमारे जीवन को पचहत्तर वर्ष हुये । ये पचहत्तर पन्ने की किताब है । इसमें सारे अध्यात्म के रहस्य हमने खोल-खोल के रखे हैं । आपने कोई किताब न पढ़ी हो जीवन में, तो हमारा जीवन पढ़ लीजिए और हमारे जीवन से आप देख लीजिए, कि अध्यात्म सार्थक कैसे हो सकता है ? इसकी हीरक-जयंती सब लोगों ने मिलकर मनायी है तो कोई नाराजगी नहीं हुयी । प्रसन्नता ही हुयी है । 'अखण्ड-ज्योति' परिवार के चौबीस लाख के करीब आदमी हैं । पत्रिकायें भी बहुत निकलती हैं । इन सबकी इच्छा थी कि हीरक-जयंती मनायी जाये । हीरक-जयंती में ही यह संकल्प किये गये थे कि एक-एक लाख के पाँच बड़े यज्ञ होंगे जो आपने पढ़े ही हैं । जो आप कार्यान्वित कर ही रहे हैं ।

यहाँ का नालंदा विश्वविद्यालय सबसे ज्यादा सफल रहा है । इसमें एक हजार आदमी के करीब शिक्षण प्राप्त करने के लिए हमेशा आते रहते हैं प्रत्येक महीने । जब तक एक लाख आदमियों को शिक्षित न कर लेंगे, तब तक चैन नहीं लेंगे । पहला संकल्प था । इसके अलावा था एक लाख जन्मदिन मनायेंगे, एक लाख पेड़ लगायेंगे और बहुत-सी बातें थीं । वे हमारी हीरक जयंती से संबंधित हैं । उसकी पूर्णाहुति इसी यज्ञ के साथ हो रही है जो आपके यहाँ होगा इस वर्ष । इस वर्ष उसकी भी पूर्णाहुति है । हमारे हीरक-जयंती की भी पूर्णाहुति है ।

दूसरी बात 'अखण्ड-ज्योति' की यह स्वर्ण जयंती है । 'अखण्ड-ज्योति' की वजह से हमने संगठन किया है । इतने विचार लोगों को दिये हैं । जो पत्रिकायें आजकल निकलती हैं उनमें दो लाख से ज्यादा 'अखण्ड-ज्योति' निकलती हैं । एक लाख से ज्यादा गुजराती की निकलती हैं । मराठी की पत्रिका निकलती हैं, उड़िया की निकलती हैं । हिन्दी का एक दूसरा पत्र निकलता है । सब मिलाकर के छः सात लाख पत्रिकायें निकलती हैं । इनके द्वारा हमारे विचारों ने दुनिया में एक बड़ा संगठन खड़ा कर दिया है । चौबीस लाख आदमियों का एक संगठन है । यह संगठन इसी वजह से बना है कि हमारे विचारों को, 'अखण्ड-ज्योति' के द्वारा हमारी वाणी को लोगों ने सुना और हमारी लेखनी को चखा । लेखनी और वाणी दोनों का सम्मिश्रण है, यह 'अखण्ड-ज्योति' । इसका पचासवाँ वर्ष शुरू होता है । उनचास वर्ष पूरे हो गये और अब इसी महीने से, इसी साल से पचासवाँ वर्ष प्रारंभ हुआ है । तो इसकी स्वर्ण-जयंती है । स्वर्ण-जयंती मनाने में यज्ञ और गायत्री ये ही दो तो हमारे माता-पिता रहे हैं । गायत्री का तो इसके साथ में जप होगा ही, आहुतियाँ तो दी ही जायेंगी, गायत्री-यज्ञ है ही । इससे हम अपने माता-पिता को, 'अखण्ड-ज्योति' को भी पूर्णाहुति के रूप में याद करते हैं और 'अखण्ड-ज्योति' का स्वर्ण जयंती वर्ष मनाते हैं ।

इसके सिवाय, तीसरा हमने जो कार्य किया, वह तीन वर्ष का सूक्ष्मीकरण-अनुष्ठान किया था । तीन वर्ष पूरे होते हैं । अधिकांश समय हमें एकांत में रहना पड़ा, मौन में रहे और क्या-क्या किया ? उन सब बातों को बताने की आवश्यकता नहीं है । इसके लिए आपको जनवरी की 'अखण्ड - ज्योति' पढ़नी चाहिए । जनवरी की 'अखण्ड-ज्योति' को हम 'कुण्डली - जागरण' अंक अथवा 'सावित्री-साधना' अंक के नाम से छाप रहे हैं । इस सावित्री-साधना का क्या विज्ञान है ? किस तरीके से संभव हुयी ? ये हम 'अखण्ड-ज्योति' के जनवरी के अंक में बतायेंगे और इक्कीसवीं सदी का फरवरी-अंक होगा । इक्कीसवीं सदी कैसे आयेगी ? नया युग कैसे आयेगा ? नये युग में क्या-क्या बातें होंगी ? यह सब बातें फरवरी के अंक में होंगी । 'अखण्ड-ज्योति' का जो स्वर्ण-जयंती वर्ष है, यह भी बड़ा शानदार वर्ष है । क्योंकि बहुत कम पत्रिकायें ऐसी हैं हिन्दुस्तान

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

में , जो पचास वर्ष से ज्यादा से चल रही हैं । इनकी संख्या उँगलियों पर गिनने लायक है ! कोई पत्रिका दो वर्ष निकलती है कोई, एक वर्ष निकलती है तो कोई, चार वर्ष निकलती है । प्राय: बंद हो जाती हैं । इतने लंबे समय तक लगातार, जिसका कभी विराम न हुआ हो, जिसके कभी साप्ताहिक अंक न निकले हों, जिसकी कभी नागा न हुयी हो, इस तरह की पत्रिका शायद ही कहीं कोई हो भारत वर्ष में । इसकी भी स्वर्ण जयंती मनायी जा रही है ।

आपका जो यज्ञ है, यह उस स्वर्ण-जयंती का भी यज्ञ है । हमारी ये तीन वर्ष की जो साधना हुयी है, वह भी सारे विश्व-कल्याण के लिए हुयी है । वातावरण-संशोधन के लिये हुयी है और जो संसार में पाप-अनाचार फैले हुये हैं उसके साथ संघर्ष के लिए, उसके साथ में लोहा लेने की शक्ति पैदा करने के लिए हुयी है । ये साधना बड़ी महत्वपूर्ण है । न केवल संसार के लिए है, बल्कि हमारा सारा कुटुंब जो है उसके लिए भी । अपने कुटुंब के लिए इतनी बड़ी सेवायें जो की हैं उसके लिए हमको अभी संतोष नहीं हो रहा है । अब ये हमारा मन है कि हमारे जो कुटुंबी हैं, गायत्री-परिवार के परिजन हैं इनकी कुछ और ज्यादा सेवा करें । ज्यादा सेवा करने के लिए पूँजी की आवश्यकता है । संपदा तो होनी ही चाहिए । हमारे पास कुछ साधन तो हों, जिससे हम सेवा करें । सेवा मुँह जबानी थोड़े ही हो जाती है । उसके लिए ये तीन वर्ष इसीलिए बीत गये हैं कि संसार का वातावरण संशोधित हो और अपने प्रज्ञा-परिवार के जितने भी व्यक्ति हैं उनकी सेवा करने का, उनकी सहायता करने का, उनके दु:खों को दूर करने का, उनकी इच्छाओं को पूरा करने के लिए जितनी सहायता हम कर सकते हैं उसके लायक शक्ति एकत्रित करने के लिए, उपार्जित करने के लिए भी ये यज्ञ हैं ।

इन यज्ञों के साथ यह तीन बातें साथ में जुड़ी हुयी हैं । वातावरण, वायुमंडल और विकरण संबंधी समस्यायें जो सारे संसारभर में फैली हुयी हैं उनके समाधान के लिए यह यज्ञ देखने में छोटासा मालूम पड़ेगा आपको । लेकिन सौकुंडी यज्ञ भी कम है इस समस्या को देखते हुये । कितनी बड़ी समस्या है और उस समस्या से संघर्ष करने के लिए कितना बड़ा काम करना चाहिए ? वह बड़ा काम हम यों करने जा रहे हैं-सौकुंडी के हिसाब से जो यज्ञ करने जा रहे हैं वे एक लाख कुंड में समाप्त होंगे । एक लाख कुण्डों तक चलेंगे । सौ को सौ से गुणा कर दें तो दस हजार होते हैं और फिर उसको दस से गुणा कर दें तो एक लाख होते हैं । तो जूनियर और सीनियर यज्ञों को मिलाकर के एक लाख यज्ञ करने का हमने संकल्प किया है । ये पूरा होकर के रहेगा । हमारा कोई संकल्प अधूरा नहीं रहा । गायत्री शक्ति पीठें जब बनायी थीं तो चौबीस का संकल्प छपा था । आपने पहली पुस्तक हमारी देखी होगी । उसमें चौबीस स्थान भी दिये थे कि चौबीसों स्थानों में गायत्री शक्तिपीठें बनाकर के रहेंगे । बस, वह संकल्प प्रकाशित हुआ और उसके बाद में चौबीस सौ बनीं । यानि सौ गुनी ज्यादा हो गयीं ! अभी हमारा एक लाख कुण्डों का संकल्प है । पहले ये सौ-सौ कुण्डी-यज्ञों को करने का संकल्प हुआ । फिर अभी और बढ़ा है । एक लाख कुण्डों का तो बड़ी आसानी से पूरा हो जायेगा । इसमें किसी तरह को-न पैसे की दिक्कत पड़ेगी और न कोई और तरह की दिक्कत पड़ेगी ।

केवल यज्ञ ही इसमें शामिल नहीं है । इसके साथ-साथ में राष्ट्रीय-एकता सम्मेलन भी जुड़े हुये हैं । आजकल छिन्न-भिन्न होता हुआ दिखायी पड़ता है-देश । भाषाओं के नाम पर, संपदाओं के नाम पर और जाति-बिरादरियों के नाम पर । हजारों चीजें ऐसी हैं जो हमारे बीच बिखराव पैदा करती हैं । इस बिखराव को एकता में बदलने के लिए, सबको एक सूत्र में बाँधने के लिए, सबको एक परिवार के रूप में गठित करने के लिए हमने ये 'राष्ट्रीय एकता सम्मेलन प्रत्येक यज्ञ के साथ जुड़े हुये रखे हैं । चाहे जूनियर यज्ञ हों, चाहे सीनियर यज्ञ हों । चाहे एककुण्डी-यज्ञ हो, चाहे पाँचकुंडी-यज्ञ हों । सबमें 'राष्ट्रीय-एकता सम्मेलन' का नाम दिया जायेगा और उस विषय में व्याख्यान और प्रवचन और उपस्थित जनता को उनका मार्गदर्शन करने का भी क्रम रहेगा ।

इस तरीके से इसमें दोहरा लाभ है । इन समस्त लाभों को देखते हुये जो खर्च इसमें आयेगा, वो तो नगण्य है । उसकी तो बहुत कम कीमत है । इसमें तो हमने और भी सब बातों की किफायत कर दी है । यज्ञ का सारे का सारा सामान यहीं से भेजा जा रहा है और वहाँ के लोगों को जहाँ ये आयोजन होंगे, वहाँ तो कम पैसे ही खर्च करने होंगे । इस तरीके से योजना क्रमबद्ध रूप से बनायी गयी है । इन सबसे सारे भारतवर्ष के कोने-कोने में यज्ञों की हवा बनाने का उद्देश्य है । इस हवा को बनाने में आप मदद दीजिए । इसमें आप सहयोग दीजिए । इसमें आप सम्मिलित होइये और यहाँ से हमारे प्रवचन सुनने के बाद में ये विचार लेकर के जाइये, कि "हमको अपने गाँव में, अपनी बस्ती में, अपने इलाके में भी इन यज्ञों को करना है । छोटे यज्ञ भी होंगे आगे जाकर के । छोटे हों चाहे बड़े हों, पर कहीं न कहीं इन यज्ञों की हवा फिर सारे भारतवर्ष में पैदा करनी है हमको । तो उसमें आपके सहयोग की जरूरत है, सहायता की जरूरत है । अगर आप सहायता करेंगे , सहयोग करेंगे तो आप खाली हाथ नहीं रहेंगे । यज्ञ भगवान् ने कहा है- हे, यज्ञ करने वालो ! तुम चम्मच भरके घी लाये । तुम मुट्ठी भर के सामग्री लाये । हमने तुम्हारी मुट्ठियों को खाली हाथ नहीं रहने दिया है । तुम्हारी मुट्ठियों में हजार गुनी कीमती चीजें भर दी हैं ।

इस यज्ञ में शामिल होने वालों का जो समय लगेगा, श्रम लगेगा, पैसा लगेगा-हम आपको यकीन दिलाते हैं कि उसका सौ गुना होकर के आप लोगों को घूम-फिरके मिलेगा । आप उससे ज्यादा लाभ उठायेंगे । शारीरिक लाभ भी उठायेंगे, मानसिक लाभ भी उठायेंगे । पारिवारिक लाभ उठायेंगे, आर्थिक लाभ उठायेंगे और, आध्यात्मिक लाभ भी उठायेंगे । सब तरह के लाभ आपको इन यज्ञों से होंगे । ऐसा हम आपको यकीन दिलाते हैं । इन शब्दों के साथ अपनी बात समाप्त करते हैं ।

ॐ शांति

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

(नवरात्रि सत्र की विदाई)

आश्विन मास अक्टूबर (दिनांक २९ अक्टूबर १९७७)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो, भाइयो, आज से पचपन वर्ष पूर्व हमारे जीवन में एक बहुत बड़ी घटना घटी । अपने गुरुदेव ने पूजा की कोठरी में प्रकाश के रूप में दर्शन दिये । मैंने उनका प्रकाश के रूप में दर्शन क्रिया शक्ल भी दिखायी पड़ी । उसी स्मृति में हमने अखण्ड दीपक जलाये, इसलिए कि वह प्रकाश मेरे जीवन में बना रहे जो पहले दिन गुरुदेव ने अपनी शक्ल और सूरत के रूप में मुझे दिखायी । कहीं भूल न जाये-कहीं पथ से दूर न हो जाये, इसलिए अखण्ड दीपक के रूप में उनकी स्थापना कर दी गयी । उस प्रकाश के साथ अपना जीवन भर सम्पर्क और सम्बन्ध बनाये रखने के लिए । गुरुदेव जब मिले तो घटना थोड़ी सी है-एक-आधे घंटे की । आधा घण्टे में वह घटना समाप्त हो गयी ।

तब मैं पन्द्रह वर्ष का बालक था, पूजा की कोठरी में बैठा हुआ जप और ध्यान के कार्य में लगा था । यकायक एक प्रकाश कोठरी में घूमता हुआ दिखाई पड़ा । उस प्रकाश के भीतर एक मनुष्य की आकृति दिखायी पड़ी । मैं तो डर गया कि क्या बात है ? भूत-प्रेत है क्या कोई ? काँपते देखकर उस प्रकाश में बैठे हुए मनुष्य ने आवाज दी-बच्चे डरने की जरूरत नहीं है । तुम किसी विशेष काम के लिए आये हो । आँखें बन्द करो, आँखें बन्द की मैंने और तीन जन्मों का दृश्य फिल्म की तरीके से दिखायी पड़ा । मैं कौन हूँ ? और कब-कब जन्म लिया और यह शक्ल जो मुझे गुरुदेव के रूप में दिखायी पड़ती है, कब-कब मेरे साथ नृत्य करती रही ? बस, इतनी घटना घटित हुई और मेरे जीवन का कायाकल्प हो गया । मैंने उनके चरणों पर मस्तक झुकाया और कहा- "आप मुझे लम्बे समय से राह बताते रहे हैं, अब इस जीवन की भी राह बताइये । उन्होंने एक राह बतायी -चौबीस साल तक चौबीस गायत्री के महापुरश्चरण करने के लिए आज्ञा दी और कहा-"तुझे लोहे का-स्टील का बनना पड़ेगा । बड़े काम करने के लिए मजबूती की जरूरत है । मजबूत व्यक्तित्व न होगा तो बड़े काम नहीं कर सकते । हम चाहते हैं कि भगवान की धारायें तेरे पास आयें । भगवान की धाराओं को अपने भीतर धारण करने के लिए कमजोर आदमी समर्थ नहीं हो सकते । कमजोर आदमी फट जायेगा-मर जायेगा । देवता की शक्ति जब आती है तो आदमी को पागल बना देती है । उसकी सामर्थ्य को धारण करने के लिए सामर्थता फरमानी चाहिए । भगवान की शक्ति धारायें हम तेरे ऊपर डालना चाहते हैं, तेरे माध्यम से कुछ बड़े काम कराना चाहते हैं ।" तो मैंने कहा-"कराइये ।" उनने कहा-"ऐसे नहीं" हो सकता । कच्चे आदमी-कमजोर आदमी जरा सा नाम लेते ही पागल हो जाते हैं । जरा सी सम्पदा मिलते ही विक्षिप्त और उन्मत्त हो जाते हैं । जाने क्या से क्या करने लगते हैं ?"

मजबूत चीजों को ग्रहण करने के लिए मजबूत चीजें चाहिए । एटामिक भट्टी बनायी जाती है तो उसके चारों ओर घेरे इतने मजबूत बनाये जाते हैं कि उसके भीतर से रेडिएशन निकलकर कहीं आसपास के इलाके में न फैल जाय । ये घेरे बहुत मजबूत बनाये जाते हैं । इसी तरह आध्यात्मिक शक्तियों को भीतर से जिस किसी आदमी को अवतरित करने की इच्छा हो, हनुमान जी को-शंकर जी को भीतर अवतरित करने की इच्छा हो तो उसे अपने को इस लायक बनाना पड़ेगा कि शंकरजी आयें तो वहाँ निवास कर सकें । कमजोर आदमी-स्वार्थी, चालाक, विलासी आदमी उसको धारण नहीं कर सकते । यदि आती भी हैं तो या तो टक्कर मारकर वापस चली जाती हैं या फट जाती हैं । फट जाने से बहुत से पागल हो जाते हैं । दिमाग खराब हो जाता है, जैसे रावण का हो गया था, कंस का हो गया था, भस्मासुर का हो गया था । दैवी शक्तियों को प्राप्त कर लेना सुगम है, पर उनको पचा डालना बड़ा मुश्किल है । वे हजम नहीं होती । पारा हजम नहीं होता । आध्यात्मिक शक्तियाँ हजम नहीं होती । हजम करने का वक्त आता है तो आदमी पागल हो जाता है-लोकैषणा, पुत्रैषणा और वित्तैषणा के आधार पर ।

आध्यात्मिकता जब आती है तो भीतर जो कुछ भी है, उसको पहले बाहर निकालती है । दुर्वासा ऋषि के भीतर आध्यात्मिकता आयी थी तो क्रोध काबू से बाहर हो गया था । जो कुछ भी हमारे भीतर चीजें हैं, वे बढ़ेंगी । हमारे अन्दर कामुकता है तो कामुकता बढ़ जायगी । आप नवरात्रि का अनुष्ठान कीजिए, यदि आपके पास संयम के विचार नहीं हैं तो निश्चित रूप से कामुकता बढ़ेगी । क्रोध आपके भीतर भरा है और उसका परिशोधन नहीं किया गया है और आध्यात्मिक शक्तियों का अनुष्ठान आपने किया है तो मैं बताता हूँ कि क्रोध आपके भीतर बढ़ जायेगा । जो भी चीज आपके भीतर है-ज्ञान आपके भीतर है तो ज्ञान बढ़ जायेगा । भक्ति है तो भक्ति बढ़ जायगी । अनुष्ठान का काम शक्ति उत्पन्न करना है । यह शक्ति किस में खर्च होगी ? जो कुछ भी है, उसी में खर्च होगी । प्राप्त करना कोई मुश्किल नहीं है, तप करना कठिन है । गुरुदेव ने मुझे सामर्थ्यवान और शक्तिशाली बनने के लिए, तपस्वी होने के लिए आज्ञा दी और मैं चौबीस साल तक तप करता रहा । जिह्वा के तप के बारे में आपको मालूम है न कि चौबीस साल तक जौ की रोटी और छाछ के ऊपर निकाले हैं और बाकी तप की बातें कैसे बतायें

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

कि कैसे रहे, किसी ने देखा नहीं ? हम बराबर तप करते रहे और अपने आपको मजबूत बनाते रहे चौबीस साल तक । गुरुदेव की कृपा रही और लोहा , पारस को छूकर सोना हो गया ।

मेरे गुरुदेव ने मुझे दो चीजें दीं पहले दिन, जिनको पाकर मैं धन्य हो गया । उन दो चीजों से मेरी जिन्दगी पार हो गयी, जो पहले दिन उन्होंने दीं । तीसरी चीज की फिर मुझे कोई जरूरत ही नहीं पड़ी, वही वरदान काफी था । क्या थीं वे दो चीजें ? एक तो उन्होंने मेरी कुण्डलिनी शक्ति जगा दी पहले दिन और दूसरा उन्होंने मेरे ऊपर शक्तिपात कर दिया । गुरुकृपा का यह अनुग्रह रहा मेरे ऊपर । इसी तरह का कहीं आपको भी लाभ मिल सके तो आप भी सौभाग्यवान हो जायें । मैं भी सौभाग्यवान हूँ । मैं अपने गुरु को पाकर धन्य हो गया । हम दोनों एक दूसरे को पाकर धन्य हो गये । उन्होंने मेरी शक्ति जगा दी, मेरे ऊपर शक्तिपात कर दिया ।

शक्तिपात क्या होता है ? कुण्डलिनी क्या होती है ? आपको मुझसे यह बातें पूछनी चाहिए । आपकी जानकारियाँ यहाँ बच्चों जैसी है । बच्चों की जानकारियाँ बहुत छोटी होती हैं, बहुत कमजोर होती हैं । कुण्डलिनी के बारे में आप लोगों का ख्याल है कि कोई मूलाधार चक्र है जहाँ कोई साँप टाइप की चीज सोती सो रहती है और जब जगती है तो पीठ में से रीढ़ की हड्डी में से निकल कर सिर पर जा बैठती है और आदमी को चमत्कार दिखाती है-तमाशे दिखाती है । आपके हिसाब से ये कोई शारीरिक रियाज है फिजिकल एक्शन है । इसी तरह शक्तिपात के बारे में आप यह समझते हैं न कि शक्तिपात जब होता है, जब गुरु सिर पर हाथ रखता है तो आदमी के भीतर करेंट मारता है, झटका मारता है, बिजली जैसी कोई चीज बढ़ जाती है । ताकत बढ़ जाती है । बेटे, ये तो मैस्मेरिज्म है-हिप्नोटिज्म है और इस तरह से मैं सैकड़ों ख्वाब आपको दिखा सकता हूँ; पर इससे कुछ होने वाला नहीं है । मैं आपको ऊँचे स्तर की कुण्डलिनी बताना चाहता हूँ जिसका सम्बन्ध चेतना से है । चेतना में कोई हलचल नहीं होती और चेतना कोई करेन्ट नहीं मारता । चेतना जो हमारा प्राण है, जीवात्मा है-इसमें से न कोई साँप निकलता है, न कोई बिच्छू निकलता है । ये सारी बातें 'मेंटर' से सम्बन्धित हैं 'फिजिकल' है और शरीर से सम्बन्ध रखती हैं । आत्मा से इन बातों का कोई ताल्लुक नहीं है ।

बेटे जो लोग कुण्डलिनी जगा देने और दिखा देने की बात कहते हैं, मैं उन्हें 'बाजीगर' कहता हूँ और देखने वाले को 'बच्चा' कहता हूँ-बचकाना कहता हूँ । प्रकाश दिखा दीजिये और हनुमान दिखा दीजिए, बेटे, आत्मा में आँखें नहीं होती । आँखें हमारे स्थूल शरीर में है, लेकिन हमारी आत्मा में कोई आँख नहीं है । आत्मा में केवल संवेदना है । तो दो तरीके से मेरी कुण्डलिनी जगी । 'कुण्डलिनी ' किसे कहते हैं ? कुण्डलिनी-विवेकशीलता को कहते हैं-दूरदर्शिता को कहते हैं । विवेकशीलता मेरी उसी दिन जग गयी और मैंने देखा कि मेरी समझ और दुनिया की समझ में जमीन आसमान का अंतर है । दुनिया की अपनी समझ और अकल है और वह उसी के हिसाब से हमको प्रभावित करती तथा अपने रास्ते पर चलाना चाहती है । संस्कारों का, कुटुम्ब का दबाव और सारे समाज का दबाव एक ओर और मेरी कुण्डलिनी शक्ति एक ओर अर्थात् विवेकशीलता एक ओर मेरी विवेकशीलता जगी और उसने कहा 'हम और हमारा भगवान-हमारी आत्मा और परमात्मा एक ओर-ये दोनों मिलकर जो फैसला करेंगे, वह सबसे बड़ा है । यह दुनिया तो पागलों की है, जाहिलों की है, दुष्टों की है, इनमें से एक का भी कहना नहीं मानेंगे । हम अपनी मर्जी से चलेंगे जो बात हमको ठीक मालूम पड़ेगी, हमारा भगवान जो कहेगा, हम वही करेंगे और किसी का नहीं मानेंगे । हम अकेले फैसला करेंगे, हम अकेले चलेंगे ।

कुण्डलिनी शक्ति का थोड़ा सा परिचय रवीन्द्रनाथ टैगोर ने दिया है । उन्होंने कहा-"एकला चलोरे" अकेला चलो, फैसला जो करना है, अकेले करो । सूर्य अकेला चलता है, चन्द्रमा अकेला चलता है, पृथ्वी अकेली चलती है । जब से यह कुण्डलिनी शक्ति हमारे भीतर जगी, लोगों की सलाह-मशविरा को उठाकर एक ओर फेंक दिया और कहा-आपकी राय आपको मुबारक हो । इस तरह की कुण्डलिनी शक्ति जिनकी जगी है, उसको, मरने के बाद मैं नहीं कहता, उसे इसी जीवन में महानतायें मिली हैं । समर्थ गुरु रामदास के ब्याह की तैयारी हो चुकी थी, दूल्हा मंडप में बैठा था । पंडित चिल्लाया-लड़की-लड़का सावधान ! समर्थ गुरु रामदास ने सोचा-जरूर कोई चक्कर है । दाल में कुछ न कुछ काला है अन्यथा पंडित क्यों कहता सावधान । उन्होंने आँखें बन्द की तो सारा माजरा समझ में आ गया । उनके भगवान ने कहा-'यह जिन्दगी का मोड़ है-इधर चल या उधर चल '। समर्थ ने कहा-'मैं तो आपके साथ चलूँगा ।' बस, एक ही क्षण में उनकी कुण्डलिनी जग उठी और मुकुट उतार फेंका-कंगन तोड़कर फेंक दिया और मंडप से भाग खड़े हुए । समर्थ गुरु रामदास ने वहाँ से निकलने के बाद क्या किया ? आप कभी भी महाराष्ट्र जायें तो वहाँ एक ही संत का नाम सर्वत्र पायेंगे-जिसका नाम है -समर्थ गुरु रामदास उन्होंने शिवाजी को बनाया और हिन्दुस्तान को आजादी दिलाई ।

ऐसी शानदार जिन्दगी और किसी की हो सकती है क्या ? हाँ एक और है और वह हैं शंकराचार्य । उनकी मम्मी रोज कहती थी कि बेटे तेरा ब्याह करूँगी । शंकराचार्य को एक सपना दिखाई पड़ा कि मैं शंकर का दूसरा रूप हूँ । मैं चाहूँ तो दुनिया का क्या-क्या कर सकता हूँ । मेरे पास ज्ञान की अगाध शक्तियाँ हैं । बस उनने अपने भगवान से पूछा-मुझे क्या करना चाहिए । आपका कहना मानना चाहिए या मम्मी का ? भगवान ने कहा-हमारा । शंकराचार्य ने निश्चय कर लिया और क्या से क्या बन गये । कितनी शानदार जिन्दगी उनको व्यतीत हुई । बेटे, यह उनकी कुण्डलिनी शक्ति थी जिसने उनके विवेक को जगा दिया ।

कुण्डलिनी शक्ति और किसी ने जगाई थी क्या ? हाँ बेटे, एक और ने जगा दी थी । गोस्वामी तुलसी दास ने मीराबाई की कुण्डलिनी जगाई थी । दोनों समकालीन थे । मीराबाई ने तुलसीदास को एक पत्र लिखा था कि हमारे खानदान वाले हमारे बड़े शुभ चिन्तक हैं, लेकिन असल में यही सबसे ज्यादा हमारे लिए

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

बाधक हैं । वे हमको सत्संग और भजन नहीं करने देते, न भगवान के मार्ग पर चलने देते हैं । मीरा के पत्र के जबाव में तुलसीदास ने एक कविता लिखी जो बहुत ही मार्मिक है । यह कविता तो मुझे बहुत ही प्रिय है । यदि अन्तरात्मा से पढ़ें तो आपका भी वैसा ही कायाकल्प हो सकता है जैसा कि मीरा का हो गया था । कविता इस प्रकार है :- *"जाके प्रिय न राम बैदेही । तजिये ताहि कोटि बैरी सम, यद्यपि परम सनेही ।"*

सारा समाज हमारा खानदान ही है और हमारे भीतर वाले ? चोर ? इनका वर्णन करते हुए तुलसी दास ने कहा है कि हमारे मित्र-हमारे सहायक-हमारे सम्बन्धी जो हमारे भीतर कामना के रूप में, लोभ के रूप में, इसके रूप मे उसके रूप में विद्यमान है-बड़े-बड़े प्रलोभन दिखाते हैं और हमको पकड़े रखते हैं । ये भी हमारे भीतर के हैं । समाज के-बाहर के भी हैं । सारे के सारे लोगों की समझ एक ओर, मेरी एक ओर । बस यही मेरी कुण्डलिनी है । छोटी सी मछली पानी के बहाव को चीरती हुई उल्टी दिशा में चली जाती है, पर सीधी दिशा में हाथी तक बह जाते हैं । बड़े-बड़े समझदार-अकलमन्द तक बह जाते हैं, लेकिन जिनके भीतर का विवेक जागृत होता है, वे अपने रास्ते पर-भगवान के रास्ते पर-हम और हमारा भगवान-दो के हिसाब से निश्चयपूर्वक आगे बढ़ते चले जाते हैं । मेरी कुण्डलिनी जगी थी और उसने मुझे वहाँ से-छोटे से देहात में जहाँ घर में खेती-बाड़ी का धन्धा होता था-बाप-दादे पंडिताई का धन्धा करते थे, बढ़ते हुए मैं कहाँ से कहाँ चला आया । कुण्डलिनी ने मुझे कहाँ से कहाँ लाकर बिठा दिया । अब मैं उस गाँव का आदमी नहीं हूँ , सारे विश्व का आदमी हूँ । केवल हिन्दुस्तान का नहीं, सारे विश्व का आदमी हूँ और अभी बहुत बढ़ रहा हूँ । अभी दस-पाँच वर्ष मेरी जिन्दगी के हैं और मैं बढ़ता ही चला जाऊँगा । कुण्डलिनी ने मेरा दायरा कितना अधिक बढ़ा दिया, मेरा व्यक्तित्व बढ़ा दिया, चिन्तन बढ़ा दिया, मेरी आत्मा बढ़ादी, आस्थायें बढ़ा दीं, आत्मज्ञान बढ़ा दिया, मेरी सामर्थ्य बढ़ा दी । हमारा मन था कि आप लोगों को बुलाकर आपकी भी ऐसी ही कुण्डलिनी जगा पाऊँ तो कितना अच्छा । मालूम नहीं मेरे सौभाग्य में वैसा कुछ सुयोग है कि नहीं जैसा कि मेरे गुरुजी में था ।

मेरे गुरु ने एक और चीज दी थी । क्या दी थी ? शक्तिपात किया था । शक्तिपात किसे कहते हैं ? शक्तिपात -बेटे, उसे कहते हैं जिसमें उच्चकोटि के विचारों को कार्य रूप में परिणित करने के लिए जिस ताकत की जरूरत पड़ती है, जिस बहादुरी और हिम्मत की जरूरत पड़ती है, उसका नाम है शक्तिपात । हर चीज के लिए-हर विचार को आगे बढ़ाने के लिए शक्ति चाहिए । मोटरकार आपके पास है, लेकिन उसे चलाने के लिए पेट्रोल चाहिए । पेट्रोल नहीं होगा तो कार चलेगी किससे ? कुण्डलिनी से विवेक आ गया, विचार आ गया, निश्चय करने का हौसला आ गया कि कौनसी बात उचित है और कौन सी अनुचित है । लेकिन जो बात उचित है, उसको करने के लिए ताकत चाहिए और जो अनुचित है उसको छोड़ने के लिए भी ताकत चाहिए । जो अनुचित है वह छूटता नहीं । नशे की आदत छूटती नहीं, शराब की आदत छूटती नहीं, दुराचार की आदत छूटती नहीं, कुसंस्कार छूटते नहीं । प्राण शक्ति है नहीं जिससे कि हम अपने कुसंस्कारों को चैलेंज कर सकें कि आप हटिये और आप हमें छू नहीं सकते । हमें अपनी विकृतियों से लोहा लेने के लिए ताकत चाहिए । और किसके लिए शक्ति चाहिए ? श्रेष्ठ काम करने के लिए शक्ति चाहिए । किसी भी श्रेष्ठ काम के लिए फैसला कर लेना ही काफी नहीं है । किताब पढ़ लेना, विचार सुन लेना काफी नहीं है । जरूरत इस बात की है कि हमारे भीतर से एक साहस-एक हिम्मत उभरे जो श्रेष्ठ कामों के लिए चल पड़े और दुष्प्रवृत्तियों से लड़ पड़े । श्रेष्ठता के मार्ग पर चलने के लिए इतनी बहादुरी की जरूरत है जितनी कि सिपाहियों को भी नहीं पड़ती । सिपाहियों को कम ताकत की जरूरत है, लेकिन अपने मानसिक चोरों के विरुद्ध लड़ने के लिए बहुत बड़ी ताकत चाहिए । हम जिस चक्रव्यूह में फँसे हुए हैं उसमें से निकलने के लिए बड़ी बहादुरी की जरूरत है-हिम्मत की जरूरत है ।

मेरे गुरुदेव ने मुझे यही हिम्मत दी और मेरा शक्तिपात हो गया । शक्तिपात होने के पश्चात मैं बढ़ता हुआ चला आया । उन दो चीजों के आधार पर मैं आगे बढ़ा । हमें हमेशा भगवान ने ही आगे बढ़ाया । श्रद्धा और विश्वास के रूप में भगवान होते हैं । भगवान ने मुझे कन्धे पर बिठाकर और अंगुली पकड़कर चलाया है । भगवान क्या है ? वह एक कायदा है-कानून है-एक नियम है । खुशामद से वह बिल्कुल दूर है । उसके यहाँ न पूजा करने वालों के लिए रियायत है और पूजा न करने वालों के लिए शिकायत भी नहीं है । भगवान तो कायदे को देखता है । बिजली का उपयोग आप कायदे से करेंगे तो वह बड़ी दयालु है और यदि बेकायदे करेंगे तब बड़ी दुष्ट भी है, जान भी ले सकती है । जिन चीजों ने हमको उठाया, उसे हम कुण्डलिनी जागरण कहते हैं, शक्तिपात कहते हैं । हमारे गुरु का एहसान है हमारे ऊपर जो उन्होंने हमारी दबी हुई क्षमता को जगा दिया । बीज के भीतर वृक्ष का छोटा सा हिस्सा बैठा रहता है । खाद, पानी और जमीन-तीनों मिलकर उस बीज की क्षमता को जगाते हैं उभारते हैं । हमारे भीतर जो महानतायें हैं -उनको उठा देना-यही है संतों का काम, यही है भगवान का काम, यही है देवी-देवताओं का काम । जब वे किसी पर दया करते हैं तो उसके भीतर की सोयी हुई क्षमता को उभार देते हैं । देखिये मेरे जीवन में यही हुआ । मैं भी यही चाहता था कि आपको बुलाकर इसी तरीके से आपकी सेवा करूँ जैसे मेरे गुरु ने की ।

तो गुरु जी आप करिये न सेवा । नहीं बेटे, मैं अकेले नहीं कर सकता । अगर सीप अपना मुँह बन्द करके रखे तो दुनिया में ऐसी कोई स्वाति की बूँद नहीं जो उसके भीतर मोती पैदा कर सके । स्वाति बूँदों के अन्दर बड़ी ताकत होती है, लेकिन वह ताकत वहाँ खत्म हो जाती है जहाँ सीपी ने अपना मुँह बन्द करके रखा है । यदि हम अपने कमरे के किवाड़ों को खिड़कियों को बन्द कर दें तो दुनिया का कोई सूरज हमारे कमरे में प्रकाश नहीं फैला सकता । इसी तरह हमारी मर्जी के बिना हमारे जीवन में कोई भी प्रवेश नहीं कर सकता । इसमें भगवान

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

भी शामिल है संत भी शामिल हैं । भगवान अपना तो है, पर हमारी मर्जी के बिना वह हमारी जिन्दगी में प्रवेश नहीं कर सकता । इस सम्बन्ध में हम अपने गुरु से बहस करते रहते हैं । हम अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए उनसे कहते हैं कि आपका अनुग्रह है-आपकी कृपा है जो आपने हमें धन्य कर दिया । वे भी कभी-कभी ठीक इन्हीं शब्दों को दोहराते हैं । वे कहते हैं कि अगर तेरे अन्दर पकड़ने का-ग्रहण करने का माद्दा न रहा होता, प्रकट करने का माद्दा न रहा होता तो इतने लाखों लोग दुनिया में हैं, उनमें से हर किसी को हम बना सकते थे, पर किसी को नहीं बना सके । तेरे अन्दर वह चीज थी जो तैने पकड़ ली और हमारी कृपा को सार्थक बना दिया । हम दोनों अपनी नम्रता प्रकट करते रहते हैं , अगर भगवान किसी पर अनुग्रह करेंगे, संत कृपा करेंगे, तो उस पर कृपा करेंगे जिसने अपने आपको इस लायक बना रखा है ।

मैंने यह कोशिश की कि आप किसी तरह अपने आपको इस लायक बना सकें तो मजा आ जाये । भगवान से माँगने की अपेक्षा आप अपने आप से माँगना शुरु करें तो बहुत अच्छा । आप मेरी बात मानें तो देने वालों की तलाश मत करें । देने वाले बहुत हैं, पर असल में लेने वाले नहीं हैं । पात्रता का अभाव है । महाराज जी कोई ऐसा संत दिखा दीजिए जो हमको वरदान दे सके । बेटे, महात्मा के कितने वरदान दिला दूँ ? मैं तो तेरे हाथ में मिट्टी का ढेला दे दूँगा, वही तेरे लिए वरदान बन जायगा । मीरा को गिरधर गोपाल का एक मिट्टी का ढेला वरदान दे गया था और एकलव्य को मिट्टी का एक ढेला द्रोणाचार्य बनकर आ गया था । तेरे भीतर जो क्षमता है, जहाँ-कहीं भी भीतर की वह रोशनी 'रिफ्लेक्ट' होगी वहीं चीज चमत्कारी हो जायगी । अपने आप को देख । यदि आप अपने आपको सुधार सकें तो देने वाली शक्तियाँ आपको असीम देने के लिए तैयार हैं । आप यह ख्याल मत कीजिये कि हम छोटे हैं, हमारी कोई और सहायता करेगा । आप छोटी हैसियत के हैं तो हम आपको मदद दिलायेंगे, लेकिन आप कायदे पर चलिए, कानून पर चलिए, आप किस काम के लिए माँगना चाहते हैं, बताइये हम गवाह पेश करेंगे कि कम हैसियत के-कम योग्यता के होते हुए भी दैवी शक्तियाँ आपको मदद करने के लिए तैयार हैं । दैवी शक्तियों ने किन -किनकी सहायता की चलिए गवाही पेश करता हूँ ।

छै फुट लम्बे चौड़े मुखारा से मैंने गंगा जी को गोमुख से निकलते देखा है । गोमुख में जो धारा पतली दिखाई पड़ती है वही आगे चलकर बंगाल में मीलों चौड़ी हो जाती है । गंगा माता घर में छोटी थी, व्यक्तित्व छोटा था, लेकिन रास्ते में हजारों नद-नदियों ने मदद की और उनका विस्तार होता गया । यह मदद क्यों दी, क्योंकि नीयत साफ थी । यही स्थिति नर्मदा और यमुना की है । नर्मदा अमरकंटक में एक छोटे से गड्ढे से निकलती है । सभी तालाब सूख गये, क्योंकि उन्होंने अपने दायरे को सीमित कर के रखा, लेकिन नर्मदा ने कहा था कि हम बहेंगे, कष्ट उठायेंगे, निरन्तर श्रम करेंगे, लोकहित के लिए । चलिए अब मैं मनुष्य का उदाहरण देता हूँ । राजस्थान के एक स्वामी जी हुए है । नाम था केशवानन्द जिसने वास्तव में संत की अभिव्यक्ति पेश की । उन्होंने गाँव-गाँव में स्कूल खुलवाये । बाद में वे हिन्दुस्तान की पार्लियामेण्ट में भी कई साल तक मेम्बर रहे । इसी तरह छोटी सी हैसियत से पैदा हुआ राजस्थान का एक छोटा सा प्राइमरी स्कूल का मास्टर नौकरी छोड़कर चला गया और गाँव में छप्पर के नीचे कन्या पाठशाला प्रारम्भ कर दी । उसके पश्चात् क्या हुआ ? देखिये उसकी नीयत, भगवान भी एक ही चीज देखता है और वह है नीयत । भगवान ने उस मास्टर की नीयत को देखा और उसके हाथ का चलाया हुआ विद्यालय आज हिन्दुस्तान के कन्या महाविद्यालयों में अग्रणी माना जाता है । बाबा साहब आम्टे, नागपुर के एक बहुत छोटे वकील जो गुजारे लायक पैसा कमा लेते थे, वकालत छोड़ दी और कोढ़ियों को लेकर एक आश्रम स्थापित किया । उनका आश्रम अब एक विश्व विद्यालय बन गया है जहाँ अन्धों के लिए कोढ़ियों के लिए काम करने का प्रशिक्षण मिलता है । जार्ज वाशिंगटन, जिसका बाप एक लकड़हारा था । उसकी माँ उसे एक झोपड़ी में बन्दकर जाती थी और कहती थी कि यदि मैं तुझे खुला हुआ छोड़ जाऊँगी तो भेड़िये खा जायेंगे । जब तू बड़ा हो जायेगा, तब तू लकड़ियाँ काटना, भेड़ियों का मुकाबला करना ।

कहने का तात्पर्य यह है कि जब आदमी की परिस्थितियाँ, आदमी की अक्ल कमजोर हो तो भी क्या उसकी उन्नति के लिए गुंजायश है । जार्ज वाशिंगटन आपको गवाही देंगे और कहेंगे-"हमारे पास योग्यता, साधन, बुद्धि कौशल कुछ भी नहीं था, सिर्फ एक ही साधन था-वह था हमारा लक्ष्य ।" लक्ष्य ऊँचा था, आदर्श ऊँचे थे, इसलिए सारी दुनिया ने हमारी सहायता की । सहायता इस तरीके से बरसी जैसे अमृत वर्षा, स्नेह वर्षा, शक्ति वर्षा । ईमान साफ होना चाहिए ।" यदि आप अपना व्यक्तित्व, अपना अन्तरंग इतना ऊँचा उठा सकते हैं जितना उस बालक का हो सकता है तो बाकी कमी आप हमारे ऊपर छोड़ सकते हैं । किसी देवता की कृपा हमको मिलेगी बेटे, मैं यह जिम्मेदारी उठा सकता हूँ । देवताओं से मेरी बड़ी जान-पहचान है । मेरा गुरु भी बड़ा समर्थ है । मैं गुरु की हिमायत कर लूँगा, गुरु का पल्ला पकड़ लूँगा । उनसे कहूँगा कि जो आपने मुझे दिया है उसे छीन लीजिए और इसको दे दीजिए । आप सन्तों की तलाश मत कीजिए । देवताओं का मंत्र भी आपको सिद्ध नहीं करना पड़ेगा । मैं देवता के हाथ जोड़ूँगा और कहूँगा कि मेरे पास कोई पुण्य हो तो मेरी शक्ति इसे दे दीजिए ।

आपको इसके लिए जप भी नहीं करना पड़ेगा । आपके बदले मैं जप कर लूँगा । आप तो एक ही काम करें कि अपना कायाकल्प करके यहाँ से जायँ । कायाकल्प वैसे तो शरीर के कायाकल्प को कहते हैं, बुड्ढे से जवान बनने को कायाकल्प कहते हैं, लेकिन मैं आपके अन्तरंग को बदल देना चाहता हूँ । हम चाहते हैं कि आपकी नीयत, आपका ईमान, आपका व्यक्तित्व, चिन्तन और चरित्र जिस स्तर का था, उसे बदल दें । अगर आपके अन्तरंग वाला हिस्सा बदल जाय तो मजा आ जाय । अभी तो आपके मन के ऊपर एक ऐसी छाप जम गई है,

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

एक ऐसा संस्कार जम गया है कि आप अपने को शरीर मानते हैं । छोटा आदमी, बीमार आदमी कंगाल या अमीर आदमी मानते हैं । अभी तो आप शरीर को मान्यता देते हैं । यदि संभव हो सके तो आप यह कोशिश करना कि हम शरीर नहीं, शरीर हमारा औजार है-हथियार है और हम आत्मा हैं । आप कोई न कोई समय ऐसा जरूर निकालें जब आत्मचिन्तन कर सकें । सोचें जब हम शरीर से बाहर निकल जाते हैं और ऊँचाई पर, मीनार पर, पहाड़ पर जाकर बैठ जाते हैं । वहीं से आप देखते रहें कि हमारा वह मरा हुआ शरीर पड़ा हुआ है और हम उससे अलग बैठे हैं । हमारे हित अलग हैं और उसके हित अलग । शरीर की अपनी उपयोगिता है और आत्मा की अपनी । अभी तो सब गुड़गोबर कर रखा है आपने जो किसी काम का नहीं है ।

अभी तो हमने अपनी चेतना को शरीर में इस कदर घुला रखा है कि शरीर के अलावा अपने बारे में कुछ विचार ही नहीं कर पाते कि हमारी आत्मा भी है या नहीं । आत्मा का भी कुछ लाभ होता है, हमें मालूम ही नहीं । आत्मा का भी कुछ स्वार्थ होता है , उसकी भी कुछ आवश्यकतायें होती हैं, हमें मालूम ही नहीं । सिवाय शरीर की आवश्यकताओं के हम कुछ सोच ही नहीं पाते । यदि संभव हो सके तो यह कोशिश करना कि आप शरीर से अलग हो सकें । अगर आप अलग होने की कोशिश करेंगे तो आपके सामने नये विचार आयेंगे, नयी समस्यायें आयेंगी, नये दृष्टिकोण आयेंगे, नये कार्यक्रम आयेंगे कि हमको क्या करना चाहिए और कैसे करना चाहिए । शरीर और आत्मा दोनों को अलग-अलग करने की कोशिश करना । दोनों के हित अलग-अलग करने की कोशिश करना । दोनों के हितों के लिए क्या करना चाहिए-ऐसा जब आप विचार करेंगे तो आपको दिशा मिलेगी ।

जब आप यहाँ से जायँ तो माली होकर जायें । अहम् मालिकी को यहीं छोड़ जायँ । दुनिया में मालिक होना बन्द कर दें । जहाँ कहीं भी जायें माली होकर जायें मालिक मत होना । जब तू मालिक हो जायेगा तो दुनिया इतनी भारी हो जायगी तेरे लिए कि तेरे प्राण ले जायगी । जब तू माली हो जायेगा तब दुनियाँ हँसती भी रहेगी और तेरे साथ रहेगी । जब मक्खी चासनी में घुसती है तो पंखों को लपेट लेती है और मर जाती है और जब किनारे बैठी रहती है तो उसका जायका चखती रहती है । जुड़ो मत उससे । मालिकी को छोड़ । अपना कर्तव्य पूरा कर बस, अपनी जिम्मेदारियों को पूरा कर । अपनी स्त्री के लिए , बेटे के लिए, बाप के लिए, बहन के लिए, समाज के लिए हर एक के प्रति अपने कर्तव्य को पूरा करना है । मालिकी मत जताना, मुनीम की तरीके से रहना, सो जो तेरे पास पैसा है उसका ठीक उपयोग कर सकेगा । मालिक बनेंगे तो आपको दुनिया में पाप कमाने पड़ेंगे ! न्याय पर आप चल नहीं सकेंगे । जो वस्तु आपको मिली है, उसका कोई उपयोग नहीं कर सकेंगे। आपके पास समय की सम्पदा है, श्रम की सम्पदा है, बुद्धि की सम्पदा है, उसका उपयोग करें । यही कायाकल्प करना है । यदि सन्तों का अनुग्रह प्राप्त करना है, देवताओं की कृपा प्राप्त करनी हो तो भगवान जितना उदार है, उतनी उदारता सीखें ।

शरीर की अपेक्षा अपनी जीवात्मा पर विचार करें जो सम्पदायें आपके पास हैं उनका उपयोग कीजिए और जो नहीं हैं उनका रोना-धोना बन्द कीजिए । जो हैं, उसका उपयोग यदि करेंगे तो सहायता अपने आप मिल जायगी । आप पहले उदार बनिये, अपनी योग्यता और पात्रता के सम्बन्ध में विचार कीजिए । आप अपनी नियत को ईमान-को इस तरह बनायें कि भगवान को, समाज को, पड़ोसियों को पता चल जाय कि आप इस लायक हैं तो आपके पास उनका स्नेह-सहयोग और आशीर्वाद बरसेगा । आपके पास हर चीज बरसेगी जिसकी आपको आवश्यकता है । माँगने की अपेक्षा देने की परम्परा, जो ऋषियों की परम्परा है, बनायें । अपनी स्त्री को देंगे प्यार, बच्चों को देंगे संस्कार, अपने बहन-भाई को देंगे स्नेह, समाज को देंगे ज्ञान और सारे विश्व को देंगे श्रेष्ठ परम्परायें । यदि हम कुछ नहीं दे सकते तो रास्ता तो दिखा सकते हैं अपनी शानदार जिन्दगी जीकर के, ताकि दूसरे आदमी हमारे चले हुए रास्ते पर चलें । अपने आपको तो श्रेष्ठ और शालीन बना ही सकते हैं । हम निर्धन हैं, गरीब हैं तो भी ऐसा कर सकते हैं । चारों ओर जो गहरा अन्धकार छाया हुआ है, लोगों को रास्ता चलने के लिए अपने चरण चिह्न छोड़ते हुए चले जायँ । हम विश्वास लेकर चले थे, आप भी विश्वास लेकर चलें तो भी आप धन्य हो जायेंगे ।

मैं कहता हूँ कि आप तकलीफ का-कष्टों का रास्ता नहीं चलेंगे तो आप नहीं फलेंगे । आप बीज की तरह से गलें तो वृक्ष की तरह से फलेंगे । वृक्ष की तरीके से फलने के लिए बीज को तरह गलना आवश्यक है । इसके लिए बड़ा कलेजा चाहिए । वे तपस्वी होंगे, महापुरुष होंगे जिन्होंने अपने कलेजे चौड़े किये । कृपणता पर अंकुश रखा । लोकहित के लिए समाज के लिए, देश के लिए त्याग और बलिदान किया । ये ऐतिहासिक लोग हैं । वे समाज का सम्मान पाने के अधिकारी हुए हैं, ऊँचे पदों पर पहुँचे हैं । नेता हुए हैं । जो कुछ भी वैभव और वर्चस्व मिला है, गलने की बजह से मिला है । आप भी बीज की तरह से गलें ताकि वृक्ष की तरह से फलने की संभावना हो सके । अपने अन्दर विवेकशीलता को जगायें । यदि आपके अन्दर इतनी हिम्मत हो जाय तो आपके अन्दर शक्तिपात कर सकने में हम समर्थ हो सकते हैं ।

आज की बात समाप्त ॐ शांति

परम पूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी के चुने हुए ३६ प्रवचनों का संकलन युग निर्माण योजना द्वारा "गुरुवर की धरोहर" नाम से प्रकाशित किया जा रहा है । अप्रेल अंत तक वह सबके लिए उपलब्ध होगा । परिजन गायत्री तपोभूमि मथुरा से संपर्क करें ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी-

देवात्मा हिमालय की यात्रा-उद्देश्य एवं भावी कार्यक्रम

(प्राण-प्रत्यावर्तन सत्र अप्रैल १९७३)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो, भाइयो, कई व्यक्ति हमारे बारे में पूछते हैं कि हिमालय में अज्ञातवास के समय की आपकी क्रम व्यवस्था क्या थी ? भावी कार्यक्रम का जानना भी उनकी उत्सुकता का विषय रहता है और यह स्वाभाविक भी है कि जिनके प्रति अपनी आत्मीयता होती है उनके कुशल समाचार जानने के लिये , उनकी गति विधियाँ जानने के लिये हर आदमी की इच्छा बनी रहती है । अपने ही परिवार के लोगों को ऐसा कुछ जानने की इच्छा रही हो तो कोई अचम्भे की बात नहीं । भूतकाल के सम्बन्ध में भी लोगों को थोड़ी ही जानकारी हैं और उसके साथ में भविष्य का सम्बन्ध किस तरह मिला हुआ है इसके बारे में पूरी जानकारी न होने से कई व्यक्ति कई तरह के अनुमान लगा लेते हैं और कई तरह के सवाल पूछते रहते हैं । उनके समाधान किये जायें, यह ज्यादा मुनासिब समझा गया । हममें से प्रत्येक व्यक्ति को जो मुझ में दिलचस्पी रखता हो उसको यह जानना चाहिये कि अपने जीवन का क्रम १५ वर्ष की उम्र से लेकर आज तक एक अज्ञात शक्ति के इशारे पर चलता हुआ चला आया है । १५ वर्ष की उम्र से पूर्व इस संसार में खाया हो, खेला हो, हँसा हो, सोचा हो, किया हो, बात अलग, लेकिन जब मैं १५ वर्ष का हो गया उस समय से लेकर के आज तक की जितनी भी गतिविधियाँ हैं उनका संचालन और उनकी धारणा अपने मन से नहीं की गयी, बल्कि ऐसी शक्ति के इशारे पर की गयी हैं जो अत्यधिक महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं ।

जब मैं १५ वर्ष की उम्र में पूजा की कोठरी में बैठा हुआ था तब एक दिव्य प्रकाश सामने आया और वह दिव्य प्रकाश एक दिव्यात्मा का था । वह प्रगट हुये, उन्होंने मेरे को दिव्य लोक के सारे इतिहास और सारे संकेत दिखाये, बताये और सुनाये । इनको जानने के बाद में, मैं समझ गया मैं कौन हूँ और मुझे क्या करना चाहिये । यह है आत्म बोध जो मुझे हुआ, वह हम में से हर एक को मिल सकता है । हम में से हर एक आदमी को यह प्रयास करना चाहिये कि हम ये कहें कि हम भूतकाल में क्या थे । हम भूतकाल में भगवान के अंश थे । हमको भगवान ने विशेष कामों से भेजा है । जिन लोगों में मेरे ही तरीके से आकांक्षायें उत्पन्न हुई हो उन्हें यह भी जानना चाहिये कि उनके पूर्व जन्म में कोई न कोई दिव्य काम हुए हैं अन्यथा ये आकांक्षायें जो भगवान की इच्छानुरूप हैं उनके मन में पैदा न होती । ये आकांक्षायें हजारों तरीके से फैली हुई हैं और अनेक मनुष्य अनेक तरीके से उनमें दिलचस्पी लेते हैं । लेकिन बात मानने ही लायक है । इस समय भगवान का जो प्रवाह अन्तरिक्ष लोकों में चल रहा है वह यह है कि मनुष्य का भावनात्मक नव निर्माण किया जाय । इसका आन्दोलन जो युग निर्माण योजना के नाम से विख्यात है, यह भगवान का ही आन्दोलन है और उन्हीं का क्रियाकलाप है और उन्हीं की इच्छा का संकेत है । १५ वर्ष की उम्र में मुझे इसी संकेत की ओर प्रेरित किया गया और अग्रसर किया गया । उसी सत्ता ने जिसका कि मैं इशारा कर चुका हूँ और जिसको मैं गुरुदेव कहता हूँ और अपने आपको संचालित सत्ता मानता हूँ, उन्होंने मुझे यह आदेश किया कि मुझे २४ वर्ष तक सब साधन करना चाहिये । सब साधन का अर्थ आत्म संशोधन की प्रक्रिया । आत्म संशोधन की प्रक्रिया मैंने २४ वर्ष तक की । जौ की रोटी खायी । जबान पर संयम रखा, कामेन्द्रियों पर संयम रखा और बराबर यह प्रयास किया कि प्रत्येक नारी को माँ, बहन और बेटी के तरीके से मानूँ । ये दो चीजें ऐसी हैं जो मनुष्य के भीतर अनायास ही शक्ति का ह्रास करती हैं । आदमी अपनी जीभ के ऊपर काबू करले और अपनी कामेन्द्रियों पर काबू प्राप्त कर ले उसको सिद्ध पुरुष बनने में कोई कठिनाई नहीं आती । आत्म बल सहज ही विकसित होता चला जाता है । इसी के लिये उन्होंने मुझे तप अनुष्ठान करने के लिये कहा । गायत्री मंत्र का जप करने के लिये कहा क्योंकि मेरे सामने एक लक्ष्य निर्धारित किया गया था और उस लक्ष्य को मुझे बार-बार समझना था और विचार करना था 'वह था गायत्री मंत्र ।' गायत्री मंत्र लक्ष्य भी है, पूजा का विधान भी है, कर्मकाण्ड भी है । लक्ष्य क्या है ? कि हम अपनी स्वयं की विचारणा की, बुद्धि को और विचारशीलता को ऐसा विकसित करें कि वह जीवन के लक्ष्य की ओर, भगवान की ओर, लोक मंगल की ओर निरन्तर बनी रहे । यही तो गायत्री मंत्र की शिक्षा है-*धियो यो नः प्रचोदयात्* बार-बार समझूँ, सोचूँ और हृदयंगम करूँ कि रोम-रोम में इस संदेश को और संकेत को बसा लूँ । मेरी बुद्धि का उपयोग मेरी विवेकशीलता का उपयोग मेरी जीवात्मा का उपयोग केवल उन कामों के लिये हो जिनका योग भगवान का संकेत है । यही शिक्षण गायत्री मंत्र का था ।

गायत्री का मैंने जप तो किया, लेकिन जप के साथ-साथ में यह भी ध्यान रखा कि वह विचारणायें, शिक्षायें और प्रेरणायें मेरे हृदयंगम होती रहें । प्रत्येक जप के साथ प्रत्येक माला के साथ प्रत्येक उपकरण के साथ जप कर लिया करूँ जो कर्म काण्ड मुझे बताया गया उसमें दीपक के रूप में मैंने एक अखण्ड दीपक की स्थापना की । अखण्ड दीपक जलाया बेशक, लेकिन, साथ-साथ में भावनाओं को भी तदनुरूप बनाया जिस तरीके से अखण्ड दीपक अखण्ड जलता रहता है बुझता नहीं उसी तरीके से हमारा जीवन प्रवाह ज्ञानमय हो, बुझने न पाये, टूटने न पाये शृंखला बिगड़ने न पाये ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

बीच-बीच में हमको अधःपतन की ओर गिरने का मौका न आये, ठोकरें नहीं लगे, चोट नहीं लगें और इस प्रकार निर्धारित नियत और सुनिश्चित निशान की ओर हम बढ़ते हुए चले जायें और दीपक के तरीके से प्रकाशवान होकर प्रकाश पैदा करें, अपने भीतर प्रकाश पैदा करें और अपने बाहर भी । स्नेह से भरे हुए रहें , सद्भावनाओं से भरे हुए रहें-यही तो सब दीपक के सन्देश थे । अखण्ड दीपक जलाया गया और वह इम्तहान का दीपक मेरे भीतर और बाहर भी जलता रहा । हर जगह उसकी प्रेरणायें आगे विकसित होती हुई चली गयीं । २४ वर्ष इसी प्रकार से निकल गये । इसके पश्चात् फिर वही मार्गदर्शक वही मेरे गुरुदेव सामने आये । उन्होंने कहा, तुम्हारे अनुष्ठान पूरे हुए हैं ? मैंने कहा, इस मायने में पूरे हुए कि मैंने जो नियम लिया था जो व्रत लिया था, उनको बगैर डगमगाये, बिना इधर-उधर पैर हटाये, बिना अवरोध लगाये, बिना दौड़-भाग के शान्त चित्त से एक ही स्वर से करता रहा । अपनी निष्ठा में रत्ती भर भी कभी भी कमी नहीं आने दी । परिस्थितियाँ खराब आयीं तो क्या, अच्छी आयीं तो क्या , मुसीबतें आयीं तो भी कभी मैंने यह ख्याल नहीं किया कि मेरे अनुष्ठान के कारण से ही यह होता है भगवान मेरी इतनी भी सहायता नहीं करते फिर मैं क्यों अनुष्ठान करूँ ? कभी भी संकट में भी श्रद्धा में कमी नहीं आयी, इस मायने में सफल हो गया । सुख आये, सुविधायें आयीं कभी उत्साह नहीं आया । दुख और कठिनाई आयीं तो कभी मैं निराश नहीं हुआ, न मैंने भगवान को दोष दिया, न मैंने भगवान से कुछ इच्छा की । ये बातें अगर अनुष्ठान की सफलता के लिये काफी हों तो सफल हो गया । इस मायने में अगर अनुष्ठान की सफलता साबित की जाय उससे कोई लाभ मिला कि नहीं , कोई चमत्कार दिखायी पड़ा, कोई रोशनी मिली, कोई चमत्कार, कोई लाभ, कोई महात्मा, कोई सिद्धि ऐसा कुछ मिला तो कहूँगा कि मेरा अनुष्ठान सफल नहीं हुआ । ऐसी कोई अनुभूति नहीं हुई इस तरह कि जैसा आम लोगों का ख्याल है कि जप कर लेने के बाद अनुष्ठान कर लेने के बाद, हवन कर लेने के बाद ऐसा दिखायी पड़ता हैं, ये आता है, वह दीखता है, यह सिद्धि आती हैं, ये बात आती हैं ऐसा मुझे कुछ नहीं हुआ । इस मायने में मैं असफल रहा ।

गुरुदेव मुझे मिले थे २४ वर्ष बाद प्रकाश के रूप में मेरे घर, और उन्होंने यह कहा, ठीक है तुम्हारा अनुष्ठान सही है । किसी भी तपस्वी का योगाभ्यास असफल नहीं होना चाहिये, मैं यही परखने के लिये आया था । बस, मुझे यह मालूम हुआ कि वास्तव में अब तुम्हारा काम पूरा हुआ । अब तुमको यह देखना चाहिये कि यह जो तप पूरा हुआ है इससे क्या कोई प्रभाव उत्पन्न होता है । इसका शायद विश्वास तुम्हें भी न हो इसलिये इसमें विश्वास कर लेना चाहिये । इसके लिये पुनरावृति के रूप में सहस्र कुण्ड यज्ञ का आयोजन करना चाहिये । मैंने कहा मुझे तो विश्वास है अपने आपके ऊपर और मेरी सत्ता के ऊपर जो लक्ष्य मेरे सामने रखा गया उसके ऊपर । मुझे अविश्वास करने की जरूरत क्या है । उन्होंने कहा, नहीं, ऐसा है यह जो शक्ति है आत्मशक्ति क्या भौतिक जगत में भी कुछ काम कर सकती है ? क्या इसके द्वारा संसार में भी कुछ प्रभाव डाला जा सकता है ? यह शायद तुम्हें यकीन न हो, इसके लिये हम एक प्रयोग कराते हैं और यह प्रयोग तुम्हारे लिये विशेष उपयोगी होगा, समाज के लिये भी । क्या प्रयोग ? सहस्र कुण्डी यज्ञ । सहस्र कुण्डी यज्ञ वास्तव में एक अचम्भे की चीज है । मैंने स्वयं इस बात को महसूस किया है और लोगों ने भी इसको देखा है । वास्तव में अनोखी चीज ही कहना चाहिये उसको । कहते ये लोग ५००० वर्षों में पाण्डवों का वह यज्ञ जो कि राजसूय के नाम से विख्यात था और जिसे कृष्ण भगवान ने चलाया था उसके बाद में दूसरा ही नम्बर इसको कहा जा सकता है । कई विशेषतायें थीं उसकी । आयोजन तो आये दिन होते रहते हैं । कांग्रेस के आन्दोलन और भी बड़े होते हैं । मेरे आयोजन और भी बड़े होते हैं । कुम्भ का मेला और भी बड़ा होता है, लेकिन उसकी कुछ विशेषतायें और ही थीं । एक व्यक्ति द्वारा इतने व्यक्तियों को आमंत्रित किया जाना, उसके बुलाने पर इतने व्यक्तियों का इकट्ठा हो जाना, उनके खाने-पीने का बिना मूल्य लिये हुए प्रबन्ध करना, उसकी व्यवस्था के लिये कोई पहले से घी या कोई गेहूँ इकट्ठा न किया जाना, धन राशि न लिया जाना, इतने बड़े आयोजन में कोई घटना का न होना, कोई चोरी इत्यादि का न होना, इतने आदमियों को इस तरीके से प्रभावित होते जाना, अनुशासित होते जाना-ऐसी असंख्य व्यवस्थायें हैं जो आज तक किसी आयोजन में नहीं हुईं । उन्होंने-गुरुदेव ने मुझसे कहा कि आयोजन की सफलता और विशेषतायें तुम्हें इस रूप में लेनी चाहिये कि ये सब तुम्हारे तप और पुण्य का परिणाम है । तप और पुण्य चाहे तुम्हारे पास हो चाहे किसी के पास भी हो, यह परिणाम निकलते हैं कि इस बात के जिसे तुम विश्वासपूर्वक कह सकते हो स्वयं से भी और लोगों से भी । इसीलिये इस आयोजन का विशेष रूप से उल्लेख किया गया ।

ऐसा ही हुआ, बहुत सफल आयोजन हुआ । खुद बैठा रहा, कहीं गया भी नहीं, केवल घर बैठे निमन्त्रण भेजे जिनको जानता पहचानता नहीं था, लाखों आदमी इकट्ठे हो गये ऐसे व्यक्ति जो अत्यधिक महत्वपूर्ण कहे जा सकते हैं । सामान्य भीड़-भाड़ जो मेरी सभाओं में आती है उस तरह के नहीं, बल्कि गण्यमान्य व्यक्ति उत्सुकता में आये और यज्ञ सम्पन्न हुआ । सहस्रों लोगों ने उसको देखा, कितना पैसा खर्च हुआ, कितनी व्यवस्था बनी लोग हैरत में रह गये कि आखिर कैसे हो गया । किसी ने जादू समझा, किसी ने तमाशा समझा, किसी ने किसी राजा महाराजा का आयोजन समझा, किसी ने चन्दा समझा, किसी ने क्या समझा, किसी ने क्या नहीं ? कह नहीं सकता, लेकिन वास्तविकता यह थी कि वह मेरे गुरुदेव का चमत्कार कहिये अथवा उनकी प्रसन्नता का चमत्कार कहिये, बस, वही हुआ, और वह अपने समय पर बड़ा सफल हो गया और मेरे विश्वास की वृद्धि हुई । मुझे यकीन हो गया कि संसार में भी इस तत्व शक्ति के द्वारा भुगतान किया जा सकता है, इसे गायत्री की शक्ति भी कह सकते हैं, उपासना की शक्ति भी कह सकते हैं, इसको साधना की शक्ति भी कह सकते हैं । बस, वहाँ से इशारा चला मेरा उसी क्रम से मेरे लिये वह भी उतना ही महत्वपूर्ण था कार्य, कौन सा, जो कि २४ वर्षों की उपासना प्रारम्भ की थी मेरे लिये वह श्रद्धा का विषय था । वह श्रद्धा ज्यों की त्यों बनी रही, बल्कि ज्यादा ही बढ़ी । बस, सहस्र कुण्ड यज्ञ हो गया

सहस्र कुण्ड यज्ञ से लेकर के मेरे गुरुदेव ने मुझे फिर २० साल के लिये कुछ काम करने के लिए कहा । दस साल का उन्होंने एक खण्ड बताया । १० साल में उन्होंने मुझे संगठन और प्रचार का कार्य सौंपा । गायत्री मंत्र और यज्ञ ये

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

भारतीय संस्कृति के मूल हैं और इसी संस्कृति के मूल को देश और देशान्तरों में स्वीकृति करने के लिये मुझे बताया गया । वही किया गया । गायत्री परिवार बनाया गया । उसके लाखों की संख्या में सदस्य बने । हजारों की संख्या में शाखायें स्थापित हुईं । जगह-जगह हजारों यज्ञ हुए । ये सारे का सारा प्रचार जो फैलाया गया है, गायत्री का साहित्य लिखा गया है, गायत्री मन्त्र और यज्ञ को लेकर के १० साल मैंने लगाये जो कि २४ वर्ष के बाद आरम्भ हुए थे और इसमें यदि १५ वर्ष पहले को भी जोड़ लिया जाय तो ५० वर्ष पूरे हो जाते हैं । इस तरीके से मैं क्रियाकलाप में लगा रहा । क्रियाकलाप के बाद में उन्होंने एक वर्ष के लिये मुझे अपने पास बुलाया हिमालय । एक वर्ष के लिये मैं हिमालय चला गया । कहाँ रहा, इसका थोड़ा सा विवरण 'सुनसान के सहचर' नाम से आंशिक रूप में अखण्ड ज्योति में प्रकाशित हुआ था । वह बड़ी महत्वपूर्ण घटना है । लोग कहते हैं जहाँ आप गये थे, कहाँ गये थे ? क्या करते रहे थे ? हिमालय पर तो बहुत से लोग रहते हैं । हरिद्वार से हिमालय शुरू हो जाता है, कैलाश तक चला जाता है और कहाँ तक चला जाता है-पाकिस्तान में फैला हुआ है और बर्मा तक चला गया है । हिमालय में न जाने कितने हजार आदमी रहते हैं । हिमालय में कोई अच्छी भी जगह है और बेकार जगह भी है । हिमालय में जो जन रहते हैं वहाँ झाड़ियाँ हैं, वहाँ बन्दर रहते हैं और बेकार आदमी भी रहते हैं, चोर-डाकू भी रहते हैं, सिद्ध पुरुष भी रहते हैं । हिमालय अपने आप में न बुरा है न भला है, लेकिन मुझे जहाँ-जिस स्थान पर रहने के लिये भेजा गया था वह अत्यधिक महत्वपूर्ण था । उसको हिमालय का हृदय या आध्यात्मिक ध्रुव कह सकते हैं । उस स्थान पर आज से १०-११ वर्ष पूर्व मैं एक साल के लिये रहा । मैं गंगोत्री भी रहा, उत्तरकाशी भी रहा । इन दोनों स्थानों पर रहा लेकिन मूल क्या है जो शक्ति का स्रोत था मुझे वहाँ मिला जहाँ मेरे गुरुदेव रहते हैं । उसको हिमालय का तीर्थ कहा जा सकता है । गायत्री तप का ध्रुव कहा जा सकता है ।

पृथ्वी का ध्रुव-उत्तरी ध्रुव व दक्षिणी ध्रुव प्रख्यात हैं । वहाँ की परिस्थितियाँ बड़े अचम्भे की हैं । लोगों ने पुस्तकें भी पढ़ी हैं । ऐसा मालूम पड़ता है किसी जादू की बात कही जा रही है उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव के बारे में । ये ध्रुव ऐसे हैं कि चारों ओर से पृथ्वी पर जो कवच चढ़ा हुआ है उस कवच में से ब्रह्माण्ड की अनेक शक्तियाँ घुसने नहीं पातीं । उत्तरी ध्रुव में से ही होकर आती हैं और सारी पृथ्वी पर फैल जाती हैं । ये शक्तियाँ आवश्यकतानुसार पृथ्वी पर रह जाती हैं और बाकी दक्षिण ध्रुव में से होकर के फिर वह ब्रह्माण्ड में फैल जाती हैं । ऐसा कवच पृथ्वी पर न होता तो ग्रहों से और नक्षत्रों से जो किरणें आती हैं सारे जगत को जला डालतीं और हमारी धरती भी उसी तरीके से वीरान हो जाती जिस तरह से बृहस्पति, मंगल, बुध इत्यादि दूसरे ग्रह सुनसान और वीरान पड़े हुए हैं । यह भी हो सकता है कि इसके ऊपर एक कवच चढ़ा हुआ है और उसके भीतर से शक्ति के सूक्ष्म मात्रा में ही आदान-प्रदान होते हैं । हिमालय का जो केन्द्र ध्रुव है जहाँ मेरे गुरुदेव रहते हैं यहाँ का फैलाव बद्रीनाथ से हिमालय की दूसरी छोर तक है । इसके बीच का जो भाग है वही हिमालय का केन्द्र है और इसकी लम्बाई-चौड़ाई मैं समझता हूँ तीन-चार सौ मील चौड़ी और सौ-पचास मील लम्बी होनी चाहिये । यही शंख के नाम से पहले प्रख्यात था । यही पुराणों में भी मिलता है कि यहाँ शिवलिंग पर गंगा का अवतरण हुआ था शिव लिंग पर्वत यहीं है, सुमेर पर्वत वहीं है सुमेरु यज्ञ पाण्डवों ने वहीं किया था, सुमेरु लिंगम् वहीं हैं, स्वर्ग गंगा वहीं हैं । कैलाश के बारे में, मान सरोवर के बारे में भी मैंने यही प्रतिपादन किया था कि जो वर्त्तमान शिवलिंग है यही वास्तव में कैलाश था और यह भी प्रतिपादन किया था कि इसके समीप में एक छोटी सी झील है जिसका नाम मान सरोवर होना चाहिये क्योंकि मानसरोवर और कैलाश के बारे में जो पौराणिक वर्णन मिलता है वह उस तिब्बत वाले कैलाश से जरा भी सम्मति नहीं खाता । तिब्बत वाला कैलाश और मानसरोवर किस कारण से मान लिया गया मैं कह नहीं सकता । लेकिन अगर सही रूप में ढूँढ़ा जाय तो ऐसे असंख्य प्रमाण मैंने अखण्ड-ज्योति में छापे हैं जिनसे यह सिद्ध किया जा सकता है कि असली कैलाश और मान सरोवर वही हैं जहाँ मेरे गुरुदेव निवास करते हैं ।

मैं उस स्थान पर रहा, वहाँ की कितनी ही विशेषेताओं को मैंने देखा उसको वर्णन करना सम्भव नहीं है । वहाँ कितने सिद्ध पुरुष रहते हैं और वहाँ के वातावरण में कितनी विशेषता और महत्ता हैं, उसका वर्णन करना सम्भव है लोग यकीन न करें । जब तक देखा नहीं जाता, तब तक गप्प भी माना जा सकता है, इसलिये उस पर विचार करना मेरे लिये मुनासिव नहीं है । उन स्थानों पर चार दिन मैं अपने गुरुदेव के पास रहा । उनको जो कुछ भी मुझसे कहना था उन्होंने कहा, जो कुछ भी संकेत करने थे किये, जो भावी कार्यक्रम के रूप में हिदायत करनी थी वह की, और जो मुझे शक्ति का एक अंश देना था वह चार दिनों में उन्होंने दिया । चार दिन की शक्ति को लेकर मैं चला आया । साल भर तक मैंने उसको पकाया, हजम किया । खाना खाने में तो थोड़ी ही देर लगती है, भोजन तो आदमी आधा घण्टे में ही कर लेता है, बीस मिनट में भी कर लेता है, लेकिन हजम करने में बारह घण्टे लग जाते हैं । गुरुदेव ने जो शक्ति मुझे चार दिन में दी थी, उसको हजम करने में, पचाने में, और जुगाली करने में साल भर लग गया । इस तरीके से मैं एक साल गंगोत्री और हिमालय और उत्तरकाशी रहा । वहाँ जो उन्होंने तप और अनुष्ठान बताये थे वह मैं करता रहा, जहाँ-जहाँ रहा, वह ऐसे स्थान थे जिनको दिव्य कह सकते हैं । भागीरथ ने जिस शिला पर बैठ कर तप किया था, वहाँ मुझे भी तप और अनुष्ठान करने का मौका मिल गया । जहाँ भगवान परशुराम जी ने तप करके कुल्हाड़ा शंकरजी से प्राप्त किया था, उसी स्थान पर उत्तरकाशी में रहने का मुझे भी मौका मिला । इस तरीके से एक साल व्यतीत करने के बाद मैं फिर आ गया और दस साल के कार्यक्रम जो मुझे सौंपे गये थे, वह मैंने सँभाल लिये ।

दस साल में युग निर्माण योजना का दूसरा अध्याय सौंपा गया । युग निर्माण योजना का कार्यालय तथा गायत्री तपोभूमि का निर्माण मिला कर जो किया वह मेरे पहले दस साल के पूर्व की कमाई थी । मेरा दूसरा कदम-दूसरा काम था युग निर्माण योजना नाम से एक केन्द्र की स्थापना जहाँ से फिर सारी गतिविधियाँ चालित की गयीं । बौद्धिक क्रान्ति, नैतिक क्रान्ति और सामाजिक क्रान्ति को क्रियान्वित करने का प्रबन्ध किया गया । विचारात्मक, रचनात्मक और संगठनात्मक कार्यक्रमों का ढाँचा खड़ा किया गया । व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण और समाज

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

निर्माण का नारा लगाया गया । स्वच्छ मन, स्वस्थ शरीर, और सभ्य समाज का निर्माण करने की रूप रेखा बनायी गयी । इन सारे के सारे क्रिया-कलापों का दस वर्षों में विस्तार हुआ । मैं समझता हूँ कि इन तीनों कार्यक्रमों के बारे में कितना विस्तार हुआ है, इसका वर्णन करने की यहाँ आवश्यकता नहीं है । वह लोगों को दूसरी जगह से पढ़ना चाहिये और दूसरे तरीकों से मालूम करना चाहिये । इसको संक्षेप में केवल इतना ही कहा जा सकता है कि वह कार्य हुआ व असाधारण हुआ । साहित्य लिखा गया वैज्ञानिक व आध्यात्मिक समन्वय की रूप रेखा ठीक समय पर रखी गयी और उसका पत्रिकाओं के माध्यम से विस्तार हुआ । अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ और उसका प्रकाशन हुआ, यह सब कार्य दस वर्षों के भीतर सम्भव हुआ । एक लाख व्यक्तियों की सृजन सेना बनकर खड़ी हो गयी और वह अपने - अपने क्रियाकलाप में लग गयी । सक्रिय कार्यकर्त्ता, कर्मठ कार्यकर्त्ता और पुरवासी मान कर अपने-अपने क्षेत्रों में अपने दिल से कमर बाँध कर खड़े हो गये और वह कार्य जो असम्भव दिखाई पड़ता था सम्भव दिखायी पड़ने लगा ।

मनुष्य में देवत्व का उदय और पृथ्वी पर स्वर्ग का अवतरण किसी जमाने में ख्वाब समझा जाता था और यह माना जाता था कि ऐसे क्रियाकलाप मनुष्यों के द्वारा सम्भव नहीं हैं । कभी भगवान चाहेगा तभी ऐसी बड़ी सफलता मिल सकेगी । यह भला कैसे मिल सकती है, किसमें मिल सकती है, क्यों मिलेगी, लेकिन ऐसा मालूम होता है कि वह सारी जो कल्पनायें थीं तिलस्मी अब साकार होने जा रही हैं और साथ ही बहुत कुछ सम्भावना है, क्योंकि सामने ही आ रही हैं । लोग यकीन कर रहे हैं कि हाँ ऐसा होना भी सम्भव है । पर यह आन्दोलन किसी जमाने में छोटे से आन्दोलन के रूप में था और यह विश्व व्यापी भी बन सकता है । इस तरीके से १० वर्ष मुझे वहाँ रहना पड़ा ।

जब बैटरी की शक्ति खत्म हो जाती है तो उसे चार्ज करने के लिये भेजा जाता है और उसको डाइनुमा से लगा देते हैं फिर उसको दूसरी बैटरी से सम्बन्ध कर देते हैं । जब चार्ज हो जाती है तो फिर वह काम करती है फिर मुझे एक साल के लिये स्वयं बुलाया गया था । मैं गुरुदेव के पास गया, चार दिन उनके पास रहा, जैसे दस साल पहले रहा था । चार दिन उनके पास रहने के बाद में फिर मुझे कहीं दूसरी जगह भेज दिया गया और फिर मैं वहीं रहा और तप करता रहा । मैं कहाँ रहा ? क्या करता रहा? यह बताने का विषय नहीं है । पहले बताने की बात थी सो मैंने लोगों को बता दिया था कि मैं गंगोत्री रहा था, और उत्तरकाशी रहा था । अब मेरे मुँह पर पर्दा डाल दिया गया है कि मैं वह न बताऊँ कि मैं कहाँ रहा और मैंने क्या किया, इतनी बात संक्षेप में है कि मैं हिमालय के ही गर्भ में रहा और वहाँ जा करके मैंने अपनी आत्म साधना की क्रिया पद्धति को ही काम में लाया । इस तरीके से फिर मुझे जाना पड़ा फिर माताजी के बीमार होने पर पन्द्रह दिन के लिये मैं उनके पास आया । फिर तीन दिन के लिये चला गया । इस तरीके से एक वर्ष पूरा करने के बाद फिर मुझे लोक शिक्षण का कार्य सौंप दिया गया । जब कि एक साल पहले तप करने का मुझे मौका दिया गया था । ऐसे ही इस साल भी एक वर्ष का तप करने का मौका दिया गया । इसके पश्चात् फिर मुझे पाँच वर्षीय कार्यक्रम में लगा दिया गया है । अब की मेरी यह कार्य अवधि केवल पाँच वर्ष की है । पहली दस साल की रही, इससे पहले दस साल की थी, उससे पहले चौबीस साल की थी । इस तरीके से ४४ साल की जो योजना थी, बढ़ गयी । ये पाँच वर्ष की है । भगवान जाने उसका क्या काम है ? अब की बार दस वर्ष का कार्यक्रम मुझे दिया गया है । कह नहीं सकता जीवन का समय कितना रह गया हो । कह नहीं सकता कोई और महत्वपूर्ण कार्यक्रम और हो । यह नहीं पूछा कि मुझे आगे क्या करना पड़ेगा । मैं मानता हूँ कि जो काम सौंप दिया गया है वह भी क्या कम है । उसमें क्या कमी हो सकती है । उसमें क्या करने के लिये क्या कम गुंजाइश नहीं है जो कि मैं आगे की बात सोचूँ । आगे वाली बात सोचना उनका काम है जिनको मैंने अपने आपको सौंपा हुआ है, जिनको अपने आप बेचा हुआ है । आगे मुझे क्या करना चाहिये, कैसे करना चाहिये, यह मस्तिष्क का भार मैंने अपने मस्तिष्क पर नहीं रखा हुआ है उन्हीं के ऊपर डाल दिया है । अब मुझे पाँच वर्ष का काम है । इन पाँच वर्षों में मुझे क्या करना होगा, यह कार्य मेरे लिये निर्धारित हो गया है और यह भी निर्धारित हो गया है कि थोड़े समय में मुझे बार-बार हिमालय जाना पड़ेगा । जिस तरीके से आदमी रात में सो जाते हैं और जगने पर फ्रेश हो जाते हैं, पहले जैसे हो जाते हैं, थकान दूर हो जाती है, इसी तरीके से मैं आध्यात्मिक भोजन करने के लिये और कुछ शक्ति लेने के लिये और अपनी थकान मिटाने के लिये वहाँ चला जाया करूँगा और इस बीच में हर साल कुछ शक्ति ले कर आया करूँगा । जो कि पाँच साल के लिये निर्धारित कार्यक्रम के लिये मुझे सौंपी गयी है । इस तरीके से यह क्रम बराबर जारी रहेगा ।

साँप से नेवले की लड़ाई होती है । नेवला बार-बार जाता है कुछ जड़ी-बूटी खा कर के आता है फिर साँप से लड़ाई लड़ता है, फिर साँप काट देता है, और जहर उसके शरीर पर चढ़ जाता है । उस जहर को दूर करने के लिये फिर वह कहीं जाता है और जड़ी-बूटी खा के आता है फिर साँप से लड़ाई लड़ता है । साँप और नेवले की लड़ाई जिन लोगों ने देखी है, उन्होंने यह घटना भी देखी होगी कि नेवला भाग कर के जाता है और कुछ जड़ी-बूटी खा कर के आता है और साँप से टक्कर खाता है । जड़ी-बूटी खाने वाले नेवले के तरीके से मुझे भी बार-बार हिमालय जाना पड़ेगा और बार-बार वहाँ से शक्ति लेकर के आना पड़ेगा, क्योंकि अब की बार जो साँप है बहुत बड़ा साँप है । पहली बार तो सीधे-सादे काम थे । संगठन करना सीधा सादा काम था, किसी से लड़ाई लड़नी नहीं थी मुझे संगठन करने से लेकर साहित्य लिखने व अन्य कार्यों तक । ये सभी सुगम काम थे । कोई ऐसे मुश्किल काम नहीं थे जिसमें आदमी को कोई जोखिम हो लेकिन अब की बार जो कार्य हैं बहुत व्यवस्थित महत्वपूर्ण और अत्यंत भयंकर और बहुत अधिक शक्ति खर्च करने वाले हैं ।

इस तरह जिस तरीके से मैं वहाँ से शक्ति लेकर आया था, ठीक उसी तरीके से मैं भी एक लाख मनुष्यों को इस बीच में शक्ति का सौवाँ अंश देने वाला हूँ । मैंने २४ वर्ष में जो तपश्चर्या की थी और मुझे जो अंश मिला वह बहुत बड़ा मिला, कारण मैंने अपने को पाक-साफ रखा । अपना परिष्कार किया दूसरे लोगों ने जिन्होंने निखार नहीं किया है उनको इतनी आशा नहीं करनी चाहिये कि

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

उसका अंश मुझको मिल जायगा, क्योंकि जिसके पास पात्र जितना बड़ा होगा उतना ही तो उसे मिलेगा चाहे बक्सा कितना ही जबरदस्त क्यों न हो । बादल की घटायें कितनी ही बड़ी क्यों न हों, पर पात्र से अधिक कैसे मिलेगा । इसलिये मैंने जिन लोगों को बुलाया है और जिन्होंने पात्रता का जितना विकास कर लिया है उतना उनको जरूर मिल जायगा । लेकिन जिनकी पात्रता नहीं होगी उनको यह आशा नहीं करनी चाहिये । यद्यपि बुलाया है तो कुछ न कुछ लेकर के ही जायेंगे । लेने के लिये जरूरी है कि शक्ति धारण करने के लिये गुंजाइश हो । धारण करने के लिये गुंजाइश न हो तब कैसे हो सकता है ? प्राण प्रत्यावर्तन शिविरों में सबको तो बुलाया नहीं जायगा । लेकिन जिन लोगों को बुलाया गया है उनको उनकी पात्रता के अनुरूप शक्ति का एक अंश जरूर मिलेगा और यहाँ से जाने के पश्चात् वह ऐसा काम कर सकेंगे जिससे उनको देखकर मुझे भी सन्तोष हो सके और उन्हें भी सन्तोष हो सके और समाज को भी सन्तोष हो सके, कि जिनको प्रत्यावर्त्तन के रूप में कुछ अनुदान दिया गया था उन्होंने लोक मंगल के लिए और भगवान की इच्छा पूरी करने के लिए जो प्रवाह चल रहा है उसके लिए कुछ महत्वपूर्ण भूमिका सम्पन्न कर सकें । इस तरीके से प्रत्येक प्रत्यावर्त्तन शिविर में एक बार में लगभग २० व्यक्ति बुलाये जायेंगे । कारण यह है कि जितनी शक्ति संग्रह होगी उससे अधिक लोगों को बुला लेने पर उनको कुछ दिया नहीं जा सकेगा । छोटा सा मीटर लगा हुआ हो और बत्तियाँ बहुत जला दी जायें तो सब बत्तियों को रोशनी नहीं मिलेगी, कुछ बुझ जायेंगी या टिमटिमायेंगी । ज्यादा बत्तियाँ जला दी जायेंगी तो मीटर खराब हो जायगा और फ्यूज चला जायगा । इस तरीके से सीमित व्यक्ति ही बुलाये जायेंगे । लोगों को ज्यादा अपवाद नहीं करना चाहिये । सबको एक साथ बुला सकूँ इच्छा तो है, लेकिन सम्भव नहीं है व्यवहारिक भी नहीं है । इसलिये इन्तजार तो करना ही पड़ेगा प्रत्यावर्त्तन के लिये ।

एक काम मुझे यह सौंपा गया है कि लोगों को शक्ति का एक अंश दूँ और उनको आगे बढ़ाऊँ, ऊँचा उठाऊँ । केवल विज्ञान की शिक्षा से जो बात पूरी नहीं हो सकती, उपनिषद् संग्रह से जो बात पूरी नहीं हो सकती, उस शक्ति का अंश दान देने से पूरी की जा सकती है । यही प्रत्यावर्त्तन हैं जो मुझे अगले पाँच साल तक थोड़े-थोड़े समय तक यहीं शान्ति कुंज में रह कर के पूरे करने पड़ेंगे । एक कार्य मैंने आपको निवेदन किया । दूसरा कार्यक्रम मेरा यह है कि मुझे हिमालय जाते रहना पड़ेगा; अन्यथा इस बार जो शक्ति खर्च होने वाली है उसकी पूर्ति अपने आप नहीं हो पायेगी बार-बार उसको लेने ही जाना पड़ेगा मुझे । इसलिये मेरा हिमालय जाना-आना लगा ही रहेगा । तीसरा एक और कार्य यह है कि अब मुझे अपना कार्य क्षेत्र बढ़ा देना पड़ेगा । अब तक केवल हिन्दू समाज अपना मुख्य कार्यक्रम रहा । भारतवर्ष तक ही गतिविधियाँ रही हैं । अब तक मैं केवल भारतवर्ष में रहा हूँ । हिन्दू समाज की सभाओं और गोष्ठियों को ही सम्बोधित किया है । दूसरे और लोगों में मैं कहाँ गया ? दूसरे विश्व में कहाँ गया ? लेकिन यह वर्ग जो मुझे सौंपा गया था, जो क्षेत्र मुझे सौंपा गया था वे सीमित क्षेत्र हैं क्योंकि शक्ति मेरी सीमित थी इसलिये कार्य क्षेत्र भी सीमित ही सौंपा गया था । अब तो शक्ति को बढ़ा दिया गया है अत: कार्य क्षेत्र भी बढ़ गया है । अब मेरा कार्यक्षेत्र भारतवर्ष तक सीमित न रह कर समस्त संसार है । अब हिन्दू समाज तक सीमित न रह कर समस्त संसार के विभिन्न धर्म और विभिन्न सम्प्रदाय तक कार्य क्षेत्र बढ़ा दिया गया है । अब धर्ममंच को ही आगे बढ़ा दिया गया है । अब धर्म मंच के माध्यम से आगे बढ़ करके अन्यान्य क्षेत्रों में भी वह कार्य करूँगा जिससे कि युग निर्माण करने की पृष्ठ भूमि तैयार की जा सके : साहित्य के कितने लोग है । संसार में साहित्यकार की बड़ी शक्ति होती है । प्रेस भी उसमें शामिल है, पुस्तक लेखक भी शामिल हैं, दार्शनिक भी उसमें शामिल है, चिन्तक भी शामिल हैं, कवि भी उसमें शामिल हैं । इस तरीके से जिनके हाथ में जनमानस को प्रभावित करने की प्रचण्ड शक्ति है, मुझे उनके पास भी जाना पड़ेगा और जाकर के केवल परामर्श ही नहीं देना पड़ेगा, बल्कि उनको मजबूर भी करना पड़ेगा ।

अंगद लंका गया था और उसने रावण की सभा में पाँव जमाया था और यह प्रमाणित किया था कि मैं सरल स्वभाव का तो हूँ, लेकिन सामान्य शक्ति का नहीं हूँ, असामान्य शक्ति का हूँ और यह बात हर एक राक्षस को माननी पड़ी थी कि जिससे उन्हें लड़ाई लड़नी पड़ेगी वह कोई मामूली आदमी नहीं है, कोई बड़ा आदमी है । मैं भी अपने गुरुदेव का अंगद और सन्देश वाहक के रूप में सारे विश्व में जाऊँगा और यह कहूँगा कि भगवान की प्रेरणा और इच्छा यह है कि आप लोगों को अपनी गतिविधियाँ बदल देनी चाहिये । पिछले दिनों जो भी रही हों, किसी प्रकार और स्वाभाव की रही हों, सम्पत्ति कमाने की रही हों, अपने स्वार्थ और विशेष लाभ के लिये रही हों । पहले जो भी रही हों, वह रही हों, लेकिन आगे जाकर के उन गतिविधियों में फर्क करना ही चाहिये और अपना मुँह उस ओर मोड़ना ही चाहिये जो कि युग निर्माण के लिये भगवान की इच्छा के अनुरूप हों । साहित्यकारों की बात मैंने कही, कलाकारों की बात मैं कहना चाहता हूँ । आगे मैं कलाकारों के पास भी जाऊँगा, क्योंकि कला मनुष्य के हृदय को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती रही है, और अभी भी कर रही हैं । सिनेमा कितना काम कर रहा है । सिनेमा संसार के एक चौथाई जनता को प्रभावित कर रहा है । एक चौथाई जनता को इच्छानुसार ढाल रहा है बुरा या भला अगर ये बुरी इच्छा में ढालने वाली रीति बदल दी जाय और अच्छी दिशा में ढालने वाला प्रयास किया जाय तो आप समझ सकते हैं, जनता के मस्तिष्क को बदलने में, ढालने में कितना बड़ा काम हो सकता है । गायन को बदल दिया जाय, संगीत को बदल दिया जाय, नारी के चित्र को बदल दिया जाय, मूर्ति को बदल दिया जाय, कला केन्द्रों में जो कुछ भी चीजें आती हैं अगर कलाकार और कला के संचालक उसको बदल दें तो युग निर्माण का वह कार्य पूरा हो सकता है जिसको हमने पिछले दिनों धर्म मंच के माध्यम से भारतवर्ष में सम्पन्न किया है । कार्य वह लोग भी कर सकते हैं, साहित्यकार भी कर सकते हैं, कलाकार भी कर सकते हैं ।

एक और बात रह जाती है धर्म गुरुओं के सम्बन्ध में । धर्म गुरुओं की शक्ति कम है क्या ? धर्म गुरुओं की बड़ी शक्ति है । अभी भी आपने देखा न, थोड़े दिन पहले सर आगा खाँ को तोला गया था । कितने करोड़ रुपये का सोना था । अभी भी हो रहा है, कल-परसों ही दिल्ली का समाचार है कि एक स्वामी जी को छै लाख रुपये के नोटों से तोला गया है । उसके पहले

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

किसी को सोने से तोला गया, किसी को चाँदी से तोला गया । तोलने की प्रथा सन्त महात्माओं में भी चली है नेताओं का तो कहना ही क्या ? किसी समय केवल उनकी सम्पत्ति देखी जाय कि उनका प्रभाव कितना है तो प्रत्येक सन्त-महात्मा का, शंकराचार्य का, इसका-उसका प्रभाव भी हजारों-लाखों में श्रोताओं तक हैं , प्रत्येक सन्त-महात्मा के हजार-दो हजार अनुयायी तो होते ही हैं । कोई-कोई ऐसे भी धर्म गुरु हैं जिनके लाखों-करोड़ों अनुयायी हैं । ईसाइयों के पोप विशप हैं जिनके करोड़ों अनुयायी होते हैं । इसी तरीके से भिन्न विषयों के धर्मगुरुओं का बड़ा विस्तार है । धर्म गुरुओं से मुझे मिलने जाना ही चाहिये और जाऊँगा ही और कहूँगा कि आपको अपनी गतिविधियाँ बदल देनी चाहिये । केवल भगवान के नाम लेने वाली बात सिखाने तक से या पूजा के मंत्र सिखाने तक से अपने कर्त्तव्य का अन्त नहीं कर लेना चाहिये । बल्कि जिन लोगों पर आपका प्रभाव है उन लोगों को, उनका बौद्धिक निर्माण करने के लिये और समाज के प्रति अपना योगदान देने की बात भी कहनी चाहिये । अध्यात्म का यही तो वास्तविक उद्देश्य है । पूजा का यही तो वास्तविक उद्देश्य है । धर्माचार्यों का यही तो वास्तविक कर्त्तव्य है । ऐसा कर्त्तव्य का उद्बोधन करने के लिये मुझे उन धर्माचार्यों के पास भी जाना पड़ेगा जो न केवल हिन्दुस्तान में हैं बल्कि हिन्दुस्तान के बाहर भी हैं । वे प्रभावित होंगे कि नहीं ये, कौन कहता है, लेकिन मैं जानता हूँ प्रभावित उनको होना ही चाहिये । नारदजी गये थे और थोड़े ही समय तक बाल्मीकि के पास रहे और वाल्मीक को प्रभावित ही होना पड़ा । थोड़ी देर तक नारद जी ध्रुव के पास रहे, उनको शिक्षा दी और ध्रुव को प्रभावित ही होना पड़ा । प्रहलाद के बारे में भी यही है कि नारद की प्रेरणा से प्रहलाद ने भी अपनी गतिविधियाँ बदल दीं और कितने ही लोग हैं । भगवान बुद्ध के बारे में भी यही बात आती हैं कि आम्रपाली से उन्होंने कहा कि तुम अपना जीवन बदल दो , बदल दिया, उन्होंने । अँगुलीमाल था, उससे कहा गया बदल दो तो उसने बदल ही दिया । मैं समझता हूँ मैं स्वयं तो इस लायक नहीं लेकिन जिस सत्ता का सन्देश वाहक हूँ उस सत्ता का फोर्स मेरे अन्दर इतना जबरदस्त है और वह ऐसा है कि मैं उनका सन्देश ले करके जाऊँ तो उससे बहुत लोगों में परिवर्त्तन लाया जा सकता है और सारी दुनियाँ के लोगों का निर्माण किया जा सकता है । एक छोटा सा प्रयास हमने हिन्दुस्तान में हिन्दू समाज में धर्म मंच के माध्यम से किया था उसका हजारों गुना विस्तार बन सकता है और वह नये युग निर्माण करने का दिन समीप से समीपतम भी आ सकता है । अभी मैंने तीन जनों का जिक्र किया-धर्माचार्यों की बात कही, साहित्यकारों की बात कही और कलाकारों की बात कही । तीन वर्ग अभी और भी रह जाते हैं जो बड़े महत्वपूर्ण हैं । एक वर्ग उनका है जिनको हम विज्ञान कहते हैं । विज्ञान ने इन सौ-दो सौ, वर्षों में सब परिवर्त्तन करके रख दिया कि हमको हैरत होती है । कोई मरा हुआ पाँच सौ वर्ष पुराना व्यक्ति कहीं हो और वह यहाँ अगर आय और इस जमाने को देखे तो वह जादू का युग कहेगा । ये घड़ियाँ आज से पाँच सौ वर्ष पहले कहाँ थीं ? बिजली पाँच सौ वर्ष पहले कहाँ थी ? रेडियो पाँच सौ वर्ष पहले कहाँ था ? हवाई जहाज और पानी के जहाज कहाँ थे टेलीफोन और टेलीग्राम कहाँ थे पाँच सौ वर्ष पूर्व । आजकल जितनी मशीन दिखायी पड़ती है पाँच सौ वर्ष पूर्व नामो निशान भी नहीं था उसका । विज्ञान ने आदमी के जीवन को कितना परिवर्तित और सुविधाओं से युक्त, कितना सम्पन्न बना दिया है । यह विज्ञान आदमी का बहुत कुछ कर सकता है, विनाश भी कर सकता है । यह क्या नहीं कर सकता ? अखण्ड-ज्योति में कोई चार लेख ऐसे छपे हैं कि यह भी प्रयास किये जा रहे हैं कि मनुष्यों के मस्तिष्कों को मनचाही दिशा में ढाल दिया जाय । अगर मनुष्यों के मस्तिष्कों को कहीं ऐसे निकम्मे रूप में ढाल दिया गया तो आदमी जानवर से भी गया बीता हो जायगा । इसीलिये इस भयंकर समय में स्मरण शक्ति वस्तुत: राजसत्ताओं के हाथ में नहीं वैज्ञानिकों के हाथ में है । उस समय में जब हिटलर अपने चरम उत्कर्ष पर था, जापान एशिया में हुंकार रहा था, इटली और दूसरे देशों में यह । तब विज्ञान का एक छोटा सा कण जिसको हम एटम बम कह सकते हैं, जापान के नागासाकी और हिरोशिमा पर गिरा और उस बम ने सारी दुनिया का नक्शा बदल दिया । जो समर्थ थे उनको कमजोर बना दिया, कमजोरों को समर्थ बना दिया सारी की सारी बाजी इधर से उधर हो गयी । ये विज्ञान का था चमत्कार । विज्ञान का चमत्कार आगे भी हो सकता है । विज्ञान को अध्यात्म का अनुयायी होना चाहिये विनाशकारी नहीं, विकासशील होना चाहिये ।

इसके लिये उनको क्या करना होगा, और क्या करना चाहिये, इसके लिये मुझे वैज्ञानिकों से मिलना होगा और इस यात्रा के लिये जो कार्यक्रम बना है उसमें वैज्ञानिकों से मिलना भी शामिल है , उनको प्रभावित करना भी शामिल है उनको रास्ता बताना भी शामिल है । उनको किस तरीके से अध्यात्म का अनुयायी हो करके वह शोधें करनी चाहिये जिससे कि विज्ञान और अध्यात्म एक दूसरे के विरोधी न होकर के पूरक हो जायें । ऐसे अनेक कार्यक्रम है जिनमें मुझे सम्मिलित होना होगा, भाग लेना होगा, उनसे विचार विमर्श करना होगा राजनीतिज्ञों से भी मिलना होगा । उनसे कहना होगा कि राजनीति के वर्त्तमान स्वरूप को बदला जाना चाहिये । इसमें हर वर्ग और देश का स्वार्थ मुख्य है । हर देश अपने देश के नागरिकों की बात सोचता है और अपने हित की बात सोचता है । यह प्रवृत्ति नहीं होनी चाहिये और यह पद्धति बदल जानी चाहिये । प्रत्येक राजनीतिज्ञ को इस मायने में विचार करना चाहिये कि अगले दिनों एक विश्व बनने वाला है, एक राष्ट्र बनने वाला है, एक धर्म बनने वाला है, एक संस्कृति बनने वाली है, एक विशाल परिवार बनने वाला है । ऐसी दिशा में यही मुनासिब होगा कि उनका जो विचार और दृष्टिकोण हो सार्वभौम हो केवल देश विशेष या वर्ग विशेष के स्वार्थों के लिए नहीं । अगर ये राजनीतिज्ञ इस तरीके से थोड़े से भी बदल जाते हैं तो हमारे लिए विश्व के नव निर्माण के लिये बहुत सारा रास्ता साफ हो जाता है ।

इसी प्रकार से सम्पत्ति वालों से मुझे कहना ही चाहिये, कहना ही पड़ेगा कि अब सम्पत्ति के मरने के दिन आ गये । अब विपुल सम्पत्ति का युग चला गया, कोई आदमी विस्तृत रूप से बहुत धनी रह नहीं सकेगा । किसी प्रकार रह नहीं सकेगा । समय की हवा बहती चली आ रही है कि समान वितरण होना ही है । लोगों को समान धन का हिस्सा मिलना ही है । सम्पत्ति का राष्ट्रीयकरण होने वाला है । हर आदमी को श्रम करना ही पड़ेगा । पूँजी व्यक्ति के पास अब

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

नहीं रहेगी । व्यक्ति के पास जहाँ पूँजी है उससे मुझे कहना ही चाहिये कहना ही पड़ेगा । जिस तरह मरने के वक्त आदमी संन्यास ले लेता है, दान पुण्य कर लेता है, गौदान करता हैं, कहता है सारी जिन्दगी के पापों का प्रायश्चित कर लूँ । अब पापों के प्रायश्चित का समय है । जिन लोगों के पास धन संग्रहित है वह उसको प्रायश्चित में खर्च कर डालें तो यह बहुत बड़ी बुद्धिमानी होगी । आज पैसे की जरूरत है इसलिये कि मनुष्यों का मस्तिष्क ढाला जाय, मनुष्यों के विचार बदले जायें, उनको शिक्षा दी जाय । उसके लिये बहुत बड़े कलेवर खड़े करने पड़ेंगे । विनाश के लिये कितने बड़े कलेवर खड़े किये गये हैं उनके माध्यम से विकास के लिये भी वही कलेवर खड़े करने चाहिये । सारी दुनिया में साहित्य ही एक ऐसा माध्यम है कि जिसने मनुष्य का विकास किया है । विज्ञान के वह पहलू हैं जिन्होंने मनुष्य का विकास किया है । कलाकार और सिनेमा शिक्षा का वह पहलू है जिन्होंने दुनिया का सबसे अधिक विनाश किया है । उसमें अरबों और खरबों रुपयों की पूँजी लगी हुई है । विनाश में जब इतनी पूँजी लगी हुई है तो विकास तो बड़ा ही होता है । विनाश में कम में काम चल जाता है । एक आदमी को मारने में एक रुपये का खर्च काफी होता है । एक रुपये का छुरा काफी होता है लेकिन एक मनुष्य को बनाने, पढ़ाने, लिखाने और बड़ा करने में कितने पैसे और समय की जरूरत पड़ती है । हमको नया युग बनाना है, नया मनुष्य बनाना है, नया विश्व बनाना है तो उसके लिये कितनी बड़ी पूँजी की जरूरत पड़ेगी जब कि विनाश के लिये इतनी बड़ी पूँजी लगी है । अनुमान इसी से लगाया जा सकता है । हमें पूँजी वालों से कहना ही पड़ेगा कि आपके पास जो है उसे व्यक्तिगत सुधार के लिये मत खर्च कीजिये । उसको लोक मंगल के लिये निकाल लिये । अगर वह नहीं मानते हैं तो उसके मुकाबले की वह चीज खड़ी करनी पड़ेगी जिससे कि नई पूँजी उदय हो सके ।

लोगों के पास पैसे हैं किसी के पास जेवर के रूप में हैं, किसी के पास किसी रूप में हैं जायदाद के रूप में । खाने भर के लिये वह रखे अनावश्यक पूँजी को इकट्ठी न करें और एक सामाजिक स्तर पर पूँजी खड़ी करें । लिमिटेड कम्पनी या सहकारी समिति के रूप में खड़ी करे । उससे अपनी आवश्यकताओं को पूरा करें जिससे कि नया निर्माण करने के लिये नई विचारधाराओं के निर्माण करने के लिये जा सकें भले ही से वह सहायता के आधार पर ही क्यों न हों । मुझे इस पूँजी को आमन्त्रित करना पड़ेगा । इसके लिये भी सारी दुनिया को मुझे जगाना है और जगाना ही चाहिये ।

यह पाँच क्रियाकलाप मैंने आप लोगों के सामने बताया । अगले दिनों में मुझे इसकी व्यवस्था करनी पड़ेगी और भारतवर्ष के लोगों को अपने पास बुलाना पड़ेगा । भारतवर्ष में दौरा करने और जाने-आने का मेरा मन नहीं है और शौक भी नहीं है और अवकाश भी नहीं है । भारतवर्ष के लोग तो आसानी से मेरे पास भी आ सकते हैं और उन्हें वहीं आना चाहिये शान्ति कुंज में जब मैं होऊँ तब मुझसे मिलने के लिये । अगर मैं हिन्दुस्तान में भी घूमता फिरूँ तो मेरे अन्य सारे काम कैसे होंगे ? वैज्ञानिक अध्यात्मवाद समितियाँ मिलाने के लिये पाँच साल में मुझे अत्यधिक महत्वपूर्ण कार्य करना है और बुद्धिजीवी वर्ग को प्रेरणा देने वाले आधारभूत कारण ढूँढ़ निकालने हैं जिससे कि मस्त को मस्त बनाया जा सके । ये पाँच वर्ष के कार्यक्रम हैं मेरे । इन पाँच वर्षीय कार्यक्रमों को मैं यहाँ शान्तिकुंज में रह कर के संचालित करता रहूँगा इसकी गतिविधियों का केन्द्र रहेगा यह । यहाँ से समाज के और मेरे बीच का जो सम्पर्क है वह इसी केन्द्र के द्वारा होता रहेगा । केन्द्र इस तरीके से कह सकते हैं कि जिस तरीके से टेलीफोन केन्द्र से होकर यहाँ से वहाँ जा कर मिल जाता है, उसको वहाँ मिला देते हैं, उसको वहाँ छोड़ देते हैं । यह सुविधा का प्रश्न है मेरे और तुम्हारे बीच का, इसी रूप में इसको बनाया था और इसे आन्दोलन के रूप में खड़ा किया गया था अभी भी खड़ा है । पाँच वर्ष के बाद में इसको महिला क्रान्ति को सौंप दिया जायगा महिला जागरण के लिये और यह महिला जागरण केन्द्र शांतिकुंज के नाम से प्रख्यात होगा । यहाँ से वह कार्य होगा कि ये महिलायें सारे विश्व भर में नारी जागरण का काम कर सकेंगी और एक नये युग को लाने के लिये एक जुट हो कर कार्य कर सकेंगी यह करना ही पड़ेगा । नारी के जिम्मे वह नेतृत्व आयेगा जिसके द्वारा भावनात्मक विकास के अगले कदम उठाये जा सकें । यह अगले कार्यक्रम होंगे । यह मेरी अब तक की गतिविधियाँ हैं । पाँच वर्ष बाद क्या होगा मैं कुछ नहीं कह सकता । मुझे कहाँ जाना है यह भी मैं कुछ नहीं जानता । समय-समय पर जब मुझे गुरूजी से संकेत मिलते रहते हैं उसी अनुसार मैं काम करता रहता हूँ । अब मेरी समस्या, व्यवस्था, प्रतिज्ञा मुझे कुछ नहीं मालूम जब जो कार्य समय-समय पर मेरे सामने आये आते रहेंगे मैं करता रहा हूँ और उसी तरीके से करता रहूँगा । यही कार्यक्रम है और यही है मेरी गतिविधियों का संक्षेप और सारांश जिसके आधार पर मैं चलता रहा और चलता रहूँगा । अच्छा ! आज की बात समाप्त । ॐ शांति 卐

सन्त सम्राट का आतिथ्य स्वीकार किया । राजा ने उन्हें सत्कारपूर्वक कई दिन ठहराया सत्संग का लाभ लिया । साथ ही राजमहल के अनेक बहुमूल्य पदार्थ दिखाये । रत्न भण्डार में लाये और रखे हुए मणि मुक्तकों का परिचय कराने लगे । सन्त मौन रहकर यह सब सुनते रहे ।

एक बार सन्त ने राजा को अपनी कुटिया पर आमन्त्रित किया । समयानुसार वे पहुँचे भी । आतिथ्य के उपरान्त सन्त ने आश्रम की छोटी-छोटी वस्तुओं का दिखाना आरम्भ कर दिया । सस्ती और सामान्य वस्तुएँ देखने में राजा को रुचि नहीं थी तो भी वे शिष्टाचार वश उन्हें उपेक्षापूर्वक जैसे-तैसे देखते रहे ।

देर तक जिसकी उपयोगिता बताई गई वह थी आटा पीसने की हाथ-चक्की ।

राजा की अरुचि अब अधिक मुखर होने लगी वे बोले-"यह तो घर-घर में रहती है । एक दो रुपये मूल्य की होती है । इसमें क्या विशेषता ।"

सन्त गम्भीर हो गये । बोले आपके रत्न भी पत्थर के हैं । किसी काम नहीं आते, उल्टे रखवाली कराते हैं । जब कि चक्की जीवन भर उपकार करती और अनेकों का पेट भरती है । रत्न राशि से इसका महत्व कहीं अधिक है ।

राजा का विवेक जगा और वे उपयोगिता-अनुपयोगिता का अन्तर समझने लगे ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

पाँच प्राण-पंचकोष पाँच देवता

(५ अगस्त १९७८) शांतिकुंज परसर

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ-
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो, भाइयो, मैं आपसे एक दिन ' पाँच देवता' के बारे में वर्णन कर रहा था । सारा का सारा ब्रह्माण्ड एक पिण्ड के समान है । पिण्ड का मतलब है-हमारा शरीर । यह एक बड़े विशाल ब्रह्माण्ड का प्रतीक है । जो ब्रह्माण्ड में है, वही हमारे शरीर में विद्यमान है । पिण्ड के भीतर क्या-क्या भरा पड़ा है ? पंचतत्व भरे पड़े हैं, पाँच प्राण भरे पड़े हैं । ये ही पाँच देवता हैं । मनुष्य अगर भीतर के देवता को जगा ले तो बाहर के देवता स्वयं खिचे चले आते हैं । भीतर का मैगनेट जब खींचता है तो वे स्वयं खिंचे चले आते हैं । पेड़ों का मैगनेट बादलों को खींचता है । जहाँ-जहाँ घासपात, पेड़ पौधे होते हैं वे बादलों को खींचते हैं तथा बादल बरसते हैं । जहाँ रेगिस्तान होता है, वहाँ बादल आते तो हैं, परन्तु रेगिस्तान का मैगनेट उन्हें खींच नहीं पाता और वे वापस चले जाते हैं । भीतर का देवता जगे तो बाहर के देवता हमारे पास स्वयं आ जाते हैं । भीतर का देवता मरा हुआ हो तो बाहर के देवता काम नहीं करते हैं ।

विवेकानन्द का देवता जगा तो रामकृष्ण परमहंस आये और झल्लाकर कहा तू बी. ए. के फेर में पड़ा है, चल हमारा काम रुका पड़ा है । रामकृष्ण परमहंस विवेकानन्द के अन्दर की कसक को समझ गये । उनके पास नित्य हजारों लोग आते थे, जिनको किसी प्रकार की मुसीबतें होती थीं । वे उन्हें थोड़ा आशीर्वाद, वरदान देकर विदाकर देते थे परन्तु रामकृष्ण परमहंस विवेकानन्द के पास रोज जाते थे । एक बार विवेकानन्द ने कहा-आप क्यों आकर हमें तंग करते हैं, हमारा मन जब होगा तो हम आयेंगे, आप हमें परेशान न करें । रामकृष्ण परमहंस ने देखा कि इसके अन्दर कसक है, इसी से हमारा काम हो सकता है और उन्होंने उन्हें धन्य कर दिया । हमारे गुरु भी हमारे पास आये और हम धन्य हो गये ।

मित्रो ! मरी हुई लाश का पता लग जाय तो कुत्ते पहुँच जाते हैं तथा लाश को खाकर खत्म कर डालते हैं । देवताओं के बारे में भी यही बात है । हर एक के पास देवता नहीं आते हैं । वे पूजा करने, प्रसाद चढ़ाने वालों को अपनी शक्ति, कृपा नहीं देते हैं । देवता सवा रुपये के प्रसाद के पीछे नहीं दौड़ते । देवता भिखारी नहीं होते । हम कचौड़ी खिलायेंगे, हमारा काम कर दीजिए । उनकी हैसियत इतनी कम नहीं है कि वे कचौड़ी के लिए जायें । बड़े काम के लिए जायेंगे । मित्रो, सवा रुपये में भगवान मनोकामना पूर्ण नहीं कर सकते हैं । हमको भगवान की गरिमा का ख्याल रखना होगा । आदमी के अन्दर के खजाने का ध्यान रखना होगा । पहले जमाने के लोग खजाने का पता लगाते थे कि कहाँ-कहाँ मिट्टी के अन्दर सोना, चाँदी या अन्य धातुएँ गड़ी हैं । उसी प्रकार देवताओं का प्रवेश वहाँ होता है जहाँ 'व्यक्तित्व के कण' का खजाना होता है । ऐसे आदमी पर महान आदमी, तपस्वी, महात्मा, ज्ञानी, देवात्मा' की कृपा अनुदान बरसने लगते हैं ।

अध्यात्म, जालसाजी, मुहल्ले वालों को फँसाने, ग्राहक को फँसाने, देवी-देवताओं को फँसाने की विद्या का नाम नहीं है । अध्यात्म आदमी के व्यक्तित्व के विकास का नाम है । सुन्दर फूल से जब सुगन्ध निकलती है तो मधुमक्खियाँ स्वयं आ जाती हैं । उसी प्रकार मनुष्य का खिले हुए फूल की तरह व्यक्तित्व होना चाहिए । गुरू, महात्मा, संतों और देवताओं को फँसाने की विद्या मत करो, इसमें फायदा नहीं है । देवता बड़े जबरदस्त हैं । मछली को पकड़ने के लिए आटे की गोली, बंसी काम आती है । ऐसा देवता नहीं है । देवता से दूर रहो । वह तो हमारे भीतर है-उसे जगा । अपने भीतर वाले देवता को विकसित किये बिना, बाहर के देवता को हम प्रसन्न नहीं कर सकते हैं । अगरबत्ती, बताशे चढ़ाकर देवताओं का मखौल न करें । हमें अपने भीतर के देवता का विकास करना चाहिए । इसी का नाम जप, इसी का नाम ध्यान, इसी का नाम चान्द्रायण व्रत है । यह हम आपको भले आदमी बनाने, श्रेष्ठ बनाने के लिए बतला रहे हैं । आपके भीतर सब चीजें विद्यमान हैं । पंच देवता कहाँ से आते हैं ? वे आपके भीतर हैं । मिट्टी की परतें जम गयी हैं, दबे पड़े हैं । उन्हें जगाने की विधा के पहले उन्हें साफ करना होगा । हम उसे सिखाते हैं । पहले अपने आप को विकसित कीजिए । पाँच भंडार, पाँच देवताओं को जगाने की विधि 'पंचकोष की उच्चस्तरीय साधना' कहलाती है । ये गायत्री के पाँचमुख हैं, जिनका सम्बन्ध सूक्ष्म शरीर से है । स्थूल शरीर याने हाथ-पैर से हम आठ घण्टे काम करके किसी तरह आठ-दस रुपये कमा लेते हैं । यह स्थूल शरीर कमजोर है ।

हमारे भीतर एक सत्ता सूक्ष्म है । वह स्थूल से ज्यादा शक्तिशाली है । नेपोलियन का वजन, लम्बाई, चौड़ाई सामान्य व्यक्ति की तरह थी, परन्तु उसका सूक्ष्म महान था । वह आल्पस पर्वत के पास गया और बोला हमें रास्ता दीजिए, नहीं तो हम आपको उखाड़ कर फेंक देंगे । बेटे ! आल्पस पर्वत हिमालय से ज्यादा ऊँचा है । नेपोलियन ने अपनी सेना के साथ उसे पार कर दिखाया । सूक्ष्म की ताकत को अगर हम समझ सकें तो मजा आ जायेगा । गाँधी जी का सूक्ष्म शरीर मजबूत था । वे पाँच फुट दो इंच कद वाले थे तथा उनका वजन छियानवे पौंड था । कोई भी चौदह साल का बच्चा उनसे ज्यादा बजनदार हो सकता है । पर गाँधी जी की ताकत पहलवान से ज्यादा थी । अंग्रेजों का राज्य जो अफ्रीका से

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

हिन्दुस्तान तथा न्यूजीलैण्ड तक फैला था । जिसके राज्य में कभी सूरज अस्त नहीं होता था । गाँधी जी की सूक्ष्म ताकत ने उन्हें मजबूर कर दिया भारत छोड़ने के लिए । गाँधी जी ने कहा 'क्विट-इंडिया' अर्थात् अंग्रेजो भारत छोड़ो । अंग्रेजों ने कहा आपके पास क्या है ? बन्दूक है जो हम डर के मारे हिन्दुस्तान छोड़ें । गाँधी जी ने जनता से कहा-'डू और डाइ' करो या मरो । सन् उन्नीस सौ बयालीस के आन्दोलन में सभी ने उनका साथ दिया । इसमें हजारों आदमी गोली के निशाना बना दिये गये, जेल गये, फाँसी के फन्दे पर चढ़ गये । मित्रो, यह गाँधी जी के सूक्ष्म शरीर की आवाज थी ।

स्थूल शरीर में क्या रखा है । वह रोटी खाता रहता है, गन्दगी निकालता रहता है । हाड़-मांस के बने इस शरीर को अगर फाड़ दें तो केवल बदबू भरी गन्दगी ही दिखायी पड़ेगी यह बदबू मलमूत्र और पसीने के रास्ते निकलती है । हम लक्स साबुन लगाते हैं, परन्तु ये बदबू समाप्त नहीं होती है । इसके लिए हम मंजन करते हैं, दाँत साफ करते हैं, कभी पान खाते हैं तो कभी सुपारी खाते हैं परन्तु आदमी के भीतर जो जखीरे काम करते हैं, वह ताकत सूक्ष्म की है । इसी सूक्ष्म शक्ति को विकसित करने का नाम अध्यात्म है । बाहर को विकसित करने का ढंग आपको मालूम है । कसरत कीजिए, पौष्टिक चीजें खाइये, विटामिन्स खाइये, स्थूल को विकसित कीजिए । परन्तु सूक्ष्म किस तरह से विकसित होगा, यह कोई नहीं जानता । दिमाग को बढ़ाने एवं कन्ट्रोल करने की विधि सबको मालूम है । फिजिक्स, इकोनॉमिक्स पढ़िये और दिमाग को बढ़ाइये, पर यह सब भौतिक उपलब्धियाँ हैं । हम जिसे सिखाना चाहते हैं वह 'चेतनशक्ति' है जिसे ऋद्धि-सिद्धि कहते हैं । नेपोलियन के भीतर का वह अंश विकसित हुआ था जो लोगों को प्रभावित करता था, सेना को प्रभावित करता था । एक बार नेपोलियन को सेना ने गिरफ्तार करना चाहा । चारों तरफ से उसे घेर लिया गया । उसने सोचा-ये लोग मुझे गिरफ्तार कर लेंगे, अगर गिरफ्तार न हुआ तो गोली मार देंगे । उसकी चेतन शक्ति जागृत हो गयी । उसने कड़क कर कहा रुको । सारे-सिपाही खड़े हो गये । नेपोलियन ने कहा दोस्तो, हम तुम्हारे कप्तान हैं । चलो हमारे साथ, बन्दूकों को नीचे करो । उसने आदेश दिया-पीछे घूमो । सारे के सारे सिपाही नेपोलियन के साथ विजली के तरीके से पीछे-पीछे चल पड़े । नेपोलियन शेर की तरह आगे चल रहा था । वह जबरदस्त आदमी था ।

मनुष्य के अन्दर वाला माद्दा अध्यात्म का वह हिस्सा है जो लोगों को, संसार को प्रभावित करता है, चमत्कार दिखाता है-यानी भौतिक चीजों का चमत्कार दिखाता है । यह अध्यात्म तो है परन्तु भौतिक वस्तुओं को प्रभावित करने वाला माद्दा है । एक हिस्सा हमारा वह है जिसे सिद्धि कहते हैं । एक और माद्दा हमारे भीतर है जो दिव्य चेतना को प्रभावित करता है, उसे हम भगवान कह सकते हैं । दैवी सत्ता कह सकते हैं । पदार्थ का भी महत्व बहुत है ! एक 'लेसर' किरणें होती है जिसे छोड़ते ही चन्द्रमा तक जा पहुँचती है । लेसर में वह शक्ति होती है कि एक जगह से छोड़ने पर वह दूसरे स्थान पर जाकर उसे जलाकर खाक कर देती है । एक पदार्थ माध्यम से टेलीफोन का बटन दबाते ही करोड़ों मील दूर बैठे व्यक्ति से हम बातें कर लेते हैं । यह 'फिजिक्स' की बातें हैं जो पदार्थ को प्रभावित करती है । मनुष्य के सूक्ष्म का एक हिस्सा वह है जो वस्तु यानी पदार्थ को प्रभावित करता है । इसके द्वारा हम चमत्कार दिखा सकते हैं, संसार को प्रभावित कर सकते हैं । यह माद्दा नम्बर दो है जिसे हम सिद्धियाँ कहते हैं ।

चेतन शक्ति महान है । उसमें भावना काम करती है, संवेदना काम करती है, देवत्व काम करता है । अगर दोनों का तालमेल हो जाय तो मनुष्य को ऋद्धि-सिद्धियाँ प्राप्त हो सकती है । पहले बड़ी-बड़ी बीमा कम्पनियाँ हुआ करती थीं, जो छोटी-छोटी बीमा कम्पनियों का उत्तरदायित्व उठाती थीं । एक और बीमा कम्पनी है, जिसे हम भगवान कहते हैं । इस बड़ी शक्ति के साथ यदि हमारा तालमेल बैठ जाय, लेनदेन प्रारम्भ हो जाय तो मजा आ जाय । यह ऋद्धि वाला हिस्सा है जो हमारी जीवात्मा से सम्बन्ध रखता है । सिद्धियाँ चमत्कार वाला पक्ष है जिसे दिखाया जा सकता है । ऋद्धि हमारा वैभव है जो हमारी प्रगति करने में सक्षम है । इन दोनों को विकसित करने का नाम ही अध्यात्म है । मित्रो, अध्यात्म के और रास्ते हो सकते हैं, यह मैं नहीं कहता कि यही रास्ता है ।

ऋषियों की कला-ऋषियों की विद्या-यह पंचकोषी साधना है जिसमें पाँच देवों का वर्णन आता है । जिसे हम कल बता रहे थे । गायत्री की उच्चस्तरीय साधना में हमने आपको अभी ध्यान करना सिखाया था । आगे चलकर हम इसकी सांगोपाग तैयारी करायेंगे, परन्तु इसके पहले हम यह जानना चाहते हैं कि आपके भीतर संकल्प बल है कि नहीं । यह सारा का सारा अध्यात्म संकल्प बल पर टिका है । हम आपको चान्द्रायण व्रत में इसी का इम्तिहान लेने एवं प्रारम्भिक जानकारी देने हेतु बुलाते हैं कि आप में संकल्पबल है या नहीं । यह हिम्मतवालों का, बहादुरों का काम है, संकल्पबल वालों का काम है । डाका डालने में, चोरी करने में हिम्मत चाहिए । इन्हें कोई पकड़ले तो कचूमर निकाल कर रख देगा, फिर भी डाकू सोचता है कि चलो जो होगा देखा जायगा । इसी प्रकार स्वस्थ कामों के लिए-ऊँचे उद्देश्यों के लिए हिम्मत चाहिए । संसार के हर काम में हिम्मत काम करती है । यही हिम्मत आदर्शवादी जीवन जीने के लिए, अपने आपको नियंत्रित करने के लिए-अंकुश लगाने के लिए आवश्यक है ।

यहाँ शांतिकुंज में हम आपको साधना कराते हैं, ध्यान कराते हैं । पंचकोश साधना भी करायेंगे, पर इसके लिए हिम्मत चाहिए । आप में हिम्मत होनी चाहिए । यह इन्द्रियाँ जो बार-बार तंग करती है उसे रोकना चाहिए । अभी हम सिद्धान्तों की बात कहते हैं, क्योंकि सिद्धान्त के नाम पर आपके पास कुछ नहीं है । जब स्वार्थ सामने आता है तब उस समय आदमी इतना कमजोर मालूम पड़ता है कि

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

हम कुछ कह नहीं सकते मन जो कहता है हम वही करते हैं । अरे, तूने मन को नहीं मारा । उसे मारना होगा । मन ने इन्द्रियों को वश में कर लिया है । घोड़े को चाबुक से जिस तरह वश में करते हैं उसी तरह मन को चाबुक से मारना होगा । नहीं, साहब मन नहीं लगता है, तो खाना बन्द कर दे । अकेला मन मालिक हो गया । इस पर अंकुश लगाना होगा । यह भी एक राक्षस है । इस राक्षस के साथ लड़ाई लड़ने का नाम अध्यात्म है । जप और ध्यान से मन को वश में किया जाता है ।

मित्रो, अब हम आपको उपासना के लिए तैयार करेंगे । नहीं गुरुजी, आप तो ऐसे ही अपनी ऋद्धि-सिद्धि हमें दे दीजिए । ऐसे कैसे दे देंगे ? तेरे पास उससे लड़ने का माद्दा है कि नहीं । हमारे गुरु ने चौबीस साल तक हमारा इम्तिहान लिया । चौबीस साल तक जौ की रोटी और छाछ खाने का आदेश दिया । जौ की रोटी और छाछ के अलावा भी दुनिया में कोई चीज होती है या नहीं, यह हमने नहीं जाना । हमारी इन्द्रियों ने कहा, जीभ ने कहा कि जब सब लोग शक्कर, दाल, नमक आदि खाते हैं तो आप क्यों नहीं खाते ? हमने कहा-हम लोगों के रास्ते पर नहीं चल सकते हैं । लोगों के कहने पर हम चलेंगे तो वे हमारे जीवन को तबाह कर देंगे । लोगों के बताये हुए रास्ते पर हम चलते तो अध्यात्म की ओर हम बढ़ नहीं सकते थे । लोग तो बड़े निकम्मे होते हैं । जहाँ तक सिद्धान्तों का आदर्शों का सवाल है-वे वेकार हैं । लोग डाक्टर हैं, इन्जीनियर हैं, तुरन्त मकान का नक्शा बना देते हैं, इंजेक्शन दे देते हैं, पर जहाँ तक सिद्धान्तों का-आदर्शों का सम्बन्ध है, वे इस रास्ते पर नहीं चल सकते हैं, और न ही ऊँचा उठ सकते हैं । लोगों की सलाह पर चल कर हम अपने जीवन को ऊँचा नहीं उठा सकते हैं ।

अगर आपको आध्यात्मिकता के रास्ते पर चलना है तो हम आपको मोहब्बत करते हैं, प्रसंशा करते है और यकीन दिलाते हैं कि हम आपकी सहायता करेंगे । लेकिन आप एक बात मत करना-अपनी अकल तथा दबाव हमारे ऊपर लादने की कोशिश मत करना । हम इससे इनकार करते हैं । प्रह्लाद ने अपने सम्बन्धियों की बात मानने से इनकार कर दिया था । हमारे शरीर में लोभ, मोह, वासना के रूप में जो सम्बन्धी हैं, उनकी बातों को मानने से हम इनकार करते हैं जो हमें एक कदम भी आगे बढ़ने नहीं देते हैं । इनसे लोहा लेने का नाम अध्यात्म है । अपने परिवार वालों की हमें सहायता करनी पड़ती है । हमारी बीबी है, उसे हमने अग्नि की साक्षी देकर पत्नी बनाया है । उसे पढ़ाना, संस्कारवान बनाना, उसके भविष्य की चिन्ता करना हमारा कर्तव्य है । परन्तु जहाँ तक सिद्धान्त की बात है, हम किसी को हावी नहीं होने देंगे । किसी रिश्तेदार को हम हावी होने देंगे । मीरा बाई के ऊपर रिश्तेदार हावी हो रहे थे और कह रहे थे कि तुम्हें हमारे सिद्धान्तों को मानना चाहिए । मीरा अपने स्तर पर जीवन जीना चाहती थी, जैसा कि उसके गुरु राजासिंह ने बताया था ! परन्तु उसके खानदान वाले मनाकर रहे थे । मीरा ने गोस्वामी तुलसीदास जी को एक चिट्ठी लिखी कि आप बतलायें कि हम क्या करें ? घर वाले इस प्रकार कह रहे हैं और हमारी अन्तरात्मा दूसरी बात कह रही है । हर आदमी सलाह देता है कि आदर्श और सिद्धान्त पर मत चलो । एक हमारा ईमान तथा दूसरा हमारा भगवान के अलावा कोई नेक सलाह नहीं देता है । मीरा की चिट्ठी के जबाव में तुलसी दास जी ने लिखा- जाके प्रिय **न राम बैदेही । तजिये ताहि कोटि बैरी सम यद्यपि परम सनेही.....।**

यह किसकी बात कर रहा था ? हिम्मत वालों की, शक्तिशाली-ताकतवालों की बात कह रहा था । यह शरीर की ताकत नहीं है । यह तो डाकूओं के पास भी होती है । अक्ल वालों का तो कहना ही क्या है ? सारे अक्लवाले जेलखाने में रहते हैं । डकैती, चोरी, जालसाजी, स्मगलिंग आदि सभी में यह माहिर होते हैं । अक्लवान की तलाश करनी है तो कभी जेलखाने चले जाइये । अक्ल हम सही मायने में उसे कहते हैं जो सिद्धान्तों के लिए, आगे बढ़ने के लिए तैयार हो । सिद्धान्तों के मामले में आपकी अक्ल, आपकी हिम्मत यदि आगे-आगे चलने को तैयार हो तो हम आपको अध्यात्म सिखायेंगे । क्या-क्या सिखायेंगे ? सूक्ष्म शरीर की साधना सिखायेंगे । अगर आप पहलवान बनना चाहते हैं तो चलिए हमारे साथ अखाड़े में । अखाड़े में उतरे बिना आप पहलवान नहीं बन सकते । इसी प्रकार जब आपका भीतर वाला हिस्सा हमारी बातों को, दबाव को मान लेगा, तो हम समझेंगे कि आप हमारे इम्तिहान में पास हो गये । एक महीने का इम्तिहान आपका इसीलिए रखा गया है । आपके ऊपर एक महीने के अनुष्ठान का दबाव इसलिए रखा गया है जिससे यह पता चल सके कि इसे आप कर सकते हैं या नहीं । कभी ११ माला कर लिया तो कभी १९ माला जप कर लिया और कह दिया कि गुरुजी अभी हमारा मन नहीं लगता, सितम्बर में कर लेंगे । इस तरह की बहाने वाजी करने वाले के बारे में हमें सोचना पड़ेगा कि उसका सूक्ष्म शरीर जगायें या नहीं । उसके लिए यही कहना पड़ेगा कि बेटा, अभी तू बच्चा है, कमजोर है । तेरे ऊपर हम दबाव नहीं डाल सकते हैं । अभी तो हमने तप का थोड़ा सा नियम बतलाया है । यह शिशु चान्द्रायण है । आगे बड़ा चान्द्रायण करायेंगे । २४ घण्टे में एक गिलास दाल-दलिया लेना होगा । इससे तेरे बेटे की बीमारी ठीक हो जायगी ।

जन्माष्टमी के दिन बच्चे उपवास करते हैं । वे अपनी मम्मी से पूछते हैं कि हम रोटी या शाक खायें अथवा दोनों चीजें लें यह भी बच्चों का चान्द्रायण है । एक बार लें या दो बार ले लें । बेटे, तू अपने ऊपर अंकुश लगाने में कमजोर है । पेट कहता है कि हमें नहीं भरोगे तो हम जिन्दा नहीं रह सकते हैं और हम कहते हैं कि खबरदार, गुरुजी के पास तू नहीं मर सकता है । हमारे गुरुजी हमें चार दिन के लिए हिमालय बुलाते हैं । हिमालय में न फल है न मूल है । पत्तियों के सहारे जीना पड़ता है । चना की तरह, पालक बथुआ की तरह पत्तियाँ होती है जिसे उबालकर खा लिया जाता है

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

तथा जिन्दा रहा जाता है । इससे हमारा शरीर कमजोर नहीं होता था । शरीर कमजोर हो भी तो हमारा सूक्ष्मशरीर ताकतवर होता चला जाता है । तू कहता है कि मांस बढ़ा दीजिए । बेटे, मांस बढ़ने से कोई फायदा नहीं है, तथा मांस के घटने से कुछ नुकसान भी नहीं है । असली शक्ति हमारे भीतर है, जिसे हम 'सूक्ष्म शरीर' कहते हैं । आगे चलकर हम इसे ही शक्तिशाली बनाने का उपक्रम बताने वाले हैं ।

हमारे भीतर शक्तियों के पाँच भण्डार हैं । उनको खोलने का तरीका पंचकोश अनावरण कहलाता है । हमारे स्थूल शरीर एवं सूक्ष्म शरीर में अनेकों ग्लैण्ड्स है जिन्हें हारमोन ग्रंथियाँ कहते हैं । इस तरह की बहुत छोटी-छोटी ग्रन्थियाँ हैं जो हमारे मन को नियंत्रित करती हैं । इनमें प्रमुख हैं आज्ञा चक्र जिसमें पॉजिटिव और निगेटिव दो तरह के करेण्ट चलते रहते हैं । यह मस्तिष्क को कन्ट्रोल करती है । मस्तिष्क में जो शक्ति भरी पड़ी है , उसमें से सात प्रतिशत ही काम आती है, ९३ प्रतिशत बेकार पड़ी रहती है । फिजियोलॉजी वाले इसे जानते हैं । अगर आज्ञाचक्र हमारा जग जाये तो ९३ प्रतिशत को भी हम पकड़ सकते हैं । संयम ने इसके सहारे ही महाभारत का कृत्य दिखाया था । आज्ञाचक्र हमारा टेलीविजन है । अगर यह जागृत हो जाय तो सारे संसार के समाचार हम ज्ञात कर सकते हैं । आज्ञाचक्र ही है जो भीतर की चीजों को पकड़ सकता है ।

आज्ञाचक्र जगाने का ध्यान एक हथियार है । ध्यान किसे कहते हैं ? हमारे मस्तिष्क की जो शक्तियाँ फैलती रहती हैं, उसे एक जगह एकाग्र करना ही ध्यान है । एक छोटे से शीशे के ऊपर अगर सूर्य की किरणें इकट्ठी कर ली जायँ तो उससे आग लग जायगी । यह आग सारे शहर को जलाकर खाक कर सकती है । हमारे मस्तिष्क की शक्तियाँ ही बिखरती रहती हैं । अगर उसे हम एकत्र करलें तब ऐसा योग बन जाता है कि हम क्या बतलायें । बन्दूक की नली में फैली हुई बारूद जमा कर लें तो गोली बन जायगी और वह कमाल कर दिखायेंगी । यह है एकाग्रता । जिस प्रकार बिखरी हुई बारूद कोई विशेष कमाल नहीं दिखा सकती, उसी प्रकार हमारे दिमाग की शक्ति भी बेकार पड़ी है, अगर ध्यान द्वारा इन्हें एकाग्र कर लें तो योगी की तरह हम भी इसका लाभ उठा सकते हैं । समाधि लगाने वाले योगी कहते हैं कि हम मरेंगे नहीं । हम भी आप से कहते हैं कि आप भटकना बन्द कीजिए । एकाग्रता लाइये । कन्ट्रोलिंग पावर का ही नाम ध्यान है । इसके द्वारा हम ऐसी शक्ति इकट्ठी कर लेते हैं कि उसका क्या कहना । मैस्मेरिज्म करने वाले इसी ध्यान-शक्ति के सहारे चमत्कार दिखाते हैं । किसी को सम्मोहित या बेहोश कर देते हैं ।

आपको हम आरम्भिक ध्यान शाम को आधा घण्टा सिखात हैं । मैस्मेरिज्म अभी नहीं बतलाते हैं । ध्यान के अंतर्गत हम आपको जो 'कॉशन' देते हैं उसे मानिये । इसे जब आप करने लगेंगे तो अगला वाला उच्चस्तरीय ध्यान बाद में सिखायेंगे । यह मत कहिये कि गुरूजी हर चीज को जल्दी कर दीजिए । पिताजी मेरी भी मूछें निकाल दीजिए, आपकी इतनी बड़ी हैं । आज ही भगवान दिखा दीजिए, भगवान का दर्शन करा दीजिए, सिद्धि दिखा दीजिए । चुप, मूर्ख कहीं का, बच्चे के एक दिन में कहीं दाढ़ी निकलती है क्या ? इसी तरह पात्रता एवं पवित्रता के विकास के बिना ईश्वर दर्शन भी संभव नहीं । बारूद का सबसे बड़ा जखीरा हमारे भीतर भरा पड़ा है । हम अगर अपने संकल्प बल का कारतूस चला दें तो कमाल हो जायेगा । डायनामाइट के एक सिरे में आग लगा देते हैं तो वह जलाने लगता है तथा बड़े पहाड़ को भी उड़ा देता है । हमारे भीतर भी एक प्रकार का डायनामाइट है । उसके भीतर ध्यान की शक्ति काम करती है । इसके द्वारा हम सब कुछ कर सकते हैं ।

बेटे, हमारे भीतर जो शक्ति भरी है, उसका नाम है-'चेतना' जो जड़ के भीतर काम करती है । चेतना का काम है कि वह जड़ को काबू में रखे । जड़ के ऊपर उसी का कंट्रोल है । जड़-चेतन का सम्मिश्रण जहाँ कहीं भी होता है उसका नाम है-'प्राण' । प्राण एक छोटी सी चीज है जो जड़-चेतन दोनों से मिली हुई है । एक और चीज है जिसका नाम आत्मा है । यह भगवान का अंश है । सांस प्राण नहीं है । सांस के माध्यम से हम हवा खींचते हैं जिसमें गैस भरी पड़ी है । इसमें हाइड्रोजन, आक्सीजन, नाइट्रोजन आदि बहुत सी चीजें भरी पड़ी हैं । उसके भीतर प्राण भरा पड़ा है । प्राण को हमारा संकल्प खींचता रहता है । सांस हवा खींच सकती है, प्राण को नहीं खींच सकती । हम प्राणों को जिस उपक्रम के सहारे खींचते हैं, उसका नाम 'प्राणायाम ' है । प्राणायाम उस विधा का नाम है जिसमें हम संकल्प शक्ति को नियोजित करके सांस के माध्यम से समूचे निखिल ब्रह्माण्ड में संव्याप्त प्राण शक्ति को खींचते हैं । प्राण-जड़ और चेतन शक्ति का सम्मिश्रण है ।

सूक्ष्म शरीर को शक्तिशाली बनाने के लिए हम अभी आपको ध्यान और प्राणायाम की बात बता रहे थे । इन दोनों का ही आपको अभ्यास कराया जायगा और आपके संकल्पबल की परीक्षा ली जायेगी । महीने भर आप यहीं रहेंगे और ध्यान का अभ्यास करेंगे डिवाइन लाइट' के ऊपर विश्वास रख कर । अगर आप इम्तिहान देने के लिए तैयार हो जायेंगे तो हम पाँच देवताओं को जो आपके भीतर सोये पड़े हैं, उन्हें जागृत करने की विधा सिखा देंगे । अभी हमने बताया था कि हमारे सारे के सारे शरीर का ढाँचा हाड़-मांस पर नहीं, हारमोन्स पर टिका है । आदमी का वजन, ताकत हारमोन्स पर टिका है । हमारे भी पाँच और ग्रथियाँ हैं जिसे हम उत्तरी ध्रुव तथा दक्षिणी ध्रुव कहते हैं । सारे के सारे ग्रह-नक्षत्रों का सम्बन्ध इस उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव के साथ होता है । इन पाँच ग्रंथियों के भीतर एक चक्र है जिनमें अन्य अंग-अवयवों की अपेक्षा शक्ति ज्यादा है । इन्हें कोष कहते हैं । कोष भण्डार को कहते हैं । चक्र भी भण्डार को कहते हैं । इनमें ताकत भरी पड़ी है । आपने पानी के भँवर को देखा होगा उसमें साधारण पानी की अपेक्षा सौ गुनी ताकत होती है । जब नाव भँवर में आ जाती है तो मल्लाह घबड़ा जाता है कि अब तो

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

चक्कर काटकर नाव पलट जायेगी । यही विशेषता चक्रवात-'साइक्लोन' में भी होती है । यह गर्मी के दिनों में आता है और बड़े-बड़े पेड़ों को और छप्परों को उखाड़ देता है ।

चक्रवात एवं भँवर-दोनों के संयुक्त रूप के बारे में यह बतलाया गया है कि आप शक्ति के भण्डार हैं । जो ग्रंथियाँ हमारे शरीर के भीतर है वे पाँच तरह की हैं जिन्हें कोष कहते हैं । पहला है-अन्नमय कोष-यह कोई गड्ढा नहीं है । जब तक बच्चा माँ के पेट में रहता है तब तक वह नाभिचक्र के सहारे अपना भोजन माँ के रक्त-रक्त से खींचता रहता है । यह स्थूल शरीर अन्नमय कोष से बना है । इसी के द्वारा शक्ति अर्जित होती रहती है । अन्नमय कोष क्या है ? नाभि के स्थान पर एक ऐसा जखीरा होता है जिसके द्वारा पूरे बॉडी यानी शरीर को कन्ट्रोल कर सकते हैं । हम शक्तिशाली कैसे हो सकते हैं ? दीर्घजीवी कैसे हो सकते हैं, इसका ताल्लुक इसी से है ।

दूसरा है-प्राणमय कोष । मूलाधार चक्र इसका केन्द्र है । इसकी ऐसी विशेषता है कि इसमें से उमंगे निकलती रहती हैं । यह मूलाधार पेशाव एवं टट्टी के स्थान के बीचोंबीच रहती है । आदमी को ताकतवर बनाने का नाम मूलाधार चक्र है । मूलाधार चक्र जब कमजोर होता है तो आदमी नपुंसक हो जाता है और किसी काम का नहीं रहता है । मिलेट्री में लोग जोश को देखते है । जोश का ताल्लुक मूलाधार चक्र से है । मूलाधार की महत्ता न जानने के कारण वह हमारे किसी काम का साबित नहीं होता । उसका उपयोग केवल बच्चा पैदा करने और अपनी तथा अपने बीबी की सेहत खराब करने के अतिरिक्त कुछ नहीं हो पाता । मूलाधार का उपयोग हम केवल सेहत खराब करने में करते हैं । अगर हम उस ताकत को किसी अच्छे काम में लगावें तो न जाने क्या-क्या कर सकते हैं ? अगर इसे संतुलित ढंग से प्रयोग करें तो हम लव-कुश की तरह संतान पैदा कर सकते हैं । अपने आप में यह चक्र बहुत ताकतवर है । अनियंत्रित होने पर यह कामाचार पर उतारू हो जाता है और समाज में अव्यवस्था फैलाता है । इस ताकत को कैसे काम में लाया जा सकता है , यह प्राणमय कोष की साधना से साधित होता है ।

तीसरा वाला कोष-मनोमय कोश-यह हमारे मस्तिष्क पर कन्ट्रोल करता है । पाँच देवता इसी प्रकार पाँच कोषों में निवास करते हैं । जितनी भी अतीन्द्रिय क्षमताओं का वर्णन मिलता है-जैसे-दूर देखने की ताकत, दूर की बात को समझने की ताकत, दूर श्रवण की ताकत, भविष्य को जानने की ताकत आदि इसी कोश में सन्निहित है । सिद्धियों का जखीरा इसी में भरा पड़ा है । इन्हें जगाने का कार्य मनोमय कोष द्वारा होता है । बड़े काम करने के लिए बड़ी ताकत-बड़ी मशीन चाहिए । बड़ा दिमाग चाहिए । व्यक्ति को बदलने युग को बदलने-समाज को बदलने के लिए बड़े व्यक्तियों की ताकत वालों की हिम्मत वालों की जरूरत पड़ेगी यह ताकत मनोमय कोष के जागरण से ही संभव है ।

चौथा कोष है-आनन्दमय कोष । इसे हृदय चक्र भी कहते हैं । यह संवेदना का-भावना का कोष हैं । यह आदमी से आदमी को जोड़ता है । यह भगवान से सम्बन्ध रखती है, भगवान को जकड़ लेती है । व्यक्ति से व्यक्ति को आत्मा को परमात्मा से जोड़ देने का काम भाव संवेदना का है । इसका सम्बन्ध हृदय से हैं । हृदय ही वह स्थान है जहाँ आत्मा-परमात्मा का मिलन होता है ।

पाँचवाँ कोष-विज्ञानमय कोष है इसका केन्द्र सहस्रार चक्र है । सहस्रार चक्र ऐसा है कि आदमी के भीतर जितना भी काम चल रहा है, यह 'ओटोमेटिक' चल रहा है । अनाज खाकर शरीर खून पैदा करता है । रस पैदा करता है जिसके सहारे हमारे हाथ-पाँव काम करते है । पर असल में यह सारी शक्ति हमारे ब्रह्मरंध्र की है जो हमारे मस्तिष्क मध्य में एक छोटे से विन्दु के रूप में अवस्थित है । विवाह-शादियों में आपने अनार छोड़ते हुए देखा होगा । उसे जलाने पर पेड़ जैसी आकृति की चिनगारियाँ फूटती हुई चारों ओर फैल जाती हैं । उसी प्रकार की गर्मी और प्रकाश स्फुलिंग हमारे सहस्रार स्थित ब्रह्मरंध्र से निकलती रहती हैं और सारे शरीर में फैल जाती है । बेटे, हम अनाज के ऊपर नहीं, उस गर्मी के ऊपर जीवित हैं जिसे हम सहस्रार कहते हैं । इससे हजारों चिनगारियाँ निकलती हैं जिसे हम विभिन्न नामों से पुकारते हैं । जिसे हम कभी साँप या कुण्डलिनी कह देते हैं । यह साँप नहीं है, वरन् यह हमारे शरीर का एक ऐसा कण है जो हमें बारूद की तरह उछालता रहता है । साँप उसी का नाम है । सहस्रार कमल क्या है ? यह एक कमल है जिसमें हजारों पंखुड़ियाँ हैं । मस्तिष्क एक तालाव है जिसमें यह कमल खिल रहा है । यह ऊपर से निकलता है जिससे आदमी को तृप्ति, शांति, शारीरिक ताकत, मानसिक ताकत मिलती है यह सूक्ष्म शरीर और कारण शरीर को विकसित करने का मौका देता है । यह हमारे शरीर का पाँचवाँ भण्डार है ।

इन पाँचों कोशों को जाग्रत करने की कला की हम आपको प्रारम्भिक जानकारी देते हैं । इसके लिए हम ध्यान कराते हैं, तथा सायंकाल को थोड़ी-थोड़ी विधियाँ भी बतलाते हैं । प्राणायाम, मुद्रा, बंध सिखलाते हैं इन सबको आप पूरे मनोयोग से श्रद्धापूर्वक, ध्यान एवं भावनापूर्वक करने का प्रयास करेंगे तो यकीन रखिये कि इस संस्था के संचालक, जो एक बड़ी शक्ति हैं, वह आपको सिखलायेंगे । हम संचालक नहीं है और हम जिन्दे भी नहीं रहेंगे । हम तो केवल मेम्बर हैं व्यवस्थापक हैं । बैंक वाले-रेलवे वालों का कहीं से कहीं ट्रांसफर हो जाता है, परन्तु रेलवे बोर्ड कायम रहता है । मैनेजर, गार्ड, ड्राइवर सब बदल जाते हैं परन्तु रेल चलती रहती है । रेलवेबोर्ड काम करता रहता है । यह ब्रह्मवर्चस के द्वारा यानी रेलवे बोर्ड द्वारा-चलाया गया है । यह एक योजना है जिसे समर्थ व्यक्ति द्वारा चलाया गया है जो अपने को समर्थ बनाने के साथ-साथ बहुत बड़ा वजन लेकर-दूसरों की समर्थ बनाने हेतु चल रहा है । यह है ब्रह्मवर्चस् का उद्देश्य जिसमें पंचकोषों की उपासना एवं साधना का क्रम भी शामिल है । आज की बात समाप्त । ॐ शान्ति 卐

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी-

देवात्मा हिमालय एवं ऋषि परम्परा

(जुलाई १९८० में शांतिकुंज में दिया गया प्रवचन)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ ।
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो-भाइयो, मुनासिब जगह पर मुनासिब चीज पैदा होती है । नागपुर के संतरे अगर आप अपने यहाँ बोना चाहें तो मीठे नहीं होंगे । बम्बई वाला केला जो कि वहाँ की जमीन में पैदा होता है, दूसरी जगह नहीं हो सकता । लखनऊ का आम सारी दुनिया में मशहूर है । अगर वही आम आप अपने गाँव में बोयें तो उतना मीठा नहीं होगा जैसा कि वहाँ का होता है । नीलगिरि का चन्दन कितना खुशबूदार होता है । यदि उसी चन्दन का पेड़ आप ले आवें और अपने गाँव के बगीचे में लगा दें तो इतना खुशबूदार नहीं होगा । देवगण जहाँ हिमालय पर रहते हैं वहाँ एक लम्बी वाली शकरकन्द जैसा कन्द पैदा होता है और वह कई दिन तक खाने के काम आ जाता है । उसी शकरकन्द का बीज आपको दे दें तो, आप बो लेंगे ? नहीं । पैदा नहीं होगी । ब्रह्मकमल जिसके लिए द्रोपदी ने भीम से आग्रह किया था कि "तुम ब्रह्मकमल ला करके दो ।" यह कहाँ पैदा होता है ? यह उत्तराखण्ड में जहाँ गोमुख है, उसके आगे तपोवन के नजदीक पैदा होता है । यह ब्रह्मकमल का फूल जमीन पर खिलता है, पानी में नहीं । यह अपनी जगह पर होता है । आप कहीं से बीज ले आयें ब्रह्मकमल के, अपने घर में बोना चाहें, तो हो सकता है ? ना, वहाँ नहीं हो सकता । जगह की अपनी महत्ता होती है ।

हिमालय की अपनी महत्ता है । सारे ऋषियों ने वहीं निवास किया था । स्वर्ग भी पहले वहीं था । ऋषियों की भूमि भी वही है । बड़ी सामर्थ्यवान, बड़ी संस्कारवान भूमि है । हमको भी तप करने के लिए वहाँ भेज दिया गया था और अब हम यहाँ सप्तर्षियों की भूमि शांतिकुंज में है देवात्मा हिमालय का अपना महत्व है । गंगा का अपना महत्व है । गंगा अपने में आध्यात्मिक शक्तियों को समेटे हुए है । यह न केवल उसके पीने के पानी में है, बल्कि वह जहाँ होकर बहती है, वहाँ का वातावरण भी कुछ विशेष होता है । सप्तऋषियों की भूमि, जहाँ सातों ऋषियों ने तपश्चर्या की थी और जो अभी भी ऊपर आसमान में दिखाई पड़ते हैं । उनकी जो भूमि है सप्तऋषि भूमि वह भी यहीं हैं जहाँ आपका यह शांतिकुंज बना हुआ है और भी गंगा के किनारे बहुत से ऐसे स्थान हैं जहाँ सिंह और गाय कभी एक घाट पर पानी पीने लगते थे । ऐसे प्राणवान स्थान भी होते हैं और सिद्ध पुरुष भी होते हैं । हम यहाँ ऐसे स्थान पर ही आये हैं । यहाँ आकर हमने आपकी भावनाओं को दिव्यता का स्मरण कराने के लिए देवात्मा हिमालय का एक मन्दिर बना दिया है । हिमालय का मन्दिर और कहीं नहीं मिलेगा आपको । लोगों ने देवताओं के मन्दिर बनाये हैं, अमुक के मन्दिर बनाये हैं, तमुक के मन्दिर बनाये हैं, पर हिमालय का मन्दिर सिर्फ आपको यहीं देखने को मिलेगा । हमने यह भी बनाया है । यह सप्तऋषियों की भूमि है । सप्तऋषियों की भूमि और कहाँ है, बताइये आप ? कहीं नहीं है, मात्र यहीं पर है, जहाँ आज शांतिकुंज बना हुआ है । गंगा पहले यहीं पर बहती थी । यहाँ की थोड़ी सी जमीन भर गई है, इसलिए शांतिकुंज वाली जमीन में जो पानी हजारों वर्षों से बहता था वह बन्द नहीं हुआ है । वह धारा अभी भी बह रही है, उसके लिए सामने रास्ते बना दिये गये हैं ।

हिमालय-मन्दिर क्या है ? ये प्रतीक क्यों बना दिये हैं ? प्रतीकों का अपना अलग महत्व है । एकलव्य ने द्रोणाचार्य का प्रतीक बना लिया था । रामचन्द्र जी ने शंकर जी का प्रतीक बनाया था । जब वे वनवास गये थे और सीताहरण के कारण दुखी मन से वन-वन भटक रहे थे, उस समय उन्हें जब प्रतीक की आवश्यकता हुई तो उन्होंने शंकर जी के मन्दिर की स्थापना की थी, रामेश्वर में । ये सब प्रतीक हैं जैसे तिरंगा झंडा अपना राष्ट्रीय प्रतीक है । कम्युनिस्टों का भी झंडा होता है । लोग कहते हैं कि वे प्रतीकों को नहीं मानते । कैसे नहीं मानते ? लाओ हम उनके झंडे को उखाड़ फेंकें, फिर देखो क्या होगा ? मुसलमान भी प्रतीकों को नहीं मानते हैं क्या ? मक्का मदीना में प्रतीक ही तो रखा हुआ है जिसका वे चुम्बन लेते हैं । समस्त देवात्मा हिमालय का मन्दिर कहीं था नहीं । भारतवर्ष का यह एक बड़ा अभाव था । वह हमने दूर किया है, ताकि साधना की दृष्टि से कोई आदमी आना चाहे तो इस स्थान पर आकर वह महत्वपूर्ण लाभ उठा सके । इसलिए यह बनाया गया है । मुनासिब जगह पर मुनासिब काम होते हैं । हिमालय में बहुत सारे ऋषि रहते हैं और जो भी ऋषि आये हैं, वे सब हिमालय से आये हैं । उन्हीं ऋषियों का स्मरण दिलाने के लिए हमने यह कोशिश की है कि जो उन्होंने काम किये थे, उनको समेट करके पूरा न सही, थोड़ा-थोड़ा काम करें तो अच्छा होगा । हमने वही किया है ।

व्यास जी ने अठारह पुराण लिखे थे । दर्शन भी लिखे थे । पुराणों और दर्शनों को हम लिख तो नहीं सके, पर हमने उनका अनुवाद किया है । वेदों का अनुवाद किया है ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

व्यास जी ने जो काम किये थे, उस रास्ते पर हम भी चले हैं और यहाँ जब शांतिकुंज में आयेंगे तो देखेंगे कि उसकी निशानी यहाँ भी विद्यमान है । महर्षि पतंजलि ने गुप्तकाशी में रहकर योगाभ्यास किया था । आप जब आयेंगे तो देखेंगे कि यहाँ जो कल्प साधना शिविर कराये जाते हैं, अन्य दूसरे शिविर कराये जाते हैं, और यहाँ योगाभ्यासों का, प्राणायामों का विधि-विधान सिखाया जाता है, वह हमने भी किया है और आपको भी सिखाते हैं । पुराने जमाने के ऋषियों में याज्ञवल्क्य का महत्वपूर्ण स्थान है ? उन्होंने यज्ञ के सम्बन्ध में शोध की थी । यज्ञ से किस तरीके से मनुष्य के शारीरिक और मानसिक रोगों का निराकरण होना सम्भव है और यज्ञ से किस प्रकार पृथ्वी के वातावरण को ठीक किया जाना सम्भव है ? ऐसी बहुत सी बातों की महत्ता थी तब, लेकिन लोग उस महत्वपूर्ण यज्ञ को भूल-भाल गये थे । ऐसे ही हवन कर लेते थे सुगन्ध फैलाने के लिए । हमने उसको फिर से जीवित किया है शोध करके जैसे कि याज्ञवल्क्य ऋषि ने किया था । लगभग उसी तरीके से यहाँ शांतिकुंज में भी हमने कोशिश की है कि वह परम्परा चलती रहे ।

विश्वामित्र ऋषि थे । वे गायत्री के मंत्र द्रष्टा हैं । गायत्री मंत्र जो हम बोलते हैं, उसका विनियोग है, सविता देवता हैं और विश्वामित्र ऋषि । गायत्री छन्द विनियोग है । विश्वामित्र उसके पारंगत थे । विश्वामित्र का भी यहाँ स्थान बना हुआ है । गायत्री का मन्दिर भी बना हुआ है शांतिकुंज में । हमने भी गायत्री के पुरश्चरण किये हैं । विश्वामित्र को भी हम गुरु मानते हैं, पर हमारे हिमालय वाले गुरु हैं, वे अगर विश्वामित्र हों तो आप अचंभा मत मानना । भगीरथ का नाम आपने सुना होगा । उनने हिमालय पर तप किया था और तप करके ज्ञानगंगा को लाये थे । गंगा जब धरती पर आने लगीं तो उनके प्रचण्ड वेग को देखकर भगीरथ ने सोचा कि यह तो हमारे बूते का नहीं है । गंगा जी ने भी कहा कि जब मैं नीचे जमीन पर गिरूँगी तो सूराख हो जायेगा । सो तुम मुझे स्वर्ग से बुलाकर कैसे धारण करोगे । तब भगीरथ ने शंकर जी से मदद माँगी शंकरजी ने अपनी जटायें फैलादी । इस तरह स्वर्ग से जब गंगा आयीं थी तो पहले शंकरजी की जटाओं में आयीं, पीछे जमीन पर गिरीं । भगीरथ आगे-आगे चले, इसलिए गंगा भागीरथी कहलायीं , यह आपको मालूम है न ? भगीरथ तो अब नहीं है, मगर उनके तप का स्थान अभी भी है । गंगोत्री के पास गौरीकुण्ड है उसके पास एक शिला है, जिसका नाम भगीरथ शिला है, जहाँ भगीरथ ने बैठकर तप किया था । उस स्थान पर बैठकर हमने भी ठीक उसी तरीके से एक साल का अनुष्ठान किया था । हम भी ज्ञान गंगा को लाये हैं । यह ऋषियों की परम्परा है । हमने कोशिश की है कि ऋषिगण जिस रास्ते पर चले हैं, हम भी उस रास्ते पर चले । ऋषियों की वजह से हिमालय धन्य हुआ, नहीं तो हिमालय में क्या बात है ? इससे ऊँचे-ऊँचे और भी पहाड़ है । सारी दुनिया में पहाड़ों की कोई कमी है क्या ? उत्तराखण्ड इसी वजह से प्रख्यात हुआ है कि इसमें चारोंधाम भी बने हैं । पाँच प्रयाग भी इसमें है । पाँच गुप्त काशियाँ भी हैं । पाँच सरोवर भी हैं । समूचे भारतवर्ष के जो कुछ भी महत्वपूर्ण स्थान हैं, जो कुछ भी तीर्थ हैं, सब इकट्ठे होकर इसी एक जगह पर एकत्रित हो गये हैं । हमारा भी प्रयत्न इसी तरीके से रहा है ।

परशुराम जी का नाम आपने सुना होगा । उन्हें शंकर भगवान ने एक कुल्हाड़ा दिया था । इस कुल्हाड़े से उनने लोगों के सिर काट डाले थे । जो खराब दिमाग वाले थे, बददिमाग वाले थे, उन बददिमाग वालों के सिर काटकर परशुराम जी ने फेंक दिये थे और वह भी इक्कीस बार । सिर काटने से मतलब ? सिर काटना तो मेरे ख्याल से ऋषि के लिए क्या सम्भव रहा होगा ? यह बन्धन तो अलंकारिक मालूम पड़ता है । दिमाग बदल जरूर दिये होंगे । दिमाग बदलने के लिए विचार क्रांति की दृष्टि से हम लगभग वही काम कर रहे हैं जो कि परशुराम जी ने फरसा लेकर किया था । फरसा तो हमारे हाथ में नहीं है, मगर कलम जिन्दा है । दोनों चीजें हमारे हाथ में हैं और उन्हीं के सहारे हम लोगों के दिमागों को बदलने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील हैं । परशुराम जी यमुना जी को भी लाये थे और फरसा भी लाये थे । परशुराम जैसा लगभग वही काम हमने किया है ।

प्रायः सभी ऋषि उत्तराखण्ड में ही हुए हैं । ऋषियों ने इसी पुनीत भूमि में रहकर तपस्या की, ताकि अध्यात्म शक्तियों को ठीक ढंग से सँभाल सकें । इसलिए उन्होंने इसी स्थान को चुना था । हमने भी इसे ही चुना है । हमारा और आपका मिलन हो सके, इसलिए हिमालय की जहाँ से शुरूआत होती है-हरिद्वार से, उस स्थान पर हम बैठे हैं ताकि आपके लिए भी यहाँ आने में मुश्किल न हो । ऊँची जगह पर चढ़ना मुश्किल है । जहाँ बर्फ पड़ती है और अत्यधिक ठंडक रहती है, जहाँ खाने-पीने का कोई सामान नहीं है, यदि वहाँ आप जायेंगे तो मुश्किल पड़ेगी आपके लिए । इसलिए हमने हरिद्वार में रहना मुनासिब समझा । यहीं से हिमालय शुरू होता है । गंगा में यहाँ से पहले कोई गन्दी चीज नहीं डाली जाती और न कोई नाले पड़ते हैं । बाद में पड़ते हैं । इसलिए हरिद्वार को हमने मुनासिब समझा ।

चरक ऋषि को आप जानते हैं क्या ? चरक ऋषि प्राचीन काल में हुए हैं । उन्होंने दवाओं, प्राकृतिक ओषधियों के सम्बन्ध में शोधें की थीं, खोजें की थीं । उनका स्थान केदारनाथ के पास था जहाँ सिक्खों का गुरुद्वारा है । केदारनाथ के पास फूलों की घाटी है जो उन्हें बहुत प्रिय थी । अब तो वहाँ तोड़-फोड़ के कारण सब जड़ी-बूटियाँ नष्ट हो गयी हैं । वहाँ तो अब फूलों की घाटी भी नहीं है लेकिन अगर कभी आपको फूलों की घाटी देखने का मन हो तो आप गोमुख से आगे ऊपर तपोवन जाना-नन्दनवन जाना । तपोवन और नन्दनवन ऐसे स्थान हैं जहाँ विचित्र दुर्लभ फूलों की छटा देखते ही बनती है । इनमें ब्रह्मकमल भी शामिल है । वह आपको वहीं मिलेगा । चरक के रास्ते पर हम भी चले हैं । वनौषधियों के प्राचीन श्लोकों को ठीक तरीके से खोजबीन करने के लिए और उनके सही और गलत होने की बाबत

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

जानकारी प्राप्त करने के लिए यहाँ ब्रह्मवर्चस् शोधसंस्थान की स्थापना की है । जो कुछ भी सम्भव है पुराना और नया अर्थात् पुराने ढंग से कैसे शोध की जाती थी और नये ढंग से कैसे की जाती हैं ? यह हमने यहाँ बनाने की कोशिश की है ।

उत्तरकाशी में आरण्यक हैं । आरण्यक किसे कहते हैं ? आरण्यक उसे कहते हैं जहाँ लोग वानप्रस्थ लेकर समाज सेवा के लिए समर्पित हो जाते हैं, उनके निवास स्थान को आरण्यक कहते हैं । गुरुकुल छोटे बच्चों का होता है । विद्यार्थियों का होता है । वहाँ तो आरण्यक ही था, पर यहाँ पर हमने गुरुकुल और आरण्यक दोनों चलाने की कोशिश की है । बच्चों का भी यहाँ विद्यालय है खास विद्यालय जिसके बारे में कहना चाहिए कि हिन्दुस्तान भर में शायद ही कहीं ऐसा विद्यालय आपको देखने को मिले । प्रचारक और लोकसेवी तैयार करने के लिए हमने यहाँ आरण्यक बनाया है । भगवान बुद्ध ने भी बनाये थे नालन्दा आरै तक्षशिला में । उनमें प्रचारक और कार्यकर्ता तैयार किये जाते थे । हमारे यहाँ भी कार्यकर्ताओं को संगीत की शिक्षा, व्याख्यानों की शिक्षा, समाजसेवा की शिक्षा, चिकित्सा की शिक्षा आदि सारी शिक्षायें यहाँ दी जाती है । यहीं जमदग्नि का आश्रम है । नारदजी का नाम तो सुना है न आपने ? वे संगीत के द्वारा ही सारी की सारी भक्ति का प्रचार करते थे और हिन्दुस्तान से लेकर सारे विश्वभर में घूमते थे । चाहे जब भगवान के पास जा पहुँचते थे । उनका स्थान कहाँ था ? विष्णु प्रयाग में उन्होंने तप किया था । वहाँ तो हम आपको नहीं ले जा सकते, लेकिन यहाँ पर नारद जी का जो काम था संगीत शिक्षा का, वह हमने किया है । क्योंकि इस जमाने में लोकशिक्षा के लिए संगीत बेहद आवश्यक है । संगीत के बिना देहाती मुल्कों में जहाँ बिना पढ़े लिखे लोग अधिक रहते हैं, उनको प्रशिक्षित करना बड़ा मुश्किल है । हमने उसकी भी यहाँ व्यवस्था बना ली है ।

वशिष्ठ जी का तो नाम आपने सुना है । उन्होंने राजनीति और धर्म-दोनों को मिलाया था । राजा दशरथ के यहाँ भी रहते थे । धर्म का भी काम करते थे और राजनीति की भी देखभाल करते थे । हमारी भी जिन्दगी कुछ इसी तरह की हो गयी है । पौने चार वर्ष तो जेलखाने में रहना पड़ा । सन् १९२० से लेकर १९४२ तक बाइस साल तक हम दिन-रात राजनीति में लगे रहे समाज को ऊँचा उठाने के लिए और अँग्रेजों को भगाने के लिए । देश की आजादी के लिए हमने जो काम किया है, वशिष्ठ भगवान भी यही काम करते थे । पीछे वे राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न को अपने पास ले गये थे । हम भी आपको लेकर आये हैं । हमारे बच्चे तो क्या आयेंगे, पर आप आ सकते हैं । आप भी हमारे बच्चे हैं । शंकराचार्य के बच्चे थोड़े ही थे । रामचन्द्र जी के पिता का नाम वशिष्ठ थोड़े ही था ? दशरथ जी था । आप भी तो हमारे बालक हैं ? जिस तरीके से राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न-चारों भाइयों को लेकर वशिष्ठ जी आ गये थे, और उनको यह बतलाया था कि धर्म और राजनीति-दोनों का समन्वय कैसे हो सकता है, हम भी आपको यही सिखाने का प्रयत्न कर रहें कि धर्म और राजनीति का विज्ञान और अध्यात्म का सम्मिश्रण समन्वय कैसे हो सकता है ?

आद्यशंकराचार्य का नाम सुना है न आपने । जिन्होंने चारों धाम बनाये थे । चारों धाम कौन-कौन से हैं ? रामेश्वरम्, द्वारिका, बद्रीनाथ और जगन्नाथपुरी । चारोंधामों में चार मठ उन्होंने स्थापित किये थे । उनका अपना निवास स्थान था ज्योतिर्मठ । ज्योतिर्मठ के पास शहतूत का एक पेड़ था । उसी के नीचे उनकी गुफा थी । वे वहीं रहते थे । वहीं उनने अपने ग्रन्थ लिखे थे और वहीं तप किया था और वहीं जो कुछ भी काम कर सकते थे, चारों धाम बनाने का, वे भी योजनायें उन्होंने वहीं बनायी थीं । मान्धाता को कहकर वह काम उन्होंने वहीं से कराया था । हमने भी यहीं से बैठकर गायत्री के चौबीस सौ धाम बनाये हैं । इसके अलावा भी चौबीस सौ और छोटे-छोटे धाम है । शंकर जी का एक ही धाम है-रामेश्वर में और जगन्नाथ जी का एक ही धाम है, बद्रीनाथ का एक ही धाम है, लेकिन गायत्री के हमने चौबीस सौ धाम बनाये हैं । आपने पिप्पलाद ऋषि का नाम सुना है । वह भी यहीं रहते थे हिमालय पर लक्ष्मण झूला के पास । पीपल के फल खाकर के ही उनने जिन्दगी काट दी थीं, क्योंकि वे जानते थे-'जैसा खाये अन्न, वैसा बने मन'। यदि हम अपने मन को अच्छा बनाने की फिकर में हैं तो सबसे पहले शुरूआत अच्छे खाने से करनी चाहिए । अच्छे अन्न से करनी चाहिए । अच्छे अन्न का मतलब होता है कि बेईमानी से कामाया हुआ अन्न नहीं हो । बिना हराम का जो अपने खून-पसीने से कमाया हो, उसी को खा करके रहना चाहिए । पीपल के पेड़ उन दिनों ज्यादा थे । उनके फल भी ज्यादा होते होंगे । तोड़-ताड़ कर उन्हें साल भर के लिए रख लेते रहे होंगे और उसे ही खाते रहे होंगे । हमारा भी आहार ऐसा ही रहा है । आपको मालूम है न, जौ के ऊपर हम कितने दिन तक रहे हैं । अभी भी ठीक तरह से अन्न नहीं खाते हैं ।

सूत और शौनक ऋषि की कहानियाँ प्रसिद्ध हैं । वे कहाँ रहते थे ? हिमालय पर । कौन सी जगह ? ऋषिकेश में । ऋषिकेश में वह पुराणों की कथायें कहते थे । शौनक जी पूछते थे और सूतजी कहते थ । दोनों ही कथायें कहते थे । पुराने जमाने के तो अठारह पुराण अठारह समय पर लिखे गये थे । हमने सबका ब्रह्म पुराण ही बना दिया है । एक-एक खण्ड तो अभी छप गया है, तो तीन खण्ड और अभी तैयार हो गये हैं, वे भी इसी वर्ष छप कर तैयार हो जायेंगे । आपको अठारह पुराणों के स्थान पर, शायद यह अठारह खण्डों का प्रकाशन के

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

रूप में मिलेगा । ये सब ऋषियों के काम हैं । एक-एक ऋषि ने एक-एक काम किया था, लेकिन हमने सारे ऋषियों के कामों का समन्वय किया है । ऋषियों के तरीके से यह सब बनाने की कोशिश की है । राजा हर्षवर्धन थे जिन्होंने हर की पौड़ी पर बैठकर अपना सर्वस्व दान किया था तो उसी से तक्षशिला का विश्वविद्यालय बनाया गया था । हम हर्षवर्धन तो नहीं हैं, पर जो कुछ भी हमारे पास था, वह सब का सब हमने दिया है । हर्षवर्धन की जो परम्परा सर्वमेध की थी हर की पौड़ी के नजदीक थी, वह हमने शांतिकुंज में ही लाकर के स्थापित करदी । कणाद ऋषि विज्ञान और अध्यात्म को मिलाने के लिए प्रयत्नशील रहा करते थे । उन्होंने 'एटम' के सम्बन्ध में अणु के सम्बन्ध में बहुत सारी खोजें की हैं । अपना ब्रह्मवर्चस भी विज्ञान और अध्यात्म को मिलाने की कोशिश कर रहा है आप यहाँ जो कुछ भी देख रहे हैं वह ऋषि परम्परा है जिसे हमने जिन्दा रखा है ?

बुद्ध का नाम सुना है न आपने ? धर्म चक्र प्रवर्तन के लिए उनके कितने शिष्य थे जो आकर समय-समय पर साधनायें किया करते थे और उपासनायें करते थे । वे कहाँ रहते थे ? बुद्ध के पास ? नहीं, बुद्ध के पास नहीं रहते थे । नालन्दा में रहते थे । तक्षशिला में रहते थे और कुछ हिमालय में रहते थे । कुछ कहीं तो कुछ कहीं । बुद्ध की परम्परा को भी हमने कायम रखा है । यहाँ शांतिकुंज में पहले दो विश्व-विद्यालय थे, पर अब एक ही है अपनी तरह का निराला । धर्म-चक्र प्रवर्तन के लिए-प्रज्ञा चक्र को घुमाने के लिए बुद्ध जैसा क्रियाकलाप आप शांतिकुंज में ही पायेंगे । हिमालय की गतिविधियों का एक केन्द्र यह भी है । आर्यभट्ट ने भी इसी हिमालय में तप किया था । उन्होंने ज्योतिर्विज्ञान, ग्रह-नक्षत्रों के विज्ञान की खोज की थी कि किस तरीके से ग्रह-नक्षत्र घूमते हैं तो पृथ्वी पर क्या असर पड़ता है ? पृथ्वी के निवासियों पर क्या-क्या असर पड़ता है ? ये सारी की सारी खोजें आर्यभट्ट ने अपने जमाने में इसी हिमालय में की थीं । आप कभी शांतिकुंज आयें तो देख लीजिए कि उनके जो सारे क्रियाकलाप थे, जहाँ तक हमसे मुमकिन हुआ है, वह बनाने की कोशिश की है । पंचांग भी यहाँ से प्रकाशित होता है । इसमें नौ ग्रह पुराने और तीन जो अभी-अभी नये खोजे गये हैं, उन बारह ग्रहों का पंचांग भी केवल यहाँ से ही प्रकाशित होता है और कहीं से नहीं होता । नागार्जुन रसायन शास्त्री थे । उन्होंने रसायनों की खोज की थी । हमारे यहाँ भी दवाओं का और दूसरे अन्य रसायनों की खोज का क्रम है । हम जड़ी-बूटी से कायाकल्प का नूतन अनुसंधान कर रहे हैं ।

शृंगीऋषि मंत्र विद्या में पारंगत थे । वे लोमष ऋषि के बेटे । उन्होंने परीक्षित को शाप दिया था कि तुझे सातवें दिन साँप काट खायेगा, तो सातवें दिन साँप ने उन्हें काट खाया था । उन्होंने ही राजा दशरथ के यहाँ यज्ञ कराया था । राजा दशरथ के बच्चे नहीं होते थे तो पुत्रेष्टि यज्ञ कराने के लिए शृंगी ऋषि को उपयुक्त समझा गया । वे ब्रह्मचारी थे और मंत्र विद्या के पारंगत भी । उन्हीं की मंत्र विद्या की वजह से राजा दशरथ के चार बच्चे पैदा हुए थे । यह सब शृंगी ऋषि की मंत्र विद्या थी । वह भी हिमालय में रहते थे । मंत्र विद्या के बारे में गायत्री के बारे में हम कोशिश करते हैं । दोनों नवरात्रियों में अनुष्ठान कराते हैं । जो भी आदमी इस महत्वपूर्ण समय पर आते हैं वे सब गायत्री का अनुष्ठान करते हैं । कैलाश पर्वत कहाँ है ? यहीं हिमालय पर है । यह स्वर्ग है । हिमालय केवल ऋषियों की ही भूमि नहीं है-देवताओं की भी भूमि है । इसको स्वर्ग भी कहा गया है । सबसे पहले सृष्टि का उद्भव यहीं हुआ । मनुष्य यहीं जन्मे-इतिहास के हिसाब से । हमने भी कहा है कि स्वर्ग कहीं आसमान पर न होकर अगर जमीन पर रहा होगा तो वह देवात्मा हिमालय वाले हिस्से में रहा होगा कैलाश पर्वत पर । नन्दनवन जो स्वर्ग में था, वह यहीं है । तपोवन भी, मानसरोवर भी यहीं हैं । गोमुख से जरा आगे चलेंगे जहाँ हमारे गुरुदेव का थोड़ी दूर पर निवास है, वह कैलाश में ही है । वह कैलाश तो अलग था जो तिब्बत में है । अब वह चीन के हाथों में चला गया । उसको तो हम कैसे कहें कि शंकरजी को चीन छीन ले गया लेकिन यह कैलाश पर्वत उसी पर है । इसलिए यह स्वर्ग भी है । हिमालय क्या है ? स्वर्ग है । स्वर्गारोहण के लिए जब पाण्डव गये थे तो यहीं गये थे । स्वर्गारोहण-बद्रीनाथ से आगे वसोधारा है और वसोधारा से आगे एक पहाड़ है, वही स्वर्गारोहण है । सुमेरुपर्वत भी यहीं है सारे देवता उसी पर रहते थे । यह सोने का पहाड़ था । हमारे पास उसका फोटोग्राफ भी है । जब हम वहाँ गये थे तो उसका फोटोग्राफ भी साथ में लाये थे । वहाँ प्रातःकाल एवं सायंकाल के समय सुनहरी छाया रहती है । ध्रुव ने यहीं तप किया था । श्री कृष्ण भगवान तप करने के लिए बद्रीनाथ गये थे । रुक्मिणी और कृष्ण दोनों ने वहीं तप किया था । तप करने के बाद में उनके प्रद्युम्न जैसी सन्तान पैदा हुई ।

बाल्मीकि की और सीता जी की घटना तो आपने सुनी है । रामचन्द्र जी ने जब सीता जी को वनवास दिया था तो वे बाल्मीकि के आश्रम में रहीं थीं और वहाँ लव-कुश नाम के दो ऐसे बालक पैदा हुए थे जो रामचन्द्र जी से, लक्ष्मण जी से और हनुमान जी से लोहा लेने के लिए तैयार हो गये थे । आपने शकुन्तला का नाम सुना है ? और चक्रवर्ती भरत ! जिसके नाम पर इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा । शकुन्तला कौन थी ? वह कण्व ऋषि की बेटी थी, हाँ बेटी ही कहिए और उसके बच्चे भरत का जन्म, पालन जो हुआ था यहाँ कोटद्वार नाम की एक जगह है हिमालय में वहीं हुआ था ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

हिमालय की इन सारी की सारी विशेषताओं को सिकोड़ करके हमने उनका विशाल मन्दिर बना दिया है । ये सारी चीजें कहाँ हैं ? अगर आप देखना चाहें तो यहाँ आकर देख भी सकते हैं । हमने एक छोटी सी पुस्तक भी छापी है रंगीन । जिसमें उन सब स्थानों का, हिमालय के स्थानों को बताने की कोशिश की है कि ये कहाँ हैं ? हिमालय में पाँच प्रयाग हैं, पाँच काशियाँ हैं, पाँच सरोवर हैं । हिमालय में चार धाम हैं । चार धाम कौन-कौन से हैं ? बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री । चार धाम ये ही कहलाते हैं। ये सारे के सारे पवित्रतम् स्थान इसमें बने हुए हैं । उसका हमने मन्दिर भी बनवाया है । जो उससे आपका सम्बन्ध जोड़ने की बीच की कड़ी है । सीढ़ी पर पहला पाँव जहाँ पर रखा जाता है, ऊपर चढ़ने के लिए तो पहले पाँव को हम मुख्य मानते हैं । उसको देहरी कहते हैं । इसीलिए हरिद्वार इसका नाम रखा गया है । यहाँ पहाड़ों पर जाने के लिए रास्ता है । पार्वती जी ने तप यहीं किया था । यहाँ एक विल्वकेश्वर मन्दिर है । वहाँ पार्वती जी ने तप किया था और वहीं नजदीक में ही उनका विवाह हुआ था । यहीं पार्वती जी अपने पूर्व जन्म में जिनका नाम सती था जन्मी थीं और सती हुई थी, वह दक्ष प्रजापति नामक स्थान है । दक्ष एक वैज्ञानिक थे, उनका सिर काटा गया था और महादेव जी उनसे नाराज हो गये थे, वह स्थान भी यहीं है । यह देवात्मा हिमालय है बड़ा शानदार । इसको क्या कहें ?

आपसे क्या अनुरोध है ? यह कि हम तो सारी जिन्दगी के लिए चले आये । मरेंगे तो भी हम इधर ही कहीं मरेंगे, लेकिन आपसे हमारी प्रार्थना है कि ऐसे पुनीत स्थान से आपको जीवन में कहीं न कहीं जुड़ा रहना चाहिए । हमको जिन्दगी भर में तीन बार हमारे गुरु ने एक-एक वर्ष के लिए बुलाया बैटरी चार्ज करने के लिए । बैटरी जब धीमी हो जाती है गाड़ियों की तो उसको फिर दोबारा चार्ज कर देते हैं । फिर वह बैटरी काम करने लगती है । इसीलिए जब हमारी बैटरी धीमी पड़ी तब हमको हमारे गुरु ने बुलाया और अब हम यहाँ हैं । आपको हम निमन्त्रण भेजते हैं इस व्याख्यान के द्वारा । आपको जब कभी भी मौका मिले, तीर्थयात्रा का जब कभी भी मौका मिले, आप यहाँ शान्तिकुंज में आने की कोशिश कीजिए जहाँ सारे ऋषियों की परम्परा है । जहाँ हिमालय की सारी विशेषताओं को हमने एकत्रित करके रखा है । जब आपका जन्मदिन हो, विवाह दिन हो तो यहाँ आने की कोशिश कीजिए और बच्चों के संस्कार कराने के लिए, सोलह संस्कार कराने हों तो आप यहाँ आने की कोशिश कीजिये । बच्चों के संस्कार कराने के लिए पुनीत स्थान की लोग तलाश करते हैं । किसी देवी के यहाँ, किसी मन्दिर में लोग संस्कार कराते हैं आप भी यहाँ आ सकते हैं । श्राद्ध और तर्पण कराने के लिए भी ऐसा नियम है कि यहाँ बद्रीनाथ के पास में ब्रह्मकपाल नाम का स्थान है, वहाँ लोग तर्पण कराते हैं । यहाँ भी तर्पण कराते हैं । श्राद्ध कराते हैं । आप चाहें तो हरिद्वार में भी करा सकते हैं, लेकिन वह स्थान कहाँ है ? कैसे हैं ? इसके बारे में हमें कुछ कहना नहीं है । लेकिन हमारा जो स्थान है वह बहुत सुन्दर स्थान है । यहाँ जो भी आते हैं, नवरात्रि के दिनों में यहाँ अनुष्ठान कराते हैं । यह अनुष्ठान की भूमि है । शिक्षण की भी सारी व्यवस्था यहाँ है । शिक्षण के लिए आपका कभी मन हो, गुरुजी ने जो सीखा था उसको आगे चलकर हम भी सीखें तो यहाँ दस दिन के शिविर भी होते हैं । एक महीने के शिविर भी होते हैं, ये दोनों ही शिविर होते हैं । यहाँ पर एक छोटा स्थान आप ऐसे मान लीजिए जैसे गणेश जी ने राम नाम लिख करके उसकी परिक्रमा लगा ली थी और परिक्रमा लगाने के बाद में उनको वह सारा का सारा पुण्य मिल गया था जो कि विश्व की परिक्रमा से मिलना चाहिए था । गणेश जी को पहला नम्बर मिला । उनका चूहे की सवारी पर बैठकर सारे विश्व भर में घूमना तो सम्भव नहीं था अतः उन्होंने विवेक से काम लिया और रामनाम की परिक्रमा लगा ली । यह छोटा सा गायत्री-तीर्थ है । छोटा सा शांतिकुंज उन सारी विशेषताओं से भरा पड़ा है । हम तो अब ज्यादा समय तक रहेंगे नहीं, अभी सन् दो हजार तक तो रहने वाले हैं नहीं किन्तु इस शरीर से नहीं तो सूक्ष्म शरीर से रहेंगे । यहाँ हमारी प्रेरणा बराबर रहेगी और आपको बराबर वह लाभ मिलता रहेगा जो कि मिलना चाहिए । बहुत शानदार जगह है शांतिकुंज । इन सारे ऋषियों का, यहाँ के चौबीस गायत्री के चौबीस ऋषि हैं और उन चौबीस ऋषियों का सार यहाँ है । वे ऋषि जो करते थे, उनकी परम्परा का सार देखना हो तो यहाँ है । यह तीर्थों में ऐसा तीर्थ है कि यहाँ आ करके आप कभी उपासना करें तो जिस तरीके से नागपुर के संतरे, बम्बई के केले फलदायक होते हैं, ठीक उसी तरीके से फलदायक आप अपने को पायेंगे । यह शांतिकुंज तीर्थ हमने बनाया है तो समझना चाहिए यह आपके लिए बनाया है । हिमालय बना होगा तो हमारे गुरू ने हमें यहाँ खींच करके हिमालय बुलाया और हमको वहाँ पर रखा । हम आपको खींच करके यहाँ बुलायेंगे कि आप यहाँ शांतिकुंज में आया करें । साल में एक बार किसी प्रकार आने की कोशिश किया करें । यहाँ के आने-जाने में जो आपका पैसा लगा है, समय लगा है, जो कुछ भी चीजें लगी हैं वे सब सार्थक सिद्ध होंगी । निरर्थक सिद्ध नहीं होंगी । आप शांतिकुंज आ करके यह ख्याल नहीं करेंगे कि हम निरर्थक आये और हमने बेकार में समय और पैसा गँवाया । बस और तो कुछ कहना नहीं आज की बात समाप्त । ॐ शान्ति ! 卐

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी -

प्रज्ञायोग की साधना

गायत्री मन्त्र हमारे साथ-साथ -

'ॐ भूर्भुव : स्व : तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो न : प्रचोदयात् ॥"

देवियो, भाइयो ! भगवान के अवतार समय-समय पर हुये हैं, और जब, जिस काम के लिए, जरूरत पड़ी है, तब-तब उसी काम के लिए उन्होंने अवतार उसी तरह का धारण किया है । यह समय इस तरह का है कि इसमें आस्था संकट छाया हुआ है । सब जगह आस्थाएँ कमजोर पड़ गयी हैं । आदर्शों के लिए कहिये, उत्कृष्टताओं के लिए कहिए सब के लिए आस्थाएँ कमजोर पड़ गई हैं । आस्थाएँ कमजोर पड़ने की वजह से जो आदमी काम कर रहा है, चिन्तन कर रहा है, यह गलत कर रहा है । उसका निवारण करने के लिए भगवान का नया अवतार होना चाहिये । वह प्रज्ञा-अवतार होगा । निष्कलंक भी इसी को कहते हैं । दसवाँ अवतार या चौबीसवाँ अवतार निष्कलंक अवतार है, जिसे प्रज्ञा अवतार भी कहते हैं । प्रज्ञा- दूरदर्शी विवेकशीलता को कहते हैं जिसे प्रज्ञा अवतार भी कहते हैं । प्रज्ञा-दूरदर्शी विवेकशीलता को कहते हैं । केवल वही निष्कलंक है और सब में कलंक लगा हुआ है । इसलिये यह महाप्रज्ञा के अवतार का जो समय है, इसको आप बहुत महत्वपूर्ण मानें और इसी का स्मरण करें । अपनी उपासना में इसी का समावेश करें ।

गायत्री को त्रिपदा कहा गया है । सरस्वती, काली, लक्ष्मी इसके ही भीतर आ जाती हैं । ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी इसी के अन्तर्गत आ जाते हैं । यह आदि-शक्ति है । ब्रह्मा जी को तप करके सारे विश्व को-सृष्टि को बनाने के लिए जो शक्ति मिली थी, इसी के द्वारा मिली थी । अब यही महाप्रज्ञा आदि-शक्ति गायत्री के रूप में नया अवतार ग्रहण कर रही है, आस्था संकट का निवारण करने के लिए । कैसे होगा यह अवतार ? आपको मालूम है न कि सीताजी का जन्म क्यों हुआ था ! रावण को मारने के लिए जब सीताजी की जरूरत थी । तब ऋषियों ने अपना रक्त एकत्र करके एक घड़े में बन्द किया था । उसे जमीन में गाढ़ दिया था । राजा जनक ने उस घड़े को निकाला और सीताजी का जन्म हुआ । दुर्गा का अवतार कैसे हुआ, आपको मालूम है ? सब के सब देवता इकट्ठे होकर प्रजापति के पास गये और प्रजापति से कहा " अब ये दैत्य हमसे सँभालने में नहीं आते । आप ही कोई तरकीब बताइये । उन्होंने कहा कि "तुम सब की शक्ति को इकट्ठा करके अभी हम दुर्गा का अवतार करेंगे और वह सारे के सारे दैत्यों का संहार कर देगी ।

भगवान सब को समान मानते हैं । आप भी उसमें शामिल हैं और जो नहीं आये हैं वे भी शामिल हैं । सब मिलकर के एक ऐसी सामूहिक उपासना करेंगे-प्रज्ञा की,-महाप्रज्ञा की- आदि-शक्ति की जिससे इस समय का जो आस्था संकट है और जिसने सारे के सारे इस विश्व को अस्त-व्यस्त कर रखा है, उसका निवारण किया जा सकना संभव हो सके । कैसे करना चाहिये ? क्या करना पड़ेगा इसके लिए इसका नाम प्रज्ञा-योग रखा है हमने क्योंकि इसमें कई चीजें शुमार हैं । इसलिए प्रज्ञा-योग, योग की साधना, हम सब लोगों को करनी चाहिये । प्रज्ञा-योग क्या है ? प्रज्ञा-योग में ज्ञान, कर्म और भक्ति की जिनको आप सरस्वती लक्ष्मी, काली कहते हैं ये तीनों शक्तियाँ शामिल हैं । जिन्हें आप ब्रह्मा, विष्णु, महेश कहते हैं, तीनों ही चीजों का इसमें समावेश है । यह आपको करना पड़ेगा । कैसे करना पडेगा ? चलिये, आप लोग नोट करते जाइये इनको या फिर ध्यान में रखिये । छपा हुआ भी है । प्रज्ञा-योग कैसे करना चाहिये ? प्रज्ञा-योग का पहला चरण है कि आप चारपाई पर इसे करें चारपाई पर पड़े हुये । जब सबेरे उठें तो उठने से पहले जमीन पर पैर रखने से पहले आप यह विचार करें कि हमारा नया जन्म हुआ है और आज हम नया जन्म ले रहे हैं । रात में जब आपका विस्तर लगे और जब आप सोने की तैयारी करें, उस समय आप इस तरीके से करें कि हमारा आज मृत्यु का दिन आ गया । और अब हम भगवान की गोदी में जा रहे हैं । चौरासी लाख योनियों में घूमने के बाद मनुष्य का जन्म बड़ी मुश्किल से मिलता है । आप यह विचार कीजिए कि हम अच्छे से अच्छा आज का उपयोग करेंगें । आज का दिन बेकार नहीं जाने देंगे । और रात को जब आप सोयें, तब आप समझिये कि आज का दिन, आज का जन्म खत्म हुआ । आज की बातों की समीक्षा कीजिये । सबेरे प्रात:काल सारे दिन की स्कीम बनाइये कि आज हमको करना क्या है ? और शाम को इसकी समीक्षा कीजिये कि हमने कोई गलती तो नहीं की है और की है तो उसका सुधार कैसे होना चाहिये और परिमार्जन कैसे होना चाहिये ? सुबह और शाम को यह आपका प्रात: कालीन, संध्याकालीन क्रम होना चाहिये ।

इस तरह सायंकालीन संध्या आपकी विस्तर पर ही होनी चाहिये । विस्तर के बाद कर्म-योग का नम्बर आता है । कैसा कर्मयोग ? कर्मयोग का जबाब यह है कि आपको करना क्या है ? यह तो केवल विचार हुआ । ज्ञान कहते हैं विचार करने को और कर्म-योग कहते हैं काम करने को । काम करने में क्या करना है ? आप

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

स्नान करके, कपड़े बदल कर झाड़ू लगा करके, अपने पूजा के सारे सामान को साफ करके बैठिये । सबसे पहला कर्म शुद्धता है । अगर आपका मन शुद्ध है, शरीर शुद्ध है, जीवन शुद्ध, है, आजीविका शुद्ध है तो समझना चाहिये कि आपकी उपासना की शुरुआत हुई और यदि आपका मन गन्दा है, आपका शरीर भी गन्दा है, आपकी कमाई भी गन्दी है, आपके विचार भी गन्दे हैं तो आप समझिये कि आप जो पूजा कर रहे हैं उसका परिणाम नहीं मिलेगा । इसलिए शुद्धता पहला काम है । शुद्धता के लिए कुछ विधियाँ बताई गयीं हैं । कौन-कौन सी विधियाँ हैं ? पवित्रीकरण है, आचमन है, प्राणायाम है, न्यास है । ये आपने हमारी सब पुस्तकों में पढ़े होंगे । इन सब क्रियाओं का मतलब यह होता है कि आप अपने मन को, अपने वचन को, अपनी वाणी को, अपनी क्रियाओं को और अपने इष्ट-चिन्तन को, इन्द्रियों को सबको पुनीत बना रहे हैं । पवित्र बना रहे हैं । जो मलिनताएँ उनके अन्दर छायी हुई होंगी, उनको हम निकालेंगे । न्यास का अर्थ यह ही होता है कि हमारी जो इन्द्रियाँ हैं पाँचों इनका उपयोग हम ठीक तरीके से करेंगे । अच्छे काम में करेंगे । गलत या गन्दे रूप में नहीं करेंगे प्राणायाम का अर्थ होता है कि जो साँस हम लेंगे तो हमारी वह हर साँस इस तरीके से चलेगी कि इसमें कहीं कोई कमी और खामी न हो । इसी तरीके से जो आप सारे शरीर के ऊपर जल छिड़कते हैं, तीन बार आचमन करते हैं, उसका भी अर्थ यह है कि हमारे मन, वचन और कर्म तीनों ही स्वस्थ बनेंगे । इसके लिए सबसे पहले उपासना की आवश्यकता होगी ।

इसके बाद में आपको देवपूजन करना पड़ेगा । "देव पूजन किसका ? भगवान का ? भगवान तो निराकार है ।" मगर पूजा के समय पर उनको साकार बनाया जाता है । गायत्री का कोई चित्र आपने रखा हो, कोई मूर्ति रखी हो, कुछ न कुछ तो आपको रखना ही पड़ेगा । बिना प्रतीक पूजा नहीं हो सकती । प्रतीक-पूजा होना आवश्यक है । भगवान निराकार है तो साकार भी तो है । आपने हमें शरीर में देखा है तो हम यह शरीर थोड़े ही हैं । हम तो जीवात्मा हैं । उसको आपको दिखायें ? नहीं दिखायेंगे आपको । वह तो निराकार है । गायत्री-माता की मूर्ति या चित्र जो भी आपने रखा हो, उसके सामने पाँच चीजों से पूजन किया जाता है । पाँच चीजें क्या हैं ? वैसे सोलह चीजें भी हैं । जल एक, अक्षत दो, धूप या सुगन्ध तीन, पुष्प चार, और मीठा या प्रसाद पाँच । वे क्यों ? उनको फूलों की जरूरत क्यों पड़ गई ? भगवान को जरूरत नहीं पड़ गई । आपको स्मरण दिलाया गया है कि भगवान की आपकी पूजा तब सार्थक मानी जायेगी, जब आप इन चीजों को प्रतीक मानकर के अपना जीवन भी उसी तरीके का बनायें । जल सरस होता है, प्रवाही होता है । आपको सरस होना चाहिये । जल के समान कोमल होना चाहिये । अक्षत ? अक्षत का मतलब यह है कि जो आप कमाते हैं उसमें से एक अंश भगवान के लिए लगाइये । धूप ? चाहे आप धूप जलायें, चाहे अगरबत्ती जलायें, दीपक जलायें, कुछ भी जलायें सुगन्ध जलायें तो आपका जीवन चन्दन के तरीके से सुगन्ध फैलाने वाला हो । फूल ? फूल कैसा कोमल होता है ? कैसा सुन्दर होता है ? आपका जीवन ऐसा सुन्दर होना चाहिये । ऐसा कोमल होना चाहिये और भगवान के चरणों पर चढ़ना चाहिये । याचक की सार्थकता इसमें है कि वह भगवान के चरणों पर चढ़े, गले में पड़े । आपका जीवन ऐसा होना चाहिये । मिठास या मीठा ? कोई मीठी चीज भगवान को खिलाते हैं, नमकीन नहीं । " इसका अर्थ यह होता है कि आपकी वाणी, आपका व्यवहार ऐसा हो, जिसमें मिठास ही मिठास भरी हो । जब आप किसी से बातचीत करें तो उसमें मिठास भरी हो । जब आप कोई व्यवहार करें तो ऐसा व्यवहार करें जिसमें मिठास भरी हुई हो । इस तरीके से देव-पूजन में पाँचों चीजों का मतलब यह होता है कि हम स्वयं शिक्षा ग्रहण करें उनसे । ऐसा नहीं है कि भगवान को इनकी आवश्यकता है । धूपबत्ती आप जलायेंगे नहीं तो भगवान के लिए कोई मुश्किल आयेगी । दीपक आप नहीं जलायेंगे तो भगवान को दिखाई नहीं पड़ेगा । यह मतलब नहीं है । भगवान के लिये नहीं, बल्कि अपनी याददाश्त को सही करने के लिए और अपनी जीवन-क्रिया की मापतौल करने के लिये उसका मापदण्ड रखने के लिए ये क्रम लिखे गये हैं ।

चलिए, अब इसके बाद क्या करना चाहिए ? इतना सब कुछ कर लेने के बाद जप और ध्यान करना चाहिए । जप किसका करना चाहिये ? कितना करना चाहिये ? गायत्री-मन्त्र का जप करना चाहिये क्योंकि प्रज्ञा की देवी वह ही है । कितनी माला, करनी चाहिये ? तीन- तीन तो कम से कम करनी चाहिये । ज्यादा कर सकें तो, आप ज्यादा कर लीजिये । तीन क्यों ? तीन इसलिए कि आत्म-परिष्कार के लिए, एक । जीवात्मा का नित्य संशोधन हो इसके लिए दो । तीसरी माला वातावरण संशोधन के लिए । इसका उद्देश्य यह है कि जो सारा का सारा वातावरण गन्दा हो रहा है, उसकी सफाई करने के लिए, एक माला और एक यह कि हम और आप मिलकर काम कर रहे हैं । जो मिशन है,-जो प्रज्ञा-अभियान है, उसकी सफलता के लिए । इस तरह प्रज्ञा-अभियान की सफलता के लिए एक और वातावरण के परिशोधन के लिए अपनी जीवात्मा के संशोधन के लिए- एक । तीन मालाएँ तो कम से कम आपको करनी ही चाहिये । ज्यादा कर सकें तो ज्यादा करिये । ज्यादा में कोई मनाही नहीं है । पर कम से कम तीन माला तो करनी ही हैं । यह मिनिमम है । मैक्सीमम-ज्यादा कर सकते हैं आप । ज्यादा के लिए कोई सीमा नहीं है आपके लिए । अच्छा यह गायत्री का जप हुआ । इस तरीके से जप कीजिए कि किसी पास बैठे को

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

सुनाई नहीं पड़े, । माला से कर लीजिये । अँगुलियों पर कर लीजिये गिनके । इस तरीके से तीन माला का बन्धन निभाइये । प्रज्ञा-योग तीन माला से कम में नहीं होता ।

जप के साथ ध्यान करना चाहिये । जप और ध्यान का, दोनों का मिला हुआ समन्वय समझना चाहिये । ध्यान किसका करना चाहिये ? सविता गायत्री का देवता है । प्रातःकाल के समय पर । प्रातः काल सूरज आपने देखा है न ? गायत्री का सूरज इसे ही मानना चाहिये । यूनिवर्सल है यह । गायत्री माता का जो आपने चित्र रखा है । वह तो आप हिन्दू हैं तो रखा है और अगर आप मुसलमान हैं तो आप नहीं रखेंगे । इसलिए देव-पूजा तो केवल हिन्दुओं के लिए है और यह जो है, सविता का ध्यान, सविता का ध्यान सबके लिए है । यूनिवर्सल है । मुसलमान धर्म में, ईसाई धर्म में, सब जगह भगवान का प्रतीक प्रकाश को माना गया है। तो सविता प्रातःकाल का निकलता हुआ सुनहरा सूर्य, उसका आप ध्यान करते जाइये गायत्री का तीन माला-जप करने के साथ-साथ में एक और बात उसमें शामिल कीजिए कि सविता सवेरे का सूर्य पूर्व दिशा से निकलते हुये सूर्य के सामने आप छोटे बच्चे के तरीके से नंगे बैठे हुये हैं और आपके मन में, आपके शरीर में और आपके अन्तःकरण में, हृदय में तीनों जगह इस सूर्य की किरणें प्रवेश कर रही हैं । शुद्ध कर रहीं हैं । शरीर में सविता की किरणें जब प्रवेश करतीं हैं तो आपको श्रेष्ठ काम करने की प्रेरणा देतीं हैं और आपके अन्तःकरण में जिसका स्थान हृदय माना गया है, उसमें सविता की किरणें प्रवेश करतीं हैं तो आपके अन्तःकरण को भावनाओं से भर देती हैं । मस्तिष्क को ज्ञान से भर देती हैं । शरीर को बल से भर देती हैं या यह कहिये कि शरीर को श्रेष्ठ कर्म करने के लिए और बुद्धि को श्रेष्ठ चिन्तन करने के लिए और भावनाओं में श्रेष्ठता भरने के लिए ये सविता की किरणें हैं । ये अपना अनुग्रह और अपना अनुदान हमको दे रहीं हैं । जप करने के साथ-साथ में यह ध्यान करना आवश्यक है । जप करने से पहले देव-पूजन चन्दन, अक्षत, और पुष्प, उसको मिला करके हमारा जीवन इस तरह का हो । फिर इसके बाद में भगवान के अनुग्रह का भाव करना चाहिए । यह प्रतिज्ञा का भाव है । अनुग्रह का भाव है भगवान ने इस रूप में, सूर्य में सविता के रूप में तीन अनुग्रह हमको दिये हैं । तीन क्षेत्रों में उनका प्रवेश हुआ है । इस तरह एक माला आत्म परिष्कार के लिए, एक वातावरण का संशोधन करने के लिए और एक माला यह आपका प्रज्ञा-मिशन हैं इसकी सफलता के लिए । चलिये यह आपका जप हुआ ।

जप करने के बाद में सूर्य अर्घ्यदान किया जाता है । भगवान को, सूर्य को, जो आपने जल रखा था, उस जल को सूर्य के सम्मुख चढ़ाते हैं । यह किस काम के लिये चढ़ाते हैं । यह समर्पण है । भगवान को, सविता को, सूर्य को समर्पण करते हैं । प्रातःकाल आप जप कर रहे हो, तो आप पूर्व दिशा में जल चढ़ाइये । सायंकाल को आप जप कर रहे हों तो पश्चिम दिशा में जल चढ़ाइये । सूर्य नारायण को भगवान का प्रतीक मान करके आप अपने आप का समर्पण करते हैं । समर्पण का चिह्न क्या है ? कैसे मानें कि समर्पण किया है किसी ने कि नहीं ? अपना सुख बाँटना और दूसरे के दुखों को बँटाना । किसी के दुख को आप बाँटते हैं और सुखों को आप लाकर के देते हैं तो हम मानेंगे कि समर्पण आपने किया है , सूर्य भगवान को । पूजा-उपासना करने के पीछे, यह भावना करनी चाहिये । क्या करना चाहिये ? पूजा उपासना के बाद में आप जल चढ़ायें और साथ-साथ में यह भावना करें कि भगवान को अर्थात् भगवान के संसार को, हम अपने सुखों को बाँटेंगे और संसार में अर्थात् भगवान का विराट रूप है, विराट विश्व है, इसमें जो दुख फैले हुये हैं, उनको घटाने के लिए हम कोशिश करेंगे । सूर्य अर्घ्य देते समय यही भावनाएँ होनी चाहिए । हमारे पास जो सम्पदा है, वह जल के रूप में भगवान के चरणों पर गिरे और वह फैल करके सारे वातावरण में फैल जाये । यह भावना सूर्य अर्घ्य की है ।

अब एक बात और रह जाती है और वह है 'तप' आपको विशेष रूप से ध्यान देना है और गौर करना है । रविवार के दिन या गुरुवार के दिन, दो में से कोई एक दिन चुन लीजिये । सप्ताह में एक दिन तो तप करना ही चाहिये । वैसे तो रोज ही करना चाहिये आदमी को पर अगर रोज नहीं कर सकता तो कम से कम एक दिन उसको अवश्य करना चाहिये । रविवार और गुरुवार में से आपको जो ठीक पड़ता हो उसे चुन लें । छुट्टी वाले दिन प्रायः लोग पकौड़े-कचौड़े बनाते रहते हैं । मित्र, यार-दोस्त आते रहते हैं । उस दिन और कोई दिन अच्छा होता हो, ऐसा मालूम पड़ता हो आपको तो उस दिन भी कर सकते हैं लेकिन एक दिन आपको तप का अभ्यास अवश्य करना चाहिये, अपने आप को तपाने का । तपाने से ईंटे पक्की हो जाती हैं । तपाने से सोना साफ हो जाता है । तपाने से लोहा साफ हो जाता है । तपाने से पानी की स्टीम बन जाती है । अपने आपको तपाना आवश्यक मानिये । यह तो था भगवान का योग और यह अब शुरू होता है तप । तप में क्या काम करना चाहिये ? तप का आपको प्रतीक बताता हूँ । थोड़ा-थोड़ा कर लीजिये । उसका सिद्धान्त आपको याद रहना चाहिये । सिद्धान्त आप भूल जायेंगे तो मुश्किल पड़ेगी । एक तो है अस्वाद व्रत का परिपालन । आप उसे एक समय का ही रखिये अगर दोनों समय आपके लिए सम्भव नहीं है तो स्वाद का त्याग कीजिए । नमक और शक्कर दोनों चीजों का त्याग करने का मतलब यह है कि

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

आपने स्वाद पर विजय प्राप्त कर ली । जिह्वा इन्द्रिय पर विजय प्राप्त कर ली । जिह्वा इन्द्रिय पर ध्यान रखिये । आपको डुबो देने वाली, आपको परेशान करने वाली, हैरान करने वाली यह इन्द्रिय बड़ी खराब है । आगे से आप जब कोई जप करेंगे, तप करेंगे, कोई मन्त्र का उच्चारण करेंगे तो ध्यान रखेंगे । इसलिए पहला काम है जीभ पर कन्ट्रोल करना । वाणी पर भी कन्ट्रोल करना चाहिये, लेकिन खाने पर तो करना ही करना चाहिये, स्वाद पर । एक समय नमक मत मिलाइये । तब ज्यादा नहीं खायेंगे फिर आप पेट के लिए खायेंगे । फिर आप स्वाद के लिए भोजन नहीं करेंगे । तो अस्वाद का अभ्यास हममें से प्रत्येक आदमी को करना चाहिये । चाहे सप्ताह में एक टाइम ही हो । यह एक तप हुआ ।

नम्बर दो ? वाणी जो हमारी है इससे हम उच्चारण करते हैं तो समझ-सोच कर उच्चारण नहीं करते-कि, हमको क्या कहना है ? किससे क्या बात करनी चाहिये ? किससे नहीं कहनी चाहिये ? जो हम कह रहे हैं वह दूसरे के लिए फायदेमन्द है या नुकसान देय है और दूसरे आदमी का दिल दुखाने वाली है ? क्या है, क्या नहीं है ? हम कुछ नहीं सोचते । जो मुँह में आता है उल्लम-गल्लम वही हम बकते रहते हैं । यह न बक करके एक-एक शब्द को समझ-सोचकर बोलना चाहिये । अभ्यास के लिए हमको मौन धारण करने की जरूरत है । दो घण्टे को मौन रहिये आप । तमाम दिन तो-मुश्किल है आपके लिए । तमाम दिन कैसे मौन रहेंगे । कभी बोलेंगे, कभी चिट्टी लिखेंगे, कभी हाथ से लिखेंगे, कभी क्या करेंगे ? कभी क्या करेंगे ? कम से कम दो घण्टे का मौन तो रखिये ही । उस समय रखिये जब लोग, मिलने-जुलने वाले, आपके पास ज्यादा आते-जाते हैं । मौन के लिए सुबह का वक्त ठीक हो सकता है और शाम का वक्त भी ठीक हो सकता है । दिन में आपको अपनी दुकान से टाइम न मिलता हो तो आप सबेरे-शाम का रख लीजिए । नहीं साहब, हम तो सोया करेंगे तब मौन रखा करेंगे । रात को सोने में क्या मौन रखना ? उस तरह के टाइम पर जिस पर कि लोगों के मिलने-जुलने की संभावना हो । घर वाले तो आपसे मिलते ही हैं सुबह-शाम और रात को घर वालों को तो आप बता भी सकते हैं । समझा भी सकते हैं । कह भी सकते हैं भई, बोलना मत हमसे । यह समय हमारे मौन धारण करने का है । मौन भी एक तप है । हम आजकल मौन का अभ्यास करते हैं । इससे पहले भी ऋषियों ने मौन के अभ्यास किये हैं । वाणी से वाणी का मौन जिसका अभ्यास करने से वाणी में तेजस्विता आती है । वाणी से हम जो कुछ कहते हैं उसका दूसरों पर असर पड़ता है, पर जब हमारी वाणी अस्त-व्यस्त है तो किसी पर असर नहीं पड़ेगा । इससे आप संगीत गायें, गाना गायें, व्याख्यान दें, परामर्श दें, प्रवचन दें, कोई नहीं करेगा वह काम । अतः वाणी हमारी शुद्ध हो, इसके लिये हमको मौन का अभ्यास करना चाहिये । स्वाद का अभ्यास करना चाहिये । इतना ही नहीं हमारा आहार भी पुनीत हो । आहार को पुनीत करने के लिए आपको अस्वाद का अभ्यास करना चाहिये ।

इसके सिवाय दूसरी बात है-ब्रह्मचर्य । ब्रह्मचर्य में दो-बातें आती हैं- एक तो शारीरिक संयम । उस दिन, जिस दिन आपको यह व्रत रखना है, उस दिन आपको ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिये । धर्मपत्नी आपकी है तो भी करना चाहिये और धर्मपत्नी नहीं है तो भी करना चाहिये । धर्मपत्नी नहीं है तो कैसे करें ? वास्तव में ब्रह्मचर्य जो खण्डित होता है, आदमी की कल्पनाओं से होता है । शरीर की कोई बात नहीं है । शरीर में तो स्वप्न-दोष भी हो जाते हैं । स्वप्न-दोष से पानी का क्षय हो जाना कोई नुकसान का नहीं है जितना कि हम महिलाओं के सम्बन्ध में गलत दृष्टिकोण रखें । उस दिन आप खासतौर से अपने मन में यह विचार कर लीजिये कि कोई विचार आपके मन में इस तरह का न आये । आये तो इस विचार के ठीक उलटे विचार शुरू कर दीजिये । कोई गन्दा विचार आपके दिमाग में आया है तो उसके ठीक उलटा विचार शुरू कर दीजिए । लीजिये आपको खाने के सम्बन्ध में आता है तो उन लोगों का ध्यान रखिये जिन लोगों ने अस्वाद व्रत रखे थे । काम वासना का विचार आया है तो यह ध्यान रखिये कि हनुमान जी थे, भीष्म पितामह थे, स्वामी दयानन्द थे, शंकराचार्य थे, इन लोगों ने किस तरीके से अपना जीवन जिया ? किस तरीके से शक्ति का संग्रह किया ? इस बात का विचार कीजिए । विचारों को विचारों से काट दीजिये । विचारों को रोका नहीं जा सकता । एक तरह के विचारों को हटा करके दूसरे तरह के विचारों को उस स्थान पर ले आयें तो हमारा विचारों पर कण्ट्रोल करना सुगम हो जायेगा । ब्रह्मचर्य वास्तव में अपने विचारों पर कण्ट्रोल करने की विद्या है । ब्रह्मचर्य माने संयम । इस तरीके से वाणी का तप और काम-इन्द्रिय का तप, इन दोनों तपों को करना चाहिये ।

तप चार तरह के होते हैं । सारी इन्द्रियों का तप-एक, पैसे का तप दो, समय का तप तीन और विचारों का तप चार इन्द्रियों की बात हो चुकी । अब दूसरा तप है-पैसे का आप जो भी पैसा खर्च करें, उसमें एक-एकपैसे को ध्यान में रखिये कि कहीं यह गलत खर्च तो नहीं हो रहा है । कहीं किसी पैसे का आप गलत खर्च तो नहीं कर रहे हैं । हमने दो सौ रुपये महीने में बहुत सारी जिन्दगी काट डाली । यहाँ आने से पहले हम अखण्ड-ज्योति कार्यालय में जितने समय तक रहे हैं, हमने दौ-सौ रुपये महीने में अपना समय काटा है । पैंतीस साल के करीब हम अखण्ड-ज्योति कार्यालय में रहे हैं । वहाँ भी , हमारी गवाहियाँ सुरक्षित हैं ताकि कोई आदमी यह न कहे कि पाँच आदमियों की गृहस्थी दो सौ रुपये में नहीं चल सकती ? जरूर चल सकती है । पैसे का संयम कीजिये । पैसे का संयम करेंगे तो बुरे

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

कामों से बच जायेंगे । नशाखोरी से बच जायेंगे । दुर्व्यसनों से बच जायेंगे । अगर पैसे के ऊपर आपका नियंत्रण नहीं है और मन चाहे जिस तरीके से पैसा खर्च करते हैं तो फिर आपके अन्दर नब्बे बुराईयाँ पैदा हो जायेंगी और उनको फिर आप रोक नहीं पायेंगे ।

इस तरीके से इन्द्रियों का संयम एक, पैसे का संयम दो, अब तीसरा संयम आता है-समय का, समय का भी आप टाइम-टेबिल कर सकेंगे । टाइम-टेबिल बनाकर आप काम करेंगे तो बिनोवा ने इतनी लम्बी यात्रा भी पूरी कर ली थी और इसके साथ-साथ में पढ़ने-लिखने का काम भी जारी रखा । तेईस भाषाओं के विद्वान थे वे । उन्होंने अपने समय का विभाजन इस तरीके से किया हुआ था कि एक सेकण्ड भी बेकार नहीं जाता था । विश्राम करना ? विश्राम भी समय पर था । बिनोवा शाम को छः बजे सो जाते थे । "गर्मियों में सात बजे सूर्य अस्त होता है तो भी वे छः बजे सो जाते थे । उन्होंने यह कभी नहीं देखा कि सूरज आगे चलता है कि पीछे चलता है । उन्होंने घड़ी के ऊपर जिन्दगी को नियमित रखा । जितने भी संसार में महापुरुष हुये हैं उन्होंने, काल को पाटी से बाँधकर रखा । रावण ने काल को पाटी से बाँधकर रखा था । आप भी काल को पाटी से बाँधकर रखिये । घड़ी को अपनी कलाई से बाँधकर रखिये । घड़ी के कहने पर अपना चलने का, फिरने का, खाने का, पीने का, सोने का, उठने का कार्यक्रम बनायें । अपना समय आपके अधिग्रहीत होना चाहिये समय आपका अस्त-व्यस्त नहीं जाना चाहिये । ऐसा न हो कि समय को आप बेसिलसिले और बेहिसाब खर्च करें । समय का निग्रह है यह ।

समय संयम के बाद आता है विचारों का निग्रह । विचारों का निग्रह कर नहीं पाते लोग । चाहे जो सोचते रहते हैं । रात को सोते हुये आँख खुल गई तो न जाने कहाँ के विचार कर रहे हैं ? किस तरह के विचार कर रहे हैं ? असम्भव बातों के भी विचार कर रहे हैं । रात को सिनेमा देखा था । फलाँ औरत देखी थी । कैसी अच्छी है ? उसकी हम चाह रखते हैं । उसका हम ओटोग्राफ लेकर आयेंगे । अरे बाबा ! कहाँ से ओटोग्राफ लेकर आयेंगे ? वहाँ तक का किराया तो दे नहीं पायेंगें फिर ओटोग्राफ कैसे लेकर के आयेंगे । इस तरीके के विचारों का निग्रह करना आना चाहिये । विचार जिस काम में लगाना चाहिये, उसी काम में अगर आप लगायें तो आप वैज्ञानिक हो सकते है साहित्यकार हो सकते हैं । जितने भी संसार में सफल जीवन के मनुष्य हुये हैं उन लोगों ने अपने विचारों पर कण्ट्रोल करना सीखा था । विचार को इस तरीके से खत्म किया कि जहाँ करना है बस उसी जगह करना है । जहाँ नहीं करना है, उस जगह नहीं करना। मन के ऊपर नियंत्रण करने की विधि यही है कि विचारों को अस्त व्यस्त न होने दें । विचारों को काम में लगा दें । आप अस्त-व्यस्त हैं। कहीं घूमने के लिए विचार बन रहा है तो वहाँ से हटाइये और जो आपके पास में ढेरों की ढेरों समस्यायें है, उनके ऊपर बनाइये । बच्चों को कैसे पढ़ायेंगे ? धर्मपत्नी का स्वास्थ्य कैसे अच्छा करेंगे ? अपने जीवन को भी ठीक कैसे बनायेंगे ? आप इस तरीके से योजनायें बनाने में, विचार करने में, विचारों को लगने दीजिए, जब खाली समय हो तब । और जब खाली समय नहीं है तब ? अपने काम को अपने सम्मान का प्रश्न बनाकर के सारे मन को उसी में लगा दीजिये । मन को एक मिनट खाली मत रहने दीजिये । कोई काम आपके पास है तो उस काम को इस तरीके से करिये मानो यह हमारे लिऐ सबसे बड़ी जिम्मेदारी का काम है, जो काम आपने हाथ में ले रखा है, उसे पूरी जिम्मेदारी समझकर कीजिये । फिर देखिये आपका काम कैसा बढ़िया, कैसा शानदार, कैसा अच्छा खूबसूरत काम हो गया ?

इस तरीके से विचारों का संयम-एक, समय का संयम दो, पैसे का संयम तीन, और इन्द्रियों का संयम चार । चार संयम अगर आप करने लगें तो मैं आपको तपस्वी कहूँगा । इसकी शुरूआत करने के लिए आप जीभ से और कामेन्द्रिय से कामवासना के विचार और स्वाद के विचार, इन दोनों को निकालना शुरू करें । यह सबसे पहला शुरुआत का चरण है । इसके बाद के जो चरण हैं वे वही हैं जो मैनें अभी आपको निवेदन किया । इस तरीके से रविवार या गुरुवार के दिन आप शुरूआत करें और पीछे तो आप तमाम दिन कीजिए । हर दिन कीजिये । यह तो हर दिन करने की चीज है । आपको यह नहीं कहा जा रहा है कि आप केवल गुरुवार को ही करेंगे । फिर आपको चाहे जो छूट मिल जायेगी । फिर चाहे जब आप करेंगे । गुरुवार से आप शुरूआत करेंगे । प्रज्ञायोग यही है । दूसरा काम आपको यह करना है कि सोते और उठते समय नये जन्म और पुराने जन्म को याद रखेंगे । शुद्धता रखेंगे । शुद्धता रखने के लिए पवित्रीकरण, प्राणायाम और न्यास सब करेंगे और देवसेवा और देव-पूजन करेंगे । जल, अक्षत, धूप के अनुरूप अपना जीवन बनायेंगे । भक्ति-योग के लिये तीन मालाएँ करेंगे एक अपने लिए, एक अन्तःकरण संशोधन के लिये और एक अपने शरीर को सामर्थ्यवान बनाये रखने के लिए । और ? और सविता का ध्यान करेंगे गायत्री जप के साथ-साथ में सविता आपको बल दे और ज्ञान-बुद्धि दे । अर्घ्यदान करते हुये बराबर यह बात कहेंगे कि "अपने सुख बाँटेगे और दूसरों का दुख बँटायेगें । रविवार और गुरुवार में से किसी एक दिन आप यह करेंगे । बस, इतना ही प्रज्ञा-योग है । प्रज्ञा-योग आप नियमित रूप से कीजिए । हमारी छपी हुई किताब है । समझ में न आये तो फिर आकर सीख लेना कभी । प्रज्ञा-योग की आप साधना कीजिये । इस समय यह आपके लिऐ पर्याप्त है । आज की बात समाप्त ।

।।ॐ शान्ति : ।।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

हेमाद्रि संकल्प और उससे जुड़े अनुशासन

श्रावणी पर्व-(दिनांक ८/७/७९) पर दियागया उद्बोधन (शांतिकुंज परिसर)

गायत्री मंत्र हमारे साथ साथ-बोलिए-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो, भाइयो, आज श्रावणी का पुनीत पर्व है, जिसको मनाने के लिए हम और आप एकत्रित हुए हैं । आइये विचार करें कि यह पर्व हमारे लिए क्या संदेश लेकर आया है और क्या दिशा-धारा निर्धारित करने आया है । हमारी महान परम्परायें हैं जो प्रायः हमारे स्मृति पटल से बिखर जाती हैं, जिन्हें हम भूल जाते हैं । हम लोगों के साथ कुछ ऐसा ही है । आदमी का झुकाव, मनोवृत्तियों का झुकाव नीचे की दिशा में है । ऊपर की दिशा में चलने के लिए बड़े प्रयत्न करने पड़ते हैं । कुएँ में से पानी निकालने के लिए कई तरह की मेहनत करनी पड़ती है । जमीन से, सीढ़ियों से ऊपर चढ़ने के लिए कई तरह के इंतजाम करने पड़ते हैं । छत पर से नीचे गिरना हो तो-कुछ मेहनत करने की जरूरत नहीं है ! किसी खड्डे में कोई चीज आपको धकेलनी हो तो मेहनत करने की जरूरत नहीं है । ऊपर चढ़ाने के लिए मेहनत करनी पड़ती है । इसीलिए ऋषियों के द्वारा भारतीय संस्कृति का स्वरूप इस तरीके से बनाया गया है कि जिससे आदमी को ऊँचा उठने का, आगे बढ़ने का मौका मिल सके । मनुष्य - गिरता तो है ही, गिरने में क्या दिक्कत है ? मन की बनावट ही ऐसी है । इसके अन्दर जन्म-जन्मान्तरों के पशुवत् संस्कार चौरासी लाख योनियों में घूमने के बाद आ गये हैं । ये कुसंस्कार आदमी के लिए काफी हैं कि उसे नीचे गिराते रहें और नीचे की वृत्तियों की तरफ उसका ध्यान आकर्षित करते रहें । इसमें कुछ करना नहीं है ।

संस्कृति किसलिए बनायी गयी ? धार्मिक परम्परायें और अध्यात्म का ढाँचा किसलिए बनाया गया ? अध्यात्म का ढाँचा और संस्कृति की परम्परायें सिर्फ एक काम के लिए बनायी गयीं कि मनुष्य को ऊँचा उठाया जाये, आदमी को आगे बढ़ाया जाये । इन दो उद्देश्यों को लेकर संस्कृति बनायी गयी है । भारतीय संस्कृति में त्यौहारों और पर्वों का अपने आप में बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान है । श्रावणी का तो सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण स्थान है । ब्रह्मकर्म में श्रावणी का पहला नम्बर आता है । आध्यात्मिक दृष्टि से भी श्रावणी पर्व अत्यधिक महत्वपूर्ण है । अनेक पर्वों के अपने-अपने आधार हैं । हमारा आर्थिक संतुलन किस तरीके से स्थिर रहे और हमारी अर्थोपार्जन से लेकर के अर्थ के व्यय करने तक की नीति क्या होनी चाहिए-ये आधार है दीपावली का । विजयादशमी का त्यौहार है जो हमको विजय प्राप्त करने के लिए, विजयी और सफल जीवन जीने के लिए, भौतिक सामर्थ्यों का किस तरीके से संकलन करना चाहिए, हथियारों से कैसे सुसज्जित रहना चाहिए, स्वास्थ्य सम्वर्धन कैसे करना चाहिए, दुर्गा के तरीके से हमारी शक्तियों का एकत्रीकरण कैसे होना चाहिए, वगैरह-वगैरह समर्थता की शिक्षा हमको विजयादशमी से मिल सकती है । बसन्त शिक्षा का त्यौहार-हमारे लिए शिक्षा की जरूरत है । हमको पढ़ना चाहिए । विद्या बिना आदमी किसी काम का नहीं होता । ये बसन्त पंचमी सरस्वती के जन्मदिन का त्यौहार है । होली का अपना महत्त्व है, गन्दगी के विरुद्ध लड़ने, पाप और अनाचार के विरुद्ध लड़ने के लिए । गन्दगी को जलाने, फूंक देने और नष्ट करने के लिए हमारा होली का त्यौहार है । एक से एक बढ़िया त्यौहार हैं । इन सारे के सारे त्यौहारों में ज्यादा महत्त्वपूर्ण त्यौहार वह है जो कि आज आपके सामने उपस्थित है-श्रावणी पर्व ।

श्रावणी क्या है ? श्रावणी यज्ञोपवीत का त्यौहार है । इसमें यज्ञोपवीत को हम हर साल बदल देते हैं । ठीक उसी तरह जैसे हम बन्दूक का, मोटर का लाइसेंस हर साल बदलते हैं । बही खाता भी हर साल बदलते हैं । बहुत से काम ऐसे हैं जो हर साल बदलने पड़ते हैं । क्यों ? ताकि हमको देखने का, निरीक्षण करने का मौका मिलता रहे । यह रिन्यू कराने का त्यौहार है । यज्ञोपवीत बहुत महत्वपूर्ण चीज है । बेटे ! यज्ञोपवीत एक तरह के संकल्प का प्रतीक है, जिसमें आदमी दूसरा जन्म लेने की प्रतिज्ञा करता है । दूसरा जन्म क्या है ? दूसरा जन्म द्विज का । यज्ञोपवीत दूसरे जन्म का सर्टिफिकेट है । यह इस बात का संकेत है कि हमें इंसान की जिन्दगी जीनी चाहिए । इंसान का जन्म मिलना, ये भगवान की कृपा के ऊपर है और उसका ठीक तरीके से इस्तेमाल करना इंसान के ऊपर है कि वह अपनी जिन्दगी को उस उद्देश्य के लिए इस्तेमाल करे जिसके लिए भगवान ने जन्म दिया है । भगवान ने किस काम के लिए

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

जन्म दिया है ? भगवान ने किसी खास मकसद के लिए जन्म दिया है कि आदमी को हैवान नहीं रहना चाहिए, इंसान बनना चाहिए । इसके लिए इंसान का कलेवर और इंसान का लिफाफा, इंसान के हाथ-पाँव, इंसान के कलपुर्जे और इंसान की मशीन-ये सारी की सारी चीजें हमारे सुपुर्द कर दी गयी हैं भगवान के द्वारा । एक बात की जिम्मेदारी अब हमारी है कि जिस काम के लिए यह मशीन हमको दी गयी है उस काम को पूरा करें । इंसान होकर के दिखायें । हैवान से एक दर्जा आगे बढ़ें, तरक्की करें । इस तरक्की के बाद में, एक दर्जा ऊँचा उठने के बाद में, इस बात का सबूत पेश करें कि इंसान से अगले वाले दर्जे प्राप्त करने का हमको हक है । इंसान से आगे के दर्जे । हाँ, इंसान से आगे और भी दर्जे हैं । कौन से हैं ? जिसको हम देवत्व का दर्जा कहते हैं । इंसान अपनी ही जिन्दगी में एक और कदम बढ़ा सकता है, एक और प्रमोशन प्राप्त कर सकता है जिसको देवता कहते हैं । देवता कौन होते हैं ? देवता इंसान होते हैं । कैसे इंसान होते हैं ? जैसे हमारे बुजुर्ग थे । यहाँ देवता निवास करते थे । देवता का विचार, देवता का चिंतन अलग होता है । देवता और इंसान की शक्ल में तो फर्क नहीं होता, पर दृष्टिकोण में जमीन-आसमान का फर्क होता है । आप इस बात के लिए अगर सबूत पेश करें कि हमको देवता बनना चाहिए, तो देवताओं के अन्दर जो विशेषतायें होती है, देवताओं को जो सम्मान मिलता है, देवताओं में जो सामर्थ्य होती है-देवता अपने आप में हँसत-हँसाते रहते हैं । देवता अपनी सुगन्धि से वातावरण को न जाने क्या से क्या बना सकते हैं । वह दूसरा दर्जा आप पा सकते हैं इसी जिन्दगी में ।

आपने तो न जाने क्या-क्या कल्पनायें कर रखी हैं कि मरेंगे तो स्वर्ग लोक में जायेंगे । कहाँ मरेंगे आप ? शरीर बदल लेते हैं बारबार । कपड़ा पुराना होता है तो बदल लेते हैं । नहाना भी पड़ता है । बनियान में गंध आ जाती है, धोती में गंध आ जाती है तो रोज धोकर के दूसरी बदल लेते हैं । दूसरे दिन फिर दूसरी बदल लेते हैं । मरेंगे, मर कर फिर कहाँ जायेंगे ? बैकुण्ठ लोक में जायेंगे । कहाँ है बैकुण्ठ ? बैकुण्ठ इस जमीन में है । आपको मालूम नहीं है । स्वर्ग भी इसी जगह है और नर्क भी । देवता भी इसी जगह पर रहते हैं और राक्षस भी । इंसान भी इसी में रहते हैं और हैवान भी इसी में रहते हैं । ये सारी किस्में मनुष्यों की हैं । तरक्की के लिए मैट्रिक के बाद आप बी. ए. कर लें, बी. ए. के बाद आप एम. ए. कर लें और पोस्ट ग्रेजुएट हो जायें । इसी तरीके से सिपाही से आप दरोगा हो जायें, दरोगा से आप सुपरिन्टेडेन्ट हो जायें । इस तरीके से बहुत से चांस हैं । आप चाहें तो एक और भी मौका है कि देवताओं के बाद आप भगवान भी हो सकते हैं । भगवान ? हाँ भाई साहब मैं आपसे कहता हूँ कि आप भगवान भी हो सकते हैं । इंसान परब्रह्म नहीं हो सकता, पर भगवान हो सकता है । परब्रह्म और भगवान में क्या फर्क है ? परब्रह्म वह है जो सारे के सारे ब्रह्माण्ड के ऊपर नियन्त्रण रखे हुए है, काबू रखे हुए है, कब्जा रखे हुए है । सारी सृष्टि का संचालन जो व्यवस्थित रूप से चलाता है और बनाता है-उसका नाम है-परब्रह्म । भगवान उनको कहते हैं, जिन्हें हम देवदूत कहते हैं जो विश्व की व्यवस्था को कायम रखने के लिए आते हैं और अपना काम करने के बाद चले जाते हैं । इन्हें अवतार भी कहते हैं- जैसे भगवान रामचन्द्र जी, भगवान कृष्ण चन्द्र जी, भगवान परशुराम और भगवान बुद्ध आये । आदमी का ऊँचे से ऊँचा स्तर भगवान का है । आपके लिए चांस है । इंसान का जन्म पाकर के ठीक तरीके से अपनी मंजिल के ऊपर चढ़ते चले जायें ताकि वह सब पा सकें । इसी का स्मरण दिलाने, जानकारी कराने के लिए संस्कार कराये जाते हैं ।

हिन्दू का बच्चा जब थोड़ा बड़ा, समझदार होने लगता है तो हिन्दू परम्परा के मुताबिक उसका यज्ञोपवीत कराया जाता है । यज्ञोपवीत तीन लड़ का एक धागा है जिसे कंधे पर धारण किया जाता है । जब मल मूत्र विसर्जन के लिए जाते हैं तो उसे कान पर चढ़ा लेते हैं और हाथ साफ करके कान से उतार लेते हैं । उससे क्या हो जाता है ? ये हमारे प्रतीक हैं । प्रतीकों के पीछे न जाने क्या से क्या शिक्षण भरा हुआ पड़ा है । प्रतीक हमारी गीता की पुस्तक, हमारे मन्दिर में पत्थर की प्रतिमा । श्रद्धा आरोपित करके इन प्रतीकों को हमने शक्तिपुँज, भगवान बना दिया है । मीरा के गिरधर, रामकृष्ण परमहंस की काली, एकलव्य के लिए गुरु प्रतिमा, ये भगवान थे । नहीं साहब ये तो खिलौने थे । हाँ भगवान के प्रतीक खिलौने भी हो सकते हैं, अगर उन्हें श्रद्धा से समन्वित कर दिया जाये तब ! इसी लिए मिट्टी का खिलौना जिसे एकलव्य ने बिना किसी संस्कार, बिना किसी मंत्र के अपने आप बना लिया था, उसने गजब करके दिखा दिया और मीरा ने-जिसका संस्कार भी नहीं हुआ, प्राण प्रतिष्ठा भी नहीं हुई, मन्त्रोच्चार भी नहीं किये, उस पत्थर के टुकड़े में से भगवान बन दिया था । धागे को श्रद्धा से समन्वित करके हम जनेऊ में से भगवान को बना सकते हैं । कैसे बना सकते हैं जनेऊ में अगर हमारी निष्ठायें और आस्थायें शामिल हो जायें तो क्या न क्या हो सकता है । उस श्रद्धा को जिस श्रद्धा के आधार पर हैवान को इंसान बनाने के लिए जनेऊ पहनाया जाता है । उसके साथ मौलिक

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

फिलॉसफी, तत्वज्ञान जोड़ दिया जाता है कि दूसरे जन्म से मतलब ये है कि आदमी जब पैदा होता है तो शरीर से तो इंसान होता है, लेकिन मानसिक स्तर की दृष्टि से, चिंतन और विचारों की दृष्टि से हैवान होता है, नरपशु होता है । नरपशु किसे कहते हैं ? जिनका कि शरीर तो इंसान का होता है, पर दिल-दिमाग हैवान का होता है । उसका नाम नरपशु है । नरकीटक और नरपिशाच आप ने सुने होंगे । परिस्थितियाँ जब मजबूर करती हैं तो आदमी नरपिशाच भी हो सकता है और नरकीटक भी ? लेकिन वे कम होते हैं । आमतौर से आदमी नरपशु पाये जाते हैं ।

नरपशु कैसे पाये जाते हैं ? पशु और इंसान की मनोवृत्तियों में क्या फर्क है ? शरीरों में तो बहुत फर्क है । शरीर में मूल फर्क ये है कि आदमी बोल सकता है, जानवर बोल नहीं सकता । आदमी में समझ होती है, जानवर में समझ नहीं होती । आदमी दो पैरों से खड़ा हो सकता है, जानवर दो पैरों से खड़ा नहीं हो सकता । रीढ़ की हड्डी की बनावट-आदमी की दूसरी तरह की है और जानवर की दूसरी तरह की है । इंसान को हँसना-रोना आता है और जानवर को हँसना-रोना नहीं आता । शरीर की दृष्टि से आदमी भिन्न है । आदमी को काम करने, पुरुषार्थ करने के लिए इतना शानदार हाथ दिया गया है कि मैं कहता हूँ कि यह गजब का है । इससे आदमी न जाने क्या कर सकता है । आदमी का दिमाग कमाल का है । ये क्या है ? ये इंसान और जानवर की बनावट में साफ फर्क है, जो मैंने आपको बताया । लेकिन एक मामले में दोनों एक हैं । वह किस मामले में हैं ? आदमी की नीयत और मनोवृत्ति । जानवरों की मनोवृत्ति की धुरी दो हैं । पृथ्वी की धुरी दो हैं-एक उत्तरी ध्रुव, एक दक्षिणी ध्रुव । गाड़ी की धुरी दो हैं-एक दायाँ वाला पहिया, एक बायाँ पहिया । बैलेन्स इन्हीं पर टिका रहता है । एक को गिरा दें तो फिर गाड़ी गिर पड़ेगी । इसी तरीके से हैवान दो चीजों पर टिका रहता है । उसकी नीयत आप खोलिये, पोस्टमार्टम कीजिए, उसके दिमाग को तौल के देखिये तो हैवान के विचारों में दो चीज पाइयेगा, तीसरी कोई चीज नहीं पायी जायेगी । आदमी क्या सोचता है और क्या करना चाहता है ? आदमी की इच्छायें, प्रेरणायें, विचारणायें क्रियायें क्या हैं ? आदमी की इच्छायें पहले होती हैं, इच्छाओं पर विचार करने के लिए दिमाग मजबूर होता है और विचार करने के बाद में शरीर को उसका हुक्म मानना पड़ता है । शरीर दिमाग का कहना मानता है और दिमाग हमारी मान्यताओं, आस्थाओं, आकांक्षाओं का हुक्म मानता है । दिमाग हमारा खराब है, हमारी आस्थायें और नीयत खराब हैं । इसीलिए हमारी नीयत, इच्छायें, रुचि, लक्ष्य आदमी की नहीं हैवान की हो जाती है तब दिमागी दृष्टि से, विचारों की दृष्टि से इंसान और हैवान में कोई फर्क नहीं पड़ता । दोनों हूबहू एक हो जाते हैं । इनकी नीयत में दो ही चीज दिखाई पड़ती हैं-पैसा और औलाद । आप क्या चाहते हैं ? पैसा । आप क्या चाहते हैं ? औलाद । तीसरी कोई चीज न हो तो आप शरीर की दृष्टि से कौन हैं ? हम नहीं जानते, लेकिन आप मन की दृष्टि से, भावना की दृष्टि से, चिन्तन और आस्थाओं की दृष्टि से कौन हैं, विचारिये ।

हैवान को इंसान बनने के लिए क्या करना चाहिए ? वही जो यज्ञोपवीत में सिखाया गया है । यज्ञोपवीत में सारे का सारा पाठ्यक्रम, सारे का सारा कैरिकुलम, सारी की सारी स्कीम्स, जो स्कूलों में पढ़ाया जाता है , जो छोटे रूप में, संक्षेप में इसके भीतर बना दिया गया है । क्या करना चाहिए आदमी को ? आदमी को हैवान के बदले दो काम करने चाहिए, एक तो हजारों जन्मों के साथ जो मलीनतायें आदमी के ऊपर हावी हो गयी हैं, इनसे लोहा लेना चाहिए, उन्हें दूर करना चाहिए । हमें लड़ाई लड़नी चाहिए उन निकृष्ट मनोवृत्तियां और कुसंस्कारों से जो न जाने किस-किस जन्म के, ज्यों के त्यों अभी भी हमारे भीतर मौजूद हैं । लड़ाई से तात्पर्य-तप, संयम, कानून, मर्यादा और मनोबल से है । तपश्चर्या के अन्तर्गत ये सब चीजें आती हैं जिन्हें यज्ञोपवीत संस्कार कराते समय सिखाया जाता है । आपको अपने कुसंस्कारों के विरुद्ध बगावत खड़ी करनी चाहिए और अपने भीतर इंसानी ताकत विकसित कर देवत्व धारण करना चाहिए ।

एक काम तो यह है कि हमें अपने स्वार्थ को जानना चाहिए । स्वार्थ क्या है ? स्वार्थ यह कि हम जीवन में तरक्की करें । तरक्की से हमको आत्मसंतोष, यश मिलेगा और इतिहास के पन्नों पर हम अपना नाम छोड़ करके जा सकेंगे । हमारा स्वार्थ और भी है कि इस दुनिया में जो खुशी हमको मयस्सर न हो सकी, वो खुशी जिन्दगी में आनी चाहिए । खुशी किसे कहते हैं ? खुशी का नाम है-स्वर्ग । स्वर्ग किसे कहते हैं ? इंसान की जिन्दगी और दृष्टिकोण में खुशी-प्रसन्नता के समावेश का नाम है-स्वर्ग । स्वर्ग कोई गाँव, बस्ती, कोई लोक नहीं है । फिफ्थ डायमेंशन, फोर्थ डायमेंशन ये विचारों और चिन्तन के डायमेशन होते हैं । स्वर्ग भी एक डायमेंशन है-हमारे दृष्टिकोण का । इसमें हम देखना शुरू करते हैं तो इस दुनिया में बड़ी खुशी, खूबसूरती, आनन्द और तरह-तरह के नजारे दिखायी पड़ते हैं । हमको बेहद शांति दिखायी पड़ती है चारों ओर । इसका नाम है स्वर्ग । नर्क क्या है ? नर्क उसी का नाम है कि जहाँ कहीं भी हम निगाह फेंकते हैं अथवा स्पर्श

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

करते हैं, हाथ डालते, सम्बन्ध बनाते हैं, वो सब बागी हो जाते हैं । कौन-कौन बागी हो जाते हैं-हमारी बीबी, हमारे बच्चे, हमारे पड़ौसी, हमारा समाज, यहाँ तक कि हमारा शरीर भी कहता है मारूँगा डण्डे से आपको । हमारा चिंतन, दृष्टिकोण जब विकृत हो जाता है तो हमारा शरीर, दिमाग बगावत कर देता है । हमारे कम्प्यूटर ने हमारे विरुद्ध झंडा खड़ा कर दिया कि आपको सोने नहीं देंगे, चैन से रहने नहीं देंगे । चिंताओं, निराशाओं से दिमाग हैरान हो जाता है । बेटे ! हमारे जीवन में नर्क भी है और स्वर्ग भी, बन्धन भी हैं और मुक्ति भी । चारों ओर के बन्धनों ने हमको जकड़ रखा है-पैरों में, हाथों में, गले में सब जगह बन्धन । ये हमारी कमजोरियाँ हैं वरना आदमी के ऊपर क्या बन्धन हो सकता है ? जानवर पर बन्धन हो सकते हैं, पैर में, गले में रस्सी बाँध दी । इंसान को कोई नहीं बाँध सकता, लेकिन उन्नति के मार्ग पर जिन बन्धनों ने रोककर रखा है वो आपकी कमजोरियों और दृष्टिकोण से ताल्लुक रखते हैं । अगर इन्हें तोड़ा जा सके तब ? आपकी मुक्ति हो सकती है । इसी को कबीर ने "जीवन मुक्ति" कहा था और ये नाम मुझे बहुत पसन्द आया । स्वर्ग वह जो आदमी की इसी जिन्दगी में-खुशी, उमंग, उत्साह और आशाओं के रूप में है । ये चीजें अगर मिल जाती हैं तो आपका स्वार्थ पूर्ण हो जाता है । आप जीवन को नेक, समुन्नत सुसंस्कृत, सभ्य शालीन बनायें तो स्वार्थ पूर्ण है ।

परमार्थ-एक और उद्देश्य है । इंसान की जिन्दगी का परमार्थ किसे कहते हैं ? जिससे भगवान की इच्छायें पूरी हों । भगवान के प्रति आपका ख्याल है कि वह एक छोटी तबियत का है । आप जैसे छोटे हैं, बिलकुल वैसा ही छोटे मॉडल का भगवान आपने बना के रख लिया है, जो खुशामद, चापलूसी, चमचागीरी, प्रार्थना, पूजा, कराने के लिए मारा-मारा फिरता है । आऽहा ! आप और आपका बनाया भगवान-"राम मिलायी जोड़ी और एक अंधा, एक कोढ़ी ।" दोनों हूबहू एक जैसे 'सगे माँ जाये भाई ।' एक चापलूसी पसन्द करता है और दूसरे को चापलूस बनाता है । नारियल खाइये, मनोकामना लाइये । बेटे, ये भगवान नहीं है । मैं तो दूसरे भगवान की बात कहता हूँ । कौन-सा ? जो आपके हृदय में करुणा, सहृदयता, उदारता के रूप में विद्यमान रहता है । करुणा के रूप में भगवान ? हाँ करुणा के रूप में भगवान । वाल्मीकि ने एक बहेलिये के तीर से क्रोंच पक्षी को घायल देखा । क्रोंच पक्षी तड़प रहा था । उसकी बीबी उसके पास बैठी रोती-बिलखती, प्राण त्याग रही थी । उसकी करुणा को, उसके दुखों को, उसकी संवेदना को वाल्मीकि ने देखा । उनके पत्थर जैसे कठोर हृदय के भीतर वो करुणा की धारा आ गयी और जिस क्षण करुणा की धारा आयी, उसी क्षण से उनके अंदर से अध्यात्म फूट पड़ा । अध्यात्म माने भगवान, भगवान माने अध्यात्म। करुणा किसे कहते हैं ? जिसको हम सेवा कहते हैं, उदारता, परमार्थ कहते हैं । भगवान ने ये अपेक्षा की इंसान से कि वह निष्ठुर, कृपण, स्वार्थी न बने । उसे उदार, परोपकारी, लोकसेवी बनना चाहिए और भगवान के कामों में हिस्सा बटाना चाहिए । भगवान ने इंसान को अपने सेक्रेटरी के रूप में, इंजीनियर के रूप में इसी लिए बनाया कि हमारे बगीचे को-हमारे उद्यान को अच्छा, सुरम्य बनाने में हमारा हाथ बटाये । बड़े बेटे से बाप हमेशा उम्मीद करता है कि हमारा बेटा जब बड़ा हो जायेगा तो हमारे कारोबार में हाथ बटायेगा । ठीक इसी तरह भगवान ने अपने बड़े बेटे इंसान से ये उम्मीद की है कि उसकी दुनियाँ को सभ्य, सुसंस्कृत, समुन्नत बनाने के लिए हमारा हाथ बटायेगा । ये ही पूजा है, ये ही भजन है, भाई साहब, आप सुनते क्यों नहीं ? नहीं साहब भजन में तो हम ग्यारह माला का जप करते हैं । ग्यारह माला के पीछे ये ही मकसद है, आप समझते क्यों नहीं ?

हमारा परमार्थ इस बात में है कि हम इंसान की जिन्दगी अपना कर सादा जीवन यापन करें, कम में गुजारा करें, कम खर्च में काम चलायें, और जो हमारे पास शारीरिक, मानसिक, आर्थिक एवं अन्य प्रकार के साधन बच जाते हैं, उनको भगवान के काम में लगायें । भगवान की बैंक में जमा करें, ताकि हजारों गुना होकर के फिर हमारे पास आयें और भगवान हमारी ईमानदारी पर विश्वास करे । हमारा जो प्रमोशन है देवता का, अवतार का, ये सारे के सारे प्रमोशन हमको टाइम पर मिलते चले जायें । ये हमारा परमार्थ है-भगवान को प्रसन्न करना, जीवन में उदार होना ! हम एकादशी उपवास करें तो ? मर्जी है आपकी । पेट अच्छा होगा, पर एकादशी व्रत भर से भगवान प्रसन्न नहीं होता, उदारता और परमार्थ परायणता के बिना । इसीलिए मित्रो । मैं ये कहता हूँ कि भगवान की प्रसन्नता के लिए फिर एक बार समझिये । भगवान का स्वरूप आदमी की सम्वेदना में, उदारता के रूप में, परमार्थ परायणता, लोकमंगल के रूप में होना चाहिए और इस विश्व को सुखद, समुन्नत बनाने के रूप में होना चाहिए । न भगवान का रूप इससे कम में है और न इससे ज्यादा होने की जरूरत है । आदमी का स्वार्थ इससे कम में नहीं हो सकता । सांसारिक स्वार्थ भी मैं इसी को कहता हूँ । संसार का स्वार्थ-जिन आदमियों ने अपने व्यक्तित्व को गौण और स्वभाव को श्रेष्ठ बनाया है, उनके ही स्वार्थ पूरे हुए हैं । सुखी, सम्पन्न, यशस्वी, वो ही रहे हैं । पारिवारिक

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

आनन्द शारीरिक आनन्द उन्हीं ने उठाया है । संसार और परमार्थ दोनों एक में मिले हुए हैं । अध्यात्म और भौतिकवाद अलग नहीं हैं, दोनों एक दूसरे से जुड़े हुए हैं । हमारा शरीर और आत्म, दोनों एक दूसरे से जुड़े हैं । अलग हैं ? अलग नहीं हो सकते । अलग निकलेंगे तो शरीर बेकार हो जायेगा, और हम बेकार हो जायेंगे । भौतिकता और आध्यात्मिकता दोनों आपस में जुड़ी हुई हैं । स्वार्थ और परमार्थ दोनों जुड़े हुए हैं । इन दोनों की शिक्षा के लिए सारी की सारी फिलॉसफी और सारे का सारा दर्शन हमारे यज्ञोपवीत में जोड़ दिया गया है ।

यज्ञोपवीत जो हमको ये सिखाता है कि आदमी को हैवान का चोला छोड़ना और इंसान की जिन्दगी में प्रवेश करना चाहिए । आदमी को उदार और उदान्त बनना चाहिए । ये ही शिक्षण है । सारे के सारे शिक्षण को आपने देखा ? हमने कर्मकाण्ड कराये, यज्ञोपवीत पहनाया और आपको याद दिलाया कि आपके जीवन का मकसद, आपके जीवन का लक्ष्य क्या है ? इंसान के कलेवर में रहने वाले शैतान को ठोकर मार कर भगा दीजिए और जिस भगवान के निवास करने की पूरी-पूरी गुंजाइश है, उसे स्थापित कर लीजिए । यही है जीवन का लक्ष्य, इसी को दूसरा जन्म कहते हैं । जनेऊ पहनाते समय, यज्ञोपवीत करते समय यही शिक्षायें दी जाती हैं और यही दी जानी चाहिए । इसी के लिए आपको दो काम करने पड़े थे -एक तो दस स्नान करने पड़े और दूसरा हेमाद्रि संकल्प करना पड़ा । यज्ञोपवीत करते समय, श्रावणी पर्व मनाते समय विशेष उपासना की प्रक्रिया को पूरा करते समय में ये दो आधार बहुत आवश्यक हैं । कौन-कौन से ? आपको दस स्नान करने चाहिए । इसका क्या मतलब है ? हमारे पास इन्द्रियाँ हैं-दस, और प्रत्येक इन्द्रिय अपने-अपने ढंग से मलीनतायें पैदा करती हैं । जिससे हमारा स्वरूप, हमारे जीवन की श्रेष्ठता और शालीनता मलीन होती चली जाती है । इसीलिए इनकी धुलाई, मंजाई, घिसाई, पिसाई और धुनाई करना जरूरी है । दस स्नान से धोइये आप इनको । शरीर को ? हाँ, शरीर को तो आप साबुन से भी धो लें तो कुछ बनता-बिगड़ता नहीं है । दस स्नान की फिलॉसफी आप समझिये कि हमको अपनी दसों इन्द्रियों के माध्यम से होने वाले गुनाहों और गलतियों से बाज आना चाहिए ।

हमारे प्राण हैं दस । पाँच प्राण और पाँच उपप्राण ये हमारी चेतना के दस हिस्से हैं । पाँच तत्वों के भी दो हिस्से हैं-पंच तन्मात्रायें और पंचतत्व । पंचतन्मात्रायें-शब्द, रस, रूप, गंध और स्पर्श हैं और अग्नि, जल, वायु, आकाश और पृथ्वी ये पाँच तत्व हैं । आप शरीर की धुलाई कीजिए, जिससे ये बना हुआ है, और मन की धुलाई कीजिए जो कि प्राणों से बना हुआ है । आपको सबेरे दस स्नान कराये गये थे आपने दस स्नान का ये मकसद, ये प्रेरणा, ये इच्छाधारा, ये संकेत समझा होगा, तब तो ठीक है और अगर संकेत नहीं समझा होगा तो-"सांप निकल गया लकीर पीटें" ये आपकी मर्जी की बात है । आजकल कर्मकाण्डों और पूजा के नाम पर लकीर पिटती है । आदमी ने लकीर पीटने के पीछे, कर्मकाण्डों के पीछे जो दिशाधारायें रहनी चाहिए थीं और रहती थीं, उन्हें न जाने क्यों भुला दिया है । उनसे महरूम और वंचित रह गये । चन्द पूजा से आदमी को न जाने कैसे संतोष हो जाता है । जैसे आचमनम् समर्पयामि, अर्घ्यंसमर्पयामि, स्नानम् समर्पयामि, एक चम्मच जल के पीछे छिपी प्रेरणा और दिशाधारा समझिये । वह ये कि आपके शरीर में से जो पसीना निकलता है अर्थात् जो श्रम आपकी मेहनत और मशक्कत है उसे आप भगवान के लिए लगाइये । वह लोकहित के लिए हो, उसी से आप स्नान करा सकते हैं । ये अक्षत, नैवेद्य कहाँ है दिखाना जरा ? शक्कर की गोलियाँ नहीं, भगवान का नैवेद्य है-हमारे श्रमदान के साथ-साथ में हमारा अंशदान । हमारी कमाई का एक हिस्सा भी जुड़ा रहना चाहिए । गवर्नमेंट का एक टैक्स-इन्कमटैक्स और आदमी के धर्म का टैक्स-हर आदमी की कमाई में भगवान का एक शेयर यही है "अक्षत समर्पयामि" की प्रेरणा, आप सुनते नहीं, दिशा निर्देशों को समझते नहीं और लकीर पीटने पर उतारू हो गये हैं । पीछे से कहते हैं भगवान प्रसन्न नहीं हुआ, हमारा उद्देश्य पूरा नहीं हुआ । इसीलिए मित्रो ! आज श्रावणी के दिन आप ये कोशिश करें, अपने गरेबान में मुँह डालें और जहाँ कहीं भी मलीनतायें दिखायी पड़ें उनसे बगावत करने के लिए आमादा हो जाइये । ये आपके दस स्नानों की शिक्षा है ।

हेमाद्रि संकल्प किसे कहते हैं ? चिन्तन और कृत्य जो हम शरीर से करते हैं । आदमी का चिंतन-बीज है और कृत्य उसका फल । विचार भी एक काम है, उसका परिणाम भी होता है । गंदे विचार करते रहिये फिर देखिये आपका पतन कैसे होता है, दिमाग कैसे खराब होता है । हेमाद्रि संकल्प इस बात को बताता है कि हमारे जीवन में जो निषेधात्मक पक्ष है-उसको ठीक करें, धोयें, लोहा लें, लड़ें बराबर अपने आपसे । लड़ाई में कमजोरी को जाहिर कर दिया तो आपके ऊपर आसुरी शक्तियाँ हाबी हो जायेंगी । इसीलिए हर समय आपको चौकीदारी करनी चाहिए । जिस दिन पहरा बन्द कर देंगे उसी दिन आपके घर का सफाया हो जायेगा, चोर माल उठा ले जायेंगे । इसके अतिरिक्त दो काम आपके और हैं-एक ऋषिपूजन और दूसरा देवपूजन । हमारे जीवन को ऊँचा उठाने के लिए सत्संग और स्वाध्याय

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अति आवश्यक है । चारों ओर के वातावरण का असर हम पर पड़ता है । उसे दूर करने के लिए हम ज्ञान का, विचारणाओं का लगातार शिक्षण करें । अगर हमें श्रेष्ठ जीवन जीना है तो गंदे विचार जो बिना प्रयत्न के हमारे ऊपर हावी होते रहते हैं, उनसे लोहा लेने, अच्छा जीवन जीने के लिए श्रेष्ठ विचारों के संपर्क में रहना पड़ेगा । हमारे मन में बड़ी मलीनता आती हैं । तो बेटे ! उसको उखाड़ फेंक, उनसे लोहा ले, जद्दोजहद कर । हाथी से हाथी की टक्कर होती है और भैंसे से भैंसे की । लाठी से लाठी की टक्कर होती है और बन्दूक से बन्दूक की । तेरे ऊपर जो कुविचार छाये रहते हैं उनसे मुकाबले के लिए अच्छे विचारों की सेना से लड़ा दे । मित्रो ! ये क्या है ? आपने उत्तम जीवन जीने के लिए जो देवपूजन, ज्ञान का पूजन और ऋषि पूजन किया ।

ऋषि का अर्थ-वो व्यक्ति जो प्रभावशाली प्रतिभाओं के रूप में आपके ऊपर दबाव डाल सकते हों, आपको अनुशासन में रखने के लिए समर्थ हों । ऋषि वह जो आदमी को मजबूर कर सकते हैं, जो आदमी से धड़ल्ले से कह सकते हैं । आप ऋषि का अनुशासन पाये बिना आगे नहीं बढ़ सकते, कुसंस्कारों से छुटकारा नहीं पा सकते । ऋषि का पूजन हमने इसीलिए कराया कि आपके जीवन में अनुशासन आये । ऋषि हमारे जीवन की महती आवश्यकता हैं । ऋषि का सम्पर्क जिनसे हो गया, वो धन्य हो गये । नारद जी ऋषि थे । उनका सम्पर्क प्रहलाद और ध्रुव से हो गया, वे धन्य हो गये । हिमांचल के राजा की लड़की से नारद जी का सम्पर्क हो गया, वह धन्य हो गयी । वाल्मीकि से नारद जी का सम्पर्क हुआ, वह भी धन्य हो गये । कैसे हो गया ? दबाव डालने वाले व्यक्ति जो आदमी की इच्छा के विरुद्ध भी बात कह सकते हों, उसे नाखुश भी कर सकते हों और उस पर झल्ला भी सकते हों- ऐसे आदमी कौन होते हैं ? ऋषि जीवन को ऊँचा उठाने, आगे बढ़ाने, के लिए आदमी को उन लोगों के साथ सम्पर्क बनाना चाहिए । ऐसे आधार खड़े करने चाहिए , जिनके बल पर हमारे लिए आगे बढ़ सकना संभव हो सके । श्रेष्ठ जीवन जीने भगवान के रास्ते पर चलने की, भगवान का प्रिय होने की, परमार्थ परायण होने की, अध्यात्म का जीवन में विकास होने की आवश्यकतायें हैं ।

स्वाध्याय और सत्संग क्या है ? श्रेष्ठ पुरुषों का सान्निध्य और सद्ज्ञान के प्रति निष्ठावान होना । अगर दो काम आपने नहीं किये हैं तो आप ग्यारह माला जपें, चाहे ग्यारह हजार माला जपें, कुछ नहीं होने वाला । विचारों को आप काटते नहीं हैं ! जीवन को ऊँचा उठाने के लिए जिस क्रेन की जरूरत है, उससे आपका सम्पर्क ही नहीं है । आप जान को तो निकाल देते हैं और लाश को लिए फिरते हैं । लाश को लेने से काम नहीं चलेगा, दिशाओं को लेने से काम चलेगा । मित्रो, आज हमने शिक्षण किया यज्ञोपवीत का, जिसे चौबीसों घण्टे कंधे पर धारण करते हैं । हम इसकी शिक्षाओं को, जीवन के लक्ष्य को ध्यान में रखेंगे, भुलायेंगे नहीं । हर साल इसको रिन्यू कराते हैं । टट्टी-पेशाब के समय आपको यज्ञोपवीत का ध्यान रखना चाहिए । जब पुराना हो जाता है, छः महीने हो जाते हैं, तब इसे आपको बदल देना चाहिए । क्यों ? बार-बार हमें ध्यान रहे कि जनेऊ का भी हमारे जीवन में कुछ काम है । यज्ञोपवीत हमारे जीवन से विछिन्न नहीं है । घर में बच्चा हो, घर में गमी हो, चन्द्रग्रहण हो, सूर्यग्रहण हो । लाइये नया जनेऊ, बदलना पड़ेगा ? हों बदलना पड़ेगा, ताकि आपको याद रहे । जनेऊ अर्थात जीवन लक्ष्य आपको याद बना रहे और जीवन लक्ष्य के लिए जो काम आपको करने हैं, वे ध्यान में बने रहें । ये जीवन की महती आवश्यकता है । इन्हीं दोनों आवश्यकताओं को पूरा कर सकें तो बात बन जाती है ।

सुरक्षा के लिए क्या करना पड़ता है ? कोई राष्ट्र, कोई समाज, कोई व्यक्ति, कोई कुटुम्ब सुरक्षित किस तरीके से रह सकता है ? इसके लिए दो सूत्र हैं-एक लड़कियाँ अपने भाई के हाथ में राखी बाँधती हैं । बहिन राखी लेकर आयी और आपने उसे पाँच रुपये, एक धोती या दुपट्टा दे दिया और हो गया कार्य खत्म ! अरे भाई साहब, इसके लिए नहीं आती बहिन । भिखारिन नहीं है, जो आपसे कुछ माँगने आयेगी । किसलिए आयी थी ? ये प्रतीकों का त्यौहार है । लड़कियाँ गा रही थीं-"मेरी राखी "। मेरी से मतलब है नारी समाज, कोई व्यक्ति विशेष नहीं ! कोई लड़की प्रतिनिधित्व करती है-सारे नारी समाज का । किसी का राष्ट्रीय, पारिवारिक और सामाजिक जीवन सुरक्षित बन सके, इसके लिए दो अपेक्षायें हैं । दो की रक्षा । काहे की रक्षा होनी चाहिए ? एक रक्षा नारी के सम्मान की होनी चाहिए । नारी का सम्मान-शील भी उसी में आता है । नारी को दूसरे दर्जे का नागरिक, जैसा कि आज है, नहीं बनना चाहिए । उसको बलिष्ठ रहना चाहिए । नर के द्वारा प्रत्येक क्षेत्र में उसका सम्मान होना चाहिए । इसके लिए ये रक्षासूत्र नारी की ओर से बाँधा जाता है । उसका सम्मान, उसकी इज्जत, उसका गौरव हर जगह होना चाहिए । नर-नारी दोनों इंसान हैं । दोनों को एक-दूसरे की इज्जत करनी चाहिए । विचारों का विनिमय, मतभेदों का जहाँ तक ताल्लुक है आप बातचीत कीजिए, समझौता कीजिए, लेकिन सम्मान पर किसी के आँच मत आने दीजिए । न मर्दों की ओर से नारी के

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

सम्मान पर आँच आनी चाहिए, न नारी की ओर से मर्द के सम्मान पर आँच आनी चाहिए । नारियाँ मर्द के सम्मान पर ठेस नहीं पहुँचाती , पर अक्सर मर्द की ओर से नारी के सम्मान पर ठेस पहुँचायी जाती है । ये नहीं होना चाहिए । नारी के सम्मान की रक्षा, सामाजिक सुरक्षा के लिए सूत्र है । जहाँ नारी सम्मान पायेगी, विकसित होगी वहाँ उसका अंतरंग विकसित होगा । जहाँ आपने उसके सम्मान में कमी करना शुरू किया, वो नारी के लिए न जाने क्या से क्या हो जायेगा और उसकी अंतरात्मा, उसका गौरव गिरता हुआ चला जायेगा । एक और कारण भी है कि आर्थिक दृष्टि से नारी का कमजोर होना उसके लिए कितना अभिशाप हो जाता है । आपकी कमाई और आपकी बुद्धि का एक हिस्सा इस काम के लिए लगना चाहिए । नारी ने पुकार की है कि हमारी आर्थिक कमजोरी का अनुचित लाभ न उठाने दिया जाये । सारे समाज का कर्त्तव्य है कि जब सारा समाज नारी से लाभ उठाता है-माता, पत्नी, बेटी और बहिन के रूप में, तो उसका टैक्स भी चुकाना चाहिए । नारी का आर्थिक स्वावलम्बन कमजोर पड़ता है, तो उसकी मदद करें-ये रक्षासूत्र की प्रेरणा और शिक्षा है ।

एक और रक्षासूत्र है-सामाजिक सुरक्षा का, जो ब्राह्मण यजमान को बाँधता है । ये क्या है ? ये श्रेष्ठ पुरुषों का अनुशासन है । आज तो सारे अनुशासन खत्म हो गये हैं । सरकार ने कानून के रूप में अनुशासन बनाये थे, वो भी खत्म हो गये । दहेज, बाल-विवाह, रिश्वतखोरी के विरुद्ध कानून बने हुए हैं । जो कानून का उल्लंघन करेगा, जेल जायगा । पर कौन मानता है ? सरकारी कानून समाज में सुव्यवस्था बनाने के लिए काफी नहीं हैं । तो फिर कौन सा होना चाहिए ?

येन बद्धो बली राजा, दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वां प्रति बध्नामि रक्षे माचल माचलं ।।

रक्षा-सुरक्षा का आधार यह है, जिसके अनुशासन, नीति की मर्यादाओं में ऋषि-ब्राह्मण बाँधता है । इसीलिए प्राचीनकाल का प्रत्येक यजमान गुरु, पुरोहित, ऋषि के यहाँ जाता था । आप हमारे हाथ में रक्षा का सूत्र बाँध दीजिए, सुरक्षा की जिम्मेदारी लीजिए । लेकिन इस दृष्टि में एक शर्त थी-

व्रतेन दीक्षामाप्नोतिदीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम् ।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति, श्रद्धया सत्यमाप्यते ।।

जिससे तुम शक्ति की या सहायता की अपेक्षा करते हो, उसके ज्ञान, अनुशासन को स्वीकार करो । उसमें बंध जाओ । हम आपके सुख और शांति की गारन्टी लेंगे, लेकिन आप भी एक गारन्टी दीजिए कि आपके ऊपर जो नैतिक अनुशासन स्थापित किया गया है, उसका आप पालन करेंगे ।

मित्रो ! ये जो रक्षा के सूत्र का आधार है, उसका उद्देश्य है रक्षा । पुरोहित द्वारा यजमान का रक्षाबंधन और नारी द्वारा नर का रक्षाबंधन । यहाँ बहिन भाई को बाँधती है, ऐसा रिवाज है । पर मैं कहता हूँ कि कोई भी नारी किसी भी नर को सूत्र बाँध सकती है, चाहे वह पिता, भाई, पुत्र क्यों न हो । रक्षाबन्धन पर नारी की नर से सुरक्षा की अपेक्षा और यजमान की ओर से पुरोहित से सुरक्षा की माँग अथवा पुरोहित की ओर से यजमान से सुरक्षा की माँग । विश्वामित्र की माँग पर यज्ञ की रक्षा के लिए रामचन्द्र जी गये और ऋषि ने दिव्यास्त्र प्रदान कर उनकी सुरक्षा की । गुरु वशिष्ठ द्वारा राजा दिलीप से सुरक्षा की माँग की गयी थी । यजमान भी सुरक्षा की माँग कर सकता है और पुरोहित भी, जिससे व्यक्ति सुरक्षित और समाज सुदृढ़ बनता है । हमारी मजबूती जिन सूत्रों के साथ बाँधी गयी है आप उसको समझें, उसकी प्रेरणा को जानें, उन्हें हृदयंगम करें तो आज का हमारा शानदार त्यौहार सार्थक हो जिसमें वेद और ऋषियों की पूजा हुई, दस स्नान हुए, हेमाद्रि संकल्प हुआ और पितरों के लिए तर्पण किया गया । जो हमारे पितर हैं, पूर्वपुरुष, देवपुरुष-जिनकी आत्मायें कहीं होंगी तो वे हमसे अपेक्षायें करती हैं । ऋषि जिन्होंने संस्कृति का निर्माण किया, आपसे कुछ अपेक्षायें करते हैं । देवता भी कुछ अपेक्षायें करते हैं । उनको तृप्त करने के लिए तर्पण किया जाता है । ये सारी की सारी विधियाँ कर्मकाण्ड की दृष्टि से बड़ी उपयोगी हैं । आपने इसमें भाग लिया आप कर्मकाण्ड को पूरा करने के लिए गंगा जी गये, पानी में खड़े रहे, दूर-दूर से आप श्रावणी पर्व मनाने आये, आप इस सांस्कृतिक परम्परा के प्रति रुचि रखते हैं, श्रद्धा रखते हैं आपकी बड़ी प्रशंसा । लेकिन इससे भी ज्यादा प्रशंसा उस दिन होगी जब आप इस पर्व के साथ में जुड़ी प्रेरणाओं को हृदयंगम करेंगे, जीवन में धारण करेंगे । न केवल जीवन में धारण करेंगे बल्कि दैनिक जीवन के व्यवहार में इनका समावेश करने की पूरी कोशिश करेंगे । तो धन्य हो जायेगा हमारा ये पर्व जो श्रावणी के नाम से प्रख्यात है, जिसको यज्ञोपवीत का पर्व भी माना जाता है । ऋषि भी धन्य हो जायेंगे, जिन्होंने श्रावणी पर्व चलाया और उसके साथ-साथ में इन महान परम्पराओं का, क्रिया-कृत्यों का समावेश किया । मुझे आशा है कि आप इस पर ध्यान देंगे और आज श्रावणी से प्रेरणा लेकर के जायेंगे । इनको जीवन में धारण करने का प्रयत्न करेंगे । आज की बात समाप्त !

ॐ शांति

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परमपूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ ॐभूर्भूवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

युग निर्माण योजना और उसके भावी कार्यक्रम-

युग निर्माण योजना का प्रारम्भ इस उद्देश्य से हुआ कि मनुष्य की भावनात्मक स्थिति में परिवर्तन किया जाय और उसे ऊँचा उठाया जाय । संसार में जितनी भी समस्यायें हैं उन सारी समस्याओं का एक मात्र उपाय यह है कि मनुष्यों का भावनात्मक स्तर गिरता हुआ चला गया । यदि मनुष्यों का भावनात्मक स्तर ऊँचा हो तो जो समस्यायें आज हमको दिखाई पड़ती हैं उनमें से एक का भी अस्तित्व न रहे । जितनी भी कठिनाइयाँ मनुष्य के सामने हैं वे उसकी स्वयं की पैदा की हुई हैं, वास्तविक नहीं । सृष्टि में जितने भी जीव रहते हैं सारे के सारे अपने जीवन की सुविधाओं को आसानी से प्राप्त कर लेते हैं । कीड़े-मकोड़ों से लेकर के जलचर, नभचर और थलचर के सामने कोई ऐसी समस्या नहीं है जिसके कारण से वह दुःखी रहते हों । मनुष्यों के सम्पर्क में जो आ गये हैं उन प्राणियों के दुखी होने के कारण हैं । उनको मनुष्यों ने पाल रखा है, वे दुःखी भी हो सकते हैं, काटे भी जा सकते हैं, भूखे भी रखे जा सकते हैं, घायल भी हो सकते हैं लेकिन जो प्रकृति की गोद में रहते हैं उनके सामने कोई समस्या नहीं है जीवन यापन करने के सम्बन्ध में फिर मनुष्य के सामने इतनी समस्यायें क्यों? मनुष्य तो बुद्धिमान प्राणी हैं, सुशील प्राणी हैं, उन्नत प्राणी है उनके सामने तो सुख सुविधाओं के अम्बार होने चाहिये ।

लेकिन हम देखते हैं कि दूसरे प्राणियों की तुलना में मनुष्य बहुत दुखी है । उसका एक मात्र कारण यह है कि उसकी विचारणायें, उसकी भावनायें उसके दृष्टिकोण निम्न स्तर के होते चले गये । अगर यह स्तर उनका ऊँचा उठा रहा होता तो अभावग्रस्त स्थितियों में भी मनुष्य ने शान्ति का जीवन जिया होता । कहा जाता रहा है कि सम्पदायें मनुष्य के पास होंगी, सुख सुविधायें मनुष्य के पास होंगी तो वह समुन्नत होगा, सुखी रहेगा और आनन्द से रहेगा, लेकिन यह बात सही नहीं है । गरीब लोगों के पास जिनके पास साधन और सामान नहीं होते, सम्पत्ति नहीं होती, वह भी बड़ी सुख और सुविधा का जीवन जीते हैं और उनकी वृद्धि का कोई मार्ग रुका नहीं रहता । ऋषियों का जीवन इसी प्रकार का था । उनके सामने ज्यादा अभावी दुनिया में कोई भी नहीं है । पहनने के नाम पर एक लंगोटी, इस्तेमाल करने के नाम पर एक कमण्डल, फूस की झोंपड़ी, जमीन पर सोना, फूस की बिछावन, घास-पात और कन्द-मूल खा करके गुजारा कर लेना । इतना सब होते हुए भी ऋषियों ने बताया कि अभावग्रस्तता में भी सुखी जीवन बन सकता है, सुख और शान्ति का स्रोत बन सकता है विद्या अध्ययन में कोई रुकावट पैदा नहीं हुई । मगर सही बात यह है कि जिन-जिन लोगों के पास विशेष सुविधायें थीं, उन लोगों की अपेक्षा उन लोगों ने ज्यादा सुखी और समुन्नत जीवन जिया । ये बात उन्होंने साबित करने के लिये की थी कि वक्त बेवक्त वे न हों, साधन मनुष्य के पास न हों तो भी वह आदमी सुखी जीवन जी सकता है, समुन्नत जीवन जी सकता है और दूसरों के लिये बड़ा उपयोगी सिद्ध हो सकता है । फर्क केवल एक है कि भावनात्मक स्तर ऊँचा उठा हुआ हो ।

इसकी तुलना में दूसरी बात है जिनके पास अपार सम्पदायें थीं और रावण जैसों के पास सम्पदाओं की क्या कमी थी उसकी सोने की लंका बनी हुई थी, लेकिन वह स्वयं भी दुख में रहा, स्वयं भी क्लेश चक्र में पड़ा रहा, उसके सम्पर्क में जो लोग आये, जहाँ कहीं भी वह गया, वहाँ उसने दुख फैलाया और संकट फैलाया । सम्पत्ति से क्या लाभ रहा । विद्या से मैं चैनसे रहा हूँ लेकिन उसके पास विद्या होने से भी क्या लाभ हुआ ? उसके पास धन था, विद्या थी, बल था, सब कुछ तो था, लेकिन एक ही बात की कमी थी भावनात्मक स्तर का न होना । बस, एक ही समस्या का आधार है जिसे यों हम समझ लें तो फिर हम उपाय भी खोज लेंगे और विजय भी मिलेगी । उपाय हम अनेक ढूँढते रहते हैं पर मैं समझता हूँ कि इतने पर समाधान नहीं हो पाते । खून अगर खराब हो तो खराब खून के रहते हुए फिर कोई दवा-दारू कुछ काम नहीं करेगी । फुन्सियाँ निकलती रहती हैं । एक फुन्सी पर पट्टी बांधी, दूसरी फुन्सी फिर निकल पड़ेगी । एक घाव अच्छा हुआ, दूसरा घाव फिर पैदा हो जायगा। बराबर कोई न कोई शिकायत पैदा होती रहेगी । खून खराब न हो तब खून साफ हो जाय तब, न कोई फुन्सी उठने वाली है न कोई और चीज उठने वाली है । ठीक इसी प्रकार से अगर हमारा भावनात्मक स्तर ऊँचा हो तो न कोई समस्या पैदा होने वाली है और न कोई गुत्थी पड़ने वाली है । इसके विपरीत हमारी मनः स्थिति और हमारा दृष्टिकोण गिरा हुआ हो तो हम जहाँ कहीं भी रहेंगे अपने लिये समस्या पैदा करेंगे और दूसरों के लिये भी समस्या पैदा करेंगे। यही वस्तु स्थिति है और यही इसका आज की परिस्थितियों का दिग्दर्शन है।

भूतकाल में भारतवर्ष का इतिहास उच्च कोटि का रहा है, समुन्नत रहा, सुखी रहा है । इस पृथ्वी पर देवता निवास करते थे, स्वर्ग की परिस्थितियाँ थीं, इसका और कोई कारण नहीं था न आज के जैसे साधन उस जमाने में थे। आज जितनी नहरें हैं उतनी उस जमाने में थीं कहाँ । आज बिजली का जितना साधन-शक्ति प्राप्त है

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

धैर्य सत्ता और राजसत्ता दोनों समानान्तर हैं । अगर ये राजसत्ता चाहे तो लोगों के मानसिक स्तर को ऊँचा उठा सकती हैं और लोगों को दिशायें दे सकती हैं, लोगों को क्रोध से रोक सकती हैं और लोगों को शुद्ध और सदाचारी बना सकती हैं । इसी प्रकार से धर्म सत्ता में भी वह सामर्थ्य है कि वह लोगों की भावनाओं को पढ़ सकती हैं और लोगों को अच्छे मार्ग पर चलने के लिये प्रेरणा दे सकती हैं । अतः प्रयास यही किया गया कि हम धर्म तंत्र को सम्हालें और उसकी शक्ति का उपयोग करें और लोगों की भावनाओं को ऊँचा उठाने के लिये प्रयास करें । धर्म तंत्र अपने आप में बड़ा सामर्थ्यवान है । धर्म तन्त्र में ५६ लाख व्यक्ति सन्त और महात्मा, बाबा और ब्राह्मण, महात्मा के रूप में भारतवर्ष में ७ लाख गाँवों में रहते हैं । भारतवर्ष में ७ लाख गाँव हैं और ५६ लाख सन्त महात्मा हैं । हर गाँव के पीछे ८ आदमी आते हैं । अगर ये ८ आदमी चाहें कि हर गाँव को अपना कार्य क्षेत्र और सेवा क्षेत्र बना लें तो हर गाँव में से शिक्षा की समस्या को हल किया जा सकता है । सामाजिक गुत्थियों की समस्याओं को दूर किया जा सकता है । विषमतायें और दूसरी बुराइयाँ जो हमारे देहातों में व और जगहों में फैली हुई हैं उनको मिटाया जा सकता है । यह काम कोई कठिन नहीं है । सफाई की समस्या को सहज समझा जा सकता है । इसके अतिरिक्त सन्त महात्मा घर-घर भक्ति के नाम पर सहयोग की भावना पैदा करें, कल्याण की भावना पैदा करें, मिल जुल कर के काम करने की भावना पैदा करें। कल्याण की भावना पैदा करें, मिल जुल कर के काम करने की भावना पैदा करें। सरकार का यह व्यक्तिगत उत्तरदायित्व हो तो हमारा विश्वास बन सकता है और हमारा इतिहास अन्य किसी देश की तुलना में आगे बढ़ सकता हैं, पीछे रहने की कोई जरूरत नहीं । लेकिन ये धर्मतन्त्र ठीक तरीके से काम नहीं कर सका । प्रयास युग निर्माण योजना का यही था कि धर्म तन्त्र में जितने भी व्यक्ति काम करते हैं उन सबको वह प्रेरणा दी जाय, वह शिक्षा दी जाय कि वह भगवान का सूक्ष्म स्वरूप समझें, भगवान का सन्देश समझें और भगवान की सेवा पूजा का उद्देश्य समझें।

पिछले दिनों में ही समझाया जाता रहा है कि भगवान पूजा-पाठ का भूखा है । उसकी थोड़ी सी प्रार्थना कर दी जाय, स्तुति कर दी जाय या भोग प्रसाद जैसी छोटी मोटी रिश्वतें खिला दी जायें तो हमारी मनोकामना पूर्ण करने के लिये वह तैयार रहता है । ये कितनी गन्दी और घृणित भावना थी । युग निर्माण योजना ने यह प्रयास किया कि हर व्यक्ति को यह बताया जाय कि भगवान कोई व्यक्ति विशेष नहीं है, बल्कि एक समग्र सत्ता का नाम है । यह सारा विश्व ब्रह्माण्ड ही भगवान हैं और इस विश्व ब्रह्माण्ड की पूजा करना और सेवा करना- यही भगवान की वास्तविक सेवा और पूजा है । इसका प्रभाव-परिणाम यह हुआ कि असंख्य व्यक्ति जो पूजा-भजन में ही सारा समय खर्च कर देने के लिये तैयार थे, उन्होंने सेवा को अपना धर्म मानना स्वीकार किया और पूजा भजन एक सीमित मात्रा में करने के पश्चात् बचे हुए समय में सेवा कार्यों को अपने हाथ में ले लिया । धर्म मंच को सेवा-शिक्षा में मोड़ने का प्रयास एक बहुत ही अच्छा और बड़ा उपयोगी प्रयास था । उसने इस देश के नागरिकों में भावनात्मक नव निर्माण करने की दिशा में बहुत सफलता पायी । धर्म क्षेत्र में जो सम्पत्ति लगी हुई है, जो पूंजी लगी हुई है, युग निर्माण योजना का यह प्रयास है कि इस पूंजी को केवल पंच-पुजारियों के कार्यों में खर्च न होने दिया जाय, बल्कि ऐसे उपयोगी कार्यों में लगाया जाय जिससे कि उसे जन कल्याण के प्रयोजनों में प्रयोग किया जा सके । अकेले केवल मथुरा-वृन्दावन में ही २-३ मन्दिर ऐसे हैं जिनमें कि एक-एक लाख रुपया मासिक भोग-प्रसाद में खर्च कर दिया जाता है। वैसे मथुरा-वृन्दावन में ५००० मन्दिर हैं । ५००० मन्दिरों की आमदनी और खर्चे का क्या व्यौरा दिया जाय । दो मन्दिर ऐसे ही हैं मथुरा का द्वारकाधीश मन्दिर और वृन्दावन का रंगजी का मन्दिर, दोनों मन्दिर ऐसे हैं जिनमें कि भगवान के भोग और प्रसाद पर एक-एक लाख रुपया खर्च होता है। एक लाख रुपये के हिसाब से साल भर का खर्च हुआ बारह-बारह लाख रुपया। बारह लाख रुपये में साल में एक बढ़िया विश्वविद्यालय चलाया जा सकता है और उस विश्वविद्यालय के द्वारा ऐसे प्रशिक्षित व्यक्ति तैयार किये जा सकते हैं, स्नातक बनाये जा सकते हैं जो विश्व की शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक समस्याओं का अध्ययन करने के बाद सारे विश्व में भारत माता का सन्देश और भारतीय संस्कृति का सन्देश पहुँचाने में समर्थ हों । ऐसे कार्यकर्ताओं को तैयार करना इस विश्वविद्यालय के लिये क्या कठिन होगा ।

इन्जीनियर बनाने वाले विश्व-विद्यालय अपना काम करते हैं, चिकित्सक-डॉक्टर बनाने वाले विश्व विद्यालय अपना काम करते हैं । धर्म प्रचारक और लोक सेवा करने वाले विश्व विद्यालय कहीं भी नहीं हैं । अगर एक मन्दिर चाहे तो अपनी आमदनी का बारह-लाख रुपया साल भर में खर्च कर सकता है और जाने क्या से क्या समाज की सेवा कर सकता है । गायत्री तपोभूमि का मासिक व्यय दो हजार रुपया मासिक है । इसका अर्थ हुआ चौबीस हजार रुपया साल । कहाँ बारह लाख रुपया साल भर के खर्चे का एक मन्दिर का, कहाँ चौबीस हजार रुपया। ऐसे एक मन्दिर की आमदनी से गायत्री तपोभूमि जैसी संस्थायें ४८ बनाई जा सकती हैं । यही वह आधार है जो नव निर्माण का, युग निर्माण का संकल्प पूरा कर सकेंगे । आज की बात समाप्त ।

ओम् शान्ति

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.